

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी—दृष्टम पुष्प

मुनि सभाचन्द एवम् उनका पद्मपुराण

(जैन रामायण)

(सन् १७११ मे मुनि सभाचन्द द्वारा छन्दोबद्ध हिन्दी का प्रथम
जन पद्मपुराण—विस्तृत प्रस्तावना सहित)

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम एलबीएलडी

प्रकाशक

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रथम संस्करण—दिसम्बर १९८४ (बीर निर्वाण स २५१०)

[मूल्य—८०००]

निदेशक मंडल—

परम सरक्षक— स्वामी श्री भट्टारक चावकीर्ति जी, मूढबिहारी

सरक्षक— श्री साहू अशोक कुमार जैन, देहली

श्री पूनमचन्द जैन, अरिया

श्री रमेशचन्द जैन (पी एस. जैन), देहली

श्री डी. बीरेन्द्र द्वेगडे, धर्मस्थल

श्री निर्मल कुमार सेठी, लखनऊ

श्री महावीर प्रसाद सेठी, सरिया (बिहार)

श्री कमलचन्द कासलीवाल, जयपुर

डा. (श्रीमती) सरयू बी. दोशी, बम्बई

श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर

श्री रूपचन्द कटारिया, देहली

श्री डालचन्द जैन, सागर

प्रध्यक्ष— श्री शांतिलाल जैन, कलकत्ता

कार्याध्यक्ष— श्री रतनलाल गगवाल, कलकत्ता, श्री पूरणचन्द्र गोदीका, जयपुर

सह सरक्षक— श्री कपूरचन्द भोंसा, जयपुर

पद्मश्री पंडिता मुमतिबाई जी, सोलापुर

श्री नानगराम जैन जौहरी, जयपुर

उपाध्यक्ष— सर्वश्री गुलाबचन्द गगवाल, रैनवाल, अजितप्रसाद जैन ठंकेदार, देहली

कन्हैयालाल सेठी जयपुर, पदमचन्द तोतूका जयपुर

महावीर प्रसाद नृपत्या जयपुर, चिरजीलाल बज जयपुर

रामचन्द्र रारा गया, लेखचन्द बाकलीवाल जयपुर

रतनलाल विनायक्या भागलपुर, सम्पतकुमार जैन कटक

पदमकुमार जैन नेपालगंज, ताराचन्द बहसी जयपुर

रतनचन्द पसागी जयपुर, भरतकुमार सिंह पाटोदी जयपुर

श्रीमती चमेलीदेवी कोठिया वाराणसी शांतिप्रसाद जैन देहली

धूपचन्द पाड़्या जयपुर, ललितकुमार जैन उज्जैन

मोहनलाल अग्रवाल, जयपुर, मदनलाल घण्टे बाला, देहली

निदेशक एवं प्रधान सम्पादक—डा कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर

प्रकाशक—

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी

प्रतिष्ठा— १९००

८६७, अमृत कान्हा, बरकत नगर

मूल्य — ८० रुपये

किमान मार्ग, टोक फाटक, जयपुर-१५

मुद्रक—मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर-३

फोन : ६७६६७

अकादमी--प्रगति पथ पर

‘मुनि सभाचन्द एव उनका पद्मपुराण’ को पाठको एवं माननीय सदस्यों के हाथों में देते हुए अकादमी के निदेशक मंडल को अत्यधिक प्रसन्नता है। अकादमी का यह प्राठवा पुष्प है और इसी के साथ सम्पूर्ण योजना की क्रियान्विति में ४० प्रतिशत सफलता प्राप्त कर ली गयी है। यद्यपि अभी ६० प्रतिशत कार्य बाकी है लेकिन अगले पांच वर्षों में हमारी योजना पूर्ण हो जावेगी ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

यसै सभी हिन्दी जैन कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को 20 भागों में पुस्तक बद्ध कर लेना अत्यधिक कठिन कार्य है क्योंकि खोज एवं शोध में नये-नये कवि मिलते रहते हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे कवियों को हम इस योजना में प्रथम स्थान देना चाहते हैं। मुनि सभाचन्द, बाई अजीतमणि, अनूपाल, भ महेन्द्रकीर्ति, सागु, बुलाखीचन्द, गारवदास, चतुर्कमल, ब्रह्म यशोधर आदि कुछ ऐसे ही कवि हैं जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की थाती है।

अष्टम पुष्प में केवल एक ही कवि एवं उसके पद्मपुराण को ही दे सके हैं लेकिन यह एक ही कवि कितने ही कवियों के बराबर है और उसका पद्मपुराण हिन्दी की अमूल्य कृति है। अब तक हिन्दी पद्मपुराण का इतिहास प. खुशालचन्द काला से प्रारम्भ होता था जिन्होंने मवत १७८३ में पद्यबद्ध पद्मपुराण की रचना की थी लेकिन प्रस्तुत पद्मपुराण के प्रकाशन से उसका इतिहास ७९ वर्ष पूर्व चला जाता है। जो एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सप्तम पुष्प का विमोचन अहमदाबाद नगर में अप्रैल. ८४ में पंचकल्याणक गजराय महोत्सव पर आयोजित समारोह में वहां के प्रमुख व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ श्री राधेश्यामजी सरावगी द्वारा किया गया था। इसके लिये हम आपके एवं महोत्सव के संयोजक डा जेवर जैन के आभारी हैं। विमोचन के अवसर पर अकादमी के संरक्षक एवं अ भा दि जैन महामा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने अकादमी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए महासभा की ओर से ५००० रु. की

आर्थिक सहायता की भी घोषणा की थी। सेठी सा. की प्रेरणा से ही कलकत्ता के प्रमुख व्यवसायी श्री शांतिलाल जी जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद को स्वीकारा है। अकादमी के प्रति सेठी सा. के महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आभारी हैं। इसके पूर्व अकादमी का छठा पुष्प "बुलासीचन्द बुलासीदास एव हेमराज" महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी द्वारा विमोचित हुआ था जो सस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण आलेख रहेगा।

नये सदस्यों का स्वागत

सप्तम भाग के विमोचन के पश्चात् जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी श्री नानगराम जी जैन जीहरी अकादमी के सहस्ररक्षक बने हैं। श्री जैन नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी, उदारमना एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। जैनाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के संघ को देहली से जयपुर लाने, जयपुर में चातुर्मास की व्यवस्था करने में आपने यशस्वी कार्य किया था। आपकी पत्नी एव सभी पुत्र आपके पदचिह्नों पर चलने वाले हैं। अकादमी के सहस्ररक्षक के रूप में हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के सहस्ररक्षक सदस्य बनने वालों में जयपुर के ही श्री कपूरचन्दजी भौसा के हम पूर्ण आभारी हैं तथा अकादमी परिवार के रूप में हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री कपूरचन्दजी भौसा नगर के सम्माननीय व्यक्ति हैं तथा सभी सामाजिक सस्थाओं को अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। सहस्ररक्षक सदस्यों में आवरणीया पद्मश्री पंडिता सुमति बाईजी शहा का हम किन शब्दों में धन्यवाद ज्ञापित करें। पंडिता सुमति बाईजी महाराष्ट्र की ही नहीं समस्त देश की गौरव शालिनी महिलारत्न हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन शिक्षा प्रसार समाज एवं साहित्य सेवा में समर्पित कर रखा है। आप जैन समाज में एक मात्र महिला हैं जिनको सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया है। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में हम देहली के माननीय श्री मदनलालजी जैन घण्टेवाला का स्वागत करते हैं। श्री मदनलाल जी देहली के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं धर्मप्रेमी महानुभाव हैं तथा घण्टेवाला के नाम में देहली में ही नहीं सर्वत्र प्रसिद्ध है। आपकी माताजी का धर्म-प्रेम दर्शनीय एवं अनुकरणीय था। ६५ वर्ष की वृद्धा होने पर भी आप नियमित मन्दिर जाती थीं एवं जिन भक्ति में अपने आपको समर्पित कर देती थीं।

अकादमी के सम्माननीय सदस्यों में सर्व श्री शीलचन्द जी बुन्हावनदास जी

ग्रहमहाबाह, मुलायमचन्द जी जैन जबलपुर, सिधई शीलचन्द जी जैन जबलपुर, भागकचन्द जी वेताला मद्रास, पंडिता बिद्युत्सता जी सह्या सोलापुर, डा. जी जे. कासलोवाल सोलापुर, पंडिता गजा बहिन बाहुबली, भागकचन्द जयकुमार जी चंचरे शान्तिनाथ पाटील जयसिंगपुर, स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेनजी कोल्हापुर, एम बाई निरजी शिवकोट्टी, स्वस्ति श्री देवेन्द्रकोटि जी भट्टारक स्वामी जी हुम्मच, कपूरचन्द जी जैन डोड्या जयपुर एवं विमल चन्द जी बैनाडा आगरा का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है समाज का हमें और भी अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

सहयोग—प्रकादमी के सदस्य बनाने में राजस्थानी भाषा के कवि श्री राजमल जी वेगस्या, श्री माणिकचन्दजी सा. कसेरा, डा. हरीन्द्र भूषण जी जैन बाहुबली, पं. माणिकचन्दजी चवरे कारजा प्रमलालजी काला एवं उनकी श्रीमती स्नेहप्रभा जी से जो सहयोग मिला है उसके लिये हम उनके पूर्ण आभारी हैं।

अमृत कलश में विद्वानों का स्वागत

सप्तम भाग के प्रकाशन के पश्चात् अर्थात् अप्रैल १९८४ से सितम्बर ८४ तक हमारे अमृत कलश में स्थित प्रकादमी कार्यालय में जिन विद्वानों ने पधार कर हमारे खोज शोध के कार्य को देखा तथा देखकर शुभकामनाएं एवं शुभार्शीवाद दिया उनमें रूपायन सस्था बरूंडा के निदेशक श्री कोमल कोठारी, जैन वाङ्मय के मनीषी डा. दरबारीलाल जी कोठिया, बम्बई के प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार डा. जगदीश जैन, साहू रिसर्च इन्स्टीट्यूट कोल्हापुर के निदेशक डा. विलास सगवे, प्रकादमी के मरक्षक माननीय श्री डालचन्दजी सा. जैन सागर, कुचामन के श्री राजमल जी छाबडा श्रीचन्दजी जैन सोनगड, श्री नन्दलाल जैन दिवाकर एडवोकेट गंज बासोदा, भगवान दास जी जैन अध्यक्ष अखिल विश्व जैन मिशन गज बासोदा, प सत्यन्धर कुमार जी सेठी उज्जैन एवं श्री निर्मल कुमार जी सेनानी बिदिशा के नाम उल्लेखनीय है। हम अमृत कलश में पधारने के लिये सबके आभारी हैं।

८६७ अमृत कलश

बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर,

डा. कस्तूरचन्द कासलोवाल
निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की कलम से

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के अष्टम पुष्प "मुनि सभाचन्द एव उनका पद्मपुराण" को पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता है। सप्तम पुष्प के प्रकाशन के छह महीने पश्चात् अष्टम पुष्प का प्रकाशित होना निश्चय ही स्वागत योग्य है। प्रस्तुत पुष्प में प्रथम बार हिन्दी भाषा में निबद्ध पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं उसका सम्पक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पद्मपुराण जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय ग्रंथ माना जाता है। इसलिये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं में विभिन्न आचार्यों ने पुराण ग्रंथ निबद्ध किये हैं। प्रस्तुत पद्मपुराण जैन सन्त मुनि सभाचन्द की कृति है जिसको खोज निकालने का श्रेय डा० कस्तूरचन्द कामलीवाल को है। जिन्होंने इसे सम्पक् रूप से सम्पादित करके प्रकाशित भी किया है। वस्तुतः डा० कामलीवाल ने अब तक पचासो अज्ञात एवं अचर्चित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का जो यत्नशील कार्य किया है उसके सम्पूर्ण साहित्यिक समाज उनका मदैव आभारी रहेगा।

अकादमी की हिन्दी के जैन कवियों को उनका ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर बीस भागों में प्रकाशित करने की योजना एक ऐसी योजना है जिसकी किमी से तुलना नहीं जा सकती। जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी का विज्ञान साहित्य है जिसका अन्त पता पाना भी दुष्कर कार्य है। आरम्भ में जब डा० कामलीवाल ने मुझे अकादमी का परिचय कराया तथा अपनी योजना रखी तो मुझे स्वयं को विषय में नहीं हो रहा था कि उन्हें इतनी सफलता मिल जावेगी और एक के पश्चात् दूसरा भाग प्रकाशित होता रहेगा लेकिन जब अष्टम भाग पर दो शब्द मुझसे लिखने के लिये कहा गया तो स्वतः ही मन प्रसन्नता से भर गया। वास्तव में जैसा कि सन् १५-२० वर्षों में मैंने डा० कामलीवाल को देखा है उन्हें एक गर्मपित नेवाभावी लेखक एवं सम्पादक के रूप में पाया है। साहित्य नेवा एवं इतिहास की खोज ही उनके जीवन का एक मात्र मिशन है जिसका मूर्त रूप अब तक प्रकाशित उनकी ५० से भी अधिक पुस्तकें एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके मकड़ों खोज पूर्ण लेखों में देखा जा सकता है।

डा० कामलीवाल द्वारा स्थापित श्री महावीर ग्रंथ अकादमी का संरक्षक बनने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। मैं चाहता हूँ कि अकादमी द्वारा जैन हिन्दी कृतियों को 20 भागों में प्रकाशित कराने के पश्चात् अथवा उसके पूर्व ही जैन

कथाओं पर आधारित अथवा जैन सिद्धान्तों एवं शिक्षा पर आधारित सामान्य पाठकों के लिए सीरीज में साहित्य का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हो जो हजारों की संख्या में छप कर सभी के हाथों में पहुँचे। आज इस प्रकार की पुस्तकों की बहुत अधिक मांग है। आशा है डा० कासलीवाल एवं अकादमी का निदेशक मंडल इस योजना पर भी ध्यान देगा।

अकादमी की पुस्तकें सभी पाठकों के हाथों में पहुँचे इसके लिए यह आवश्यक है कि हम उसके प्रकाशन को खरीदे अथवा उसके सदस्य बनकर प्राप्त करें। यद्यपि समाज का अकादमी का आवश्यक सहयोग मिल रहा है लेकिन अभी इसकी वृद्धि में पर्याप्त स्थान है। आशा है अकादमी को समाज का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

अन्त में मैं प्रस्तुत प्रकाशन का स्वागत करता हूँ। साथ ही मैं डा० कासलीवाल का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रस्तुत पुस्तक पर दो शब्द लिखने का अवसर प्रदान किया है।

कमलचन्द कासलीवाल

लाल कोठी,
टोक रोड, जयपुर।

दो शब्द

श्री दि जैन ध. क्षेत्र श्रीमहावीरजी पर आयोजित पञ्च कल्याणक महोत्सव के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सा. सेठी ने श्री महावीर ग्रंथ अकादमी एवं उसके निदेशक डा. कस्तूरचन्द जी कासलीवाल का परिचय कराया। यद्यपि डा. कासलीवाल जी का नाम एवं ख्याति तो बहुत पहिले से ही सुन रखी थी लेकिन उनसे भेंट करने का यह मेरा प्रथम अवसर था। इसी अवसर पर सेठी सा. ने मुझे अकादमी का अध्यक्ष पद स्वीकार करने का आग्रह किया तथा डा. कासलीवालजी ने कुछ पुस्तकें भी मुझे भेंट की। यद्यपि साहित्य मे मेरी विशेष गति नहीं है फिर भी माननीय सेठी सा. का प्रस्ताव मुझे स्वीकार करना पड़ा। लेकिन मैं अध्यक्ष पद के उत्तरदायित्व को कितना निभा सकूंगा यह मैं स्वयं नहीं जानता।

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी एक साहित्यिक संस्था है। साहित्य निर्माण एवं प्रकाशन उसका प्रमुख उद्देश्य है। समस्त हिन्दी जैन साहित्य को 20 भागो मे प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना उसकी मूलभूत योजना है। जिसमे वह बराबर प्रयत्नशील है और अब तक उसके द्वारा आठ भाग प्रकाशित भी हो चुके है। जो अपने आप मे महत्त्वपूर्ण सफलता है। किसी एक भाषा के साहित्य की योजना बनाकर प्रकाशित करने वाली श्री महावीर ग्रंथ अकादमी सम्भवतः प्रथम संस्था है ऐसा मेरा अपने विचार है यही नहीं इसके ५०१) तक के सदस्यों को अपनी सदस्यता शुल्क से अधिक मूल्य की पुस्तकें प्राप्त हो जावेगी जो अपने आप में एक प्रशंसनीय सेवा है।

मुझे ऐसी संस्था का अध्यक्ष बनने का जो सम्मान मिला है इसके लिए मैं अकादमी के सभी सदस्यों का आभारी हूँ। इस अवसर पर मैं निदेशक मंडल के सभी सदस्यों, सम्माननीय सदस्यों, एवं विशिष्ट सदस्यों सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ तथा उनसे विशेष सहयोग की आज्ञा रखता हूँ। मैं अकादमी के निदेशक डा. कासलीवाल जी का भी आभारी हूँ जिन्होंने ऐसी संस्था की स्थापना करके सम्पूर्ण हिन्दी जैन साहित्य की खोज एवं प्रकाशन जैसी साहित्य सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कलकत्ता

दिनांक ३१-७-८४

Shanti Lal Patodi

(शान्तिलाल पाटोदी)

अध्यक्ष

सम्पादकीय

देश के जैन ग्रंथालयों हिन्दी ग्रंथों की पाण्डुलिपियों के लिए जितने समृद्ध भण्डार हैं उतने दूसरे ग्रंथालयों नहीं हैं। इन ग्रंथालयों में ५० प्रतिशत से भी अधिक संग्रह हिन्दी ग्रंथों का रहता है जो विगत ४००-५०० वर्षों में लिखा गया है इसीलिए किसी भी ग्रंथ भण्डार की शोध खोज एवं सूचीकरण का परिणाम अर्चयित एवं अज्ञात कृतियों की प्राप्ति होती है। मैंने अभी विगत वर्ष एवं इस वर्ष में जितने शास्त्र भण्डार देखे हैं उनमें प्रत्येक में हिन्दी की अर्चयित कृतियाँ अवश्य मिली हैं।

प्रस्तुत पद्मपुराण की उपविधि भी सन् १६८३ में डिग्री (राजस्थान) के शास्त्र भण्डार को देखते समय हुई थी। जब पद्मपुराण की पाण्डुलिपि मिली तो आनन्द से मन उछल पड़ा और अपूर्व प्रसन्नता छा गयी। पाण्डुलिपि की बहुत समय तक देखता रहा कि कहीं देखने में भ्रम तो नहीं हो रहा है। इसी शास्त्र भण्डार में मुझे बनपाल कवि के ऐतिहासिक गीत, भ. महेन्द्रकीर्ति के आध्यात्मिक पद भी उपलब्ध हुए हैं जो इसके पूर्व अज्ञात एवं अनुपलब्ध माने जाते थे। वास्तव में राजस्थान, देहली एवं आगरा मंडल के जैन कवियों ने हिन्दी की जितनी सेवा की है वह साहित्यिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है लेकिन उनकी शुद्ध साहित्यिक सेवाओं को भी साम्प्रदायिक नाम देकर उसे हिन्दी साहित्य के इतिहास में अविशेष्य घोषित कर दिया गया जिसका परिणाम जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य के साथ उपेक्षा का व्यवहार होता रहा है। श्री महावीर ग्रंथ प्रकाशनी की स्थापना के पीछे यही एक भावना रही है कि शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत रचनाओं को प्रकाश में लाया जावे और उनमें भी अब तक अज्ञात एवं अर्चयित कवियों एवं उनकी रचनाओं को प्रमुखता दी जावे। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि अब तक प्रकाशित आठ भागों में आये हुए अधिकांश कवि अज्ञात एवं अर्चयित हैं जिनमें ब्रह्म राममल्ल, अट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, गारबदास, धनुरमल व जिनदास, भ. रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द्र, प्रा. सोमकीर्ति, ब्र. यशोधर, स्व. बुलासीचन्द, बुलाकीदास, हेमराज, बाई अजीतमति, बनपाल, देवेन्द्र व महेन्द्रकीर्ति एवं मुनि सभाचन्द के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। लेकिन निरन्तर खोज एवं शोध के कारण हिन्दी भाषा के जैनकवियों

की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो वस्तुतः स्वागत योग्य है लेकिन संख्या में वृद्धि के कारण उन्हें २० भागों में समेटना कठिन प्रतीत होने लगा है।

पद्मपुराण कथानक एवं भाषा की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। हिन्दी में मुनि सभाचन्द्र द्वारा विरचित प्रस्तुत पद्मपुराण पुराणसंज्ञक प्रथम कृति है इसलिये इस पुराण कृति का महत्त्व और भी बढ़ गया है। पद्मपुराण—पद्मचरिय—पद्मचरिउ—पद्मचरित—पद्मपुराण संज्ञक कितनी ही कृतियाँ विभिन्न विद्वानों ने लिखी हैं। बंष्णव घम के १८ पुराणों में पद्मपुराण भी एक पुराण है। आचार्य रविषेण प्रथम जैनाचार्य है जिन्होंने ७वीं शताब्दि में ही पद्मपुराण जैसा ग्रंथ निबद्ध करने का गौरव प्राप्त किया जिसका अनुसरण आने होने वाले कितने ही कवियों ने किया और विभिन्न नामों से पद्मपुराण के कथानक को छन्दोबद्ध किया।

प्रस्तुत पद्मपुराण पर राजस्थानी भाषा का सबसे अधिक पुट है। सामाजिक रीति-रिवाजों के विशेष अवसरों पर मिष्ठान्न एवं खाद्य सामग्री के नामों का उल्लेख, जोधपुर एवं उदयपुर जैसे नगरों के उल्लेख इस बात का द्योतक है कि कवि का राजस्थान वासियों से अधिक सम्पर्क था। यह भी सम्भव है कि वह स्वयं भी इन नगरों में जाकर शोभा बढ़ायी हो।

पद्मपुराण एक कोश ग्रंथ के समान है जिसमें विभिन्न शब्दावलियों के अतिरिक्त वनस्पतियों, विभिन्न प्रकार के फूलों, ग्राम एवं नगरों के नामों का जो उल्लेख हुआ है वह अपने आप में अद्वितीय है। पुराण में विभिन्न पात्रों के इतने अधिक नाम हो गये हैं कि उनको याद रखना भी कठिन प्रतीत होता है लेकिन सभी पात्र इतने आवश्यक भी हैं कि उनके बिना कथानक अधूरा ही प्रतीत होने लगता है। पुराण में ऋषभदेव एक महावीर के जीवन पर अच्छा इतिवृत्त दिया गया है। २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का जीवनवृत्त तो पद्मपुराण कथानक का एक भाग ही है क्योंकि पुराण के नायक राम, लक्ष्मण, सीता हनुमान, राजा जनक, सुग्रीव एवं प्रति नायक रावण, कुम्भकरण, खरदूषण तथा अजना, पवनंजय, लव कुश सभी उन्हीं के शासन काल में हुये थे। सगर चक्रवर्ती एवं भरत बाहुबली का व्यक्तित्व भी पद्मपुराण में अंकित है। जिसके अभाव में पद्मपुराण का इतिवृत्त पूरा भी नहीं हो पाता।

पद्मपुराण में विद्याओं के सहारे अधिक लड़ाई होती है और बिना विद्याओं की सहायता के निर्णायक युद्ध नहीं लड़ा जा सकता है। रावण को अपनी विद्याओं पर बड़ा गर्व था किन्तु यही गर्व उसे ले बँधता है क्योंकि यह भी सही है कि पुण्यशाली व्यक्तियों पर विद्याओं का कोई असर नहीं होता है। सबुक्त को १२ वर्ष की साधना के पश्चात् भी सूरजहास प्राप्त नहीं हो सका जबकि लक्ष्मण को वह स्वतः ही प्राप्त हो गया। रावण के साथ युद्ध के उत्कर्ष काल में राम लक्ष्मण को

देवों ने दिव्य वस्त्र प्रदान किये । रावण द्वारा चलाया गया चक्र लक्ष्मण के हाथ में था गया और फिर उसी से रावण की मृत्यु हुई ।

पद्मपुराण जैन धर्म का प्रमुख कथानक पुराण है जिसका विगत १२००-१३०० वर्षों से अत्यधिक स्वाध्याय होता रहा है । पद्मपुराण के पश्चात् हरिवंश-पुराण एवं महापुराण की रचनाएं हुईं जो प्रथमानुयोग ग्रंथों के विषय विवेचना का आधार बना । इन ग्रंथों के अध्ययन से आवकों को त्रैलोक्य का पुरुषों के जीवन की एवं दूसरे पुण्यशील व्यक्तियों के जीवन की जानकारी मिलती है जो जीवन को नया मोड़ देने में समर्थ है

प्रस्तुत भाग में पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि के आधार पर ही मूल पाठ दिया गया है । पाठ भेद अन्य प्रतियों के अभाव में नहीं दिये जा सके लेकिन एक मात्र उपलब्ध पाण्डुलिपि बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध लिखी हुई है । इस पुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द्र काष्ठासंघ भट्टारक पराम्परा के सन्त थे । वे काव्य रचना में अत्यधिक कुशल थे इसलिये पद्मपुराण जैसे महाग्रंथ के कथानक को अपने पद्म-पुराण में समेट लिया । उन्होंने दोहा, चौपई, सौरठा जैसे लोकप्रिय छन्दों का प्रयोग करके अपनी कृति को और भी जन-जन की कृति बना दी ।

पद्मपुराण के सभी प्रमुख पात्रों के पूर्वभव का भी वर्णन किया गया है जिसका प्रमुख उद्देश्य पूर्वकृत कर्मों के प्रभाव को बतलाना है । यही नहीं विशिष्ट वर्तमान जीवन में शुभ अशुभ अथवा इष्ट वियोग एवं अनिष्ट का संयोग बिना कर्मफल के नहीं होता । राम, लक्ष्मण, सभी प्रमुख पात्रों के पूर्व भवों का वर्णन किया है जिसके कारण उन्हें वर्तमान जीवन में विभिन्न कष्टों का सामना करना पड़ा है । इस प्रकार के प्रसंगों से पाठकों के मन पर गहरी चोट लगती है और वे शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं ।

अन्त में कविवर कविवर सभाचन्द्र ने पद्मपुराण की प्रशंसा करते हुये लिखा है जो कोई भी पद्मपुराण को पढ़ेगा उसके मिथ्यात्व का नाश होगा और अन्त में स्वर्गलाभ होगा ।

अंसा है यह पवम चरित्र, मिथ्या मोह मिटै भव सत्र ।

पढ़ै पढावै कहै बखान, पावै स्वर्गा रेख विमान ॥ ५७४६ ॥

पद्मपुराण की पाण्डुलिपि को प्रकाशन के लिए देने हेतु मैं दिगम्बर जैन मन्दिर डिग्री के व्यवस्थापकों का एवं विशेषतः श्री माणकचन्द्रजी सेठी का आभारी हूँ आशा है अन्य शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थापकों का भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा जिससे साहित्य प्रकाशन का कार्य अवस्थित रूप से होता रहे ।

ग्रन्थ में मैं अकादमी के संरक्षक माननीय श्री कमलचन्दजी सा कासलीवाल का आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक पर एवं अकादमी की योजना पर दो शब्द लिखे हैं । श्री कासलीवाल जी नगर के उद्योगपति ही नहीं हैं किन्तु प्रमुख समाज सेवी भी हैं । इसी तरह मैं अकादमी के अध्यक्ष माननीय श्री शांतिलाल जी जैन कलकत्ता का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपना सक्षिप्त वक्तव्य लिखा है । आप युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में बराबर योगदान देते रहते हैं ।

जयपुर
२ अक्टूबर १९८४

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रस्तावना

जैन ग्रन्थामार हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार हैं। इनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की खोज अभी आधी भी नहीं हो सकी है। राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डारों की यद्यपि पाच भागों में सूची प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अभी तक राजस्थान में भी कितने ही ऐसे भण्डार हैं जिन्हें कभी देखा नहीं जा सका। ऐसे ही भण्डारों में एक टोक जिले में स्थित डिंगी कस्बे के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार है जिसको देखने का मुझे शत वर्ष अगस्त-८३ में सौभाग्य मिला और उसी समय कितनी ही अर्चयित कृतियों की प्राप्ति हुई। ऐसी अर्चयित कृतियों में मुनि मभाचन्द्र विरचित हिन्दी पद्म पुराण का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है।

जैन साहित्य में राम के जीवन पर सभी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक भाषाओं में विशाल साहित्य मिलता है। वस्तुतः राम जिस प्रकार महाकवि वाल्मीकि एवं तुलसीदास के द्वारा रचे हैं उसी प्रकार वे विमलसूरि, स्वयम्भू, रविषेनाचार्य एवं पृथ्वीदत्त जैसे महाकवियों के काव्यों के नायक हैं। राम ६३ शलाका महापुरुषों में ८ वें बलभद्र हैं जो उसी भय से मोक्ष जाते हैं।

रामकथा का उद्भव एवं विकास :—

वेदों में रामकथा का कोई महत्वपूर्ण स्रोत अथवा उल्लेख नहीं मिलता नहीं मिलता। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु (१०।६०।४) एवं दशरथ (१।१२६।४) नामों का उल्लेख अवश्य मिलता है लेकिन वे रामकथा के अंगभूत नहीं हैं। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण (१०।६।१।२) तैत्तिरीय ब्राह्मण (३।१०।६) जैमिनीय ब्राह्मण (१।१६।२।६३) छन्दोग्योपनिषद् (५।११।४) बृहदारण्यकोपनिषद् (३।१।१) में जनक का जो उल्लेख मिलता है वह रामकथा के उत्स फूटने भर मालूम पड़ते हैं। संस्कृत भाषा में वाल्मीकि रामायण का जो वर्तमान रूप उपलब्ध है वह सभी उपलब्ध राम कथा काव्यों में प्राचीनतम है। लेकिन विदेशी विद्वान् डा० वेबर के मत में राम कथा का मूल रूप दशरथ जातक में सुरक्षित है^१ इसी तरह डा० सेन के

मतानुसार राम कथा के मुख्य स्रोत दशरथ जातक एवं रावण सम्बन्धी आख्यान है ।²

लेकिन राम कथा की जितनी लोकप्रियता वाल्मीकि रामायण ने प्रदान की उतनी लोकप्रियता इसके पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुई। वाल्मीकि रामायण के रचनाकाल पर विद्वानों के विभिन्न विचार हैं उनमें बेलवलकर ई० पू० २०० तक, चिन्तामणि विनायक बंछ ने ईसा पूर्व १२०० में २०० ईस्वी पश्चात् तक, फादर बुल्के ने ६०० ईसा पूर्व तक, कीष ने ४०० ई० पूर्व तक, विटरनिट्ज ने ३०० ईसा पूर्व तक, बलदेव उपाध्याय ने ५०० ईसा पूर्व तक तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने १५० से २०० ईसा पूर्व तक माना है। राम कथा के विद्वानों के मतानुसार इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि की रामायण ईसा के ४००-५०० वर्ष पूर्व ही लोकप्रिय बन चुकी थी लेकिन उनकी इस रामायण के वर्तमान रूप को प्राप्त करने में उसे अवश्य ही ७००-८०० वर्ष लगे होंगे और ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दि तक उसे वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो गया होगा।

जैन धर्म में राम का स्थान :—

भगवान राम आठवे बलभद्र हैं जो २० वें तीर्थंकर मुनिमुव्रतनाथ के शालनकाल में हुए थे। लेकिन राम का जीवन मुनिमुव्रतनाथ के शासन काल से लेकर भगवान महावीर तक मौखिक रूप से ही चलता रहा और किसी ने लिपिबद्ध किया भी हो तो उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद जब ग्रन्थों के लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया गया और प्राकृत भाषा में सिद्धान्त ग्रन्थों को मूल रूप में लेखबद्ध किया जाने लगा। लेकिन रामकथा का प्राकृत भाषा में पउमचरिय के रूप में काव्यबद्ध करने का श्रेय आचार्य विमल सूरी ने प्राप्त किया। पउमचरिय महाराष्ट्री प्राकृत का सुन्दरतम महाकाव्य है जिसकी रचना वीर निर्वाण संवत् ५३० में हुई थी। पूरा काव्य ११८ सधियों में विभक्त है।

पञ्चवे वामसया दुनमाए तीस बरस संजुता ।

बीरे मिद्ध भवमये तथो निबद्धं इमे अग्रिय ॥

तिलोपपण्णत्ति प्राकृत भाषा का महान ग्रंथ है इसमें २४ तीर्थंकरों ६ नारायण, ६ प्रतिनागयण, ६ बलभद्र एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन के प्रमुख

१. दिनेसचन्द्रसेन—द० बंगाली रामायण पृष्ठ २, ७, २६-४१ आदि

तथ्य संग्रहीत हैं। उन्हीं के आधार पर एवं गुरु परम्परा से प्राप्त कथानकों के आधार पर जैन पुराणों की रचना की गई है। नवीं शताब्दि में शीलकाचार्य ने चउपस महापुगि चरिय निखा जिसमे राम लखण चरिय भी दिया हुआ है। यह कथा विमलसूरि के पडमचरिय से प्रभावित है इसी तरह भद्रेश्वरकृत कहावली के अन्तर्गत रामायणम् एवं भुवनतुंग सूरि कृत सीया चरिय तथा राम लखण चरिय कथाये प्राप्त होती हैं।

संस्कृत भाषा में आचार्य रविषेण का पद्मचरितम् (पद्मपुराण) रामकथा से सम्बन्धित प्राचीनतम रचना है जिसकी रचना वीरनिर्वाण संवत् १२०४ तथा विक्रम संवत् ७३४ में की गई थी। यह पुराण १२३ पर्वों में विभक्त है तथा १८००० श्लोक प्रमाण की बड़ी भारी कृति है। रामकथा का ऐसा सुन्दरतम वर्णन संस्कृत भाषा में प्रथम बार किया गया है। १२ वीं शताब्दि में आचार्य हेमचन्द्र ने त्रिषष्टशलाकापुरुषचरित में रामकथा का अच्छा वर्णन किया है। १५ वीं शताब्दि में ब्रह्म जिनदास ने पद्मपुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। यह पुराण ८३ सर्गों में विभक्त है तथा १५००० श्लोक प्रमाण है। पुराण की भाषा सरल एवं आकर्षक है। १६ वीं शताब्दि में भट्टारक सोमसेन ने बैराट नगर (राजस्थान) में रामपुराण की रचना समाप्त की थी तथा १७ वीं शताब्दि भट्टारक धर्मकीर्ति ने पद्मपुराण की 1612A D. में रचना करके रामकथा को ओर भी लोकप्रियता प्रदान की। मुनि चन्द्रकीर्ति द्वारा रचित पद्मपुराण की रचना ग्रामेर शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। अपभ्रंश भाषा में महाकवि स्वयम्भू ने पडमचरिउ की रचना करने का यत्नस्वी कार्य किया। पडमचरिउ एक विशाल महाकाव्य है जो पांच काण्डों—विद्याघर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड एवं उत्तर काण्ड में विभक्त है। पांच काण्ड एवं ६० सर्गों में काव्य बद्ध है। स्वयम्भू ८ वीं ९ वीं शताब्दि के महान् कवि थे जिसे महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। १५ वीं शताब्दि में महाकवि रघू हुए जिन्होंने अपभ्रंश में विशाल काव्यों एवं पुराणों की रचना की। इन्होंने बलभद्रपुराण (पद्मपुराण) की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था।¹

लेकिन जब हिन्दी का युग प्रारम्भ हुआ तो जैन कवि इस भाषा में भी रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने में सबसे आगे रहे। सर्वप्रथम

१. प्रशस्ति संग्रह—संपादक डा० कस्तूरचन्द्र कासलीवाल पृष्ठ संख्या ३०

२. वही

पृष्ठ संख्या ११६

महाकवि ब्रह्मजिनदास ने राम सीतारास (रामरास) की रचना करके रामकथा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रामरास की रचना संवत् १५०८ (सन् १८५१) में की गई थी।^१ रामरास विशाल महाकाव्य है जिसकी पाण्डुलिपि में ३०० से भी अधिक पत्र है। ब्रह्म जिनदास के समान ही उनके शिष्य ब्र० गुणकीर्ति ने भी रामसीताराम की रचना करने का श्रेय प्राप्त किया।^२ लेकिन ब्र० गुणकीर्ति के पश्चात् करीब २०० वर्षों तक किसी भी भट्टारक अथवा विद्वान ने राम कथा पर लेखनी नहीं चलायी। यह आश्चर्य की बात है। इसके पश्चात् अब तक जिन कवियों की रचनाओं की खोज हो चुकी है उनमें निम्न रचनाओं के नाम उल्लेखनीय हैं :—

रचना	लेखक	रचनाकाल
सीताचरित्र ^३	रामचन्द्र अपरनाम बालक	संवत् १७१३
सीता हरण ^४	ब्रह्म जयसागर	संवत् १७३२
पद्मपुराण भाषा पं. खुशालचन्द काला		संवत् १७८३
(पद्य) ^५		
पद्मपुराण भाषा पं० दौलतराम कासलीवान		संवत् १८२३
(गद्य) ^६		
पद्मपुराण भाषा भगवानदास		संवत् १७५५

उक्त कृतियों में पं० दौलतराम कासलीवान द्वारा निबद्ध पद्मपुराण भाषा सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता है। इसी का समाव में सबसे अधिक स्वाध्याय हुआ है और आज भी यह पुराण सर्वत्र पढ़ा जाता है। दौलतराम ने हमकी जयपुर में रचना की थी। इसकी भाषा एवं शैली दोनों ही आकर्षक है। इसके अतिरिक्त शेष सभी राम काव्य अभी तक अपने प्रकाशन की प्रतीक्षा में खड़े हैं।

१. सवत पन्नर अटोतरा मागसिर माम विशाल ।

शुक्ल पक्ष चरदिसि दिनी रास कियो गुणमाल ॥

२. राजस्थान के जैन मन्त्र — व्यक्तिस्व एवं कृतिस्व पृष्ठ संख्या १८६

३. प्रशस्ति मग्नह — पृष्ठ संख्या २६६

४. वही २६७

५. राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रन्थ सूची द्वितीय भाग पृ. सं. २१५

६. वही २१५

७. वही २१६

लेकिन अभी गत वर्ष सन् १९८३ में ही मुझे एक और पद्मपुराण की खोज करने में सफलता प्राप्त हुयी है। प्रस्तुत पद्मपुराण महाकवि ब्रह्मजिनदास एवं ब्र गुणकीर्ति के बाव की रचना है लेकिन उक्त पाँचों कृतियों से प्राचीन है। इस प्रकार पद्मपुराण नाम से निबद्ध हिन्दी की सभी रचनाओं में प्रस्तुत पद्म-पुराण सर्वाधिक प्राचीन है जिसका विस्तृत परिचय निम्न प्रकार है—

ग्रन्थकर्ता— प्रस्तुत पद्मपुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द है जिनका पुराण के प्रारम्भ में निम्न प्रकार उल्लेख हुआ है—

सभाचन्द मुनि भया धानन्द, भाषा करि चौपई छन्द ।
मुनि पुराण कीना मडान, मुनि जन लोक मुनुं दे कान ॥३५॥

पुराण की समाप्ति पर लिखी गयी प्रशस्ति में उन्होंने सुभचन्द सेन के नाम का प्रयोग किया है जो उनके सेन गणीय भट्टारक परम्परा के मुनि होने का मकेत है। वे दिल्ली मंडल के मुनि थे जिनके पट्ट में और बहुत से मुनि हुए। ये कवि भी उसी परम्परा के मुनि थे। वे कुमारसेन भट्टारक मुनि के शिष्य थे। कवि ने ने अपनी गुरु परम्परा का निम्न प्रकार उल्लेख किया है।—

दिल्ली मंडल का मुनि राई, जिसके पट्ट भया बहु ठाई ।
धरम उपदेस घणा कु भया, पूजा प्रतिष्ठा जायै नया ॥४१॥
पंडित पट धारी मुनि भए, ग्यानबत करुणा उर बाए ।
मलयकीर्ति मुनिवर गुणवंत, तिनकं हिये ध्यान भगवंत ॥४२॥
गुणकीर्ति धर गुणभद्रसेन, गुणावाद प्रकासै जन ।
भानकीरति महिमा अति घणी, विद्यावंत तपसी मुनि ॥४३॥

कुमारसेन भट्टारक जती, क्रिया श्रेष्ठ उजल मती ।
उनके पट सुभचन्द्रसेन, धरम बखान सुणावै बैन ॥४४॥

इस प्रकार मुनि मलयकीर्ति, गुणकीर्ति, गुणभद्रसेन, भानुकीर्ति, कुमारसेन मुनि भट्टारक उसकी गुरु परम्परा थी। पद्मपुराण समाप्ति के पश्चात कवि ने अपना नाम मुनि सभाचन्द इस प्रकार उल्लेख किया है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत संपूर्ण ।

रचना स्थान

इस प्रकार सभाचन्द कवि मुनि थे तथा वे काष्ठासंघीय सेन गण के मुनि थे। दिल्ली मंडल उनका केन्द्र था इसलिए ऐसा भी प्रतीत होता है कि सभाचन्द मुनि

देहली में ही रहते थे और उन्होंने पद्मपुराण की रचना भी देहली में रहते हुये की थी।

कवि के समय में देहली में मूलसधी भट्टारकी की भी वादी थी। इस गादी के भट्टारक मुनि रत्नकीर्ति थे जो गभीर ज्ञान के धारक थे। तपस्वी थे तथा हिन्दुओं का निग्रह करने वाले थे। उन्हीं के पट्ट में रामचन्द्र मुनि हुए जो पण्डिता-चाय थे जो सूक्ष्म व्याख्याता थे तथा रामकथा सुनने में रुचि रखते थे।

श्री मूलसध सरस्वती गच्छ, रत्नकीरत मुनि घरम का पच्छ ।
तारन तरण ग्यान गभीर, जारण महु प्राणी की पीर ॥४५॥

तप संयम तै आत्म ग्यान, घरम जिनै स्वर कहै बखान ।
छुटै मिथ्यात उपजै ग्यान, जै निसचै घरि मनमै आन ॥४६॥

गुरु के वचन सुणि निमचै घरै ते जीब भवमागर की तिरै ।
श्री रत्नकीर्ति तज्या ससार, पहुचै स्वर्ग लोक तिहु बार ॥४७॥

उनके पट्ट रामचन्द्र मुनि आचारिज पण्डित बहु गुनी ।
कहै ग्यान के सूक्ष्म अंग भई बुधि उनके प्रमग ॥४८॥

रामकथा के विचित्र रूपः—

जैन साहित्य में राम कथा की दो धारायें मिलती हैं एक आचार्य रविघेण के पद्मपुराण की तथा दूसरी गुणभद्र के उत्तरपुराण की। आचार्य रविघेण की राम कथा विमलमूर्ति के पउमचरिय एव स्वयम्भू के पउमचरिउ पर आधारित है। लेकिन गुणभद्राचार्य की राम कथा आचार्य रविघेण के कथानक से भिन्न है। हिन्दू धर्म की राम कथाओं में बान्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है जिसका प्रभाव उत्तरकालीन सभी राम कथाओं पर पड़ा है। महाभारत ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण अग्निपुराण, वायुपुराण आदि सभी में कुछ मामान्य परिचर्तन के साथ राम कथा को लिपिबद्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त अघ्यात्म-रामायण, अद्भुतरामायण आनन्दरामायण के नाम से भी कई रामकाव्य लिखे गये हैं। इन्हीं के आधार पर तिब्बती तथा खेतानी रामायण, हिन्देशिया की रामायण काकाबिन जाबा का आधुनिक 'मोन्नराम' तथा हिन्द चीन श्याम, ब्रह्मदेश, तथा सिंहल आदि देशों की रामकथाएँ मिलती हैं। बौद्ध जातक 'जातकटुवण्णना' में रामकथा मिलती है। जो संक्षेप में निम्न प्रकार है —

दशरथ महाराज वाराणसी में धर्म पूर्वक राज्य करते थे। इनकी उषेष्ठा महीषी के तीन स्तन थी— दो पुत्र (राम पण्डित और लक्ष्मण) और एक पुत्री

(सीता देवी)। इस महीषी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी को ज्येष्ठ महिषी के पद पर नियुक्त किया। उसके भी एक पुत्र (भरत) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी तब रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य मांगा। राजा ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनों में भी पुनः पुनः इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके पक्षपाती के भय से दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा "यहां रहने से तुम्हारा अनिष्ट होने की सम्भावना है इसलिए किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो"। उसी समय राजा न ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे अपने मरने की अवधि पूछी। बारह वर्ष का वा उत्तर पाकर उन्होंने कहा—"हे पुत्रो! बारह वर्ष के बाद आकर छत्र उठाना" पिता की वन्दना कर दोनों भाई चलने वाले थे सीतादेवी पिता से बिदा लेकर उनके साथ हो गयी। तीनों के साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिये उनकी लौटाकर तीनों हिमालय पहुंच गये और वहां आश्रम बना कर रहने लगे। नौ वर्ष के पश्चात् दशरथ पुत्र शोक के कारण मृत्यु की प्राप्त हो गये। रानी ने भरत को राजा बनाने प्रयास किया। स्वयं भरत एवं आमात्यो के विरोध के कारण वह भरत को राजा बनाने में सफल नहीं हो सकी। तब भरत चतुरंगिनी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन में चले जाते हैं। उस समय राम अकेले ही हैं। भरत उांम पिता के देहान्त का साग वृत्तान्त कह कर रोने लगते हैं परन्तु राम पण्डित न तां शोक करते हैं और न रोने हैं।

सध्या समय लक्ष्मण और सीता लौटते हैं। पिता का देहान्त सुनकर दोनों अत्यन्त शोक करते हैं। इस पर राम पण्डित उनकी धैर्य देने के लिए अनिश्चयता का धर्मोपदेश सुनाते हैं। उसे सुनकर सब शोक रहित हो जाते हैं। बाद में भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी राम पण्डित यह कह कर वन में रहने का निश्चय कहते हैं—"मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त में राज्य करने का आदेश दिया है अतः अभी लौट कर मैं उनकी आज्ञा का पालन न कर सकूंगा। मैं तीन वर्ष बाद लौट आऊंगा।"

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते हैं तब राम पण्डित अपनी तिष्ठपादुका (तृण पादुका) लेकर कहते हैं कि मेरे आने तक ये शासन करेगी तृणपादुकाओं को लेकर भरत, लक्ष्मण सीता तथा अन्य लोगों के साथ वाराणसी लौटते हैं। अमात्य इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं। अमात्य होते ही वे पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती और ठीक निर्णय होने पर शान्त होती थी।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर राम पण्डित लौटकर अपनी बहिन सीता से विवाह करते हैं। सोलह सव्वन वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् वे स्वर्ग चले जाते

हैं। जातक के अन्त में महात्मा बुद्ध जातक का सामंजस्य इस प्रकार बँटाते हैं—
उस समय महाराजा शुद्धोदन महाराज दशरथ थे। महामाया (बुद्ध की माता)
राम की माता, यशोधर (राहुल की माँ) सीता, आनन्द भरत थे और मैं राम
पण्डित था।”¹

इसी तरह “अनामकं जातकम्” में राम के जीवन वृत्त से सम्बन्धित
कथा मिलती है। चीनी त्रिपिटक के अन्तर्गत “त्सा-पी-त्सिंग-किंग” में १२१
अवदानों का संग्रह मिलता है। यह संग्रह ४७२ई. में चीनी भाषा में अनूदित हुआ
इसमें एक “दशरथ कथानम्” भी मिलता है जिसमें राम कथा का उल्लेख किया
गया है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें सीता या किसी अन्य राजकुमारी का
उल्लेख नहीं हुआ है। दशरथ की चार रानियों का वर्णन आता है उनमें प्रधान
महिषी के राम, दूसरी रानी के रामन (रोमण-लक्ष्मण) तीसरी रानी के भरत
और चौथी रानी के शत्रुघ्न उत्पन्न हुये थे।

अद्भुत रामायण में रामकथा का दूसरा ही रूप मिलता है जिसमें सीता
को मन्दोदरी द्वारा अपने गर्भ को जमीन में गाड़ दिए जाने के पश्चात् उत्पन्न हुआ
माना गया है जो हल जोतते समय वह गर्भजात कन्या राजा जनक को मिली और
उन्होंने उसका लालन पालन किया। लेकिन राम कथा का व्यापक एवं लोकप्रिय
रूप वाल्मीकि रामायण का रहा जो सर्वत्र समादृत है।

जैन कथा के दो रूप

जैन साहित्य में रामकथा के जो रूप मिलते हैं उनमें गुणभद्राचार्य
द्वारा रचित उत्तरपुराण एवं रविवेण के पद्मपुराण में सुरक्षित है। दोनों ही
आचार्य जैनधर्म के अधिकृत विद्वान् थे। आचार्य रविवेण ने विक्रम संवत् ७३४
(६७७ ई.) में पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी जबकि आचार्य गुणभद्र ने
६ वी शताब्दि के अन्त में उत्तरपुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया
था। इस प्रकार आचार्य रविवेण का पद्मपुराण आचार्य गुणभद्र के समक्ष रहा होगा
ऐसा अनुमान किया जा सकता है क्योंकि ऐसा महापुराण लिखने वाले आचार्य
जिनसेन एवं गुणभद्र अपने पूर्वाचार्यों की अधिकृत ग्रन्थों को भोक्तृ ग्रन्थों के रूप में
नहीं कर सकते। गुणभद्र आचार्य जिनसेन के शिष्य थे। जिनसेन आदिपुराण की
रचना करने से पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये इसलिए आदिपुराण के अवशिष्ट भाग
एवं उत्तरपुराण की रचना करने का कार्य उनके सुयोग्य शिष्य गुणभद्र ने ही
किया। उनके द्वारा उत्तरपुराण में प्रतिपादित रामकथा आचार्य रविवेण से भिन्न
है जिसमें सीता को जनक की पुत्री न मानकर रावण, मन्दोदरी की पुत्री माना है।

पं० पद्मलाल जी साहित्याचार्य ने उत्तरमुन्नायक का संक्षिप्त कथानक अपने पद्म पुराण की प्रस्तावना में निम्न प्रकार दिया है ।

“वाराणसी के राजा दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं—राम सुभाला के गर्भ से, लक्ष्मण कैकयी के गर्भ से और बाद में जब दशरथ अपनी राजधानी साकेत में स्थापित करते हैं तब भरत और शत्रुघ्न भी किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न होते हैं । यहाँ भरत एवं शत्रुघ्न की माता का नाम नहीं दिया गया है दशानन विनमि विद्याधर वंश के पुलस्त्य का पुत्र है । किसी दिन वह प्रमित वेग की पुत्री मणिमति को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है । मणिमति निदान करती है कि मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूंगी” । मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ में धाती है । उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते हैं कि यह पुत्री आपका नाश करेगी अतः रावण ने भयभीत होकर मारीच को आज्ञा दी कि वह उसे कहीं छोड़ दे । कन्या को एक मन्जूषा में रख कर मारीच उसे मिथिला देश में गाड़ धाता है । हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मन्जूषा दिखाई देती है और लोगों के द्वारा जनक के पास पहुँचाई जाती है । जनक मन्जूषा को खोलकर देखते हैं और उसका सीता नाम रख कर पुत्री की तरह पालन करते हैं । बहुत समय बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाने हैं । युद्ध के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है । इसके बाद राम अन्य सात कुमारियों के साथ विवाह करते हैं और लक्ष्मण पृथ्वी आदि १६ राजकन्याओं से । दोनों दशरथ की आज्ञा लेकर वाराणसी में रहने लगते हैं ।

नारद से सीता के सौन्दर्य वा वर्णन सुनकर रावण उसे हराने का संकल्प करता है । सीता का मन जाचने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का मतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान कन्या अमम्भव है । जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट बाटिका में विहार करते हैं तब मारीच स्वर्णमृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है । इतने में रावण राम का रूप धारण करके सीता से कहता है कि मैंने स्वर्णमृग महान भेजा है । और उसको पालकी पर चढ़ने की आज्ञा देता है । यह पालकी वास्तव में पृष्णक विमान है जो सीता को लका ले जाता है । रावण सीता का स्पर्श नहीं करना है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श करने से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जाती है ।

दशरथ को स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया और वह राम के पास यह समाचार भेजने हैं । इनने में सुग्रीव और हनुमान बालि

के विरुद्ध सहायता मांगने के लिए पहुँचते हैं। हनुमान लंका जाते हैं और सीता को सात्वना देकर लौटते हैं (लंका दहन का कोई उल्लेख नहीं मिलता) इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। अब वानरों की सेना राम की सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान करती है। युद्ध के विस्तृत वर्णन के अन्त में लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काट देते हैं। इसके बाद लक्ष्मण दिग्विजय करके और अर्धचक्री नारायण बनकर अयोध्या लौटते हैं। लक्ष्मण की सौलह हजार रानिया और राम की आठ हजार रानिया है। सीता के आठ पुत्र होते हैं (सीता त्याग का उल्लेख नहीं मिलता) लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मर कर रावण बध के कारण नरक में जाते हैं। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वी सुन्दर को राज पद पर और सीता के पुत्र अजीतजय को युवराज पद पर अभिषिक्त करके दीक्षा लेने हैं और मुक्ति पाते हैं। सीता भी अनेक रानियों के साथ दीक्षा लेती है और अच्युत स्वर्ग में जाती है।¹

हिन्दी में राम काव्य—

प्राकृत संस्कृत एवं अपभ्रंश पुराण रचनाओं के पश्चात् जब हिन्दी राजस्थानी में ग्रन्थ रचना होने लगी तो जैन कवियों द्वारा इन भाषाओं में सभी तरह के ग्रन्थों का गद्य एवं पद्य में निर्या जाने लगा था फिर मूल ग्रन्थों के भावों को लेकर स्वतंत्र रूप से भी काव्य लिखे गये। हिन्दी-राजस्थानी में रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने का सर्व प्रथम श्रेय महाकवि ब्रह्म जिनदाम को दिया जा सकता है क्योंकि उन्होंने सन् १५०८ में ही विशाल काव्य 'रामरास' की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। 'रामराम' यद्यपि रविवेणार्य के पद्मपुराण के आधार पर निबद्ध किया गया है लेकिन वह कवि की मौलिक एवं स्वतंत्र रचना के रूप में है। सन् १७२८ में देउल ग्राम में लिपिबद्ध इस काव्य की एक प्रति डूंगरपुर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है इस पाण्डुलिपि में १२" × ६" आकार वाले ४०५ पत्र हैं। कवि ने अपने काव्य के रचना काल का निम्न पद्य में उल्लेख किया है—

संवत् पन्नर अठोत्तरा, मागसिर मास विशाल ।

शुक्ल पक्ष अउदिसी दिनी, राम कियो गुणमाल ॥

पद्मपुराण संरचना

विक्रम की १७ वीं शताब्दी के तृतीय/चतुर्थ चरण में मुनि सभाचन्द हुए। उनके समय में तुलसी का रामचरितमानस (रामायण) लोकप्रियता प्राप्त करने लगा था और उत्तर भारत की अधिकांश जनता में उसे पढ़ने की और रुचि बढ रही थी। वैष्णव धर्म में फैल रही रामायण के प्रति आसक्ति को देख कर

सभाचन्द्र मुनि को भी आचार्य रविषेण कृत संस्कृत भाषा के पद्मपुराण को सुनने की इच्छा पैदा हुई। पद्मपुराण को सुन कर मुनिजी के हृदय में आचार्य रविषेण के प्रति गहरी श्रद्धा जाग्रत हुई। अपनी रचना पद्मपुराण के प्रारम्भ में इन्होंने रविषेणाचार्य के प्रति जो श्रद्धा एवं भक्ति प्रदर्शित की है वह अत्यधिक संवेदनशील है। इन्होंने रविषेणाचार्य को मति श्रुति एवं अवधि ज्ञान का धारक महामुनीश्वर निर्गुणाचार्य एवं क्रोध मान माया आदि कथाओं से रहित होना लिखा है। इन्हीं भावों को कवि के शब्दों में देखिये—

केवल वाली सुन्या ज्ञान, पठित मुनिवर रघ्या पुराण ।
आचार्य रविषेण महंत, संस्कृत में कीनी ग्रन्थ ॥३०॥
महा मुनीश्वर व्यानी मुनी, मति श्रुति अवधि व्यानी मुनी ॥
महा निर्गुण तपस्वी जति, क्रोध भाव माया नहीं रती ॥३१॥
आरिषो वाली शास्त्र किया, धर्म उपदेश बहुविध दिया ।
जिनकै भेषा भेद अपार, महामुनीश्वर कहूँ बिचार ॥३२॥

आचार्य रविषेण के पद्मपुराण को सुनने एवं उसका स्वाध्याय करने के पश्चात् मुनि सभाचन्द्र के हृदय में उसके हिन्दी रूपान्तर करने के भाव जाग्रत हुये और उन्होंने संवत् १७११ में फाल्गुन शुक्ला पंचमी को हिन्दी में पद्मपुराण जैसे महान् ग्रन्थ को छन्दोबद्ध करने का यत्नस्वी कार्य कर डाला।

संवत् सत्रहसै ग्यारह वरन, सुन्या भेद जिनवाली सरस ।
फाल्गुन मास पंचमी स्वेत, शुद्धवार मन में धरि हेत ॥३३॥
सभाचन्द्र मुनि भया आनन्द, भाषा करि जोषई छन्द ।
सुनि पुराण कीनी मंडान सुनि जन लोक सुनुं बे कान ॥३४॥

सर्व प्रथम गौतम स्वामी ने राम कथा को सबको सुनायी। उसके पश्चात् जगसेन केवली ने इसे मौखिक रूप से कहा। फिर कृतातसेन ने एक करोड़ श्लोक प्रमाण ग्रन्थ निबद्ध किया। इसके पश्चात् दूसरे आचार्यों ने पुराणों की रचना करके उन्हें पढ़ा। उनके सबदन मुनि शिष्य हुए। फिर धरहसेन एवं लक्ष्मणसेन मुनि हुए जिन्होंने साठ हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण लिखा। उसी पुराण को आचार्य रविषेण ने अठारह हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण नाम से निबद्ध किया। कवि ने इनका रचना काल का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

सहैश एक प्रक बोई सै बरस, छह महीने बीते कछु सरस ।
महावीर निरवाण कल्याण, इस अंतर है रघ्या पुराण ॥

अर्थात् भगवान महावीर के निवर्ण के १२०० वर्ष और ६ महिने व्यतीत होने पर रविवेश ने पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी। किन्तु स्वयं रविवेश ने बीर निवर्ण संवत् १२०४ एवं विक्रम संवत् ७३४ में पद्मपुराण की रचना करना लिखा है। इसलिये मुनि सभाचन्द ने अपने रचना काल में ४ वर्ष का अन्तर क्यों कर लिखा इसका कोई प्रोचित्य नहीं बतलाया।

मुनि सभाचन्द भट्टारक कुंवरसेन के शिष्य थे। जो काष्ठा सघ—माधुर गच्छ—सेन गण्णीय भट्टारक थे। भ० कमलकीर्ति के दो शुभचन्द और कुमारसेन ये दो पट्ट शिष्य हुए।^१ इनके शिष्य थे सभाचन्द जो मुनि अवस्था में रहते थे। कुमारसेन का उल्लेख आमेर शास्त्र जबपुर की एक प्रशस्ति में भी आता है जो हेमकीर्ति के शिष्य एव भ० हेमचन्द के गुरु थे।^२ मुनि सभाचन्द के नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। फिर भी ये भट्टारकी परम्परा के मुनि थे हममें कोई मन्देह नहीं है।

जीवन परिचय

मुनि सभाचन्द की गृहस्थावस्था का क्या नाम था। उनके माता पिता कौन थे। उनका जन्म कहा हुआ तथा उन्होंने किस अवस्था मुनि दीक्षा प्राप्त की इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। सभाचन्द पद्मपुराण (हिन्दी) के अतिरिक्त और कौन २ से ग्रंथों के रचयिता बने इसका भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सभाचन्द अपनी गृहस्थावस्था में अग्रवाल जैन होने क्योंकि आपने ग्रंथ प्रशस्ति में अग्रवाल जैनो की उत्पत्ति का वर्णन किया है। कवि के अनुसार अग्रवाल जैन जाति की उत्पत्ति निम्न प्रकार हुई है -

एक बार लोहाचार्य ने अग्रोहा के निकट आकर योग धारण कर लिया। अग्रोहा के सभी नगरवासी उनकी वदना करने लगे। वहाँ उन्होंने अग्रवाल आश्रमों को प्रतिबोधित किया और आश्रमों की ५३ क्रियाओं को पालने का उपदेश दिया। पञ्च अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत एवं तीन गुणव्रतों के महत्त्व को समझाया। नगर में व्याप्त मिथ्यात्व को दूर किया और जैनधर्म के स्वरूप को सबका बताया। लोहाचार्य के उपदेश से सबने दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय एवं व्रत विधान को प्रंगीकार किया। जीव दया का पालन होने लगा तथा सबने रात्रि भोजन न करने का नियम ले लिया और चउघडिया में अणुवेड (अ्यालु) की जाने लगी।

१ देखिये भट्टारक संप्रदाय—पृष्ठ संख्या २४

२ देखिये प्रशस्ति संप्रह—पृष्ठ संख्या ८५

मुनि सभाचन्द्र काष्ठासंधी साबु थे । उस समय देहली में मूलसंघ एवं काष्ठासंध दोनो की यादिया थी । अष्टिकांश अथवा जैन समाज काष्ठासंधी भट्टारको के आम्नाय में था । मुनि सभाचन्द अपने समय के प्रमुख सन्त थे । साहित्य सर्वज्ञ की ओर इनका विशेष झुकाव था ।

छन्दों का प्रयोग—पद्मपुराण विशालकाय ग्रन्थ है जिसमें ११५ विधानक है । तथा दोहा, चौपई एवं सोरठा छन्दों की संख्या ६६०६ है । जैन कवियों ने हिन्दी पद्य में इतना विशाल ग्रन्थ बहुत कम निबद्ध किया है । पुराण में छन्दों की संख्या निम्न प्रकार है—

प्रथम संधि (विधानक)	४६३ पद्य
द्वितीय संधि (विधानक)	७७ पद्य
तृतीय संधि (विधानक)	२११ पद्य
चतुर्थ संधि (विधानक)	८५ पद्य
पञ्चम विधानक से ११५ विधानक तक	५७७० पद्य

योग ६६०६

उक्त पद्यों में छन्दानुसार संख्या निम्न प्रकार है—

दोहा (दूहा)	१३६
सोरठा	३६
अडिल्ल	३४
कवित्त	२
चौपई	६३६२

विधानक की समाप्ति दोहा, सोरठा, कवित्त एवं अडिल्ल इन चार छन्दों में से किसी एक के साथ की गयी है । लेकिन कहीं-कहीं इसका अपवाद भी है और विधानक की समाप्ति चौपई के साथ भी कर दी गयी है ।

भाषा—पद्यपुराण की रचना देहली में की गयी थी इसलिए पुराण की मूल

१. अग्रोहे निकट प्रभु ठाढ़े जोग, करे वन्दना सब ही लोग ।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध, त्रेपक क्रिया बताई सोध ॥३५॥
पञ्च अणुव्रत सिंख्याम्भारि, गुणव्रत तीन कहै उरधारि ।
वारहै व्रत बारहै तप कहै, भवि जीव सुणि चित्त में गहै ॥३६॥
मिथ्या व्रम कियो तहा दूरि, जैन व्रम प्रकास्मा पुरि ।
विषयो दान देई सब कोई, सासत्र भेद सुणि समकृति होई ॥३७॥

भाषा खड़ी बोली है जिस पर प्रमुख रूप से राजस्थानी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्द भी आ गये हैं जो उस समय बोलचाल की भाषा में प्रचलित थे। जैसे पुराण की भाषा शुद्ध एवं परिष्कारित है। शब्दों की बिनाह करके प्रयोग करने का कवि स्वभाव नहीं है। १७वीं शताब्दी में जैन कवियों ने अपने काव्यों की खड़ी बोली में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। प्रस्तुत पद्यपुराण इस धारा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने प्रान्तीयता अथवा भाषावाद के मोह में न पड़कर सदैव प्रदेश में प्रचलित भाषा में काव्य रचना की है।

पुराण की भाषा पर राजस्थानी का पुट है। कहीं-कहीं क्रिया पदों में राजस्थानी क्रिया पदों का प्रयोग किया गया है तो कहीं-कहीं राजस्थानी शब्दों का प्रयोग बहुतायत से हुआ है।

क्रियापद—(१) पहली दुःख प्रजा कूँ दूँ, मधुसूदन का बैर हूँ लूँ

३८४/४३३२

यहाँ 'व' एवं 'लूँ' क्रियायें राजस्थानी भाषा की हैं।

(२) लोग खदाया उसकें पाम (१०४/६२६) इसमें खदाया क्रिया पद ठेठ राजस्थानी भाषा का है जिसका अर्थ भेजा होता है। क्रिया पदों की तरह शब्दों का और भी अधिक प्रयोग हुआ है। राजस्थानी शब्दों में से कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं—

ज्यौहार (३२/४४६) आभ्योली (४२/६६) जनवास (५८/६८) बीजणा (२०७/२००४), तिसाया (२२६/२२७४) लेणकूँ (२०६/२२७४), पाणी (२०६/१६६०), भाभी (१६४/१८२७), जान (बरान) (५८/६८), जिनाबर (जानबर १५८/१३५०) व्याहरण (१७१/१५७८)।

राजस्थानी शब्दों के प्रयोग की तरह उर्दू शब्दों का भी पुराण में यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है जिसका प्रमुख कारण सभाचन्व मुनि का जन सभर्क ही कहा जा सकता है। वकील (२७/३८३), फरमान (६१/४५५), दिलगीर (२०७/२०१३), फरमावो/मलाम (१६२/१८०४) जैसे शब्दों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में देखा जा सकता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्दों का मरनीकरण भी कर दिया है। 'मलहम' शब्द का ह निकालकर मलम (८४/३५४) में काम चला लिया है।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा का भी पुराण पर स्पष्ट प्रभाव है। तोकूँ, मोकूँ शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त शब्दों के घाये 'कूँ' प्रत्यय शब्द जोड़कर प्रयोग करने की ओर कवि की अधिक रुचि रही है। जैसे—समुद्र कूँ (३६२६) मोकूँ (३६२८) भानकूँ (३६३०), रामकूँ (३६३७) शब्दों की पुराण में बहुतायत है।

लेकिन विभिन्न भाषाओं का प्रभाव होने हुए भी पद्मपुराण मुख्यतः खड़ी

कभी की महान् कृति है जो कवि के भगवत् भाषा ज्ञान की द्योतक है। हिन्दी भाषा में १७वीं शताब्दी में ही खड़ी बोली की परिष्कृत रचना मिलना भाषा साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

रस एवं वर्णन—

पद्मपुराण शुद्ध सात्विक कृति है जिसका पर्यवसान ज्ञान्त रस प्रधान है। इसके प्रमुख पात्र, राम, लक्ष्मण, रावण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव, सीता आदि हैं जिनके जीवनवृत्त के चारों ओर पुराण का कथानक घूमता है। प्रारम्भ में कवि ने भगवान् महावीर के पञ्चकल्याणक एवं उनकी दिव्यध्वनि द्वारा निर्मित प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर २०वें तीर्थंकर मुनिमुत्त नाथ के पावन जीवन का वर्णन किया गया है जो एक भूमिका के रूप में है एवं राम के जन्म के पूर्व में होने वाले महापुरुषों की स्मृति भाषा है। इसके अनतिरिक्त बानर वन की उत्पत्ति, हनुमान का जीवन, उनके पिता पवनजय एवं अंजना का विवाह, बिरह एवं मिलन, राक्षस वन, रावण का जन्म, लका की स्थिति, रावण का पराक्रमी एवं धार्मिक जीवन, रावण द्वारा लका की प्राप्ति, वैभव, अपार शक्ति एवं विशाल साम्राज्य आदि का वर्णन भी रामकथा के लिये पूर्व पीठिका का कार्य करते हैं। इसलिये पद्मपुराण की रचना समग्र दृष्टि से पूर्ण है उसमें कहीं पर भी न कोई अंश छूट सका है और न किसी अंश को अनावश्यक महत्त्व दिया गया है। इसलिए पद्मपुराण में कभी तीर्थंकरों का जन्म होता है, कभी भरत बाहुबलीयुद्ध, माली द्वारा लका पर आक्रमण, वैश्रवण द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध और अन्त में राम रावण युद्ध होता है जहाँ बीररस एवं दूसरे रसों का खुल कर प्रयोग हुआ है वहीं दूसरी ओर ससारस्वरूप वर्णन (पृष्ठ ४७), तत्त्ववर्णन (४३३), राम की तपस्या (५५६६) जैसे वर्णन वैराग्य प्रधान वर्णन हैं जिसमें ज्ञान्त रस का प्रवाह होता है।

पद्मपुराण में शृंगार रस का भी बहुत प्रयोग हुआ है। पद्मोत्तर की सुन्दरता, मन्दोदरी का सौन्दर्य वर्णन, आदि ऐसे कितने ही स्थल हैं जिनमें सौन्दर्य का मुक्त हस्त से वर्णन हुआ है। श्रीकण्ठ की पुत्री की सुन्दरता का वर्णन देखिए—

रूपवंत ज्यू पुन्यू चंद, घटे बडै यह सदा अनन्त।

दीरघ नयन अवण सो लमे, देल कुरग बन माहि भगे ॥५५/१३

दन निमके उयो हीरो की उयोत, मस्तक कपोल पृथ्वी उद्योत।

नासा भीह बनी छावि बनी, बनी कीर्त न जाये गिनी ॥५५/१४

रावण की रानी मन्दोदरी की सुन्दरता भी देखिये—

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहै, वह घटे बडै या समनित रहै।

किम कबिराज कहै मृग नैन, बई भय दायक सुख की देन ॥७८/२६८॥

इसी तरह वीर रस से तो पद्मपुराण भरा पड़ा है। पुराण में स्थान स्थान पर युद्ध होते हैं जो वीर रस से पूर्ण हैं। राम राक्षस युद्ध का एक वर्णन देखिये—

घोडा से घाडा तब लड़ें मंगल सौं मंगल प्रति भिडे ।
रथ को रथ पर दिया हिया पेल, घसी भिडे ज्यों खेलत डूँ मत्स ॥३२६६॥
दोउधा नरखै विद्या बाण, गोला गोली करै धमसान ।
मारै खडग टुक डूँ होइ, पीछा पाव न हटिहै कोइ ॥३३००॥

विभीषण रस—

युद्ध में योद्धाओं के सिर, हाथ, पाव, कट कट कर गिरने लगे। रक्त की धारा बहने लगी और सारा दृश्य भयानक लगने लगा। इसी का एक वर्णन देखिये—

परवत मुड़' भुजा का भमा, पड़ी लोथ पग आई न दिया ।
सोनत नदी बहै तिहा लोथ, हायी बोडे रथ सूर बहोत ॥३७३१॥
जैसे मगरगच्छ जल तिरै, घूमै लोथ रक्त मै फिरै ।
जेता रण भुभा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७३२॥

शान्त रस—पुराण में यत्र तत्र ससार के विरक्तता, असरता, तप का महत्व एवं तत्त्वों का वर्णन मिलता है जिसको पढ़ कर मन को शान्ति मिलती है तथा मन रागादि भावों से दूर हटता है।

जे जीव दृढ समकित धरै, मिथ्या धरम निवार ।
निसकै पावै परम पद, भुगतै सुख अपार ॥४६६१॥
जीव तत्व ससारी दोइ, अभ्य अभव्य उभय विष होइ ।
अभव्य तपस्या करै अनेक, काया कष्ट दिना विवेक ॥४६६२॥

रस विधान के समान अलंकारों का भी अच्छा उपयोग हुआ है। इसलिये उपमा, उत्प्रेक्षा जैसे कुछ अलंकार तो यत्र तत्र मिलते हैं।

पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन—

पद्मपुराण भारतीय संस्कृति का कोश ग्रंथ है। उसमें संस्कृति एवं समाज का अच्छा वर्णन हुआ है। उसके नायक राम हैं जो भारतीय संस्कृति के प्रेरणा स्रोत हैं। राम की भक्ति एवं उनका गुणानुवाद पृथ्वी वध का कारण है। पापों से मुक्ति दिलाने वाला है। राम के गुण अष्टादश हैं जिनका वर्णन करना भी साधारण कार्य नहीं है—

राम नाम गुन अगम अथाह, ते गुन किस पं वरने जाय ।
जा मुख राम नाम नोसरै, मो सकट मै बहुरि न परै ॥२३॥

जा घट राम नाम का वास, ताकै पाप न छाबै पास ।

जिन भवराज राम बस सुने, देवलोक सुख पावै घने ॥२४॥

इसलिये कवि पद्यपुराण के अन्त में लिखा है कि जो व्यक्ति इस राम काव्य पद्यपुराण को पढ़ेगा, स्वाध्याय करेगा, उसे तीनों लोकों का यश, सम्पत्ति एवं वैभव प्राप्त होगा—

जो कोई सुखें धरम कै काज, पावै तीन लोक का राज

धरम ध्यान सुं पाप न रहै, केवल ज्ञान जीव वह लहै ।

१. राम

राम स्वभाव से सरल, उदार, दयालु हैं। माता पीता के पूरे आज्ञाकारी हैं अपने भाइयों से स्नेह रखने वाले हैं। शक्ति बाण द्वारा लक्ष्मण के भूच्छित होने पर वे जिस तरह विलाप करते हैं वह उनके भ्रातृ प्रेम का झूठा उदाहरण है—

मैं देख्या भाई का मरण, अबर भया सीता का हरण,

काठ मकेल अग्नि में जरू, लक्ष्मण का कैसे दुख भरू ॥३३१-३॥

राम प्रजावत्सल हैं। प्रजा के दुख में दुखी एवं सुख में सुखी होने वाले हैं। प्रजा असन्तोष अथवा सीता के प्रति गलत धारणा के कारण वे गर्भवती होने पर भी सीता का परि त्याग करने में किञ्चित् भी नहीं धरते। इसके अनतिरिक्त अग्नि परीक्षा लेते समय भी कठोर हृदय वाले बन जाते हैं इसलिए उन्हें हम उन्हें “वञ्चा-दपि कठोराणि मृदूनि कुसमादपि” वाले स्वभाव का कह सकते हैं। राम पद्यपुराण के नायक है। पुराण का सम्पूर्ण कथानक उनके पीछे चलता है।

राम शक्ति के पुत्र भी हैं। युद्ध में विजय प्राप्त करना ही उनका स्वभाव था। रावण जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध करने में वे जरा भी पीछे नहीं हटे और अन्त में उस पर विजय प्राप्त करके ही लौटे। लेकिन अकारण युद्ध करना उनका स्वभाव नहीं नहीं था। वे रावण को अन्त तक समझाते रहे और युद्ध को टालते रहे। राम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी हैं। जो भी उनकी शरण में आ गया वह उनका होकर रह गया। सुग्रीव, हनुमान, नल नील जैसे योद्धाओं को उन्होंने सहज ही अपनी ओर मिला लिया। बिभीषण जब प्रबन्ध बार ही उनकी शरण में आया तभी उसे लकाधिपति कह कर सहज ही में उसे भी अपने पक्ष में कर लिया।

राम जिन अन्त हैं। जहाँ भी अवसर मिला इन्होंने जिन मन्दिर के दर्शन किये। देशभूषण एवं कुलभूषण जैसे महाभुजियों को आहार देने में कभी पीछे नहीं रहे। वे अनेक विद्याओं के चारी हैं।

राम जीवन के अन्तिम समय में बीजा लेते हैं तथा घोर तपस्या करते हैं।

वे जब आहार के निमित्त जाते हैं तो लोग द्वारापेक्षण करते हैं और उनको आहार देने में अथवा ग्रहोभाष्य समझते हैं ।

आत्म ध्यान करे रामचन्द्र, वाणी सुनत होई आनन्द ।

इनके गुण अति अगम अपार, राम नाम त्रिभुवन आधार ॥५५६६॥

रसना कोटिक करै बखान, उनके गुण का अन्त न आन ।

इन्द्र धरणेन्द्र जो अस्तुति करै, ते नहीं वोढ अन्त निखरै ॥५५६७॥

राम को केवल ज्ञान होता है और निर्वाण प्राप्त करते हैं ।

२ लक्ष्मण

राम के लघु भ्राता है लेकिन आठवें नारायण है । छाया की तरह राम की सेवा में रहते हैं । जन्म से लेकर मृत्यु तक वे अपने बड़े भाई का कभी साथ नहीं छोड़ते हैं । यद्यपि वे नारायण हैं, शक्तिशाली हैं, अनेक विद्याओं के अधिपति हैं लेकिन अपने बड़े भाई को देवता तुल्य मानते हैं और उनकी सेवा करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं । वे चक्रवारी हैं । रावण के चलाए हुए चक्र को वे ग्रहण करते हैं और उसी चक्र से रावण का सिर काट देते हैं लेकिन इसका उन्हें किञ्चित् भी अभिमान नहीं है लेकिन शत्रुओं के लिये वे यम के समान हैं । लक्ष्मण की मृत्यु देखकर राम विलाप ही नहीं करते किन्तु अपने भाई का मृतक शरीर लिये फिरते हैं ।

रामचन्द्र देखै निरताइ, पीत वरण देखै सब काइ ।

किह कारण कृठा इह भ्रात, मुलसो कबहु न बोलै बात ॥५४४२॥

अन्य दिवस मोहि आवत देखि, आदर करता पटाभियेक ।

मेरे साथ बहुत दुल सहे, दण्डक वन माही जब हम रहे ॥५४४३॥

रावण मारै मेरे काज, रघुवसी की राखी लाज ।

तुम बिन कैसे जीउ आप, कैसे इह भेटो सताप ॥५४४४॥

३. सीता

जनक सुता सीता राम की आदर्श पत्नी है । वह अपने श्रील के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है । वह भारतीय सस्कृति की जीनी जागती मूर्ति है । पति की अनुयायिनी है तथा उनकी आज्ञा पालन ही उनके जीवन की उलम्बि है । बनवास में वह उनकी छाया की तरह सेवा करती है । अपहरण के पश्चात् वह रावण की अशोक वाटिका में रहनी है । रावण उसे फुसलाने का भरसक प्रयत्न करता है लेकिन उसके पतिव्रत के कारण किसी की नहीं चलती । वह हनुमान की बातों पर जब तक विश्वास नहीं करती जब तक वह स्वयं आश्वस्त नहीं हो जाती ।

सीता कहै सुणु हनुमान, तुम अन राम कद की पहचान ।

मैं तुमकुं नहीं देख्या सुण्या, किस बिष उणसो सनबध बण्या ।

उनुं के कारण धार्ये संक, मन में कछु धन धाजी संक ॥३०६८॥

बधोरा सूं समझाओ बात, मिटै सवेह हुरिण बिरतात ।

सकनए तणी कहो कुसलात, छाप एह पाई किए भाति ॥३०६९॥

सीता को राम वन में छुड़ा देते हैं और अपने आग्य भरोसे जीने को मजबूर करते हैं फिर भी सीता अपने ही आग्य को कोसती है और राम को कभी दोष नहीं बेती ।

ऐसा कर्म उदय दृष्या धाव, के सुख खोंसि भेजी इस ठाय ।

कौ मैं बच्छ बिछोहा गाय, कौ मैं बाल बिछोह गाय ।

कौ सरबर नै बिछोहा हुंन, कौ परबोनीका राख्या अंस ॥४५६७॥

राम सीता की अग्नि परीक्षा लेते हैं और उसमें बहू खरी उतरती है । वास्तव में विश्व में यही एकमात्र उदाहरण है—

पचनाम हिरदै संभाल, जिन बीसों सुमरे तिहकाल ।

सरब भूषण को करी नमस्कार, मन बच काय सत रहे हमार ॥४६२५॥

अगनि मोभत तं जो ऊबरुं झूठ कहैं तो त्रिणां परिजलूं ।

पच नाम पडि चिता में पडी, सीतल भई अगनि तिह बडी ॥४६२६॥

४. रावण

रावण प्रति नारायण है । वह बाल्य अवस्था से ही गुरबीर एवं युद्धमित्र है । कु भक्त एवं विभीषण उसके लघु भ्राता हैं तथा बन्धनला उसकी बहिन है । जब उसे मालूम पड़ता है कि पहिले उसके पिता लंका के राजा थे जो उनसे छीन ली गयी है तो माता को अपना पौष्य दिललाता है और फिर बिद्याएं सिद्ध करने बैठ जाता है और एक साथ ग्यारहसँ बिद्याएं प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है ।

बसानन ग्यारहसँ बिद्या लई, जिनके गुण का पार न कहो ॥२३४/७५॥

बिद्याएं सिद्ध करने के पश्चात् वह सहज ही लंका पर विजय प्राप्त कर लेता है । उसके बस तिर एवं बीस गुजाए हैं । वह महान् बलवान है जिसे देखते ही बड़े-बड़े योद्धाओं के प्राण सूख जाते हैं । लेकिन वह जिनेन्द्र का भक्त है । जिन पूजा में उसका पूरा विश्वास है । युद्ध के समय भी वह पूजा करना नहीं छोड़ता ।

श्री जिन धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।

पायो लंका राज, राक्षसवंसी जब तिलक ॥४६५॥

रावण इन्द्र पर विजय प्राप्त करता है तथा अर्धचंद्री बन कर समस्त पृथ्वी पर राज्य करता है । वह व्रत नियमों का पालन करता है और उन्हीं के नियमों के पालन में उसमें अपार शक्ति उत्पन्न होती है । वह अनन्तवीर्य भुनि के पास निम्न प्रकार व्रत पालन करने का निश्चय लेता है—

एक भ्राति व्रत पाली सही, जे नारी मुक्त इच्छे नहीं ।

ताको सोल न खड्डु जाई, इहै वरत मुख बोलवै राई ॥१०६३१॥

रावण जीवन में सीता हरण जैसी एक ही गल्ती करता है लेकिन इस एक ही गल्ती ने उसकी सारी कीर्ति धो डाली और वह सदा के लिए कलंकित बन गया । लेकिन हरण के उपरान्त भी वह उससे दूर से ही बात करता है । स्पर्श तक नहीं करता क्योंकि स्पर्श करने से सतिव्र मंग होने का डर है । सीता को वापिस करने में उसे अपयश का डर लगता है इसके अतिरिक्त वह अपनी सामर्थ्य के सामने श्रीगो को तुच्छ समझता है ।

मेरा बल है प्रगट तिहू लोर, तू काई चितवै मन सोक ।

कहा राम है भूमिगाचरी, जिसका भय तू चित्त में धरी ।

उनकी सेना दहबट कर, राम है बाधि बंदि मैं घर ।

जे मै आसी सीता नारि, फेर सकू कैसे इणबार ॥३६४०॥

लेकिन राम के समक्ष रावण का पौष समाप्त हो जाता है । उसका वक्र उसके हाथ से छूट कर लक्ष्मण के हाथ चला जाता है और उसकी इह नीला समाप्त हो जाती है अनेक विद्याये भी उसका साथ नहीं देती ।

५. हनुमान—

हनुमान वानर वंशी विद्याधर है । उसके पिता पवनजय एव माता अजना का चरित्र लोक में प्रसिद्ध है । हनुमान प्रारम्भ में ही वीरता के धनी है पहिले वह रावण का साथ देते हैं लेकिन राम मिलन के पश्चात् वह रावण का विरोधी बन जाते हैं । हनुमान राम का सन्देश लेकर लका में जाता है । सीता से भेंट करता है । राम के समाचार कहता है । वह पकड़ा जाता है और रावण के समक्ष उपस्थित होता है । लेकिन अपने विद्यावन से मुक्त होकर लका का दाह करता है । राम लका पर आक्रमण करते हैं तो वह सेनापति के रूप में अगली पंक्ति में रहते हैं । लक्ष्मण के मूर्छित होने पर वह अयोध्या जाकर विशल्या को लाते हैं । जीवन के अन्त तक वह राम के साथ रहते हैं तथा अन्त में तपस्या करते हुए मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं । हनुमान का जीवन जैन साहित्य में बहुत लोकप्रिय रहा है इसीलिए सभी भाषाओं में उनके जीवन के सम्बन्ध में कितनी ही कृतियां लिखी गयी हैं ।

पद्मपुराण का सामाजिक जीवन—

पद्मपुराण में देव, विद्याधर, भूमिगाचरी, म्लेच्छ जाति के प्राणियों का वर्णन आता है और इन्हीं में से पुराण के प्रमुख पात्र बनते हैं ।

देव—देवगति के धारक देव स्वर्ग में रहने वाले होते हैं । कभी वे तीर्थंकरों के पंच कल्याणकरों में आते हैं तो कभी युद्ध भूमि में वृष्टि करते हैं । यम एव यक्षिणी देव जाति में ही गिनी जाती है । देवों के विक्षिप्ता ऋद्धि होती है जिससे वे अपना कुछ भी रूप बना सकते हैं ।

विद्याधर—मनुष्य जाति में ये विद्याधर विशेष जाति के होते हैं जो आकाशचारी होते हैं। विमानों के द्वारा ये आकाश में चलते हैं। अंबुजा, पवनंजय, हनुमान सभी विद्याधर जाति के मनुष्य थे। इनकी विद्यामें स्वतः ही प्राप्त हो जाती है। विद्याओं के धारक होने के कारण इन्हें विद्याधर कहा जाता है। भरत को राजसभा में विद्याधर तरेख भी थे। अंबुजा को पुत्र के साथ विद्याधर नगर ले जाया गया था।

अंजनी मति बिबाण बंठाई, बसतमाला सग नई बडाइ।

विद्याधर ले निजपुर चल्या, सुगन मुहूरत साध्या भला।

बंठा विबाण चले आकास, देखी रवि बालक आकाश ॥१३२६॥

भूमिगोचरी—भूमिगोचरी का अर्थ मनुष्यों से है जो केवल भूमि पर ही चलते हैं। राम, सीता, लक्ष्मण, जनक, दशरथ आदि सभी भूमिगोचरी कहलाते थे। रावण अपनी शक्ति के सामने भूमिगोचरियों की शक्ति को कुछ नहीं समझता था।

म्लेच्छ—म्लेच्छ शब्द में रहने वालों को म्लेच्छ कहा जाता था। रावण का प्रदेश म्लेच्छ शब्द में गिना जाता था। ये म्लेच्छ बड़ी दुष्ट प्रकृति के होते थे और सत्पुरुषों को तंग किया करते थे। रावण यद्यपि राक्षस वंशी था लेकिन उसकी गिनती भी म्लेच्छों में आती थी ये अतिशय शक्तिशाली होते थे। राजा जनक ने दशरथ से म्लेच्छों से छुटकारा पाने के लिए ही राम लक्ष्मण को आमन्त्रित किया था।

म्लेच्छ मोहि घेरया है आय, थाणा येरा दिया उठाय।

पीड़ा परजा कुं वे हैं घनी, देबल हाहि यउ तिहां हणी

साधा कू देहै उपसर्ग, जिसकू तिसकू मारेख डग ॥१३००॥

विवाह वर्णन

पुराण युग में पति पत्नि के रूप में रहने के लिए विवाह बन्धन आवश्यक माना जाता था। पद्यपुराण में विवाह के दो रूप सामने आते हैं एक स्वयंवर द्वारा, दूसरा सप्तपदी द्वारा बारात लेकर कन्या के बिता के घर जाकर। दोनों प्रकार के विवाह जन समाज द्वारा मान्य थे। अमरप्रथ विवाह के लिए बारात लेकर गये थे। नगर के पास बारात आने पर अगवानों की गयी थी (४८/६७) बारात ने जनबाला किया था। विवाह में कपड़े, गहने, हाथी एवं घोड़े बिबे बबे थे। बारात को जीमन-चार देकर सम्मान किया था।

भीमाला का स्वयंवर रखा गया था। कन्या ने अपने पसन्द के घर के गले में माला पहनायी थी। रावण ने सुभ मुहूर्त में मन्वीदरी के साथ विवाह किया था। (७४/२८८) सीता ने स्वयंवर में राम के गले में माला डाली थी।

जीमनवार

विवाह लगन के पश्चात् विशाल रूप में जीमनवार होता था। पूरे नगर/गांव को जीमनवार दी जाती थी। सीता के स्वयंवर के पश्चात् एक बहुत बड़ी जीमनवार की गयी थी। सोने के थालों में खाना, चांदी के कटोरे में दूध पीना उस समय साधारण बात थी। मिष्ठानों का विवरण पढ़ने योग्य है—

फीणा फीणी घर बरफी स्वेत, घेवर लाडू परस्वा हेत ।
 लुरमे मीरा पूरी घनी, बहुत सुवास तनोकी बनी ॥१६४१॥
 धोल बड़े व्यजन बहु भाति, हरे जरद बहु गणे न जात ।
 भात दाल अतिअत सुवास सिलरण का दौना धरि पाति ॥
 तामे दूरा लायची लोग, मेवा मेल्या तिहां मोहनभोग ।
 भीठा मिरच जीरो का मिल्या, लूण सघात तिहां चिल्या ॥१६४३॥

जीमने के पश्चात् पान, लोग, केसर, जावत्री दी जाती थी। विभीषण ने जब राम के स्वागत में विविध पक्वान्न बनाये थे लेकिन उनमें भात दाल दही दूध आदि की रसोई प्रमुख थी—

बहु पकवान घर व्यंजन घने, भात दाल सामग्री मिले ।
 कनकतवाई सोबन धाल, बंठा जिमें सब भुपाल ॥३६२६॥
 निरमल जल सौ झारी भरी, पीवें सूपति मानें रली ।
 दूध दही जीमें सब सूप, घट्टस व्यजन बरों अनूप ॥३६३०॥

स्वप्न दर्शन और स्वप्न फल—

स्वप्न दर्शन आधी घटमा के सूचक होते हैं। तीर्थंकर की माता को जो मोहन स्वप्न आते हैं उनसे माता के उदर से तीर्थंकर पुत्र जन्म के साथ उनके दूसरे लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं।

होय पुत्र फल मन आनन्द, जानहुं पूरनवासी बन्दि ।
 सुर नर इन्द्र करेये सेव, तीन लोक के दानव देव ॥१७७॥
 भव सागर का तोड़ै जाल, धर्म सरीर धर्म प्रतिपाल ।
 विद्याधर नृपति पमुपतो, इनमें बहोत चढावें रती ॥७८॥

राजा श्रेष्ठिक को पद्मपुराण के कथानक के प्रति आश्चर्य एवं जिज्ञासा स्वप्न में ही प्रतिभाषित हो गयी थी जिसका समाधान भगवान महावीर की दिव्यशक्ति द्वारा हो सका था (१२/१६८-१७८)। मरुदेवी को भी सोलह स्वप्न आये थे जिनका फल तीर्थंकर ऋषभदेव के रूप में पुत्र उत्पन्न होना था। कंकेयी ने पुत्र जन्म के पूर्व तीन स्वप्न देखे थे—

प्रथम सिंध गजी रव करे, हस्ती हनै बहुत मन बरे ।
 दूजे मीगल देख्या बली, सरोवर में वह करता रली ॥७९/१८०॥

कमल उखारि लिया मुख माहि, मानु बेरे मन्धिर जाहि ।

तोये देख्यो दूरछ चन्द्र, सुपने देख जया भानन्द ॥७१/१८१॥

इसी तरह लवकुश होने के पूर्व सीता ने भी स्वप्न में निम्न प्रकार देखा था—

रात पाछली बटिका प्यार, सुपिनां निब पाई तिहु बार ।

दोई केहरी गर्जत देखे, सामर जल निर्मल पेरे ॥४४८१॥

देव विमाण प्राबता जाणि, जानुं सुल मे बसे प्राण ।

भए प्रभात जायण के बेर, मार्ने सुलीजन मधुरी टेर ॥४४८६॥

उसी तरह राम की माता अपराजिता एवं लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने भी स्वप्न देखे थे जिनका फल राम और लक्ष्मण जैसे महापुरुष पुत्र के रूप में उत्पन्न होना था ।

शकुन एवं शकुन फल

स्वप्न स्वयं व्यक्ति को आते हैं जबकि शकुन अन्यत्र होते हैं जो शुभ शकुन एवं अपशकुन दोनों तरह के होते हैं । जैसे ही अयोध्या में राम और लक्ष्मण का जन्म होता है रावण के बड़ा अपशकुन होते हैं—

रावण के घर उलकापात, बिजली परी कोशिर बह जात ।

रात दिवस रोबं मजार, कूकर रोबं बारम्बार ॥१७११॥

मंगल चारि सुपने मांकि, बोलै काय होइ जब साकि ।

उल्लू बोलै दिन तिहाँ धणै, ऐसी चिता मन रावण तखै ॥१७१२॥

इसी तरह युद्ध के अन्तिम दिन जब रावण आयुष्माला में अस्त्र लेने पहुँचता है तो उसे फिर कुछ अपशकुन होते हैं जिससे उसको बड़ी चिन्ता होती है ।

रावण आयुष्माला बल्या, तिहाँ सुगम खोट सहुं मिल्वा ।

इड सो छत्र पड़्यो भूमि, टूटी घुरी आवा रथ भूमि ॥१६२०॥

आगं होइ निकल्वा मज्जार, स्वान कान भाइया तिन बार ।

खोट सुगम रावण को भये, मंदोदरी सोचै निज हिये ॥१६२१॥

राम द्वारा गर्भवती सीता को वन में एकाकी छोड़ने से पूर्व उसकी भी राहिनी धांस फड़कने लगी थी तब उसने निम्न प्रकार बिचार भी किया था—

दक्षिण आलि फरकै सिया, पश्चाताप मन मैं करै सिया ।

करम उदै कन बेहड़ फिरो, वन माहि ते रावण अपहरी ॥४५०५॥

युद्ध वर्णन

पथपुराण में युद्धों का वर्णन विस्तृत रूप से हुआ है । यह युद्ध राम रावण के मध्य होने वाला तो लोक चर्चित है लेकिन भरत बाहुबली युद्ध, माली द्वारा लका पर आक्रमण, वैश्रवण राजा द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध वर्णन भी

पठनीय है। ऐसा लगता है वह युग भी युद्धों का युग था और बिना हार जीत के कोई समस्या नहीं सुलझती थी। लेकिन भरत बाहुबली युद्ध दोनों जाईयों के मध्य होता है उसमें सेना तो खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रहती है व्यर्थ के खून बहाने के यह भ्रष्टाचार था। इन युद्धों में मेका, वरुणी, घनुष, तलवार, शक्र, यदा जैसे हथियारों के अतिरिक्त अग्निबाण, मेघबाण, धुंआबाण, अंधकार बाण, प्रकाश बाण जैसे हथियारों का प्रयोग होता है। युद्ध में नागपासनी विद्या, शक्तिबाण जैसी विद्याओं का भी खुलकर प्रयोग किया जाता था। रावण के अकेले के पास ग्यारह सौ विद्याएँ थी और बहुरूपणी विद्या उसने बाद में प्राप्त की थी। कभी-कभी बड़े भयंकर युद्ध होते थे जिनमें जन हानि बहुत हुआ करती थी। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन देखिये—

परबत मुड़ भुजा का भया, पड़ी लोथ पग जाई न दिया।

सोनत नदी बहै तिहां लोथ, हाथी घोड़ रथ सूर बहोत ॥३७३१॥

जैसे मगर मच्छ जल तिरै, ऐसे लोथ रक्त में फिरै।

जेता रण भूभा दोउ सेन, तिनका कहि न सक कोइ बैन ॥३७३२॥

रावण को तलकूबड से युद्ध करने में विमान से गोलियाँ, गोले बरसाना पड़ा था। चार योजन (कोश) तक गोलों की मार होती थी। कवि सभाशक्त के समय में तोप और गोली से युद्ध होने लगा था। इसलिये उसने इस युद्ध में भी उनका वर्णन कर दिया जो तत्कालीन युद्ध कौशल का परिचायक है। युद्ध में विमानों का प्रयोग होता था। विद्याधर तो विमान से ही आते जाते थे। रावण का पुष्पक विमान का नाम तो सर्वत्र प्रसिद्ध है।

नगरों का वर्णन

पद्यपुराण में अनेक नगरों का उल्लेख आया है। इनमें से कुछ पौराणिक हैं तथा कुछ ऐतिहासिक। वैसे सभी राजाओं के अपने-अपने नगर थे जहाँ से वे अपने देश का शासन करते थे। सर्वप्रथम कवि ने राजगृही नगरों का वर्णन किया है जहाँ सात मन्जिले महल थे जिनमें अति चित्रों की भरमार थी। चौड़े-चौड़े बाजार एवं चौपट थी। नगर के चारों ओर से चौड़ी एवं गहरी खाई थी यही नहीं नगर का व्यापार भी खुब तमड़ा था। जहाँ सराफी, वस्त्र व्यवसाय, लेन-देन आदि होता रहता था।

ऊँचे मन्दिर हैं सत लिले, सबै सरस राय के बने

बसै सधन दोस नहीं भग, जिसे चित्र जिम भले सुरन ॥

उज्जल वरण चबल हर किये, छत्री कलस कनक के दिये ॥१/३७॥

+

+

+

+

वहाँ सराफ सराफी करे, बोलें सति भूठ परिहरें ।

कसे कसौटी परखे दाम, लेवा वेई सहज विवाम ॥

कुंडलपुर नगर तो स्वर्ग के समान था जहाँ न कोई दुखी व्यक्ति था और न दरिद्रता से धिरा हुआ । महलों के पास बाग बगीचे बने हुए थे । यही नही भरनो मे जल भी बहता रहता था ।

कुंडलपुर सिद्धारथ राव, महापुनीत जगत में नाठ ।

सोभा नगर ना जाइ गिनी, सुरगपुरी की सोभा बनी ॥५/५६॥

दुःखी दलद्वि न कोई दीन, पंडित गुनी सकल परबीन ।

हाट बाजार चौहटे बने, सोभा सकल कहां ली भर्न ॥५/९०॥

बाहुबली की राजधानी पोदनपुर की सोभा तो और भी निराली थी जहाँ सभी मकान समान थे । घरों में रहने वाली स्त्रिया अप्सराओं से कम नहीं लगती थी । बड़ी कठिनाता से भरत के वकील को बाहुबली का राजमहल मिला था ।

ऊँचे मन्दिर सब इकमार, दूँडता पहुँचा राजदरबार ॥३८४/८७॥

घर-घर नारी जागि अपछरा, राजमहल सब सेती खरा ॥

इसी तरह मिथला नगरी, उज्जयिनी, महेन्द्रपुर नगर,^१ लका,^२ अयोध्या^३ आदि का पद्मपुराण में वर्णन आया है वह पढ़ने योग्य है ।

महावीरवाणी

पद्मपुराण में यत्र तत्र तीर्थंकरों के मुख से अब मुनियों के द्वारा धार्मिक उपदेश दिया गया है । जीवन पालने के नियम बताए गए हैं तथा चरित्र-निर्माण के कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं इसलिए पद्मपुराण केवल कथानक मात्र न रहकर जीवन-निर्माण का ग्रन्थ भी बन गया है । सामान्य व्यक्ति के लिए निम्न क्रियाओं को आवश्यक बतलाया गया है—

तिहुँ काल सामायक करे, सात बिसन आठौं मद हरे ।

सोलहकारन का व्रत धरे, दया धर्म दस विष बिस्तरे ॥१०/१३७॥

अवार दान दे विस समान, औषध अन्न अहार समान ।

सास्त्र दिया पावे बहु ग्यान, विनयवत होई तजि अमिराम ॥१०/१३८॥

कवि ने दान पर बहुत जोर दिया है तथा बन होने पर भी दान नहीं देने को अप्रयश एवं पापबध का कारण बतलाया है—

१. देखिये पृष्ठ संख्या २६८३

२. " " ३६०५

३. " " ४०६२

देइ चउविष दान, अर्थ पाय धर्महि करै ।

ते पावै निरबान, जस प्रगटै तिहुं लोक मे ॥११/१५३॥

अन्वय— धन पाया कछु पुण्य न किया, अपजस पोट अपने सिर लिया ।

आपै लाय न खुवावे और, सदा बहै चिता की डोर ॥१५४॥

जोडि द्रव्य धरती तल दियो, कैसे काहू ने सौंपियो ।

कं वह धन लेबै हर चोर, कं खोया जुवा की ठौर ॥१५५॥

कं वह सात विसन सो गया, कं रिए दिया तिहा थकी रह्या ।

कंह राजि नैं लीया दण्ड, किरपन भया जगत मे भड ॥१५७॥

ऐसे लगता है कि कवि के समय मे रात्रि भोजन त्याग का नियम कुछ शिथिल हो गया था तथा पानी को छानकर पीने की प्रवृत्ति भी कुछ कम हो रही थी । इसलिए इन दोनों नियमों को दृढ़ता से पालन करने पर जोर दिया है तथा नियमों को नहीं पालन करने वाले की खूब मस्सना की गयी है ।

भोजन रखण तजै तिहुं बात, ते कहीए भानुस की जात ।

जे नर रखण भोजन लाहि, राख्यस सम जासिये ताहि ।

दोहा

जे नर निमी भोजन करै, कंद मूल फल खाइ ।

ते बिहुंगति भ्रमते फिरै, मोक्षपथ तिहा नाहि ॥१०५१॥

इसी तरह बिना छाना पानी सेवन करने का निषेध किया है—

अणछाण्या जो पीबै नीर, करै स्नान मजन सरीर ।

कदमूलादिक सब फल लाय, सत समय पात्यो नही जाय ॥१५३॥

अंस जे संबै मिथ्यात्व, ते नर मर करि नरके जात ॥

लेकिन भूखे को भोजन देने एवं प्यासे को पानी पिलाने मे अपार पुण्य बतलाया है तथा सरल चित्त रख कर दूसरे के दुःख को दूर करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

मूला भोजन प्यासा नीर, सरल चित्त जानें पर पीर ।

पुनि संयोग लहै गति देव, नरपति सखपति उत्तम कुल भेव ॥१६१॥११

पराधीनता

कवि ने पराधीनता को बहुत बुरा बतलाया है ।

पराधीन कलु बोल न सके, जिहा भेजे तिहा पल नही टिकै ।

जैसी आशा सोई होय, ताको वरज सकं नही कोइ ॥४५८७॥

सुभाषित एवं सूक्तियां

पुराण मे विविध कथानक आये हैं इन कथानकों के प्रसंग में कही कहीं कवि ने बहुत सुन्दर सुभाषित एवं सूक्तियां कही है जो सदैव मनन क्षिप्तन एवं जीवन मे

उतारने योग्य है। इन सुभावितों से काव्य लीप्य बड़ा है तथा वर्णन में मधुरता प्रायी है। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

- (१) किसकी पृथ्वी किसका राज, भी सम बहुत कर गये राज (३०/४२३)
ये शब्द भरत ने ध्यानस्थ बाहुवर्षी को कहे थे जिनके हृदय में एक शक्य था कि वह भरत की पृथ्वी पर तपस्या कर रहा है।
- (२) भाने को पीछा न कीये ताल (६५/८६)
युद्ध में जान बचाकर भागने वाले का पीछा नहीं करना चाहिए।
- (३) ऐसा यह संसार स्वरूप, नटवत मेघ करै बहुरूप (६६/५५५)
संसार की वास्तविक स्थिति बतलायी है जिसमें यह प्राणी नट के समान विभिन्न रूप धारण करता रहता है।
- (४) जो नारी परपुरुष को रमै, सो नारी नीची गति भ्रमे (११८/८१६)
- (५) ज्यों पकड़े तीतर न बाज (१२४/८६३)
- (६) सोम बिजोम रहट की घड़ी, कबही रीती कबही भरी (१७२/१५३१)
- (७) होणहार टार्यौ किम टरे (१८१/१६६१)
- (८) होणहार कैसे टलै, बहुविष करै उपाय।
अणहोणी होणी नहीं, इह निमित्त का भाव ॥१८१/१६६२
- (९) बेटी किसके बरै समाय (२०६/२०३५)
- (१०) दिन सेती ज्यु भोजन लाय (२२३/२२३४)
- (११) जती सन्यासी बिप्र अतीव, बाल बृद्ध नारी पसु जीव।

पसु अपाहज मत मारो मूल, इनकी हत्या है अघमूल ॥२२६/२३२१

इस प्रकार और भी बहुत सी सूक्तियां एवं सुभावित पुराण में से एकत्रित की जा सकती हैं वास्तव में ने कवि पुराण काव्य को सरस एवं रोचक तथा प्रभावी बनाने के लिए इस प्रकार की रचना का अथवा सहारा लिया है।

पाण्डुलिपि परिचय—

पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि डिग्गी (राजस्थान) के दि० जैन मन्दिर में संग्रहीत है। इस पाण्डुलिपि में ११८ पत्र हैं जो १२॥ × ६ इंच साइज के हैं। प्रत्येक पृष्ठ में २८ पक्तियां हैं। पाण्डुलिपि संवत् १८५६ मिति अषाढ़ बदि १४ सोमवार की लिखी हुई है। लिपिकार प्रशस्ति निम्न प्रकार से हैं—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत संपूरन। संवत् १८ से ५६ मिति अषाढ़ बदि १४ वार सोमवासरे लिखित पण्डित मोतीराम लिखायत साहजी श्री गंगाराम जी की बहु जाति शोराया मांडलगढ़ की उत्तराय अठारई का व्रत में पण्डित मोतीरामेन दीयो। अथ संख्या ११ हजार रुपया ७ बीया निखराना का शुभ भवतु॥ पाण्डुलिपि की प्राप्ति श्री मारणकान्द जी सेठी डिग्गी के माध्यम से हुई है। वैसे

मैं एवं श्री हरकचन्दजी चौधरी भूतपूर्व समाज कल्याण अधिकारी राजस्थान ग्रन्थ ८२ मे डिग्री के शान्त्र भण्डार की खोज मे गये थे तब मुझे यह पाण्डुलिपि ग्रन्थों की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। पद्मपुराण की अभी तक यही एक मात्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। हो सकता है राजस्थान अथवा देहली आदि के और भी शास्त्र भण्डारो मे पाण्डुलिपि मिल जावे। मैं श्री हरकचन्दजी चौधरी का भी आभारी हूँ जिन्होंने दो दिन तक ठहर कर ग्रन्थों की सूची बनाने मे सहयोग दिया था।

पद्मपुराण का सार—

चौबीस तीर्थंकरों के मंगलमय स्तवन से पद्मपुराण प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् जिनवाणी के स्वरूप का कथन एवं राम नाम के महात्म्य का वर्णन किया गया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ती आचार्य रविशरण के स्मरण के पश्चात् राजगृही नगरी की सुन्दरता, कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ के यशोगान के साथ ही त्रिशला माता द्वारा सोलह स्वप्न, भगवान महावीर का जन्म, तप, कंपत्य एवं समवसरण का वर्णन मिलना है। महाराजा श्रेष्ठिक रघुवश की कथा जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरती है और गौतम गणधर द्वारा जिनवाणी के अनुसार रघुवश की कथा का वर्णन किया जाता है।

गौतम गणधर रामकथा कहने के पूर्व भोगभूमि एवं चौदह कुलकरो के उल्लेख के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता महाराजा नाभिराय एवं महारानी मन्देवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म, देवों द्वारा जन्मोत्सव का आयोजन, ऋषभदेव का बाल्यकाल, शारीरिक सुन्दरता, विवाह व सन्तानोत्पत्ति, राज्य प्राप्ति व उनके द्वारा तीन वर्गों (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की स्थापना का वर्णन करते हैं। दीर्घकाल तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् ऋषभदेव तपस्वी बनकर कैवल्य प्राप्त करते हैं। धर्मोपदेश देते हैं और अन्त मे निर्वाण प्राप्त करते हैं। ऋषभदेव के १०१ पुत्र एवं २ पुत्रिया होती हैं। भरत का दिग्विजय के पश्चात् अपने छोटे भाई बाहुबली से युद्ध होता है। युद्ध मे यद्यपि बाहुबली की विजय होती है लेकिन उन्हें वैराग्य हो जाता है। भरत सम्राट बनते हैं। भरत द्वारा बाह्यण वर्ग की स्थापना की जाती है और उन्हें “सबसे उत्तम बाभरण भने” के रूप मे स्वीकार किया जाता है।

सम्राट भरत पर्याप्त समय तक राज्य सुख भोगते हैं और अन्त मे आदित्य-जस को राज्य भार सौंपकर स्वयं वैराग्य धारण कर लेते हैं। इस कथानक मे विद्याधर वंश का वर्णन एवं सत्यधोष की कथा कही गयी है। तृतीय कथानक मे अजितनाथ तीर्थंकर के वर्णन के पश्चात् सगर की उत्पत्ति, उसके साठ हजार पुत्रों द्वारा कैलाश पर जाकर गया को खोदना, धरमेन्द्र द्वारा भीम एवं भागीरथ को छोड़कर सभी पुत्रों को अपनी फुकार से भस्म करना, पिता द्वारा पुत्रों की मृत्यु पर दुःख प्रकट करने के पश्चात् भागीरथ को राज्य सौंपकर स्वयं जिन दीक्षा ले लेने

है इसी में लका के राजा महाराजस एवं उसके पुत्र अमर राजस आदि का वर्णन भी आता है ।

चतुर्थ कथानक में श्रेणिक द्वारा वानर वंश की कथा जानने की इच्छा, उसकी उत्पत्ति, मेघपुर नगर में राजा धर्मेन्द्र अपने पुत्र श्रीकंठ के साथ राज्य करता है । उसकी एक सुन्दर पुत्री को रत्नपुरी के राजा अपने पुत्र पद्मोत्तर के लिये माँगता है लेकिन उसे वह नहीं मिलती है । एक बार जब विद्याधर सुमेरु पर्वत पर जाता है तो पुष्पोत्तर की लक्ष्मी की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो जाता है । पुष्पोत्तर श्रीकंठ का पीछा करता है वह भाग कर लका चला जाता है । फिर पद्मावती से उसका विवाह हो जाता है । लका नरेश कीर्तिधवल श्रीकंठ को कृष्णपुर का राजा बना देता है । वहा वह वहाँ तक राज्य करता है । एक बार उसने अपने पूरे परिवार के साथ मानुषोत्तर पर्वत की यात्रा की तथा वहा देव बनकर नन्दीश्वर द्वीप की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की फिर अपने पुत्र वज्रकंठ को राज्य भार सौंपकर स्वयं ने जिन दीक्षा धारण करली । श्रीकंठ राज्य करने लगा । एक बार उसने एक चारण ऋद्धि धारी मुनि से अपने पूर्व भव पूछे । पूर्व भव सुनने के पश्चात् उसे वैराग्य हो गया और अपने पुत्र को राज्य देकर स्वयं मुनि बन गया । इसके पश्चात् कितने ही राजा हुये । इसी परम्परा में होने वाले अमरप्रभ राजा का गुणवती से विवाह हुआ । कवि ने बारात एवं जोमनवार का अच्छा वर्णन किया है । अमरप्रभ श्रियास तीर्थ कर के शासन काल में हुए थे । इसके पश्चात् जब वासुपूज्य स्वामी का शासन काल आया तो तीन तीन सागर की लम्बी अवधि अतीत होने के पश्चात् अमरप्रभ का फिर जन्म होता है ।

लका के राजा विद्युतवेग की श्रीचन्द पटरानी थी । एक बार वे दोनों जंगल में गये हुए थे तो एक बन्दर ने राणी के फूल की बे मारी । राजा ने बाण से बन्दर का बध कर दिया । वानर मरने के पूर्व मुनि के चरणों में आ गिरा । इससे ब्रह्म मर कर देव हो गया । देव ने मायाभयी सेना बना कर विद्युतवेग पर चढ़ाई कर दी । लेकिन दोनों में मित्रता हो गयी । आदित्यपुर की रानी वेगवती की पुत्री श्रीमाला का स्वयंवर रचा गया । अस्ववेग ने श्रीमाला से गुप्त विवाह करके उसे विमान में बैठाकर ले गया ।

माली राजा ने लका पर चढ़ाई करके उसको ले लिया । वह लंका पर राज्य करने लगा । कुछ समय पश्चात् इन्द्रकुमार ने लंका पर चढ़ाई करके और युद्ध के पश्चात् वह लका का स्वामी बन गया । माली मारा गया । सुमाली की पत्नी कौकसी ने तीन स्वप्न देखे । उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो रावण, कुम्भकर्ण एवं विभीषण कहलाये । उधर इन्द्र को रावण के जन्म सेते ही दुःस्वप्न आने लगे । वह

चिन्तित हो गया। एक दिन रावण अपनी माँ के साथ जा रहा था। तब उसने अपनी माँ से राजा और उसके नगर के बारे में पूछा। माँ ने लंका के बारे में रावण को सब कुछ बता दिया। इससे रावण को बड़ा क्रोध आया और लंका जीतने का निश्चय किया। उसने माँ के सामने ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। फिर तीनों भाईयो ने विद्या प्राप्ति के लिए तपस्या करना प्रारम्भ किया। यक्ष ने बहुत प्रकार के विघ्न उपस्थित किये। देवांगना का रूप धारण करके उन्हें अपने ध्यान से डिगाना चाहता लेकिन कोई भी अपनी साधना से नहीं डिये। रावण ने एक साथ ग्यारह सौ विद्याएं प्राप्त कीं।

रावण ने विद्या प्राप्ति के पश्चात् पहिले मन्दोदरी से विवाह किया और फिर लंका को वैश्वन राजा से छीन ली। लंका विजय के पूर्व दक्षानन को मन्दोदरी से इन्द्रजीत की प्राप्ति हुई। लंका राजस बसी रावण की हो गयी। रावण एक बार कैलाश पर जिन वन्दना के लिये गया। मार्ग में उसे बालि मुनि तपस्या करते हुए मिले। रावण ने अपने विद्याबल द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तपस्या करते हुए बालि ने अपना झगूठा टेक दिया। रावण उसके भार को नहीं सह सका और बिल्लाने लगा। बालि मुनि को दया आयी तब कहीं जाकर रावण की प्राण रक्षा हो सकी। रावण ने बालि की स्तुति की तथा वैराग्य लेने की इच्छा प्रकट की। तभी धरमोन्ध ने रावण को वृद्धावस्था में साधु जीवन अपनाने की बात कही तथा रावण को एक शक्तिबाण देकर उसे और भी बलशाली बना दिया। इसके पश्चात् रावण ने सहस्ररश्मि राजा पर विजय प्राप्त की।

इसके पश्चात् वसु राजा की कथा आती है। नारद एव पर्वत के मध्य चर्चा छिड़ जाती है। पर्वत "जज्ञ किया बैकुंठा जाई" में विश्वास करता है। नारद इस विचार का खण्डन करता है। 'भज' शब्द पर दोनों में बहस होती है। वे वसु राजा के पास निर्णय के लिये जाते हैं। वसु राजा पर्वत की पक्ष लेकर भज शब्द का अर्थ बकरा बताता है। इस असत्य निर्णय से वह सिंहासन सहित नरक में जाता है। पर्वत की जब चारों ओर से निन्दा होने लगी तो वह सन्यासी बन जाता है और राजा मारुत को यज्ञ करने का परामर्श देता है। जब रावण को यज्ञ का पता चलता है तो वह राजा मारुत एव सभी विप्रों को बांध लेता है लेकिन अन्त में नारद दया करके उन्हें छोड़ा देते हैं।

रावण का एक विवाह कनकप्रभा से होता है। उसकी एक कन्या मधु का विवाह मधुरा के राजा हरिवाहन के पुत्र मधु के साथ होता है। रावण के कैलाश पर्वत पर जाने की सूचना पाकर इन्द्र ने नलकूबड़ राजा के अश्व से मुक्त करने की प्रार्थना की। रावण सहायता के लिए दीडा लेकिन नलकूबड़ ने मृदु के किवाड़

बन्ध कर दिये। लेकिन रावण की बीरता एवं धैर्यता की सुनकर नलकूबड़ की पत्नी उपारम्भा उस पर आसक्त हो गयी। उसने अपनी दूती को भेजा और सुदर्शन चक्र होने की बात कही। पहिले तो रावण परस्त्री से बात करने के लिए ही मना कर देता है लेकिन वह विद्या प्राप्त के लोभ में रानी के पास चला जाता है और उससे विद्या प्राप्त कर लेता है और नलकूबड़ पर विजय प्राप्त करता है। नलकूबड़ इन्द्र की सहायता करता है। इन्द्र और रावण में भयंकर युद्ध होता है इन्द्र को अपने बल धीरुष पर भरोसा है। रावण सिंहरथ पर सवार होकर लड़ता है तो इन्द्र हाथी पर लड़ता है। दोनों विभिन्न विद्याओं का उपयोग करते हैं। अन्त में दोनों में भयंकर युद्ध होता है और उसमें रावण की विजय होती है। रावण इन्द्र को दण्ड देता है। इन्द्र के पिता सहस्रार द्वारा इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना करने पर रावण इन्द्र को छोड़ देता है इन्द्र को अपनी हार से बहुत पीड़ा होती है। इतने में मुनिचन्द्र का वहाँ आगमन होता है अपने पूर्व भव का वृत्तान्त जानने के पश्चात् उसे बंराय्य हो जाता है और अन्त में मुनि दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं।

भातकी द्वीप में अन्तर्धीर्य मुनि को कंबल्य होता है। देवता मण्डल वन्दना के लिए आते हैं। रावण भी वन्दना के लिए पहुँचता है। भगवान की वाणी खिरती है। छह द्रव्य, सात तत्त्व एवं नव पदार्थों पर प्रवचन होता है। अनुव्रत, महव्रत, दश व्रत आदि के पालन के साथ रात्रि भोजन-निषेध का भी उपदेश होता है। लोभदत्त सेठ की कथा भी कही जाती है जिसके अनुसार लोभदत्त नरक एवं सेठ भद्रदत्त अपनी ईमानदारी से जगत में सम्मान प्राप्त करता है। कुम्भकरण रावण आदि सभी व्रत ग्रहण करते हैं। रावण व्रत लेता है कि जो स्त्री उसको नहीं चाहेगी उसका वह शील कभी खण्डित नहीं करेगा।

राजा श्रेणिक ने इसके पश्चात् हनुमान के बारे में जानना चाहा। भगवान की फिर दिव्यध्वनि खिरी और गौतम मण्डपर ने उसका वर्णन किया। आदित्यपुर के राजा प्रह्लाद एवं रानी केतुकी थे। उनके पुत्र का नाम पवनजय था। उधर बंसपुर देश के राजा महेंद्र एवं उसकी रानी हृदयवेगा थी। अञ्जना उनकी पुत्री थी। अञ्जना जब विवाह योग्य हुई तो उसके सम्बन्ध की बात चली। महेंद्र के एक मंत्री ने रावण का नाम सुझाया और उसके वैभव का वर्णन किया। दूसरे मंत्री ने श्रीवैष्णव राजा का नाम बताया। तीसरे मंत्री ने पवनजय के लिए अनुशंसा की। राजा को पवनजय का नाम पसन्द आया और प्रह्लाद के सामने अञ्जना पवनजय के सामने प्रशंसा की तो उससे उसका मन खट्टा हो गया। इससे अञ्जना को भी भारी दुःख हुआ फिर भी दोनों का विवाह हो गया।

उधर रत्नदीप के राजा के साथ रावण का युद्ध छिड़ गया। रावण ने

सहायतार्थ राजा प्रह्लाद को निमन्त्रण भेजा। पवनजय ने युद्ध में जाने का प्रस्ताव रखा और सेना लेकर वह रवाना हुआ। मार्ग में उसे एक नदी के किनारे चकवा चकवी के विरह को देखकर अजना की याद आयी। वह सेना वहीं छोड़कर एक रात्रि के लिए अजना से मिलने चला गया। दोनों में मिलन हुआ। अजना गर्भवती हो गयी। जब पवनजय की माता को उसके गर्भ का मालूम पड़ा तो उस पर पुरुष के साथ गमन का दोष लगा कर उसे घर से निकाल दिया। अजना रोती बिनसती अपने पिता के घर पहुँची लेकिन वहाँ भी उसे कोई आश्रय नहीं मिला।

कवि ने अजना का चारों ओर से तिरस्कृत होने का रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। इसे अपने पिता के यहाँ से भी "ढेला ईंट पत्थर की मार, नगर माहि तें दई निकार" से तिरस्कृत होना पड़ा। अन्न में अपनी दासी के साथ सघन एवं भयानक वन में एक गुफा में जाकर शरण ली। वहीं उसे एक ध्यानस्थ मुनि के दर्शन हुए। मुनि ने उसे पूर्व भव का स्मरण कराया तथा पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। उसी समय रत्नचूल राजा का हाथी की खोज में वहाँ घाना हुआ। अजना ने पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से शिशु हनुमान विमान से गिर गया लेकिन हनुमान का कुछ भी नहीं बिगड़ा। यह घटना उसके भविष्य में अतिशय शक्तिशाली होने का संकेत मात्र थी।

उधर पवनजय जब युद्ध से लौटा तब अजना को न पाकर बहुत दुःखी हुआ। इसके निष्कासन के समाचारों से वह पागल जैसे हो गया। वह तत्काल अजना को ढूँढ़ने निकला। अजना के विरह में उसकी दशा दयनीय हो जाती है लेकिन अन्न में दोनों का मिलन हो जाता है और वे सुखपूर्वक रहने लगते हैं। एक बार वरुण ने रावण पर आक्रमण कर दिया। पवनजय की सहायता मांगी गयी। इस बार स्वयं हनुमान रावण की सहायतायें जाते हैं। रावण हनुमान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है। वरुण एवं हनुमान में घनघोर युद्ध होता है। रावण वरुण को पकड़ लेता है। कुम्भकरण विजय के पश्चात् लूट मार मचाता है तो रावण उसकी चिन्ता करता है। वरुण को छोड़ दिया जाता है। इस युद्ध में हनुमान की वीरता का सबको पता लग जाता है। हनुमान को सुग्रीव अपनी कन्या देता है तथा वे सब सुख से राज्य करते हैं।

20 वें तीर्थंकर मुनिमुञ्ज नाथ का माता पद्मा के उदर से जन्म होता है। उनका जन्म कन्याएँ देवी द्वारा मनाया जाता है। युवा होने पर उनका यशोमति से विवाह होता है। बहुत वर्षों तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् विजली गिरने की घटना को देखकर उन्हें वैराग्य हो जाता है। तपस्या के पश्चात् पहले कंवर्य होता है और एक लम्बे समय तक धर्मोपदेश देने के पश्चात् निर्वाण प्राप्त करते हैं। वृषभ

नाथ से लेकर मुत्तिसुखन तक हजारों राजा होते हैं। अयोध्या में बज्रबाहु, कीर्तिधर हिरण्यनाभ, नहुष, स्योदास एवं भरण आदि एक के बाद दूसरे राजा होते हैं भरण राजा के अनन्तर एवं दशरथ दो पुत्र होते हैं लेकिन अपने पिता के साथ अनन्तर द्वारा दीक्षा लेने के कारण दशरथ राजा बनते हैं। दशरथ के तीन रामियां थी—अपराजिता, कैकयी एवं सुमित्रा।

एक दिन रावण के बही नारद ऋषि का आगमन हुआ। रावण द्वारा अपने मारने वाले का नाम जानना चाहा तो नारद ने दशरथ के पुत्र लक्ष्मण का नाम बताया तथा जनक की लड़की सीता का कारण बताया। रावण ने तत्काल दशरथ एवं जनक को मारने के लिए दूत भेजे लेकिन वे दूसरों को मार कर उनके सिर रावण के सामने रख दिये। रावण अपने आपको धमर समझने लगा।

कैकयी का विवाह स्वयंवर द्वारा हुआ था। स्वयंवर के पश्चात् कैकयी ने दशरथ का पूरा साथ दिया। दशरथ की विजय हुई। राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर कैकयी से यथेच्छ वर मांगने के लिए कहा लेकिन रानी ने भविष्य के लिए सुगन्धित रख लिया। दशरथ सानन्द राज्य करने लगे। अपराजिता, के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण एवं कैकयी के भरत का जन्म हुआ। सुमात्रा के शत्रुघ्न पैदा हुए। इनके जन्म होते ही रावण के वर अपमानित होने लगे। चारों भाई विभिन्न विद्यायें सीखने लगे।

जनक के घर सीता एवं भाण्डल का जन्म हुआ। भाण्डल के पूर्व भ्रम के वर के कारण जन्म होते ही देवतागण उसे उठा ले गये और रघुनुर राजा के जिन मन्दिर में बैठा गये। सुदरमणा रानी के कोई सन्तान नहीं होने के कारण उसका लालन पालन उसी ने किया। जनक एवं दशरथ दोनों ने भाण्डल की बहुत तलाश की लेकिन कहीं पता नहीं चला। एक बार जनक की नगरी मिथिला पर श्लेच्छ राजा ने आक्रमण कर दिया। जनक ने दशरथ से सहायता की याचना की। दशरथ के स्थान पर राम लक्ष्मण जनक की सहायता के लिये गये। उन्होंने युद्ध में श्लेच्छों की सेना को भगा दिया। इससे जनक ने राम को सीता देने की इच्छा प्रकट की। इसी समय नारद ऋषि भी राम का पौष देखने आये। उन्होंने सीता का रूप देखना चाहा तो सीता नारद को देखकर डर गयी। इससे नारद ने जनक को कराग उत्तर देना चाहा। वह रघुनुर के विद्याधर राजा प्रभामंडल के पास गये और सीता के चित्र को उसे दिखाया। प्रभामंडल चित्र को देखते ही उस पर आसक्त हो गया। विवाह के लिये जनक के सामने प्रस्ताव रखा गया। स्वयंवर रचने का निर्णय लिया गया। सीता का स्वयंवर हुआ और राम के साथ सीता का विवाह हो गया। विवाह के अवसर पर जो मिष्टान्न बने कवि ने उनका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। स्वयंवर

के भवसर पर जब राम ने धनुष खेंचा तो एक मेघ के समान गर्जना हुई, एक भूबाल सा आया। देवताओं ने आकाश से जय जयकार किया। इसी समय भरत का लोक सुन्दरी से विवाह हुआ। दशरथ, राम आदि परिवार के सभी सदस्य जब अयोध्या लौट आये तो सबने जिन पूजा की और गन्धोदक को सिर पर चढ़ा लिया।

इधर भामण्डल को सीता से विवाह करने की प्रबल इच्छा हुई लेकिन जब उसने सीता के विवाह की बात सुनी तो अपनी सेना लेकर विदेह देश की ओर चला। वहा जाने पर भामण्डल की जाति स्मरण हो गया। वह सीता की याद में मूर्च्छित हो गया। इधर सीताजी को भी अपने भाई की याद आने लगी। दशरथ परिवार सहित मुनि के पास गये और भामण्डल के विछड़ने का कारण पूछा। विस्तृत वृत्तान्त जानकर उन्हें वैराग्य हो गया। वे चिन्तन करने लगे

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समझि विचार।

सुपना का सा सुख ए, जात न लायै बार ॥२११२॥

दशरथ ने राम को राज्य देने का निश्चय किया। इतने में ही कैकेयी ने राजसभा में आकर भरत को 'राज्य देने का वर माग लिया। कैकेयी की बात सुनकर दशरथ बहुत दुःखी हुए लेकिन कोई उपाय नहीं था। भरत ने प्रारम्भ में राज्य लेने का घोर विरोध किया लेकिन राम स्वेच्छा से राज्य को त्याग कर सीता एवं लक्ष्मण के साथ वन की ओर चले गये और अयोध्या में भरत राज्य करने लगे। दशरथ ने वैराग्य धारण कर लिया।

राम का वन गमन—

राम अपने भाई एवं पत्नी सहित सर्वप्रथम उज्जयिनी पहुँचे। वहाँ सिंहोदर राजा राज्य करता था। लक्ष्मण ने सहज ही उस पर विजय प्राप्त करली और वे तीनों भागे बड़े। एक बार सीता की प्यास बुझाने के लिए गए हुए लक्ष्मण को विद्याधर राजा मिला। उसने तीनों का बहुत सम्मान किया। भागे चलकर उन्होंने रुद्रभूत राजा से बाललित्य को छुड़वाया। वे सब कूबड़पुर आये। वहाँ सिंहोदर एवं बज्रकरण राजा भी मिल गये। वहाँ से तीनों भागे बड़े। मार्ग में एक विप्र के घर पानी पिया। लेकिन विप्र ने बहुत क्रोध किया। लक्ष्मण उसे मारने दौड़े लेकिन राम ने उन्हें शान्त कर दिया। फिर तीनों ने एक बस्ती में जाकर मन्दिर में विश्राम किया। मन्दिर का देवता राम से बहुत प्रसन्न हुआ। इनके लिये उसने मायामयी नगरी की रचना की। तीनों ने प्रथम चातुर्मास वहीं व्यतीत किया।

चातुर्मास के पश्चात् वे विजयवन में गये। वहाँ के राजा पृथ्वीधर की पुत्री वनमाला लक्ष्मण पर आसक्त हो गयी और लक्ष्मण के नहीं मिलने पर अपघात करने लगी। लक्ष्मण ने प्रकट होकर उसे बहुत समझाया और अन्त में पत्नी के रूप

मे उसे स्वीकार कर लिया। इसी बीच अनन्तवीर्य राजा ने शयोध्या पर आक्रमण कर दिया। भरत की रक्षा के लिए पृथ्वीधर आदि राजा आ गये। दोनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध के पश्चात् अनन्तवीर्य ने वैराग्य धारण कर लिया और तपस्या करने लगा।

वहाँ से मुलीचना नगर के वन में गये। जेमाजत्रपुर में विश्राम किया। वहाँ जितपथा पर लक्ष्मण ने विजय प्राप्त की। उसके साथ विवाह कर लिया। उसे वहीं छोड़कर वे वंसस्थल नगर पहुँचे। वहाँ के वन में चार अजगर देवता के रूप में थे। इसी वन में वेंसभूषण कुलभूषण मुनि पर आये उपसर्ग को दूर किया। उन्हें वहीं कैवल्य हो गया। फिर वे रामगिरि पहुँचे। यहाँ दो बारण ऋद्धि घारी मासोपवामी मुनियों को आहार दिया। मार्ग और भी मुनियों के उपसर्ग दूर किये। मुनियों देख कर वृक्ष की डाल पर बैठे हुये शृङ्ग पक्षी को पूर्व भव का ज्ञान हो गया। उसने व्रत धारण कर लिया।

राम लक्ष्मण आये चले। दंडक वन में उन्होंने रहने का निश्चय किया। दंडक वन की विशालता एवं सुन्दरता का कवि ने अग्रेष्ठा वर्णन किया है। इसी वन में खरदूषण का पुत्र सबुक सूरजहास लङ्ग प्राप्ति के लिए और साधना कर रहा था। लक्ष्मण को लङ्ग की गन्ध आने पर वह भी वहाँ चला गया। लक्ष्मण को सूरजहास सहज ही प्राप्त हो गया। जब उसने सूरजहास के सामर्थ्य की परीक्षा लेना चाहा तो सबुक का सर कट गया जो १२ वर्ष से उसको प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहा था। वही पर लक्ष्मण को देवोपनीत वस्त्रों की प्राप्ति हुई। उधर खरदूषण की पत्नी एवं सबुक की माता चन्द्रनखा घोर विलाप करती हुई लक्ष्मण के पास आयी। पहले उसने लक्ष्मण से विवाह करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिलने के कारण वह खरदूषण के पास चली गयी।

सबुक के मारे जाने से खरदूषण को बहुत दुःख हुआ। उसने राम लक्ष्मण से युद्ध करना चाहा लेकिन अपने ही मंत्रियों द्वारा युद्ध की सलाह नहीं देने के कारण वह रावण के पास गया। रावण ने सीता का सौम्य देखकर उसे उठा लाने की ठान ली। करणगुप्ति विद्या द्वारा उपाय बतलाने पर रावण ने बाण द्वारा अंधकार कर दिया। शंखनाद किया जिसको सुनकर राम सीता को अकेली छोड़ कर लक्ष्मण की सहायसार्थ चले गये। इसी बीच रावण ने सीता का हरण कर लिया। और उसे पुष्पक विमान में बिठा कर लका ले गया। सीता को जटायु पक्षी ने बचाने का प्रयास किया लेकिन रावण ने पक्षी के पंख काट कर उसे जमीन पर गिरा दिया। सीता का हृदय बिदारक विलाप सुनकर रावण को भी दुःख हुआ। उसने निश्चय किया कि जब तक सीता उसे स्वयं नहीं आहेगी वह उसका स्पर्श नहीं करेगा। उधर

लक्ष्मण ने खरदूषण को युद्ध में जीत लिया और सूरजहास से उसका सिर काट दिया ।

सीता हरण के कारण राम अत्यधिक विलाप करने लगे । लक्ष्मण भी रोने लगे । विद्याधरो के राजा रत्नजटी को सीता की तलाश करने भेजा । वह रावण के पास गया । उसे भला बुरा कहा । लेकिन रावण ने बाण मारा जिससे वह समुद्र में जा मिरा । जमोकार मन्त्र के स्मरण से वह बाहर निकल आया । सीता को झोका बाटिका में रखा गया । रावण ने सीता को मनाने का बहुत प्रयास किया । रावण की दूतिया उसके पास पहुँची लेकिन सब व्यर्थ गया । रावण के मंत्री मण्डल ने सब परिस्थितियों पर विचार किया लेकिन वे निर्णय पर नहीं पहुँच सके ।

सर्वप्रथम राम से किंवदन्ति नगर के राजा सुग्रीव आकर मिला । सुग्रीव का राज्य चला गया था । राम ने उसको वापिस दिलाने का आश्वासन दिया लेकिन साथ में सीता को ढूँढ़ कर लाने की भी बात वही । सुग्रीव ने सात दिन का वचन दिया । राम ने तत्काल सेना एकत्रित करके बिट सुग्रीव पर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके सुग्रीव को वापिस राजा बना दिया । राज्य प्राप्ति की खुशी में सुग्रीव ने राम को कन्यामे मेट की जो सब कलाओं में निपुण थी ।

चारों ओर सीता की खोज होने लगी । सुग्रीव विद्याधर रत्नजटी से मिले और उसे राम के पास ले आये । रत्नजटी ने रावण द्वारा सीता का हरण की बात कही तथा उसकी शक्ति, सेना एवं विद्यासिद्धि के सम्बन्ध में बतलाया तथा कहा कि रावण को जीतना आसान नहीं है इसलिये वह दूसरा विवाह कर लेवें । जाबुनद मन्त्री ने भी इसका समर्थन किया । उसने कहा कि रावण ने तीन खण्ड पृथ्वी जीत लेने के पश्चात् अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में जानना चाहा । उस समय अभिष्यवाणी हुई थी कि जो भी कोटिशिला को उठा लेगा उसी के हाथ से रावण की मृत्यु होगी । तत्काल राम लक्ष्मण सुग्रीव कोटिशिला उठाने चले । लक्ष्मण ने जाकर कोटिशिला को उठा लिया इससे सब यह जान गये कि लक्ष्मण नारायण हैं । प्रति नारायण रावण है जिसकी मृत्यु नारायण के हाथ से होगी । इससे राम लक्ष्मण के पुरुषार्थ की चारों ओर आकृष्ट हुए ।

हनुमान को राम लक्ष्मण के बारे में एवं सुग्रीव को राज्य की प्राप्ति के बारे में समाचार मिले तो वह भी राम की शरण में चला आया । हनुमान ने राम की बन्धना की ओर राम न भी उसे गले लगा लिया ।

चरण कमल बन्दे हनुमत, रामचन्द्र भये कुम्भाबन्त ।

कंठ लगाई सन्मुख बैठाई, आदरि मनीहारी बहुभाय ॥२६६१-२॥

हनुमान ने सीता को लाने का वचन दिया और शीघ्र वहाँ से चल दिया ।

उसने पहिले अपने ननिहाल के राजा महेंद्र को आतंकित किया और अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया। आगे चल कर दो मुनियों की अग्नि बुझा कर रक्षा की। हनुमान आगे चले। लंका सुन्दरी ने जब हनुमान को देखा तो लंका सुन्दरी उस पर मोहित हो गयी। उसने विवाह सूत्र में बंधना चाहा। हनुमान लंका के लिए आगे बढ़े और लंका में पहुँच गये। वहाँ सर्वप्रथम हनुमान ने विभीषण से जेंट की और सारी परिस्थिति समझायी। विभीषण ने रावण को समझाने का प्रयास किया लेकिन रावण क्रोधित होकर निम्न बात कही—

कहा करेगा तपसी राम, मोसुं जीत सके संप्राम।

जीती है मैं सगली मही, मोकूँ किस का ही डर नहीं ॥३०५२॥

हनुमान बानर का रूप धारण कर सीता के पास पहुँच गया और अपने आपको राम का सेवक के रूप में प्रगट किया। सीता ने हनुमान से कितने ही प्रश्न किये। उनका सही उत्तर पाकर सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। इसके पश्चात् मन्दोदरी ने हनुमान को रावण की शक्ति के बारे में बतलाया। राम के तापसी जीवन के बारे में भी कहा लेकिन हनुमान ने सबको निरुत्तर कर दिया। जब उसने मन्दोदरी की एक भी बात नहीं मानी तो उसने अपनी अन्य रानियों के साथ बुरी हालत करती और रावण के पास जाकर शिकायत की। रावण ने अपने सैनिकों से हनुमान को पकड़कर लाने के लिए कहा लेकिन कोई भी हनुमान को नहीं पकड़ सका। अन्त में इन्द्रजीत हनुमान को नागपाश में बांध लाया और रावण के समक्ष उपस्थित किया। रावण को हनुमान द्वारा किये गये सभी कार्यों का ब्योरा दिया। रावण ने क्रोधित होकर हनुमान को बहुत फटकारा और उसकी गरदन काटने की बात कही लेकिन उसकी एक नहीं चली। हनुमान ने मायावी बिद्या के द्वारा सोने की लंका को भस्म कर दिया और फिर किष्किंधपुर नगर में वापिस आ गया।

हनुमान ने आकर राम से पूरी कहानी कही। सीता की चिन्ता, रात दिन राम का स्मरण आदि सभी बातें सुनायी। राम को हनुमान की बात सुनकर गहरी चिन्ता हुई। राम के साथी सभी राजाओं ने युद्ध में रावण को जीतने की बात कही। युद्ध की तैयारी होने लगी। सब विद्याधर राजा एकत्रित होने लगे। अन्त में भासोज सुवी पञ्चमी के दिन से सेना ने प्रयाण किया और हंस द्वीप जाकर विश्राम किया।

उधर रावण अपनी शक्ति में अन्धा बना हुआ था। उसे अपनी विद्याओं पर गर्व था। राम लक्ष्मण को वह भूमिगोबरी कहता था। सोलह हजार मुकुटबद्ध राजा उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। लेकिन योद्धाओं ने रावण को सीता को लौटाने

के लिये समझाया। उसने किसी की नहीं सुनी। विभीषण ने इन्द्रजीत को राम की ताकत के बारे में सावधान किया लेकिन रावण समझने की बजाय उसे मारने को बोला और उसे मंका से निकाल दिया। विभीषण राम की सेवा में चला गया यह राम की पहिली जीत थी। राम ने उसे लकाविराज कह कर सम्मान दिया। धीरे-धीरे राम की सेना लका तक पहुँच गयी।

राम की सेना में अनेक सेनापति थे लेकिन सभी बनवास कास के साथी थे। दोनों की सेना एक दूसरे के सामने खड़ी हो गयी। युद्ध प्रारम्भ हो गया और प्रथम दिन की लड़ाई में राम के सेनापति नल नील के हाथों से रावण के हस्त प्रहस्त ये दो सेनापति मारे गये। दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध हुआ। गोली एव गोली की वर्षा होने लगी। दोनों ही ओर के सैनिक मारे गये। तीसरे दिन फिर युद्ध प्रारम्भ हुआ। सुग्रीव प्रागे बढ़ा लेकिन हनुमान ने उसे रोक कर स्वयं जूझने लगा। दूसरी ओर रावण बढ़ने लगा तो उसके योद्धाओं ने उसे रोक दिया और स्वयं जोर जोर में लड़ने लगे। कुम्भकर्ण ने भूछाँ बाण छोड़ा लेकिन जब नल और नील गदा मारने लगे तो वह वहाँ से चला गया। इन्द्रजीत तेलोकासार हाथी पर चढ़कर लड़ने। मेघनाद और जबमाली, कुम्भवरण और हनुमान, सुग्रीव और इन्द्रजीत, मेघवाहन और भामडल, बज्रकरण और विराधित परस्पर में भिड़ गये। कोलिया चलने लगी। बरछी, गदा, चक्र जैसे शस्त्र काम में लिये गये। हाथी से हाथी, घोड़ा से घोड़ा और पैदल से पैदल लड़ने लगे। इन्द्रजीत ने मेघ बाण छोड़ा उसके उत्तर में सुग्रीव ने बाण छोड़ा। फिर इन्द्रजीत ने अघकार बाण छोड़ा। नागपाश की विद्या को याद कर सुग्रीव को नागपाश में बाँध लिया। भामडल को भी नागपाश से मूर्च्छित कर दिया। कुम्भकरण ने हनुमान को पकड़ लिया तथा दाँतो से चबाने लगा। दोनों वीर मुर्दे के समान पड़ गये। तभी विभीषण ने आकर राम को दोनों के बारे में बतलाया और तीनों की लाश को युद्ध भूमि में जाकर उठा ले आये।

राम ने बड़े धैर्य से विभीषण को सुना। राम को देशभूषण-कुलभूषण केवली ने ऐसे समय देवों की स्मरण करने के लिए कहा था। राम ने वही किया। तत्काल देव प्रगट हुए और राम को कितनी ही प्रकार की विद्याएँ दीं। राम और लक्ष्मण दोनों ने देव वस्त्र पहिन लिए। चन्द्रहास तलवार बांध ली और दूसरे अस्त्र शस्त्र सम्माल लिये। आकाश गामिनी विद्या को स्मरण किया। रथ के स्पर्श से जो हवा चली उससे नागपाश बंधन टूट गया, अघकार दूर हो गया तथा जो लोग मूर्च्छित हो गये थे वे सब जिन्दा हो गये। फिर युद्ध होने लगा। रावण और विभीषण परस्पर में लड़ने लगे। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। रावण ने खेंच कर धनुष बाण चलाया जो विभीषण के कंठ पर लगा। धनुष टूट गया लेकिन विभीषण बच गया।

उपर राम धीर कुम्भकरण में, लक्ष्मण धीर इन्द्रजीत में युद्ध होने लगा। लक्ष्मण ने नागपाशानी विद्या से इन्द्रजीत को मूर्च्छित करके पकड़ लिया। इसी तरह राम ने कुम्भकरण को मूर्च्छित करके विराधित उसे उठा ले गया।

दूसरी ओर रावण धीर लक्ष्मण में युद्ध होने लगा। रावण ने लक्ष्मण को शक्तिबाण से मूर्च्छित कर दिया। राम रावण युद्ध हुआ लेकिन रावण बच के निकल गया। वह लंका में चला गया। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि उसने लक्ष्मण को मार दिया। लक्ष्मण को मूर्च्छित देख कर राम बिलाप करने लगे। उपर मन्दी-दरी कुम्भकरण एवं इन्द्रजीत के मरने के कारण तथा सीता लक्ष्मण के मूर्च्छित होने के कारण रोने लगी। उसी समय भामण्डल चन्द्रप्रति नामक वैद्य को लाया जो शक्ति बाण की मूर्च्छा को दूर करने का उपाय जानता था। उसने कहा कि विसल्ल्या के स्नान का यदि जल मिल जाये तो लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो सकती है। हनुमान एवं भ्रमर को तत्काल घोषणा भेजा गया। वहाँ जाकर भरत की सहायता से विसल्ल्या को साथ लिया। विसल्ल्या लंका आयी धीर मूर्च्छित लक्ष्मण के शक्ति बाण के प्रभाव को दूर किया। लक्ष्मण को होश में आने पर मंत्रियों ने रावण को पुनः समझाया लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। रावण ने अपना दूत राम के पास भेजा तथा इन्द्रजीत एवं कुम्भकरण को छोड़ने के लिए कहा। राम ने सीता को छोड़ने की बात दोहरायी। दूत ने सीता को मूल जाने को कहा इस पर राम ने दूत को धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

रावण पूरा ब्रती था। घण्टाहिनका मे युद्ध बन्द हो गया। वह विद्या सिद्धि के लिए चला गया धीर वह ध्यानाकुल हो गया। रावण के सामने जब विद्याएं प्रकट हुईं तो उनसे राम लक्ष्मण को बांधने के लिए कहा लेकिन विद्याओं ने अपनी असमर्थता प्रगट कर दी। रावण रणवास में वापिस आ गया। उसने समझा कि उसे विद्या सिद्ध हो गयी हैं। मंत्रियों ने रावण से सीता को फिर छोड़ने के लिए समझाया लेकिन उसने एक भी नहीं सुनी।

रावण अपनी पूरी सेना के साथ फिर युद्ध के लिये उतर पड़ा। लक्ष्मण रावण में युद्ध होने लगा। स्वर्ग के देवता गण भी दोनों के युद्ध देखने के लिए आ गये। रावण का एक सिर टूटता लेकिन उसकी जगह दूसरा लग जाता। जैसे-जैसे लक्ष्मण उन्हें काटता वे बूने ही जाते। आखिर रावण ने लक्ष्मण पर चक्र चला दिया। चक्र की प्रभा से चारों ओर प्रकाश हो गया। सभी थोड़ा चकित रह गये लेकिन वह चक्र लक्ष्मण के हाथ आ गया। फिर लक्ष्मण ने उसी चक्र को रावण के ऊपर चला दिया जिससे रावण के हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो गये और उसके प्राणों का अन्त हो गया।

विभीषण रावण के पास आकर बहुत रोया। यह कितनी ही बार मूर्च्छित भी हो गया। राम ने वैद्य को बुलाकर उसका उपचार करवाया। रानिया बिलाप करने लगी। तथा छाती पीट-पीट कर रोने लगी। रावण का विभीषण ने दाह संस्कार किया। राम ने कुम्भकरण एवं इन्द्रजीत को छोड़ दिया जिन्होंने वंराग्य चारण कर लिया। उसके पश्चात् राम ने सेना के साथ लका में प्रवेश किया जहाँ विभीषण ने उनका जोरदार स्वागत किया। राम सर्वप्रथम सीता के द्वार पर गये जहाँ सीता अपने दिन काट रही थी। वह दुर्बल बेह हो गयी थी। मलिन केश थे। राम से बिछोह के पश्चात् उसने सब कुछ छोड़ दिया था। सीता ने प्रांखें खोली और राम के हाथ जोड़ कर दर्शन किये। लक्ष्मण ने सीता के चरण छुए। भामण्डल भाई ने सीता से कुशल क्षेम पूछी।

लका की शोभा निराली थी। वहाँ कितने ही जिन मन्दिर एवं सहस्रकूट संस्थालय थे। शातिनाथ स्वामी की जिन प्रतिमा विराजमान थी। मन्दिरों के सभी ने दर्शन किये। पूजा विधान किया। सभी राजाओं ने राम लक्ष्मण को अपना राजा स्वीकार किया। इसी समय नारद ऋषि का वहाँ आगमन हुआ। वे इससे पूर्व अयोध्या जाकर आये थे। नारद ऋषि ने राम से अपराजिता के दुःख एवं अयोध्या में उनकी प्रतीक्षा के समाचार सुने तो राम ने शीघ्र ही अयोध्या लौटने का निश्चय कर लिया। पहिले उन्होंने अयोध्या में अपना दूत भेजा जिससे लंका विजय एवं अयोध्या आगमन का सबको समाचार मालूम हो सके। राम ने लका का राज्य विभीषण को देकर आप सब अयोध्या के लिए रवाना हो गये। वे सभी पुष्पक विमान द्वारा चले। मार्ग में राम ने पुष्पक विमान से वे सब स्थान दिखावाये जहाँ वे ठहरे थे। अयोध्या में पहुँचने पर उनका जोरदार स्वागत हुआ। भरत एवं लघुघ्न ने दोनों के पैर छुए। चारों ओर आनन्द छा गया।

कुछ समय पश्चात् भरत को जगत् से वंराग्य हो गया। परिवार के सभी सदस्यों ने उन्हें बहुत समझाया लेकिन उन्होंने जगत् की नश्वरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। इतने में एक उन्मत्त हाथी ने भरत के पास आकर ओर अपनी सूँठ उठाकर उन्हें नमस्कार किया। हाथी की जाति स्मरण हो गया था। भरत एवं हाथी पूर्वजन्म में साथी थे। हाथी पर चढ़कर भरत ने वंराग्य चारण कर लिया उधर हाथी भी भोजन पान छोड़कर खड़े-खड़े तपस्या करने लगा इतने में कुलभूषण देशभूषण मुनियों का वहाँ आगमन हुआ। लक्ष्मण ने हाथी के पूर्व जन्म के बारे में उनसे जाना। इससे सभी को जगत् की नश्वरता के बारे में और अधिक विश्वास हुआ।

राम एवं लक्ष्मण का विधिपूर्वक राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। राम ने सब

राजाओं को प्रलग-प्रलग देव दिया। सुग्रीव को किंवद नगर, नम नील को प्रति नगर, विभीषण को लंका राज्य, हनुमान को श्रीपुर का राज्य, रतनबटी को किन्नर नगर एवं भावमंडल को रघुपुर देश का राज्य दे दिया। शत्रुघ्न ने मथुरा का राज्य मांगा लेकिन राम ने कहा कि मथुरा पर रावण का जामाता मधु राज्य कर रहा है जो बहुत बलशाली है। लेकिन शत्रुघ्न नहीं माना। उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मधु ने बहुत भयकर युद्ध किया। उसे युद्ध के मध्य ही वैराग्य हो गया। वह आत्मश्रित्तन करने लगा तभी शत्रुघ्न ने उसकी गर्दन उठा ली लेकिन जब उसे मधु के वैराग्य का पता चला तो उसने हाथी से उतर कर मधु को नमस्कार किया। मधु मर कर पांचवें स्वर्ग में गया।

मधु के मरने के दुःख से उसके व्यंतर मित्रों ने शत्रुघ्न पर आक्रमण कर दिया। धरणेन्द्र ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसने किसी की नहीं मानी। सर्वप्रथम उसने प्रजा को दुःख देना प्रारम्भ किया। शत्रुघ्न मथुरा छोड़कर अयोध्या लौट आया। कुछ समय पश्चात् वहाँ चारण ऋद्धिचारी मुनिर्षों का आगमन हुआ। जिनके कारण नगर में शान्ति हो गयी। शत्रुघ्न ने वहाँ राम लक्ष्मण के साथ आकर मुनि को आहार दिया। चारों ओर अपूर्व शान्ति एवं सुख चैन व्याप्त हो गया।

सीता ने एक रात्रि को दो गर्जन करते हुये सिंह, समुद्र एवं देव विमान देखे राम से श्वप्न फल पूछने पर उन्होंने बतलाया कि उसके दो यशस्वी पुत्र होंगे। सीता की प्रत्येक इच्छा पूरी की जाने लगी। एक दिन सीता का दाहिना नेत्र फटकने लगा। उससे सीता को बड़ी चिन्ता होने लगी। एक दिन नगर के व्यक्ति मिलकर राम के पास आये। वे कहने लगे कि हमारी पत्नियाँ बिना हमारी आज्ञा के इधर उधर जाने लगी हैं। यदि हम कहते हैं तो वे सीताजी का उदाहरण देती हैं जो रावण के घर रहकर आयी हैं। यह सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने तत्काल लक्ष्मण को बुलाया और पूरी बात कही।

राम ने कर्तातत्वक सेनापति को बुलाया और सीता को वन में छोड़ने का आदेश दिया। लक्ष्मण ने इसका घोर विरोध किया लेकिन राम ने किसी की नहीं सुनी। जब सीता की वास्तविकता का पता चला तो वह बच्चाइ लाकर रोने लगी। उसने रोते हुए राम को निम्न संदेश देने के लिये कहा—

परिजा नै वे दुःखि भस करो, यथा समकित चित्त मे चरो।

पूजा दान करो दिन राति, तुमारे लवरण में इह आति ॥४५=६॥

सीता को अपने स्वयं पर बहुत दुःख होने लगा। वह सोचने लगी कि किन पापों के कारण उसे इतना दुःख उठाना पड़ रहा है। कुछ ही समय पश्चात् उस वन में पुंडरीक नरेश वज्रजंघ का हाथी के कारण वहाँ आना हुआ। उसने सीता का

बिलाप सुना और उसके पास आकर जानकारी प्राप्त की। वज्रजंघ के अनुग्रह विनय करने पर सीता ने अपना परिचय दिया तथा उसे बहिन कहकर घर चलने की कहा। सीता वज्रजंघ के साथ उसके घर चली गयी जहाँ पति ने उसके चरण स्पर्श करके अपने भाग्य को सराहा। उधर कृतातबक ने बहुत बिलाप किया और राम के पास आकर सब कुछ निवेदन किया। राम लक्ष्मण दोनों ही सीता के वियोग में दुःखी रहने लगे।

सीता ने आदण सुदी पूर्णिमा को युगल पुत्रों को जन्म दिया। चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। वज्रजंघ ने खूब दान दिया। दोनों शिशु से बालक एवं बालक से बड़े हुए। सीता भी अपने बच्चों को पालने में सब दुःख भुला बैठी। शिशु घुटनों के बल चलने लगे। कुछ बड़े होकर गुरु के पास पढ़ने लगे। सभी शास्त्र पढ़े। सम्ब्यदर्शन ज्ञान चारित्र्य के मर्म को जाना। धीरे-धीरे दोनों भाइयों ने यौवनावस्था में प्रवेश किया। एक दिन वज्रजंघ ने कुश के लिए पृथ्वीधर से कन्या मांगी। उसके भना करने पर वज्रजंघ ने पृथ्वीधर पर आक्रमण कर दिया। लब कुश भी अपनी माता से आजा लेकर युद्ध के लिए चले गये। युद्ध में उन्हें पूर्ण विजय मिली।

राजा वज्रजंघ की राज्य सभा में नारद का आगमन हुआ। नारद से उनसे सीता लोको की बात सुनी। इसी बीच नारद ने सारी रामायण कह सुनायी। सीता का प्रकाश निष्कासन सुनकर लब कुश ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन दोनों भाइयों ने अपनी माता सीता से फिर सारी जानकारी प्राप्त की। लब कुश ने अयोध्या पर अपनी सेना लेकर आक्रमण कर दिया। आस-पास के गांवों को लटने लगे। जब राम ने उनके बारे में सुना तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। राम ने तत्काल अपने सेनापतियों को बुलाया। दोनों में भयकर युद्ध होने लगा। इधर नारद के कहने से आमण्डल सीता से जाकर मिला। और पूरी कहानी सुनी। फिर दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण ने चक्र चलाया लेकिन वह भी लब कुश के परिक्रमा देकर वापिस आ गया। इतने में नारद ऋषि ने लब कुश का परिचय राम लक्ष्मण की दिया। दोनों भाइयों ने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और अपने द्वारा किये गये सीता निष्कासन की निन्दा की। जब राम लक्ष्मण लब कुश से मिले तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी।

पिता पुत्र सो जब मिले, हुआ अधिक उत्साह।

चैन भयो सब नगर में, पूजी मन की आस ॥४८३॥

राम ने सीता को लाने के लिए नल नील, एवं रतनजटी को भेजा। सीता उनके साथ अयोध्या आ गयी। सबने उठ कर सीता का स्वागत किया। लेकिन राम ने

सीता की निष्कासन का कारण बताया। सीता ने अपने सतीत्व के बारे में बात दुहरावी और किसी भी बरीका में समर्पित करने की बात कही। तबने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और उसे निष्कसंक बताया। लेकिन राम के धारणा से पृथ्वी लोव कर अग्नि कुंड बनाया गया। भड़कर अग्नि जलायी। सभी चित्तको देल कर स्वयं राम भी दुःखी हो गये। सीता से अग्नि कुण्ड में कूदने के लिए कहा गया। सीता पंच परमेष्ठी का स्मरण करके अग्निकुण्ड में कूद पड़ी। लोगों में हहाकार छा गया। लेकिन जब अग्नि कुण्ड के स्थान पर सरोवर एवं उसमे खल सिंहासन पर बंठी हुई सीता को देला तो सब आनन्द विभोर हो गये। देवताओं ने जय-जयकार की तथा आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। सीता को नया जीवन मिला। राम भी सीता को प्रशंसा करने लगे तथा वापिस राजमहल में लौटने की प्रार्थना करने लगे।

राम के आग्रह को सीता ने स्वीकार नहीं किया तथा जगत् की असारता एवं राज्य वैभव के सुखों की विचार दिया तथा पृथ्वीमती आधिका से आधिका दीक्षा ले ली। इसी अवसर पर मुनि सकल भूषण ने नरको के दुःखों का, द्वीप एवं समुद्रों का, छह द्रव्य एवं सात तत्वों का विस्तार से बयान किया। इस अवसर पर राम लक्ष्मण एवं सीता के जीवन मे इतने संकट, युद्ध एवं वियोग किन-किन पूर्व कृत कर्मों के कारण हुए यह जानना चाहा। इसका मुनि ने विस्तार से प्रत्येक के पूर्व भव का कथन किया।

स्वयं राम को जगत् से वैराग्य हो गया। उन्होंने अन्त मे कैवल्य प्राप्त कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया। इस प्रकार पद्मपुराण महाग्रन्थ पूर्ण हुआ। जो इस पद्मपुराण का स्वाध्याय करना उसे तीन लोक का सुख स्वयं प्राप्त हो जावेगा।

पद्मपुराण कुं जे पड़े, बाच सुणावे और।

तिहु लोक का सुख लहे, पावै निरभय ठौर ॥५७४६॥

सभाचन्द के समकालीन कवि

मुनि सभाचन्द का समय हिन्दी काव्य रचना का स्वर्णयुग था जबकि उस समय चारों ओर हिन्दी रचनायें लिली जा रही थी। हिन्दी ग्रन्थों का पठन पाठन बढ़ रहा था तथा संस्कृत प्राकृत के ग्रन्थों का हिन्दीकरण हो रहा था। कवि के समकालीन कवियों मे आनन्दधन, जगजीवन, पाण्डे हेमराज, पं. मनोहरदास, लालचन्द लब्धोदय, पं. हीरानन्द, पं. रायचन्द (अपरनाम बालक), जिनहर्व, अचलकीर्ति, जोधराज मोदीका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों मे पं. रायचन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने संवत् १७६३ मे सीता चरित्र नामक एक स्वतन्त्र काव्य की रचना की थी। कवि का दूसरा नाम "बालक" भी था। इस काव्य मे ३६०० पद्य हैं। चरित्र की कितनी ही प्रतियां जयपुर एवं देहली के

शास्त्र अष्टादशो मे उपलब्ध होती है। चरित्र का मूल आधार आचार्य रविवैद्य का पद्मपुराण है जिसका स्वयं कवि ने निम्न शब्दों में उल्लेख किया।

कौयो शंख रविवैद्य ने, रघुचरित्र जिय जोन।

बहे धरण हरण में कहुँ, रायचन्द्र उर धाण ॥

राम सीता के जीवन पर आधारित एक और काव्य मिलता है जिसके कवि भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य ब्रह्मा जयसागर थे। इन्होंने "सीता हरण" नामक काव्य के माध्यम से सीता के जीवन पर अच्छा काव्य लिखा है। सीता हरण की पाण्डुलिपि में ११४ पत्र हैं तथा जिसका रचना काल संवत् १७३२ है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि आमेर शास्त्र भंडार जयपुर में संग्रहीत है। कवि ने सीता के व्यक्तित्व एवं जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला है। पूरा काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है।

गोर महीचन्द्र सीध जयसागर, रघु सीता हरण नो रास जी।

नर नारी जे भरणे छे सुरणे छे, तस वर जय जयकार जी ॥

सबत सतरह जत्तीसा वरसे, बंसास सुबी लीज सार जी।

बुधबारे परिपूर्ण ज रकयूं सूर तनय रयभार जी ॥

इस प्रकार पचासो कवियों ने राम के जीवन पर अनेक विभिन्न सज्जक रचनाएँ लिखी हैं जो हिन्दी की समृद्ध कृतियाँ हैं।

24-10-84

डा. कस्तरबन्द कासलीवाल

विषय-सूची

कमांक

१. श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी—प्रगति परिचय
२. संरक्षक की कलम से
३. अध्यक्ष की ओर से
४. सम्पादकीय
५. प्रस्तावना

रामकथा का उद्भव एवं विकास, जैन धर्म में राम का स्थान, ग्रन्थकर्ता, रचना स्थान, राम कथा के विचित्र रूप, जैन कथा के दो रूप, हिन्दी में राम काव्य, पद्मपुराण संरचना, जीवन परिचय, छन्दों का प्रयोग, भाषा, रस एवं अलंकार, पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन, राम, लक्ष्मण, सीता, रावण, हनुमान, पद्मपुराण का सामाजिक जीवन, विवाह वर्णन, जीवनवार, स्वप्न दर्शन एवं स्वप्न फल, अकुन एवं अप्सकुन, युद्ध वर्णन, नगरो का वर्णन, महावीर वाणी, पराधीनता, सुभाषित एवं सूक्तियाँ, पाण्डुलिपि परिचय, पद्मपुराण का सार—समकालीन कवि ।

प्रथम विधानक—तीर्थङ्करो का स्तवन, जिनवाणी का स्वरूप २ राम नाम का महारम्य २ आचार्य रविवेण का उल्लेख ३ रचनाकाल ३ कवि का नाम ३ राजसूही नगरी की सुन्दरता ३ व्यापार उद्योग ३ कुण्डलपुर नगर ५ सिद्धार्थ एवं विशाला रानी ५ माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना ५ स्वप्नों का फल ६ माता की सेवा ६ महावीर जन्म ७ महावीर द्वारा वैराग्य ८ कैवल्य ९ समवसरण ९ महावीर वाणी १० बान का फल ११ श्रेणिक राजा द्वारा स्वप्न १२ राजसूना १२ सम-वसरण की ओर १३ रघुवंश कथा जानने की इच्छा १४ रामकथा का महत्त्व १४ भोगभूमि का वर्णन १५ चौदह कुलकर १५ नागिराजा १६ मरुवेवी की सेवा १६ सोलह स्वप्न १६ स्वप्न फल १७ ऋषभदेव का जन्म १८ जन्मोत्सव १८ आदिनाथ

का बाल्यकाल १६ शारीरिक सुन्दरता १६ विवाह एवं सन्तान प्राप्ति १६ राज्य प्राप्ति २० तीन बरों की स्थापना २० नीलाजना द्वारा नृत्य २१ वैराग्य भाव २१ तपस्या २२ आहार क्रिया २३ कैलाश पर्वत पर ध्यानाकुल होना २३ कैवल्य प्राप्ति २५ उपदेश २५ सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय २६ पोदनपुर का वैभव २७ भरत बाहुबली युद्ध २८ बाहुबली द्वारा विजय के पश्चात् वैराग्य लेना २९ ब्राह्मण वर्ग की स्थापना ३१

द्वितीय विधानक—भरत का वैराग्य ३३ भरत का परिवार ३३ सत्यघोष की कथा ३५ सत्यघोष के पास जाना ३६ राजा से निवेदन ३६ राणी द्वारा न्याय ३७ ।

तृतीय विधानक—इक्ष्वाकु वंश वर्णन ३८ द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ वर्णन ३९ नरको के दुःख ४२ सगर के भव ४३ चौबीस तीर्थंकर ४६ सप्तराज का स्वरूप ४७ सगर चक्रवर्ती वर्णन ४८ राजा भागीरथ का वर्णन ५० लंका का राजा महाराक्षस ५० अमर राक्षस ५१ श्रुतसागर मुनि के पास गमन ५१ ।

चतुर्थ विधानक—वानर वंश वर्णन ५४ कन्या की सुन्दरता ५४ वानर द्वीप किण्णलपुर नगर ५६ ।

पंचम विधानक—लका का राजा विद्युत्वेग ५६ मुनि का उपदेश ६१ श्रीमाला का स्वयंवर ६३ माली राजा द्वारा लका पर आक्रमण ६७ तीन स्वप्न ७१ रावण का जन्म ७२ रावण की जिज्ञासा ७३ माता का उत्तर ७३ विद्या सिद्धि ७३ यक्ष द्वारा परीक्षा ७३ सुमाली एवं मालिवान की कथा ७६ पटरस व्यजन ७६ दशानन द्वारा लका राज्य प्राप्ति की इच्छा ७७ ।

षष्ठ विधानक—मन्दोदरी की सुन्दरता ७७ विवाह के लिये विचार विमर्श ७८ पुह्लनगर के लिये प्रस्थान ७८ चन्द्रनखा से भेंट ७८ रावण के दर्शन ७९ मन्दोदरी के साथ विवाह ७९ दशानन की वीरता ८० कुम्भकरण द्वारा उपद्रव ८१ वैश्रवण राजा के वृत्त का सुमाली के दरबार में जाना ८१ दशानन का कोप ८२ वैश्रवण राजा द्वारा युद्ध ८३ युद्ध से वैराग्य ८३ दशानन द्वारा युद्ध करना ८४ वैश्रवण द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण ८४ सुमाली द्वारा पुनः लंका की प्राप्ति ८४ हरिषेण चक्रवर्ती की कथा ८५ दशानन द्वारा जिन पूजा ८६ लका विजय ९० दशानन द्वारा युद्ध ९१ ।

सप्तम विधानक—बाली सुग्रीव वर्णन ९२ राज्य प्राप्ति ९३ युद्ध वर्णन ९४ बालि द्वारा दीक्षा ग्रहण ९५ दशानन की कैलास वन्दना ९६ बालि की तपस्या ९६ बालि द्वारा चिन्तन ९७ रावण द्वारा बालि की वन्दना ९८ दीक्षा लेने के भाव ९९ धरशेन्द्र द्वारा शिक्षा ९९ ।

अष्टम विधानक—अतिगति का विवाह (१००) सुग्रीव के साथ विवाह । रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार १०१ रावण द्वारा जिन पूजा १०२ रावण का सहस्ररश्मि से युद्ध, १०३ सतवाहन मुनि द्वारा उपदेश १०३ सहस्ररश्मि द्वारा मुनि वीक्षा १०४ ।

नवम विधानक—यज्ञ भेद की चर्चा १०६ वसु राजा १०६ नारद का प्रागमन १०७ नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा १०८ स्वस्तिमति द्वारा वसु राजा से वचन मागना १०९ नारद वचन १०९ परवत द्वारा सम्भाष ११० मात्स्य राजा को संबोधन ११० नारद का जन्म एवं जीवन १११ नारद का उपदेश ११२ नारद पर उपसर्ग ११३ रावण द्वारा नारद को सहायता करना ११३ ऋषभ वर्णन ११४ रावण का कनकप्रभा से विवाह ११५ भाद्रपद के व्रत ११६ ।

दशम विधानक—रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह ११६ मधु का वृत्तान्त ११६ युद्ध वर्णन ११९ रावण द्वारा विद्या प्राप्ति १२१ रावण की विजय १२१ नलकूबड की राजा से बात १२२ इन्द्र का क्रोध १२३ रावण की सेना १२३ इन्द्र द्वारा युद्ध १२४ इन्द्र और रावण में युद्ध १२५ ।

११वां विधानक—सहस्रार का रावण के पास जाना १२६ इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना १२६ इन्द्र को छोड़ना १२७ इन्द्र की अप्पा १२८ मुनि चन्द्र का प्रागमन १२८ इन्द्र के पूर्व भव १२९ इन्द्र का मान संशय का कारण १३९ इन्द्र द्वारा मुनि वीक्षा १३१ ।

१२वां विधानक—अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति १३१ रावण द्वारा बन्धना १३२ भगवान की वाणी १३२ लोमदत्त सेठ की कथा १३३ अद्रदत्त सेठ की कथा १३५ कुम्भकरण द्वारा घर्मोपदेश की प्रार्थना १३५ रात्रि भोजन निषेध १३६ रावण द्वारा व्रत ग्रहण १३७ ।

१३वां विधानक—हनुमान का जीवन १३७ अंजना के विवाह की चर्चा १३८ राजा महेन्द्र एव राजा प्रह्लाद की मेंट १३९ पवनजय के साथ विवाह प्रस्ताव १३९ अंजना को देखते की उत्सुकता १३९ दासी द्वारा विधुत वेश की प्रशंसा १४० पवनजय की निराशा १४० दंतीपुर पर चढ़ाई १४० पवनजय अंजना विवाह १४० अंजना का दुःख १४१ रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध १४२ राजा प्रह्लाद के पास सदेश १४३ पवनजय द्वारा युद्ध में जाने का मानस १४३ अंजना द्वारा पवनजय को विदाई १४३ पवनजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना १४४ अंजना से मिलने की इच्छा १४४ अंजना पवनजय मिलन १४४ अंजना को मुद्रिका देना १४६ ।

१४वां विधानक—अंजना द्वारा गर्भ धारण करना १४६ केतुमति द्वारा पूछताछ १४६ अंजना द्वारा स्पष्टीकरण १४६ अंजना को ताड़ना १४७ अंजना का निष्कासन १४७ अंजना का महेन्द्रपुरी जाना १४८ पिता द्वारा निष्कासन १४८ सब ओर से तिरस्कृत १४९ गुफा में शरण लेना १५० वन में मुनि दर्शन एवं वंदना १५० बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना १५१ मुनि द्वारा समाधान १५१ कनकोदरी द्वारा जित प्रतिमा की घोरी १५२ प्रभु जन्म की अवधि वाणी १५३ रत्नचूल का आगमन १५३ पुत्र जन्म १५४ खेचर के प्रश्न का उत्तर १५५ खेचर का परिचय १५५ अंजना का विद्याधर नगर जाना १५५ विमान से हनुमान का निरना १५६ ।

१५वां विधानक—पवनजय द्वारा रावण से विदा १५६ पवनजय का आदिशपुर आगमन, अंजना के निष्कासन के समाचारों से दुःखित होना, समुराल जाना १५७ अंजना की तलाश १५८ पवनजय का संदेश १५८ अंजना की चिन्ता, पवनजय की प्राप्ति १५९ अंजना पवनजय मिलन १६० ।

१६वां विधानक—वशुपुत्र द्वारा रावण से युद्ध १६१ हनुमान द्वारा युद्ध में जाने की इच्छा १६१ कुम्भकरण द्वारा लूटमार १६२ रावण द्वारा निन्दा १६२ वशुपुत्र को पुनः राज देना १६२, वानरवशी राज वर्णन १६३ ।

१७वां विधानक—बीरकसेठ वनमाला वर्णन १६४ राजा की व्याकुलता १६५, पूर्व जन्म १६६ बीरकसेठ की तपस्या १६६ स्त्री को दुःख देना १६७ मुनि सुव्रतनाथ का जन्म १६८ जीवन १६९ हरिवंशी राजा १७० राजा वज्रबाहु वर्णन १७१, कीर्तिधर राजा वर्णन १७३ ।

१८वां विधानक—कीर्तिधर की तपस्या १७४ राजकुमार द्वारा वैराग्य १७४ कठोर तपस्या १७६ चित्रमाला को पुत्रोत्पत्ति १७७, नद्युष राजकुमार को राजा बनाना १७७ स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध १७७ राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा १७८ सिद्धसेन का राजा बनना १७८ दशरथ का राजा बनना १७९ ।

१९वां विधानक—दशरथ वर्णन १८० नारद का आगमन १८० नारद द्वारा रावण की वार्ता १८० ।

२०वां विधानक—कंकेयी वर्णन १८१ स्वयंवर रचना १८२ दशरथ द्वारा युद्ध ।

२१वां विधानक—अपराजिता द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ लक्ष्मण जन्म १८५ भरत जन्म, राम जन्म १८५ चारों भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन ।

२२वां विधानक—विप्र द्वारा विलाप १८७, राजा द्वारा वदयंत्र १८७, मुनि दीक्षा १८८, रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध १८८, मंत्री द्वारा उपाय १८८, वैराग्य भाव १८९, उपदेश १८९, राजा द्वारा अणुवृत्त ग्रहण करना १८९, चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना १८९, सीता का गर्भमें घाना १९०, सीता नामण्डल का जन्म १९०, देवता द्वारा बालक का अपहरण १९०, जनक राजा द्वारा विलाप १९१, दशरथ द्वारा खोज १९१, कन्या का नाम सीता रखना १९१ ।

२३वां विधानक—श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह जानने की इच्छा करना १९१, जनक की नगरी पर आक्रमण १९२, दशरथ के पास सन्देश १९२, दूत का अयोध्याजी घाना १९२, रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना १९२, राम का मिथिला गमन १९३, राम द्वारा युद्ध करना १९३ ।

२४वां विधानक—जनक की इच्छा १९४, नारद द्वारा सीता को देखना १९४, सीता का डरना १९४, नारद का विचार १९४, प्रभामंडल की सीता को पाने की इच्छा १९५, चन्द्रगति द्वारा उपाय सोचना १९५, विद्याधर द्वारा मायामयी अस्त्र रचना १९६, चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव १९७, जनक का उत्तर १९८, स्वयंवर रचने का प्रस्ताव १९९, मिथिला नगरी १९९, रणुवास में राजा जनक १९९, रानी द्वारा चिन्ता २००, सीता स्वयंवर २००, राम द्वारा अनुष्ठान २०१, सीता द्वारा वरमाला डालना २०१, भरत का लोकसुन्दरी से विवाह २०२, मिष्ठानों का वर्णन २०२ ।

२५वां विधानक—अयोध्या आगमन, बंधोदक लेना २०१ सुप्रभा रानी की व्यथा, कंचुकी को मृत्यु का आदेश, दशरथ पर प्रभाष २४० सर्व विभूति मुनि से, धर्मोपदेश श्रवण २०५

२६वां विधानक—भामंडल की चिन्ता २०६, जाति स्मरण २०६, सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन २०७, दशरथ का मुनि के पास जाना २०७, मुनि द्वारा कथन २०८, प्रभामंडल द्वारा प्रश्न करना २०८, आई बहिन मिलन २१०,

२७वां विधानक—दशरथ द्वारा पूर्वं भाव पूछना २१०, पूर्वं भव कथन २११-१३ दशरथ का बापिस घर आना २१४ वैराग्य भाव-रामचन्द्र को राज सौंपना २१४ कंकयी का वर मांगना २१५ दशरथ द्वारा विचार २१५ भरत को प्रामात्रण २१५ राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव २१६ माता के पास आना २१६ राम का उत्तर २१६ लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना २१६ राम का वनवास २१७

२८वां विधानक—वनवास की प्रथम रात्रि २१७ राजाओं का अनु-गमन २१८ सबका बापिस आना २१५ दशरथ द्वारा खदन २१९ भरत का राम

के पास जाना २१६ कौकयी का आगमन २२० राम का उज्जयिनी जाना २२० सिधोदर मिलन २२० लक्ष्मण की वज्रकरण से मेट २२२ लक्ष्मण का सिधोदर के पास जाना २२२ लक्ष्मण सिधोदर के मध्य ऋगडा २२३ सिधोदर की बाधना २२५ राज्य का बंटवारा २२५

२६वां विधानक—लक्ष्मण विद्याधर मिलन २२६ लक्ष्मण द्वारा प्रश्न २२७ रुद्रवत्स राजा से युद्ध २२८ बालखिल्य को मुक्त करना २२८

३०वां विधानक—वन भ्रमण २३० सीता की ध्यास बुझाना २२६ विप्र द्वारा क्रोध करना २२६ दया के पात्र २२६ बस्ती में जाने का त्याग २३० मन्दिर में विश्राम २३० देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना २३० कपिल ब्राह्मण की चिन्ता २३० बर्मापदेश सुनना २३१

३१वां विधानक—चातुर्मास के पश्चात् गमन २३१ विजय वन में गमन २३१ वनमाला का आसक्त होना २३१ लक्ष्मण का प्रगट होना २३२ सीता द्वारा उत्तर २३३ वनमाला की तलाश २३३

३२वां विधानक—अतीवीर्य राजा का अयोध्या पर आक्रमण २३४ लडाई के कारण २३४ दूत द्वारा सन्देश २३४ शत्रुघ्न का उत्तर २३४ दूत का उत्तर प्रत्युत्तर २३५ युद्ध की तैयारी २३५ पृथ्वीधर का निवेदन २३५ भरत शत्रुघ्न को आग्रहण २३६ भरत की सेना २३६ गणिका नृत्य २३६ नृत्य के भाव २३६ पातरी का उत्तर २३७ सीता की दया २३८ अतिवीर्य को अभयदान २३८ अतिवीर्य द्वारा वैराग्य २३८

३३वां विधानक—विजय राजा का विचार २३६ अतिवीर्य की तपस्या २३६ वनमाला को छोड़ कर आगे बढ़ना २४० सुलोचना नगर, जितपद्मा की प्रतिज्ञा २४० लक्ष्मण का जितपद्मा के पास जाना, बरछी द्वारा वार, लक्ष्मण की विजय, दोनों का राम के पास आगमन २४१

३४वां विधानक—जितपद्मा को छोड़ कर आगे बढ़ना, वंसस्थल गांव पहुँचना पर्वत पर बाजा बजना २४२ राम द्वारा विचार, अजयधरों का निकलना, देश भ्रमण कुल भूषण मुनि पर उपसर्ग, राम लक्ष्मण का मुनि के पास गमन २४३ अन्तरो के पूर्वभ्रव, मतिवर्धन मुनि का आगमन, तपस्या २४४ उदित मुदित द्वारा वैराग्य, मलेच्छो द्वारा उपद्रव २४५ उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति, अनुरध राजा का मान मंग, देश भूषण कुल भूषण का जन्म, वन क्रीडा २४६ कमलोत्सवा का विचार, दोनों भाइयों का वैराग्य भाव, माता पिता द्वारा संताप २४७ नाग-

दसा का अनरथ तपस्वी के पास जाना तपस्वी का कन्या के पास जाना २४८
अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का जाना, दोनों मुनियों को केवल ज्ञान होना २४९ ।

३५वाँ विधानक—सूरजमल राजा द्वारा राम का स्वागत २४९ राजा
राम का भागे गमन, वन जीवन चारण मुनियों को आहार २५० युद्ध की कथा,
मुनि पर उपसर्ग २५१ मुनि के चारों ओर अग्नि खसाना, अचलराय एवं गिर देवी
द्वारा मुनि को आहार, सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना २५२ कन्या का
अविध्य, कन्या का वैराग्य भाव २५३ ।

३६वाँ विधानक—दंडक वन में पहुँचना, वन सोमा २५४ ।

३७वाँ विधानक—लक्ष्मण को सुगन्ध घाना, पूर्व कथा २५५ सूरजहास
लक्ष्मण निमित्त से शत्रुक की तपस्या, लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति २५७ वेव
पुनीत आभूषणों की प्राप्ति, चन्द्रनखा द्वारा विलाप, राम लक्ष्मण से भेंट २५८ ।

३८वाँ विधानक—चन्द्रनखा का खरदूषण के पास जाना, खरदूषण
का कुपित होना २५९ रावण के पास दूत भेजना, खरदूषण का दंडकवन पहुँचना
लक्ष्मण द्वारा युद्ध रावण का आगमन २५९ सीता को देखना, करण गुप्ति विद्या
का ध्यान करना, रावण द्वारा शंखनाद, राम का लक्ष्मण के पास जाना, सीताहरण
सीता का विलाप, जटायु द्वारा आक्रमण २६० रावण द्वारा खेद, राम का विलाप
२६१ ।

३९वाँ विधानक—लक्ष्मण खरदूषण युद्ध, लक्ष्मण की विजय २६२
लक्ष्मण का विलाप, विद्याधरो का आगमन, चारों ओर दून भेजना, रावण के पास
जाना २६३ कपि द्वारा देखना प्रलकागढ़ में पहुँचना २६४ ।

४०वाँ विधानक—रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति, सीता का करारा
उत्तर अशोक बाटिका में सीता को रखना २६६ चन्द्रनखा का रावण से निवेदन,
मन्दोदरी रावण सवाद, दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास २६७
राम की व्याकुलता, मन्त्रियों द्वारा विचार २६८ ।

४१वाँ विधानक—राम सुग्रीव मिलन २६९ राम द्वारा सुग्रीव को राज्य
देना, सुग्रीव की विजय २७० सुग्रीव द्वारा कन्याग्रो की भेंट २७१ ।

४२वाँ विधानक—कन्याग्रो के हाव भाव, जशदत्त द्वारा माता
प्राप्ति की खोज २७२ सीता की खोज, रतनजटी सुग्रीव भेंट, रतनजटी द्वारा लंका
परिचय २७३ जांबूनद मंत्री का कथन, बदर मोर कथा २७४ लक्ष्मण का क्रोधित
होकर निष्पत्ति करना २७५ रावण की मृत्यु के सम्बन्ध में अविध्यवाणी, लक्ष्मण
द्वारा धिला ठठाना २७६ ।

४३वाँ विधानक—लंका से दूत का आगमन २७७ हनुमान द्वारा राम के दर्शन २७८ राम का हनुमान को गले लगाना, पवनपुत्र द्वारा स्तुति २७९ ।

४४वाँ विधानक—महेन्द्रपुर नगर २८० हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना, परस्पर मिलन २८१ ।

४५वाँ विधानक—तीन कन्याओं द्वारा तपस्या, हनुमान द्वारा दावानल बुझाना, विवाह की अविव्यबाणी २८३ ।

४६वाँ विधानक—वज्रमुख एवं हनुमान की बार्ता २८४ लंका सुन्दरी का प्रेम लकापति का प्रकाश २८४ हनुमान द्वारा समझाना २८४ ।

४७वाँ विधानक—हनुमान का लंका में पहुँचना, विभीषण से भेंट २८६ रावण का क्रोधित होना, हनुमान का वानर रूप में सीता के पास पहुँचना मन्दोदरी सीता की बार्तालाप २८६ सीता द्वारा राम के सेवक के रूप में प्रकट होने के लिये कहना, सीता के प्रश्न हनुमान का उत्तर २८७ मन्दोदरी का कथन २८३ हनुमान मन्दोदरी संवाद २८९ मन्दोदरी का नाटक, हनुमान का सीता से निवेदन, हनुमान द्वारा भोजन, सीता द्वारा आहार ग्रहण, सीता का चिन्तन २९० सीता के वचन हनुमान का प्रस्थान मन्दोदरी का रावण के पास जाना रावण का क्रोधित होना हनुमान का युद्ध कौशल २९१ इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकड़ना, हनुमान का परिचय रावण का क्रोधित होना २९२ हनुमान का उत्तर हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका बहन २९३ ।

४८वाँ विधानक—हनुमान का राम के पास जाना, राम की चिन्ता २९४, राजाओं द्वारा निवेदन, युद्ध की तैयारी २९५ ।

४९वाँ विधानक—रावण का चिन्तन, युद्ध की तैयारी २९६ योद्धाओं द्वारा रावण को समझाना विभीषण का इन्द्रजीत से वचन २९७ रावण का विभीषण पर डावा, विभीषण का राम के पास जाना, विभीषण का द्वारपाल से निवेदन मन्त्रियों का परामर्श २९८ विभीषण द्वारा राम दर्शन, सेना के साथ लंका द्वीप में पहुँचना २९९ ।

५०वाँ विधानक—अज्ञोहिणी सख्या, दोनों के सामर्थ्य की चर्चा ३०० ।

५१वाँ विधानक—युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान ३०१ ।

५२वाँ विधानक—राम की सेना, रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार ३०३ ।

५३वाँ विधानक—हस्त प्रहस्त कथा ३०४ ।

५४वाँ विधानक—दूसरे दिन का युद्ध ३०५, तीसरे दिन का युद्ध ३०६ विभीषण का राम को परामर्श, वैशो द्वारा राम की विद्या प्रदान करना ३०८ ।

५५वाँ विधानक—राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी, विद्या द्वारा मुच्छितों की मुच्छा दूर करना ३०९ ।

५६वाँ विधानक—दोनों ओर योद्धाओं द्वारा युद्ध, विभीषण रावण युद्ध ३१० लक्ष्मण रावण युद्ध ३११ ।

५७वाँ विधानक—राम विलाप ।

५८वाँ विधानक—मन्दोदरी सीता का विलाप, भामण्डल और चन्द्रमति का आगमन ३१३ वंश की जीवन कहानी विशल्या की कथा ३१४ वनवास के दुःख ३१५ ।

५९वाँ विधानक—हनुमान भगव को अयोध्या भेजना ३१७ भामण्डल का उत्तर ३१८ विशल्या द्वारा मुच्छा दूर करना, लक्ष्मण का होश में आना ३१९ ।

६०वाँ विधानक—रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना ३१९, रावण का मन्तव्य ३२० रावण के दूत का राम के पास आगमन, राम का उत्तर, रावण के दूत का पुनः निवेदन ३२० राम का प्रत्युत्तर, दूत का रावण के पास आना ३२२ ।

६१वाँ विधानक—रावण द्वारा शैत्य वदना ।

६२वाँ विधानक—अष्टाङ्गिका महोत्सव, रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न ३२४ ।

६३वाँ विधानक—व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना, बन्वरो द्वारा लका में उपद्रव, सेनपाल द्वारा रक्षा ३२५ ।

६४वाँ विधानक—भगव का लका में जाकर स्थिति का अभ्ययन, भ्रान्ताकृत रावण को देखना ३२६ रावण द्वारा विद्या सिद्धि, विद्या का रावण से निवेदन ३२८ ।

६५वाँ विधानक—रावण का मगन, रावण का मंत्रियों द्वारा पुनः निवेदन ३२९ रावण द्वारा पश्चाताप, रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय ३३० ।

६६वाँ विधानक—रावण की दैनिक क्रिया, दरबार हास ३३० अपशकुन होना, मन्दोदरी की भिन्ता, मंत्री का उत्तर, मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना ३३१ रावण का उत्तर, उत्तर प्रत्युत्तर ३३२ रावण का क्रोधित होना, मन्दोदरी का पुनः निवेदन, रावण का उत्तर, रावण की राजि, युद्ध के लिए प्रस्थान ३३५ ।

६७वाँ विधानक—मन्दोदरी से अन्तिम मंत्र, राम द्वारा युद्ध की तैयारी ३३६ दोनों की सेनाओं में युद्ध ३३७ ।

६८वाँ विधानक—देवताओं द्वारा आकाश से बुद्ध का अवलोकन, रावण द्वारा चिन्ता करना ३३८ अनेक रूप में रावण का लडना, रावण द्वारा चक्र चलाना ३३९ लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना ३४० ।

६९वाँ विधानक—रावण का पराचाताप ३४० विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श, रावण का क्रोधित होना, लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना ३४१ ।

७०वाँ विधानक—विभीषण द्वारा विलाप, रावण की रामियों द्वारा विलाप, श्रेष्ठ मरन ३४३ अरिद्रम की कथा ३४४ ।

७१वाँ विधानक—रावण का दाह सस्कार ३४५ कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोड़ना ३४६ मुनि का सध सहित आगमन, केवल ज्ञान प्राप्ति, शरणोद्गार का आसन कपित होना, राम द्वारा विचार करना ३४७ राम का मुनि के पास जाना, पूर्वभवों का वर्णन ३४८ ।

७२वाँ विधानक—राम लक्ष्मण का लंका प्रवेश ३५० सीता की दशा, राम सीता मिलन ।

७३वाँ विधानक—लंका की शोभा, विभीषण द्वारा राम का स्वागत ३५३ विविध व्यंजन, इन्द्रजीत मेघनाथ द्वारा निर्वाण प्राप्ति ३५४ ।

७४वाँ विधानक—नारद का अयोध्या आगमन, अपराजिता से प्रश्न ३५८ राम कथा नारद का लंका में आगमन, राम द्वारा स्वागत ३५९ अयोध्या वर्णन, अयोध्या में राम द्वारा दूत भेजना ।

७५वाँ विधानक—राम सीता का अयोध्या गमन, मार्ग परिक्रम, अयोध्या दर्शन, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न मिलन ।

७६वाँ विधानक—अयोध्या वैभव, सीता की नगर में चर्चा, भरत के मन में वैराग्य ३६५ राम भरत वार्ता, ३६६ उन्मत्त हाथी का अकस्मात् आगमन ३६७ ।

७७वाँ विधानक—भरत का हाथी पर चढ़ना, हाथी द्वारा तप साधना ३६८ ।

७८वाँ विधानक—देशभूषण कुलभूषण मुनि आगमन (३६९-७६) भरत के पूर्वभव ३७६ ।

७९वाँ विधानक—भरत द्वारा वैराग्य, कैकयी का विलाप, कैकयी का वैराग्य ३७७ ।

८०वाँ विधानक—राम लक्ष्मण द्वारा दुःख प्रसट करना, राम का राज्यभिषेक ३७८ ।

८१वाँ विधानक—समुद्र की राज देवी की हत्या, समुद्र द्वारा मथुरा राज्य चाहना, मथुरा पर चढ़ाई ३८० लक्ष्मण, मथु द्वारा वीराग्य ३८२ ।

८२वाँ विधानक—मथुरावा के निर्वो द्वारा आक्रमण, धरणीन्द्र द्वारा सम्मानना ३८३ प्रजा की दुःख देना ३८४ ।

८३वाँ विधानक—वीराग्य भावना ३८५ ।

८४वाँ विधानक—मथुरा में सात मुनियों का आगमन, आहार विधि पंचम काल का प्रभाव ३८६ आशीर्वाद ३९० ।

८५वाँ विधानक—जनोरमा विवाह ३९२ ।

८६वाँ विधानक—राम लक्ष्मण विभव विधानक ३९४ ।

८७वाँ विधानक—राजमहल, सीता द्वारा स्वप्न दर्शन, सीता का रोहिला ३९६ ।

८८वाँ विधानक—सीता का नेत्र कड़कना ३९७ राम द्वारा प्रश्न ३९८ प्रतिनिधियों का उत्तर ३९९ राम की ध्वषा ।

८९वाँ विधानक—राम का कथन, लक्ष्मण का क्रोध, राम का निर्णय ४०१ सीता को यात्रा के बटाने से जाना ४०२ कृतांतक का वन में अकेलापन, वज्रजंघ का बिलाप ४०४ ।

९०वाँ विधानक—सीता द्वारा परिचय देना, गतियों के दुःख, वज्रजंघ का परिचय ४०७ ।

९१वाँ विधानक—सीता के साथ वज्रजंघ का आगमन, कृतांतक की ध्वषा, राम लक्ष्मण का रुदन ४०९ ।

९२वाँ विधानक—सीता के पुत्र जन्म, बाल कीड़ा, अध्ययन, ४१०-११ ।

९३वाँ विधानक—कुश के लिए पृथ्वीधर के पास दूत भोजना, पृथ्वीधर का कुपित होना ४१३ वज्रजंघ एवं पृथ्वीधर ने युद्ध ४१३ लवकुश का प्रस्थान ४१४ ।

९४वाँ विधानक—नारद मुनि का आगमन ४१४ लवकुश की प्रतिक्रिया, नारद का पुनः आगमन ४१७ लवकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण, ४१८ ।

९५-९६वाँ विधानक—युद्ध वर्णन ४२० नारद द्वारा लव कुश का रहस्य खोलना, पिता की वन्दना ४२१ लवकुश का अयोध्या आगमन ४२२ ।

९७वाँ विधानक—राम का चिन्तन, सीता को लेने के लिए भोजना ४२३ सीता का आगमन, ४२४ अग्नि परीक्षा ४२५ यक्षिणी द्वारा मुनि पर उपसर्ग ४२७ ।

४८६वाँ विधानक—राम द्वारा यष्ठाताप करना, अग्नि परीक्षा में सफलता ४८६ सीता का उत्तर ४९० नरकों के दुःख वर्णन ४९१ द्वीप समुद्र वर्णन ४९२ सुल की तरतमता तत्त्ववर्णन ४९३ ।

४९६वाँ विधानक—विभीषण द्वारा प्रश्न, सर्वभूषण द्वारा वर्णन ४९६ मुनि के पास जाना ४९३६ तपस्वी जीवन ४९० ।

१००वाँ विधानक—सीता पृथ्व्या ४९५ ।

१०१वाँ विधानक—सीता की पूर्व कथा ४९८ ।

१०२वाँ विधानक—प्रद्युम्न सबकुमार के पूर्वभव ४९२ मधु कीटक भव वर्णन ४९४ ।

१०३वाँ विधानक—लक्ष्मण पुत्र निष्क्रमण ४९० ।

१०४वाँ विधानक—भाव मण्डल पर लोक गमन ४९२ ।

१०५वाँ विधानक—हनुमान निर्वाण ४९३ ।

१०६वाँ विधानक—संकर सुर मकर कथा ४९४ ।

१०७वाँ विधानक—सबकुश दीक्षा ४९५ ।

१०८वाँ विधानक—लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप ४९७ ।

१०९वाँ विधानक—विभीषण द्वारा ससार स्वरूप वर्णन ।

११०वाँ विधानक—राम का तीव्र मोह, अयोध्या पर आक्रमण, देव रूप जटायु द्वारा सहायता ४७१ कृतांतवक्र द्वारा राम को समझाने के लिए माया रचना ४७२ राम की वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना ४७३ ।

१११वाँ विधानक—राम का वैराग्य ४७५ वैराग्य ४७६ ।

११२वाँ विधानक—राम की तपस्या ४७७ सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन ४७९ राम को केवल ज्ञान प्राप्ति ४८० ।

११३वाँ विधानक—बालुका पृथ्वी से रावण, सबकुमार की दक्षा वर्णन ४८३ राम केवली के पास देवों का आगमन ४८४ समवसरण ४८४ प्रश्न, राम की बाणी ४८५ लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा ४८७ पद्मपुराण की स्वाध्याय का महत्व ४८८ रविशेखाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना ४८९ ।

११४वाँ विधानक—काष्ठासव पट्टावली ४९०, मल सघ प्रशस्ति ४९१ ।

अनुक्रमिका—४९३ से शुद्धि-पत्र ५०६ लेखक परिचय ५०७ ।

पद्मपुराण (हिन्दी)

चौपई

तीर्थंकरों का स्तवन

आदिनाथ बहू जिनरास । चरण कमल लेऊं मन लास ॥
जैनधर्म कीया परकास । अव्ययीक की पुंजी आस ॥१॥
अजित नाथ संसारड जीत । मोक्ष पंथ की आणी रीत ॥
समर्थ जिरण भव भ्रमण निवार । उतरे भव सागर तैं पार ॥२॥
अभिनंदन भय कीने दूरि । सेवत सकल रिद्धि रहै पूरि ॥
सुमतिनाथ सुभ मति दातार । सेवत पावै सुख अपार ॥३॥
देव पद्मप्रभु सेवा करौ । आरौ गति का दुख परिहृ ॥
देव सुपास पूजो हरि भाव । पूजित उपजै मन कौ भाव ॥४॥
चन्दाप्रभु ज्यों दुतिया चंद । दिन दिन कला बरै आनंद ॥
पुष्पदंत जिन पुष्पनि वास । तजि संसार भुगति किया वास ॥५॥
सीतल नाथ दया सौं ध्यान । सुमरत पावै मोक्ष सुमान ॥
श्रेयांसे स्वामी अरिहन्त । टूटे जनम जरा का अन्त ॥६॥
वासुपूज्य की पूजा करौ । भोसागर के दुख परिहरै ॥
विमलनाथ जिन धर्म महत । भविजन दरस भये भव अंत ॥७॥
अनतनाथ स्वामी अरिहन्त । दरसन पाये सुख अनंत ॥
धर्मनाथ जिन धर्म महत । भविजन दरस भये भव अंत ॥८॥
सांतिनाथ सुमरौ दिन रंण । बाढ़े लखि होइ सुख जैन ॥
कुशनाथ अरि कीने दूर । मये मुपनि संसार कर जुघ ॥९॥
अरहनाथ अरि कीने दूर । सुमिरत रहै सदा रिष पूर ॥
मल्लिनाथ महा सुभट सुवीर । अष्ट करम जीते हरि धीर ॥१०॥
मुनिसुव्रत पूजो परमात । असुभ करम का होबै घात ॥
नमि जिलाद आशो करि जोर । टूटे जनम जरा की डोर ॥११॥
अरिष्ट नेम जादू जग बुनी । सेवत मतिश्रुत पावै धनी ॥
पार्श्वनाथ पूजो हरि ध्यान । सुमरत पावै पूरन ग्यान ॥१२॥

वर्द्धमान पूजो सब कोइ । मनवच्छित फल बहुविध होइ ॥
 आदि अत जे जिन चौबीस । पूज' सुरनर नावै सीस ॥१३॥
 वहु मुनिवर भूढ़ केवली । कुमति कलेश सब जाए टली ॥
 केवल वारण' सभा सहाइ । सुनिवा नृक सुहरि पलाय ॥१४॥
 दीप अढाई मै जे साध । उसके गुन हिरदं मै बाध ॥
 निस वासर सुमरण मै चित । ध्यावै श्री जिन चरण जु नित ॥१५॥
 गणधर चरण सरण कौ गहौ । गुरु की सेवा भक्ति कै रङ्ग ॥

जिनवाणी का स्वरूप

जिनवाणी मै समर सदा , मति श्रुति बुद्धि प्रकास तदा ॥१६॥
 उज्ज्वल वरुण गल मोतीहार । कवियना गुण भगम अपार ॥
 सीसफूल दोइ कुङ्कुमकरण । रुणभरण नेबर बाज' वरुण ॥१७॥
 करककुल अपुल भूदब्दी । यशिमाम्बिक हीरे सूजब्दी ॥
 मोती भाग बनी छवि घनी । हस चढ़ी सोभा बहु बनी ॥१८॥
 छह दरसन मुख मडन जान । सुमरत बहु विष पावै ग्यान ॥
 मूरिषतै पडि होइ सुजान । ता कारण मेऊ घरि ध्यान ॥१९॥
 श्री जिन मुख की बानी सही । सरस्वती सम को बीजो नही ॥
 करि डडोत कवि करै प्रणाम । भूला अक्षर आणै ठाम ॥२०॥

बोरठा

सुमर जिन चऊबीस, सारद की सेवा करो ।
 जे त्रिभुवन के ईश, इह दाता बुधि फल तनी ॥२१॥

कोपई

राम नाम का महात्म्य

रामचंद बंदी जगदीस । साहसवत महाबल ईस ॥
 अनुज वीर लक्ष्मिन बलवान । तीन षड मे ताकी आन ॥२२॥
 राम नाम गूढ भगम अथाह । ते गुन किस पै बरने जाय ॥
 जा मुख राम नाम नीसरै । सो सकट मे बहुरि न परै ॥२३॥
 जा घट राम नाम का बास । तार्क पाप न आवै पास ॥
 जिन श्रवणन राम जस सुने । देवलोक सुष पावै घने ॥२४॥
 सकट विपति पडै जे आय । राम नाम तिहा होइ सहाइ ॥
 जल थल वन विहङ्ग ले नाम । मनवाञ्छित सहु सीकै काम ॥२५॥
 चलत विदेस नाम जो लेइ । रामचन्द्र ताकुं फल देइ ॥
 जे निश्चै सौं सुमरण करै । बहुरि न भवसागर मै फिरे ॥२६॥

जो सहज रसना करि अरीं । राख नाम गुण जाह न मिने ॥
जैसे फल महा उत्तुंग । जाके फल दीसैं सुभरण ॥२७॥
बीनो देखि देखि ललचायं । बे फल कैसे बीना वाय ॥
बहु ऊँचा यह नीची देह । कहीं वा फल कूँ पावै एह ॥२८॥
जे मंगल माने मययंत । उनौ उबारि डारै जु तुरंत ॥
बे फल बीन बीना न लिये । बीसैं जिनगुण सुग्म कर दिये ॥२९॥

प्राचार्य रविरेख का संन्यस

केवल बाणी सुण्यां बर्षान । बंझित कुनीबर रण्या पुराण ॥
प्राचार्य रविरेख महत । संस्कृत मैं कीनी संन्य ॥३०॥
महा मुनीस्वर ग्यानी गुनी । नति श्रुति प्रवधि ग्यानी मुनी ॥
महा निर्ग्रन्थ तपस्वी जती । क्रोध भान भावा नहीं रती ॥३१॥
भारिषो बानी शास्त्र किया । धर्म उपदेश बहु बिष दिया ॥
जिसकें भेदाभेद अपार । महा मुनीस्वर कहैं बिचार ॥३२॥
जैसे रवि का होह उदोत । भाजी तिमिर निम्नमल होत ॥
इस बिषि सुनिकें मिटै सदेह । मिथ्या तजि समकित सुं नेह ॥३३॥

रचना काल

संबत सत्रहसैं म्यारह बरस । सुन्या भेद जिनबाणी सरस ॥
फाल्गुन मास पंचमी स्वेत । गुरुवासर मनमें धरि हेत ॥३४॥

कवि का नाम

सभाचन्द्र मुनि भया भानन्द । भाषा कर चौपई छव ॥
मुनि पुरान कीनां मढाने । गुनि जन लोक सुनुं बे कान ॥३५॥

राजगृही नगरी की कुबरता

जबूद्वीप मे भरत पड । मन्वन्त देस राजग्रही प्रचड ॥
ऊबे मंदिर हैं सत सिने । सब ते सरस राय के बने ॥३६॥
वसैं सघन दीसैं नहीं अंग । लिखैं चित्र जिमे भले सुरंग ॥
उज्जल वरण बबल हर किये । खत्री कलस कनक के दिये ॥३७॥
बनी जु बँठक नाना भाति । जिनफी लोग निगरहे जात ॥
प्रति उत्तुंग सवारी पीलि । लखे कबाह बीजैं सब ठौर ॥३८॥
भारि करेखे सोभा भली । देखत उपजै मननी रली ॥
भार्ग सूत रण्या बाजार । चौडी नीव सई सुसवारि ॥३९॥

व्यापार उद्योग

भले भले भाये सुनवारि । मंदिर रचे बडे विस्तारि ॥
वहाँ सराफ सराफी करै । बीलैं सति झूठ परिहरै ॥४०॥
कसैं कसौटीं परवैं दाम । लेवां देई सहज विश्राम ॥
बीच बाजार रहैं जौहरी । मणिमाणिक हीरां सोल खरी ॥४१॥

मोती लाल पनौ श्रीर चुनी । राजद्वार महिमां प्रति घनी ॥
 भली वस्तु जो राजा लेई । मुह मांगिया दाम गिए देई ॥४२॥
 कही बजाज बजाजी करै । सत्य बचन मुष तै उच्चरै ॥
 कही जरवा फजिरी सिकलात । नरमी मारय नाना भाति ॥४३॥
 निरमं वत करै व्यापार । दर बेसुरी भर साहुकार ॥
 कोठीवाल करै व्योहार । जिनके वनिज बडे विस्तार ॥४४॥
 टापौ दिपै जाय जिहाज । त्यावं दवं धर्म के काज ॥
 जेते किसबदार है श्रीर । बैठे सकल विराजै ठौर ॥४५॥
 नगरी निकटै उपवन घने । कूप बापिका जलहर घने ॥
 प्रति रमणीक मनोहर खरे । जानूँ गंगा जल मौं भरे ॥४६॥
 मंदिर माहि बैठिकै बनी । झरणा भरै सीतलता घनी ॥
 खलखलात सौ जल नीसरै । उचई उछल भूमि पर परै ॥४७॥
 तिहां बाइठा राजकुमार । गुंनिजन गावै राग सवार ॥
 धब जै सब व्योरा सु कहू । बडे पुराण पार क्यौ लहूँ ॥४८॥
 किंचित् कहू वृक्ष के नाम । गुनि जन समझी नाना भाव ॥
 सघन रुष बहु फूले फले । जानूँ गूथ बनाये घने ॥४९॥
 पत्र बध सौ सोमै केलि । पाडल चढ़ी चमेली बेलि ॥
 अरु बिजौरा निबू नरिंग । दाडिम दाख बेलि बहुचंग ॥५०॥
 फलै फूल उतरै प्रति घने । पछी खाय न बरजई जने ॥
 सकल जाति के सोमै रूख । बास सुगंध लागै भूप ॥५१॥

सोरठा

कमल सरोवर फूल, सबजी जात अनेक विष ॥
 अमर सुरग सुष मूल, राति दिवस निबसै तिहां ॥५२॥
 पछी तिहां अनेक, बीलै मबद सुहावने ॥
 जहा तहा द्रुम बेल, आड बेसेरा लेत है ॥५३॥

चौपई

अंसा नगर बसै सुम थान । अंगिक राय तपै ज्यौं भांन ॥
 खेलणा दे रानी पटवनी । मानु कनक कामनी बनी ॥५४॥
 सीलवंत गुण लक्षण ईश । मानू इन्द्राणी जीत सजीश ॥
 सम्यक् दृष्टि कोमल चित्त । देवगुरु शास्त्र सेवई नित ॥५५॥

परजा सुखी बसैं सब लोग । पान फूल रस गोरस भोग ॥
 धरि धरि पूजा सुनै पुराण । धरि धरि सुनिह कबैं बंधान ॥५६॥
 श्री जिन मन्दिर बसैं उतंग । फरहरैं धुजा यमन के रंग ॥
 इन्द्र चन्द्र सुर बासां लेहि । सुरगपुरी सम सोभा देइ ॥५७॥

सौरठा

बार बार कर सोच करि, विचार राजा श्रेणिक रहै ॥
 हुबैई जनम बहोरी, कथा सुनु रघुवंस की ॥५८॥

बीपाई

कुंडलपुर नगर

कुंडलपुर सिद्धारथ राव । महापुनीत जगत मे नाउ ॥
 सोभा नगर न जाइ गिनी । सुरगपुरी की शोभा बनी ॥५९॥
 दुःखी दलित्री कोई न दीन । पंडित गुनी सकल परबीन ॥
 हाट बाजार चौहटे बने । शोभा सकल कहां लौ भनै ॥६०॥
 बाग बगीचा महल आवास । दीसैं सकल पास ही पास ॥
 रितु रितु के फल लागे फूल । तातै रहै पथिक जन मूल ॥६१॥
 उछलैं जल करना भरै । निर्मल नीर सुबैं विस्तरै ॥
 बंठे राज सभा तहाँ ठोर । मूपति तहाँ विराजै ओर ॥६२॥

सिद्धार्थ एवं त्रिसला रानी

महा सुभट छत्री हू सूर । ग्यानी गुनी ग्यान भरपूर ॥
 नृप की आग्या सिर पर धरै । कोई नही उपद्रव करै ॥६३॥
 प्रजा सुखी करैं बहु भोग । पुन्यवन्त निबसैं सब लोग ॥
 च्यार दान दे वित्त समाज । घट् दर्शन का राखै मान ॥६४॥
 त्रिसला दे राणी गुणवत । रूप लछिन सोयै बहु भाति ॥
 पतिव्रता आग्या मैं छत्री । सील बत गुन लावण्य भरी ॥६५॥
 वरनन करि गुन पार न लेइ । सामोदिक की सोभा देइ ॥
 सुख मे सूती सेज मभार । सुपन सिव पाई एक बार ॥६६॥

माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना

सोलह सुपनां नाना भाति । एक महत्सं पाछली रात ॥
 प्रथम गमद इक ऊंची देह । आगत देख्यो अपनो मेह ॥६७॥
 दूजें सिंह गर्जना करै । गज मयमंत देख बल हरै ॥
 लपमी देखि हरषत भाति । अनंत विभूति खोयै बहु भाति ॥६८॥

कंचन कलस धीर जल भरे । दोऊं पोर के भीतर घरे ॥
 देव्यो सरोवर निरमल नीर । छाया सघन विहंगम तीर ॥६६॥
 अरु सूर्य देव्यो उद्योत । तासी तिमर निर्मला होत ॥
 देव्यो पूरणमासी चन्द । सीतल वरतें मन आनन्द ॥७०॥
 फूलमाल देधी विकसात । मन आश्चर्य करै बहु भाति ॥
 सिंघासण मीठी मणि जड्यो । रत्नभुज देवत मन भर्यो ॥७१॥
 देव्यो मीन जुगल सर निरै । ता जपलाई कौन सर करै ॥
 देव विमान देव गुनवंत । जात चल्या भव सागर अंत ॥७२॥
 देवी अगनि धूम निरधूम । जानौ बनी रत्न की धूम ॥
 देव धवल धोरी धीरन धीर । पृष्ठी सग घरै बलवीर ॥७३॥
 देव्यो वारिध प्रीथम काल । अति गजित किल्लोल विसाल ॥
 देव्यो नाग भुवन गुन सही । रात पाछली किंचित रही ॥७४॥
 स्वेत गयंद जु वन में गयो । चक्रत जागि अचंचा भयो ॥
 ए षोडस सुपने मनमोहि रहै । प्रिय समीप व्योरे सौ कहै ॥७५॥
 सिद्धार्थ नृप सुनि त्रिय नैन । हरपित अंतर विगसत नैन ॥
 मन वच क्रम सुपने कुं सुनें । निहचै अष्ट कर्म को हनें ॥७६॥

स्वपनो का कल

होय पुत्र फल मन आनंद । जानहुं पूरनवासी चंद ॥
 सुर नर इंद्र करैने सेव । तीन लोक के दानव देव ॥७७॥
 भव सागर का तोड़ै जाल । धर्म सगीर धर्म प्रतिपाल ॥
 विद्याधर नृपति पसुपती । इनमे बहोत चढ़ावै रती ॥७८॥
 जानहु पंचम्यान को घनी । सब परिवार चढ़ावै मनी ॥
 सुन प्रिय वचन भया आनन्द । प्रभु के वयन गाठि सो बन्द ॥७९॥
 सुवि अषाढ छठि उत्तम घडी । प्रभु ने आइ ग्रभ धित करी ॥
 आसन कंथा सुर सुरपती । चिमक्या चित्त विचारी मती ॥८०॥
 जिण चौईसमैं को अवतार । सिद्धार्थ घर वीर कुमार ॥
 उतरि सिंहासन करि डंडोत । परंपराय ज्यौ पिछली होत ॥८१॥
 मातंग जज्ञ बुलाये टेर । जाउ कु डलपुर इतनी बेर ॥
 ओर देवी कुमारी छपनो । आइ पहुंची देवागना ॥८२॥

माता की सेवा

आदेश हुवा कुबेर मंडार । रत्न वृष्टि करि बार बार ॥
 दीये चितेरा वैकुमार । भले सुघर जु सूत्राधार ॥८३॥
 रचना रचो मनोहर मही । बलती बेर सीध यौ कही ॥
 कहुं कहुं देव चितेरा करै । अनहद भाति सुरग की चरै ॥८४॥

बिना जीव जानूँ बोलै बेम । देखत होंइ महा सुख चैन ॥
 जा अन्तर घनहूर घनघोर । बरसै रतन डोढ है कोडि ॥८५॥
 जय जय ध्वनि छायो आकास । वर्षै पट्टप सुख्य सुवास ॥
 गजै पटल विजुली उद्योत । अंतर मनिक दिवस सा होत ॥८६॥
 हरति भूमि जल उपरि तिरै । भरे तलाव मंड़ि करि फिरै ॥
 किनर छपव अंत है पुर भाइ । नमसकार कर लागी पाइ ॥८७॥
 कोई करै बीजनां वाय । सेवा करै घेरे मनु न्याय ॥८८॥
 तेल फलेल सवारै केस । कोई सखी जनाबै भेस ॥८९॥
 कचन भारी जल भर ल्याइ । और दातण करावे आय ॥
 कोई बबा घरे भरि पान । बीडी करि पुवावै आन ॥९०॥
 और जे सेबय ताकी ठोर । सेवा करि बिराजै और ॥
 जैसे कमल पत्र परि नीर । यै बिराजै साहसै और ॥९१॥
 जानुँ भानु बदर छांडयो । जानु सीप स्वाति जलदीयो ॥
 इह विष सौं नगरी मैं गए । घर घर रली बघाई भए ॥९२॥
 पूजा करै देह नित दान । भैसे भया गर्भ कल्याण ॥

महावीर जन्म

चंद्र सुदी तेरसि कौ रली । नक्षत्र चित्रा बिरया भली ॥९३॥
 भयो जनम जान्यौ जब इंद्र । ऐरापति साजियो गयद ॥
 ग्रामण छोडि प्रदिकणा दई । बले मुकुटमणि नीची नई ॥९४॥
 जे जे सबद करै कर जोर । किनर चले सत्ताइस कोडि ॥
 छाव रह्यो आकास विमाण । नृत्य करै गावै गुणगान ॥९५॥
 बाजै पटह दुदुभी घोर । करि करना इन फेरी जोर ॥
 मधुरी धुनि बाजै मृदव । नृत्य करत मोडै बहुधंग ॥९६॥
 भयो कउलाहल सुनै न कान । आए कुंडलपुखी भीलान ॥
 नृप की पीरि भीर बहु जुडी । इन्द्राणी अतहेपुर बडी ॥९७॥
 माया का करि बालक बर्या । श्री जिनेंद्र इंद्रानी हर्या ॥
 तीरि उपाई लई चली जोर । बातके तिलु डारि तोडि ॥९८॥
 ज्ञां तै निकलि बियो पति गोद । निरलि रूप पावो मन मोद ॥
 इन्द्राणी पुंथी खन रली । गावै मगल बिरया भली ॥९९॥
 बंठ गयद ले गये मेर । पंडुक सिला बापि तीह बेर ॥
 भीर सुमुब इंद्र सुर गए । कचव कलस नीर भर लिए ॥१००॥
 सहस घठोत्तर इंद्र कै हाथ । और जर जर ले आए साव ॥
 दूष दही रज भूत की चार । श्री जिन पूज्या बारंबार ॥१०१॥

ले आए जहां बीर जिएद । ठारि कलस मन कीया आनंद ॥
 वष सूरि सौं छेदे कान । काजल नैन सहज मुख पान ॥१०२॥
 देव पुनीत बस्त्र सुभ रग । पहिराये श्री जिनके अंग ॥
 रत्न जडित कुंडल दोई कान । बाजु बध ताइत उर आन ॥१०३॥
 भाला धीर आभूषण बने । बहुत शृंगार श्री जिनबर वणें ॥
 कटि करषनी पाए घुघरा । पहिराये फूलो के सेहरा ॥१०४॥
 करि भारती स्तुति बहु पढ़े । दर्शन देखा मन सुष बढ़े ॥
 चले देव प्रभु कूं घर लीयें । अति आनन्द परम सुष किये ॥१०५॥

सोरठा

राधा सबका मान, जो गुन गावें जिन तणे ॥
 कीयो जन्म कल्याण, सुरपति सुरथानक गये ॥१०६॥

बुहा

इन्द्राणी किर सहित, कीने बहुत आनंद ।
 त्रिसला देई गोद मे, श्री दीना बीर जिएद ॥१०७॥

सोरठा

वर्ष बहत्तर आव, कही जोतिगी समझिकें ॥
 सप्त हाथ समकाय, श्री जिए सब जग तिलक ॥१०८॥

चउपई

ज्यों दुतिया शशि चढ़े काति । यौ दिन दिन बाढ़े जिननाथ ॥
 सेवा करै देवता आइ । बालक रूप धरै बहु भाइ ॥१०९॥

महावीर द्वारा वैयास

अनुक्रम जीवन पदइ भई । पुन्य बिभूति बौगुनी लई ॥
 बरस तीस बीते बलवीर । मव गुन बढ़े लेइ सरीर ॥११०॥
 मना सिधासन कजन घांम । व्यापा सकल न व्यापा काम ॥
 सहज विचार्यो लोक स्वरूप । भयो जीव नाना धरि रूप ॥१११॥
 अति वैराग चिमक चितकरी । सुर लोकातिक स्तुति करी ॥
 धनि धनि करै वे जंजंकार । सिवका आन धरी तिए बार ॥११२॥
 प्रभु आकृष्ट भए सुषपाल । छोड़ि दिया माया जंजाल ॥
 सिवका चढ़ि नदन वन गए । उत्तरि पालषी ठाढ़े भए ॥११३॥
 सिद्ध नाम ले लुं'चे केस । श्री जिन भए दिगम्बर भेस ॥
 आए इंद्र अमरपति घने । नंदे विरघे जी जी धुनि मने ॥११४॥
 कीने तप कल्याणक सार । मगसिर बदि दसमी सुभवार ॥
 रत्न पिठारी केस उठाय । तए देवने समंद सिराय ॥११५॥

कलस पीर जल भर ले आई । डारि नृत्य करि गाय बजाए ॥
 अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी । मानू देव सफल श्रुत बरी ॥११६॥
 पुष्प दृष्टि मंथोदिक करे । सीतल पवन तापको हरे ॥
 वचन वीनती करे डंडोत । नए मुकुट ज्यों पीछली होत ॥११७॥
 यों करि देव गए फिर गेह । तपाकड भए बिन देह ॥
 बारह विध तप आतम ध्यान । बाहिज अम्यंतर चित्त जानि ॥११८॥
 तेरह विध चार्या चारित्र । रागद्वेष जीते छै सत्र ॥
 द्वादस अनुप्रेक्षा चित्त ल्याह । दोष भठारह दिया छुडाव ॥११९॥
 दस विध पाले दया का संग । छाड्या मोह माया का संग ॥
 बारह बरस रक्षा छदमस्त । चर्या ध्यान जिन नासा दुष्ट ॥१२०॥
 आनंद विधानदत्तो चित्त । च्यारि कर्म त्रेसठि परकित ॥
 टूटै घातिया कर्म कठन । छुटी प्रकृति भंसी उतन ॥१२१॥

केवल्य

बैसाख सुदि दसमी सुभजान । उपज्या प्रभु कुं केवल म्यान ॥
 इ द्वादिक च्यारो विध देव । जै जै बुनि करि कारन सेव ॥१२२॥
 पुहप दृष्टि फूलन की वास । गंधोदिक सुर करे उल्हास ॥
 ऐरापति साज्यो गयद । चली अपछरा सूरज चद ॥१२३॥
 जोजन एक रच्यो समोसरण । गणघर ग्यारह बाणक वण ॥
 तीन घातिका गोपुर चारि । पदमाकरि पुहप कति बार ॥१२४॥
 मच्छ कच्छ जलचर लग आदि । गैर भाव अतरि गतिवाद ॥
 तीन कोट कचन के कीये । छत्री कसस रतन जड़ दीये ॥१२५॥
 सुर मूत्रधार करे आरम्भ । रच्यो अगाड मानसर्षभ ॥
 देवत मान प्रकृति को हरे । निरमल मति अतरमति करे ॥१२६॥
 प्रथम असोक लोक कुं दहै । अबिजन लोग तमासी रहै ॥
 अग्रे भूमि रगि मन षची । बारह सभा मनोहर रची ॥१२७॥

समवसरण

तीन छत्र की महिमा कहै । तीन धर्म की सोमालहै ॥
 समोसरण धानक कल्याण । बतुर बदन बइठइ भगवान ॥१२८॥
 बीच सभा मंडप सुभ और । सिंघासन को राखी ठौर ॥
 पच हजार दंड उच्चत । अंगुल च्यार रहै जिन अत ॥१२९॥
 विपुलाचल वरकस सुभ जान । समोसरण पट्टता तिहां आन ॥
 मुनि श्रेणिक पूजा कौ गया । सह परिवार गमन तिम किया ॥१३०॥
 वे प्रवक्षिणा ज्ञाय्या पाय । बहुत भांति बइठै सुषपाय ॥
 वीनती सौं जोरे कर दोइ । कहिए वरम सुने सब कौइ ॥१३१॥

महावीर वाणी

श्री जिनवर की बानी होइ । बारह सभा सुने सब कोइ ॥
 गौतम स्वामी कहै बषान । द्वादस सभा सुनै दे कान ॥१३२॥
 सप्त तत्त्व भर पञ्चास्तिकाय । षट् द्रव्य नो पदारव धाय ॥
 जीव अजीव आश्रव बध । सवर निर्बेरा मोक्ष की रिष ॥१३३॥
 जीव तत्व दोइ विष कहे । एक सिध एक संसारी रहे ॥
 ता मई दोई भव्य अभव्य । बटु ससार रुलै ए सव्व ॥१३४॥
 भव्यनिकर उतरै भव पार । अभव्य रुलै चिट्ठ गति मभारि ॥
 भग्यो लष चौरासी जोनि । ते दुष वरन न सकै कवि कौन ॥१३५॥
 जनम जरा दुष भुगते घने । श्री जिन वचन तन मन दे सुने ॥
 भ्रमत भ्रमत नर देही धरी । साध सगति मति पाई खरी ॥
 तीन रतन सो उपजी रुष । दर्शनम्यान चरित्र जु सच ॥१३६॥
 तिहुं काल सामायक करे । सात बिस्न आठौ मद हरे ॥
 सोलह कारन का व्रत भरै । दया धर्म दस विष विस्तरै ॥१३७॥
 च्चारदान दे वित्त समान । ओषद अन्न अहार समान ।
 सास्त्र दीया पावै बहुम्यान । विनयवत होई तबि अभिराम ॥१३८॥
 करमकाटि पहुँचे निरवान । सिवपद पावै सुख सुथान ॥
 और जे अंधकूप मै जीव । तिनुले चिरकाल की नीव ॥१३९॥
 दया धरम जिनको न सुहाय । पूजा दाव नहि ठहराय ॥
 सास्त्र सुनत उपहरो अकुलाइ । मिथ्यावाद करै बहु भाइ ॥१४०॥
 जिहा होय जीव का बध । तिसकुं ध्यावै मुख अघ ॥
 नाचै कूदै करि मिथ्यात्व । भोजन करै दिबस ने राति ॥१४१॥
 जे कछु करै कर्म अरु अकर्म । जासो कहै हमारा धर्म ॥
 मूँड हलावै पापड करै । जीव दया का भेद न धरै ॥१४२॥
 अगलाध्या जो पीवै नीर । करे स्नान मज्जन सरीर ॥
 कदमूलादिक सब फल धाय । सत समय पाल्यो नहि जाय ॥१४३॥
 धंसै जे सेवै मिथ्यात्व । ते नर नर करि नरक जात ॥
 भव भव सहै ते दुष सताप । नरक निबोद लहै विल्लाप ॥१४४॥
 अइसी समझि मिथ्या परिहरी । जैन धर्म निश्चै सौँ करो ।
 समय बर्तै करो मन ल्याय । सुख सपति बाघी अशिकाय ॥१४५॥

जा प्रसाद बहु लक्ष्मी होइ । पूजा दान करी सब कोइ ॥
 सफल लक्ष्मी सोही जान । दुषित बलिहारी कौं दान ॥१४६॥
 पूजा दान प्रतिष्ठा कर । देव सास्त्र गुरु मन मे धर ॥
 धर्म तीर्थ को जलावे सग । बिषसी पालै धर्म के संग ॥१४७॥
 श्री जिन भवन संवारै भले । दया भाव के मारग चले ॥
 पूजा रचना करै सातीक । तातैं बडे धर्म की लीक ॥१४८॥
 मंदिर कूप बगीचे बाय । तिहां पंथी भेटे सुष पाय ॥
 बनबासी मुनि से विश्राम । सुभरै तिहा श्री जिन नाम ॥१४९॥
 छह दर्शन कुं आश्रम देखै । आदर भाव बिशेष करै ॥
 सज्जन कुटब सु राणै भाव । दान देयण कौ मनमें बहु भाव ॥१५०॥
 नूषा भोजन प्यासा नीर । सरल चित्त जानें परपीर ॥
 पुनि सयोग सहै गति देष । नरपति लगपति उत्तम कुल भेष ॥१५१॥
 ऊ भे कुल में पावै ठोर । ता सम सुधी न पूजा और ॥
 कारण पाय जाय सिव पथ । धरै भाव मुनिवर निर्घन्थ ॥१५२॥

सोरठा

दान का फल

देइ अरुबिष दान, धर्म पाय धर्महि करै ।
 ते पावै निरबान, जस प्रगटै तिहुं लोक में ॥१५३॥

अष्टपई

घन पाया कछु पुन्य न कीया । अपजस पोट अपन सिर लिया ।
 आपे स्नाय न जुवावैं और । सदा वहै चिता की ठोर ॥१५४॥
 छह रुति कदे न मानै सुख । मली बस्तु नखि मेलै सुख ॥
 राति दिवस भ्रमते ही जाय । आर्त्त रीठ मे काल बिहाय ॥१५५॥
 जोडि द्रव्य भरती तल दीयो । कंसे काहूँ लीपियो ।
 कं वह घन लेवैं हर चौर । कं गोसा जुवा की ठोर ॥१५६॥
 कं वह सान बिसन सौं गया । कं रिखा दिया तिहां धकी रह्या ॥
 कं राबिनें लीया दंड । किरपन भया जमत मे मड ॥१५७॥
 सब कोई बीजैं खुं हूं कं बार । पापी बीया /पाप का भार ॥
 पचि पचि जोइया धर्म मठार । ठाकौ जात लगी न बार ॥१५८॥

तबै किम्पन बहुते पिछताइ । तबै भुरया वन न सुदाइ ॥
 मरिकी भ्रमे बहुगति बीच । पावै गति जो नीच हि नीच ॥१५६॥
 नरय तिरय गति भूगत जाय । जहा न कोई होइ सहाय ॥
 लछमी का फल सोई सही । तीन भुवन मे जस कीरति लही ॥१६०॥
 सदावर्त्त दीना कर दिया । अपना कारण उनही किया ।
 अपने सग सुजस को लिया । उसका नाम जगत मे भया ॥१६१॥

बोहा

जे लछमी बहुते जुडै, करै पुन्य नहि कोइ ।
 नरका का दुख बहु सहै, जाय भवांतर पोइ ॥१६२॥

चउपई

श्री जिनवाणी अगम अगाध । पूजित हैं प्राणी की साध ॥
 रवि पुहता अस्ताचल ठौर । अश्लोक आया अपनी ठौर ॥१६३॥
 भई रयण ससि का उद्योत । पृथ्वी ऊपरिसो भई ज्योत ॥
 उज्ज्वल वरां मदिर बहु भाति । छूटि रही ससि हर की क्रांति ॥१६४॥
 सोमवसी फूले बहु फूल । वने सरोवर सुष के मूल ॥
 महा सुवास पवन की डोल । बपति रहै सुष करै किलोल ॥१६५॥
 घर घर कामिन गावै गीत । तामु वयण सुभ उपजै शीत ॥
 गोरी अबला तरनी नारी । सब सोहै ससि की उनहार ॥१६६॥
 सोधा फूल पान सुषवाम । रति रति भोग रमे प्रतिहास ॥
 अश्लोक राय सभा सयुक्त । जिनवाणी गण कहै बहुत ॥१६७॥
 सुष सेज्या पोढे थे भूप । उत्तम वस्त्र सुं महा सरूप ॥

अश्लोक राजा द्वारा स्वप्न

सुपने माहि विचारै न्यान । रामचद्र गुन का व्याख्यान ॥१६८॥
 रामचद्र त्रिभुवन पति राय । लछमन के गुण कह्या न जाय ॥
 लकापति रावन दस सीस । ताकै भुजा बिराजै बीस ॥१६९॥
 कु मकरण विभीषण है वीर । महाबली कहिये रणधीर ॥
 इन्द्रजीत रावण ना पूत । ताका बल कहै बहुत ॥१७०॥

आचार्य रविवरण ने रावण के दस शीश नहीं माने हैं ।

कहै इन्द्र नैं हम वसि कीया । घागन्यां बांधी घटक मैं दीया ।
 नवग्रह बांधि करार्है सेव । स्वर्ग लोक के जीतै देव ॥१७१॥

इह आश्चर्य मेरे मन बरणा । इसा वचन मिथ्यात का सुन्या ॥
 इन्द्रदेव का स्वर्ग निवास । नवग्रह रहैं इन्द्र के पास ॥१७२॥

तिहां रावण पहुचा किस रीत । इन्द्रजीत नैं बांध्या जीत ॥
 इह पृथ्वीपति भुवि परिर रहै । किस विष जाय इन्द्र नैं ग्रह ॥१७३॥

जो सुरपति कोय मन माहि । रावण ने भक्षम करैं छिन माहि ॥
 जा के बल को अत न पार । बातें कौन बड़े झुंकार ॥१७४॥

जे ते तरैं ते सबहु मरै । तो इह सत्य वचन जिय बरै ।
 नवग्रह काहै स्वर्ग विश्राम । वे केम करैं घाइ इहां काम ॥१७५॥

कु भकरण ने कहैं बहु सूर । नीद छमासी सोबैं सूर ॥
 बजैं दमामा बहु सरणाय । कंसै नाव ऊपर हूँ जाइ ॥१७६॥

तेल भरपा कहाह भबटाह । दोहु कान में देहो डुराय ॥
 तोउ न जागे एण उपाइ । जे उह जागै किस है भाय ॥१७७॥

भूष वट्मासी कहियन जाय । जोकु दृष्टि पडै सो पाय ।
 हाथी बीडे ऊट मिल जाय । तोउ न झुधा उदर की समाइ ॥१७८॥

इह संसैं मेरे मन उचै । काचा मास बाहि किम रुचै ॥
 काचा मास न पावैं बिडाल । केम भवैं प्रथ्वी भूपाल ॥१७९॥

जाग्यो राय विचारै एह । श्री जिन तैं भाजैं सदेह ॥
 बीती निसा उदय भयो भान । बजे बाजिन घुरै निसान ॥१८०॥

सकल लोग उठे प्रभात । करि सनान सुमरण बहु भाति ॥
 अपने अपने उद्दिम लगे । बाल बृद्ध सब ही जगे ॥१८१॥

शेरिणक की राज सभा

भूपति आभूषण सब साजि । पट्ट बंठा तबैं शेरिणक राज ॥
 देस देस के भूपति आइ । नमस्कार करि लाम्या पाउ ॥१८२॥

राजसभा मे भूपति बने । नामावली कहाँ लग गिने ॥
 राजा वचन कहै सो प्रमाण । बलौ करन दरसन भयवान ॥१८३॥

समबसरण की घोर प्रस्थान

सह परिवार गमन तब किया । अस्व गयंद बहुत सा लिया ॥
 के घोडा के रथ के सुषपाल । हस्ती पर बैठा भूपाल ॥१८४॥

आये बढोतै किकर चले । गली सकल समराई भले ॥
 जिहा तिहा हुबा छिडकाउ । ताथई बहुत बिराजै ठांड ॥१८५॥
 कोईक आइ अटारी नारि । सेवै आक करोला द्वारि ॥
 अये नाद बाजै बहोत । हय मय रय सोभा अति होत ॥१८६॥
 सेना साथ राय अति घनी । जिसकी सोभा बाय न गिनी ॥
 विन सोभा सोमै बहु भाति । सकल लोभ आबै जिन जात ॥१८७॥
 समोसरण देषियो नरिंद । उत्तरि भूप सुमरियो जिनैंद ॥
 पृहता राय जाइ समोसरन । जीव जत का पातिक हरन ॥१८८॥
 दई प्रदक्षिणा करि डंडोत । श्रेणिक पूछी प्रश्न बहोत ॥

भगवान महावीर से रघुवंश कथा को जानने की इच्छा प्रकट करना

स्वामी कहो कथा रघुवंस । वधू सबूक कीया निरहंस ॥१८९॥
 षडदूषण मारघा किहू भाति । बिराधित आइ मिन्धा रघुनाथ ॥
 किम सीता का हुआ हरन । कइसै हुबा रावण मरन ॥१९०॥
 कैसे आय मित्या सुप्रीव । परपच मारि किया निरजीव ॥
 बन्धीषण किम पायो राज । कुंभकर्ण किया मुक्ति का माज ॥१९१॥
 इंद्रजीत अरु अन इंद्रजीति । किम विष किया उसै भयभीत ॥
 राजा पवन अजना विवाह । न्यू वियोग हुआ बहु ताहि ॥१९२॥
 किम उपज्या हणौमान बलवान । कैसे सुधि सीता की आनि ॥
 रामचंद्र की कीनी सेव । कैसे लह्या समुद्र का छेह ॥१९३॥
 सीता आणी दन मधार । किहू कारण सा दई निकार ।
 आदि अत की पूछी बात । सब ही का ससा मिट जात ॥१९४॥

राम कथा का महत्व

श्री जिननाथ की बानी हुई । दादस सभा सुनै महु कोई ॥
 गौतम स्वामी कहै बधान । सकल सुनेहु तुम धरि ध्यान ॥१९५॥
 स्वयंभू रमण सायर चहु ओर । वा सम समद नही को ओर ॥
 ज्याँ कठवत्ती नीर सौँ भरै । तामे एक कटोरा धरै ॥१९६॥
 इस विष द्वीप समुद्र मझार । तिनका है बहुत बिसतार ॥
 तामै समुद्र सु लवणोदधि । जमुदीप है ताकै मधी ॥१९७॥

मेरु सुदर्शन जाके बीचि । बखमई है ताकी नीच ॥
 सो धनमई बहुत बिसतार । कहां कहां बंदु रत्न अपार ॥१६८॥
 ऊचा सिखर अकास सुलागि । अंतर एक डाल सम यागि ॥
 जोजन महा इक साथ प्रमाण । केवल वाली सुध्या बषाण ॥१६९॥
 पंचमेरु अढाई द्वीप । दुगुणो दगुणो कहैं समीप ॥
 धीर कहै कुलाञ्जल घटमेर । एक एक बड ताके घेर ॥२००॥
 छह षड भमे एक तई एक । दीर्घ लीह बिजयाढ अनेक ॥
 लघु विजयाढ अनेक जु धीर । जउदह नदी त्रिकसी गिर फोर ॥२०१॥
 अठसठ गुफा कही हैं तिहा । इक इक मेर कुलाञ्जल तिहा ॥
 अकृत्तम चंत्याला तिहा बने । उनके भेद पुराणन भने ॥२०२॥
 मत्तरिसो घेन पंचमेरु माझ । इह बिष चित मे जानू साच ॥

भोगभूमि का वर्णन

सदा सास्वता इक सो माठ । विनासीक जानू दोग घाठ ॥२०३॥
 सोवर्ण मई जानु भोगभूमि । तामे कल्पवृक्ष रहे भूमि ॥
 जब तैं जुगल हुवै उतपन्न । सुगते सुख जे बंछित मन ॥२०४॥
 जैसे स्वर्ण लोक के देख । अइसै ही जुगलियां का भेष ॥
 तो भी श्रेणिक पूछै कर जोडि । किस पुन्य पावै घैसी ठौर ॥२०५॥
 तब भगवंत कहै समझाय । दान सुपात्र तरा फल राइ ॥
 मन बच काय दीक्षा जिन दान । तातैं रिध लहै असमान ॥२०६॥
 ज्यूं बड बीज सुच्छ प्रमाण । उपक्या भया जड़े उन्मान ॥
 ताकी छाया सीतल घनी । बहुत बिस्तार कहै क्या मुंकी ॥२०७॥
 इण परिवर्धे सुपात्रा दान । चौविह दौज्यो चतुर सुजान ॥
 दान कुपात्र तरा फल एह । बिनु विवेक जो कोई देई ॥२०८॥
 सरस बीज बाधै जो कोई । एक वालि एकेक ज होई ॥

चौवह कुलकर-

कुपात्र दान फल है यह तुछ । इह बिष समझै चतुर्विचक्ष ॥२०९॥
 चौदह कुलकर का व्याख्यान । सुणो गुरी जत सुखड सुजान ॥
 प्रथम प्रतिष्ठ १ दूजा सनमित २ । वेमकर ३ तीजा कुल धिंस ॥ २१०॥
 वेमंघर ४ सीमंघर ५ कुल कीया । सीमंकर षष्टम ६ कुल भया ॥
 सप्तम विमल ७ बहु कुलवंत । अष्टम अ चषमान नूनवंत ॥२११॥
 कल्पवृक्ष जोति घट गई । वा सुर रवण प्रगट तब भई ॥

तब वे प्रगटे चंदरभान । आश्वयं भया सब के मन आनि ॥२१२॥
 बूझे वचन प्रमान सुंवात । अवधि विचार कही बहुत भाति ॥
 पूरव भव देखि विदेहु येन । इनका प्रथमई परि उद्योत ॥
 रवि प्रताप ग्रीष्म बहुत होई । निशा शीतल शशि ही की लोई ॥२१३॥
 तब ते जानी सूरज चन्द्र । समझया लोग भयी आनन्द ॥
 जसाथी नवमा ६ दसमा अभिचंद १० । एकादश चंद्रान कुलनंद २१४ ॥
 मरुदेव १२ प्रसन्न सेनजित भेव १३ । नाभिराय १४ चउदहा कुलदेव ॥
 कोई कोई कल्प बृक्ष रह्या । नवा नव सहज मे भया ॥२१५॥

अन्तिम कुलकर नाभिराजा

सोवन भिदर सहु रत्ने जडे । देवत सुषसो गह भरे ॥
 नाभिराय जगत भूपति । मरुदेवी राणी मुभमती ॥२१६॥
 पंकज चरण अरुण छवि घनी । नय की क्रांति चंद्र दुति हूनी ॥
 अति कोमल कदलीदल जंघ । मानो मकरध्वज के धम ॥२१७॥
 नेवर सबद हंस की चाल । मोती जडित पदारथ लाल ॥
 फुनि कटि धीन सिध केहरी । रहै पोह वन में मुषि हरी ॥२१८॥
 कंचुभो झलकित सोभई ठोर । तिन की पटेतर नाही और ॥
 कंठ कपोल कंकन सुंदरी । सुंदर निमोलिक मणि जडी ॥२१९॥
 कुंडल कर्ण जोति निर्मली । सभा सकल विराजं भली ॥
 वदन पटंतर कोई नहीं चंद । दशन जोति जानू कलिकंद ॥२२०॥
 अति सुरंग मुख बिना ताबोल । बानी सरस कोकिला बोल ॥
 कीर नासिका बेसर चुनी । मोतिन की सोभा छवि घनी ॥२२१॥
 दीर्घ नयन कमल की भाति । तिनको सोभा कहै किस भाति ॥
 सीस फूल सौमं बहु भाय । बेणी कौ छबी कही न जाय ॥२२२॥
 बनें कवि गुन पार न लेई । सामुद्रक की सोभा देखे ॥
 छह मास अगाउ इह भेव । आसन कंप्यो सुरपति देव ॥२२३॥

मरुदेवी रानी की सेवा

अवधि विचारि समझियो इंद । ह्वै अवतार प्रथम जिएचंद ॥
 सोलह देवि कुमारी टेर । मरुदेवी पै जाऊ इह बेर ॥२२४॥
 सेवा कीज्यो नाना भाति । गर्भ सोध कीजो दिन राति ॥

कोई मर्दन करावै अस्नान । केई घांछि खुबावै पान ॥२२५॥
 कंचन भारी भरिकै नीर । जानौ भरषा समुद्र जल धीर ।
 कोई तेल कुलेसहि आन । कोई राग सुनावै तान ॥२२७॥
 केइक कन्या दावै पाउ । सेवै अपनी अपनी ठाउ ॥
 केई दीवट नीरख बालि । केई घामूषण घरै सवारि ॥२२८॥
 चारा भूषण सोलह सिंगार । मांगै जब देवई तिण बारि ॥
 निसवासर सेवा बहु करै । बचन बचन गुण हिरवै घरै ॥२२९॥
 उत्तम सज्या करी सुवास । सेवा करै सधी बहु पास ॥

सोलह स्वप्न

मरुदेवी सोवै सुल चैन । सुपना देखै पछिम रैन ॥२३०॥
 हस्ती स्वेत देख्यो गुनवत । वृषभ एक देख्यो मयमंत ॥
 दीख्यो स्यंघ गजेंना करंत । कचन कलस रत्ना जडंत ॥२३१॥
 पुहपमाल देखी विगसात । सूरज उदय देख्यो परभात ॥
 दीठो पुरनबासी चंद । मीन जुगल सौं मन आनंद ॥२३२॥
 देख्यो समंद महा गंधीर । सिंहासन निरख्यो मणि हीर ॥
 देख्यो सुमेर गिर लपमी सार । देब विमान देख्यो सुरकार ॥२३३॥
 देख धरगोन्द्र रत्नमई मूमि । देखी अदधी अग्नि महा निधूम ॥
 अइरापति की उज्जल देह । आवत दीठा अपने गेह ॥२३४॥
 ए सुपना सोलह गुणवत । उठि करि निज पति सुं पुछत ॥
 नाभिराय सुणि तिय की बात । भयो आनंद सुष उपख्यो गात ॥२३५॥
 मन बच काय सुपनि फल सुने । निहचै सयल पाप नै हने ॥

स्वप्न कल

हुवैयो पूत लक्षण संयुक्त । मानो पृथ्वी पर रवि उद्योत ॥२३६॥
 अवर जे सुर अमर पद बसैं । तिनकी मणि चरननी बई बसैं ॥
 तोड़ें भोसामर का जाल । चरम सरीर कनक की माल ॥२३७॥
 विद्याधर नरपति पसुपति । इनमे बहुत चढावै रती ॥
 इन्द्र फणीन्द्र करैगे सेव । तीन लोक के दानव देव ॥२३८॥
 जानहुं पब ग्यान का बनी । सुणि करि बचन उलसी बणी ॥
 आषाढ बदि दोज सुभ बड़ी । प्रभू ने आइ गर्भ धिति करी ॥२३९॥
 आसन कपे सुरपति राय । समकथा चित्त ग्यान बहु जाय ॥
 सिंहासन तजि नभणि करंत । जनद कुमार बुलायो तुरंत ॥२४०॥

नगर अजोध्या सवारो जाय । बारह जोजन की लम्बाइ ॥
 चौड़ी नव जोजन के भाय । कनक भूमि की करियो ताय ॥२४१॥
 रतनवृष्टि फूलन की गिरेष्ट । बज्र दुंदुभि महा सिरेष्ट ॥
 कचन कोट रतनमई सार । मंदिर सत्त भूमिए सवार ॥२४२॥
 ऊची पठरी चित्र बहु बने । रषवाले तिहा ठाढ़े घने ॥
 चिट्टु अवर वापिका गंभीर । तामे भरषा निरमला नीर ॥२४३॥
 आगे सूत रचे बाजार । चौड़ी नीव बडे विस्तार ॥
 मत्तपिणा मंदिर सब किये । छत्री कलस रतन के दिये ॥२४४॥
 कण्ठो चितेरे देव कुमार । सुरग लीक की सी उनहार ॥
 प्रजा सुधी बसैं सब ठीर । जे ते किसबदार है श्रीर ॥२४५॥

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म

चंद्र बढी नौमी सुभ वार । उत्तराषाढ नक्षत्र सु सार ॥
 भयो जन्म जब जान्यो इन्द्र । मनमे बहोत किया आनंद ॥२४६॥
 आसन छोड़ि प्रवक्षणा दई । सबने मुकुट मणि नीची नई ॥
 जै जै सबद भया जब षरा । सत्ताईस कोडि चली अपछरा ॥२४७॥
 देव विमान छाियो आकास । वरषं पुष्प सुगंध सुवास ॥
 नृत्य करै बहु गावैं गीत । बाजं पटह दुंदुभी रीत ॥२४८॥
 ताल मृदंग वजावैं बीन । गावैं मुर जिन मुर परबीन ।
 भयो कोलाहल सुगौ न कान । आये नगर अजोध्या धान ॥२४९॥
 नृप के द्वारै भइ अति भीर । इन्द्रानी राज लोक के तीर ।
 माया का बालक रचकर राषि । श्री जिन लीया बीनती भाष ॥२५०॥
 नीदउं घाई लीया चुराय । इन्द्रानी ले चली उठाय ॥
 ह्वां तै निकसि इन्द्र को दिया । देष वदन हषित अति हिया ॥२५१॥

जन्मोत्सव

सहस नयन करि देवै रूप । तोऊन त्रिपति सुरपनि भूप ॥
 बइठ गयद मेरु ले गये । पाहुक सिला महोछव भये ॥२५२॥
 घोर समुद्र जल कचन कलस । भरे नीर जे प्रासुक ससं ॥
 सहस अठोत्तर इन्द्र जु भरे । अवर देव ले कचन घरे ॥२५३॥

आदिनाथ का बाल्यकाल

दूध बही अत रस की धार । पुजा रचै बे बारंबार ॥
 ले आए जिहां आदि जिरांद । कलस ढालि मन भयो आनंद ॥२५४॥
 वज्र सूई से छेदे कण । पहिराये बहुते आभरण ॥
 कज्जल नयन मुख दिया ताकूल । कु डल रत्न धरा अनमोल ॥२५५॥
 बाजूबंध माला ताईत । तातै होय दूरि भयभीत ॥
 कटि करघनी पाय धुंधरा । पहिराये पुहपई सेहरा ॥२५६॥
 करि आरती असतुति धनी । ते गुण सोभा जाय न गिणी ॥
 चले देव प्रभु कूँ सिर लिये । बहुत आनंद प्रेम सुष किये ॥२५७॥
 मन्धवेबी नथ दीया जिरांद । तिहु लोक मे भयो आनंद ॥
 धनुष पंचसय कचन काय । लस चौरासी पूरब आय ॥२५८॥
 सुरपति करघा जनम कल्हान । पट्टे सकल आपने धान ॥
 दुतिबा शशि क्रांति ज्यो चढै । यी श्री जिनवर पल पल बढै ॥२५९॥
 जननी गोद अब ही लेइ । देश रूप मन सुष धरेइ ॥
 लेकर पिता लगावै हियो । बहु आनंद उपजत हिये ॥२६०॥

शारीरिक सुन्दरता

कनक वरन काया अतिबनी । नख की जोति क्रांति दुति हनी ॥
 कोमल चरन केल सम जघ । कटि सोमै जिम के हरि सिंध ॥२६१॥
 कर पल्लव भुज बने अनूप । हृद कंठ सोभा अति रूप ॥
 दंत होठ रतन की जोति । सुभ्र कपोल सु अति उद्योत ॥२६२॥
 नासा कीर नयन अति बढै । मस्तक किरण जोति नित चढे ॥
 कोटि भान जो करै उद्योत । तळ न सर भर जिन की होत ॥२६३॥
 स्याम केश लावे सुष कण । अति सुगंध नीलाजन वरुण ॥
 लक्षण सहस्र अठोत्तर बने । तो मुख गोचर जाहि न गिने ॥२६४॥
 बालक रूप देव के पूत । ले ले प्रभु ज्यौ आये बहुत ॥
 रत्न धूर अरगजा कपूर । क्रीडा करै उडावै धूरि ॥२६५॥
 बहुत माति के फेरै भेष । ते खेलै बहु युगति बिसेष ॥
 ऐसी जुगति बहुत दिन गए । श्री जिन जोवन पदई भए ॥२६६॥

आदिनाथ का विवाह एष सन्तान प्राप्ति

नंद सुनंदा व्याही नारि । रूप सुलक्षण शक्ति उनहार ॥
 प्रथम पुत्र तातै उत्पन्न । बाह्यी भई भरत की बहन ॥२६७॥

बहुरघो दूजी नंद रूप सौ भरी । रूपवत गुन लावण्य घरी ॥
 गर्भं ताहि पुत्र सौं भए । काटि करम सो मुक्तिहि गये ॥२६८॥
 प्रथम बाहुबलि पाछे और । ताबे सकल रिद्ध दई जोडि ॥
 अवर भई पुत्री सुन्दरी । सील रूप अति शोभा भरी ॥२६९॥

राज्य प्राप्ति

नाभिराय प्रभू आयस किया । राजभार रिषभ नै सोपिया ॥
 कलपवृक्ष सह गए बिलाय । सह लोक की लुध्या न जाय ॥२७०॥
 ताका भेद न पावै कोइ । भूष प्यास दुष दूर ही होइ ॥
 आये नाभिराय के द्वार । हम किम जीवे प्राण अघार ॥२७१॥
 तब बे कलप वृक्ष संसार । मनसा भोजन करत आहार ॥
 अब बे कलपवृक्ष है नाही । हमरा किम होबै निरवाह ॥२७२॥
 नाभिराय की आग्या पाय । रिषभदेव पै बिनवै घाइ ॥
 मननी बात कहै सब लोग । कंस जीव का मिटै वियोग ॥२७३॥
 राजा ने सब लिये बुलाय । सकल लोक ने पुछै राय ॥
 मुनि परजा दुष किया विचार । उदिम बताय किया उपगार ॥२७४॥

तीन बरों की स्थापना

महा मुभट ते क्षत्री किया । वडग बंधाय सूर व्रत दिया ॥
 धरम दया कीज्यो मन लाय । पापी दुष्टे मारो घाय ॥२७५॥
 रण सग्राम न दीजे पूठि । सनमुख भुञ्ज्यौ हिगै न दीठि ॥
 स्वामी कार्य को दीजे प्रान । ज्यू तुम पावो स्वर्ग बिमान ॥२७६॥
 जे क्षत्री रण मै से भजै । कुल कलक लागै अनतजै ॥
 जे छत्री सह पुर रक्षा करै । रण साम्हनै जाय कं लरै ॥२७७॥
 निज परजातै राखै सुधी । दया करै नर देखी दुषी ॥
 धर्म दया करि यासौ ध्यान । भक्ष अन्न तजै घरि ध्यान ॥२७८॥
 जिनकं हिये थी दयावी घनी । थापे बहस बनिक बुधि दिनी ॥
 दया दान किरिया सौ सुधि । पाप कर्म सो करै न मनी ॥२७९॥
 अवर जे नर थाई उत्तम भाव । जैसी ताहि बतावै ठाम ॥
 अविवेकी जे अपर अयान । तिराने थापे कर्म किसान ॥२८०॥
 हल जोति कर खेती करै । उपजै साप रासि तब करै ॥
 होए अन्न भुगतै संसार । उनको दिया इसा उपगार ॥२८१॥

थापी सब छत्तीसीं पाँए । अपने अपने मारय गौए ॥
 हुवा छत्री बैस सुद्र ए तीन । इह विधि समुझो चतुर प्रवीन ॥२८२॥
 वरय मेघ ऊपजै धान । बाडे पान फूल सब दान ॥
 मेवा सब बिघ उपजै जिहां । परजा सुखी विराजै तिहां ॥२८३॥
 राजनीत सौं पावै चैन । दुषी न कोई दीवै नयन ॥
 धर्मरीति सौं बीतै काल । दुषी दरिद्री नहीं दुकाल ॥२८४॥
 राज करत पूरव गये बीत । लक्षतियासी हम भोग की रीत ॥
 एक लक्ष पूरव रही धाव । सुरपति मन है विचारै भाव ॥२८५॥
 ए प्रथम भगवंत अवतार । इनते धरम चलै ससार ॥
 ए माया महि रहै मुलाय । सबेगी एा किए पर धाय ॥२८६॥

नीलांजना द्वारा नृत्य

चंद्र बढी नखनी ओंठ घड़ी । नीलंजना पातर अवतरी ॥
 धाय राय की सभा मभार । नृत्य करै यावै गुण सार ॥२८७॥
 दोय घड़ी आयुबल रही । पूर्ण भई गिरपडी जे मही ॥
 नाचत नाचत तिन लई पछाडि । तब राजा बोले हुकार ॥२८८॥
 बेग उठावै ठाड़ी करै । बेर बेर गिर गिर बह पड़े ॥
 तब मन्त्री बोले समझाय । याकी आयु पूरी इन ठाय ॥२८९॥

बैराग्य भाव

तब मनमे चेत्यो भूपाल । अचेत पर्यं बीता यह काल ॥
 अब कछु करूं धर्म की रीत । तातै पाप हुवै भयभीत ॥२९०॥
 जाण्यौं इह ससार असार । बुडत जीव ना पावै पार ॥
 राग द्वेष आरति मुई रहै । अमत जीव विश्राम न लहै ॥२९१॥
 कवही हुबै देवपति भूप । कबही दुखी दलित्री रूप ॥
 कबही नर कबही तिरयचं । कबही मर करै परषच ॥२९२॥
 नट जिम भेष कीए तिन घने । दुष सुष और कहां लौं भने ॥
 अब जो राखो आतम ध्यान । जीव मैं बरि देखु पहिचान ॥२९३॥
 प्रगटे धरम समझै सब कोइ । क्षत्री रीत सुत कीने दोइ ॥
 भरत नै सूप्यौ पृथ्वी भार । बाहुबल पौवनपुर सार ॥२९४॥
 निन्याएवै देस औरन कूँ दिया । मयो संतोष सबै कं हिया ॥
 अपणै मनसौं विचारै ग्यान । लोकांतिक सुर पहुता आन ॥२९५॥

जय जय सबद भया चहु धोर । सिवका धामि धरी तिहु ठोर ॥
 धन्य धन्य बाणव सब को देव । चढे पालकी लम्बा न छेव ॥२६६॥
 सिवका चडिय पराग बन गये । उतरि सिंघासन ठाढे भए ॥
 नाम सिध समरघा मन सोच । पचमुष्टी का कीना लोच ॥२६७॥
 इन्द्रादिक भए सब देव । करि कल्याण चरण की सेव ॥
 लीये केस ताईत मे डारि । भवर सिराये समद मभार ॥२६८॥
 तप कल्याणक इन्द्रकरि गये । व्यानारूढ श्रीजिनवर भए ॥
 घर जे पाच हजार नरेस । तेभी भए दिगंबर भेस ॥२६९॥

तपस्या

प्रभु न वरत घरघा षट् मास । भवर सकल बड्ठे वनवाम ॥
 उनपै भुवा रह्या न जाय । अनपाणी बिन गए मुरझाय ॥३००॥
 जो फिर जाय भरत तैं डरै । तातैं बे वन मे ई फिरै ॥
 जैनधर्म की सहिय न आच । फाटा भेष तिहा पर पाच ॥३०१॥
 कोई सन्यासी जटा बेधाय । जोगी जगम भए कर्ण फटाय ॥
 बारह बिध तप श्रीजिन करै । चेतन चिदानन्द चित धरै ॥३०२॥
 नासादृष्टि आतम ल्यो ल्याय । पदमासन बेंठे जिनराय ॥
 नमि विनमि तहा पहुँता आट । विनती करै नमणि कै भाट ॥३०३॥
 तुम तजि राज लिया है जोग । छाडि दिये संसारी भोग ॥
 भरत बाहुबली राजा किए । हमारी मुष न बिचागी हिए ॥३०४॥
 हमकु कोई बतावो देस । जहा जाय हम करै प्रवेस ॥
 श्री जिनराय तिहा छदमस्त । मुष यी कहै न एको वस्त ॥३०५॥
 नमि विनमि छोडें नहि पास । राज्य भोग्य की छोडी आस ॥
 तब घरखेन्द्र बिद्या दो दई । भ्रंसी रिष लई तब नई ॥३०६॥
 विजयाङ्ग का दीना राज । दोहु का मन बाछित काज ॥
 दस जोजन पर्यन्त उचत । मणि माणिक तहा धरो दिपंत ॥३०७॥
 दक्षिण दिश रथनूपुर नगर । उत्तर दिसि धलिकाविस भगर ॥
 सब संयुक्त विराजै गाव । लता लक्ष्मी नाना भाव ॥३०८॥
 जैसी स्वर्लोक की नारि । तइसी सब नगर मभारि ॥
 करै राज सुष भुगतै भोग । रिषभनाथ मन ल्याया जोग ॥३०९॥
 बारा बिध तप आतमध्यान । षष्टमास बिन भ्रम न पान ॥
 तब मनमे अइसी चित चीत । प्रगट करुं भोजन की रीत ॥३१०॥

आहार किया

हमको भोजन बिना विहाय । अग्रे हूँगी सूक्ष्म काय ॥
 बिना आहार तप करघा न जाय । बैसी समझि उठे जिनराय ॥३११॥
 भोजन की विष लहै न कोइ । जिहां जाय तिहा आदर होय ॥
 लाल पदारथ हीरा भेट । मिलै भूप नगरी सहु नैट ॥३१२॥
 कोई कन्या कोई गयंद । कोई अस्व वार आनै नारिंद ॥
 केई रथ केई सुवपाल । मननी बात न लहै भूपाल ॥३१३॥
 ए सहु छोडि फिरे बहु मही । भोजन विधि को जारण नही ॥
 हथनापुर कुहरबांगल देश । राज करै श्रेयास नरेस ॥३१४॥
 तिहा पहुचे बीते छह मास । एक बरस सही सुध्या पात ॥
 श्रेयास सुभ सुपने पाई । मन्त्री पूछै तबै बुलाइ ॥३१५॥
 कहै मन्त्री फल सुपना तणा । इष्ट पुरुष आवै कोई पाहुणा ॥
 श्री भगवंत आवै तिह वार । राय आनंदित भया अपार ॥३१६॥
 उत्तरि सिंहासन करि डंडांत । देइ प्रदक्षिणा करी नमोऽस्तु ॥
 ज्यौ रवि फिरई मेर के और । यूँ सोमं नरपति तिह ठौर ॥३१७॥
 धर्मवृद्धि इन मुख से कही । श्रेयास सुभ बहुतै लही ॥
 वैठि सिंघासन गहि पडगाह । चरणोदक जल सीस चढ़ाइ ॥३१८॥
 साढा सातसै कलस इक्षु रमी । स्वामी पिया देव सब खुसी ॥
 अभयदान बोलै कर जोरि । बरधै रतन साढी आठ किरौड ॥३१९॥
 पुष्प वृष्टि भई बहु भाति । पहुची सकल देस ए बात ॥
 ठोर ठोर विधि लिख ले गये । दान तीर्थ आदीश्वर किये ॥३२०॥
 अंसी करि भोजन की रीत । अंतर है आतम सी प्रीत ॥
 सुनकर भरत मन मे उल्लास । आये श्रेयास के पास ॥३२१॥
 दहुत भाति कीनूँ सनमान । तो सम दाता और न जान ॥
 दोये देस पुर पट्टन घने । आया भरत नगर आपने ॥३२२॥

कैलाश पर्वत पर ध्यानावृद्ध होना

श्री जिनराज गये कैलास । तिहा देवता करै निवास ॥
 ध्यान ध्यार प्राणी नै धरे । ताम दोय छोटे दोय धरे ॥३२३॥
 भारत रोद्र ध्यान हूँ हीन । तिनकर सेस्या धोटी तीन ॥
 नरना कृष्ण नील कापोत । देह दुष जा कीये हीन ॥३२४॥
 भारत में तिरज्ज बति बंधै । तातै प्राणी एस न बंधै ।
 निसवासर धोटी चित्त गढै । रहई काल चिर बेली बढै ॥३२५॥

सूकर कूकर गैडा रीछ । पदवी नीच बीत मै तीछ ॥
 जो तिरण चरई धरै जियसंक । एही पुर्व जनम के अंक ॥३२६॥
 अरत ध्यान अर पद होय । इष्ट वियोग अनिष्ट सयोग ॥
 पीडा चितवन भोग निदान । ए प्राणी को दुषकर जानि ॥३२७॥
 अनबाधित भागै ही होय । इच्छा मन न धरै नही जोड ॥
 जे जोगीस्वर की व्रत धरै । छठे गुणथानक तै खरै ॥३२८॥
 कुच्छित मरन सुरग गति रहै । मरकर तिरजब गति कौ लहै ।
 रौद्रध्यान ए पाये अर । लछिन किंचित कहु बिचार ॥३२९॥
 हिसानंद मिथ चौया विषयानंद । करकस वचन अगति के वध ॥
 रुद्र परिणाम रहै नर तास । मुषतै बुरी उपजै नित बास ॥३३०॥
 निकल नरक तै देही धरी । कं अच्या अधोगति पुरी ॥
 असे चिह्न देविए जिने । पडित वर्ग कहा लौ गिने ॥३३१॥
 जे धरि भेष तपी तप बढै । गुणथानक पचम जो चढै ॥
 रात दिवस मन षोटी धरै । मरकरि भूम अधोगति परै ॥३३२॥
 षोटे ध्यान जिन के मन रहै । असे वचन ग्यान मे कहै ॥
 ए दोइ ध्यान ग्यान आरूढ । धरम सुकल प्राणी कू गूढ ॥३३३॥
 धर्मध्यान के लक्षण कहै । प्रासुष क्षेत्र उपद्रव थी रहै ॥
 दिव्य सगहन पूरी परजाय । चौथे काल मिलै बिध आइ ॥३३४॥
 सीत उसन वरषा रित जोग । सुभ परणाम विवर्जित भोग ॥
 नासादुष्टन भेरै अंग । इन्द्री वनज विसर्जित सग ॥३३५॥
 प्राण संवर नाना भिन्न । नरि बाह्यभ्यंतर लक्षण चिह्न ॥
 लोक स्वरूप विचारै नित । सातव गुणथानक की शक्ति ॥३३६॥
 लेस्या पीत पष की ठोर । टूटै पासि करम की जोर ॥
 कं देवत कं हो भूपति । कं सिवमारग जागै रती ॥३३७॥
 सुकल ध्यान का सूक्ष्मभेद । उत्तम क्रिया भई सब छेद ॥
 अंतर ध्यान ग्यान दिद धार । दया सर्व की चित्त विचार ॥३३८॥
 आतम भाव दाब को चढै । जिन केवली ग्यान को बढै ॥
 दसमे गुनस्थानक दोइ करै । उपसम संगी चढै ते गिजै ॥३३९॥
 दरमन ग्यान चरण चित दिया । दया धरम दस बिध कर लिया ॥
 आनंद चिदानंद सौ ध्यान । अर करम का करि अपमान ॥३४०॥
 प्रकृति तिरैसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु को केवल ग्यान ॥
 वर्ष सहस्र रहै छदमस्त । कागणबि अरस लही सुभ वस्त ॥३४१॥

कथस्य प्राप्ति

केवलस्यां लब्धि जब भई । बहुविध देव प्रदक्षिणा दई ॥
 द्वादिक किन्नर संयुक्त । जय जय सबद करै बहु उक्त ॥३४२॥
 बारह जोजन रच्यो समोसरण । प्राणी का मन संसाहरण ॥
 बारह सभा मनोहर कही । तीन कोट कचन के मही ॥३४३॥
 बनी सातिका जल भरपूर । बृक्ष अशोक सोक करै दूरि ॥
 कलपवृक्ष अबर बहु रूप । वासावली न लायै भूल ॥३४४॥
 छह रितु के फूले फल फूल । ऊंची पौरि बनी समतूल ॥
 मानसधन सवारणा और । सिंघासण की राखी ठोर ॥३४५॥
 बृषभसेन गणधर गुणवंत । अपर तियासी अबर भगवंत ॥
 पंच सहस्र दंड ऊंचत । चारि अंगुल अंतर अरिहत ॥३४६॥
 तीन छत्र कचन मणि वने । चौंसठि चक्र देखै सुष वने ॥
 चौरासी गणधर जगदीस । अपारि ग्यान पंचम जिएईस ॥३४७॥
 समोसरण ध्यानक सुमथान । चतुर बदन बैठे भगवान ॥
 भई चतुरमुख एकै धुनि । बारह सभा भव्य सब सुनी ॥३४८॥
 बानी एक भेद नव कुने । गणधर कहे लोग सब सुने ॥

उपदेश

निश्चय एक आतमा सार । ई बिष इह निश्चय व्याहार ॥३४९॥
 दरसन ग्यान चरित्र मे लीन । अपारि बेद मे सुने प्रवीन ॥
 परमेष्ठी पंचम सुधि भई । अरु षट द्रव्य सर्व गुण भई ॥३५०॥
 सप्त तत्त्व अष्टम गुण सिध । कहै पदारथ नचुं निच ॥
 इन सुन भई गिरा सुनि भूप । है विदेह अर तत्त्व स्वरूप ॥३५१॥
 कथन समर्थ अनंत भवतनी । सिब कारण हित सब बनी ॥
 पाप फेटनी पुण्य अनंद । सिधल भये कर्मन के फंद ॥३५२॥
 रानी सब ही संबोधनी । प्राणी कुं भालस भेदनी ॥
 जीवा सति जानै पर लोक । अमूरत भगत सुभ सोक ॥३५३॥
 अनुगुरु सकति रूप सब देह । चारु गति करि पूरन एह ॥
 निश्चय सुद्ध नित्य जन जीव । अर संसारी गाडी नीव ॥३५४॥
 पोटी क्रिया दुःख को मूल । रहै अनादि काल के मूलि ॥
 आतम दरसन ग्यान चरित्र । तत्त्व सबद है अंतर नित ॥३५५॥
 असरण सरण जाति जिय सार । भरम एक त्रिभुवन आचार ॥
 बारह व्रत सुधावक धरई । व्यापारसौं मनस सरधा करेई ॥३५६॥

हिमा चीरी अनरत जानि । ब्रह्मचर्यं परिग्रह परमानं ॥
 गुणव्रत तीन धरै मनु भाव । दिगव्रत देसवरत मन चाउ ॥३५७॥
 अदया का व्योहार न करै । शिक्षाव्रत च्यारु विध धरै ॥
 सामायक पोसो बहु और । पूजा दान सुपात्र सुठोर ॥३५८॥
 इण विध परम सुभावक होइ । जती धरै तेरह विध सोइ ॥
 पच महाव्रत सार्धे जोग । सुमति पच वज्रित सुभ भोग ॥३५९॥
 तीन युक्ति पालै दिन राति । मन वच काया सख्या प्रात ॥
 सहस्र अठारा अंग समेत । सीलव्रत पालै बहु हेत ॥३६०॥
 आपण थकी बढी जो होइ । माता सम जाणइ सब कोइ ॥
 जे अपनी सरभर की तिरी । जानहु बहनि घरम की घरी ॥३६१॥
 आपण सेती छोटी आन । पुत्री सम जाणै करि ज्ञान ॥
 बहुत भाति के सुनि उपदेस । तिरणु घरघा मुनिवर का भेस ॥३६२॥
 कोई सुनि आवक व्रत लेह । बचन पयोग भाति बहु देह ॥
 कियो विहार दु दुभी ध्वनी । आनी आनदे गुन गनी ॥३६३॥
 नृत्य करै गावै गुन गान । सुरवाजे सुर दु दु प्रमान ॥
 लोकपाल आगै पग धरै । सौ सौ कोस लागि सोभा करै ॥३६४॥
 आगै धर्म चक्र सुभ मई । चले प्रभु जय जय धु नि भई ॥
 बीणा बेण मृदंग झालरी । सय नफीरी वाजै घरी ॥३६५॥
 घनहर घमड मदल धु नि धोर । हासि कुलाहल करई सुरमोर ॥
 सावधान दसहु दिश पूर । करई दुष्ट पापी ने दूरि ॥३६६॥
 आवै लोग पृछै विध धर्म । ज्ञासै असुभ पाप के कर्म ॥
 दरसन अंध पगु पग डोल । बहिर सुने मू क मुख बोल ॥३६७॥
 इण अतिसय सौ करई विहार । पावै जीव बहुत आधार ॥
 घरम प्रगट प्रतिबोधे देस । फिर आयै कैलास जिनेस ॥३६८॥
 समोसरण मे राजत घनी । च्यार ग्यान चीरासी गुनी ॥
 मति श्रुति अवधि ग्यान के घनी । मनपर्यय केवल गुन गुनी ॥३६९॥

सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय

भरत चक्र पाया सुभ ठोर । देव सहस्र सेवै कर जोर ॥
 नवविध अष्ट सिद्धि सयुक्त । चौदह रतन सुलझि बहुत ॥३७०॥
 हय गय वाहन अबिक असेस । सहस्र छयानवै नवै नरेस ॥
 सहस्र छयानवै नारी भनी । ताकी उपमा आय न गिनी ॥३७१॥

भरत भूप साथे छह पंड । देव दानव पै कीया दंड ॥
 भाये अजोष्या देस सब जीत । चक्र न चले नई मन चित ॥३७१॥
 कवण देस स्याषी बिन रह्या । तब मंत्री सब व्योरा कह्या ॥
 नित्याणवै तुम्हारे वीर । इतादेस भगते बलवीर ॥३७२॥
 रहई एकठा बहुत सनेह । रूपवत कचन सम देह ॥
 माने नहीं तुम्हारी भान । ताषी चक्र न भावें थान ॥३७३॥
 ऐसी सुनिकर भेज्या दूत । उनको वह समझायो बहुत ॥
 सेवा करो मान मुक्त भान । मंत्री लिख भेज्या फरमान ॥३७४॥
 गया दूत काणब दे हाथ । मुख सों वचन कहैं बहु भाति ॥
 भरत चक्रवर्त बाहुबली । तुम सेवा करौ तास की भली ॥३७५॥
 आग्या मानहु लेखरी । तुम निचंत क्यू बैठे घरी ॥
 अब तुम चलो हमारे साथ । चलो वेग पगलावो माय ॥३७६॥
 इतनी सुणिते भएँ कुमार । भरत राज भुगतें संसार ॥
 हमने देस पिता जे दिये । ते भी चुभई भरत के हिये ॥३७७॥
 जइवह अजहुन त्रिपत न भया । तो ए लेहु सब एह हम दिया ॥
 छाडि रिषि ते गए कविलास । दिक्षा लई पिता के पास ॥३७८॥
 फिरया दूत भरत पै गया । सब व्योरा सेती बरनया ॥
 भरत सुण्यां वे हुषा जती । किया सोच मन मे बहु भती ॥३७९॥
 दूत बयण बोलीया कठोर । उनके मन कछु बंठी घोर ॥
 बार बारि भरत पछताय । तोउ न चक्र गढ़ भीतर जाय ॥३८०॥
 फिर मंत्री पूछे सुबुलाय । कहै मंत्री सुनि पृथ्वीराय ॥
 बाहुबलि पोवनपुर घनी । ताके सब सेन्यां है घनी ॥३८१॥
 वह आज्ञा मानत है नाहि । ताषी चक्र न बैठहि ठाम ॥
 इतनी सुनि भेजीया बसीठ । सूरु सुभट बचना दीठ ॥३८२॥

पोवनपुर का बैराब

पत्री लेकर चाल्या बकील । गया पोयलपुर न लाई डील ॥
 देख्य नगर सुषी सब लोग । कीजे पान फूल को भोग ॥३८३॥
 ऊंचे मंदिर सब दकसार । डूँढता पढ़ता राजदरबार ॥
 सीसा पान घर घर के बीच । पीकतणी गलीयां मे कीच ॥३८४॥
 घर घर नांदी जाणि अपछरा । राजमहल सब सेती बरा ॥
 पीलवान देव्या दरबार । ते सीसी भूपति अनुहार ॥३८५॥

ताहि देष मन सौचै दूत । लषन दीसै राज सयुक्त ॥
 जो इह बैठ्या कोई धीर । तउ टोकेगा जातै पौर ॥३८६॥
 चल्या दूत तब पौरि मझार । तिहा पौलिया हृष्ठा अडवार ॥
 पूछै कौण किहां तू जात । बहु हमसौं समझावी बात ॥३८७॥
 कहै दूत मो भेज्या भरत । राजा सौं पहुँचावो तुरत ॥
 गया पौलिया राजा पास । नमस्कार करि बिनती भास ॥३८८॥
 राजसभा सुरपति सी जुरी । को का दूत सौन्या तिह धरी ॥
 राजसभा में आया दूत । नमस्कार तब करि बहुत ॥३८९॥
 ठाडा भया दूत की ठौर । ठीक ठिकाने ठाडे धीर ॥
 पूछै भूप भरत कुसलात । बोल्या दूत धरि मस्तक हाथ ॥३९०॥
 भरत चक्रधारी बलवत । छहु षड जीते सामत ॥
 नरपति खगपति माने सेव । छउ षडका रह्या न भेव ॥३९१॥
 तुम भी उनकी सेवा करो । आज्ञा जाकी मत वीसरो ॥
 इतनी सुनि कोप्या भूपति । अजहू वाके नाही धिति ॥३९२॥
 जे वह करै चक्र की मनी । चक्रवर्ति कुंभारा भी भनी ॥
 भरत नाम भीडे का कहै । इता गर्व क्यों उसमे रहै ॥३९३॥
 भी कौं दिया पिता ने राज । वह हम स्यों क्या राखै काज ॥
 जो वाकै मन होय सदेह । करो जुध आबो सु सनेह ॥३९४॥
 इतनी सुणि फिर आया दूत । कही बात सुणि कोप्या बहुत ॥
 सुतउ केहरि मारघउ डेल । जानु पड्या अगनि मे तेल ॥३९५॥

भरत बाहुबली युद्ध

जानू सकती हिये मे लगी । राते नयन लहर सी लगी ॥
 नगर माहि बाजै निसान । सेना बहुत जुरी तिहा आन ॥३९६॥
 सुर सुभट निकसे बानेत । अगन मोठे जुडिमा बेत ॥
 हय गय रथ पायक बहु चले । बाजै मारू बागे भले ॥३९७॥
 सेना तिहा चली चतुरंग । पहर आभर्न खरे सुरंग ॥
 उडियन छाया आसमान । ऊडल भया चंद अरु मान ॥३९८॥
 शरहराट करै सब मही । कंपे गिरवर जलहर सही ॥
 जिहा जाय सेना उतरई । प्रथिवी सही न रीती पिरई ॥३९९॥
 सुरत सुनी बाहुबल बली । सूरवीर मानी बहु रली ॥
 साजी सैन्य भया असवार । घेर्या आगै मारय अडवार ॥४००॥

मारघो वेत मुंह भिन्न गये । बजै भुक्ताह मारु कीये ॥
 सुनै सुर नर भए अडोल । सिलहसों भक्त भालै खोल ॥४०१॥
 बहू पास छोडे अरु बांन । तुपक गोली गरि मारै तान ॥
 बरछी बाढा कीन्हैं हाथ । भुम्भै सूर पडै वरमांथ ॥४०२॥
 दुहुधां सूर सुभट जो लरई । घ्रायुध टूटै घरती परई ॥
 जोधा सूर सुभट स्वी जुटै । बाधौ बाध आपस मे कडै ॥४०३॥
 मैंगल सौ मैंगल भुम्भत । परै लीख लानो परबंत ॥
 भुमै स्वामि धरम के काज । जिएकैं छत्री कुल की लाज ॥४०४॥
 घुमै घायल घरती पडै । गीझ सोबर गत मै पडै ॥
 दुहुधां जुध भया बहुभाति । हारिन न मानैं दोऊं भात ॥४०५॥
 तबहु सोच किया नूपती । कहै प्रजा की यह कुंए गनी ॥
 प्रजा दुख देवै बेकाज । हम तुम सनमुख भभे आजि ॥४०६॥
 सेना को दुख काहे देय । हम तुम जुध मनमान करेह ॥
 दृष्टि जुध थाप्या दहु वोर । लगी दृष्टि ज्यौं चंद्र चकोर ॥४०७॥
 भरत तैं बाहुबलि धनुष पबीस । ऊंचा घणों करै को रीस ॥
 हारधा भरत जब जल जुध होय । बाहुबल जीत्या बार दोय ॥४०८॥
 मुष्टि जुध थापिया बहौरि । लथ पथ हारे माची रीर ॥
 बलि लीया भरथ ऊचाइ । भरत मान मंग हुवा राइ ॥४०९॥
 बाहुबलि करै मनीहार । हम ये बाल तुम उठाए बहुवार ॥
 इस कारण तुम लीए उठाय । भूलन लगी तुम्हारी काय ॥४१०॥
 मुष्ट युद्ध फिर थापी बात । पहली भरत करौउ संघात ॥
 पार्थ बाहुबली सभारि । मुष्टि उठाई उत्तनी बार ॥४११॥
 तब मन मे आया इह ग्यान । बडा वीर ए पिता समान ॥
 जो भाई पर कीजे चोट । तो सिर चडै पाप की पोट ॥४१२॥

बाहुबली द्वारा विजय केपश्चात् बैराग्यसेना

कर उठाए जो रीता पडे । सूरधरत अब मेरा टरे ॥
 भरी मुष्ट कर लुंखे केत । बाहुबल भए दिगंबर भेस ॥४१३॥
 एक अंगुठे के घरि जोग । अचिरज भए देख सब लीग ॥
 सहैं परिस्था वाकीस ग्रंग । म्यान लहर की उठे तरंग ॥४१४॥
 वारह प्रेक्षा नौ सो चित । लोक सरूप बिचारै नित ॥
 पंच महाव्रत समति जु पाच । मन वच इंद्री साधी बाधि ॥४१५॥

छह रित सहै परीसहै काय । स्याम भुवमम देह लपटाय ॥
 रही बेल बन लपट सरीर । बाधा की तहँ सहै न पीर ॥४१६॥
 वर्षा काल वृक्षतल जोग । सीयालै तरनी जल जोग ॥
 उह्लालै परबत धरि ध्यान । तपे बहु था उपर भान ॥
 अंतर चिदानंद स्युं नेह । ममता रसी न राषी देह ॥ ४१७॥

सोरठा

आतम सो ल्यौ ल्याइ, चरघो ध्यान चिदूप की ।
 असुभ करम मिटाइ, केवलग्यान आया निकट ॥४१८॥

चौपई

भरत बाह्यी अर सुंवरी । समवरण पहुँचे तिह घरी ॥
 नमस्कार करि पूछै बात । बाहूबल सहै परीसह गात ॥४१९॥
 अगुष्ठासिउ ठाठा तप करइ । असुभ करम कब वाके धपई ॥
 केवल लक्षि लहैसी कबै । मोस्युं प्रगट कहीं प्रभु अबै ॥४२०॥
 श्री जिन बोले ग्यान विचार । उन राध्या मन मे अहंकार ॥
 दोनो चरण घरा जब घरै । अहंकार तब दूरै टरै ॥४२१॥
 उपजै केवल ग्यान तुरत । पामे भवसायरना अत ॥
 प्रभू तणा साभल ए बैण । आत प्रतै समभावै अनं ॥४२२॥
 मान गयद थी उतरो वीर । क्रोध अगनि तजि हूजे नीर ॥
 किसकी पृथ्वी किसका राज । मोसम बहुत कर गए राज ॥४२३॥
 केते हुए होहि हैं घने । तिनकी गिनती कहा लौं गिने ॥
 इह ससार सुपन की रिष । जाग्या कछुव न देख्या सिध ॥४२४॥
 मन का ससय कीजे दूरि । पाव घरो घरती पर पूर ॥
 इतनी सुनि मन उपसम किया । पाव घरत ही केवल लिया ॥४२५॥
 टूटे असुभ करम तिह बार । पहुँचे जाय सु मोक्ष मभारि ॥
 जोतै जोति मिली तब जाय । अजर अमर पदई सुख पाय ॥४२६॥

बोहा

बाहूबलि सब विधि बली, यस प्रगटथा ससार ।
 ग्यान सरीषी नाव चढि, पहुँता भवदधि पार ॥४२७॥

चौपई

भरत राज भुगतै ससार । परधी भोग भूमि अनुहारि ॥
 पुत्र पांचसैं सोमा घनी । सूरवीर ग्यानी गुन घनी ॥४२८॥

ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति

अस्थि क बहुरि करी परसन्न । ब्राह्मण की कहिए उत्पन्न ॥
 कंसे थाप्पा चउथा बरुं । कहो प्रभु मो संसय हरुं ॥४२६॥
 भरत भूमि निकटक राज । पहली करै धरम का काज ॥
 छह षंड की लछमी जुरी । दान देण की इच्छा करी ॥४३०॥
 बहु पकवान लक्ष्मी घनी । आभूषन सोभा अति घनी ॥
 ले सब सौज गए कैलास । मन मे दान देण की आस ॥४३१॥
 समोसरण पटुंछा तिह बार । दई प्रदक्षिनां करि नमस्कार ॥
 प्रभूजी हम परि किरपा करो । दान देय मम पातिग हरो ॥४३२॥
 रिषजदेव बोले समभाय । ये दान न लेहैं मुनिराय ॥
 ए सब छोडि गए बैराग । इण कै कंधा की जैसी त्याग ॥४३३॥
 देही ममता राखै नाहि । पाखण महीने भोजन पाइ ॥
 जे तपसी ह्वै लछमी गहै । नरक निगोद महादुख लहै ॥४३४॥
 जनम अकारय तिसका जाए । ले दिव्या जे होय अयाण ॥
 माया बस्त्र जो राखै जोड । दरसन ने त्यावै बहु छोडि ॥४३५॥
 मर करि भ्रमै चतुरगति जीव । पाप पोड ले अपनी जीव ॥
 ताते ए कुम फेर ले जाड । नहि ए दान लेहि मुनिनाह ॥४३६॥
 तबै भरत फिर आया गेह । दान जू काठचा किस कौं देह ॥
 बारवार करै नृप सोच । दात लेण की किस नही रुच ॥४३७॥
 सब ही सुखी दुखी नहि कोइ । किसके मन लेने की होइ ॥
 दानसाला माडी वन बीच । बोए जव^१ तहा क्यारी बीच ॥४३८॥
 नगर भाहि बाज्या निसान । हाजर होय नृप तरणी आन ॥
 सब मिल आवो राजा पास । देस देस नरपति नर जास ॥४३९॥
 कोई न पुदै क्यारी हरी । जिनके हिये ग्यान मति घरी ॥
 जे मूरिषु ते खु दन चले । बिनु विवेक अग्यानी भले ॥४४०॥
 चक्रवर्त्ति देव नरताय । जे ग्यानी ते जुदे बुलाय ॥
 क्यारी खूदन आये लोग । जुदा थान दीना तिन जोग ॥४४१॥
 अग्यानी विदा कर दिये । ग्यानी कु आदर बहु किये ॥
 नरपति वचन वीनती कहै । इह इच्छा भेरे अनु रहै ॥४४२॥
 मांगु वचन देहि जौ मोहि । पचो विनय सुनावै तोहि ॥
 देग चलो जल भरकर लेहु । जौ मैं चाहू सो मोहि देहु ॥४४॥

सोचै सकल विचारै चित्त । झेलो कहा है हम पर भित्त ॥
 जाकूँ चाहे पृथ्वीनाथ । सब ही नीर लिये निज हाथ ॥४४४॥
 बोले भरत लेहु तुम दान । झेली सुनि ठाढे धरि व्यान ॥
 तब बोले हम चाहै कहा । करवो टइर दान ले तहां ॥४४५॥
 तुम प्रसाद हम है सब सुधी । कोई नाहि बसै नरु दुषी ॥
 अब तुम हम पै बाचा भागि । दीया चाहो हमको त्याग ॥४४६॥
 राज वचन श्री बाचा दई । तब ही दान विधि थापी सही ॥
 हैम रतन के जजन पवित्र । नव नव तार बनाई रीत ॥४४७॥
 नो नो गुन का इक इक तार । गुन इच्छासी बडे विस्तार ॥
 धोवती मुद्रिका और जनेउ । नमस्कार करि कीनो सेउ ॥४४८॥
 उत्तम रीति दइ ज्योहार । दक्षिणा दे कीनी मनुहार ॥
 ये अपनेमे नगर बे घने । सबसे उत्तम बांभल भने ॥४४९॥
 पूजनीक उत्तम कुल धरा । हम सब तुल्य न को अवतारा ॥
 रावरक पूजै सब कोइ । चौपा बरल ऐसी विधि होइ ॥४५०॥
 भरत गया श्री जिन की जाति । नमस्कार करि जोरे हाथ ॥
 बांभल थापि दान मे दीया । सब व्यवहार स्वामीस्यु कहा ॥४५१॥
 बानी तब भावै भगवंत । ए थापेंगे पाप महंत ॥
 हिंसा होम करेगे घने । तिनके पाप कहा लौं भवें ॥४५२॥
 च्यार बेद थापेंगे और । तिनमे पाप अनंत किरौड ॥
 षोढे दान प्रकासै बहु भाति । उलटी सब थापेंगे बात ॥४५३॥
 धरती हल रगबु अससरी । हस्ती और तुरगम तिरि ॥
 षोढे दैंगे धनु उपदेस । क्रिया भ्रष्ट सुनि हौंय नरेस ॥४५४॥
 जैनधरम के निंदक होइ । असभव बात कहेंगे सोय ॥
 अज गज गड थापेंगे भेद । असव और जीवो कौं वेद ॥४५५॥
 इतनो सुनी भरत ने बात । मैं इह बुरी करी बहु भाति ॥
 अब इह भेष करू जाय दूरि । इनकूँ मारि गमाऊँ मूर ॥४५६॥
 तब स्वामी समझावै ग्यान । होय पाप जो हति हैं प्रान ॥
 जीव हते अब अब दु'ष सहै । ऐसी बात जिनेसुर कहै ॥४५७॥
 होखहार टारी नहीं जाय । भ्रंसा धरउ न षोटा भाय ॥
 राजा भरत रवि जेम प्रताप । पू'न्य करई सब टूटे पाप ॥४५८॥

परजा सुधी बसई ता सखें । परदुष भंजन शरिद्र हर्णें ॥
 श्री भगवत धरम समभाय । मोक्ष मारग के भेद बताय ॥४५६॥
 पुन्य विभूति सकल धिर गई । वानी जोत एक सम भई ॥
 एक मास रहे इह भाति । ना कछु वानी ना कछु बात ॥४६०॥
 साधक बढी चौबिस परवान । श्री जिन पहुचे मुक्ति मिलान ॥
 देह कपूर समान सब धिरी । विज्वल घात चिमकसी करी ॥४६१॥
 सूरपति आय किया कल्याण । पूजा रची भगवंतिसौं आयि ॥४६२॥

दूहा

श्री जिए धरम प्रगट किया, प्रतिबोधे बहु लोग ॥
 आप मुक्ति रमणी बरी, तिहा सासते भोग ॥४६३॥

इति श्री पद्यपुराणे श्रेणिकप्रश्न श्री ऋषभ महात्मन विद्यानकं संधि ॥१॥

द्वितीय संधि

भरत का वैराग्य

चौपई

भरत भूप छह षड का धनी । राजसभा सोभा अति बनी ॥
 छत्री सहस्रओ विद्याधर भूप । एते भुमिगोचरी अनूप ॥१॥
 मुकट वध बत्तीस हजार । छद्यानव सहस्र नागि भरतार ॥
 दरपन देल बवल सिर केस । मनमे कषा भरत नरेस ॥२॥
 मंत्री सो पूछी जब बात । कप्या भूप पसीना गात ॥
 भोग भुगत मे बीती आव । धरम ध्यान सो धरथा न भाव ॥३॥
 मोह माया में भया अचेत । जरा दूत कच आए स्वेत ॥
 अब सब राज विभूति को त्याग । धरौ चारित्र मन बच वैराग ॥४॥
 आदित्यजस को सौंप्या राज । आप सवारथा आनम काज ॥
 पानै प्रजा भोगवै भोग । सावै भरथ वनमे नित जोग ॥५॥

भरत का परिवार

उपज्या केवल मया निरवान । सूरपति पूजि गये निजधान ॥
 आदित्यजस के सिद्धजस पूत । बल अकुस बल महाबल भूत ॥६॥
 अतिबल अमरत सबद सुभद्र । महेन्द्र महोदर भीम सुरेन्द्र ॥
 रवितेज प्रभतेज भूपती । परताप मनि अति बीर सुभमती ॥७॥
 सुविरत उदत और बहुभूप । उनका बरनो कहा स्वरूप ॥
 केइक तप करि भये केवली । गए मुक्ति पूजी मन रली ॥८॥

केई सुरग देवगति लही । इक्ष्वाकवस कुल उत्तम सही ॥
 बाहुबलि के सोमप्रभ भया । महाबल सुबल धर्म धुर किया ॥६॥
 भुजबल देवमादि अतिबली । इनकी कीरति जग मे भली ॥
 केई मुक्त केई सुर भए । काटि कर्म ऊची गति गए ॥१०॥
 सोमवम का किया ब्रषान । नवि बंसी विद्याधर जानि ॥
 विद्याधर परवत का भूप । नमी विद्याधर बहुत स्वरूप ॥११॥
 ताकै रत्नमासी सुत एक । जाने राज काज की टेक ॥
 रतनवीर्य रतनरथ और । रतनचित्र रथ सुष की ठौर ॥१२॥
 बज्रजंघ बज्रसित दिष्ट । बज्रबुज बज्राधव जेष्ठ ॥
 सुवजर अरु बज्राभृत राय । बज्रभान बज्रवाह गुनभाय ॥१३॥
 बज्रवाक बज्रासिध नरेस । बज्राष्ट साधे बहुदेश ॥
 बज्ररतन भीम बज्रवान । विद्युन्मुष सबकच बलवान ॥१४॥
 बज्रहस्त वदतान विद्योत । विद्युत्तट्ट कामनी सुहोत ॥
 इकनिस पोढे दम्पति सग । सुष सज्या सोमै सुभ रग ॥१५॥
 देश राज की महिमा कहै । राणी का मन सुखि उमगहै ॥
 मोहि दिपावौ वे सब ठाउ । कैसे द्वीप परवत अरु गाव ॥१६॥
 इतनी सुखि साजिया विमान । दपति बैठ चले सुष मान ॥
 पंचागिर परवत तर हान । सजै सुरति मुनि आतम ध्यान ॥१७॥
 रुक्या विमान न आगे चलै । विद्याधर मन ज्वाला जलै ॥
 कै कोई मित्र कै दुरजन ठाउ । कै कोई सिद्ध तपा कै भाउ ॥१८॥
 प्रेसा चितवि यहि कमान । चारु कूट चलाया बान ॥
 दामिन चमकी उजयारा भया । मुनिवर देषि उपद्रव किया ॥१९॥
 पापी दिया साधनें दुष । वह अपने मन माने सुष ॥
 मुनिवर चित्त मे भय नवि धरी । असुभ करम टूटे तिह धरी ॥२०॥
 सह परीसह अपने अग । उपज्या केवल लहर तुरत ॥
 चउविध देव किया जयकार । कचन मदी बनी तिहवार ॥२१॥
 विद्युत्तट्ट बाधिया धनेद्र । विद्यालई छीन सब संध ॥
 मुनि बैठा आतम ल्यो लाह । ते क्यु दुष दिया यहा आई ॥२२॥
 तब विद्याधर विनती करै । ऐसे पाप टरै ना टरै ।
 साधहै दुख दीया बेकाज । हरत परत घोई सब लाज ॥२३॥
 कठिन पाप मैं कियो अथाय । अब मैं पाप टरै किहू भाय ॥
 बिन विद्या किम पहुचे गेह । चिता व्यापी गगपति देह ॥२४॥

विद्याधर पावै जई मोहि । मारै प्रचुर करै जिय छोहि ॥
 जो विद्या मोकुं फिर देइ । भूल न करूँ पाप सौं नेह ॥२५॥
 धरणेद्र की तब धाम्या भई । बाराबरस कर तपस्या नई ॥
 तब पावसी विद्या सुख । फिर मत करै पाप की बुधि ॥२६॥
 पूजै धरणेन्द्र मुनिवर सौ बात । इन तुमस्यौ क्यों किया धात ॥
 क्यों इननें तुम कूँ दुख दिया । कारन कौन उपद्रव किया ॥२७॥
 व्योरो सकल कहो समझाव । ज्यूँ मेरे मन संसा जाय ॥
 मुनि बोले पुनि ग्यान विचारि । प्राणी पावै सकल आघार ॥२८॥

सत्यघोष की कथा

संकर ग्राम देस का नाम । सरव जीव सुखसी विश्राम ॥
 श्रीबरधन है तहा भूपती । ता पट ाणी कुसभाबसी ॥२९॥
 सोम सरमा ब्राह्मण तिहा बसै । महाकुचील देख सब हसै ॥
 उन छोड़ी जीवन की आस । दिक्षा लई सन्यासी पास ॥३०॥
 पच भजन तप साथै जोग । ताकी सेव करै बहु लोग ॥
 अंतकाल उन छोड़ी देह । उपज्या जाय देव के गेह ॥३१॥
 धूमकेतु नाम तिहा घरधा । देखन मन भय उपजै खरा ॥
 बहा भी आघा विलीत सब गई । मनुष देह फिर पाई नई ॥३२॥
 वाहन सिष्य ब्राह्मण के गेह । भया पुत्र अति सुन्दर देह ॥
 सत्यघोष बालक का नाम । दिन दिन बढ़ै विराजै ठाम ॥३३॥
 पाईविरिष सब विद्या पढी । ज्योतिक ग्रंथ अति महा बढी ॥
 व्याकरण का लह्या सब भेद । कहै पुराणरु व्याकूँ वेद ॥३४॥
 वैदिक सामोदिक गुंण सार । ग्यान बाधि बढी बुधि अपार ॥
 सुग्री कतरनी जनेउ रावै । भूठो वयण न मुख थी भावै ॥३५॥
 जो मुख असत्य वचन नीसरै । पंड जीभ तब पर ही करै ॥
 कीरति प्रगटि जब सब संसार । ऐसी रीत सुंणी भूपार ॥३६॥
 सत्यघोष प्रति लिया बुलाय । प्रोहित थाप्या आपणा राइ ॥
 आदर मान देइ सब कोई । दिन दिन कारण चौगुणा होइ ॥३७॥
 नेमिबल बाणिक जौहरी । लाद चल्या समंद की पुरी ॥
 भरे जिहाज सौंज मन रोच । नेमिबल मन उपज्या सोच ॥३८॥
 इतना द्रव्य लिया मैं संग । कुछ धर जाउं रहै अमंग ॥
 चार रतन जे धरे अमोल । सत्यघोष नै सोपे तोल ॥३९॥

जब फिर आउ तव मैं लेव । इनही तुम राखी सत देव ॥
 सत्यघोष कूँ सौंप लाल । विनज निमित्त किया उन चाल ॥४०॥
 ताकू बीत गये दिन घने । सत्यघोष चित्त औरें बने ॥
 विप्र विचारधा मन मे खोट । खोया घरम लोभ की ओट ॥४१॥
 मंदिर अपने दिया ढहाय । और भाति के फेर बनाय ॥
 जो कोइ देखे सो भरमाय । च्यारि पौलिकी औरें भाइ ॥४२॥
 नेमिबत्त के बहे जिहाज । फिरि आये लाली के काल ॥
 डूबी सब कछु चित न करी । जाती सत्यघोष ने धरी ॥४३॥
 लेय रतन फिर करू व्योपार । बढै लक्ष धन होय अपार ॥
 सत्यघोष सतधने आवास । नेमिबत्त देखा तट पास ॥४४॥
 रूप दलिद्री फाटे चीर । आय लम्बा सागर के तीर ॥
 सभा मे आय चलायी बात । मैं सुपना देखा इस भात ॥४५॥
 एक रक मुझ सो यो कहै । मेरी थापना तो पै रहै ॥
 मागे रतन सुपने मे आय । तिसका फल तुम सो समझाय ॥४६॥

सत्यघोष के पास जाना

नेमिबत्त पहुँच्या तिहु ठोर । देखे मंदिर और ही और ॥
 पूछी सत्यघोष की पौरि । नेमिबत्त आवियौ बहोरि ॥४७॥
 सभा माहि नेमिबत्त गया । सत्यघोष ने बढत भया ॥
 सत्यघोष देपै नहि ताहि । नेमिबत्त ताहि रह्यो लोभाइ ॥४८॥
 कहै रतन मेरे तुम देहु । बोलै विप्र पचो सुणि लेहु ॥
 मैं सुपना देखा जह जात । सो तुम देखो अब ही बात ॥४९॥
 राय सुहाती बोले सबै । धक्का दिये वरिण कु तबै ॥
 नेमिबत्त पहुँचो नूपद्वार । बे कर जोड करी पुकार ॥५०॥

राजा से निवेदन

च्यारि रतन प्रोहित कु दीये । कीजे न्याय तीन धरि हिये ॥
 राय कहै इह गहिलो कोय । सत्यघोष थी ए मन होय ॥५१॥
 डूरि किया धका दिव राय । वावरि मई को करै सहाये ॥
 राज सभातँ भया निरास । बसती छोडि फिरें बनबास ॥५२॥
 रात रहै वृद्धन मे जाय । च्यारि लाल निस दिन बिललाय ॥
 एक निस सुणि राखी ए बात । बहोत दिन भए याहि बिललात ॥५३॥

करो न्याय राजा प्रमूनाथ । यह तो हे तुमरी सरणाय ॥
 या को न्याय वेग तुम करो । यह भ्रमतो डौल बाबरो ॥५४॥
 बोले राजा राणी सुणी । सत्यघोष क्यू कपटी घुणै ॥
 बाबला गहलावै क्या फिरै । ताको न्याय कबण विष करै ॥५५॥
 राणी बोली सुणी नरेस । इते तो भ्रमई तुम्हरे देस ॥
 एक जीभ कूकै दिन रात । गहला कहिए किरण भाति ॥५६॥

राणी द्वारा न्याय

जो तुम मोकूँ आज्ञा देहु । याको न्याय तुम मो पै लेव ॥
 नेमिदत्त तोडे तिह बार । राजा ने जाकर कियो जुहार ॥५७॥
 राजा राणी मंदिर माहि । नेमिदत्त बैठा इक ठाँह ॥
 सत्यघोष को क्या तिह घरी । चौपड खेलन बाजी घरी ॥५८॥
 प्रोहित नैं हारी मुँदडी । राणी जीत ले करमे घरी ॥
 दई मुद्रिका दासी टेर । जाहु पंचडाणी पै इण बेर ॥५९॥
 कहियो रतन मार्ग सत्यघोष । जैन पतीजे छाप हि पेषि ॥
 मिश्रानी देवै नहि लाल । दासी आयी चतुर विसाल ॥६०॥
 घोती पतरा जनेउ हार । दासी गई फेर तिह बार ॥
 स्याम वस्त्र मे बाधे रतन । जो न पत्यातउ देखिए जतन ॥६१॥
 पोथी जनेउ घोवती देख । दीए लाल ते क्याहूँ पेषि ॥
 भ्राण दिये रणी के हाथ । अचिरज भया पृथ्वी का नाथ ॥६२॥
 राजा बहुत अर्चभा करै । अंसे तै प्रीसी क्यो मरै ॥
 औरहु रतन भराए बाल । तिनमे डारे च्याहूँ लाल ॥६३॥
 नेमिदत्त बुलवाया वान । अपने रतन देह पहिचान ॥
 देवे सकल रतन परिहरे । अपने थे सो लेकर घरे ॥६४॥
 तब राजा प्रोहित सू कहै । काती छुगी जनेऊ सुरेहै ॥
 अब क्यो जिम्मा राषई मूठ । तू पाषंडी अंतर गूठ ॥६५॥
 मुँड मूँडि मुष काल कराय । सकल नगर मांही फेराय ॥
 देस निकारो नाम न लेहु । अब देखू तो सूली देहु ॥६६॥
 बाहन शिष्य जती पै जाय । दिक्षा लई कर मन बच काय ॥
 नरपति ने भी दिक्षा लई । ब्रह्मविमान देव धिति आई ॥६७॥
 भाव मुँज करि क्षेत्र विदेह । सजै सुत राजा मम देह ॥
 सहज विचार किया मैं जोग । छोडि दिये संसारी भोग ॥६८॥

वा सबध जोग जो आय । सु नि बात मन ससा जाय ॥
नेमिबल ने दीक्षा धरी । धरखेंद्र पदवी पाई खरी ॥६६॥

विद्युत्तहड भी विद्या पाइ । फिर कर भावा अपनी ठाय ॥
राज करत बीते दिन घने । धरम विचारधा अपने मने ॥७०॥
दिदधरपुत्र ने सौप्या राज । आपन किया मुक्ति का साज ॥
अस्वधरम अस्वध्वज भये । पद्मनाभ पद्ममाली भये ॥७१॥

ब्रूहा

पद्मरथ भी सिद्ध जन, सिध जघ मृग बर्रां ॥
मेघसूर सिध प्रभू सिंहकेतु मन हर्रां ॥७२॥

श्रीपई

शेषाक चन्द्र श्री चन्द्र शेष । उद्वरथ चक्रधर मे विसेष ॥
चका इन्द्र चक्रघ्नत मनगर्व । मनाक मनवास मन गुन सर्व ॥७३॥
मनोज समन समेद्र नेद्र । मन गोम विजइ सोट आनद ॥
लवात धर रक्ती उष्ट मूप । हरिचद्र पुरचद्र सरूप ॥७४॥
पूरण चद्र भया काल इद्र । चद्रमा चंद्र चूरवाचे इन्द्र ॥
उरण पक केस वरराय । वुचुर सचुर वजरचुर सुभकाय ॥७५॥
भर चुरा टका बाहन जटी । बाहन ते मन हरष धग वटी ॥
याही बस मूप प्रति घने । करि तपु अष्ट करम सब हने ॥७६॥
केई स्वर्ग देवता भए । केई मुक्ति रमणि मे गए ॥
विद्याधर का वरण्या बस । वरण सुनाये तीन्यु अस ॥७७॥
इति श्री पद्मपुराण विद्याधर वंस वर्णन सम्पूर्णम् ॥

तृतीय संधि

श्रीपई

इरवाक वंश वर्णन

इष्वाक वस बरनू बहोरि । सुनु बात चित्त मे राखो ठोर ॥
धरनीधर जगधारन धीर । तोत्रिदसंजपुत्र बल वीर ॥१॥
धरनीधर दिक्षा पद धरया । राजा त्रिदसंज की करघा ॥
इन्द्ररेखा विवाह नारि । रूप लखिन शशि की उनहारि ॥२॥
तास गर्भ जितसन्तु भया । बहुत आनद मूप मन ठया ॥
पीयनपुर सोमवसी राय । वानेद्र मूपति तिस धाय ॥३॥

अर्धमास राखी ता मेह । बिबिया कन्या कंचन सम देह ॥
 जितसत्रु सौं वर्ई बिबाह । भोग मगन नि करै उछाह ॥४॥
 इक निस सुपने पोडस देषि । भली वस्तु पाई सुविशेष ॥
 बिबिया देखी उठी प्रभात । पति सौं कहै सुपन की बात ॥५॥
 सुणि सपने मन हुआ उलास । सुख मानै करि भोग बिलास ॥
 जेष्ठ वदि मावस्या शुभ बेर । भई गर्भ पूजै सुर पर ॥६॥
 जं जं कार सबद सुर करै । देवी छप्पन सेवा अनुसरै ॥
 जैसे कमल पत्र जल बुंद । जैसे स्वाति जल सीप समद ॥७॥

द्वितीय तीर्थकर अजितनाथ वर्णन

माघ सुदि दसमी शुभ बार । श्री भगवत लिया अवतार ॥
 नक्षत्र रोहणी वरिया भली । तीन लोक सुन मानें रली ॥८॥
 जनम कल्याणक कर गये देव । रतन पुष्प वरये बहु भेव ॥
 दसहु दिसा दुंदुभी होय । भयौ जनम जानहु सहु कोइ ॥९॥
 पूरब लाष बहलर आव । साढे चारसं धनुष को काय ॥
 सुरपति कियो महोछब आन । रीति पाछली करी प्रमान ॥१०॥
 अभयमासा व्याही मुदरी । रूप लक्षण कर सीधै घरी ॥
 राजा भोग बीते दिन घने । वन उपवन सोभा प्रति वने ॥११॥
 जहा सरोवर निरमल नीर । छाया सघन बिहंगम तीर ॥
 फूले कमल रविवती तिहा । चद्रवंसी मुरभाये जहा ॥१२॥
 तब मन मान्या लोक सरूप । बूढे जीव मोह के कूप ॥
 भोग भुगति की निदा करी । जै जं सबदहु प्रति ही घरी ॥१३॥
 माघ वदी नौमि सुजिनेश । शिवका चढ़ि वन किया प्रवेश ॥
 उत्तर पालकी लोचे केस । श्री जिन भए जती के भेस ॥१४॥
 बारह बिध तप आतम ध्यान । सुर किया तहा तप कल्याण ॥
 छह उवास कीये इकसार । ब्रह्मदत्त कै लिया आहार ॥१५॥
 भोजन रीति इसी बिधि करी । बिदानद ल्यौ लाई घरी ॥
 बारह बरस रहे छदमस्त । चार करम जीते बहु कस्त ॥१६॥
 पोस सुदि ग्यारस शुभ घरी । परकत त्रैसठि न्यारी करी ॥
 पाया केवल ज्ञान त्रिनेन्द्र । सुर नर तीन लोक आनंद ॥१७॥

बाजै सुर दुंदुभी बहु भेर । रचियो समोसरणं तिह बेर ॥
 साढे ग्यारह जोजन समोसरणं । गणरतवड लागी छानिकरणं ॥१८॥
 दोष अठारह कीये दूर । बारह सभा रही भरपूर ॥
 चोतिस अतिसय गुण छियालीस । तीन छत्र बिराजै सीस ॥१९॥
 चौंसठ चमर दुरै इक बार । बानी हुई त्रिभुवन आधार ॥
 विजयसागर त्रिदज सकावीर । मंगला राणी गुण गभीर ॥२०॥
 ताको पुत्र सगर चक्रवर्ति । छ पड करि साधे सुरति ॥
 विजयारध दक्षिन दिस भूप । विद्या माघी नाना रूप ॥२१॥
 आप तात दिक्षा पद लिया । चक्रपाल ने राजा किया ॥
 पूरणघन पुत्र ता तने । विद्या बल गिनती कौ गिनै ॥२२॥
 चक्रपाल नै दीक्षा लई । राज विभूति पूरणघन दई ॥
 उत्पन्न मति पुत्री ता तनी । रूपलक्षण सोभा अति बनी ॥२३॥
 सुलोचन ने भेज्या दूत । तिलकेसर मेरे घर पूत ॥
 अब तुम किरपा मोपै करउ । उत्पलमति मम पुत्रै वरउ ॥२४॥
 पूरणघन पूछधा जोतयी । याकी लगन कौनसौं लगी ।
 याह विवाहै राजा सगर । पटरानी होवंगी अगर ॥२५॥
 इह निमत्त सौ कहै भूपाल । टीका भेज्या सगर कौ हान ॥
 सुलोचन सुनि कोप्यो राइ । जुढ हेत आपन चढ़ि भाइ ॥२६॥
 लई खडी जोतिग गुन ग्यान । हौनी कही आगउ आनि ॥
 पूरणघन के बजै निमान । सूरवीर सब पहुँचे आन ॥२७॥
 साजी सेन्या मुह गिल भए । दुहुधा बानी धारी डए ॥
 भुभै दोऊ सेना खरी । सहस्रनयन उलपल मति हरी ॥२८॥
 दारुण जुष भया भयभीत । अन भई पूरणघन जीत ॥
 आया गेहन देषी मुता । पूरणघन कु बाढी चिता ॥२९॥
 सुनी सहस्रनयन ले गया । उठ्या क्रोध दुचित्या भया ॥
 सहस्रनयन पै कीनी दोर । बाका चाचा मारधा ठौर ॥३०॥
 उत्पलमति सहस्रनयन के संग । मै हू सगर भूप की मग ॥
 तो मै हरी किया अति बुरा । चक्रवर्ति का डर नही करा ॥३१॥
 अब जो चाहै अपनी प्रात । लेवल सगराय पै जाण ॥
 सहस्रनयन डरप्या मनमाहि । सगर पास ले पहुँतो ताहि ॥३२॥

दई विवाह सगर सौं जाय । पटराणी थापी तब राय ॥
 सहस्रनयन सुराी इह बात । पूरणघन किया बाबा भाति ॥३३॥
 कोप्या भूप जुष कौं चल्या । पूरणघन फिर कै सांभला ॥
 बहुत जुष हुवा दुहु वोर । पडे मार तिहा मांची रोर ॥३४॥
 मेघबाहुन पूरणघन पूत । पहुंता तिहा सैन संयुक्त ॥
 बरषे वाण अषाढ सम मेह । सहस्रनयन भाग्या से देह ॥३५॥
 समोसरण मे प्राया भाजि । तिहां भया मनवाछित काज ॥
 बैर भाव सब ही मिट गया । दया प्रणाम सकल मन भया ॥३६॥
 बज्रधर देला इन जुष । चक्रवर्ति सु कही यह सुष ॥
 चाल्यो समोसरण भगवान । पूछै इनका बैर निदान ॥३७॥
 राजा बज्रधर सगर ले साथ । आये समोसरण जिन नाथ ॥
 मानस्तभ मान कौ हरै । देखत ही मति निरर्मल करे ॥३८॥
 तीन प्रदक्षिण करि नमस्कार । डंढवता बहु वारंवार ॥
 दो कर जोड करै प्रसन्न । इन्है बैर क्यों भया उत्पन्न ॥३९॥
 अजितनाथ जिए बाणी सार । गणधर भेद कहै सुविचार ॥
 संबनगर तिहा भावन सेठ । प्रति कीरत बहु क्रिया सरेष्ट ॥४०॥
 ताकै अरहवास सुत भया । पाई बुधि मौ स्याणा थया ॥
 आप सेठ चाल्यो व्योपार । पुत्रे सोप्या बहु बीनार ॥४१॥
 चार कोड गिए मौपे ताहि । धरम दया राखो मनमाहि ॥
 सज्जन कुटब की करज्यो कारण । जिन पूजा मे दीज्यो दान ॥४२॥
 लाद जिहाज दिखातर चल्या । अरहवास ज्वारधा संग मित्या ॥
 खेलै जुवा हरवै द्रव्य । सात विसन तिन सेये सर्व ॥४३॥
 बेस्या सगमादिक सौं हेत । लछमी बहु गणिका कुं देत ॥
 खोटे कारण कीने घने । बिभचारी बाकौं सब अने ॥४४॥
 सर्व दर्ब धोया इण भाति । चोरी कु निकस्या अघराति ॥
 राज मंडारै किया प्रवेश । बाधि पोट ले चल्या असेस ॥४५॥
 सुरग माहि ते आवै जाय । नित प्रति सात विसन सुंषाय ॥
 प्रीण बूढि समद मे गए । पश्चाताप सेठ बहु कीये ॥४६॥
 मेरे घर थी लछमी बहुत । ते मे सौंपी पूत कपूत ॥
 मेरी बुधि हरी करतार । अमता फिरधा देस ससार ॥४७॥
 जे संतोष सो रहता बैठि । तो क्यों होती सुखसौं छैठ ॥
 दुष्मा दलिद्री पढ़ूच्यां गेह । रती न घर मे देवी गेह ॥४८॥

साहण कही पुत्र की बात । सुणि करि दोउं मीडे पछितात ॥
 कही कै बहू क्या घषा करै । राज मझारै चोरी करै ॥४६॥
 सुरज माहि ते पंठे साभ । चोरी करै मंडारा माभ ॥
 दंपति मनह विचारया एह । जो नृप सुणै तो सूली देह ॥५०॥
 इम विचार चिण लई सुरज । देख भरहुबास भया मन मंग ॥
 पिता पुत्र ने मारया ठोर । भाज गया नगरी ने छोरि ॥५१॥
 करम कुकर्म करै दिन रैन । कबही मनको हुवै न चैन ॥

नरको के दुःख

भरकर गया सातमी नर्क । छेदन भेदन काटन अर्क ॥५२॥
 हु डक देह घरो उन जाय । मूल प्यास को अंत न आय ॥
 जुं बा चौर कं काटै हाथ । फेर सबारै दुख के साथ ॥५३॥
 जीवह तेरे मास कु खाय । लोह पिंड दीजे सुख माहि ॥
 मास अहार कहै ते सुष । अभक्ष खाये पावै दुख ॥५४॥
 सुरा पान मादिक जे लेह । तपत राग ता मुख मे देह ॥
 आहेटै मारे बहु जीव । सूला रोपन बैचै शीव ॥५५॥
 जो भुगत पर की असतरी । लोह तणी लावै पूतली ॥
 दौरि भिडावै उनकी घाइ । पारे ज्यो सगीर फट जाय ॥५६॥
 दुख मे होय देह की देह । सात विसन फल लागै एह ।
 वे दोन्यु कोली कै गेह । भए पुत्र तिहा नही संदेह ॥५७॥
 लरि करि मुये नरक गति लही । भूष त्रिया करि पीडा सही ॥
 बहा ते मरि परवत के तट । भए साभ करै घन छुट ॥५८॥
 दहा ते मुये मेष गति पाय । दोन्यो लरई बैर के भाब ॥
 यो ही जौनि भमे वे घनी । अनकाल तै भेटया इक मुनी ॥५९॥
 तिहां सुने पच प्रभू के नाम । तातै पायो उत्तम ठाम ॥
 क्षेत्र विदेह पुष्कलावती देस । पुं डरीक तहा नगर नरेस ॥६०॥
 सुण्या धरम श्री जिनवर पास । सतार स्वर्ग परि पाया बास ॥
 वहा थी चंकरि नरपति भए । भावन जीव पुरन घन थये ॥६१॥
 भरहुबास जीव सुलोचन जान । ताथी जुद्ध भया बहु भान ॥
 सगर भूप जोरे दोइ हाथ । मेघवाहन सहस्रनयन की पूछी बात ॥६२॥
 पद्माक नगर तिहा संषक देस । सीस अवली मित्र कै भेस ॥
 दोऊ रहै एकही ठाड । ससी गयो औरही के गाव ॥६३॥

अबलाचला जात हो नीर । अस्मिने मारणा भर कर तीर ॥
 देही छोड़ि लही गति बहल । अशि को मारणा सीग सौपल ॥६४॥
 वह तो मरि भूसा अबतार । अबली जीव भया मंजार ॥
 बिलाव नें भूसे कूँ मारि । यौही अमे तिरजंब मभारि ॥६५॥
 स्याम रांम की दासी गेह । ताकं गर्भ भई नर देह ॥
 राजा प्रीछ तब सुनि धर्म । दिक्षा ले काटे दुह करम ॥६६॥
 पाया सनत कुमार विमान । ह्वा थी चये आतकी भान ॥
 जैवती देस अरजय नगर । सहस्र सूर्य के सेवक अगार ॥६७॥

सगर के भव

तप करि गये स्वर्ग विमान । ह्वा तैं चढ़ पाया इह धान ॥
 सगर नरेद्र दोई करि जीरि । मेरे भव प्रभु कहो बहोर ॥६८॥
 भोमर देस कु रग नरेस । मुनिकौ दान दिया बहु मेस ॥
 पाया अंत सुधर्म विमान । ह्वा तैं चल्या चंद्रपुर भान ॥६९॥
 दैत्यराय धारावे नारि । वित्ति कीर्त्ति तसु भयो कुमार ॥
 आप तात दिक्षा पद लिया । वीर्त्ति कीर्त्ति कौ राजा किया ॥७०॥
 तिन भी तप कर आतम ध्यान । पहुचा स्वर्ग लोक पुर धान ॥
 रतनसंचय पुर वेत्र विदेह । महाघोष राजा के गेह ॥७१॥
 अग्नाननी उरलियो अबतार । अविचल भया सुभट की पार ॥
 तप करि देव भया सुरलोक । पूरन भाव भई मन सोक ॥७२॥
 भरत क्षेत्र पृथ्वी पर बस । असोधर राजा के मन हस ॥
 जया नाम ताके घर प्रिया । जयकीर्त्ति पुत्र नाम कुल दिया ॥७३॥
 गय यशोधर दिक्षा लई । राज रिध जैकीर्त्ति ने दई ॥
 सुख मे दिन बीते बहु ताहि । दिक्षा ली मुनिवर ढिग जाय ॥७४॥
 पहुचा विजय स्वर्ग विमान । ह्वा ते सगर भया तू भानि ॥
 सकल भवातर श्री जिन कहै । बारह सभा सुनत सुख लहे ॥७५॥

सोरठा

मुनि पिछला सर्वध, मन संसय सब का गया ॥
 सकल जीव आनंद । राति दिवस पालो दया ॥७६॥

खोपई

समोसरण मे सुख निधान । राक्षस अविपति हूँ पहुँचे भानि ॥
 भीम सु भीम दुहुन का नाम । राक्षस कुल आए इस ठाम ॥७७॥

दर्ई प्रदिक्षन करै डडोत । श्री जिए करी बहुत अस्तुति ॥
 पूरणघन मेघवाहन सौ कहै । जो तुम चलो परम सुख लहै ॥७८॥
 सागर तट जोजन सो मान । त्रिकुटाचल सुमेर परमान ॥
 पचास जोजन है उच्चंत । कचनगढ नय ओयण हुत ॥७९॥
 जोजन तीस वसैं वह नगर । सोवन घर चैत्यालय अगार ॥
 मोती लाल हीरे दवहु वरण । पन्ने चुभ्री जडे सुवरण ॥८०॥
 फिये चितेरे रतन के धने । प्रतिमा सहित चैत्यालय बने ॥
 वन उपवन बावडी कूप । सरोवर निरमल पाल अनूप ॥८१॥
 हम आदि बहु जलचर जीव । बैठक मोहे गहरी नीव ॥
 कमल फूल फूले बहु भाति । दीसैं भली बाग की पाति ॥८२॥
 दक्षिण दिस लंका जिहा नाम । सर्व वस्तु सो सीमैं ठाम ॥
 चैत्यालो परि घुज फहराय । अमर स्वर्ग मुख ओडैं आय ॥८३॥
 सहस्रकूट बने जिए धान । लंकागढ सुर्य पुरी समान ॥
 सकल वस्तु का करौ वधान । बडैं कथा नही होय निदान ॥८४॥
 मेघवाहन कु दीयाहार । या की पूजा करो सबार ॥
 जो मनबाछित करस्यौ नरेस । तैसा तुरत प्रकासैं भेम ॥८५॥
 पहैरैं मति गले मभार । कुल क्षय होय पहैरैं जब हार ॥
 या की पूजा कीजो भली । तो पूजैं मन बाछित रली ॥८६॥
 अरु हूँ विद्या दीनी राक्षसी । ते निश्चल चित अंतर बसी ॥
 कमला अमला सप्रत नीन । दर्ई विद्याधर गुणह प्रवीन ॥८७॥
 श्री जिएवर की आज्ञा पाय । चडि विमान लका मे जाय ॥
 बाजा बाजैं धुरैं निसान । पूरणघन मेघवाहन भान ॥८८॥
 सेना बहुत लई उन संग । हाथी रथ पालकी तुरग ॥
 धंठ विमान चले आकास । देखे पुरषट्टण बहु बास ॥८९॥
 देख्या सायर लहर तुरत । मच्छ कच्छ उनरैं बहु रंग ॥
 त्रिकुटाचल तिहा कचन कोट । ताहि कान्ति रबि हुआ ओट ॥९०॥
 देखी लका कंचन मई । जिनवर भवन सोभा भति मई ॥
 अष्ट द्रव्य सो पूजा रची । करैं आरती बंपति सची ॥९१॥
 पूजा करि गढ ऊपर चढे । देखत सुख महा अति बढे ॥
 ढाल कलस दीया लंका राज । हुवा सब मन बाछित काज ॥९२॥

निरभयवंत राज ते करै । मूचर बेचर सेवा करै ॥
 विजयारष पर्वत के पास । किनर गीत नगर का वास ॥६३॥
 अतिमयूष तिहा बसै नरेम । आनमती त्रिय सोहै केस ॥
 सुप्रभा पुत्री तार्क भई । मृगलोचन कमलाननी थई ॥६४॥
 कीर नासिका सुभ्र कपोल । हीरादंत कोकिला बोल ॥
 भुजा कलाई अगुरी फरी । जंघ केल सम कटि केहरी ॥६५॥
 पंकज चरण हस गति चाल । बेणी सोभा जेम बयाल ॥
 टीका मेघबाहन का किया । लिप्षा लगन सुभ दिन साधिया ॥६६॥
 रहसरली सो हुआ विवाह । सोना दीया बहु नर नाह ॥
 हय गय वाहन दीये घने । चमर छत्र सिधामन बने ॥६७॥
 जीत कसौज भूपति नइ दर्ई । तो मोपै नहि बग्यै गई ॥
 विदा होय चाले नरनाह । आये निजपुर अधिक उछाह ॥६८॥
 सुष माही दिन बीते घने । चमर छत्र सिंहासन बने ॥
 भई गर्म थिति सुप्रभा तने । महाराक्षस भयो उत्पने ॥६९॥
 महाराक्षस भया उत्पन्न । रूपा कला लक्षण सुलभ ॥
 ता पाछै हुआ सुत ओर । ससांक कुमार विराजै ठोर ॥
 सगर चक्री मेघबाहन भूप । पहिर आभरण अधिक अनूप ॥१००॥
 आण समोसरण जिनयान । देखत उपजै सुख दिनांन ॥
 नमस्कार करि बिनती करै । कर जोडि मस्तक भू धरै ॥१०१॥
 स्वामी कया कहो समभाय । मन म्हारे का संसय जाय ॥
 तुमसे पुरुष और भी भए । धर्म तीर्थ कौ उनके कीये ॥१०२॥
 तुमसा कोई ह्वै है और । अनुभ करम को डारै तोडि ॥
 चक्रवर्त्ति केते ह्वै भूप । कामदेव ह्वै अधिक स्वरूप ॥१०३॥
 नारायण केते बलिभद्र । प्रतिनारायण के ते रुद्र ॥
 श्री जिनवर भाषै अब समभाइ । बारह सभा सुणै मनलाय ॥१०४॥
 उत्सर्पणी अवसर्पणी काल । त्रैसठ पुरुष ह्वै चौथेकाल ॥
 चौबीस तीर्थंकर कामदेव । बारह चक्री नो बलदेव ॥१०५॥
 नारायण प्रतिनारायण नौ । महारुद्र वे ग्यारह गिनौ ॥
 पहली हुआ जुगलिया धर्म । रिषभदेव परकांस्यौ मर्म ॥१०६॥
 चक्री प्रथम भया ते भरत । कामदेव बाहुबल समरत्थ ॥
 पंच कन्याण इद्रादिक देव । पूजा करै चरण की सेव ॥१०७॥

हम सरवारथसिधि तें प्राय । अजितनाथ बीजो जिनराय ॥
 मरम जनम तप केवल ग्यान । किये महोछब सुर नर भान ॥१०८॥
 चक्री सगर दूसरा भया । छह बंढि साधि राज भोगिया ॥
 बाईस होय और अवतार । घरम प्रगासेंगे संसार ॥१०९॥
 चक्रवर्त्ति ह्वैं हैं दस और । पाप दुष्ट मारेंगे तोड़ि ॥
 धर्म पुन्य की रक्षा करै । तीन काल सुमरण दिढ़ धरै ॥११०॥

बीबीस तीर्थकर

ऋषभनाथ प्रथम जिएदेव । जैन धरम प्रकास्या भेव ॥
 दुजे अजितनाथ जिएराय । सभब अभिनदन सुखदाय ॥१११॥
 सुमति पदमप्रभू देव सुपास । चद्रप्रभ मन पूरवै भास ॥
 पुष्पदत्त सीतल श्रेयास । बासपूज्य सुमरो जिएहंस ॥११२॥
 बर्दो विमलनाथ सुजिएद । अनतनाथ चउदहौं मुण्ड ॥
 धरमनाथ जिएधरम महत् । शाति कुंथु श्री भरु अरिहत ॥११३॥
 मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव । नमि नेम की कीजे सेव ॥
 पार्श्वनाथ कमठ मद हया । वर्द्धमान प्रकासी दया ॥११४॥

दूहा

बाहुबलि का बल अधिक, दूजा अमर भजसेन ।
 श्रीधर दरसन भद्र अति । प्रसनचंद सुष सेन ॥११५॥
 चद्रवरण चद्रकला, अगाति, मुक्ति सनंतकुमार ॥
 श्रीबछराजा कनकप्रभ, मेघ वरण उनहार ॥११६॥
 साति कुंथ भरु अरह जिए. विजयराम श्रीचद ॥
 नल राजा धुलभद्र अति, हनुमान छह दंद ॥११७॥

अट्टिल

बलिराजा वसुदेव सेव बहुतै करै
 प्रद्युमन रूप अपार ताहि क्यौ मन धरै ॥
 नागकुमार सुदरशन सील पाल्या धरा,
 धारघौ दुढ वृत्त सील सुभब सायर तिरथा ॥११८॥
 चक्रवर्त्ति भयऊ भरथ देश बहु साधिया ।
 जीते भूप अनेक जिनो को बाधिया ।
 धरथा धरम सो ध्यान कर्म वसु क्षयकिया ॥
 केवल ज्ञान उपाय मुक्ति वासा लिया ॥११९॥

सगर जीय कर चक्र देस अपने करें ।

छह पद के भूप हय जोड़धो खरै ।

सुन्या घरम जिन पास भाव बहु मन घरघा ॥

बाणी भ्रम भ्रपार जीव सुणि निस्तरघा ॥१२०॥

ब्रह्म

मधवसु चक्री तोसरा । सनतकुमार भी होइ ॥

साति कुंभु अछहनाच जी । सुमरो मित सब कोइ ॥१२१॥

फिर सुभोम चक्री भया । पद्म सुचक्री जान ॥

हरयेन जयसेन नृप । ब्रह्मदत्त गुणवान ॥१२२॥

त्रिविष्ट द्विविष्ट स्वयम्भव । पुरुषोत्तम सिध भेव ॥

पु डरीक दत्त लक्ष्मणा । कृष्णनारायण देव ॥१२३॥

सुत्तारिक असुग्रीव । मेर कुमेर मधु कंट ॥

नि-संभव पहलाद । बलि रावण जरासिध हू वाहेट ॥१२४॥

विस्वानल सुप्रतिष्ठ । अचलपुगीक जीतघर ॥

विजय अचल सुधरम सुपुत्र सुदरसन आनंद ।

नदमित्र श्री रामचन्द्र हरनवर ए शुभ्रकद ।

भीम बली जितसत्रुजी जित नाभि पोखिल इष्ट ॥१२५॥

क्रोधानल भया ईग्यारमा । महारुद्र बलवीर ॥

जै सठ सीलाका पुरुष सब । सम्यकदुष्टी धीर ॥१२६॥

अडिल

श्री जिण ग्यान गभीर अत नहि पाइये ।

अव्य जीव धरि भाव प्रात उठि ध्याइये ॥

केवलग्यान अपार सकल ससै भजै ।

दियो घरम उपदेस सुख हिरदै रजै ॥१२७॥

चोपई

संसार का स्वरूप

अव देखी ससार सरूप । कबहू रक कबहू ह्वै भूप ॥

जीव दया विन कबे न सुख । निरदय पावे भव भव दुख ॥१२८॥

हय गय विभव द्रव्य भडार । रहै सकल हैये गिगनाकार ॥

सज्जन कुटुंब दामनी उद्योत । छिनही माहि अंधेरा होत ॥१२९॥

राजा विभूतह पुत्र कलित्र । सब विनासी बुदबुदावत ॥

इण ससार नही धिर कोय । बेही आदि नही साधि होई ॥१३०॥

धरम सहाई जीव के साथ । स्मरण करछ ज्यो जिए नाथ ॥
 जैन धरम परवै गुणवत । रवि प्रताप उज्जल बहु मत ॥१३१॥
 मिथ्या धरम करं जे अघ । अशुभ करम के बाधे बंध ॥
 छाडे अमृत पीवं नीर । भवसागर ते लहै न तीर ॥१३२॥
 च्यारो यति मे डोलै सदा । काल अनत लहै आपदा ॥
 मिथ्या धरम करो मत कोई । जैनधर्म ते शिवपद होइ ॥१३३॥
 छोडे भोग जोग आचरै । बहुर न भवसागर मे परै ॥
 च्यारि कषाय अठारह दोष । ए छाडे तब पावै मोक्ष ॥१३४॥

अठित्स

मेघवाहन मुनि भूष धरम पहचानिया ।
 जग सुपना सम देखि अनित्य जु ठानिया ॥
 छाडयो लकाराज पुत्र जाकी ययो ।
 सहस्र भूप के साथ आप चारित्र नियो ॥१३५॥

चौपई

महाराक्षस जहा भोगवै राज । ससाक पुत्र छोड्या जुवराज ॥
 महाराक्षस के विमला स्त्री । पतिव्रता आजा मे खरी ॥१३६॥
 तीन पुत्र जाके उर भये । रूपलक्षण करि सोमै नये ॥
 अमर राक्षस उदयोदय रात । भानु राक्षस की मोभा लाक्ष ॥१३७॥

सगर चक्रवर्ती वर्णन

सः १ चक्रवर्ति निष्कटक राज । साठ सहस्र सुत आजा काज ॥
 एक दिवस सब मतउ बिचार । चले पिता पै करै पुकार ॥१३८॥
 अब हम बडे सयाने भए । अब लग कछु उद्यम नही किये ॥
 पोटश वर्ष तरौ परमाणु । पुत्र पिता के पावै धान ॥१३९॥
 बिना कुमाये यूही फिरै । सो कपूत नाही विस्तरै ॥
 अब हमकू तुम आजा देहु । सेवा करै किसकी घरि नेहु ॥१४०॥
 कहै पिता तुम सुणउ कुमार । हम सब भूप नही ससार ॥
 ताकी सेव करौ तुम जाय । कौन समुझि चितई सुखदाइ ॥१४१॥
 सर्व वस्तु की पूरण रिद्ध । बिलसो वच्छ घरोरी रिद्ध ॥
 सुणत वयण कर मस्तक धरै । हमने टहल करो सो करै ॥१४२॥
 आजा भई जाहु कैलास । महा गया पोटो ता पास ॥
 सोवर्नमई जैत्यार्ल घने । रतन बिब सोभा सब बने ॥१४३॥

भागई बहु होहिगे मलेच्छ । बेहु बां भागि करै परबैस ॥
 महाबना ने फेरड तिहां । कोइ न जाइ सकैगो वहां ॥१४४॥
 बिदा मांगि गए कैलास । खाई सोदें चित उल्लास ॥
 सोवी तिरौं ऊंडी घति मही । बस बस बहु बखोन्न सही ॥१४५॥
 मनमे कोप्या भुंङ उठाइ । सहलमुखी बिह्या निकलाय ॥
 करी फुंकार घूम आकार । अग्निभाल ते हुये छार ॥१४६॥
 मूए सब तब उवरे दोय । भीम भागीरथ चित बिसमय होय ॥१४७॥
 सगर पास आए तिए वार । सकल बात कौं कह्यो विचार ॥
 एहि वृत्तान्त महादुख गया । रोवै पीटै कूटै हीया ॥१४८॥
 हा हा कार नगर मे होय । ऐसा दुखी न दूजो कोय ॥
 राजा अश्रुपात बहु करइ । ज्यों ज्यों दुःख हिये उच्छरइ ॥१४९॥
 समभावै सब मंत्री लोग । इस संसार सयोग वियोग ॥
 किस को पुत्र पिता परिवार । इस विमूति जल पटल अकार ॥१५०॥
 पुण्य संयोग लई बहु रिद्ध । अशुभ उदय दुख लहै प्रसिद्ध ॥
 स्वारथ रूप सबै ससार । साथी नहीं पुत्र परिवार ॥१५१॥
 जब लग जीव तब्य सुखराज । जीव बिना कछु सरइ न काज ॥
 राजा फेरि नगर संचरया । मनतें दुःख न होवै परा ॥१५२॥
 आये समोसरण की सीम । राजा सगर साथ ले भीम ॥
 श्री भगवत का दरसन पाय । बहुत भाति सो नवण कराय ॥१५३॥
 देल मलीन बहुल मनमाहि । श्री जिनवर समभावै ताहि ॥
 भ्रम्या जीव इह आदि अवादि । बिना घरम नर देही बादि ॥१५४॥
 सब ऊपर चक्र फिरावै काल । नोतन विरघ न छोडै बाल ॥
 बैठ्या ऊठ्या जागत सैन । रोवत गावत दुजिते बैन ॥१५५॥
 कायर सूर राव ने रक । काहु की नहीं मानें सक ॥
 मूर्ख पड़ित तप प्रति जती । कार्य दया न आवै रती ॥१५६॥ -
 पूरण आव वीत जब जाय । बालक तरुण बुद्ध ने लाय ॥
 काल समान बली नहीं कोइ । पकरि पछारत बार न होय ॥१५७॥
 स्वर्ग पाताल आवै मुनि लोक । सरवारथ सिध लौं ओक ॥
 आगै नहीं काल की दीडि । मुकति थान निरभय है ठौर ॥१५८॥

बूहा

तीरथंकर अस अकल्पित, कामदेव वनिभद्र ॥
 नारायण प्रविनारायन, तपस्वी नारद ऋ ॥१५९॥

काल तरुं बसि सब भये, जोधा सुभट सुजान ॥
सकल लोक इण जीतिया, या सम बली न घान ॥१६०॥

सोरठा

चक्रवर्त्ति मुनि भेद, भोग सोग सब परहरे ।
घरघो घ्यान दिठ जोग, सब संसार मन ते तजा ॥१६१॥

राजा भागीरथ का वर्णन

बूहा

भागीरथ राजा किया, सगर भीम सहु त्याग ।
दिक्षा ली जिणराय पै, मनमे धरि वैराग ॥१६२॥

चौपई

पाले प्रजा भागीरथ भूप । मुकट छत्र सिर बने अनूप ॥
राज करत दिन बीते घने । श्रुतसागर मुनि आये सुने ॥१६३॥
नरपति के मन हरष अपार । बलै जहा मुनि प्राण अपार ॥
नगरलोक चाले सहु साथ । वनमे ध्यान घरघो मुनिनाथ ॥१६४॥
आए निकट बंदना करी । साठि सहस की पुच्छी चरी ॥
किए कारण एकठे मरे । कहो कया ज्यो ससय टरे ॥१६५॥
मुनि बोले पिछला संबध । ताथी हुवा करम का बंध ॥
समेव शिखर चाल्यो डक सध । दतपुर गाम देख मनरग ॥१६६॥
देखत लोग सध को हंसै । देखा गांव किसो तह बसै ॥
कु भकार बरजै तिहूँ जात । इण ठा गया जीव नो घात ॥१६७॥
बात कही भीमानी नही । गांव माहि देही गज गही ॥
पकड पछारे सगले लोग । मीड माड सब कीन्है फोक ॥१६८॥
कु भकार मरि बणिवर भया । तप करि बहुरि राज सुत भया ॥
तप करि फिर पायो सुरधान । सो तु भयो भगीरथ धान ॥१६९॥
साठि हजार सिंघ के जीव । सगर भूप सुत उपजै तीव ॥
जात्रा माहि सब का रह्या ध्यान । राजपुत्र ते हूये धान ॥१७०॥
कारण पाए मुए इक ठोर । अशुभ करम की मिटई न धोर ॥
मुनि भागीरथ कीयो नमस्कार । राज छोड ली दीक्षा सार ॥१७१॥

संका का राजा महाराक्षस

महाराक्षस लका का भूप । वन श्रीढा का देखन रूप ॥
सकल कुटुंब लिया नृप सग । वन उपवन गुह गभीर जतंग ॥१७२॥

निरमल सरोवर देखे बने । फूल फले कमल अति बने ॥
 स्वर्गलोक किन्नर उनहार । राखी सोमै राज दुहार ॥१७३॥
 भई रयण मुरझये फूल । भमरा रहे बास में मूल ॥
 देखई उपज्यो नृप ने ज्ञान । एके इन्द्री मे भमर भुलान ॥१७४॥
 पंच इंद्री बसि रहे भलाय । उन जीवाँनँ कौण सहाय ॥
 असी समझि भयो वैराग । राजरिद्धि सहु परिधन त्याग ॥१७५॥

भमर राक्षस

भमर राक्षस ने सौप्यौ राज । दिका लई मुक्ति कै काज ॥
 ससार परीप्सा पेषन किया । भबर देखि मति आयी हिया ॥१७६॥

बूढ़ा

भमरा बीछ्या कमल मे, दये प्रान ता बीज ॥
 राजा श्रीछा अति करही, विषय गली सब नीच ॥१७७॥

अडिस्त

मनमे धरि वैराग चित्त चिमक्या बरा ।
 इह संसार असार दुख सागर भरा ॥
 एक इंद्री कै विषै प्राण परिहरि करै ।
 पंच इन्द्री के विषै सेय क्यो निस्तरै ॥१७८॥

चौपई

श्रुतसागर मुनि के बाल गमन

राजा सोचै मनमे ग्यान । श्रुतसागर आये वन धान ॥
 घग्घो ध्यान तप करै अनेक । मन बच काय न डोलै एक ॥१७९॥
 तेरह विष बारिज सौ चित्त । सहै परीसा बाइस नित्त ॥
 अबर अनेक सिष्य ता संग । सहै परीसा अपने अन्न ॥१८०॥
 रूप गुणें भति बहा प्रवीण । चंद्रकाति देखत अति हीण ॥
 माली गया भूप के पाम । मुनिवर जोय दिया वनवास ॥१८१॥
 ग्यान तीन अंतरगत बसै । दरसत देखत पातिग नसै ॥
 मुनि नरैस बन किया उल्लास । पूजण चले सुगति की आस ॥१८२॥
 नगर लोग चले संग बहुत । ततक्षण बन मे जाय पहुँच ॥
 नमस्कार करि करी डंडोत । बदन कंठि ससी की अति जोत ॥१८३॥
 चरण प्रक्षालण विनती करै । कहो धर्म मम संसय हरै ॥
 मुनिवर कहै धर्म समुझाय । हिंसा कृत् फासो बन लाय ॥१८४॥

दृष्टि अगोचर गोचर जानि । घटकाया जे आप समान ॥
 जानि बुझ न विराघो कोइ । अनइ देखे जे हिंसा होय ॥१८५॥
 पश्चात्ताप करै मन माहि । भिटै सकल हिरदा की दाह ॥
 अनरत विरत दूसरा कछा । सत्य बचन ते सिब सुख लछा ॥१८६॥
 चोरी लाभ परिहरो सर्व । दान अदत्ता लेय न दवं ॥
 परिग्रह सख्या पालै सील । धर्म निमित्त न कीजे डील ॥१८७॥
 संख्या वस्तु करे परिमाण । सत्तिसमा छो चारो दान ॥
 बइयावरत करै बहु भांति । अनंतकाय भोजन तजि राति ॥१८८॥
 महाराक्षस वीनबैं करि गहौ । मेरो भव व्योरास्यो कहौ ॥
 चारि ग्यान का धारक साध । पूजत हैं प्रांणी की साध ॥१८९॥
 कही सकल पूरव भव बात । अंधकार जिम दीप मिटात ॥
 पोवनपुर उदयाचल भूप । अरहण श्री राणीज अनूप ॥१९०॥
 हेमरथ पुत्र ताहि कै भया । बहुत ध्यानद दंपति बिस थाया ॥
 हितवंत महाजन तिह ठा बसई । माधवी नारि मन उल्लसई ॥१९१॥
 प्रत्यक्षपुत्र है लघु अवतार । रूपलक्षण करि सोभा सार ॥
 एक दिवस गरज्यो घनघोर । नृत्य करतउ देख्ये मोर ॥१९२॥
 बिद्युत घात मुवा जब मोर । नरपति के जिय उपजी ओर ॥
 ससार परिक्षा पेसि तुरंत । घर परियण छोडे बहुमत ॥१९३॥
 श्री मुनि पास दिक्षा लई प्राय । करी तपस्या मन बच काय ॥
 पटुब्धा स्वर्ग लही गति देव । किन्नर बहुत करै ता सेव ॥१९४॥
 बई करि उपज्या क्षेत्र बिदेह । कचनपुर देखे वर नेह ॥
 श्री प्रभाराणी सुन्दरी । ताकै गर्म आइ थिति करी ॥१९५॥
 उदित नाम भया सुकुमार । रूपवत गुण लक्षण सार ॥
 जीवन समै महा बलवत । रविप्रनाथ सोभा बहु मत ॥१९६॥
 मुनिवर का उपसर्ग निवार । धरम ब्याण सुण्यो निरधार ॥
 चारण मुनिपै दिक्षा लई । ग्यान ज्योति अन्तर्गत भई ॥१९७॥
 असनवेग विद्याधर जहा । उदित मुनि ध्यान धरया तिहा ॥
 धनिबिर विद्याधर गमे आकास । हम भूगोचरी पृथ्वी बास ॥१९८॥
 मेरे तप का इह फल होइ । विद्याधर गति पाऊ सोइ ॥
 देही छोडि ईसांन विमान । छोडि हुवा महा राक्षस आन ॥१९९॥
 अमरराक्षस को दीया राज । भान राक्षस छोटा युवराज ॥
 महाराक्षस दिक्षा पद लई । सोधर्म विमान देव पद बई ॥२००॥

विजयारध पर्वत उज्ज्वल । किन्नर गीत नगर निवसत ॥
 श्रीधर जहां रहै सुनरेस । आदित स्त्री सोमै बहु भेस ॥२०१॥
 विद्यूत पुत्री तारै मई । रूप लक्षण गुण सोमै मई ॥
 अमर राक्षस कुं दई विवाह । भोग मगन रस करई उछाह ॥२०२॥
 गधर्व गीत नगर शुभ ठोर । सरीसर्पाभ सम भूप न धीर ॥
 भारज्या नाम राणी पट बनी । गाधर्ववती पुत्री सोभा बनी ॥२०३॥
 भानराक्षस कौं कन्या दई । श्रीढा भोग रिति मानै नई ॥
 अमर राक्षस के देवराक्षस पुत्र । विजयाई जीते सह सत्र ॥२०४॥
 भानराक्षस कै दस सुत भये । पुत्री वदम्यान जुन हीये ॥
 दसो बसाये दस ही देस । सुरगपुरी सम दीसै भेस ॥२०५॥
 सध्याकार बसाया नगर । सबल मनौ लकापुर अमर ॥
 मृनाल हस हीर पुरिधोर । जोधपुरि समदपुरि की ठोर ॥२०६॥
 देवराक्षस लकापति राय । मनोबेग गति सोमै ठाढ़ ॥
 सुप्रभा विवाही असतरी । नदीनाक पुत्र भया लुभ धरी ॥२०७॥
 प्रोहनमती विवाही नारि । भीमप्रभ पुत्र भयो अचतार ॥
 जोवन समय भयो विवाह । सहस्रत्रियासौ भोग उछाह
 भए पुत्र एक सो आठ । वरणत सकल बढै बहु पाट ॥२०८॥

बूढ़ा

भासकर पुंजर नाम जित, सप्रति कीर्तं सुग्रीव ।
 बृहत्कीर्ण नदन मुनंदन, समुद्रसेन हयग्रीव ॥२०९॥

चौपई

चंद्रवरत भया महाराव । मेघ धवल ग्रह धवला नाव ॥
 नक्षत्र दमन मेघनाह भाव । धवल प्रभु बहु चढत दाव ॥२१०॥
 कीर्तिधवल को सौम्या राज । आपण किया मुक्ति का साज ॥
 पाले प्रजा प्रभु कीरति बबल । वरमनीत सुखि वाणी प्रबल ॥२११॥
 इति श्री वदमपुराणे श्री अजित महात्म्य राक्षस संबंधी ।

विधानक ॥३॥

चतुर्थ सर्ग

चौपई

बानर बंस बल्लन

फिर श्रेणिक कीयो परसन्न । बानरबंसी की उत्पन्न ॥
 श्री जिनजी की बांणी भई । मन ससय सब की मिट गयी ॥१॥
 बिजयाराध गिर दक्षिण ओर । सुरग लोक मम सोमैं ठोर ॥
 मेघपुरी नगरी इक नाव । अतेद्र भूपती को तहा ठाव ॥२॥
 मंदिर सघण बणे उच्चत । उत्तम लोग बसै गुणवन ॥
 अत्येंद्र राजा अति बली । श्रीपती जग माने रली ॥३॥
 श्रीकंठ पुत्र ताकै गेह । रूपवंत कंचन सम देह ॥
 विद्या पढी भया उर ग्यान । ता सम तुल्य न पडित आन ॥४॥
 चौथी देवी पुत्री भई । लोयण मृग क्राति शशि लई ॥
 सकल रूप जो कहू समझाइ । सामोद्रिक के जानो भाइ ॥५॥
 रतनपुरी पुहपोत्तर भूप । जा घर राणी अधिक सरूप ॥
 पद्मोत्तर सुत बाके गेह । लक्षण करि करि सोमैं देह ॥६॥
 अतेद्र पास तिण भेजा दूत । विनती आप लिखी सुबहुत ॥
 पद्मोत्तर सुरमोरा गुनी । कन्या देऊ चढाओ मनी ॥७॥
 अत्येंद्र पूछधा श्रीकठ । करी सगाई लिख दिया सठ ॥
 आनद भया दुहु भूपती । करे वधाई जायी रती ॥८॥
 यो ही बीत गये दिन घने । लगन काज सुन सौं नृप भने ॥
 रचौ सौज करि दीजे व्याह । पुत्र पिता की माने नाहि ॥९॥
 कहैक यासो व्याहु नही । पद्मोत्तर सुनि चिता थही ॥
 मोमैं कहा लगाई खोर । उरै विचारी मनमे और ॥१०॥
 पुहपोत्तर पद भौत चितवै । निस बासुर हा हा बोलवै ॥
 अन्तर्गत मन रालै बैर । दाव वनै तो मारू बेर ॥११॥

कन्या की सुन्दरता

बिद्यावर सब गये सुमेर । पूजन चले न लागी देर ॥
 पुहपोत्तर की तहा पूतरी । सकल कला गुण लावण भरी ॥१२॥
 रूपवंत ज्यो पून्यू चढ । घटै वर्ष यह सदा अनत ॥
 दीरघ नयन श्रवण सो लगे । देख कुरग वन माहि भगे ॥१३॥
 दंत चिमकै ज्यो हीरो की ज्योति । मस्तक कपोल प्रध्वी उद्योत ॥
 नासा भौंह बनी छबि घनी । वैनी कीर्त्त न जाये गिनी ॥१४॥

केहरि नाटि कदली सम जंघ । भुजा कलाई सुभर अमंग ॥
 एडी तलुवा पल्लव भसी । गावै राग मनोहर रली ॥१५॥
 दादस प्राप्तरा सोल भृंगार । देखत नर भू लाइ पछार ॥
 सीरीकंठनें सुनि के राग । दोन्युं वार्ता करै सराभ ॥१६॥
 द्वै विद्याधर इनको देख । पुहपोत्तर की पुत्री वेध ॥
 यह ससै बधूँ लाया बात । सुंणी भएक पुत्री की तात ॥१७॥
 पुहपोत्तर वे देख्या आन । और वही पुटिक हिरे मै जूनि ॥
 श्रीकठ का पीछा किया । भाज्या लका भीतर गया ॥१८॥
 श्रीकठ भगनी पै जाय । आदर भाव किया बहु भाव ॥
 पुहपोत्तर साजी सब सैन । चढया कटक दिन तै भई रैन ॥१९॥
 छाया रहे आकास विमान । अरु बाजै गहर निसान ॥
 दसौं दिसा भई मैभीत । कीर्त्तिघबल मन बाढी चित ॥२०॥
 के इह कोप चढया है इव । अबहो आण करैगा बुन्द ॥
 भेज्या दूत पुहपोत्तर पास । याहि बेग सुघ लीज्यो तास ॥२१॥
 गयो दूत जहा नाम नरेस । नमस्कार करि कहै उपदेस ॥
 तुम भूपति उत्तम कुल भान । भ्रमा भूप नही कुहि आन ॥२२॥
 सिरीकठ मूरिख अग्यानि । उए न करयो तुमरो सनमान ॥
 वह सेवक तुम परधीपती । बापर कृपा करो भूपती ॥२३॥
 वह भी उत्तम कुल का बाल । करो ब्याह तो बात रमाल ॥
 चार चितवै भेज्या वसीठ । आया निकट भूप की दीठ ॥२४॥
 पूछै राय कहो सत भाव । कौण कात्र पठयो इण ठाव ॥
 कहै दूत सुणुं तुम नरेस । बारिखि देवि ने कहा सदेस ॥२५॥
 पद्मोत्तर से मागी मोह । या जग और न जाउं गोहि ॥
 एक छोडि दूजो जो करै । नरक निगोद अघोगति फिरै ॥२६॥
 पद्मोत्तर तें जे नर और । तात आत सम जाणो ठोर ॥
 अबला विचारै और करम । कंसे रहै त्रिया को घरम ॥२७॥
 दासी हूँ विनऊ कर जोरि । मनकी पुटकै मारु तोडि ॥
 रहस रली सौ किया विवाह । दुहु कुल दुधा अधिक उछाह ॥२८॥
 हिरदा तयाँ बैर तव तज्या । भई बधाई मत में रज्या ॥
 सोना दिया बहुत नरेन्द्र । दोन्युं छोरे भया आनंद ॥२९॥

भोग मगन सब सुख के साज । दोऊ नगर करै ते राज ॥
 कीर्तिघवल श्रीकठ सौं कहै । लंका के जेते पुर रहै ॥३०॥
 जहां कहो सोई बू नगर । वैरभाव भाजेये सगर ॥
 दक्षिण दिसा भीम अति भीम । सघन बसै सुबिराजै सीम ॥३१॥
 उत्तर दिस अस्त सा दीप । भिरगदीप सौचित्र कर दीप ॥
 सकल दीप की सोभा कही । श्रीकंठ सुनि मनमें गही ॥३२॥
 पद्मश्री अस्त्रीन बुलाय । दंपति विलसे सुख के भाय ॥
 कीर्तिघवल के निकसे मंग । कियल पर्वत देखिये उत्तम ॥३३॥

वानर द्वीप

चौदह योजन पर्वत ऊच । वानर द्वीप बसै ता धु न ॥
 नील नगर की महिमा घनी । सायर माइ भाइ अति बनी ॥३४॥
 वन उपवन नीली चहुओर । पंछी करै हरष सौं सोर ॥
 देख श्रीकठ करै आनंद । कहू पंछी गुण पढ़े जिएंद ॥३५॥
 बोलै सबद सुहाये बोल । रहस रली सो करै किलोल ॥
 छह रित के फूले फल फूल । बैठक घनी बनी अनुकुल ॥३६॥
 मंदिर चित्रकारी सुं वने । कूप बापिका सरोवर घने ॥
 जल मे कमल विराजै भले । भवर गुंजार करै पट्टफले ॥३७॥
 जैसे दुग तिय कज्जल भरै । कमल ऊपर मधुकर गु जरै ॥३८॥
 बहुरि गिरि चढ़ि देखे देस । मन आनंदित भए नरेस ॥
 कपि पकडि आगे बहू बाधि । देखे राय नयन सो साधि ॥३९॥
 ए दीसैं माणस की भाति । कोमल रोम बगै सुभ गात ॥
 हैम सांकल जडाड पटे । घुंघर बाल सु वानर मढे ॥४०॥
 भीठें भोजन नाना भाति । उनह पुवाबैं सङ्घा प्रात ॥
 कियल गिर पै आच्छे भूप । सोभा दीवै सकल अनूप ॥४१॥

किशलपुर नगर

चौदह योजन ऊचा मेर । वंयालीस योजन का फेर ॥
 किशलपुर नगर ता ऊपर बसै । वन उपवन सोभा उलसै ॥४२॥
 कचन कोट रतन के जडित । सुरगपुरी की सोभा हरत ॥
 रतनसिला की देहली बणी । नयरी सघण बसै तिहां बणी ॥४३॥

श्रीकंठ वदमावति तिरी । रूप लक्षण गुण सोभा भरी ॥
 कीर्तिधवल लंका का नरेश । दिया श्रीकंठ किशलपुर देस ॥४४॥
 राजा राखी भोग्यै राज । जन श्रीडा के देखन काज ॥
 भद्रसाल बन सोभा और । नवन बन आनंद की ठौर ॥४५॥
 वनश्रीडा मुख देखे भजे । वंदति फिर आए घर भजे ॥
 कृति प्रपाठ सोमै सब भूमि । भेष बटा चिट्ठुं दिस रही भूमि ॥४६॥
 दोन्युं बडे मंदिर सत सने । सीतल पवन ताप ने हरे ॥
 इंद्रादिक क्षारी विष देव । बडे विमोक्ष आपणौ भेव ॥४७॥
 भ्रंपापति पर सोमै इंद्र । भजे नदीस्वर वीप सुरेन्द्र ॥
 श्रीकंठ मनमे उल्लास । बंदण निमित्त बरी चित आस ॥४८॥
 सब परिवार सेन्यां सग लेह । साजि विमोक्ष गगन धुनि देह ॥
 मानपोसर पर्वत के मध्य । विद्याधर की बली न कुछ ॥४९॥
 बहुत उपाय किए उस बेर । विद्याधर को लांच मेर ॥
 अपनी निदा लगपति करै । हीन पुण्य कब हूँ भवतरे ॥५०॥
 अधिक पुनीत देव गति लही । नंदीस्वर को पूजै सही ॥
 भव दीक्षा ल्यो इण बार । घरिहीं व्रत संयम ना भार ॥५१॥
 यदि देहो तजि देवगति घरूँ । नदीस्वर की पूजा करू ॥
 आपण किया दिगंबर साज । बज्रकठ पुत्र ने दे राज ॥५२॥
 बज्रकठ भोग वै चाम । मुख मे बीत गया कछु काल ॥
 चारण मुनि का वरसन पाय । पिता बात पूछी तब प्राय ॥५३॥
 चारण ऋषि बोले धरि ध्यान । पूरव भव का करी बलाय ॥
 भावीसता नगरी का नाम । बनिक पुत्र हूँ निवसै ताम ॥५४॥
 परिच्छत दुरदुषि दोउ वीर । रूपलक्षण गुण साहस वीर ॥
 परिच्छत कं मन उपज्या ग्यान । दुरिदुषि कूँ लक्ष्मी का ध्यान ॥५५॥
 आप जाय दीक्षा पद लिया । देही छोडि अवर गति गया ॥
 दुरदुषि करै सरावग धर्म । दया भंग के जानै भर्म ॥५६॥
 मिरगावती स्त्री ता गेह । सिंघनी लक्षण साक्षी देह ॥
 करकस वचन सर्व सो कहै । हया चरम तें परे ही रहै ॥५७॥
 लोटी क्रिया करै मन लाब । चिनचाणी चित्त को न सुहाय ॥
 दुरदुषि समझि ससार सरूप । तजि गेह भया दिगंबर रूप ॥५८॥
 मन बच काया साध्या जीव । देव भयो सीधर्म सुर जीव ॥
 परिच्छत जीव श्रीकंठ बुभया । दुरदुषि जीव इंद्रपद लीया ॥५९॥

इन्द्र विचारी यह मन मांहि । ए चारित्र दिलाया ताहि ॥
 तातै उत्तम दिक्षा पद लह्या । वष्यकठ का ससा गया ॥६०॥
 इन्द्रीवद कौ दीया राज । आपण किया युक्ति का साज ॥
 इन्द्रप्रभू इन्द्रमति मेर । समद समीर रविप्रभ और ॥६१॥
 रविप्रभ जोगीस्वर भया । राजभार अमरप्रभ दीया ॥
 अमरप्रभ परतापी खरा । या सम तुल्य न कोई नरा ॥६२॥
 त्रिकुट राजा लकापती । ता घर राणी सौभावती ॥
 तास गर्भ कन्या गुणवती । रूप लक्षण सोभा बहुवती ॥६३॥
 अमरप्रभ पं भेज्या विप्र । नालिपुंग लख दीया पत्र ॥
 गुणवती का मंगलाचार । भावो लका स्थौ परिवार ॥६४॥
 अमरप्रभु मन भया आनद । वाजिप्र बाजै सुख का कद ॥
 रहस रखी सु व्याहण चल्या । वेदी चोक सवारघा भला ॥६५॥
 किये चितेरे बहुत अनूप । सकल भाति के माडे रूप ॥
 वन उपवन के रुंख बनाय । कनक कलस चौखूट धराय ॥६६॥
 सुषट त्रिया मिल प्रधा चौक । कपि के चिह्न किये बहु थोक ॥
 भाई जान नगर के पास । साज बाज आग्योणी भास ॥६७॥
 वस्त्र आभरण रु मोती लाल । दीये तुरंग हस्ती सुषपाल ॥
 टीका करि जनबासा दिया । भोजन बहुत जान को किया ॥६८॥
 दई ज्यौंगार अति करि सनमान । फिर आये मडिप तिहि थान ॥
 सकल विभूत देखिए घरी । अमरप्रभु दृष्टि कपि चिह्न परी ॥६९॥
 कपि कु देखि कोप बहु करधा । सकल ह्रिदय भय बहुत भरधा ॥
 गुणवती डिग बंठी आन । अमरप्रभू वोल्या करि मान ॥७०॥
 इह तो मंगलचार की वार । बानर किम माडे इस बार ॥
 सब के मन मे चिंता भई । दुहु विरया क्या वण है दई ॥७१॥
 ब्रह्मथान मन्त्री या एक । जानै इनकी थापना बिसेष ॥
 उनने बात कही समझाय । इह कुल कुशल चाहिए राय ॥७२॥
 कुल पूजै हैं तुम्हारै कपि । श्रीकंठ नै इनाको थपि ॥
 तातै चित्र किये इस ठाय । इन दर्शनफल है बहु भाय ॥७३॥
 इतनी सुणत क्रोध घट गया । मंगलचार दान बहु दिया ॥
 पूछी सब ब्योरा सूँ बात । रोमाचिता हुवा सब गात ॥७४॥

करि विवाह गए फिरि धान । भोग भगन बहु सुख की लाँन ॥
 बहुविध सेन्यां लेकर चले । विजयाधर मन साथे भले ॥७५॥
 सब राजा नैं मानी धान । बुजा मांझि कपि के निसान ॥
 कपि के चित्र मुकट मे बने । वानर वसी प्रगटे बने ॥७६॥
 देश साधि सब अपने किये । बहु पुर नगर बसाए नए ॥
 कपिकेतु जनमिया कुमार । रूपवत शक्ति की उनहार ॥७७॥
 जोवन वस श्रीप्रभा नारि । हन्त्री सुख मानैं संसारि ॥
 आप तात जिणु दिक्षा लई । राजविभूति पुत्र ने दई ॥७८॥
 पालै प्रजा कपि ध्वज नरेस । प्रतिबल पुत्र भया सुभवेस ॥
 आप लिया संयम का भार । प्रतिबल को सोप्या ससार ॥७९॥
 गगन आनंद बेबर आनंद । गिरिनंदन तप सरवर नंद ॥
 अयोध्या जिनवर के समै । श्रीकठ कियपुर गर्मै ॥८०॥
 तीन सागर बीते जब काल । अमरप्रभु उपज्या भूवाल ॥
 ब्राह्मपुत्र जिनवर के पान पूजि चरण आयो नृप बाँस ॥८१॥
 याहि कुल भूपति बहु भये । काटि करम ऊँची गति गये ॥
 वानर वंसी विद्याधर कहै । बरनौ सकल पार को लहै ॥८२॥
 महोदधि रवि याही कुल भूप । विद्युतप्रकास राखी सुसरूप ॥
 और स्त्री विवाही बनी । पुत्र अटोत्तर सो गुण गुणी ॥८३॥
 किवलपुर का भोगवै राज । वानरकुली कुनिका काज ॥
 उत्तिम कुल इनका सुबिनीत । दया धरम सुं बहुते प्रीत ॥८४॥

अडिस्त

राजा भए अनेक नाम कहा लौं कहै ।
 विद्याधर गुणवंत सकल दुरजन दहै ॥
 करी जगत परिजीन आण सगलै बहै ।
 अष्ट करम कुं काटि मुक्ति को पथ गहै ॥८५॥
 इति श्री पद्यपुराणे वानर वंसी उत्पत्ति अतुल्य सधि विद्याधर

पंचम अंश

श्रीपई

लंका का राजा विद्युतवेग

विद्युतवेग लंका का बबी । श्रीवंश राखी कुल भरी ॥
 नारी वेणु विवाही बनी । ते सुख सोभा जाय न गयी ॥९॥

स्यों भतेवर बन में गए । ता बन सोभा देखत आए ॥
 वृक्ष ऊपर कपि बैठधा एक । राणी कु फल मारधा फेंक ॥२॥
 आया निकट बीजुरी देह । बहुरघो चढधा वृक्ष कं गेह ॥
 राय सुण्या राणी का सोर । लेंच बाण मारधा कपि ठोर ॥३॥
 श्वरण मुनी बैठा तप करै । बानर आय मुनी डिंग परै ॥
 श्री मुनि आर भ्यान का धनी । कपि ने देख दया ऊपनी ॥४॥
 कपि करण सुणाये पच प्रभु नाम । महोदय नाम सुर पैठाम ॥
 भवधि विचार एक भव तनी । आई सुरति क्रोध कपनी ॥५॥
 कपि देही ते भया हू देव । विद्युतवेग स्यु भाष्यो भेव ॥
 माया रूपी साजी सैन । जहा तहा कवि करै कुचैन ॥६॥
 विद्युतवेग सोचै मनमार्हि । कै वेचर कै भूषर आई ॥
 यासो जुध करै चढि वेत । बाधु सगली सैन समेत ॥७॥
 सेन्यां लेकर सनयुध चल्या । बहुधा बानर कीया हला ॥
 धरती पग चोटी आकास । भुल विकराल भयानक रास ॥८॥
 लबे दात भयदाई धरे । सूरवीर धीरज नही धरै ॥
 केई परबत लेय उठाइ । केई बिरल उठावै आय ॥९॥
 ले ले दौड़ै एक बार । मारि मारि कपि करै पुकार ॥
 विद्युतवेग नै मानी हार । गया जहा महोदय सुकुमार ॥१०॥
 देव विचारधा हिरदय भ्यान । धरि आये कीजे सनमान ॥
 राजास्थौ समझाई बात । मै वह बबर मारधा प्रात ॥११॥
 साध प्रसाद भया मै देव । चालो मुनि पै पूछै भेव ॥
 राजा देव गए मुनि पास । दई प्रकम्मा पूजी भास ॥१२॥
 सुर वेचर दोउ स्तुति करै । साधु संगति भव सागर तिरै ॥
 देव तणी गति बानर लही । पच नाम करण तैं सही ॥१३॥
 जो कोई सेव तुम्हागी करै । मन बच काया दृढ कर धरै ॥
 मुगति पथ सो लेय तुरन्त । तोरै जनम जरा का अन्त ॥१४॥
 भव प्रभुजो कहिए कछु धरम । नासै पाप मिलै पद परम ॥
 मुनिवर कहै धरम का भेद । असुभ करम का दुषा छेद ॥१५॥

मुनि का उपदेश

पच अणुवत आवक करै । महाव्रत जोगीस्वर धरै ॥
 कुरुर कुदेवां मानै नहीं ते । उत्तम कुल आवक सही ॥१६॥

जे मूरिल कहिए जग्यानि । मुमुक्षु कुवेचई सेवै जान ॥
 मरि कर होवै शूकर स्वान । छोटी बोरिण भ्रम बहु भान ॥१७॥
 नीची गति बहु भ्रमता फिरै । कबहु न ऊंची गति भै परै ॥
 जोनि लाख चौरासी संताप । कबहु होई कोहु भ्रम साथ ॥१८॥
 मूल न मिथ्या कीजे कोइ । जैन धरम ते सुरपति होइ ॥
 सूक्ष्म भेद कहे समुझाय । फिर पूछे पिछले परजाय ॥१९॥
 मुनिबर बोले म्यान विचार । बूढत जीव उतारै पार ॥
 कासी देस भील इक रहै । वनमे जाय जीव बहु दहै ॥२०॥
 सावत्यी नगरी का नाम । सुजसदत्त बाणिक तिहु ठाम ॥
 सुजसदत्त उपज्या बैराग । छोडे विषय दोष धरु राग ॥२१॥
 जाण्यो इह ससार भसार । दिक्षा लई सयम का भार ॥
 करि बिहार कासी बन गया । तिहा जाय मुनि जोग जु दिया ॥२२॥
 नगर लोक प्रायो सब जात । मुनिबर दीसैं मैले नात ॥
 भील जल्या था करण अहेर । वनमे मुनि देख्या तिहु बेर ॥२३॥
 पूरव भव का बैर विरोध । मन मांहि बहु प्राण्वा क्रोध ॥
 मुनिबर नैं सरसेती हत्या । बेही छोडि देवता भवा ॥२४॥
 मुनिबर भया सौधमें इन्द्र । सुरग लोक मे गया सुरवीन्द्र ॥
 भुगत प्राय लीया अवतार । तखिन केस तू' भया कुमार ॥२५॥
 भील मुवा नरक गति लही । बहुरबो तिरु छोटी गति सही ॥
 भ्रम्या जोनि बहुला दुख पाय । अब इह बादर हुवा प्राय ॥२६॥
 पूरव भव का इह संवध । उद प्रणाम कुगति का बध ॥
 सुणी बात ससा सब गया । दया भाव अन्तर्गत भया ॥२७॥
 सुकेस पुत्र कौ दीया राज । आपणि करघी मुक्ति को साज ॥
 महोदधि किवलपुर बनी । सुरगपुरी की सोभा बनी ॥२८॥
 भील अबर विद्याधर प्राय । महोदर बसौ निचल कराव ॥
 विनती करै दोय कर जोडि । सुनी प्रभुजी कहू बहौरि ॥२९॥
 तडतकेस लंका का भूप । दिक्षा लई दिगम्बर रूप ॥
 तुम्ह जसमे थी अधिकी प्रीति । सुकेस पुत्र बालक भयभीत ॥३०॥
 लंका का भी साधो काज । जब वह चेतैं तब दीज्यो राज ॥
 राजा सुणि बोलेसत भाव । सिध पुत्र कौ कहा उपाव ॥३१॥

जैसा बीज तैसा ज सुभाव । ऊनकूँ कहा क्षिपावै दाव ॥
 राजा मनमे किया बिचार । अतहपुर गया तिही वार ॥३२॥
 राणी सगली लई बुलाई । तिणि सूँ बात कही समझाय ॥
 इह विभूति सुपने की रिष । जाग्या कछु न देखै सिध ॥३३॥
 अबहु दिक्षा दिड सुं धर । काटि करम भवसायर तरूँ ॥
 सुखे वसन रोवै रसवास । जैसे बोलै वासरी नाद ॥३४॥
 कोकिल कंठ सब बोलैं नारि । क्यो जल सरवर रहै विनपार ॥
 तुम बिन हम क्यूँ जीवै राय । दासी होय बिन वै यह पाय ३५॥
 इह सुख छोड़ि धरो सन्यास । दिन दिन होइ रूप का नास ॥
 जनम अकारण देखै कौन । ए सुख परिहर लीजे मौन ॥३६॥
 पचामृत भोजन सुखवाम । हूवा नित होइ पराई आस ॥
 निरस सरस ले हो आहार । छह रितु सही परीसा मार ॥३७॥
 तुम सुखीवाने कोमल देह । भूमि पिलग तजि सोवो रोह ॥
 जाईस परीसा दुख की रासि । क्यो भरिही पिय बारह मास ॥३८॥
 बलि समझावै मन्त्री भाइ । भूपति ने सह परिजा जाइ ॥
 तुम सा राजा पावै कहा । तुम प्रसाद सकल मुख डहा ॥३९॥
 अब तुम राज करो विश्राम । चौथे आश्रम दिक्षा काम ॥
 राजा कहै सुणौ बित लाइ । इन्द्रिय विषय नरक ले जाइ ॥४०॥
 पुत्र कलित्र क राज विभूत । सबै बिनासी अंसी हुत ॥
 स्वार्थ रूपी जानहु वध । मोह करम बनि हुए अध ॥४१॥
 मन बज काय लगाऊ जोग । छाड़ूँ सयल भाति के भोग ॥
 प्रतिचन्द्र कुं राजा किया । आपण भेष दिगंबर लिया ॥४२॥
 श्रवण मुनीवर के ढिग जाय । दिक्षा लई भये मुनिराय ॥
 तप कर उपज्या केवल ज्ञान । धर्म प्रकास भया निरवान ॥४३॥
 प्रतिचन्द्र तहा भोगवै राज । सुख मैं हूँ सुत उपजै काज ॥
 किपर कुंवर अधक दीउ भए । रूपवत विषनां निरभये ॥४४॥
 प्रतिचन्द्र ने दीक्षा लई । राज काज दोऊ पुत्र नैं दई ॥
 दोऊ भ्राता भोगवै देस । सुख ही मे नित रहै नरेस ॥४५॥
 विजयाछै रथनूपुर नगर । अश्वनवेग राजा बल अगार ॥
 विजयसिंह पुत्र वलवत । बल पौरुष का नही अत ॥४६॥

भावितपुर नवरी का नाम । विद्यामंदिर राव । तिहथान ॥
वेगवती राणी सा बेह । श्रीमाला पुत्री कचन देह ॥४७॥

श्रीमाला का स्वयंवर

वाके निमित्त स्वयंवर रचा । छत्र सिंहासन बहुते सज्या ॥
देस देस के भूपति आय । बैठे अपनी अपनी ठाय ॥४८॥
राग रंग बाजित्र सुपने । मडपनल नरपति सब बने ॥
कन्या ने कर माला लई । राय सुभंगला कुंवरि सस भई ॥४९॥
लीन्ही छडी वाइने हाथ । सब राजा का कहै वृत्तान्त ॥
एक एक से चढता भूप । उनका कहा लौं वरनु रूप ॥५०॥
नाभस तिलक मामु ड कुंडला । विद्यासछ सुदरसन मला ॥
वज्रादरज और वज्राध । वज्रसिल वज्रपंजर साध ॥५१॥
भानुकुमार राजा चद्रान । नूपुरेन्द्र वज्रहंस बलवान ॥
विद्याधर नरपति तिहा बने । नामावली कहा लौं गने ॥५२॥

बूहा

देखे सब राजा आबली, कोई न आया दिष्ट ॥
अपणे मन भूपति सकल, मान भग चित भिष्ट ॥५३॥

चौपई

कन्या नई फिर माला लई । भूमि गोचरी राजा पै गई ॥
राजकुंवर देखे फिरि नैन । किंकट पास गई माला दैन ॥५४॥
माला देई गले मे डाल । बिजबसिध कोप्या भुवाल ॥
बानर क्यों आये इस ठाव । हमस्यौं करघा एवं का भाव ॥५५॥
इनसी कहौ जाय फिरि गेह । अबही मारि मिलाउ गेह ॥
राक्षस वखी किससुं कहौ । भागो बेग जो जिमा बहौ ॥५६॥
जाउ तुरत वन अंतर रहौ । बनचर पै भर राख्यो रहौ ॥
बोले किंकट अरु अंधकुमार । सुकैस कहै श्रेष्ठ के भाव ॥५७॥
तुम पंथी हम लंकापती । किंकटपुर की सोभा भती ॥
जैसे कौवा उडे आकास । तैसें तुम पछी बनवास ॥५८॥
बिजसिध की आज्ञा भई । सेना सकल एकठी गई ॥
कोई छाय रहे असमान । कोई घेर रहै उद्यान ॥५९॥

द्वार बार घेरे चहु ओर । भोजि न सकई किस ही ठोर ॥
 अजहूँ इनको कीजे दूर । घर आए मारें नहीं सूर ॥६०॥
 इनकुं इहां ले आया कर्म । मारो अब वमावो अर्म ॥
 किषक नरेन्द्र की आग्या पाय । सईन्या सिमिट भई इकठाइ ॥६१॥
 विद्या साधी सनमुख भए । बलिघारी आगै हूँ गए ॥
 विद्याधर भूमि आकास । भूमिगोचरी भूमि निवास ॥६२॥
 मैंगल सुं मैंगल चोदंत । पैदल सु पैदल कूर्मंत ॥
 जे ते हैं विद्या के बान । दुहुधा छूटें बेह समान ॥६३॥
 संची तुपक तणी भइ मार । विजयसिंह बाइया कुमार ॥
 अघक सेती कछा हकार । रे बानर अघ डारो मार ॥६४॥
 अघक कुंवर गही तरवार । विजयसिंह मारधा तिहू बार ॥
 विद्याधर कीये भयभीत । सुकेस किकचक अघक की जीत ॥६५॥
 किकर अस्वन बेग पैं गया । जयसिंह कुं भुठा कछा ॥
 राजा सुणि छाई पछार । सेवक घणै करै उपचार ॥६६॥
 सीतल औषधि बीतनवार । बड़ी बार मे हुई संभार ॥
 तब कर उठ्या मार ही मार । सेना चाली सकल अपार ॥६७॥
 आदितपुर कौं घेरषा आइ । राक्षस बानर बसि न रहाय ॥
 मनमे सूर तणैं आनन्द । देखै किकर सूरिज चद ॥६८॥
 चाकू बिष के देखें देव । श्रीमाला समझावैं बेब ॥
 तुम हो तीन बहै खेन हैं धनी । जै तुम छिपोरि कल हनी ॥६९॥
 बे फिरि जाहि तब करो विवाह । मेरा बचन मानौ नर नाह ॥
 अघककु वर कहै सुनि बैन । स्थालन देखैं मृगपति नैन ॥७०॥
 तुम नृप बैठि रहो घर मांहि । सेना सब मारों पल मांहि ॥
 विद्यामंदिर अस्वबेग सौं कहै । नीत मृजाद तुमीं ते रहै ॥७१॥
 जा गल कन्या डारै माल । सोई कन्या का भरतार ॥
 विजयसिंह ने माडी राखि । तातै भई उपाधि अपार ॥७२॥
 अस्वबेग के हिरई दाह । पुत्र बैर राखैं मन मांह ॥
 बोले भूप दिखावो मोहि । मेरा पुत्र उन मारा द्रोह ॥७३॥
 क्रोध लहर की उठै तरंग । राक्षस बानर कुं चाहै मंग ॥
 अस्वबेग सेन्यां मे गया । किकच राय के सनमुख भया ॥७४॥
 बाकू मोहि दिखावो आन । मेरा पुत्र हृष्या है जान ॥
 विद्यावाहन किषधराय । भयो जुष वरम्यु नही जाय ॥७५॥

अंकककुम्भर भए सांभहि । मारधा पडनैं श्रीवा बही ॥
 पडयो नू नि तब छुटे प्रांन । किकंभराय तिहां पडूंष्या प्रांन ॥७६॥
 गही सिखा परवत की एक । अस्वनवेग कु मारी फेंक ॥
 राजा गिर बोले तैं परधा । सेवक उठाय स्वार तहा करधा ॥७७॥
 बडी बेर मे भई संभार । बौडे बडधा गहुँ हथियार ॥
 रे वानर प्रब फिरि तु बेत । प्राब फेर सुभ भाकं बेत ॥७८॥
 मेरा वहगा बख सरीर । अईसा कौन जोबा बरवीर ॥
 जाका पाव मो उपर बचं । रखा संग्राम नीति कै बचं ॥७९॥
 किकभ राजा दूई भात । झुज्या सुनि कै कप्या गात ॥
 लाय पछार घरनी पर गिरधा । बडी बार मे फिर सभरधा ॥८०॥
 उंन पापी बालक को हया । बाकं चित्त न छापी दया ॥
 वह पहलै जो मारता मोहि । आता दुख भया मम द्रोह ॥८१॥
 वहीत बिलाप करै तिह बार । मुकेस कही बात सुवार ॥
 इसका था इहां लौ सनबंध । मोहि करम दुरगति का बंध ॥८२॥
 ग्यानी उत्तम करै न सोक । रण जुमै जस होय त्रिलोक ॥
 बहुत आंति निवारधा दुख । जो प्रब बचलो तो पावो सुख ॥८३॥
 अस्वनवेग बख की देह । सेनां बनी बहूत है तेह ॥
 जासु संवर होय न कह । चलो वेग तो सुख कौ लहुं ॥८४॥
 जीवैगे तो फिरि कै जुघ । चलरौ की परकासी बुघ ॥
 श्रीमाला करि गुप्त विबाह । बैठि विमारा ले चाले ताहि ॥८५॥
 मंडलीक पुत्र सहस्र सुसार । उन पाछे दवरा तहैं बार ॥
 विद्युतबाह समझावै वात । भागैं को पीछा न कोजे तात ॥८६॥
 ए इतने सब करै विचार । वे पहुचै लंका सुमंभार ॥
 लंका किषपुरी का राज । अस्वनवेग का साध्या काज ॥८७॥
 रितु सांवन महा रवनीक । बोले मोर कबीहा पीक ॥
 अस्वनवेग अंदिर पै बडधा । देक्या अन्नहर मन सुख बडधा ॥८८॥
 बल्यो पवन बे पटल फट गये । राजा संसय बहुविध गए ॥
 ताहि देख उचख्या बैराम । राजबिभूत देख सब त्याग ॥८९॥
 सहस्रार को दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ॥
 अवन भुनी पै दीप्या लई । बारहै विच तप सावै गुणमई ॥९०॥

नरपति विद्याधर एक दिवस । पुर लंका में कीर्तुं परवेस ॥
 उपसभ भाव देस फिरि आइ । सुकेल किंकष का संसा जाइ ॥६१॥
 किषंधराय परवत पर गया । श्रीमाला राणी संग भया ॥
 किषंधपुर बसाया देस । सुखसौ राज पालें सुनरेस ॥६२॥
 दोय पुत्र भए ता गेह । तूर्वरज क्षत्रज कंचन देह ॥
 पुत्री सूरज कमला भई । कमल जेम सोभा तमु दई ॥६३॥
 राजा मेर मेघ के बनी । पंचाक्षी राणी सु जोडी बनी ॥
 मृगव दमन पुत्र सुवत । रूप लक्षण सोभा सौमंत ॥६४॥
 एक दिन कुंवर गया या काम । देखी सूरज कमला नाम ॥
 अइ पिता सौं बिनती करी । सूरज कमला विवाही तिरी ॥६५॥
 राजा मेर किंकष पुर गया । किषध राय सौं विनैवत भया ॥
 प्रभु भौ परि कृपा तुम करो । सूरज कमला भग पुत्री बरो ॥६६॥
 किषध राय नें पुत्री दई । लिख्यी लगन सुविबाई भई ॥
 रहस स्त्री सौं हुवा विवाह । श्रीडा गमन बहु तो उछाह ॥६७॥
 सुकेल राम इंद्राणी तिरी । करशकु ब पुर नगरी करी ॥
 मविर भजे सुहावन छन । छाया सीतल कही न छूप ॥६८॥
 बाग बगीचे सोमैं बने । चैंप्याले श्रीजिवर के बने ॥
 नित उठ दरसन पूज्य करे । जिनबाणी हिरदं मे धरे ॥६९॥
 अनुक्रम तीन पुत्र भवतरे । रूप लक्षण करि सौमैं खरे ॥
 प्रथम माली सुमाली और । मालिवान ते सोमैं ठोर ॥१००॥
 हेमपुर नगर व्योम भूपती । भोगवती राणी सुभमती ॥
 चन्द्रमती पुत्री भवतरी । माली सौं विवाही सुभ धरी ॥१०१॥
 प्रीतकर राजा प्रीतकर देस । प्रीतवती राणी गुणवेस ॥
 प्रीति पुत्री सुमाली कुं दई । बहुत आदर बघाई भई ॥१०२॥
 कनकपुर नगर कनक है देस । कनक नरेस राणी किशर वेस ॥
 कनकावली पुत्री ता भई । मालीवान कुंवर को दई ॥१०३॥
 माली कुंवर पराक्रम धरै । लंका किषधपुर श्रीडा करै ॥
 माता पिता कहै समझाय । लंका किषधपुरी मख जसम ॥१०४॥
 पूछें कुवरन सौं बिरठात । किह कारख बरबुं हूत जात ॥
 पिछली कथा कही सब बात । उछ्या क्रोध रोमसखी गात ॥१०५॥
 कहे कि अब लंका मैं जाव । करि संग्राम लेखू सब डांड ॥
 तात मात समझाव वैन । निरधात राजा कैं बहुतै सैन ॥१०६॥

तुम बसक वे हैं बहुबली । जसौ सकल कुम्ह की बली ॥
 बासो सरभर कंस होय । सम्राज करो समकाज तोहि ॥१०७॥
 माली कुंवर कहै सुनि बात । देखिज अकहुं करिहुं शत ॥
 निरभास भूष कौं मारुं ठौर । नकाराज मैं केहु बहोर ॥१०८॥
 इतनी कहि लेन्य सब जेई । दोग्युं अज्ञा संत पुण्यजई ॥
 पिता भया नयन असवार । निजा बान्न कीया संभार ॥१०९॥

माली राजा द्वारा लंका पर आक्रमण

इह राज किषंदपुर गई । किषंदपुरज असवारी हुई ॥
 आए सुकेस रूप के पास । सूरवीर मन बहुत उत्साह ॥११०॥
 आसि पासि के नरपति बने । बान्न घारी बहुते बने ॥
 उड़ी रवण सन्या आकास । बेरी लंका जुष की आस ॥१११॥
 बाजै बजै भुभाज कर नाइ । निरघात राय सब सैन्य बुलाय ॥
 कोप चढा जो को हो बली । महुं सुभट माने मन रली ॥११२॥
 नेजा बरखी धनुष तरवार । भुभं सुभट न लागी बार ॥
 दंती सो दती चोंवत । टूटे सूँड मस्तक दहत ॥११३॥
 निरघात राजा हस्ती पलाय । माली कुंवर पै पहुँच्या आन ॥
 मारि लज्ज रथ डारी तोडि । माली कुंवर संभल्या बहोरि ॥११४॥
 लीघो लज्ज हस्ती पै मारि । गहै दंत चढिया तिहु बार ॥
 विद्याधर मारधा निरघात । राक्षस बसी जीते प्रात ॥११५॥
 भाजे विद्याधर के लोग । बहुत उनक मन बाढा सोय ॥
 फेर लिया लंका का राज । भया सकल मनबंछित काज ॥११६॥
 बहुरि गये ते क्षिप्रम बेस । सहस्रार मान्या उपदेस ॥
 जित तित के जीते नृपाल । फेर बसाए नगर बिसाल ॥११७॥
 फेरी आन्या आरुं घोर । भावे अपने नगर बहोरि ॥
 सुकेस किषद ने दीसा लई । राज विभूति सु तौको दई ॥११८॥
 राजसवंसी सका का राज । बानर बंसी किबिबपुर साज ॥
 विजयारथ रथनूपुर देस । सहस्रार नरपति असेस ॥११९॥
 मानु सुंदरी राणी पटवनी । चौसठ कला रूप अति बनी ॥
 सुखमें गरम भया सुभ जरी । दिन दिन देह दुरबल होइ तिरी ॥१२०॥
 नृप पूछै राणी सौं बात । काहें तुच्छ होइ तुम गात ॥
 तुम की कौन बात का दुख । जो तुम बाहीं मानु सुख ॥१२१॥

राणी कहै सुनुं प्राणपती । इंद्राणी से सुख चाहौ थिति ॥
 राजा बचन कहै घरि ग्यान । हम विद्याधर देव समान ॥१२२॥
 पातर आदि गुनी जन घने । नाचै गावै सुख सब बनें ॥
 नो महीने बीते सुभ घरी । भया पुत्र मानी लीचरी ॥१२३॥
 रूप लखन ससि की जगहार । इंद्र नाम जनमिया कुमार ॥
 ज्यौं दुतिया ससि कांति कौं बढे । ज्यो बालक पल पल मे बढे ॥१२४॥
 जोवन बसें विवाही नारि । चाली सहस्र किन्नर जगहार ॥
 और आठ व्याही पट घनी । इंद्राणी सम सोभा बनी ॥१२५॥
 जोजन एक को उचो गेह । सुरगपुरी सी सोभा देह ॥
 पचीस सहस्र गुंनी जन लोच । निरत करै गावै बनु भोग ॥१२६॥
 पच सबद बाजै दिन रयण । तासु सबद सुरि सोभा बैन ॥
 हय गय विभव भंडार असेस । माने सब भूपति आदेस ॥१२७॥

बूहा

सुखमें दिन बीते घने, करै प्रजा सुख बैन ।
 सुखने दुखने देखिये, निस वासर भरि नैन ॥१२८॥

चोपई

माली भूप लका का बनी । तिसकी आन माने सब दुनी ॥
 देस देस ते आवै भेंट । डरपै भूप न आवै हैठ ॥१२९॥
 इंद्रकुमार प्रतापी भया । माली का लोग निकाला दिया ॥
 अपने लोग तिहां बैठाये । नरपति मिले इन्द्र सौ आय ॥१३०॥
 माली राय बात यह सुनी । भया कोप कापी सब दुनी ॥
 विजयारघ को दहवट करो । इहे म्हारी चरणी तल चरौ ॥१३१॥
 सेन्या सकल लई नृप टेर । चढ्यो विमान न ल्यायो बेर ॥
 रग रग के बने विमान । चले सुभट छाया असमान ॥१३२॥
 माली सुमाली सुमालिबान । सूरज रज अंबर रज जान ॥
 और बहुत भूपति सग चले । पहिरि आभरण बहुतें भले ॥१३३॥
 विजयारघ गिरि पहुँचे जाय । दुरजन को मारै अब धाय ॥
 भई रयण तिहां उत्तरे लोग । सुपना देखि मन बाढा सोय ॥१३४॥
 कुरितु तणा देखिया मेह । बिजली देही पडि बहु बेह ॥
 अग्नि जलै धुवा तिहा धना । रौबें मंजार स्वान सिर घुना ॥१३५॥

दिसा दाहिनी गदहा पुकार । सूके रुख की कवा चुंब मार ॥
 सुमाली बड़े भ्रात सो कहै । यह सुगुन तैं चिता दहै ॥१३६॥
 अब जो फेर चलो तुम वीर । तो काहू कीं होय न पीर ॥
 हम लंका का भोगवै राज । जो फिर चलैं तो सुघरै काज ॥१३७॥
 माली बोले सुंणि भो भ्रात । जो अब फिरैं तो लज्जा जात ॥
 देस देस में हुवा सोर । अब सुंचंतो लागै घोर ॥१३८॥
 घोर जे सुभट आए हम सग । ते कैसे फिरि हैं करि भंड ॥
 डरै जिको पाछा फिर जाउ । जीवत बेत न छोड़ुं ठाव ॥१३९॥
 इतनी कह करि कीनु दीर । घास पास तैं माची रीर ॥
 देस परगने लूटे धने । सहस्रार राजा हम सुनै ॥१४०॥
 बोले भूप इंद्र सो कहो । वाका वचन वेग तुम गहो ॥
 गये लोग इन्द्र की ठोर । करैं वीनती दो कर जोर ॥१४१॥
 माली नाम लका सुनरेस । चढ़ि कर आया है तुम देस ॥
 घास पास के लूटे गाव । बेरा है रघनूपुर ठाव ॥१४२॥
 सब विरतात सुन्या जब इन्द्र । सूर सुभट मन भया आनद ॥
 ज्यौं मंगल भाता मयमंद । केहरि छाह देखि भाजत ॥१४३॥
 जब लग मीकूँ देखीं नाहि । तो लूँवे गरम मन माहि ॥
 राक्षस वानर मार्क ठोर । पड़ी आय लका मे सोर ॥१४४॥
 सेन्या सगली लई बुलाइ । देस देस के नरपति घाय ॥
 बिछा जेती बी मंडार । सहु वा समय लई संभार ॥१४५॥
 सिलह सयोग बाधि हथियार । चले सुभट तिहा लगी न बार ॥
 अस्व गयद धने असवार । हस्ति पै चढ़ि इन्द्र कुमार ॥१४६॥
 चामर छत्र महा उद्योत । सूरज मुखी रतन की जोत ॥
 सूर सुभट दोऊ दल जुटे । पाछे पगन कोउ नहीं हटे ॥१४७॥
 भुमके स्याम धरम के काज । जिनकी छत्री धरम की लाज ॥
 मंगल सेती मंगल भिडे । पैदल सों पैदल जुद्ध करैं ॥१४८॥
 माली सुमाली मालवान । पाछे कु पंग ग्रहरे जान ॥
 सूरज रज अजर रज आई । राक्षस बंसी भया दिठाइ ॥१४९॥
 फिकै समट सभासे बांन । दुरजन भारि दिये चमसान ॥
 इन्द्रकुमार कोप्या करि तेह । राक्षस बादर मिलाऊं वेह ॥१५०॥

आप कुंभर तब सनमुख भया । बहुत जुध दोड़ भूपति गया ॥
 परबत की सिल लई उधार । अउघां पड़े जो घनहए धार ॥१५१॥
 दोऊ भूपति मुष्टिका लरें । कातर लोग देख सब डरें ॥
 तोड़ न मानें दोउं हार । बान पत्र लखि मारी डारि ॥१५२॥
 तुं बालक अजहू धम्यान । मानु कुवर रीस मति ठान ॥
 गही कर डारधा चक्र फिराय । मानी ग्रीव पड़ी भुवि आय ॥१५३॥
 सुमाली मालिवान दोऊ वीर । भाजि गए सब लका तीर ॥
 बैठि बिमान चले बे गेह । सोण लहरि ह्वै इन्द्रन की देह ॥१५४॥
 इन्द्र तबै छोड़े बहु बान । ए राखस पावै नही जान ॥
 मंत्री तबै समझावै बात । भाग्या कै पीछै कहा जात ॥१५५॥
 मंत्री वचन सुणो तिहु बार । उनकी छोड़ दई तलवार ॥
 वे पढ़वे लका मे आन । राणी रोवै करै बलान ॥१५६॥
 माली के सुण बरनै लोग । सब परवार मैं बाडधा लोग ॥
 सुमाली मालवान भय करै । इद्र भूप भय चिता घरै ॥१५७॥
 बहोत भाँति समझाया परिवार । गए अलका पुरी मझार ॥
 जीता इन्द्र राजा महाबली । जाचिक बोले बिरदावली ॥१५८॥
 कौतिक देख सराहै दुनी । परियन भाऊ बडाई घनी ॥
 मात पिता के बदे पाय । बहुत भाति के विनय कराय ॥१५९॥
 आनद मन हुआ हुल्लास । आन्या इन्द्र फिरी चहु पास ॥
 चक्र घुजा आदित्या तिरी । ससी पुत्र भया ता घरी ॥१६०॥
 लोकपाल इन्द्र का भया । सर्व जीव की पालै दया ॥
 पूरव दिसा उद्योतपुर नगर । कातिमन भूप लोकपाल अगर ॥१६१॥
 मेघरथपुर महाबली भूप । परणा नारी महास्वरूप ॥
 बरुण नाम पुत्र ता गेह । लोकपाल तीसरा करेह ॥१६२॥
 नगर मेघपुर पच्छिम देस । रहै तिहा सूरज नरेस ॥
 कनकावली का पुत्र नरसेर । बाकुं थाप्पा अंबारी डेर ॥१६३॥
 काचनपुर पूरव दिसि ओर । बला अगनि नरपति सिंह ठौर ॥
 श्रीप्रभा राणी पट घनी । चद्र कर्म पुत्र सु सुनी ॥१६४॥
 नाम धरत असुर सुर गेह । और दस दिगपाल थापेहि ॥
 जष्य दीप किन्नर किन्नरा । गंधर्व राग सुतावै क्षरा ॥१६५॥

प्रस्व अस्वनी वईस्वानर । देव समान सेव विद्याधर ॥
 कीर्तिक मंगल ध्यौन बिह मूप । आनंदवती रांणी सु अनुप ॥१६६॥
 तास कन्यां दोष गर्भई भई । कोकसी कैकसी गुंणभई ।
 संभव राजा कै बिधवा पुत्र । कीकसी दई विवाह संयुक्त ॥१६७॥
 बइस्वानर सौ इह नै बई । मंका राज बिस्वानर है दई ॥
 सुमाली मालिबल जलका रहे । मन मैं जय दुरजन का रहे ॥१६८॥
 सुमाली कै पुत्र इह भया । रूपवंत मिथ्या मिश्रवा ॥
 दिन दिन बढा समाहा भया । जन पीरिय मिथ्या मिश्रवा ॥१६९॥
 श्री जिनवारी निश्चै करे । तीन काल क्षमाधिक करे ॥
 लका घुटक राति दिन बनी । छूटा पाव पुरषारथ हनी ॥१७०॥
 जो हम अपना देस न लहै । इह चिता निशि वासर रहै ॥
 इह सोच बिजयारथ गया । तपसी भेष बनवासी भया ॥१७१॥
 विद्या साधी मन बच काय । कैकमी पिता की आम्हा पाय ॥
 विद्या निमित्त गई सुन्दरी । रूप लक्षण अवला गुण भरी ॥१७२॥
 विजयारथ पर पहुँची तिहा । रतनश्रवा तप करता तिहा ॥
 वाके निकट कैकसी आय । करे रुदन अवला बहु भाय ॥१७३॥
 रतनश्रवा बोलै तज मौन । साची बात कहौ तुम कौन ॥
 कै किछर कै हो अपछरा । कारण कौन रुदन तै करा ॥१७४॥
 कोल मुख व्याधा है तोहि । अब तुं बरस सुणावहि मोहि ॥
 कखं दूरि तेरो हुल भाजि । मन का भेद कहौ सब भाजि ॥१७५॥
 व्योमविद राजा मम तात । आई थी मुनिवर की जात ॥
 रतनश्रवा विद्या सिध भई । मनकी इच्छा पूरण भई ॥१७६॥
 कह इक नगर वसी इह बार । मस्या नगर सुख हुआ अपार ॥
 कैकसी सौ विवाह सिध करी । भोग सुगत मे बीसै बडी ॥१७७॥
 मंदिर सुरमपुरी सम जानि । सेज्या सोमै सुख की कर्मि ॥
 कैकसी मन इच्छा इह भई । होई पुत्र मेरे जे बई ॥१७८॥

तीन स्वप्न

सुख में सयन करे ही रयन । सुपन तीन देखे सुख छैन ॥
 किंचित रात रही पाछली । एक सुदूरत विरयां बली ॥१७९॥
 प्रथम सिध गर्जा रव करे । हस्ती हवै बद्ध मन धरे ॥
 दूजे मैंगल देख्या बली । सरोवर मे वह करता रली ॥१८०॥
 कमल उषारि लिया सुख माहि । मानूँ मेरे मंदिर बाहि ॥
 तीजे देख्यो पूरण चन्द्र । सुपने देख भया आनन्द ॥१८१॥

जागी त्रिया हुआ परभात । पति सों जाय सुनाई बात ॥
 सुपिने साभलि भया उल्लास । विघनां लुप्त मन पूरवँ भास ॥१८२॥
 होइसी पुत्र तीन गुणवत । तीन धन के पति सोमन्त ॥
 मुनि प्रिय बचन अधिक सुख पाय । अबल बाँठि दई बहु भाइ ॥१८३॥
 प्रथम स्वयं तैं सुर इक जया । आई गर्भ स्थिति वासा लया ॥
 मनमें गर्व करै कैकसी । प्रिय सुं बचन कहै करि हंसी ॥१८४॥
 हम सेवै श्री जिएके पाय । हम मन रहै क्रोध किहि भाय ॥
 दपति गए मुनिवर के पास । नमस्कार करि पूछै तासि ॥१८५॥
 स्वामी कही धरम समझाय । चित्त हमारा किम गरबाय ॥
 बोले मुनिवर म्यान बिचार । प्रतिकेशव तुम गर्भ अवतार ॥१८६॥
 वासम बली न दूजा और । भूचर वेचर सेवै कर जोड़ि ॥
 दोय पुत्र होसी ता पछै । केवल पाव मुक्ति मे गर्मै ॥१८७॥
 मुनि वाली मुनि आया गेह । अदभुत सुख पाया ता गेह ॥
 जब बीते पूरे नव मास । पुत्र जनम का भया प्रकास ॥१८८॥
 दीन दुखित नैं दीना दान । सब ही का राज्या सनमान ॥
 बाजै बाजिब नाना भाति । सबद सुहावने लागे गात ॥१८९॥

रावण का जन्म

दुतिया शशि जु बर्ष कुमार । रावण रूप रवि तेज अपार ॥
 दुजा कु भकरण सुत भया । चद्र नखा रूप गुण धीया ॥१९०॥
 तीजा भभीषन हुआ कुमार । मानूँ पूनम शशि उनहार ॥
 दशानन कुमार महाबलवन्त । इन्द्र नूप छोटे चित्त जोवत ॥१९१॥
 सुपने मे गज दाबइ आय । जाग्या कछु देखै नहिं राय ॥
 दामिन कडकझाय कै मिरै । लोथि आय धरणी पै परै ॥१९२॥
 और घरां हूँ उलकापात । ए चित्त इन्द्र देखै दिन रात ॥
 कु भरै इक दिन डबा उधारि । काढ लिया बिछा का हार ॥१९३॥
 पहरी तुरत गले मे माल । दरसन सोभण लगे विसाल ॥
 इह था कुल बिछा का घरा । पूजा करै ते छूँते हरा ॥१९४॥
 पु निर्वत पहिरथा गल भाँहि । पुण्य प्रसाद भव ध्यापै नाहि ॥
 कैकसी सूती महल सत खनै । सेज्या तैं सुख बिससै अति घने ॥१९५॥
 दसानन कुंभर सौवै था पास । वदनदति जोति परकास ॥
 चद्रमा की सोभा तन काँति । दसन जोति बालक बहु भाँति ॥१९६॥

मले हार सहज में डारि । दस सिर सोमै राजकुमार ॥
वैश्व विद्याधर उत्तरे । सेना तापि नवन सब बेर ॥११७॥

रावल की विज्ञाता

बसे जात हैं अपने नाम । बहुत नाति के घुरै निसाव ॥
दसानन सब पूछी जात । कवख भूप इह किह मुर जात ॥११८॥
कहा बसै कैसा प्राकर्म । कुब्जा न्वात कैसा कुल धर्म ॥
इन्द्र भूप विजयारथ धनी । करै सेव राजा बहुकनी ॥११९॥

माता का उत्तर

वैश्ववा भगनी सुत मोहि । सुणी पुत्र समझाऊं तोहि ॥
लंका छी भ्रमहारी भान । अबहू राज करै बलवान ॥२००॥
घने किये तुम तात उपाव । कछु न बखता देख्या दाव ॥
अब तुम उपजे तीनों वीर । कब जीतोगे साहस वीर ॥२०१॥
महुरै मनसा ऐसी रहै । कवण समै फिर लंका रहै ॥
सुणी बात कोपियो कुमार । हू लंका जीतूँ इह बार ॥२०२॥
सुंणि माता समझावै बाल । तुम हो सुत लख वय सुकुमाल ॥
इतनी सुणि परबत पै कूदे । मारि जात छाह्या पद पूँव ॥२०३॥
भारी सिला एक लई उठाइ । ताड वृक्ष कर लिया उठाइ ॥
जो अब फँकुं तो पहुँचै लंक । वैश्व राजा मानै संक ॥२०४॥
विजयाई बिर उलट कै धरुं । इन्द्र सुषा ले प्रसयस करुं ॥
मात पिता उठ चुंबई सीस । बहुत प्रकारेँ दई असीस ॥२०५॥
पहिले विद्या साधउ मली । पीछेँ पूरो मन की रली ॥
मात पिता की आग्या लई । तीनों भाई सब गुण मई ॥२०६॥
नीम बन हुई विद्या की ठाठ । भयदायक नही मानुष नाठ ॥
अजगर सिंह देख मन डरै । वा बन मे वीरज को धरै ॥२०७॥

विद्या सिद्धि

ये पुनिर्वत सिला इकु देखि । बैठा तापस का धरि जेध ॥
धरया ध्यान विद्या सिध धई । अन्नदान प्रथमई लई ॥२०८॥
इच्छा भोजन पावै नीर । है गुन है या विद्या तीर ॥
दूजा ध्यान धरया लउ लाइ । आया यज्ञ श्रीठा के भाइ ॥२०९॥

यज्ञ द्वारा परीक्षा

देख तीन तपसी बहु रूप । इन सम कोई नाहि सरूप ॥
जज्ञ परीक्षा इनकी करै । कैंठे ध्याव वीर तन बरै ॥२१०॥

देवानंगा इक आतुर धनी । रूपवंत लावण्य गुणवनी ॥
 नाई नीत बजावे बीण । गई जिहाँ तापसी लीन ॥२११॥
 ताल पखावज दु दुभी करे । निरत करत मुनि जन मन हरै ॥
 कोई निकट बैठि इम कहे । किम बालक बेही दुख सहै ॥२१२॥
 मन मानैता भुगतो भोग । उछली बय क्यों सहौ वियोग ॥
 तुम कारखे हम किनर चई । तुमारी तपस्या पूरखे चई ॥२१३॥
 जहां तुम बली चलै तुम साथ । तुम ही प्रभू भनाथों के नाथ ॥
 एहँ बैठे काठ समान । मनमे कछु बन भावै भान ॥२१४॥
 तब वे किन्नरि वसन उतारि । लपटी इनसो ज्यो गलहार ॥
 कोई देह चुटकिया लेइ । कोई पांव दडवडी वेइ ॥२१५॥
 किन्नरी बहुत दिखाए भाव । इनका ध्यान रह्या धिर ठांव ॥
 उनको चित्त न क्यों ही टरै । विलपी भई अप्सरा फिरै ॥२१६॥
 धाय कही यक्षसो सहू बात । उनका चित्त न बलै किहू बात ॥
 आप यक्ष धाया उन पास । मांगो वर पुर वो मन आस ॥२१७॥
 तोड़ न बोले तीनू बीर । ठाढ़ा कोरै यक्ष शरीर ॥
 निज सेन्या नै दे उपदेश । सब मिल करो भयानक भेस ॥२१८॥
 वेग जाइ तप टारो आज । इनका पूरखे होइ न काज ॥
 इतनी सुरिण बितर सब जाब । दई परीस्या नाना भाति ॥२१९॥
 कोई रूप सिंघ का करै । बहुत दहाड़ै देख्या मन डरै ॥
 कोई रूप सु करिए एव । अजगर भेस धरै बहु वेध ॥२२०॥
 कोई सर्प होई तन डसै । तो उनरो मनू नहु का खिसै ॥
 वह औरउ संन्या करी मलेच्छ । कहै पुहपपुर की मन एच्छ ॥२२१॥
 रतनसरवा कुं बाधन बलै । स्यू कुटंब कहि ल्यावै भले ॥
 जो तुम बहुत सूर वीरता धरौ । हमसौं जुष वेग तुम करौ ॥२२२॥
 ए तापस बोले नही बोल । ध्यान लहरि मे करै किलोल ॥
 ऐसे कह करि भागै बले । माया रूप चिह्न करि भले ॥२२३॥
 रतनश्रवा कंकसी के हाथ । भाता बाधे उनकै साथ ॥
 ले आये विमान मभार । भात पिता बहु करै पुकार ॥२२४॥
 तुं दसानन कहिए बलवंत । हमारा होत आशु का अंत ॥
 ए मलेच्छ हम दे अति प्रसन्न । तुमते टूटै हम संयस पास ॥२२५॥

तू होवना दत्त सीस का बली । एक सीस का चंद्रयहूली ॥
 तुं कहतो प्रथ्वी बसि करीं । झूठ कहत कुछ काम न करी ॥२२६॥
 जनमतही तु मरि क्यूं न गया । हमरी तोहि न आधी दया ॥
 भानु कुमार तूं असो सुभट । तुझ आगस हम पावै कष्ट ॥२२७॥
 तैं राबल पोरिष कहा गया । तेरें चित्त न धाई दया ॥
 जो तुम देखो भौह चढ़ाय । सब मलेच्छ भसम हो जाय ॥२२८॥
 बभीषण सों कहे ए बैन । तुम बैठे हम होंय कुचैन ॥
 तेरा नाम बभीषण कहै । दुरजन दुष्ट न पल मे दहै ॥२२९॥
 तुम देखत हम होई सताप । दुखे पावै हैं माई बाप ॥
 जो तू हमें छुड़ावे नही । बल पोरिष तुम हारपा सही ॥२३०॥
 बहुरि गहै नागो तरवार । दपति को मारपा तिहुं बार ॥
 सीस काटि कर आगें धरै । तउव न ध्यान उनका टरै ॥२३१॥
 जे जोसीम्बर राखें ध्यान । निश्चै उपजै केवलज्ञान ॥
 जे चाहै मसारी रिष । मनवाञ्छित की पावै सिष ॥२३२॥
 धरम जिनेस्वर का दिठ धरै । सरब जीव की रिछपा करै ॥
 तब जिया पावै मारम मोक्ष । भेटै जन्म जरा का दोष ॥२३३॥
 विद्या निमित्त हण निश्चै बरी । विद्या सकल प्राय कर बरी ॥
 दसानन आरह सै विद्या लई । जिनके गुण का पार न कहीं ॥२३४॥
 जो विद्या का करीं बखान । पठत सुणत कछु भ्रत न ध्यान ॥
 भ्रम करन विद्या लही आरि । तिनके गुण बहु अगम अपार ॥२३५॥
 विद्या चतुर बभीषण लई । बहुत भाति सुखदायक भई ॥
 जो बितरि आए थे तिहां । ते आत्मपण आपै वहां ॥२३६॥
 नमस्कार करि सबें पाय । सब बितरि ठाढ़े आए आश ॥
 बिजयारव पर्वत उतंग । ता ऊपर गिर बप्पा सुरंग ॥२३७॥
 अहा इनहिब किआ प्रवेश । स्वयं प्रभु बु बसाया देस ॥
 कंबन कोट रतन राशि जटा । अधिक उतंग बियाई अटा ॥२३८॥
 हथिया पौलि पौलि डिग करै । कलस परतमा ऊबर डरै ॥
 चैत्यालय जिए प्रतिमा तरंगे । पूजा करै सामायकु बरंगे ॥२३९॥
 बहुत लोक तिहां बसै असेस । तीनों भाई जिहां नरेस ॥
 अमुं वरस पल प्राया तिए ठाय । नमस्कार कीया बहु भाय ॥२४०॥
 मैं हूं अब अनुब्रसक नाथ । धात्रा दोसी साक' काम ॥
 जंबूद्वीप में जो कछु कहौ । अब कितनों सब ठाढ़ा रहौ ॥२४१॥

छत्र सिंहासन चामर दई । दिखो मुकुट सुर रतनां मई ॥
 महुरघो कथा गुह्यपुर मई । बहुत आनंद बधाई मई ॥२४२॥

सुमाली एवं मालिवान की कथा

इह अलका किषकपुर सुं नी । बाजै बाजा गावै गुं नी ॥
 सब परिवार भया आनंद । पूजा कीनी देव जिएंद ॥२४३॥
 स्यों परिवार स्वयंपुर चले । सुमाली मालिवान दोड मिले ॥
 सूरजरज अंबरजि भूप । बैठि विमान बने जु अनूप ॥२४४॥
 परियण युत आये जिए पान । पूजा कीनी निहचै आण ॥
 भई रयण कीयो विश्राम । करई सामायिक ले जिएण ग्राम ॥२४५॥
 उत्तर तै रतनधवा कंकसी । मिले सुतउसे चिता नसी ॥
 व्याह पुरुष आए तिह घरी । आए सब परिवार की तिरी ॥२४६॥
 ए बालक उठि लागे पाय । उनु हिये सौं लिये लगाय ॥
 कंकसी नैं करे डडोत । उनू दई आसीस बहूत ॥२४७॥
 धन धन गर्भ रतन की खानि । तुभते बडे धणे सतान ॥
 पुरुषा सिंहासन बैसाइ । बहुत भात कीनी मनु हार ॥२४८॥
 चडकी कनक घचत मणिलाल । हीरा पना अवर प्रवाल ॥
 तिनपरि बैठे भूपति आय । करे उबटना मध मिलाय ॥२४९॥
 सौंबा अमरजा तेल फुलेल । किस्तुरी सामग्री मेल ॥
 नाई सुघड करे तिहा सेव । पावै सुख नरपति बहु भेव ॥२५०॥
 निरमल जल कचन के कुंभ । ये सोभै ज्यों सुंदर वन ॥
 डारै कलस करे असनान । गावै गुणियण चतुर सुजाण ॥२५१॥
 उत्तम धोवती पहरी भली । तिहा मुंवर मानै बहु रली ॥
 इन सरीर मे इसी मुबास । तातै अवर न सूकै पास ॥२५२॥
 दसानन भोन करण कुंमार । वनीषण सेव करे बहु भाइ ॥
 नमस्कार चरणन कौं करे । पुरुषासुख अधिक मन चरे ॥२५३॥

बट रस व्यंजन

भई रसोई व्यंजन भले । स्युं कटु ब जीमण कुं चले ॥
 रतन तिवार्ई सोवन थाल । कचनकारि गगाजल थाल ॥२५४॥
 घेवर बरफी लडुवा सेत । बहु पकवान परस्यो तेह ॥
 घटरस भोजन कीने घने । हरे वपेरे उत्तम बने ॥२५५॥

जीमें भोजन सब परिवार । बीरा दीनां पान संभार ॥
सिन्हासन परि बैठे धाय । नगर कितोहूँ देखै राय ॥२५६॥

दसानन तब पूछै बात । माली का कहै विरतांत ॥

दसानन द्वारा लंका राज्य प्राप्ति की इच्छा

किम छोड्या लंका का राज । व्यौरा सकल कहो प्रभू भाज ॥२५७॥

पिछली कथा कहो समझाय । सुमाली भया मूरछा भाइ ॥
सबही कबर करै उपचार । बडी बार में भई संभार ॥२५८॥

अवर कथा कही तिहु वार । फिर कैलासह देवहू दार ॥
पूजा करी श्री भगवत । सोवन मुनी तिहा महंत ॥२५९॥

नमस्कार करि पूछी बात । लका राज लहै किहू भात ॥
अवधि बिचार कहै मुनिराय । पीते तीन होयगे धाय ॥२६०॥

वे पार्वगा लका राज । मन बाछित का सुधरै काज ॥
बहु परिवार बडे सतान । उन सब बली न दूजा धान ॥२६१॥

जे कछू कहै मुनीस्वर जैन । तुमने देधि भया सुष चैन ॥
पु नि सु पावै सुर की रिधि । पुन्ये होवै विद्या सिद्ध ॥२६२॥

पुण्ये भोग भूमि सुष करै । पुण्य राज प्रध्वी कू बरै ॥
पुण्य दुष दालिद्र सब हरै । पुण्य भव सागर जल तिरै ॥२६३॥

पुण्ये पुत्र कलित्र परिवार । पुण्ये लक्ष्मी होय अपार ॥
पुण्य विद्या लहै विमान । पुन्य पावै उत्तम धान ॥२६४॥

पुन्ये दूरिजन लागै पाव । पुन्य धी सदा सुषदाय ॥
जल थल बन विहंड सहाय । तातै पुन्य करी मन लाय ॥२६५॥

सुणै पुन्य कीजे सब कोय । मनबाछित फल पावै सोय ॥
सुरगति नर नारकी तिरजंच । पुण्य बिना सुष लहै न रंच ॥२६६॥

इति श्री पद्मपुराणे देसावन उत्पत्ति विधानक

मन्वोदरी की सुन्दरता

सुरवंतपुर दक्षिण की ओर । बैतनाथ राजा तिहु ठोर ॥
हेमावती राणी पटवनी । मन्वोदरी सब गुण मय भनी ॥२६७॥

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहैं । वह कटं बर्षं बा समय लित रहै ॥
 किम कविराज कहै मृगन । वई भय दायक सुख की देख ॥२६८॥
 क्यों करि कवि कहै देखी ब्याल । इह वह रहै प्रत्यक्ष पताल ॥
 क्यों विजय नासा कीर । ए पथी ए कुण बंभीर ॥२६९॥
 सकल रूप का करूं बखान । पदमनी की सी शोभा जान ॥
 कन्या खेलै ही वह बाल । अचल देखी ताम भुवाल ॥२७०॥
 राय देख मन ससै किया । राणी सेती प्रकासित भ्रम ॥
 पुत्री भई विवाहन जोग । उत्तम कुल जे नामी लोग ॥२७१॥

विवाह के लिये विचार बिमर्स

जहा देखिये कीजे काज । मंत्री मन्त्र समारो साज ॥
 इन्द्र भूप भूपन सिरमोर । वा सम बली न दूजा और ॥२७२॥
 दूजा मंत्री बिनती करै । बशामन कुंवर विद्या बहु धरै ॥
 उत्तम कुल उजियारा पक्ष । उनकी सकल जगत मे पक्ष ॥२७३॥
 दिन दिन हूँ है धरणा परताप । उसका जीवै दादा बाप ॥
 मंत्री बात तति बित लगी । बुलाए पड़िन अर जोतिगी ॥२७४॥
 साधो लगन देख बहु भाति । मव विग्रह होवै उपसाति ॥
 जोतिग देखि साधी सुभ धरी । और बहुत सामग्री करी ॥२७५॥

पुहपनगर के लिये प्रस्थान

मंत्री प्यार कन्या इक सग । और लोग बहुरंग सुरग ॥
 पहुँचे पुहपनगर मे जाय । रतनश्रवा तिहा नहि पाय ॥२७६॥
 पूछे लोग नगर के घने । भीमपुर नगर रतनश्रव सुने ॥
 स्वर्णपुर नगर बस्या ता पास । सुख सु तहा बे करै विलास ॥२७७॥
 मंत्री स्वर्णपुर नगर कु चले । वन उपवन मंदिर तिहां बने ॥
 उतरे वन बिहा श्री जिनयान । चन्द्रनषा बैठी थी ग्रान ॥२७८॥
 जब उनसो वह कन्या मिली । बहुत बात पूछी तसु मली ॥
 तू किम एकाकी इण ठाम । कहो कवण अपणो कुल काम ॥२७९॥

चन्द्रनखा से भेंट

चन्द्रनखा बोली समभाव । दशानन है मेरा भाव ॥
 सयल राज शर्वत सुभ ठौर । चन्द्रहास पडन की दौर ॥२८०॥

ते विद्या सप्तम की कथा । तत्त दिवस का वादा दिया ॥
चन्द्रहास धरम नै पाव । अन्न आयसी दसानन राय ॥२८१॥
विद्या सिद्ध मन वांछित नई । चन्द्रहास की आपत्ति नई ॥

रावण के दर्शन

आप्या रावण श्री जिन भौन । साध्या भला महरत सौन ॥२८२॥
मंत्रिया आय कियो परिराम । देख्यो रूप लक्षण गुण धाम ।'
ऊंचे घासन बैठा आय । रवि ज्यो सोभा क्यु परताप ॥२८३॥
पूछे जबै दसानन कुमार । कबरा काज आयो भो द्वार ॥
स्वर्गगीतपुर दक्षिण देश । दैत्यनाथ तहा बडो नरेश ॥२८४॥
ताके तनया मन्दोदरी । जाम रूप नही अपछनी ॥
चन्द्र ललाट पै मोह कर्वाँ । मृगनयनी लज्जा गुन बाल ॥२८५॥
नासा कीर रू सुठट कपोल । उष्ट रग दत सहज तबोल ॥
कुच भुज चरण कमर केहरी । सुधर कलाई सोनै धरी ॥२८६॥
ऐसी है गुण गण सयुक्त । हत गमणी नव किरण जुवति ॥
तु मनि मत्त कहै सुंदरी । लेहु लगन साधो सुम धरी ॥२८७॥

मन्दोदरी के साथ विवाह

लियो लगन मन रहस्या घना । स्वयंपुर गए कुटब में भना ॥
आनद हुआ दोऊ कुल माँझ । बाजे बाजै बालुर साँझ ॥२८८॥
भले महरत कियो विवाह । बहुत अइबर करि उत्साह ॥
भोग भुगति में बीतै घडी । सुखमाने दंपति तिस घडी ॥२८९॥
दोऊ कोऊ कला विष करै । अधिक प्रीत उर माही धरै ॥
मेघमिर पर्वत ऊपर बाय । एक जोवन की हैं अउराइ ॥२९०॥
छह हजार नृप की पुत्री । धैलै सरवर ऊपर खड़ी ॥
बसन उतार करै असनान । उभकि उभकि सब भाकै आनि ॥२९१॥
जल उछाल खेलै सहेलिया । गावै सरस चउ बोलिया ॥
घाट बाट रखबाला रहे । मारग चलै न सब बट रहै ॥२९२॥
दसानन विद्या सभारि । पहुँचो जाय सरोवर पाल ॥
सगली कन्या रह्यो लजाय । ताकुं देख रही मुरझाय ॥२९३॥

दसानन दोड़ि जही तसु बांह । सकोचि घाणि कसु बोली नाहि ॥
समली ही समझी सिद्धं बार । इह निश्चै सब का भरतार ॥२६४॥

एक महुरत भांवरि फिरी । बासमबे ब्रूषती सब तिरी ॥
कोक कला सब ही परवीन । किनर देखि होय गुण हीन ॥२६५॥

रत्नवाले ऐसी सुख पाय । कही अमर सुंदसुं जाय ॥
मुनि करि नृप कोप्यो बहु भांति । सेना भेजौ चाबै दांत ॥२६६॥

बाकूँ मारि करो तुम वेह । दसानन नहीं राखी उस देह ॥
चले सुभट परवत पै गये । छीडे बाण ता सनमुख अए ॥२६७॥

दसानन तबै बढायै भौह । सब सेन्या भागी सिर नीय ॥

दसानन की बीरता

नृप मौ जाय जनाई सार । बा सनमुख न चले हथियार ॥२६८॥

राजा कहै अबर ल्यो सैन । पकरो बेग दिवाबो नैन ॥
तब सेवक नरपति सो भनै । प्रभू तुम आप चलो तो बनै ॥२६९॥

अमर सुंदर अमर नो बेध । कनक विद्युत प्रभ अबर घनेक ॥
षट्सहस्र भूपति इक ठोर । सेना का कछू नाही ओर ॥३००॥

चढे विमान चले उस थान । राजसुता देखिया निसान ॥
पद्मावती आदि जे तिरी । दसानन सुं विनती करी ॥३०१॥

तुम परि चढि आया निश्चै धार । तुम जल माहि छिपी असवार ॥
जो तुम जल नें तिर नबि सको । तो मातिनाथ मंदिर मे लुको ॥३०२॥

विद्या ल्यो तुम आभोपनी । दृष्टि न आवो काहू तली ॥
जब वे दूढ़ सोध उठि जाय । तब ले चलो आपने ठांव ॥३०३॥

रावण कहै सुनो त्रिय बैन । मेरा बल तुम देखी नयन ॥
मैं तो गरुड बे सर्प समान । एको सनमुख भुक्त आन ॥३०४॥

सिंह एक हस्ती सैस्याठ । भाजै तुरत मवगल ठाठ ॥
मैं तो बली सिध सौवाधि । मोकुं सकै कौन नर साधि ॥३०५॥

सब नैं पकड़ि करूं दहै वाट । बध करो सब ओषट घाट ॥
पद्मावती प्रमुख इम कहै । पिता भ्रात भुक्त जीवत रहै ॥३०६॥

अवर निसंघ करो असिघाउ । उनको तुम लीजियो बचाउ ॥
दसानन सुणुं तुम तिरी । उण मारन की प्रतिष्ठा करी ॥३०७॥

सब दल निकट पहुंचते थाय । रत्नरा श्री तत सन्मुख जाय ॥
 बैसि विमान गगन में गया । बहुत सुमट बिद्या के किया ॥३०८॥

चन्द्रहास तब अलग संभाल । मुराछाबंत किये ततकाल ॥
 नागपासनी बिद्या डारि । बाँधे सब नरपति तिहुं बार ॥३०९॥

भानभग सब ही नृप किये । हार भान विनती कर नये ॥
 दया भाए छोड़े सब राय । कन्यां व्याहों मन घर भाव ॥३१०॥

सकल त्रिया से घर कौ चले । भान भभीषन सन्मुख मिले ॥
 मंदिर भंतेबरह सवारि । न्यागी न्यारी राषी नारि ॥३११॥

कुंभपुर नगर सहोदर भूप । ता घर राणी महा स्वरूप ॥
 तडित माला ताकै सुता । भानकुंवर व्याही शभमता ॥३१२॥

कुंभपुर तरां सुण्या जब गीत । कुंभकरण नामै सु पुनीत ॥
 छोटपुर विसृष्ट सुकमल नरेश । मदनमाला नारी गुणवेस ॥३१३॥

सरस्वती पुत्री गुणवत । रूपवत लावण्य बुचिबन्त ॥
 भभीषण सौ किया विवाह । भोग भुगत मे करै उछाह ॥३१४॥

मदोदरी गर्भ स्थिति करी । इन्द्रबीत जन्म्या शुभ बडी ॥
 नाना कै ग्रह बधै कुमार । देखत मोह करै नरनारि ॥३१५॥

दूजे मेघनाद अवतारि । रूपवंत सति की उनहारि ॥

कुंभकरण द्वारा उपद्रव

कुंभकरण लका ढिग जाय । भात पासि सब लूट ले जाय ॥३१६॥
 बहुत सखी भानी सुंदरी । भोग भगन मानै मन रली ॥
 इसी बात तब वैश्व सुनी । भाई लहर ओष कंपनी ॥३१७॥

वैश्वराज राजा के दूत का सुमाली के दरबार में जाना

लिख्या पट्ट दूत कर दिया । स्वयंमय नगर सुमाली पै गया ॥
 सोभा दूत नगर की देख । देखी स्वर्गपुरी सुविवेक ॥३१८॥

जाय पहुंचते राजे द्वार । सुमाली सुरत सुखी तिहुबार ॥
 राजा पासि कोक बसीठ । लिया लेख बाँध्या नृप दीठ ॥३१९॥

नमस्कार करि बोले दूत । निरभय जंपे वयण बहुत ॥
 तुम इन्द्र ते बचे थे भाव । पातालपुरी छिपे थे लाव ॥३२०॥

दयानिमित्त दिये तुम छोड़ । अबके पकड़े मारउ ठौर ॥
 तुमने बुधि मारण की भई । तुमैं उपाधि उपाई नई ॥३२१॥
 सोबत केहरि दिया जगाइ । बा धामें जीवत क्यूं जाय ॥
 जो दादुर अहिमुख ते छूटि । फिर करिहै बाबी की धूटि ॥३२२॥
 ऐसे तुम निबसों इस ठौर । सुनैं इन्द्र अब मारै ठौरि ॥
 जो तुम अपनौं जीवत चहौ । तो अपणे मारण मे रहौ ॥३२३॥
 कुंभकरण अब किया बिगार । वाने बाधियो अब मार ॥
 जो उस सीध हूबं इस बार । बहुरन करै अनीति लगार ॥३२४॥
 जो नही करै तुमारी कान । तो उस बाधि भेज छो भानि ॥
 हू तिस कैसा लगाउ हाथ । बहुरन चूक करै किरण साथ ॥३२५॥

दसानन का कोप

साभन इतनी दसानन कोप । जैसें गरज करै घटाटोप ॥
 कहै राय सुन रे अज्ञान । काक हस होवै किहू वान ॥३२६॥
 मानुष इन्द्र होवै किरण भाति । हम सेवक है उसका एाति ॥
 जो मगल गरजें मन माहिं । देखै नहिं केहर की छाह ॥३२७॥
 मुझ पतंग डोला उणहार । कहा गरुड तापति करै मार ॥
 अणौ पतंग ते सेवै भूप । देखत मरै अगनि का रूप ॥३२८॥
 तैसे इन्द्र और वैश्रवान । जे वै बेग मिलै मुझ प्रान ॥
 तो वानें छोडूं जीवता । नातर बलिछाउ दशदेवता ॥३२९॥
 दूत राय कै सनमुख खरा । चंद्रहास खडग कर धरा ॥
 कंपी धरती कम्पा सूर । भभीषण उठ कहै हजूर ॥३३०॥
 इस ऊपर क्या कोपो वीर । यह किकर आया तुम तीर ॥
 कहै आपणे पति के बैन । या कु मारघा बात न ग्रैन ॥३३१॥
 भर याको जो मारो डार । तो अपजस होवै ससार ॥
 इतनी सुनत भया मन सात । समभाया जब लहुडै भ्रात ॥३३२॥
 धका दे पुर बाहर किया । वसीठ का भर आया हीया ॥
 पगडी बाध लका मे गया । सब व्यौरा वैश्रवन सो काह्या ॥३३३॥
 वे तुमने पतंग सम गिने । उनकी बात कहत न बने ॥
 दसानन दस सिर का धनी । अपने मन राखै अति मनी ॥३३४॥
 बीस भुजा दीसैं बलवंत । बिद्या घाली करै परबंद ॥

वैश्रवण राजा द्वारा बुद्ध

वैश्रवण कोप्या मूषाल । ज्यों दिया तेल भग्न में डाल ॥३३५॥
 सुरस सुभट सब लिये तुला । मरू बाजे घस करनाइ ॥
 देश देश में भेज्या उकील । आया सुभट न लायी डील ॥३३६॥
 उडी घूल छायो आकास । अंधकार वीसैं जहूँ पास ॥
 चडि विमाण दोढ तिह बार । स्वयं प्रभु नगर बेरचा तिह बार ॥३३७॥
 दशमुख बिद्या लई संभाल । दोन्यूँ भाई लये हंकार ॥
 रतनमूर पलान तुरग । मले सुभट लीये सब संघ ॥३३८॥
 दुह तरफ वानेती भूप । सनमुख भये जुध के रूप ॥
 गहि तरवार चक्र कर लिया । बरछी हाथ ढाल मुख दीपा ॥३३९॥
 सूर सुभट दोऊ धा लरै मूँड तूटि चरनी परि पड़े ॥
 सर छूटे बाणव की मार । मानो बरैँ धन हर बार ॥३४०॥
 दसानन निज करै मनमांहि । सेना भूझ मुई मनमांहि ॥
 केहरि रथ बैठा तब आय । दुरजन दसन भया संताप ॥३४१॥
 गदा चक्र से खडग चंद्रहासि । दस सिर बीस भुजा हैं तास ॥
 घस्या कटक में मारे घने । जलनाथ आया साम्हने ॥३४२॥
 दोऊ लरै जुध के हेत । जलनाथ तब राख्यो खेत ॥
 तब वैश्रवण सनमुख भया । वैश्रवण चित्त ऊपजी दया ॥३४३॥

बुद्ध से वैराग्य

धग धग ए राज धग मेदिनी । विषय बेस के फल ए दुनी ॥
 पिता पुत्र भ्राता थी लरै । रुद्रध्यान करि नरकौ पड़े ॥३४४॥
 इह मो भाई मोसो के पूत । याकूँ मारे पाप बहुत ॥
 इण प्रशाम करि ठाढ़ा भया । दसानन रुद्र भाव सों भया ॥३४५॥
 वैश्रवण बोलै तिहूँ बार । जाणौ ए संसार असार ॥
 किसका राज कौण की मही । सुख दुख दाता कोई नहीं ॥३४६॥
 माया मोहि में फिरहि अग्यांन । क्रोध मान वसि भया अग्यांन ॥
 तृष्णा लोभ बहु दुःख कां सूल । तिनमें रह्या बिद्वानंदि भूलि ॥३४७॥
 राज करत उपजै बहु पाप । मरि करि परिभव सहै संताप ॥
 बली दसानन कहै विचार । हिवशा कबण म्यांन कौ सार ॥३४८॥

जइ तू जीव की रिक्षा करे । जनी होय तो काल न टरे ॥
जो तू अपने जीव तें डरे । तो तू सेव हमारी करे ॥३४६॥
लंका हम कू तू जो देह । तो इह बनें तुम्हारी देह ॥

दसानन द्वारा मुद्ध करना

जो कछु बस पौरव मन धरो । तो संभालि फिरि हमसों लरो ॥३५०॥
इतनी सुनत गहै हथियार । सनमुख ह्वै करि भाडी रार ॥
दसानन गदा लीन्ही हाथ । रथ फेरघा तब लंका नाथ ॥३५१॥
धनदत्त विद्याधर धाया दौडि । गदा चक्र बाणौ की भौडि ॥
दसानन फिरि कीने घाउ । दसानन बख कीया दाउ ॥३५२॥
विद्याधर नै मिर सौं हया । रथ ते मिरघा पुत्र ले गया ॥
बैद्य बुलायो कीया जतन । घाव सिबातें कहा कठिन ॥३५३॥
सेवा करै पुत्र सब आय । सेवै घाव भरु मलम लगाय ॥
वैश्वने देलै चहु ओर । पडी लोच ही सगली ठोर ॥३५४॥
सेन्या सकल का भया सहार । मन बच क्रम छोडघो अहंकार ॥
उपसम भाव डरमाही धरै । जिरणवर खरण सरण सभरै ॥३५५॥
या संसार अचल कछु नाहि । राजभोग जिम बादल छाह ॥
जिस कारण वाघे सहु पाप । बहुगति माहि सौहै सताप ॥३५६॥
इन्दी सुख के कारण जीव । बहु अपराध चढावै बीव ॥
बिना काज इतना जिय मरै । किये करम टारे नही टरै ॥३५७॥

वैश्वनर द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण

लका राज दसानन दिया । वैश्वनर भेष दिगवर लिया ॥
बारह विष तप उत्तम ध्यान । तेरह विष चारित्र्य विनाय ॥३५८॥
तन बाईस पग्गिमा महे । अष्ट करम छिनमाही दहे ॥
सांगित रद्र ध्यान करि दूरि । धरम सकल चित राखै पूरि ॥३५९॥
केवलम्यान भया तिहु घडी । सुरलोकातिक महिमा करी ॥
काटि कम पटुच्या निरवान । पायो सिवधानक कल्यान ॥३६०॥

सुमाली द्वारा पुनः लंका की प्राप्ति

सुमाली बैठा लका राज । भया सकल बाधित काज ॥
ए सब कवर करै आनद । समरण पूजा करै जियद ॥३६१॥

बसानन विमान इक रच्या । नग तिहीं उरुहारै संख्या ॥
 मंदिर कनक भई सब किये । बंदनमाल रतन मय हिये ॥३६२॥
 छत्र सिंहासन चामर डरै । सब कुटंब संग लेकर चलै ॥
 मन कुंमर शुभ रच्या विमान । बजीवरण है सवारधा ध्यान ॥३६३॥
 चढ़े विमान अपखे आपखै । दक्षिण दिस नय साथे धनै ॥
 देस देस के भूपति मिले । आण मनाय विजयारथ चले ॥३६४॥
 मारिग माहि पूजि सुखैर । चैत्याले देखे बहु फेर ॥
 ऊपर धुजा बहो फहराय । रतनबिंब जिए का तिए ठाय ॥३६५॥
 सुमाली सेती करै प्रसन्न । दोउ कर जोड़ि बीनबै दशानन ॥
 इण नगरी का भापो नाम । चैत्यालै कब ते इस ठाम ॥३६६॥
 सुमाली भूपति व्योरा कहै । हरिपेण चक्री छहपंड लहै ॥
 उन श्री जिनके मंदिर किये । छत्री कलस रतन जड़ दिये ॥३६७॥

हरिवेण चक्रवर्ति की कथा

हरवेण की सुनु अब बात । उरु जिए भवण किये किस भात ॥
 कपिला नगरी सिंहध्वज राय । विप्रा राणी सब जिए पाय ॥३६८॥
 ताके गर्म भया हरवेण । वार्क भए हुआ सुख बन ॥
 राणी दस लक्षण व्रत करै । पुन्यो दिन चाहै रथ फिरै ॥३६९॥
 लक्ष्मी सोकि पति सौ बीनवै । मिथ्या धरम कुदेवै नवै ॥
 मेरा रथ पहलै नीकलै । ता पाछै वाका रथ चलै ॥३७०॥
 राणी के मन व्यापा भोग । छोड़े अन्नपान रस भोग ॥
 हरिवेण मतता डिग गया । सब व्रतांत रथ का पूछिया ॥३७१॥
 तुम हो क्यों माता अरामरणी । रथ पूजा सामग्री बरणी ॥
 कही पुत्रस्यो सब समझाय । मुनि हरिवेण पसीनी काय ३७२॥
 जो अब कहौ पिता सौ बन । बधै उपाधिर होय कुचन ॥
 उठ्या कुंमर गया उद्यान । सब वन दीसै प्रति भय वान ॥३७३॥
 अजगर सर्प सिंह तिहां रहै । कोई मनुष्य तहां भूलि न जहै ॥
 पुण्यबंत शिव अब नबि धरै । बनमे कुमर अकेला फिरै ॥३७४॥
 गिरि ऊपरि सन्यासी रहै । स्यो कुटंब भेष तप गहै ॥
 पंच अयनि तिहां साथै बने । रूपवती पुत्री तिंह तनै ॥३७५॥

नीचि भांकि देख्यो हरिषेन । भया कुहां का चारों नैन ॥
 देखि कुमार गिरि ऊपर जाय । तपसी याहि कुंवर जे आय ॥३७६॥
 इह उनका बरज्या नहीं रहै । गिरि ऊपरि का मारण गहै ॥
 तब बे कोप उठे तापसी । भाव गहि भावें बसमसी ॥३७७॥
 कन्या देखें दृष्टि पसार । तब बोली माता बच सार ॥
 हम इस सुण्या साधु मुख बैस । तू पटराणी व्याही हरिषेण ॥३७८॥
 तू देखें परदेसी ऊठि । निज तन कहा लगावैं पोठि ॥
 तब बोले हरिषेण कुमार । अतिथन पै क्या गहु हथियार ॥३७९॥
 परवत छोडि चल्यो बन माहि । मनमे चित वा सुर साकि ॥
 बन फल लाय बन ही मे रहै । रात दिवस दारुण दुख सहै ॥३८०॥
 फूल पान सोवैं सावरै । निस बितीत होवैं डरण परै ॥
 इग बिजोग तैं कछु न सुहाय । प्रानी प्राण बिना दुख पाइ ॥३८१॥
 मन मे ऐसी निश्चय करी । माता दुख बहुरि अस्तरी ॥
 जब छह पड का पाउ राज । जिएयर भुवण सवारौं राज ॥३८२॥
 ऐसी चितत सिध तट गया । नदी तीर तिहु ठाढा गया ॥
 तिहा नारि देखैं सब धरी । गोरी बाल तरुणी गुण भरी ॥३८३॥
 प्रौढा विरधा बहुत सजान । अमी स्वरूप देख इक तान ॥
 नयनहु देखैं रूग अथाय । सियल भयी निज घर न सुहाय ॥३८४॥
 हस्ती एक बहुत मद भरधा । पटा चुबै भय दायक बरा ॥
 महावंत मगल पर चढधा । चरबी भोई अबरछह गढधा ॥३८५॥
 बेरधा आहि चले चिहु ओर । सारे नगर मचाई रोर ॥
 आवत देखिर कहै कुमार । से महावत हाथी ने टालि ॥३८६॥
 महावत कहै परदेसी सुनी । मंगल मतवालो है धनो ॥
 आकुस गिरों न माने काणि । यहा नहीं फिरें हमारे पाण ॥३८७॥
 किम कजि यो का महरा फिरैं । तु ह्याथे असगो ब्युं न टरैं ॥
 साम्है गज पाछैं है नदी । कहा जाउ दोन्युं विष बदी ॥३८८॥
 सकल नारि देखैं बिललाइ । महावत गज ले पहुंच्या आय ॥
 तब हरिषेण धीरज बहु दिया । तुम कछु भय चित नाणउ तिया ॥३८९॥

बोले कुमार रे समरु गंवार । हाथी सहित तुम मारुं दारि ॥
 कहै महाबत तुम लाग्या काल । दूरि होवै ना मूढ गंवारि ॥३६०॥
 सोभल सबद कोप्यो सुकुमार । हत्ती दंत गहे तिए वार ॥
 लिये उपारि मस्तग सौं हनै । भाज्यो बिलचिमाय गज मनै ॥३६१॥
 एक दई महाबत कै लात । जाणै करी सत्रु की घात ॥
 निरमद किया महामयमंत । राजा सुधि लई बलवत ॥३६२॥
 सिंहराज भेजे सब लोग । करो महीछव कवर सजोग ॥
 बहुत करी बिनती मनुहार । भली भाति ल्यावो हम द्वार ॥३६३॥
 प्राय कुंवर कै लागे पाय । बलिये प्रभू बुलावै राय ॥
 हस्ती ऊपर चढयो कुमार । वाजै प्रतिबाजे तिहु बार ॥३६४॥
 छाया बाजार सवराई गली । घरि घरि कामखि यावै रली ॥
 तिहु भूय भेटघा उर लाय । रूप देखि मति हरष्यो राय ॥३६५॥
 निजपुत्री ब्याही तिहु घरी । ताकी साथि कन्या सौ बरी ॥
 एक दिन बात निमित्तक भनै । इस कन्यावर हस्ती हनै ॥३६६॥
 भोग भोगवै सुख सेरु मझार । नागवती चित करी कुमार ॥
 कुंवर भणै कब बीतै रयण । चलौ बेग नागवती लैण ॥३६७॥
 हम चितवन्ता आई नीद । परघो सेज पर जाणि गयद ॥
 बेगवती दिवाधर प्राय । कुंवर सोवतो लियो उठाय ॥३६८॥
 घर बिमान लेचल्या आकास । बेगवती मन करै उल्लास ॥
 जाग्यो कुंवर अचुंभय भयो । देख प्रिया कर सो कर गहो ॥३६९॥
 तूं छै कवण कहो सत भाव । किहु कारण तें लिया उठाइ ॥
 बेगवती बोली नही बात । कुंवर बिचारै बालुं घात ॥४००॥
 बेगवती कंपी तिहुंवार । हिवै मुनै जो डारै मार ॥
 बहु करै बीनती धापरै । हु आई कारण तुम तरै ॥४०१॥
 जो तुमही बिणसत हो भोग । तो सब कारण बिणसै तोहि ॥
 सुरज उदयपुर नगर सुमथान । सरुनाथ राजा जिय आन ॥४०२॥
 बंधुमती राणी पट बनी । जै चंद्रा पुत्री ता तणी ॥
 लिख दीने बहु पंड के भूप । कन्यां निजर न आख्या रूप ॥४०३॥

तुमारा चित्र सीस धरि लिखा । ता कारण मैं तुम हर लिया ॥
 चलो बेग तुम करहु बिवाह । मिटे सकल हिरदै के दाह ॥४०४॥
 मुरज उदयपुर में तब गये । राधा पास बसावा गये ॥
 मुभ लगने व्याही सुंदरी । भोग मगन मे बीतै घड़ी ॥४०५॥
 मगाधमं महींदर भूप । दोऊं भए त्रोष के रूप ॥
 इन परदेसी नें कन्या दई । हमारी उसने काण न लई ॥४०६॥
 सेन्या ले चल दीहे मूर । विद्याधर विद्या भरपूर ॥
 मुरज उदयपुर घेरघा भाय । हरिषेण सु कहै समुभाय ॥४०७॥
 तुम ग्रह रही हम जाहैं लरन । तुम पाहुणा न होवैं मरण ॥
 तब हमि करि बोखे हरियेन । तुम धरि बैठि करौ सुखचैन ॥४०८॥
 हम बैरी स्यु करि हैं युद्ध । अपणा मन तुम राखो सुधि ॥
 सैन साथ ले मुहमल भए । सूरवीर तहा जुझ बहु भए ॥४०९॥
 दास्य जुध भया मैभीत । हरियेन की भई तब जीत ॥
 जीत्या सत्रु भया भानद । बाजे बजे महा सुखकद ॥४१०॥
 आयुधशाला कारण भया । चक्र सुदर्शन पाया नया ॥
 पूजा करि सुदरसन बंदि । चल्या चक्र जीते छह षड ॥४११॥
 तब आए तापस की पुरी । बारह जोयण सेन्या परी ॥
 सह तापस आये तिह बार । आसीरवाद दे बारबार ॥४१२॥
 तब हरपेन कहै हसि बात । मे हु वह जो तुम बरजात ॥
 तपसी जाणि दया उर धरी । बिमा करी उन वाही धरी ॥४१३॥
 तपसी कहै तुम हो धरमिष्ट । पुण्यवंत क्युं होय न कष्ट ॥
 बन बिहङ्ग मे पुण्य सहाय । मन बाधित मुख उपजै भ्राय ॥४१४॥
 पुण्य बर्ष लक्ष्मी परिवार । पुण्यै भोग लहै ससार ॥
 तुम बलवत धति महापुनीत । तुमतै कौण सकै नर जीत ॥४१५॥
 सब तपस्या मिल अस्तुति करी । व्याही नागवती पुत्तरी ॥
 पढ़ते भ्राय नगर कपिला । कठा कपण परियण मिला ॥४१६॥
 मात पिता के बंदे पाय । रथ चलाइया श्री जिनराइ ॥
 भुजै राज करै भानद । ठोर ठोर देहुरा जिएंद ॥४१७॥

राज करत दिन बीते घने । एक दिवस एक कारण बने ॥
 चढ़ि मंदिर देखै कन भाव । देखे हिरण कुशल एक छंद ॥४१८॥
 सुरत रीत वे बन में फिरें । विद्युत वात तें दीक मरें ॥
 ताहि निरख जाम्यो मन ग्यान । कालचक्र है पवन समान ॥४१९॥
 जिरण मैं व्यापै करै न डील । मोह जिरण राख्यड कील ॥
 इह संसार जल बुदबुद प्राय । पल पल भाव बटत ही जाय ॥४२०॥
 हय गय विभव अर्थ मंडार । पुत्र कलित्र भिन्न परिवार ॥
 सबै बिनस्वर धिर नहीं कोय । सपई तखां बिछोहा होय ॥४२१॥
 ससार परिक्षा परिधन किया । राजरिह तजि संयम जिया ॥
 करम काटि पंचम गति लई । हरिवेण कथा संपूरण भई ॥४२२॥

बोहा

सुनी कथा हरिवेण की, मनमे भयो आनंद ॥
 दशानन को समय मिटपी, पूजे देव जिरांद ॥४२३॥

जोई

दशानन द्वारा जिन पूजा

जिनवर भवन में उतरे जाय । प्रणपति करी दशानन राय ॥
 आठ दरब स्थु पूजा करी । जनम सफल मान्यौ तिह बरी ॥४२४॥
 बहा तैं उठि सभेदगिरि गये । रैण भई आश्रम तिह लये ॥
 हसती एक महामयमंत । ढारह फोरत गरज करंत ॥४२५॥
 लोक देख होवैं भयबंत । दशानन शित सोच करंत ॥
 कै कोई दुरजन है इह बार । आया हमसों करिबा रार ॥४२६॥
 कै वैश्रवन ओष संभाल । मूढ़ करण आया इह काल ॥
 व्हां सेती उठि लीनी सुद्ध । हाथी देखि बिचारी बुद्ध ॥४२७॥
 कुसुमादिक विमाण परि बैठि । आपण जोवैं हस्ती हेठ ॥
 धनुष सात है उबर गयद । इस धनुष नवा ननु छंद ॥४२८॥
 नव धनुष ऊंचा मजराय । ऐसापति साम राखै जाय ॥
 दशानन उठि ऊंचा बया । निकट कर्ण के संख बजाय ॥४२९॥
 सख सख गिरिवर गिरिपई । भरती कपी जलहर डरै ॥
 हस्ती आगे सांख तोरि । दखौं दिसा में भांजी रोर ॥४३०॥

भई बंढा की रोमावलि खड़ी । हस्ती के जिय बलभल पड़ी ॥
 तब गयद भाज्यौ चिधार । दसानन चरण गह्या तिहवार ॥४३१॥
 फँक बगाया घरती पड़्या । मानुं अजनगिरि गिर पड़्या ॥
 पकड़ि दात भ्रुकभोरा घन्या । बज्रमुष्टि कर ताकू हन्या ॥४३२॥
 निरमद कीया अजा समान । सुख पाया कुटब जन आन ॥
 पोहू फाटी रु भया परभात । बजपलाश मार कर जात ॥४३३॥
 तब इक किकर पड़ता आइ । लोटै धरा सिर पाग दगाय ॥
 दसानन तिहा उभा रह्या । कहौ किकर तू किएँ दह्या ॥४३४॥
 तासुं वचन पूछैं बलवीर । कहौ बात चित राखो धीर ॥
 कोण काज आया मो पास । तेग मन की पूरूँ आस ॥४३५॥
 सयावली किकर को नाम । सेन्यावली का सुत इण ठाम ॥
 इन्द्रतण किकर कही एक । तिए लीधी लक कर टेक ॥४३६॥
 लोग तुम्हारा दिया निकाल । सूरज रज अछर रज पाइ मार ॥
 वे तुमारा बल के परताप । वे दोन्युं चढ़ि दोढे आप ॥४३७॥
 दो सुं बोड जुष अति भया । वानर बसी दल कटि गया ॥
 रहे सूरज रज अछर रज । किया जुढ रायी तिहा लज्ज ॥४३८॥
 जम की सेन्या करी सहार । जम सन्मुख आया तिहवार ॥
 सूरज रज के मारी गदा । रब तै पड़्या भूमि पर तदा ॥४३९॥
 अलका मे ले गये उचाइ । मिल मिल गावैं धाव सिचाइ ॥
 अब वाकु कुछ भई उसास । जम दे है लोका नै आस ॥४४०॥
 नरक सात सो राया इन्द्र । तहा मारास राख्य करि वृन्द ॥

लंका विजय

तिस कारण आया तुम पास । तुम बल दूर करो दुख आस ॥४४१॥
 इतनी सुणि सब सेन्या दही हंकार । किबंद पुरे पड़ता तिए बार ॥
 बाजँ मारु माची रोर । कियदपुर देव्या दक्षिण ओर ॥४४२॥
 बंतरणी अरु सातौ नरक । बदी बाम सहै उपसर्ग ॥
 रखवाले बंढे तिहा घने । थभ बाधि करि पिजर हने ॥४४३॥
 दशानन बंदि छोडि सब दई । सपोट कनेँ ए बात सब गई ॥
 सुणित बात कोप्या सपोट । दशानन नें प्रपट्ट पग रोप ॥४४४॥

सूर मुभट सब लिये बुलाय । चडि आया लठवे कै भाय ॥
 बभीषण आय फिरया अठवार । दोहुँ दल गुरघा तिह बार ॥४४५॥
 संघोट बभीषण नें कहै । अब तू मोतें सनमुख रहै ॥
 तोकुं सही बभीषण नाम । जीवत पकडि बाधि ले जातं ॥४४६॥
 बभीषण की सेना बहुमरी । दशानन भी आया तिह घरी ॥
 चन्द्रहाहास लीया समालि । सपोट का दल किया सहार ॥४४७॥
 सपोट भाज गया जम पास । बोले वचन मुख लेइ उसास ॥
 जम साभलि ली सौं बात । चढ्यो कोप केहर की जात ॥४४८॥
 जम की साथ चले सामंत । सेना नही लाभै अंत ॥
 चडि आया बाज्रि बज्जम् । कुंजकरण बभीषण सनमुख आय ॥४४९॥
 दूहुषा मुभट जुभै रणमाहि । उडी रेणु मानुं भई सांभ ॥

दशानन द्वारा युद्ध

दशानन आया उरा ठाव । युध भेद समझै सब दाउ ॥४५०॥
 दस सर बीस भुजा बलवान । दुरजन मारि कीये धमसान ॥
 जम इनकें सनमुख हूँ लरया । सर लाव्या रथ सै गिर पडया ॥४५१॥
 सातक नाम जम का इक पूत । लोष पिता की उठाई तुरन्त ॥
 लोष राख करि किराही गाम । रथपूर गया इन्द्र के ठाम ॥४५२॥
 व्योरा सकल इन्द्र सौं कछा । जमने मारि देश उन लछा ॥
 दशानन नाम महा बलिवत । देखत ताहि प्राण हूँ अंत ॥४५३॥
 बीस भुजा कहिए दस सीस । जाकी कर न सकैं कोई रीस ।
 सुगत बात कोप्या जिम सिंह । साधि सैन भट लिये अभिन्द ॥४५४॥
 देस देस तें लिख करमान । दूत पठाया चतुर सुजान ॥
 सब नरेन्द्र बुलाये राय । जोतकी पूछे तुरत बुलाय ॥४५५॥
 विद्र भएँ जोगित बुलाय । हिव चलस्यौ तो होसों हार ॥
 कहै इन्द्र अब निकल्या बार । जो फिर जाऊं नगर सवार ॥४५६॥
 तो सूरिमा पणौं नबि रहै । मानी हारि सहु कोई कहै ॥
 पुष्या सब समजावैं बात । बतीस बांस नही माहुं हार ॥४५७॥
 अंतहपुर में फिर गया इंद्र । सौच बुलाय करै आनंद ॥
 जब फिर आया इंद्र के पास । पुत्री दई कप जुए जास ॥४५८॥

जम भेज्या सुरमतिपुर देस । लुधी हुए सब भूप नरेस ॥
 दसानन नगर लिये सब साथ । इन्द्र सु'तिन भाडी जपाधि ॥४५६॥
 त्रिकुटाचल रतनश्रव राज । मनबद्धित का हुवा काज ॥
 किषिपुत्र सूरजरज दिया । किषिपुत्र राज अचछरज लिया ॥४६०॥
 सुमाली मालिवान दोऊ लंका धनी । सुम साता तमु आई घणी ॥
 सेवा करै वे तीनुं बीर । लह्या सब सुख पाय सरीर ॥४६१॥
 छत्र सिंघासण चामर घने । बहुत गयद डोर के बने ॥
 हय गय रथ पायक असवार । मेहल चढया देखै नर नारि ॥४६२॥
 लाल जवाहर डारै मू'प । सगली सोभा बणी अनूप ॥
 पहुँचे गढ लका मे जाय । बजै निसाण गुणी गुण गाय ॥४६३॥
 सब कुटुंब भेट आगनै लागि । असुभ करम सगले गये भाग ॥
 इतनी कथा कही जिएराय । शेरिक भूप सुणी मन लाय ॥४६४॥

सोरठा

श्री जिण धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
 पायो लंकाराज, राक्षसबसी जग तिलक ॥४६५॥

इति श्री पद्मपुराणे वसुधैव विधानकं

सप्तम विधामक

श्रीपई

बाली सुग्रीव वर्णन

किषिपुत्र सूरज रज भूप । इन्द्रमालिनी नारि सरूप ॥
 बालि पुत्र ताकै उर भया । करम सरीरी रूप निरमया ॥४६६॥
 रतनमाला गर्भ भया सुग्रीव । जानै धरम करम की नींव ॥
 दिन दिन बढ़त सयाने भये । विद्या पढि पढित अति थये ॥४६७॥
 राजनीति का जाणै भेव । मनमे जपै सदा जिणदेव ॥
 सदा रहै हिरदै मे ज्ञान । सम्यग् दृष्टि निश्चल ध्यान ॥४६८॥
 सुरतिवत पराक्रमी घने । दुरजन कपै नाम के सुने ॥
 किषिपुत्र अचछर रज राय । हरीनाथ प्रिया सोमै पट ढाढ़ ॥४६९॥
 प्रथम पुत्र जनम्या नल नाम । दूबा नील दया का वाम ॥
 धरम सरीरी उजली देह । महा पराक्रमी धरम सनेह ॥४७०॥

सूरज रज उषण्या बरराज । राजरिज सखी ही स्वाव ॥
बालि कुमार प्रति सोण्या राज । सुग्रीव ने कियो बुवराज ॥४७१॥

राज्य प्राप्ति

परहितमोह मुनिवर के पास । दिव्या लई मुक्ति की प्राप्त ॥
राजा बालि प्रतापी खरा । रामावली सखी में बरा ॥४७२॥

तातैं व्याही सी और । तातैं अधिक बिराजैं ठौर ॥
विजयार्थ मेघपुर नाम । तार्कें पुत्र वरदूषण नाम ॥४७३॥

चन्द्रनगानें चाहै हरषा । निसवासर लंका में बड़ा ॥
दसानन कुंभकरण तैं डरै । भभीषण का मय बिस बरै ॥४७४॥

दसानन गया जात्रा मेर । परदुषण आया तिह बेर ॥
चन्द्रनगा हरि बढया विमान । लेकर गयो आपणैं धान ॥४७५॥

कुंभकरण भभीषण दोउं बीर । भैसी सुनि परजले तरीर ॥
मन माहि ते कर आलोच । अन्नपान छोडया मन सोच ॥४७६॥

रतनअवा धर नरपति बने । कहूँ कि बाकीं गहि कर हने ॥
सेन्यां जोडि विजयाडैं चले । दसानन आबतां मारम मिले ॥४७७॥

संजलि चन्द्रनगा की बात । कपी देइ वसीना नात ॥
इतनी सेन्यां का क्या काम । एक ही करै ते करौ सगास ॥४७८॥

छिन्ने मारि सब परलय करो । उनपरि कहा बडम आपणैं ॥
मन्दोदरी सीख हम भने । कन्या धर राख्या नहि बने ॥४७९॥

उत्तम कुल उनके भी धरे । चौदह सै बेचर उरल धरे ॥
विद्या सहस्र है बाके तीर । साहसैवत महा बलवीर ॥४८०॥

जो तुम बाकी डारौ मार । तो विषवा होसी बहण तुमार ॥
तब बाको दूषण बति होय । तुमने भला न कहसी कोय ॥४८१॥

अज जो विमा करो तो भला । हूँ सेवक हूँ करि भावैं चला ॥
जो तुम जुब करण का चाड । तो अब बालि सुग्रीव परिजाड ॥४८२॥

उनको धिग बीते हूँ बने । न करै सेव हूकम तुम तने ॥
आम्मा भावैं नाहूँ बाल । बेग माहि दूह दासो साल ॥४८३॥

दसानन सुनी विद्या सो कहै । जो ये मुक्त आम्मा मे रहै ॥
हूँ उनकी नहीं मानू संक । वे हम सँ कहा करि हूँ बंक ॥४८४॥

बहुरि भगी मंदोदरी वैन । सुणु कथा बित राषो चैन ॥
 पाताल लका चंद्रदक्षि रहे । अनुराधा राणी सुख लहै ॥४८५॥
 चन्द्रोदक्षि सहज मरि गया । राणी तब बनबासा लिया ॥
 बनमे भया पुत्र परसूत । बलिनामे लक्षण संयुक्त ॥४८६॥
 विद्या सीख भया बहु गुनी । अपने मन राखे प्रतिमनी ॥
 वालनभीष मिल्या बल आय । दोन्यू रहैं प्रीत अधिकाइ ॥४८७॥
 तेमे सुणि करि भेज्या दूत । और बात प्रति लिखी बहुत ॥
 पहुँच्या किपंदपुर जिहा बालि । पत्नी ताहि सौपे दरि हाल ॥४८८॥
 दसानन नम भूपति नही और । जाके बल को नाहि और ॥
 तुमारे पुरखानें दर्द भूमि । बे सेवा करते तजि भूमि ॥४८९॥
 तुम भी मानु उनकी भान । ज्यों ए रहैं तुम्हारे प्रान ॥
 अब तुम साथि हमारे चलो । श्री प्रभा कन्या ले मिली ॥४९०॥
 ज्यो तुम्ह देश परगने देइ । आदर सहित नगर मे लेइ ॥
 बानि नरेस कहै समझाय । मैं पद नमू जिनेश्वर राय ॥४९१॥
 कैसे ताहि नमाऊ, सीस । मेरे बडा अछैं जगदीस ॥
 दूजा नै प्रणामू किस भाति । मैं भगवंत सुमरउं दिनराति ॥४९२॥
 उह भैया है क्या बलवान । मुझने वचन कहै इस भाति ॥
 जो हू लंक उपरि चढ़ि जाउ । मागे उलटि सब उसका वाउ ॥४९३॥
 उठां कोय चल गहै तरवार । मारउ दूत मिलाउ छारि ॥
 भव बल का कर पकरं बाल । दूत न मारं को भूपाल ॥४९४॥
 योह बल निज पति का वैन । आया हमे सदेशा दैन ॥
 धका दिबाय कर दिया निकार । गया दूत फिर उतनी बार ॥४९५॥
 सकल बात व्योग सौ कही । तुय तैं लिख सम मानै नही ॥
 लंकपति सेना सब टेर । देमपति साथ लिये तह बेर ॥४९६॥

पुनः वर्णन

चाल्यो दल छायो आकास । पहुँचे किकंधपुर कै पास ॥
 बाजा तब बाज्या बहुजोर । गाम घेर लीन्हा चहुं ओर ॥४९७॥
 बालि भूप नै भई संभार । नल नील आए जु कुमार ॥
 सूर सुमट सब एकठें किये । हय गय रथ बाहुन बनु सिये ॥४९८॥

चडे कोपि जिख पर केहरी । देखत ही सब की सुधि हरी ॥
 बजे भुभाय गुरी पलान । दुहु बा धाए सूर सुजान ॥४६६॥
 हाथ गह्या नागी तरवार । दुहुवां पडे बाण की मार ॥
 बरखी हाथ धनुष सर लीये । ताकि मारे भरिबण कै हिये ॥४७०॥
 कोई सुभट नदा कर गहे । तब सागर मत्री इम कहै ॥
 पंडित गुंनो अधिक मुजान । वचन बालि प्रति जपे आन ॥४७१॥
 सैन दसानन की है धनी । तुम हो एक नगर के धनी ॥
 उन सगली जीती है मही । बा समान कीई बेचर नही ॥४७२॥
 चन्द्रहास जो मारै षड्ग । तो तुझनै ह्वै बहुत बधसगं ॥
 इतना जीव मरै रण माहि । घर घर सोग बधे दुखदाय ॥४७३॥
 इन जीवा को क्यों ल्यो पाप । अब तुम पिमां करो प्रभु आप ॥
 बालि कहै मत्री सुणि बात । देखि भु इणै लगाउं हाथ ॥४७४॥
 सब सिपाय मिल इकठा होय । एक सिंह नबि जीतै कोइ ॥
 इणका काल लिख्या इण ठाम । मारौ ठोर मिलाउ नाम ॥४७५॥
 मंत्री फेर वीनतौ करे । बाकी सर भर क्यों बल घरे ॥
 ज्यों मनुषां केहर नें गहे । पिजर माहि परबस दुख सहै ॥४७६॥
 वह तुमनें पकडै करि घेर । तातै करौ छिमा इस बेर ॥
 बहुरि बालि मंत्री सों कहै । सूरापन बिमा तै न रहे ॥४७७॥
 भूप कहै इन मांजी हारि । चरचा इम बानै ससार ॥
 मस्तक में नाउं भगवत । मुणिए पै बरत गह्यो इण मंत ॥४७८॥

बालि द्वारा बीसा ग्रहण

जो अब जाइ मिलु तजि जंग । तो होबे मेरा बत जग ॥
 सुग्रीव नै सौप्या सब राज । आपण किबो मुक्ति की साज ॥४७९॥
 समनचंद्र मुनि पासै जाय । दिक्षा लई मन बच कम काय ॥
 बारह अनुप्रेक्षा चित धरै । मास उपास पारण करै ॥४८०॥
 तेरह बिष पाले बारिच । जीत्या क्रोध सोम मद सत्र ॥
 बाईस परीसा सहै सरीर । मन बच काया राधी बीर ॥४८१॥
 निम्न दिन चिदानंद लिख लाइ । विद्या सिद्ध भई तब आइ ॥
 बल अनंत विद्या गुण डेर । भू उलटत नही लागै बेर ॥४८२॥

मुनि के चित्त दया का भाव । नाँ कलू हरष नही विसमाव ॥
 धरम उपदेस सुणै भवि लोक । मुनि सार्वै निस वासर जोग ॥५१३॥
 करि बिहार पहुते कैलास । दरसन किया भुगति की भास ॥
 वारहविष लाथा तप ध्यान । बाहर भ्यंतर उत्तम म्यान ॥५१४॥
 सुग्रीव दशानन पासै गया । श्रीप्रभा सुं विवाह कर दिया ॥
 पटराणी बापी तिहू धरी । पाछै व्याही धणी असतरी ॥५१५॥
 सुग्रीव ने सौंप्वा निजपुर राज । सो फिर करै भूष का काज ॥
 नीलकमल बिजयारष देस । तिहा रहै नील कमल नरेस ॥५१६॥
 श्रीदेवी राणी तसु गेह । रतनावली पुत्री सुभ देह ॥
 दशानन व्याही रतनावली । भोग भुगति माने बहु रली ॥५१७॥

दशानन की कैलास बंढना

ह्वा ते बैठि करि चले विमोक्षण । गिरि कैलास परि धाप्यो भ्रान ॥
 तब मन सोच करै दशसीस । मन्त्री भणै सुणी नर ईस ॥५१८॥
 गिरि कैलास वहेतर देहुरा । तीन चौबीस रतन बिब धरा ॥
 बंदनीक हैगी इह ठौर । या समान तीरथ नही और ॥५१९॥

बालि की तपस्या

इए ठा बालि तपस्या करै । गिरा करण बिबाण नही टरै ॥
 सोभनीक तिहा वृक्ष उतग । फूलत फलत विराजै रग ॥५२०॥
 धिमकै सिला मानु रवि किरण । दरसन कीया दुख का हरण ॥
 गंगा नदी चलै तिहा धनी । उज्जल बरण सोभा जब बनी ॥५२१॥
 दशानन कोप्या तिहबार । जाणै परबत लेउ उखार ॥
 उलटो गिर सायर मे देउ । निज बल तरणी परिक्षा लेउं ॥५२२॥
 उतरया धाप भूमि पग दिया । त्रोध प्रति चित्त में किया ॥
 चडि परबत पर पहुतो तहा । करै बालि मुनिबर तप जहा ॥५२३॥
 ताहि देख करि भौह चढाय । हथेली काटई दात चबाई ॥
 निटर बयण मुख सेती कहै । तू यो ही देही क्यों दहै ॥५२४॥
 तेरे मन का क्रोध न घटपा । जैन धरम कछु तप करि सटा ॥
 झहंकार तें मनमे धरा । मेरा बिमान रह्या जो धरा ॥५२५॥
 धव तू देख कहा मैं करौ । परबत सहित सायर संचारौं ॥
 जो तैं सिध पाई कछु भली । भव कैं बचै तो जाणौं बली ॥५२६॥

धंसी भांति कहैं बहु बोस । मुनिबर साधैं तप अडोल ॥
 म्यान सहृद हैं धैर्य जती । राख दोष मनमें नहीं रती ॥५२७॥
 प्राया पर्वत कै तरहान । सुमरत विद्या ठाढ़ी बड़ी ध्यान ॥
 एक महरत एकैं बडी । विद्या धाई सकल तिहाँ गुरी
 देहु बेगु प्रभु प्राज्ञा, प्राज करां जिका फरमावो काज ।
 निज देही तब कीधी बडी, सब विद्या बाकैं सग बडी ॥५२८॥
 मारी एक गदा गिर धान । भई पातिका कूप समान ॥
 दसानन गया तब पाताल । गिर उठाय बिया ततकाल ॥५२९॥
 छत्र समान उठाया सीस । भुजा उचाई उभैं नीस ॥
 कपी धरती हात्पा रुख । ऊंची पडै परबत की कुंभ ॥५३०॥
 हस्ती घोडा करै चिषाडि । बरपे केहरि साइ पछाड ॥
 पंथी उडे हलै तह डाल । मानुं प्राया परलय काल ॥५३१॥
 अधकार दीसैं चिह्न धोर । चली नदी जल परबत फोर ॥

बाली द्वारा चिन्तन

मति श्रुति अवधि मनपर्यय म्यान । बालि साध तब करै विचार ॥५३२॥
 अवधि प्रमाण करि चितैं ध्यान । दसानन हैं या परबत ठाम ॥
 तिरण उपसर्ग किया इत प्राइ । कहा प्राश्चर्य मुझ छूटै काइ ॥५३३॥
 एक बार है मरण निदान । तातैं सोच न करिये ध्यान ॥
 होणहार नही टारी टरैं । विकलप एैं कारज नही सरैं ॥५३४॥
 बाल साध हम करै विचार । मुनिबर या तप करै विचार ॥
 के मुनि केवल लोचन सार । मति श्रुति अवधि मनपरजय कार ॥५३५॥
 कंचनमय अर्घ्य देहुरा । रतनबिंब अनसंख्या करा ॥
 गिरि उपर निवसैं बहु जीव । सब नै दुख प्राप्त दसपीव ॥५३६॥
 यह मुझ नै होसी अपलोक । इण परि बलि करै मन शोक ॥
 मुझ नै अर्घ्य ए तो पराक्रम । इसको तुरत गमाउ भ्रम ॥५३७॥
 दया निमित्त मैं लीषा जोष । अब इण पर मुझ वण्डी नियोग ॥
 जो हू इस पर कल कषाय । तो मुझ तप सहु निरफल जाइ ॥५३८॥
 अपने जीव का भय नवि करी । अबरा तणैं सोच चित धरौ ॥
 पर उचगार करै जी कोइ । ताको कछु वन दूषन होइ ॥५३९॥
 हम चितवी अंगुठा टेंक । भई विद्या ईक विद्या एक ॥
 बीस भुजा सहि सकैं न बार । ज्यों ज्यों दबई त्यों करै पुकार ॥५४०॥

तब लग नहीं टूटे दस सीस । बोझ व्याकुल हूँ संकीस ॥
 नीचइ पापी कर पुकार । ह्वा तैं कोई न सकै निकार ॥५४१॥
 रोवैं बहुत न निकसै कहू । अब हूँ किण पर मारग गढ़ू ॥
 रोवैं राण्या कर पुकार । विधवा भई हम माग मझार ॥५४२॥
 मुणिवर कै मन आई दया । चरण उठाइ मूमि तैं लया ॥

रावण द्वारा बाली की बंधना

तब रावण छुटघा तिह घरी । मान भग हूँ अस्तुति करी ॥५४३॥
 गयो आप तिहा बैठा जती । ताकै लोभ न बपु एको रती ॥
 तप प्रताप सौं दिप देह । चिदानंद सेती अति नेह ॥५४४॥
 जंसे हूँ पाणी की कार । भैंसा भोक्ष मारग अहकार ॥
 रावण तीन प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि समता भई ॥५४५॥
 तुम महत घरम घर भीत । तारैं घरी घरम की रीत ॥
 मैं पापी भूरख अग्यान । पडघो मोह फदा मे भान ॥५४६॥
 पाप करम मैं किया अघाय । तैं दुख किम करि भेटघा जाय ॥

दीक्षा लेने के भाव

अब तु मो प्रभु दिक्षा देह । बाह पकड़ अपनी ढिग लेह ॥५४७॥
 चद्रहास तब दीनो डारि । गदा गोमती सब हथियार ।
 मुकुट सीस ते डारघा तोडि । विद्याभरण दीने सब छोडि ॥५४८॥
 कपडे तनके डारे फार । मन वैराग्य घरघा तिह बार ॥
 करी वंदना चौबीसी तीन । बार बार बील आधीन ॥५४९॥
 तुम भगवत हो तारण तरण । हू आयो प्रभु तेरी सरण ॥
 मैं दीक्षा ले सकु चरण । मेरे होउ पापो का हरण ॥५५०॥
 आसण कप्पा घरणी देव । जेसठ सिलाका होइ न छेह ॥
 इनका भैंसा अछैं नियोग । मुगत तीन बंड का भोग ॥५५१॥
 भैंसी चित आया कंलास । पूजे धी जिए मन उल्लास ॥
 रावण सु घरनेन्द्र हम कहे । तेरे दया भाव चित रहै ॥५५२॥
 तैं तो भगति करी मन लाइ । मैं सुणि घरम आया इस ठाइ ॥
 जो तेरे मन इच्छा होइ । मुझ पै मागि लेहु तुम सोइ ॥५५३॥

रावण बिनबै मांगु यही । करूं तपस्यां जिण पद गही ॥
 छोड़ुं सकल राज का मोह । बग बंचन है भावा लोग ॥५५४॥
 पुत्र कलित्र न संगी कोइ । संपय तणां विछीह होइ ॥
 ऐसा ये ससार सरूप । नटवत जेव करै बहु रूप ॥५५५॥
 जौनि फिरघो चौरासी लाख । समकित की परतीत न साख ॥
 नौ इह भ्रम्यो सकल जग बीच । कवहुं उत्तम कवहुं नीच ॥५५६॥
 मनमे कवहु नायो सांच । विषय किये भर इंद्री पांच ॥
 इक इंद्री सुख मुगतण हार । ते भवमें दुख सहुँ अपार ॥५५७॥
 पाचु इंद्री विषय सयुक्त । सेवत पामे दुख बहुत ॥
 पाच चोर काया मे रहैं । ए जीतैं तब सिव सुख लहैं ॥५५८॥

घरणेन्द्र द्वारा शिक्षा

तब बहुरि बोले घरणेन्द्र । तुम राजा पृथ्वी के चन्द्र ॥
 तुम बिन दुख पावेंगे लोग । चौथे आश्रम लीजो जोष ॥५५९॥
 मैं भ्राया अब तेरे पास । मांगि सिध ज्यौं बुरूं घास ॥
 दिन को ज्यौं चिमकें बीजली । वरवै मेह पुरै मन रली ॥५६०॥
 देव सरण जे भेटे भ्राय । ये दोन्यु निरफल नहीं जाय ॥
 रावण जपै सुणि घरणेन्द्र । देह देव जो तुभ उर बिन्द ॥५६१॥
 सक्ति बाण रावण प्रति दिया । ताका भेद गुण समझाइया ॥
 जाके हिये लगै यह बाण । ताके गुण का इहै परमाण ॥५६२॥
 ए करण ऊपर होइ जाय । बह जीवै नही किसही उपाय ॥
 घरणेन्द्र देव गया पाताल । रावण मन मे भयो विकराल ॥५६३॥
 एक मास परवत पर रह्या । चित मे धरम जियेंसुर गह्या ॥
 समझावै परिषण सब भ्राय । मंत्री कहै ग्यान समझाय ॥५६४॥
 अब फिर चलो करो निज राज । तुम बिन विगडै सगरे काज ॥
 व्यापि दान तुम दीज्यो नित । पूजा करि पालो समकित ॥५६५॥
 रावण पट्टतो लक नरैस । करै राज सुख पावै देस ॥
 बालि जती लहि केवल ग्यान । धरम प्रकास गए निरवाण ॥५६६॥
 इसि श्री पञ्च पुराणे बालि निर्वास विचित्रार्क ॥

नवम विधान-क

अतिगति का विवाह

चौपई

छोटपुर नगर हुतासन भूप । हरियल राणी महा स्वरूप ॥
 अतिगति पुत्री ताकें उर भई । रूप लखन करि सोभै नई ॥५६७॥
 चित्रागद राजा कै साहसगति पूत । साहसीक बहु गुण समुक्त ॥
 एक दिन दृष्टि पड़ी अतिगता । देखत बड़ी काम द्रुम लता ॥५६८॥
 जाय पिता सैं विनती करी । हुतासन की ब्याह पुत्तरी ॥
 राजा ततक्षण भेज्या दूत । लयी विनती बचन बहुत ॥५६९॥
 मेरा पुत्र बहुत गुणवत । जाकै बल पौरव नही अंत ॥
 अतिगति पुत्री तुम या को देहु । मेरा बचन मान अति लेहु ॥५७०॥
 अवर दूत भेज्या सुग्रीव । वानर वंशी अति उत्तम जीव ॥
 राजा सोच करे मन माहि । पुत्री समझि दीजिये काहि ॥५७१॥
 मुनि चद्रस्वामी पै जाइ । नमस्कार करि लग्यौ पाइ ॥
 मेरे मन संसय भयो आइ । उभय दूत पठिए द्वै राइ ॥५७२॥
 कन्या किसकी संबंधिनी । अबधि विचार के भावो मुनि ॥
 बोले मुनिवर ग्यान विचार । सुग्रीव की हैं आव अपार ॥५७३॥

सुग्रीव के साथ विवाह

साहसगति की है अल्प आव । कन्या देहै सुग्रीव कुं भाव ॥
 राजा का संसय मिट गया । मगलचार सुग्रीव सूं ठया ॥५७४॥
 पंच सबद बाजैं तिए बार । बाभग पढै वेद भकार ॥
 रहस रली सू भयो विवाह । दोउ कुल मे बहुत उछाह ॥५७५॥
 भए बिदा किकधपुर गया । दपति करे भोग नित नया ॥
 भया पुत्र एक गर्म अनग । दूजे अगद लहर तरंग ॥५७६॥
 महाबली है दोनू वीर । पराक्रमी अरु दिव्य सरीर ॥
 साहसगति कै हिरदै दाह । अनिगत सुग्रीव ले गगा विवाह ॥५७७॥
 छलबल कनिकै बाकूँ हरू । मनचाछित सुख तासो करूँ ॥
 जब लग अतिगति भेट नाहि । तब लग रहि है मुझ मन बाहि ॥५७८॥
 हेमाचल पर्वत पर गया । विद्या हेत तपस्वी भया ॥
 रावण साजे सकल नरेश । आण मनाय किये बसि देस ॥५७९॥

रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार

दुरजन रह्या नहि किय ठाय । इन्द्र ऊपर तसु भई चठाइ ॥
 देस देस लें आए राव । परदूषण मन चित्या दास ॥५८०॥
 घेसी बार रावण पै जाउं । वासु' मिलै मिटे अंतराव ॥
 भली भाति मिलवे कू चले । चउ देस भूषति सग भलै ॥५८१॥
 रावण सुनि सरदूषण बात । महा सुख मान्या इण भात ॥
 भली बार परदूषण आई । तानू भाइ मिले गल लाइ ॥५८२॥
 चढि सब अपणे चले विमाण । बोझल भया अवं रय भांण ॥
 बाजे बाजै धुरै निसांण । हस्ती गरजै मेघ समांण ॥५८३॥
 एक सहस्र द्यौहनि अर एक । एक सहस्र सुर दल की टेक ॥
 पुष्प विवांण परि बैठा आप । मनमे जपै श्री जिनैस्वर जाप ॥५८४॥
 सुमरण किये मनबद्धित सिध । सुख संपति पावै बहु रिध ॥
 रवि अस्ताचल ओझल भया । परवत पर इनी बासा लिया ॥५८५॥
 सेज्या परि पौढइ सब मू । शशि उडगण की जीति अनूप ॥
 भयो प्रभात उठे सब लोम । नोबत बाजै हर्ष प्रयोग ॥५८६॥
 गावै गुणियन राग बहोत । रवि की भई किरण उद्योत ॥
 रावण बैठा कचन पाट । विरद बषाणै जाचक भाट ॥५८७॥
 कंचन कलस नीर सु भरै । करि सनान फिर सुमरण करै ॥
 तुरी पलाण भये असवार । रमवाताल गए तिहु बार ॥५८८॥
 पाल मनोहर निरमल नीर । हुंस आवि रंधी बहु तीर ॥
 जलचर जीव बिराजै ओर । पछी करै कुलाहल सोर ॥५८९॥
 बैठक छत्री चाकूँ छूँट । मंदिर वण्णा बीच बरि सूत ॥
 किकर आई बात जो कही । मै देखि है उत्तम मही ॥५९०॥
 तिहां तुम प्रभु उतर्यो बाइ । सुख पावै सेना तिण ठाय ॥
 महिषमती नगरी है तिहा । मानसरोवर सोमै जिहा ॥५९१॥
 तार्क निकट रावण उतरधा । सकल सैन सो बन बह भरधा ॥
 डेरा सोमै सुरंगी रग । आशूषण सोमै अति चंगि ॥५९२॥
 सहस्ररश्मि राय सरोवर माहि । सहस्रनारि शंख करै उछाह ॥
 दीसैं लोचन जेम कुरंग । क्रीडा करै मूप के संग ॥५९३॥

चौकी बंठी घाटी घेर । कोई न अलकैं तिहूँ बेर ॥
 जलश्रीडा सरोवर बीच । बेलैं राणी माची कीच ॥५६४॥
 अजलि भरि भरि नीर उछाल । असे बेलैं तिहां मूपास ॥
 राजा लीने कमल उषारि । मारैं उने मनावैं हारि ॥५६५॥
 कोई रुठि रहै मुष मोरि । ताहि मनावैं मूष बहोरि ॥
 विविध प्रकार की श्रीडा करो । गावैं मगल सब मिलि तिरि ॥५६६॥

रावण द्वारा जिन पूजा

वे अपने मन निरभय घरे । रावण पूजा नें चित घरे ॥
 सामग्री पूजा की सौज । निज यानिक साजा करि चौन ॥५६७॥
 अष्ट द्रव्य सौं पूजा करै । श्री जिनवाणी मुख उक्तरै ॥
 जल धारा का हह विचार । त्रिषा दोष मिटे ससार ॥५६८॥
 केसर चंदन जिए ए दले । भव आताप मिटे सषए ॥
 पद्म चढावैं जिए प्रतिबिंब । सीलन टरै रहै मन धम ॥५६९॥
 उज्ज्वल अक्षत षंडित नही । इए विष पूजा कीजे सही ॥
 नेवल थाल चढावैं परे । क्षुध्या आदि दोष हरे ॥६००॥
 दीप चढावैं रतन समान । निश्वै पार्व केवल ग्यान ॥
 पेंवें धूप सुगंध निमित्त । आठ करम जर जावैं अत ॥६०१॥
 फल जु चढावैं जिग पद पास । पार्व मोक्ष तरणा आवास ॥
 विनयवत ह्वैं भारती करै । ऊछलैं जल रावण दिग परै ॥६०२॥
 रावण कै मन चिता होइ । असा निडर इहा नही कोइ ॥
 उन कछु करी न मेरी काणि । जिनवर कै डर करधा न जाणि ॥६०३॥
 अब देखउ दूँदो तुम जाइ । बेगि बाधि आनि इस ठाइ ॥
 गई घौस तिहा बेलैं राय । रखवाला वरजै मति जाय ॥६०४॥
 मूर मुमट भीतर घसि गये । बाकुं देखि अवभित भए ॥
 तू इत नैं हिव नीकलि मूढि । में तोनैं अब पाया दूँडि ॥६०५॥
 तू अब चल रावण के पास पास । जो चाहै जीवण की आस ॥
 प्रीर जो तू मन रावैं भर्म । देख जु अब कछु ह्वैं हे कम ॥६०६॥

रावण का सहस्ररश्मि से मुक्त

राजा निकल्यो बल तै दूरि । आयुषण पहरण भर पूर ॥
 मस्त बाँधि कर भया तयार । सूर सुमट सब लिये हुंकार ॥६०७॥
 ऐसों बात रावण पै गई । सैन बहुत तिन आपण लई ॥
 मिले परसपर माँची राड । जैसा सू तैसा करे बार ॥६०८॥
 सेना भूमि बौक थी जरी । रावण आया बाही धरी ॥
 अपणो भागते देखे लोग । सहस्ररश्मि कै कछुवन सोग ॥६०९॥
 फिर संभालि करि धीरज दिया । मार मार बन्द बहु किया ॥
 रावण कै सम्मुख होय लरै । दससिर का कछु भय नवि करै ॥६१०॥
 धनुष गह्वा सर छोडे घने । निरभय होय सर्व ही हुने ॥
 रावण मनमे अचिरज धरै । मेरे भागै जम से टरै ॥६११॥
 यह तो दीसै है अति धीठ । पाकै मुझसे टरै न दीठ ॥
 धनुष ताण करि मारघा बाण । रुधिर चाल्या धारा धर मान ॥६१२॥
 तब रावण हस्ती पर आय । सहस्ररश्मि नै मारै चाह ॥
 दोउं बायाबाय जु लरै । हस्ती तै धरणी पर गिरै ॥६१३॥
 कबहु ऊपर कबहु तलै । महाबली ते इणपर लरै ॥
 बहुत लोग रावण के आय । सहस्ररश्मि नै बाध्यो राह ॥६१४॥
 बाकु भेज्या लका बाधि । मारग चलत लिया नूप साथि ॥
 रजनी भई लिया विश्राम । सुख सेन्या सूते उस ठाम ॥६१५॥
 बाजे प्रात समै बहु बजे । सबद सुनत सब का मन रजै ॥
 रावण उठ सामायिक किया । सिंघासण ऊपर पग दिया ॥६१६॥
 राजा आय करै नमस्कार । मुकटबंध के नूप हजार ॥

सतवाहन मुनि द्वारा उपदेश

सतवाहन मुनिवर तप सूर । अनतवल है रिद्धि भरपूर ॥६१७॥
 आवै लोम मुनीश्वर जात । सहस्ररश्मि की भाषी बात ॥
 रावण तुमारा सुख बाँधिया । बदीनाने से कर दिया ॥६१८॥
 सुणी पुत्र की किता धरी । उनीं माया सब की परिहरि ॥
 फिर कछु दया भाव भित साय । मुनिवर उठि रावण पै जाय ॥६१९॥

रावण साध को दरशन देवि । सफल जनम कीनों बहुलेश ॥
 उत्तर सिधासरा करि डंडोत । रावण भस्तुति करी बहुति ॥६२०॥
 सकल सभा कीनो नमस्कार । धर्म वृद्धि दीली तिरुवार ॥
 सिधासरा बंठाण्या मुनी । बंयावत कीधा नृप बनी ॥६२१॥
 हम भावै थे वनह मभारि । विबनां पूरी इच्छ हमार ॥
 तुम प्रभू हम पै करतारथ किये । तुम दरसन सुख पायो हिए ॥६२२॥
 अब सेवक प्रति आग्या देहु । ज्यो मेरो भागै सदेह ॥
 किरण कारण याँ कियो गभरा । स्वामी वचन तजि भाषत मौन ॥६२३॥
 कहे साधु तुम सुणु नरेस । मानो तुम म्हारो उपदेस ॥
 महस्वरजिम नैं छोडो राउ । या कारण आया इस ठाँव ॥६२४॥
 रावण बहै सुणो प्रभु जती । मोह पुत्र का है कछु पिति ॥
 जो तुम आग्या देते मोहि । मे छोडतो प्रभू अब तोहि ॥६२५॥
 तुम आपरणे कीधे वेद । मायाजाल कीये सब भेद ॥
 मुनिबर बोले चित्त विचार । सकल जीव मेरै इकसार ॥६२६॥
 दया हेत आया तुम पास । अभयदान दीजे मुखवास ॥
 रावण कहे मुणी मुनिराइ । हमसे सकल मिले नृप भाइ ॥६२७॥
 महस्वरजिम अति कीनी मनी । मिलन न आया सामनी ॥
 हम पूजत है श्री जगदीश । तउ उन आया नमाया सीस ॥६२८॥
 जल उछालि डारघउ तिरण ठाव । मोकुं चढधा क्रोध का भाव ॥
 लोम बंदाया उसकै पास । उरल तो करपा प्राण का नास ॥६२९॥
 तब मै आप बेग आइया । हमसौं चरण जुच तिरण कियाँ ॥
 मै इसनें लीया था बाधि । तुम आया थी छोडु साध ॥६३०॥
 बेडी हास हयकडी काटि । आभूदण दीने मन आट ॥
 ले आए तिहां रावण भूपि । राजसभा मे दिवै अनूप ॥६३१॥
 नमस्कार करि कभा भया । रावण सलहै पोरष कभा ॥
 बहुत भांति करि स्तुति करी । इसा चाहिये रण की बडी ॥६३२॥
 या सम सुभट न दूजा कोइ । मो सौं सगमुख लडधा न कोइ ॥
 मेरा भय कछु चित्त न चरधा । मेरे सम्मुख आछा लडधा ॥६३३॥

इसने करिहु सेनापति सिंहासन छोड़ रती ॥
 रावण अस्तुति कीनी बनी : कीर सराह करै सब दुनी ॥६३४॥
 सहस्ररश्मि की बिरबानली । एक एक की कीरत बली ॥
 रावण मन तै भया मन भंग । बहुर न करी राख सौ शीत ॥६३५॥
 सर्व मिलिबली राख विभूति । रूप सब सखी सखी पूत ॥
 जे मैं केव करी सलबीच । तो तो बोकूँ ऊबपी बी भीष ॥६३६॥

सहस्ररश्मि द्वारा शुद्धि दीक्षा

अब हूँ दिव्या लेखु जाव । करो तपस्या मन बच काव ॥
 रावण जेपे सुनहु नरिव । मैं वरदाय भवा सब निव ॥६३७॥
 धरणेन्द्र मोक्ष समझाया फेर । कियो प्रध्वीपति रय फेर ॥
 तुम बालक जीवन भरि देह । बयो करि तपस्यों भरि हो नेह ॥६३८॥
 जैन धरम दुष्कर है घना । भूमि सेज करिस्मो पोइखन ॥
 बार्स परित्या कैसे सहै । क्षुधा त्रिधा दुख तन को दहै ॥६३९॥
 अब तुम राज करो आपणों । छहूँ रिनु दुख पावोये घणा ॥
 श्री जिनवाणी निश्चय ध्यान । दान प्यारि दो सक्ति समान ॥६४०॥
 सब नरिव मे तू सरदार । निरभय पालो राज द्वार ॥
 श्रीप्रभा मंदोदरि की बहन । करी व्याह जे हूँ दुख बहन ॥६४१॥
 रावण बहुत प्रकार समभाव । वाका मन न चलै किछ ठाढ़ ॥
 सनबाहन पै दिला लई । जनम जरा की संका गई ॥६४२॥
 नगर अजीष्ठा पूरब देस । सहस्रकिरण तहा धरो तरेस ॥
 सुणी सहस्ररश्मि की बात । पुत्र राज मह्य तीई आंत ॥६४३॥
 आपख गई दिक्षा उख जाइ । अणु भूष आधा इत ठाय ॥
 अभिमंथन सुत ने वे राज । आपण कियो दिक्खर साज ॥६४४॥
 रावण सुँ उत्तम काम करी । आवत कैवल दिव्य की घरी ॥
 आतय ध्यान लगावा जोग । पावैने वंशम गति भोग ॥६४५॥
 इति श्री बन्धनुरासी सहस्ररश्मि अष्टौ विमलक ॥६॥

शरणाग्र विष्णुभक्त

शरीरार्थ

सरोवर निकट क्रिया दोहरी । आदिनाथ रचना सौं बरी ॥
 बीस बिंब जिए प्रतिमा किये । भई प्रतिष्ठा बरौं नये ॥६४६॥

देस देस सैं अन्धे लोक । बलि आये बंदख जिए जीव ॥
 नरपति आय बहुत तिल मिलै । आदर भाव किये तिए भलै ॥६४७॥

सगला ने दीन्ही ज्योहार । बहु विष कीये व्यजन सार ॥
 अष्ट द्रव्य सुं पूजा करी । पंडित पढी जिनवाणी बरी ॥६४८॥

दीन दुखी जन दीनों दोन । सब हो का राधा सममान ॥
 बरम जुगति कीनी तिहां बनी । बरम तीर्थ की सोभा बरी ॥६४९॥

यज्ञ भेद की चर्चा

श्रेष्ठिक राजा अस्तुति करी । यज्ञ भेद भावो इस बरी ॥
 श्री जिएबारी अगम अगाध । पूजित है प्राणी की साथ ॥६५०॥

गौतम स्वामी कहै अरथाइ । बारह सभा सुणै मन लाय ॥
 नगर अजोध्या राजा सुप्रतिष्ठ । श्रीकृता राणी समदिष्ट ॥६५१॥

बसु राजा

बसु पुत्र जनमिया कुमार । क्षीरकदम की सोभा सार ॥
 स्वस्तिमती बाकी अस्तरी । परपित पुत्र भया सुभ बरी ॥६५२॥

तीजा शिष्य नारद तिहा पढै । तीन्या की बुधि दिन दिन बढ़ै ॥
 चारण मुनिवर निकसे आय । कहै बात अपरौ सदभाव ॥६५३॥

मुनिवर जंपे इन महला एक । जाय जीव नरक में विवेक ॥
 धीर कदम सुनि कीया सोच । छुटी भई शिखा आलोच ॥६५४॥

बै अपरौ मन मांही रली । धीरकदम जिए आई भली ॥
 बल्या उषुं कै पीछे जायि । पद्मध्या धारण पूरण भायि ॥६५५॥

नमस्कार करि बिनती करी । प्रभु मोहि दिक्षा दीजे शुभ बरी ॥
 तुम संगति पंचमगति लहु । चरणकमल दिय तपस्या गहु ॥६५६॥

क्षीरकदम बैठ्या धरि मौन । परवत पुत्र घरकुं किया गौन ॥
 स्वस्ति मती तब कहै रिस्याइ । पिता साथ छोड़यो-किछु आई ॥६५७॥

धीर धीर प्रोधी जे कांख । तीकुं पितां आपणुं द्विग राखि ॥
 तब बोले परवत सभभाय । मोहि अनाउ दिया पठाव ॥६१८॥
 इहां दुर्बित जोवै बाट । हूं उन ब्याल्यार्ई मनै छांट ॥
 रयखु आई आया नहिं येह । बिता ब्यासी उन्की येह ॥६१९॥
 आस भयो उठि आस्यो पूर । पिता तराई चटलास पकृत ॥
 वहां नहिं देख्या आये गया । बन्मै पामा मौन कहि रह्या ॥६२०॥
 कहि प्रतापबी बलिबे येह । भयो दुर्बित कुटंब कुछ येह ॥
 इनतो माया मोह सब तज्या । सुत ज्वातै आया घर भज्या ॥६२१॥
 सब जतांत जननी प्रति कह्या । सुखी बात मात कुछ कह्या ॥
 जाय पछाड करै बिललाट । परवत पासि धुरीं सलाट ॥६२२॥
 तुम जोगीश्वर व्रत धरी । हमरी बिबि कछु नही करी ॥
 वाका ध्यान निरजन लम्या । बोले किसही कौण का सगा ॥६२३॥

नारद का आगमन

फिर आये घर बहुत उदास । नारद आया गुरुनी पास ॥
 गुरली मैं सभभायै बात । नदी नाव ज्यौं कुटंब संचात ॥६२४॥
 उतरे पार बिछुर सब गये । ग्रहमै संग परातम अए ॥
 सुपने केता इह सयोध । छोटि दिया संसारी भोग ॥६२५॥
 तातै करो मति कछु भी सोग । भवानंद मुनिश्वर साथै जोग ॥
 सुप्रतिष्ठत रूप आबोधा बनी । शीर कदंब की बबल न मुनी ॥६२६॥
 बसु पुत्र नैं सोप्या राज । आपणु किया सुवर्ति का साज ॥
 पाले परब्रह्म बसुब नरेस । निरभय राख करै भुवनेस ॥६२७॥
 नारद सम्बन्धुष्टी कुम्भी । परवत आए भिष्या बनी ॥
 दोक भरण सास्त्रन पढ़े । परवत मन मे घोड़ी मढ़े ॥६२८॥
 चरचा करै यज्ञ घर बाँक । कथ सहस्रत द्वै बिनि जान ॥
 पंच अनुकृत आवक करै । महाव्रत जोगीश्वर धरै ॥६२९॥
 पंच छमिति अथ तीन गुपति । अकारिस मूल बुद्धि संयुक्त ॥
 क्रिया बौरासी पाले सद । छह रितु सहै बाईस आपदा ॥६३०॥
 सुखम बावद जेते बंसु । दया भाव सुं राखै सल ॥
 बारह अनुप्रेक्षा सु बिचार । भवसागर तै उतरै पार ॥६३१॥
 जेपन क्रिया बुधावक करै । अपारि प्रकार दान विस्तारै ॥
 पूजा करै सामयिक दान । छह वरखन का राखै दान ॥६३२॥

बैल्याले करै प्रतिष्ठा भली । संव चलावै मन की रली ॥
सब परबत विज भैसे लही । अ्यारदान हैं नाही सही ॥६७३॥

नारद एवं परबत के मध्य बर्षा

तब पूछै नारद फिर बात । कौण दास दीजे किल भौति ॥
बोलै विप्र दास ए सही । कन्या गज घर दीजे मही ॥६७४॥
सत्री बौन मंदिर सतलना । सोना रूपा जवाहर घरा ॥
अज गज महिष अश्व को होमि । प्राशुष भली संवारै भौमि ॥६७५॥
गडहा छोडा लोद घरे । मच्छ कच्छ तामें ले घरे ॥
पडित विप्र वेद धुनि पढे । सकल जीव अग्नि में डढे ॥६७६॥
मास प्रसाद बाटि सब लाइ । जज्ञ किया बैकुंठा जाई ॥
नारद सुनि समझावै ताहि । ए उपदेस नरक पिति आई ॥६७७॥
जीव हतैर भौगो मास । उनकी कदे न पूरवै मास ॥
नीच गति वेहै भ्रम है घनी । ते दुख बरस सकं को गुनी ॥६७८॥
बोलै विप्र होम क्यूं होइ । हत्या करत डरे जो कोइ ॥
नारद कहै होमिए अचित । लगे दोष जालिये सचित ॥६७९॥
अज कहिए छह बरस का धान । हम गुरु मुखमयीं यो बखान ॥
ते हम होमै अग्नि मझार । जिस का दोष न लगे लगार ॥६८०॥
परबत कहै अज कहिए वोक । नारद मग मे धाली सोक ॥
दोन्यू कहै बसु नृप की साथ । चरचा करै सभा मे भाषि ॥६८१॥
जिसकी मूपति मानै साथ । जिसका बचन सब मानै पाथ ॥
जे हारै रसना दूँ पड । भैंसा मडपा बाद प्रचंड ॥६८२॥
दोन्यु पहुँचे राजदुवार । नरपति था तब महल मझारि ॥
फिर आये वे आपणी गेह । प्रात भए पूछैगे एह ॥६८३॥
परबत कही माता सौं बात । नारद करसी वाद प्रभात ॥
मैं अज कहुँ छाले का नाव । वह छह बरसी धान कहाव ॥६८४॥
जो हारै राजा की सभा । तिसकी जीभ होयगो अभा ॥
माता सुणि करि मुंडी बुन । करी नपूती सुत सो भनै ॥६८५॥
तू तो भूठ बोल्या बैन । पडपा कूप मे देषत नैन ॥
जो क्यौं जीवै कूप मझारि । राजा तोहि डारिहै भारि ॥६८६॥

तैं जे सवाई बाप की बुधि । जो तन नूति बई सब बुधि ॥
मोहि कहुया या राजा बोल । जो कहु कहु वस्तु अमोह ॥६८३॥
मनबांछित मागो से लेहु । मिश्राणी जी आज्ञा देहु ॥
तब मे वचन लिया निरवार । जब बाहुं दीजो तिहु बार ॥६८४॥

स्वस्तिमति द्वारा वस्तु राजा से वचन मांगना

अब मांगुं राजा पै जाय । भूँठ वचन तैं लेहुं छुडाय ॥
स्वस्तिमती राजा पै बई । आदर मान राख बहु बई ॥६८५॥
बार बार पूछै कर जोरि । कंसे कृपा करी इस ठौर ॥
मिश्राणी बोलै समझाय । मेरी दक्षिणा दीजे राय ॥६८६॥
बेय अजुली पाणी लेहु । अपणा वचन कहु सो देहु ॥
राजा सब अजुली जल भरपा । मागो जो चित भावै परा ॥६८७॥
परवत तणी कृपा सब कही । तुम बिन सरणागति को नही ॥
उसने सांचो करो नरिब । पुत्र भील मुझ सो भवनीद ॥६८८॥
राजा सुणि करि मीठै हाथ । बारबार पूछै निज माथ ॥
इण मिश्राणी मुझनै छल्या । इण यह बयण न बाध्या अला ॥६८९॥
भूँठ न्याय जो राजा करै । निश्चै अयोगति नरक पडै ॥
वचन दीया फेर किन्त जाति । असे सोचत बीती रात ॥६९०॥
आया नारद उठि परमात । परवत बल्यो कहु तुम बात ॥
राजसभा मे दोन्युं गया । ग्याल चरचा मे जाय सब गया ॥६९१॥
राजा कहै वचन बसि काज । परवत कहै सुमानो राज ॥
घरती फाटि सिंहासण बस्या । तब नारद राजा प्रति हस्या ॥६९२॥
अपति अजहू न्याय विचार । भूँठ कहे सिर बांधि है भार ॥
नृप बोलै परवत रूप देवि । सिंहासण घरती मे प्रेवि ॥६९३॥

नारद का वचन

नारद बोले सुनि हो राज । असत्य वचन का देखो भाव ॥
वे ही बयण बोलै भूपाल । आसण सहित गया पाताल ॥६९४॥
वसु भूपाल नरक में जाय । सहै दुःख तहा बिलसाय ॥
भूँठ अवै अरु करै अन्याय । ते प्राणी बहुते दुख पाव ॥६९५॥
सगली सभा अर्धवै गई । बहु फटकार विप्र नै गई ॥
पाखी बुद्ध बाप का मूल । राजा तैली अंधा ए मूल ॥७००॥

राजा मुह देखी जो करे । नरक निबोध क्या दुस्त नरे ॥

परवत द्वारा सन्यास

परवत ने प्रति चढ़या कलक । छोड़या नगर लोक की संक ॥७०१॥

सन्यासी पै दिक्षा जई जाय । पंच अग्नि साधे मन लाभ ॥

देही छोड़ि हुबो वह देव । अबधि विचार पाप कै भेद ॥७०२॥

घोड़स बरस की देही करी । कष जनेऊ धोती धरी ॥

गोपीचन्दन द्वादस तिलक । राने नयण सो अयो पलक ॥७०३॥

पौथी कापिर जटा लटकाय । भैंसा धरा देव नें भाव ॥

मेरा मुखतै निकली बात । मैं अब करउं जगत विख्यात ॥७०४॥

विप्र सन्यासी वेद पढाई । इह विष प्रकट करै सब ठाई ॥

पाप भेद भएँ जे विप्र । पाप बुधि मे भए विचित्र ॥७०५॥

महत्त राजा को सबोधन

सन्नत रिबिस्वर राजगिरि जाइ । राजा महत्त ससोध्या आई ॥

कहीक जज्ञ करो तुम एक । बडा रचाउ युगल अनेक ॥७०६॥

सकल जाति के आणौ जीव । रालो बाधि उणा की ग्रीव ॥

भौंदा खाडा खणवो बडा । तिहा उनने होम भरि बडा ॥७०७॥

बहै जीव पावैगे सुर लोक । होसी जस तुम लही हो मोक्ष ॥

होम जज्ञ विधि राजा बवी । देस देस ने दीन्ही चिठी ॥७०८॥

सब कुटब वाभण सब चले । देस देस के मूपति मिले ॥

जज्ञ की ठाम पहुते आय । ज्यारी वेद पढै तिहि ठाय ॥७०९॥

नारद कथा

श्रेणिक पूछै नारद की कथा । इसका था कुण माता पिता ॥

ब्रह्मरुचि ब्राह्मण परमातिरी । सन्यासी की दिक्षा धरी ॥७१०॥

दपति पंच अग्नि करि जोग । कबहु मानै मनका भोग ॥

कद सूल का करे अहार । भई बरभ धिति परमा नारि ॥७११॥

मुनिवर तत्र आई निकलै । देखे दपति जप तब तिहां करै ॥

मुनिवर वाव घरम की कही । उन होम्या बिल जिय से धरी ॥७१२॥

जैसे नर कीर्ति नहि धीर । बहुरि करै नहीं धर्मीकार ॥
 जे योगीस्वर माया गहे । परिग्रह बहुत लीयां जे रहे ॥७१३॥
 जिसका जनम प्रकारचे जाइ । अंतकाल पीछे पछिताय ॥
 तिलां मात्र न परिग्रह लेह । बाकी सब कोई उपमा देह ॥७१४॥
 जे तुम जीव करो घन तजो । माया छोडि जिनेस्वर जजो ॥
 ब्रह्म रवि का संसय मिट गया । स्त्री त्याग दिगंबर भया ॥७१५॥
 परमा कहै मोहि दिसा देहु । जैन घरम पालो घरि नेहु ॥
 बोले मुनिवर ग्यान विचार । गर्भवती नहि ले दीक्षा सार ॥७१६॥
 तब वह स्त्री बन मे ही रही । दसमास पूरण निरमई ।

नारद का जन्म

भवा पुत्र नारद रिष मुनी । माता मनमें सीधे धनी ॥७१७॥
 मैं दिसा लेकर तप करी । भवर न कछु चित्त मे धरी ॥
 या का निमित्त हाय सो सही । मेरे माया मोह कछु नहीं ॥७१८॥
 पाना माहि लपेटया पुत्र । तर तलि म्हेल्या लक्षण सुयुक्त ॥
 इन्द्र मालिनी अजिका पै जाय । लीन्ही दीक्षा मन बच काय ॥७१९॥
 बहा बालक नित बधे पुंनित । पुन्या कं कछु होय न चित्त ॥
 पुन्य रिक्षा करै सब कोइ । सगलें पुण्य सहाई होइ ॥७२०॥
 जबक देव जात हो चल्या । यस्या विमोक्षण न ह्या तें हल्या ॥
 अवधि विचारै सूर मन माहि । नारद मुनि हैं या बन ठाहि ॥७२१॥
 देव आव करि लिया उठाय । विजयाड्ड पशुंवांया आव ॥
 गुफा बीच ले राख्या बोल । देव करै ताकी प्रतिपाल ॥७२२॥

नारद का जीवन

विद्या पाँडि पारगत भवा । ब्रह्मस्पर्ति का सा लक्षण लिया ॥
 आकास गगनो विद्या पाइ । औड देव करि राजविर जाइ ॥७२३॥
 मनमे सोच करधि आपणै । बनमें लोभ मिलै क्यों बणै ॥
 कौण परबया नगर मझार । भीड़ जुडो क्यों इतनी बार ॥७२४॥

नारद मुनि देखें धरि ध्यान । ब्राह्मण ब्रह्म बैठे लिहि ध्यान ॥
 बहू तपसुं जिहा राखे धेर । होम क्रिया चाहें तिहि धेर ॥७२५॥
 निहा नारद मुनि पढ़ना ध्यान । जटाभुट घोटी तरहान ॥
 काथ जनेऊ पोथा लिये । हाथ कमडल फीची किये ॥७२६॥
 देव शब्द वाता संस्कृत । नारद जानि द्विज आदर कृत ॥
 नमस्कार करै सब लोग । वदनीक सब पूजण जोग ॥७२७॥
 मरुत ने पूछधा वृत्तान्त । जीव जत क्यों धेरे भ्रान्त ॥
 भएँ विप्र दर' को हूँ धात । अग्नि बीच होमैये प्रात ॥७२८॥

नारद का उपदेश

नारद मुनि विप्र सो कहे । मारधा जीव नरक दुष लहे ॥
 दया भाव सर्वज के बन । दूपन दीजे देषत नैन ॥७२९॥
 सकल आतमा आप समान । सब की बया कही भगवान ॥
 मरुत द्विज नारद प्रति भनै । रूप रेष अरु सबद न जिनै ॥७३०॥
 उन सरवज किम घापी दया । नू मूरिख बहू भेद न लिया ॥
 नारद बोले सुनि विपर भज । रूप न रेख जैन सरवज ॥७३१॥
 पाए भेद ए तो किय कह्या । जिसके कहै वेद तुम लह्या ॥
 महा अनर्थ लिखा जिहं बीच । ऐसा करम करै नहि नीच ॥७३२॥
 ब्राह्मण कहै ब्रह्मा का ग्यान । जिन सब रखी सृष्टि परबान ॥
 ए सब पशु होम के काज । ब्रह्म वचन महकिया साज ॥७३३॥
 नारद मुनि फिर उत्तर देय । जे ब्रह्मा सब कृष्टि करेय ॥
 ते सब हुए पुत्र समान । वाने दहन क्यों किछा बषान ॥७३४॥
 पशु तृणचारी है बनबास । इनके जिनका न करिबे नास ॥
 त्रिषा भूष रूप ए सहे । ऐसे दुःख छहैं रिखु लहे ॥७३५॥
 तिनको कहा कीजिए घात । हिसक है बिडाली जात ॥
 जीव बढ तैं मुक्ति न होय । आपण पाप करै जे कोय ॥७३६॥
 चारो गति ये सह संताप । जब ये आसि उदै हूँ पाप ॥
 मन वांछित नही पूजै आस । मवर दारिद्र तबै नहि पास ॥७३७॥
 जे गयंदनी मायस जरी । तुरी मरै हुसती गति बरी ॥
 गवही उदर तुरंग प्रभूत । तो हत्या तैं मुक्ति संयुक्त ॥७३८॥

राजा बन्धु ने बहुत हंकार । गरक छोड़ि बाँधे इस बार ॥
होती है उठि मुक्ति नै चली । तो जब दाह जाणौ मैं मरी ॥७३६॥

नारद पर उपकार

जन्म करघा राज मनवसीकरण । विषय पंच इन्दी का हरण ॥
संतोष विग्रह नै दलिया दई । केन लोचना ओष करेई ॥७४०॥
ध्यान अमनि मैं जाती कर्म । इस विष होन किसे हूँ चर्म ॥
विग्रह सन्ध्यासी लखो रिसाई । नारद परि सब आए बाय ॥७४१॥
कोई नू की कोई लात । नारद मुनि सारथी बहुत भाति ॥
नारद के मन उठयो ग्रहंकार । गही सिला सब उपरि मार ॥७४२॥
बे अनेक इहाँ एक सरीर । इरा विष परी नारद पर भीर ॥
पकड़ि लिया दोऊ कर बाधि । सास उसास पाई असमाधि ॥७४३॥
पापी मिलि दुख दिया बहुत । राबण का तिहाँ आया बूत ॥
देखा बाढा पसू अति जीव । नारद श्रुति की बाँधी शीव ॥७४४॥
सो देखि उपसर्ग सो पाछा फिरघा । देख पाप मन कोप्या सरा ॥
हिंसा बली कही नही जात । राबण सों कही रिष की बात ॥७४५॥

राबण द्वारा नारद की सहायता करना

राबण सेना तह। पठाई । कही मरत नैं बाँधी जाई ॥
बाजें नाक दींछे झुर । वसीं विता सु रही कर पूर ॥७४६॥
बाढा तोड़ि पक्षु सब छोड़ि । नारद श्रुति के बंचन तोड़ि ॥
राजा मरत बाधि यहै निघा । विग्रह सन्ध्यासी बका विषा ॥७४७॥
आग्या बीसी राबण दई । ए सब मारो पापी लही ॥
ए पापीष्ट पाप का मूल । दया बाध रहल के कहीं बूल ॥७४८॥
इनहि मारि थोड़ अथथोड़ । फेरन होष पाप का श्लोक ॥
जीव विनास बताने परम । मँसा करे शीघ्र का करम ॥७४९॥
इसके बारे का कही पाप । ए जीव नैं मारे बाध ॥
मारि इननै परलय कक । इनहि बेध तुम बहस्य करउ ॥७५०॥
नारद मुनि बित्त बांधी दया । राबण नैं उपदेश इस दिया ॥
ए बाधल उपाय कुल बने । इसना कंपट कुमारन बने ॥७५१॥

भादि पुत्राण मे कनका भेद । सुगौ भूप हू कहीं न भेद ॥
नाभिराय कैं रिषभकुमार । त्रियासी लक्ष पूरव राज सभर ॥७५२॥

शृषभ बर्णन

रही भाव पूरव लष एक । इन्द्रों के मन मया विवेक ॥
ए हैं शृषभ तीर्थकर देव । इनते चलई धरम का भेव ॥७५३॥
ए भाया मे रहे मुलाय । मन वैराग्य उपजै किहू भाय ॥
एक अपहरा थी पूरवीन । जाकी भाव घडी दोय तीन ॥७५४॥
राज सभा मे नाची भली । देख नृत्य उपजी मन रली ॥
निरत करत तहां पूरी भाव । खाइ पछाड पगी मुवि ठाव ॥७५५॥
बोले भूप उठावो याहि । याकी वेग गहो तुम बाह ॥
मंत्री कहैं यह पातर मुई । तत्र बैराग चिमक चित भई ॥७५६॥
छोडघा सब पृथ्वी का राज । आपण चले धरम के काज ॥
भरवै दिया अजोड्या राज । बाहुबाल पोयणपुर साज ॥७५७॥
अपार सहस राजा भए सग । दया भाव चित लहर तरंग ॥
वनमें बौनि गही जिनराज । राजा भवर उठे अकुलाइ ॥७५८॥
भूल छहमासी सहियन जाय । जो अपणो धरि चलिये बाइ ॥
तो फिर हमे भरत दुल देइ । श्रीम मनमे चित धरेय ॥७५९॥
वन फल लाई पीवै नीर । जोगी संन्यासी तप सहे सरिर ॥
एक हजार वरष भए बीत । श्री जिए उपण्या केवल चित ॥७६०॥
केवल बाणी संसय हरै । ताहि सुणत भव साधर तिरै ॥
चक्रवर्त्त भरत बहुबलि बंड । जिन भुजबल साधे छद्म बंड ॥७६१॥
लक्ष्मी जुडी भरबा मडार । जिसका गिरात न आवै पार ॥
गिर कैलास निखर देवुरा किया । रत्नधिव संवराया नवा ॥७६२॥
तो भी लक्ष्मी घाटे नहीं । दाए देण इच्छाउ मही ॥
कोई न लेम दान नै भाइ । तब वामण कूँ थापै राय ॥७६३॥
भादिनाथ स्वामी पे गया । बाहुला का व्योरा सब काया ॥
शृषभ देव की बाणी भाई । इह उपाधि तुम बापी नई ॥७६४॥
जैन धरम के निबक होइ । पाप उपदेस कहैंगे लोइ ॥
भरत भनै इह करिहू दूरि । सब को भारि गिराऊँ भूल ॥७६५॥

श्री भगवत चित्तं बंधा विहाय स कलं ब्रह्मलोकं दिव्यं सुखाय ॥
 श्रीवा वरए सरल सेतौ बुधा । बीटा वेदधन पाणि जुवा ॥७६६॥
 सुमं मि ब्रह्मसि किये संधार । तपसी ग्रहेस्त भये तिह वार ।
 तब तें पोर भये उत्पन्न । छौंछो इन ज्यौ पावो वन्न ॥७६७॥
 बांमरा छोडि दिख तत्काल । विनयवत बोलें मरत भूपाल ॥

रावण का कनक प्रभा से विवाह

कनक प्रभा पुत्री गुणमई । रावण प्रति विवाह कर गई ॥७६८॥
 एक बरत इस बीरवा ठाम । राजा मरत नें सुख के भाव ॥
 कनक प्रभा के भई प्रसूत । सिखा पृथ्वी स्मरण संसृत ॥७६९॥
 हेमाचल विर रावण गया । भूपति सकल भय करि नया ॥
 हेमाचल परबत रमणीक । ता द्विज भूमि ली सोमनीक ॥७७०॥
 महान् करण की इच्छा की । सब मिल भगवत मंतरी ॥
 ह्या के रहे परदेशी नाम । नाम लका है पुराण की ठाम ॥७७१॥
 उनही लोक जाणी सब कोइ । ह्या के वसी न कारज होइ ॥
 तब फिर की रावण की बर्या । देखे क्य सराई बला ॥७७२॥
 राजगिर नगर मे निकलवा भाव । देखे रूप रावण बहु भाव ॥
 कोई प्रहारी देखे कालि । कालि करीका ऊंची द्वार ॥७७३॥
 कई गली कई बाजार । सब किसे सोलह सिरामार ॥
 पुरुष रूप देखे सब लोक । देखे पुण्य सजोग ॥७७४॥
 जिणपद नगर जैसे नरस । रावण के भक्ति सब देख ॥
 मिला भयाङ्ग प्रस्तुति करी । पुत्री लान् बहो सुंदरी ॥७७५॥
 रावण भगवत बहुत उल्लास । देखे नगर सकल चहु पास ॥
 प्रजा सुखी इम बेह कधीन । रावण बीबी छोडि बनीस ॥७७६॥
 बहुत दिवस बीते इस गाव । बहुतो बने प्रापणे ठाम ॥
 सकल लोग भय भय उदास । के भय के रहते बामास ॥७७७॥
 उदर पूरणा कर वे लोग । या के प्राया गयो जियोय ॥
 पसाड बदी दोयज की बड़ी । रावण की भन दुखा बरी ॥७७८॥

वरदा घाठ बिस की भरी । चतुरवास की छांवण करी ॥
 सबही की पुंजी मन धास । राखण भुजें भोन बिलास ॥७७६॥
 रहै सतजन महल धावास । सोलह सहस्र राणि हैं पास ॥
 राग रग गावैं मल्हार । धंवरपै अति जन हन बार ॥७७७॥
 मोर ऊवार पपीहा रटा । चउथा मडी कावी घटा ॥
 बिजुली बिमकै गरजे घना । प्रेता सुख रावण नै बन्या ॥७७८॥

माप्रपद के अंत

कोई बठाउ बीजत जाइ । कीचड़ माहि बहुत दुख पाय ॥
 भादौ मास भरम का घान । पूजा वशी तामसी आल ॥७७९॥
 सोलह कारण का अंत करै । दया अंग निस वासर धरै ॥
 पूजा रचना में बीतै पडी । करवा करे जैनमत खरी ॥७८०॥
 दस लाखण का पाले अंग । बहुत वरत बारी ता संग ॥
 चदवा तणा बहुत देहुरै । रथ सुरंग विछवणा करै ॥७८१॥
 रतनअय अंत पाले भोग । मन बच काया साथै जोग ॥
 पूरणवासी पूनिम अद । रहस रली मनचे आनंद ॥७८२॥
 सब ही ने दीनी ज्योहार । बहुत बीनती कर अनुहार ॥
 पुष्य प्रसाद अधिक सुख भया । देस देस सुख भुलवा नया ॥७८३॥
 इति श्री बदनपुराले राजा दत्त अंत विधानक ॥

चौपई

दत्त विधानक

रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह

रावण मनमें समझै प्योन । कन्या देसकर आई प्रमोन ॥
 उत्तम कुल कोई देख कुंभार । करो काज सुख बरी बिचार ॥७८४॥
 बहुतें कक इन्द्र नर बीड । कंसी बात बणाइक जोरि ॥
 कन्या व्याह करि नीबक । मन बच का संसा परिहृक् ॥७८५॥
 मंत्री देस देस कौ जले । पुरपट्टन सब देखै जले ॥
 धाये मधुरा नगर मन्मार । हरिबाह्य नृप माधवी नारि ॥७८६॥
 मधुन पुत्र महा बलवंत । रूप लखन छवि सोभावंत ॥
 मन्महृष्टी महा विधिनि । नाम सुंशित सब कार्य सत्र ॥७८७॥

मंजी देख भया उत्हास । बिचनी पुरबी मनकी भास ॥
हरिबाहुल सु' कही अनुभास । मधु कुं'बर ने देहु पठाई ॥७६१॥
राकल पासि अला तिरु बार । मंजी बसुर अधिक असवार ॥
बरछी हृदय वही हृदियार । बाके गुल का अंत न पार ॥७६२॥
राकल पासि जब गया कुं'बार । नमस्कार करि करची जुहार ॥
अधिक रूप देखी भरि मेल । सुध मंजी बिनबै सुध बैन ॥७६३॥
मधु हरिबंसी है बलबंत । बिद्या बिनब बहुत मुलवत ॥
बरछी दई देखता सित । पुरजब देख भवै भवभीत ॥७६४॥
या सनमुख कोई रहे न सूर । बिद्यावर बेधिर भावै दूर ॥
अंसे गुणवर बीर के बडे । जिहां लग चाहै तिहां लग बडे ॥७६५॥
सेव तुमरि बित मे बरी । आया सेव करण इस बरी ॥
रावण देख किबा बहु भाव । टीका किया अधिक मन भाव ॥७६६॥
भली पढी सुध दिन साबिया । मंजलावार कुं'बर का किया ॥
सोबा दीना अनख झवार । आति आति की करी ज्योहार ॥७६७॥
मधु बिना समवे सुझार । अगन रहे मित भोग नझारि ॥
मुल मे बसै मधुपुरी देश । हरिबंसी सुल करै लखेख ॥७६८॥

मधु का ब्रतान्त

किर श्रेष्ठिक पूछै करि जोडि । मधु की कहो सुक बात बहोडि ॥
देव मधु किम हुवा नेह । ज्यो मेरा भावै संदेह ॥७६९॥
तब श्री जिरा की बासी गई । लख के मन की बुझिवा गई ॥
आतकी द्वीप धीरावत क्षेत्र । बारा नगर तिहां राय सुमित ॥८००॥
विभवनी नाम ब्राह्मण पुत्र । दोन्हु' बिद्या पई बिचित्र ॥
ब्राह्मण पुत्र अधिक आशीन । पढ़या विद्या कलका लै' बीस ॥८०१॥
मित प्रति बिद्या आनिर लाई । भंसी ही बिष काक बिहय ॥
राय सुमित्र बिद्या या बीस । राय बैठि सुक करु' अमोल ॥८०२॥
बैठ्या राज तबै सुध आई । बहुत बिषय ब्राह्मण नें बई ॥
आप बराबरी आभण किया । राजा बन फीडा नें कहा ॥८०३॥
बोडा छुटपां भील की पुरी । बन देख्यो सब सुध बीसरी ॥
तिहां राजा भील ने बहा । व्याही बनभावा सुल लहा ॥८०४॥

मास एक बीव्या तिए देव । फिर द्याया निज नगद नरेव ॥
 ब्राह्मण सुणि राज्या प्रति बिख्या । देखी वनमाल चित बत्था ॥८०५॥
 जो ऐसी में भोगउ त्रिमा । तो सुख मानी यह चित बथा ॥
 या के अधिक बियाप्या भैल । निस बासव देही नहीं चैन ॥८०६॥
 कामल ब्रह्मा हर तप टरधा । तप सब छोड़ चतुर सुख करधा ॥
 सकर नाच्या गदा कर ल्याइ । तप खोबो रसमारि जुभाय ॥८०७॥
 कामरायद है अति बलवान । घन्य जिको जिन राख्यो दब ॥
 ब्राह्मण छीजै दिन दिन देह । राजा के मन भया सदेह ॥८०८॥
 इह क्यों दुरबल हुबै बणा । या के भेद न जाबै बणा ॥
 बिप्र प्रतं नृप पूछै जत । तुम अपरा भासो विरतात ॥८०९॥
 किस कारण तुम धीरा सरीर । तो कु है काहै की पीर ॥
 साँची बात कहो समझाय । तो मेरो ससय मिट जाय ॥८१०॥
 ब्राह्मण कछु न बोलै बैर । चार्क बाह लगाई भैर ॥
 लाज सबब बोलै किस भालि । काम धनन कैसे हिसरात ॥८११॥
 छोडी लाज सुणाया भेद । इह बरमासा कारण खेद ॥
 राजन कहै सुणो द्विज भित्त । तुम कछु मनमे नाएउं चित ॥८१२॥
 जो वह इच्छै तो तुम लेहु । मैं तोकु दीनी निसदेह ॥
 लखा बिप्र देखी बट गया । राणी कुं उपवेश इह बया ॥८१३॥
 तुम जाओ देयी की जाउ । मठ बाहर सखीय बैसाउ ॥
 राणी मठ के भीतर गई । देखि तेज बिछाई नई ॥८१४॥
 ब्राह्मण बचन पयपै ताहि । राणी देखि रही मुरझाइ ॥
 ब्राह्मण तुं बोलै वनमाल । परमारी बैसा है काल ॥८१५॥
 विर्वै न लाय मरै अग्यान । नरक जाहि बे जीव निदान ॥
 जे नारी वरबुरव को रमें । तो नारी नीची गति भ्रमै ॥८१६॥
 सूकरी कुकरी गवही होइ । लोटी गति मे भरयै सोइ ॥
 एक तिल सुख बहु बहु दुख लहै । छेदन भेदन के दुख सहै ॥८१७॥
 तास फुलबी ल्याबै भग । ए फल लहै सोख करि भग ॥
 द्विज के मन को मिटयो कुर्कन । दया भाव प्रमटयो गृध्र गैल ॥८१८॥

प्राप करे मित्रा आचरणी ॥ छोटी बुद्धि करी में धरणी ॥
 भेसा है उच्छल धामना पन ॥ सो नयो निष्टे किबं मिलनाय ॥८१६॥
 खडग काकि निब काबै बरणा ॥ प्रत्यक्षार्थें नृप-देवी-वधा ॥
 तव नृप द्विज का पकडघा हृदय ॥ बहुत पन्न जवने अपसाव ॥८२०॥
 पाप करे अमन्त्रि जल मरै ॥ विष फासी कुने भिर कहे ॥
 बहकु नरक बसा भव हरेय ॥ ताहि सहाय करे नही कोइ ॥८२१॥
 बाह्याण गयो देस सब त्याग ॥ खरि करि अम्बो बरधा बहु खावि ॥
 एक दिवस घनहर घनभोर ॥ जमी पन्न उडि-अए-कहीरि ॥८२२॥
 राजा देखि भयो बंदाग ॥ राजकिमूर्ति त्रिषय सब त्याग ॥
 सुतने निज पद दिखौ नरेस ॥ आपरा लियो विगंवर भेस ॥८२३॥
 देही छोडि गया ईसान ॥ पाषा जित स्वर्ग लोक विधाण ॥
 उन द्विज अमल नर देही घरी ॥ मंया नी की तपस्या करी ॥८२४॥
 मरि कर भया निरच्छन्न देव ॥ अंबधि बिचार किया बहु भेष ॥
 मृबिज राय पा येरा मित्र ॥ उन मुक्तसौं राखी बहु प्रीति ॥८२५॥
 प्रथ वह मध्य लोक अक्षतरा ॥ मधु सुमित्र मिलुं मो बरा ॥
 रतन बहुत तिन मधु नें दिया ॥ बरछी एक बहु गुंली धिया ॥८२६॥
 सब सुख सौं राजें मधु नृप ॥ कहा लग बरणाउं तास स्वरूप ॥
 अठावह बरष गये जव वीत ॥ बहुत देस कै मूपति जीत ॥८२७॥
 तब कंलास परबत मरि गया ॥ श्री जिए विष बरषा प्रति गया ॥
 भ्रष्ट इच्छ सौ पूजा करी ॥ कहैं मंत्र जिनवासी खरी ॥८२८॥
 दुर्लिंगपुर नल कुशल किमपाल ॥ सुनि राखल भावा मुपल ॥
 तिनने जीते हैं बहु देस ॥ अब उन इहां कीउ-परवेश ॥८२९॥
 पत्नी इंद्र मूपनैं जिखी ॥ किकर जय वीनवा मणी ॥
 रावण नलकुवड परि गया ॥ बिट्टी काधि कछे कुब-दका ॥८३०॥
 प्रभुजी उसका ऊपर करो ॥ नलकुवड का अब कुम-हरो ॥
 इन्द्र करै पूजा जिए नाथ ॥ सेना दई हुत के हाथ ॥८३१॥

पुन बलेंन

गढ गाढा सौं जैसों भरो ॥ बाहिर नीकिल मक सरो ॥
 भ्राप गया पांडव बने बान ॥ पूजा करी लिये पच नाम ॥८३२॥

वे गढ मे पहुँचे सब धाय । दीये किवाँवे भीतर जाय ॥
 सो जोवन ऊँचा गढ देखि । दस जोवन चौड़ा सु विशेष ॥८३३॥
 कागुरे कागुरे घरी कुबान । हथनां लांका भत न जान ॥
 पूजा करी रावण नीवरघा । देख्या गढ तापर मन भरघा ॥८३४॥
 सूर सुमट बहु दिये पठाव । गढ ने हाथी दिये डकाइ ॥
 दांत टूट कर मस्तक हनै । इनका कछु दाव नहीं बने ॥८३५॥
 रावण पर तब धाये बने । धँसे कठन न देखे सुने ॥
 गोला गोली लगै न वाल । ता गढ परि क्या चलै सयान ॥८३६॥
 यह सुणि रावण चढघा बिमान । ग्यारह सौ ओहणि बलवान ॥
 ऊपर तँ गोली की मार । उलटी सेम्या होई सवार ॥८३७॥
 ग्यार जोवन गोला बिस्तार । बड़ा पडै तहा परलख कार ॥
 बहुते लोग जुडे साबत । तब बोले मंत्री विनयबत ॥८३८॥
 यह गढ कठिन धावै नहि हाथ । अब फिर चलो लकावति नाथ ॥
 बोले भूप महा बलबंत । जो छेऊ तो लोग हसत ॥८३९॥
 अब इहां रह करि कगो उपाव । जो गढ धावै किल ही दाव ॥
 कैलास की खोह मे मोरबे किए । बहुत उपाव बिचारै नए ॥८४०॥
 ऊपर भा नल कुबर घनी । रावण के बित बिता बली ॥
 रूपबंत सुनिये है सही । उन जीती है सगली मही ॥८४१॥
 एक बार हूँ दरखन करड । दससिर बेल सुख मन घरड ॥
 बनमाला दूती नें डेर । रावण पासि जाय कै डेर ॥८४२॥
 धँसे कोई सुली नही कोइ । कहिए अंतहीपुर की ठोर ॥
 जो सुख डील काम की करो । प्रीण बेव तुक पर हो करो ॥८४३॥
 दूती कहै अब मोहू जाय । जंद फंद सों धानी राय ॥
 आभरण सजि कै दूती गई । जोहन मोहन बिछा सई ॥८४४॥
 मंदिर माहि निरजय ऋ बली । रावण देखि मन मे भति हसी ॥
 पूछी राय कहौ सन नाव । कबण काज धायी इस ठाँव ॥८४५॥
 नलकूबड की है पटघनी । रूपलक्षणा सोहै भति घनी ॥
 तुम सौं बहुत कही बीनती । दरसण देहु कृपा करि भूती ॥८४६॥

अब तुम उठो चलो उस पास । दोन्नों की पूरें मन आस ॥
 रावण कहै दूती सौ बात । पर रमणी सग नरक जात ॥८४७॥
 जैसी झूठी पातल पड़ी । घंसे नेह जाणों पर तिरि ॥
 जैसे उलगाण डारैं कोइ । कुकर दीडि गहै फुनि सोइ ॥८४८॥
 घंसी जाणि पराई नारि । सत्त न छोड़ूं इस अबतार ॥
 दूती बोली फेर रिसाइ । तोहि अभाग उदय भयो आय ॥८४९॥
 जं तू वाकी मानैं बात । गढ़ तोकों आबं परभास ॥
 रावण कहै मंत्री सो जाइ । बैठि सतो तहा कियो उपाइ ॥८५०॥
 मंत्री समझि सीख यह दर्ई । विद्या बा पै हे गुणमई ॥
 रम मे लेहु बे विद्या मागि । पाछें उसने कीज्यौ त्याग ॥८५१॥
 रावण फिर दूती पै गया । राणी प्रति सदेसा दिया ॥
 तुम मेरी इच्छा जो बरो । बेग आय तुम दर्शन करौं ॥८५२॥
 रावण पासि सो दूनी गई । रस की बात बरणी बरणाई ॥
 राणि कै मन भयो आनद । विगसैं जेम कुमोदनी चद ॥८५३॥
 विद्या सुमरि करि चढ़ी विमाण । रावण की द्विग पहुंची आन ॥
 बंठी सेज्या ऊपरि जाय । काम लहरि कहु कहां समाय ॥८५४॥
 रावण कहै देवी तुम सुणों । गढ़ परि जाबा चित मुक्त तणों ॥
 गायी जयै सुणों नरेस । मैं तुमकी भेजा सदेश ॥८५५॥
 तुम तो आये नहीं उस ठाम । अब किस विष जैहो उस धाम ॥
 रावण कहै विद्या मुक्त देहु । तो मैं तेरा कहा करेउ ॥८५६॥

रावण द्वारा विद्या प्राप्त

तब राणी विद्या दी भली । रावण की पूजा मन रली ॥
 अमालक विद्या सब तैं बड़ी । वनसास गढ़ तिन सौ मदी ॥८५७॥
 वे विद्या पाई तिहु बेर । तब सेन्या लीया गढ़ बेर ॥
 तींई पोलि कपाट गयंद । बंसे सुभट बाजे जय डंड ॥८५८॥

रावण की विद्या

लूट लिये सब हाट बाजार । नर कुबड तब सुणी पुकार ॥
 चढपा कोप बाजे हथियार । सूर सुभट सब लिये हकार ॥८५९॥

भ्राया घाय डण पर केहरी । देखत सब की सुधि बीमरी ॥
 भभीषण सन्मुख दोहचा जाय । दुहधा जुध भया अधिकाइ ॥८६०॥
 नलकूबड बाधिया तुरत । भभीषण जीत्था बलवंत ॥
 वज्रसाल यह सम नहीं श्रीग । बहुत देस पहुँच्या यह सोर ॥८६१॥
 रावण का जस प्रगट्या घणा । उपरभा भानै सुख घणा ॥
 मैं विद्या रावण नें दई । गढ पाबार जीत तब भई ॥८६२॥
 मेरी बहुत करैगा काग । गई अत पुर अनी जाणि ॥
 रावण नें बहु धादर दिया । माता वचन मुख सौं बोलिया ॥८६३॥
 तुम गुरुणी मुझ विद्या दई । तुम मुझ मात घरम की भई ॥
 गुरुणी माता साह की स्त्री । आवज आश्रित गाव पुत्री ॥८६४॥
 इतनी माता पुत्री समान । जोग अजोग करै पहिचान ॥

नलकूबड की राजा से बात

नल कूबड को लिया बुलाय । तिरसौं कही बात समझाय ॥८६५॥
 जो तुम चाहौ आपण देम । तो मुझ आप मानी छौ येस ॥
 जो तुम कुछ इच्छा सो देख । अब तुम मानौ माहरी सेव ॥८६६॥
 अपरभा माता की ठोर । तुम हठ राज करो सुबहोरि ॥
 नलकूबड बोले करि ग्यान । मैं पाया है इद्र का धान ॥८६७॥
 निज प्रति वोझ भवर का होय । ताकी भला न कहसी कोइ ॥
 जनम जनम को चढै कलक । अपने जी की माने सक ॥८६८॥
 नल कूबड छोडी वह नारि । विजयाद्वं पहुँच्या तिहवार ॥
 रथनूपुत्र इंद्र पै गया । सब वृत्तान्त नर वैसे कह्या ॥८६९॥
 सुणी बात जब कोप्या इंद्र । रावण ने हु ल्याउ वदि ॥
 मैं उसने दीन्ही थी छूट । उन देश मे मचाई लुटि ॥८७०॥
 देखि जु बाहि लगाऊ हाथ । अंसी फिर न करै किछु साथ ॥
 पूछधा जाव फिर तासू मता । अंसी बात सिखायो पिता ॥८७१॥
 जिह विधि रावण नें ल्यौ जीत । युद्ध तणी समझावो रीत ॥
 सहस्रार बोलै समझाय । रावण राक्षसबंसी राइ ॥८७२॥

उन कयलास छत्र सिर लिया । वैधवण जम को दुख दिया ॥
 बखसाल गढ़ लिया छिनाय । बहुत भूपती साथे जाय ॥८७३॥
 तुम वासी किम सर भर करौ । कपरी कन्यां दे क्रोध परिहरो ॥
 अपराण कौज्यो निरभय राज । निज बल समझ कीजिये काज ॥८७४॥

इन्द्र द्वारा क्रोध करना

तब इन्द्र बोलिया रिसाइ । पुरखा भय बुधि सब जाय ॥
 जे छनी मरने तै डरै । तेवीं नरक निगोदीं परै ॥८७५॥
 मैं केहरि वह दती आइ । भाजै देखि सीध की छाइ ॥
 मैं भव लग कीनी है गई । वाकौ बुधि मरण की भई ॥८७६॥
 सूरवीर सब लिये बुलाइ । देस देस के आए राय ॥
 हय गय रथ साजे तिहां बने । सब सामत देव से बने ॥८७७॥
 सँजी धनुष लिये बहु वाण । जम धरम डग भले नीसान ॥
 लाल पचास हस्ति चलै डोर । आगै वानै घारी घोर ॥८७८॥

राक्षस की सेना

उनते राक्षस सेन्या साजि । निकस्यो युद्ध करण के काज ॥
 बानर बंसी राक्षस बस । बग्ये भूपति उत्तम अस ॥८७९॥
 दैत्यनाथ पडदूषण भूप । देश देश के सुभट अनूप ॥
 सब सामत मन माहि अडोल । पालै अपने प्रभु के बोल ॥८८०॥
 पक्षपन लाल डोरि गज चले । अस्व अनेक सीधे तिहा भले ॥
 ग्यारसय ओहणि दल संग । सिलह संजोग बने सब भग ॥८८१॥
 दोउ सनमुख दल भये आय । दोनू तरफे घुरे नीसान ॥
 छूटै तीर तुपकह्यनार । जैसे वरष धनहर धार ॥८८२॥
 दुहुषा लडे सूरमा बनी । दोन्यु सेन्या बहु विष दली ॥
 राक्षस रुच लडे बिकराल । बानर बंसी सब मुख लाल ॥८८३॥
 देखि इन्है भय उपजै धनी । देव जेम बिद्याधर गुणी ॥
 मारै लखग मुँड गिर पडे । क ड मु ड बहु लडते फिरै ॥८८४॥
 मही इन्द्र सेनापति तिहवार । भई भभीषण स्थौं तरवार ॥
 सेनापति कृष्ण भुईं गिर्या । श्रीमाली तब ऊपर कर्या ॥८८५॥

कु भकरण तब कीन्ही दौर । सूरवीर भुम्हें दुहुं और ॥
 इन्द्रजीत मेघनाद तब घसे । घसे लोग जम मंदिर बसे ॥८८६॥
 सिधबाहनर कनक अभ सूर । तिनऊ जुध किया भरपूर ॥
 श्रीमानी माल्यवान का पूत । घाइ लडघा सेना सयुक्त ॥८८७॥
 दुरजन दल ए परलय किया । रुधिर तरणा अति नाला धया ॥

इन्द्र द्वारा युद्ध

इन्द्रभूप आया चढ़ि बली । जँ अत पुत्र संग सेन्या भली ॥८८८॥
 पुत्र पिता सो विननी करे । मेरा कहा क्यौं न उर धरे ॥
 मोकु आज्ञा दीजे आज । वेग सवारौ तुम्हारा काज ॥८८९॥
 रावण को बाधो जब आय । मोहि पराक्रम देखो राइ ॥
 कहै इन्द्र पुत्र सो बात । तुम हो बालक कोमल गात ॥८९०॥
 अब तेरे खेलण की बात । तुम सुख भुगतो इण संसार ॥
 बालक क्रीडा की है वयस । तुम बिण काज कवण इह देम ॥८९१॥
 तेरा मरण केम देखु नैण । अंसे कहै पुत्र मो वैन ॥
 जैवत इन्द्र बोले करि जोडि । तुम पर बैठो निरभय डोर ॥८९२॥
 रावण पकडौं सेन्या साज । ज्यों पकडै तीतर नै बाज ॥
 औसी विध रावण नै गहु । पलमाही सब सेन्या दहु ॥८९३॥
 जयंत इन्द्र करि तुरिष पलाण । भले लिये जोधा बलवान ॥
 श्रीमाली सु लडा बहुत । लगी गदा भू पडघा तुरत ॥८९४॥
 सेवका आग करि लिया उठाइ । सीतल पवन वीभना बाय ॥
 चल्या कुंवर लिये हथियार । हस्ती ऊपर भया असवार ॥८९५॥
 श्रीमानी उपर मागि तरवार । माथा छेद भया तिहु बार ॥
 सेन्या विचन रावण की भई । इन्द्रजीत को इह सुध भई ॥८९६॥
 करत चर्वे ज्यों बरसं मेह । परवत समान पड्यो मृत देह ॥
 सूर सुभट तिहा बहु कटे । पाछे पाव न कोई हटे ॥८९७॥
 जयत कुंवर के लागा घाव । आया इन्द्र क्रोध के भाव ॥
 इतरं रावण चडघा दससीस । सब हथियार गहै भुज बीस ॥८९८॥
 सब सार्वत लिये कर सग । दुरजन दल करवे को मंग ॥
 रावण कहै दिसावो इन्द्र । कोस दोय देस्या भुवचन्द्र ॥८९९॥

शेरापति पर आगत चल्या । छत्र चमर ता ऊपर भला ॥
 इन्द्रजीत को बेरघो भाइ । इनका दल सब दीया हठाइ ॥६००॥
 गवरा देखी सुत पर गाढ । जोइचा तिहां कोष करि बाढ ॥
 छूटे बाण अगनि की जाल । मेघबाण ज्यो बरषा काल ॥६०१॥
 अस्व गयंद सूर बहु कटे । तउव न सैन बुहुषा घटे ॥
 रावण दया विचारै हिये । इत उत कौ यहां क्यों क्षय किये ॥६०२॥

रावण और इन्द्र में युद्ध

मुझ ने तो है इन्द्र से काम । जासु सन्मुख कर्क संग्राम ॥
 सुमति सारथी प्रति समझाइ । इन्द्र साम्हा ही बलिए घाय ॥६०३॥
 रावण चढ़्या सिंह के रथ । हाथी चढ़्या इन्द्र समरत्थ ॥
 दोन्यू भूप सामही लरै । छुटै बाण मेह जिम पडै ॥६०४॥
 अगनिबाण छोड़्या मेघबाण । बुझी अगनि उबरे बहु प्राण ॥
 इन्द्र तरणी सेन्या बहि चली । इन्द्र भूप विद्या साभली ॥६०५॥
 अधकार जब छोड़्या बाण । भया अघेरा गए मोसाण ॥
 उनकै सुझैउ नहि अघेर । रावण का दल मार्या घेर ॥६०६॥
 उज्वल बाण रावण चित किया । छुटत ही अघेरा मित गया ॥
 इन्द्र करै तब वज्र सौ मार । रावण क्यों नहि मानै हार ॥६०७॥
 रावण चन्द्रहास कर गह्या । भई मार धीरज नही रह्या ॥
 कातर भाजि छिपावै जीव । सूर सुभट नहीं मोडै जीव ॥६०८॥
 अजित कुमार सौ इन्द्रजीत । दारुण जुष भया भयभीत ॥
 देखै भाक पिता की छोडि । हाकि गए दोउ नर तब छोड ॥६०९॥
 किस ही भाति टरै नही पांव । इन्द्रजीत रह्या तिहि ठांव ॥
 इन्द्र इन्द्रजीत की गह्या । वायोवाधि लरै हैं तिहा ॥६१०॥
 शेरापति तै दीजं उत्तरे । दीन्यू भूप मल्ल जिम भिरै ॥
 कबहु ऊपर कबहु तलै । घेसा युद्ध किया उग जलै ॥६११॥
 पकड्या इन्द्र बाधि यहि सिया । लेकरि बंदीछानें दिया ॥
 सब सेना मन भया आनंद । निरभय गए मिटथा बुल हंड ॥६१२॥
 भूपति सकल आय कर मिले । रावण फिर संका गड चले ॥
 परिदृष्ट्य माहि बचावा भया । स्यौ कुटुंब लंका में गया ॥६१३॥

पुण्य प्रसाद जीत बहु भई । पुंष्य विभव चौगुणी गई ॥
तातै पुण्य करो मनल्याय । सुख सपति बाधे अविधाह ॥६१४॥

अष्टित्स

पुण्य तणे संयोग देश बहुते जुडे ।
जीते भूप अनेक बोल ऊपर करे ।
इन्द्र नरेन्द्रह साधि सकल जय जय भई ।
जैन धर्म परसाद असाता सब गई ॥६१५॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्र प्रभाव विधानकं ॥

१३ वां विधानक

चौपई

सहस्रार का रावण के पास जाना

इन्द्र को सब रोबें रणवास । अश्वपानी तजि करै उपवास ॥
जयवंत कुंवर बहुत बिललाय । नगर लोग चिनवै बहु भाय ॥६१६॥
सहस्रार करिक मनुहार । समझाया सखला पग्वार ॥
अबहुं रावण पास जाउ । मेरा कहा मानैगा राउ ॥६१७॥
इन्द्रतणी मैं बुडाउ बदि । ज्यों परियण मे होय आनद ॥
मब परियण कौ धीरज दिया । लकों तणै पयासा किया ॥६१८॥
मन्त्री सुघर लिये नृप मग । रूपवत सोमै सब अग ॥
पहु ते लंका समुद्र मन्थार । देखी स्वर्ग पूरी उगहार ॥६१९॥
सिध दुवारै पहुँचा भूप । बणी पोल तिहा अधिक अनूप ॥
पौलिये खबर रावण सो करी । माहि बुलाया वाही घडी ॥६२०॥
राज्यसभा माही नृप गवा । रावण उठकर आदर किया ॥
सिधासण बैठाया राय । पुरुषा जाणि करी बहु भाय ॥६२१॥

इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना

सहस्रार रावण प्रति कहै । पुत्र बियोग जग हिरदा दहै ॥
इन्द्र छोड़्या जस बहु होम । तुमारी कीरत करे सब कोद ॥६२२॥
तुम आम्हा मानैगा इन्द्र । कृपा करिउ छोडो अब बदि ॥
बोले रावण आजा बही । नगर दुहारै नित उठ लही ॥६२३॥

धरती छिड़कें धपलें हाथ । राखी चंदन बिछकें साथ ॥
 तो छोडुं उसने इण बेर । आग्या भंग करै नहिं फेर ॥६२४॥

सुणी बात मन विस्मय भया । माथा नीचै राख्या नया ॥
 तब रावण समझी मन बात । तुम पुरुषा जैसा हम तात ॥६२५॥

बोले सहस्रार सुभ चैन । मंत्री सबद होथ मन चैन ॥
 हमही इन्द्र समझाया घणा । महाबली उपज्या रावणा ॥६२६॥

तुम उसकी सेवा करि जाय । अंसे उसने रहै समझाय ॥
 असुभ करम ताकी मति हरी । सीख हमारी लागीं बुगी ॥६२७॥

उन तुमसूं किया युध जु घणा । पुरुषा वयण सबै अवगणा ॥
 पुरुषा का मान्या नही कछा । तो दुख मान भंग होय सछा ॥६२८॥

जे सुबुधि पंडित सुग्यान । पुरुषा कहै सु करै प्रमान ॥

इन्द्र को छोडना

रावण सहस्रारसो कहै । आता इन्द्र मेरी डिन रहै ॥६२९॥

अंसा दूजा बली न और । जो मन इच्छै सोछो ठोर ॥
 अंजो चाही आगणा देस । करौ राज निरवय भुवनेस ॥६३०॥

अगले तैं छो टाल्यो राज । मनवंछित का हूँ है काज ॥
 सहस्रार नृप अस्तुति करै । तुम दरसन तैं दुख बीसरै ॥६३१॥

तुम हो त्रैसठ सलाका पुरुष । देखत मनमे उपजै हरष ॥
 कृतार्थ भए हम प्रभु आज । रथनूपुर का पावै राज ॥६३२॥

वहै बडा पुरुषा की ठाव । वहां के बसै हम प्रगटे नाम ॥
 बेडी काटि दिया इन्द्र छोडि । तोय हयकडी डारी तोडि ॥६३३॥

हय गय आभूषण पहराय । रथनूपुर कौ दिया पठाई ॥
 अपने घरमे पहुँच्या इन्द्र । सब परियन में भयो आनद ॥६३४॥

इन्द्र चित्त मे भरमे घना । इह उपसर्ग कहीं हूँ बन्या ॥
 अन्नपान पाणी नही रुचै । ऐसा रहै रात बिग-सोच ॥६३५॥

राणी देश जाणि भंडार । सर्व न्यायिक सबै उच्चार ॥
 हय गय विभव सेव फालकी । कुछु न सुहाय सबै ज्वालसी ॥६३६॥

इन्द्र की व्याथा

परजा का कछु करै न न्याव । ऐसा राखै विकलप भाव ॥
 बहुत दिवस बीते इस भांति । तब कछु सुरत भई नृप गात ॥६३७॥
 गधमादन पर्वत पर गया । श्री जिनमंदिर मे प्रगटया ॥
 नमसकार करि पूजा कगी । ऊंचे ते सेना दिठ पडी ॥६३८॥

इन्द्र भूप उपज्या मन सोच । सहस्रक्षोहिणी वा मेग भोग ॥
 रावण ने सब परलय किये । बहुत दु ख उन मोक्ष दिये ॥६३९॥
 उस रावण का जाज्यो धोज । नका माहि पडीयो रोग ॥
 वाका परलय होय ज्यो राज । उनही बिगाडघा मेग काज ॥६४०॥

मेरे थी विद्या लक्ष्मी । हय गय विभव तणी नही कमी ॥
 उन रावण सब दहबट किया । बहुत प्रकार मुझे दुख दिया ॥६४१॥

बाकी सपति हूँ जो नास । उन मुक्त अति ही दिवार्द आम ॥
 इन्द्र सरायय बारंबार । बहुर ग्यान मय किया विचार ॥६४२॥

समभि समभि मनमे पछताय । मैं क्यों सराप्यो रावण गय ॥
 सराप दिये अति बाढे पाप । अपनी करनी खोबं आप ॥६४३॥

राजभोग बिर नाही मही । च्यागे गति माही मुख नही ॥
 पुण्य सजोग मिले बहु रिध । पुण्य घटघा नासै सब सुधि ॥६४४॥

कबहु राव कबहु हूँ रक । कबहु जीते गढ अति बक ॥
 कबहु बैठि सिधासण चलै । कबहु पायक पीयस दलै ॥६४५॥

कबहु देव कबहु नारकी । कबहु मनुषा हूँ तिण चार की ॥
 घटि बढि होइ कर्म की चाल । च्यागे गति मैं व्यापं काल ॥६४६॥

राज भाग मे अछी अचेत । या परसाद भई मुक्त चेत ॥
 जो वहै इतना करता नही । ग्यान मुझे किम होता सही ॥६४७॥

अब भ्रंसा गरवा तप करो । काटि करम पंचम गति बगी ॥

मुनिचन्द्र का आत्ममग्न

इह विचार चित बंठा इन्द्र । तिहा एक आया मुनि चन्द्र ॥६४८॥

आर ज्ञान का धारक जिके । दरसन देख होय सुभ मते ॥
 नमस्कार कीया कर जोर । टूटे जनम जरा की डोर ॥६४९॥

सुखे ग्यान के सुखम भेद । तार्त होइ करम का छेद ॥
प्रभु मेरे पूरव भव कहौ । कवण करम तें दुख बहु लह्यो ॥६५०॥

इन्द्र के पूर्व भव

मुनि जर्प पिछला बिरतांत । भ्रम्या लाल चौरासी जात ॥
लया जनम भील के गेह । गई पुत्री ता कुण्ठी देह ॥६५१॥
मुख विकराल चपटी नांक । चुंची झाल मुख दीसैं बांक ॥
जनमत मात पिता मर गये । ऐसे दुःख बा गति मे भए ॥६५२॥
ह्वाते मरि फिरि बेही धरी । मुनि दरसन तें राजग्रह परी ॥
तप करि पहुँची स्वर्ग विमान । पूरण भ्राव भुगती सुर धान ॥६५३॥
रतनपुर नगर तिहा गोमटराय । कुंदमाली राखी उर भाइ ॥
कीर धारा तहा दूई पुत्री । तप करि स्वर्ग लोक धिति करी ॥६५४॥
क्षेत्र विदेह रत्नसचय नगर । असमत बद्धन रावल भय ॥
गुणवती राणी पटवनी । पुण्यसेन पुत्र भया बहु गुली ॥६५५॥
राजा नै दीक्षा पद लिया । राज्यभार सब सुतनैं दिया ॥
गुणसेन सुण्यां बहुधर्म । सिधल भए असुभ सहू कर्म ॥६५६॥
छोड़ राज दिक्षा लई जाइ । स्वाध्यान तपसो मन ल्याइ ॥
देही छोड़ि ग्रहमीन्द्र विमाण । भया इन्द्र पाया सुख धान ॥६५७॥
वहा ते चय रथनूपुर देस । सहस्रार कै इन्द्र नरेस ॥
पूछै इन्द्र दोइ कर जोड़ि । प्रभुजी मेरी करो बहोड़ि ॥६५८॥
कोण पापते मान नय भया । सब सुख कवण करम तें गया ॥

रावण द्वारा इन्द्र के मात भंग के कारण

म्यों रावण भुक्त दीना दुःख । भूल्या सकल राज का सुख ॥६५९॥
मुनिवर बोले धातमग्यान । जहाँ सुसरण धरि देख्यो ध्यान ॥
अरजयपुर नगर अन्नूम । अमनिवेग बिन्नाधर भूप ॥६६०॥
भानदमाता पुत्री ता गेह । कोकिल सन्द कचन सम देह ॥
तार्क पिता स्वयंवर रच्या । सकल सौज सामग्री सच्या ॥६६१॥
देस देस के भाए राय । मरुप तल बँडे सब धाय ॥
कन्या हाथ लई बरमाल । गुणवत केचर गल दीनी डाल ॥६६२॥

कियो विवाह घड़ी सुभ साध । भोग भुगत कीनी भति वाधि ॥
 एक दिन सूता या आवास । विद्याधर ले चले आकास ॥६६३॥
 आनदमाला जागी तिए बेर । सेज्या अकेली देखी फेर ॥
 तब उपज्या मनमें बेराग । सकस वस्तु का कीना स्थाग ॥६६४॥
 हसावली नदी तट तीर । परब स्वरत मुनिवर तप धीर ॥
 दिक्षा लई मुनिवर पै जाइ । करै तपस्या मन बच काय ॥६६५॥
 गुणसेण जाग्या तिह वार । विद्याधर सौं कीनी मार ॥
 भाजि गये दुरजन के लोग । आया निज नगरी मे लोग ॥६६६॥
 देखी नही त्रिया घर माहि । चिता करता हूँ गई साभि ॥
 गई सुरत मुनि थानक गया । क्रोध बचन मुख सौं बोलिया ॥६६७॥
 मेरे डरने लीया जोग । अजौ अभिनाया राखै भोग ॥
 सौहागणि तै बाई करी । भाई तुम मरने की घड़ी ॥६६८॥
 मुनिवर कु बाध्या बहुभांति । मारया आछे मुक्की लात ॥
 मुनिवर कछुवन आरौ चित्त । सहै परीसा आपसै नित ॥६६९॥
 इतनो है यासु बेरान । सो मुझनै भुगत्या परवान ॥
 चिदानंद सौ त्याया ध्यान । ह्या इसका होसी कल्याण ॥६७०॥
 बोली नागि पति ने दे गालि । रे पापिष्ट मुनि किया बेहाल ॥
 ए मुनिवर मन अंतर रहै । छह रितु के दुख अंसे सहै ॥६७१॥
 तै कयो प्राप उपद्रव किया । किण हित साध प्रतै दुख दिया ॥
 तेरा होज्यो राज का भग । इस सराप दिया तिए सग ॥६७२॥
 मुनिवर सिध रिध की भई । बा सब रिद्ध कल्याण नै दई ॥
 गुणसेन सोच करै मन माहि । इह सराप टलरो का नाहि ॥६७३॥
 शीलवर्त का वचन न टलै । मै तो पाप बहुत ही करै ॥
 बधए दिये साधु के खोसि । प्रति अधीन होय बोले बोल ॥६७४॥
 मुझ मे आज भई अब बुधि । माया जाल तै झूली सुधि ॥
 अब कछु ऐसा करू उपाव । नासै पाप लहुं सुख ठाव ॥६७५॥
 मुनिवर करी घरम की टेक । सत्रु मित्र सम जासै एक ॥
 मुनिवर कहै ग्यान के भेद । तप करि महेन्द्र भया वह देव ॥६७६॥

उहां मुनि इंद्र सुधर्म विमांश । छाव भुसति रावण भया घांन ॥
 गुणसेन जीव भया तू इन्द्र । बा सनमब किबा तुझ बदि ॥६७७॥
 पिछली सुणि मन भया झडेल । रावण किया मित्र का बोल ॥
 जो उन मोसो कीन्हा जुघ । तो मैं लही धर्म की बुद्धि ॥६७८॥
 वा कं हूं जो मुक्त की ठोड । वा परसाद गई मुझ षोड ॥
 मुण्यां धरम रथनूपुर गया । जयन कुंवर ने राजा किया ॥६७९॥

इन्द्र द्वारा मुनि बोधा

इन्द्र मूप दिगबर भया । तेरह बिध सौ चारित्र लिया ॥
 सहै परीसा बाइस यात । ज्यार करम का किया घात ॥६८०॥
 केवलम्यान लब्धि तमु भई । जै जै सबद दुहुओ भई ॥
 धरम प्रकास सवाधे घने । इन्द्र मुनीन्द्र भेम बे बने ॥६८१॥

बूढ़ा

इन्द्र मूप इह विष बली, धरयो धर्म हठ बिस ॥
 भवसागर तै उतर करि, सुख भुगत्तै बर निस ॥६८२॥

चौपई

मुक्ति क्या मुनिवर श्री इन्द्र । पावै सुख सास्वते आनंद ॥
 ज्योति ही ज्योति एकठी भई । इन्द्र प्रभू पचम गति लही ॥६८३॥
 रवि उद्योत झंघेरा मिटै । केवलबाणी ससय मिटै ॥
 मन घर कथा इन्द्र की सुनै । ते नर अष्ट करम कौ हणै ॥६८४॥

इति श्री वधपुराणे इन्द्रनिर्घाण विधानकं ॥

१४ वा विधानक

चौपई

अनन्तसीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति

दीप घातकी मण्य गिर मेर । अनन्तसीर्य जिए केवल बेर ॥
 साधन पर्वत पर जीण साथ । इद्र धादि देवता साथ ॥६८५॥
 बैठ विमान देव सब चले । मुकटां की मणि सोभा भले ॥
 गृध्री दसौ दिसा उद्योत । रतना तणी बिराजै जोत ॥६८६॥
 बाजा बाजै नाना भाति । सब सुर चले जिनेश्वर जात ॥
 देखि विमांश राजण चितवै । तब मरीच मंत्री बीनवै ॥६८७॥

अनंतवीर्य स्वामी जिएदेव । ए सब चले तास पद सेब ॥
अनंतवीर्य को केवलज्ञान । पूजा करै ग्यान कल्याण ॥६८८॥

रावण द्वारा वनना

रावण के मन भया आनंद । दरसन कारण देव जिएद ॥
सोलह सहस्र भूप सग लिये । बैठि विमाण समोसरण गये ॥६८९॥
दई प्रदक्षिणा सुर नर जाय । नमस्कार कीया बहुभाय ॥
दोई कर जोडि पूछै इन्द्र । वारह सभा मे सूरज चन्द्र ॥६९०॥
इन्द्र धरणेन्द्र तिहा नरेन्द्र । भया सकल प्राणी आनंद ॥
पूछै पुण्य पाप के भेद । सुणत वचन मिट जावै खेद ॥६९१॥

भगवान की वाणी

श्री भगवन की वाणी होय । भवियण लोग सुणै सब कोइ ॥
छह दरब अर तन्व नु सात । नव पदारथ अर पञ्चमात ॥६९२॥
पाप पुण्य का करै वखाण । हिंसा तै गति नरक निदान ॥
मय मान सहित जे खाइ । उवर पच कठूबर आय ॥६९३॥
काहू की चित दया न करें । ते जीव नीची गति पई ।
सात विसन जे चित मे भरै । सातउं नरक माझ दुख भरै ॥६९४॥
असत्य वचन जे मुख सो कहै । ज्याहूँ गति मैं सुख न लहै ॥
असत्य वचन चोरी परिहरै । ब्रह्मचर्य व्रत विष सो करै ॥६९५॥
परिग्रह प्रमाण करै नहीं मूढ । भव भव मे पावै दुख गूढ ॥
सात विसन के सेवणहार । ते कबहू नही पावै पार ॥६९६॥
रोग मोग दुख पडै बिजोग । काहू भव मे मिटै न सोग ॥
पाप करम के भेद अनत । उनका कहत न आवै अंत ॥६९७॥
धरम करत सुख सपति होइ । कै मनुष्य के सुर पद होइ ॥
मनुष्य जनम का लाहा लेह । सोलह कारण वरत करेह ॥६९८॥
दशलक्षण पाले धरि भाव । रतनत्रय जंपय जिए नाम ॥
अठईस मूल गुण पाली सुद्ध । धरम ध्यान में राखै बुधि ॥६९९॥
चार दान दे वित्त समान । नित उठि दरसन करै बिहान ॥
बड्यावरत सबही सो करै । दया भाव चित अंतर भरै ॥१०००॥

सारस्त्र पुराण सुख मन त्याग । निष्ठ में भोजन भूमि न जाय ॥
 जे जीव निममे लेख आहार । तिरजंघ बाहि भ्रम अपार ॥१००१॥
 व्याधू करै न छीजती बार । दरसन ग्यान चरित्र चित्त बारि ॥
 उत्तम गति मे ह्वै आरिज लंड । पंचेन्द्री की दीजे दंड ॥१००२॥
 संयम कौ पालै बरि भाव । भोग भूमि पावै सुख ठांम ॥
 सुपात्रा नैं विष सो दे दान । षट् दरसन को राखै मान ॥१००३॥
 आप समान सकल ने जानि । दया भाव सब ऊपर आन ॥
 दान कुपात्र फल नही कुच्छ । कुगुरु कुदेव कुसास्त्रा तुच्छ ॥१००४॥
 इन संगति नीची गति जाय । घर जे कब भूल फल लाय ॥
 पाप पुन्य को भेद न करै । कुगुरु कुदेवा निश्चय धरै ॥१००५॥
 ते जीव मरि लोटी गति पडै । भव भव दुख दलिद्व अनुसरै ॥
 सम्यक दर्शन देखै सुख । सम्यकग्यान चरित्र सुबुध ॥१००६॥
 श्री भगवत नैं पूजै नित । सुमरै गुणवाद बरि चित्त ॥
 निसदिन गुरु की सेवा करै । मिथ्या तजि समकित आदरै ॥१००७॥
 कै व्है देव कै भूपती । सम्यक ते होय पंचमगती ॥
 समकित बिना न पावै मोक्ष । मिथ्याती ते भव भव दुख ॥१००८॥

ब्रह्मा

सम्यक है चित्तामणि रतन, तेह पालो बरि ध्यान ॥
 भवसागर की है सगुण, महित कीजिए मान ॥१००९॥
 जती विरत तेरह विध धरै । बारह विध तपसो अथ हरै ॥
 क्रोध लोभ ए च्यार कषाय । रागदोष ये देय बहाइ ॥१०१०॥
 बाईस सहै अबाधा नित । द्वादस अनुप्रेक्षा सों चित ॥
 भोजन करै उडंड अहार । संयम का राखै दिठ भाव ॥१०११॥
 दस लक्षण के पालै अ ग । धरम सुकल स्यौ राखै संग ॥
 बारह वरत सरावग करै । पाच अनुव्रत निश्चय धरै ॥१०१२॥
 फुनि पालै शिष्याव्रत च्यार । सातौ विसन तजै जिम छार ॥
 पुराण गुणव्रत धारै तीन । सो जाणौ आवक पर चीन ॥१०१३॥
 राखै सदा मनमे संतोष । तृष्णा तजै तो पावै मोक्ष ॥

लोभदत्त सेठ की कथा

लोभदत्त सेठ की कही कथा । तिए लक्ष्मी बहुते संगड़ी जथा ॥१०१४॥

कुरी लाइ महादुःख भरे । जहा तिहा पायक जिम फिरै ॥
 सिर पगड़ी तल धोती बांधि । एक दुपट्टी राखै कांघ ॥१०१५॥
 जीरण बस्त्र चिया ने देख । दान पुन्य कबही न करेइ ॥
 सब पुर लोग कृपण कहै ताहि । वह मनमे कछु धारणे नाहि ॥१०१६॥
 चारण मुनि आए तिरण बार । साहणी दौडि करी नमस्कार ॥
 स्वामी म्हारा पूरव पाप । छती आयि हम सही संताप ॥१०१७॥
 किरण प्रकार होसी हम गति । लोभदत्त कै धरमन बित्त ॥
 धन धैमी बिद्या मुक्त देहु । तीरथ दरसन सदा करेहु ॥१०१८॥
 तब मुनिवर इक बिद्या दई । ताहि सुमर बुधि पाई नई ॥
 लकडो एक बडो विस्तार । भीतर ते पोलाइ सार ॥१०१९॥
 बिद्या सुमरित सु ऊपर बैठि । तीरथ करण चाली त्रिय सेठ ॥
 धैमे नित प्रति तीरथ जाइ । रतन दीप पूजै जिरण राइ ॥१०२०॥
 तेनी तेलण दोन्यु लडै । तेनणि कस लकडा मै बडै ॥
 साहणि चडि चाली आकास । उतरै रतन दीप कै पास ॥१०२१॥
 तेलण देख अचमै भई । रतन संकेनि गोद भरि लयी ॥
 लकडे बीच आइकै छिपी । बहुत ज्योति रतनन की दिपी ॥१०२२॥
 साहणि आई घरि आपणै । तेलण आनंदी मन घरै ॥
 तेली प्रति दीने सब जाइ । रतन एक गाह डिय न्याइ ॥१०२३॥
 साह देख प्रति अचिरज भयो । धैसो रतन कहा तै लयो ॥
 तेलण सो पूछै लोभदत्त । मोसी साच कहो मोहि मत्य ॥१०२४॥
 नै यह कहा तै पाया रत्न । बा का मोहि बतावो जत्न ॥
 तेलण भएँ सुणउ मम सेठ । लकडे माहि रहो तुम पैठि ॥१०२५॥
 भई साक सेठ तिहा धन्या । अधिक लोभ ताके मन वस्या ॥
 साहणि बिद्या सुमरी आय । लकडे बैठि दीप की जाय ॥१०२६॥
 समुद्र माक देख्या सहतीर । इह लकडा डाल्या गहै नीर ॥
 बा लकडे चडि साहणि गई । डुब्बा साह नरक गति भई ॥१०२७॥
 साहणि आधी घर आपणै । पूछै बात तब मुनिवर भणै ॥
 कहो साहु गयो किह धोर । वाकूँ मै दूकू किस ठोर ॥१०२८॥
 मुनिवर कहै पिछला वृत्तान्त । डुब्बा साह लकडे संघात ॥
 साहणि कीया मन मे सोच । लोभदत्त का इह नियोग ॥१०२९॥

नित प्रति उठि लक्ष्मी दे दान । पूजै साधु देव भववान ॥
विलसै भोग दिन सुख मे जाइ । भोजन भले भले नित खाइ ॥१०३०॥

ब्रह्म

लोभदत्त लक्ष्मी लही, बधुवन जाण्या भोग ॥
पाप करम करि एकठी, ताथी भयो वियोग ॥१०३१॥

चौपई

भद्रवत्त सेठ की कथा

भद्रदत्त सेठ आधीन । बेचै वस्तु परिग्रह लीन ॥
दान अदत्ता लेइ नही पडघा । बाहर अन्धतर चित लरा ॥१०३२॥
एक दिन कचन राय प्रधान । तसु दीनार पडघा मग यान ॥
सब दीनार सेठ जब लही । भद्रदत्त चित्त सोचै कही ॥१०३३॥
कचण पास गया तिए बार । नृप के मन की पूछै सार ॥
कहा दुचिते बहुत उदास । मुनै कहो करो बिसबासि ॥१०३४॥
कचन कहै मो पास दिनार । राजा मुझे सोपिया संभारि ॥
छूत पडे मारग मे जात । तातै सोच कछु बहु भाति ॥१०३५॥
अन्नपान मो कछु न सुहाय । तिए कारण मै रह्यो मुरभाय ॥
मे दीनार सेठ तब दिये । भयो सुख कचन के हिये ॥१०३६॥
भद्रवत्त की अस्तुति करै । अन्य सेठ तुं लोभ न बरै ॥
सगला लोग सराहै ताहि । ऐसी बात सुणी नरनाह ॥१०३७॥
दई सेठ नैं धणी विभूति । आदर मान किया अद्भूत ॥
ताको जस प्रगटघो ससार । सत तैं लछ्मी लही अपार ॥१०३८॥

ब्रह्म

सति मारग अंसा भला, ताहि करौ लख कोड ॥
बोम्बुं भव जस विस्तरे, बहुदि बोझ पड होइ ॥१०३९॥

चौपई

कुंभकरण द्वारा बर्मोपदेश की प्रार्थना

कुंभकरण पूछै कर जोडि । स्वामी भावो बरज बहुदेहि ॥
कचण पुन्य तै लहिये भुक्ति । तैसी मोहि कुलाबो भुक्ति ॥१०४०॥
अनंतवीर्य जिए कहै वसाण । बारह सभा सुणी बरि आन ॥
समिकत जे पासै धरिचित । उत्तम भवान निजहि नित ॥१०४१॥

समव्याईक वेषक समकित्ती । निश्चय विवहार दोइ विष धिती ॥
 धरिहत समान देव नहीं कोइ । गुरु निग्रंथ सतोषी होइ ॥१०४२॥
 सास्त्र ते जिस माही दया । दृष्ट अनिष्ट करे नहीं भया ॥
 देव कुदेव है पूजे नहीं । पाखंडी गुरु की बात न सही ॥१०४३॥
 कुसास्त्र मे माने नहीं साच । निग्रह कीजे इन्द्री पाच ॥
 अपरोपत कीजे उपवास । छोटे व्रत ते होय पुन्य का नास ॥१०४४॥
 वरत करि कै कदमूल को लाय । तो किया कराया निरफल जाय ॥
 लेय आहार कहै हम व्रती । मनुष्य जन्म की खोबै कृति ॥१०४५॥
 चउ घड़िया अरण्यभो करै । अथवा घडी दोय अरणसरे ॥

रात्रि भोजन निषेध

भोजन रयण तजे तिहु बात । ते कहीए मानुष की जात ॥१०४६॥
 जे नर रयण भोजन खाहि । राप्यरा सम जाणिये ताहि ॥
 पशु जाति ते है अग्यान । जेमे मास भषी है स्वान ॥१०४७॥
 कीट पतंग माकड़ी घण्टी । वाका दोष न जाय न गिणी ॥
 ते सब गति अति घोटो लहै । रोग मोग दुख भव भव सहै ॥१०४८॥
 कोई जनम दलद्री होइ । थोडी माव लहै जिय सोइ ॥
 लल चोरामी भ्रमे ससार । ते कवही नहीं पावै पार ॥१०४९॥
 भोजन रयण तजे धरि ध्यान । ते भव भव मुख लहै निदान ॥
 पंचमि गति पावै निरवारण । सकल लोक मे उत्तम थान ॥१०५०॥

बूढ़ा

जे नर निशि भोजन करे, कंद मूल फल खाट ॥
 ते चिहु गति अमते फिरै, मोक्ष पथ तिहा नाहि ॥१०५१॥
 रात्रि भोजन त्यागै सर्व । उत्तम कुल पावै बहु दुर्व ॥
 भले भले भिदिर आवास । कै सुख विलसै कै जाइ अकास ॥१०५२॥
 बत्तीस लक्षणी पावै नारि । रूपबंत ससि के उगिहार ॥
 हंस गामिनी कोकिल वयण । सबद सुगुण मन उपजत बँन ॥१०५३॥
 पूत सपूत होहि तिसु भले । बबहूँ खीटे मार्ग न चले ॥
 सज्जन कुटुम्ह भाई धर्यो । आदर भाव कहत नहीं बर्यो ॥१०५४॥
 छोरो राग अरु तीस रागणी । होहि नृत्य सुख सोभ्य धर्यो ॥
 कनक भाई पाई अति देह । लोचन कमल है ससि नेह ॥१०५५॥

कू डल सोमै दोन्युं करण । बड़ी भाव मुगते सुख सण ॥
 जेन घरम सौं राखै प्रीति । सकल करम करि वासै ॥१०५६॥
 नित उठि द्वारा येवण करै । जन्म जन्म के शक्तिन हरे ॥
 मुनिवर की विषयों के बात । छहौं खेच का राखै मान ॥१०५७॥
 बाह्र समा सुखी विषय वर्म । असुख जन्म के दूठै कर्म ॥
 कोई रूप विषयकर भवे । किनही व्रत अमर के लिये ॥१०५८॥
 जैसा वित तैसा सं व्रत । जनम जनम का दुःख जहन्त ॥

रावण द्वारा व्रत ग्रहण

रावण सौं बोले भगवान । तू ते व्रत कसु निश्चय आन ॥१०५९॥
 रावण सोच हिया मे करै । सीसवरत की इच्छा करै ॥
 परनारी सेवै अम्यान । पावै व्रत दुख की लक्षण ॥१०६०॥
 जेमे स्वान ते वम्बा आहार ॥ जेसे विषई सूड सवार ॥
 बहे द्वार दुरयंध निवास । ताहि देख मन होत उल्लास ॥१०६१॥
 मेरी तीन षष्ठ मे आग । मोरं बरत सभ नही जाग ॥
 एक भाति व्रत पाली सही । जे नारी मुक्त इच्छै नहीं ॥१०६२॥
 तांका सील न बंडव जाइ । इहै वरत मुख बोलवै राइ ॥
 श्री गिण पास नेम डहलीया । आर्य कौ फल दाता भया ॥१०६३॥
 कुंभकरण भभीषण व्रत लिया । करि डंडौत पयाणा किया ॥
 आए लका सह परिवार । करै धर्म मन हरष अपार ॥१०६४॥
 इन्द्र धरणेन्द्र मुरथानक गए । श्री जिनवाणी सुमरै हिये ॥
 सब के मन का संसय गया । धरम प्रकास जयत मे भया ॥१०६५॥

अडिल्ल

अनंतवीर्य भगवंत धरम बहुविष कही ।
 सुधम भेद अगाध सुणत सब सुख लह्यौ ।
 व्रतचारी भए मूख मोक्षमात्र गए ।
 भवसागर ते जीव उतरि निकपत्र गए ॥१०६६॥
 इति श्री पद्मपुराणे श्री अनंतवीर्य चरिते व्याख्यान विनायक ॥

पद्मपुराण विनायक

बीरई

हनुमान का बीरव

इहां श्री गुरु की सेवा करत । हनुमान की कही उत्पन्न ॥
 श्री जिनवाणी दिख्य अवि होइ । बाह्र समा दुःख सब कोई ॥१०६७॥

गीतम स्वामी निरखीं भलीं । सभामध्यं श्रैष्ठिक सुखीं ॥
 विजयारव दक्षिण दिस ओर । आदित्यपुर नगरी तिहा ठोर । १०६८॥
 राय प्रह्लाद नगरी की धरणी । केंतुमती राखी तुम तरणी ॥
 पवनजय पुत्र भया बुभुधरी । फल फल बड़े बैह गुण भरी ॥ १०६९॥
 पवंत सम वैसपुर देस । महेन्द्र विद्याचर तहां अरेस ॥
 हृदयवेगा राखी सुदरी । सो पुत्र जनमे सुख करी ॥ १०७०॥
 प्रथम अरिदमन दूजा उदपाद । भजनी सुंदरी पूनम जाव ॥
 रूप लक्ष्म बुला महा प्रबील । सोलह भात बजाव बीण १०७१॥
 छड़ी राय घर तीस रागणी । विद्या पढ़े सरस्वती वणी ॥

अ जना के विवाह की खर्चा

राजा महेन्द्र तब मता उपाइ । मंत्री चारू लिये बुलाइ ॥ १०७२॥
 अमर सागर सों मता विचार । कन्या बड़ी भई इह बार ।
 उत्तम कुल जे राजकुमार । तिहा लगन भेज्यो इस बार ॥ १०७३॥
 अमर सागर बोल्या मतरि । रावण की कीर्त हैं सरी ॥
 प्रेसैं सुं कीजे सनमंष । राक्षसचंस ज्यौं पुंनिम चंद ॥ १०७४॥
 इदजीत दूजा मेघनाद । वेद पुराण बजाव नाद ॥
 पराक्रमी वै चरम मरीर । भीक्षमार्गी एका भव तीर ॥ १०७५॥
 प्रेसैं उसके महा सपूत । कन्या देह सुख होइ बहुत ॥
 सुमति मंत्री फिर दूजा कहै । मेरे मन इह ससा रहै ॥ १०७६॥
 रावण के घर इतनी नारि । पटराणी सोलह हजार ॥
 कुमरा कहैं बहुत अस्त्री । एक एक सेती गुणभरी ॥ १०७७॥
 उस घरि कन्या दीये नहिं वली । श्रीघन राजा गुण घने ॥
 चरम सरीर प्राक्रमी बली । उकौ देह हौयगी रली ॥ १०७८॥
 तारा घर मंत्री समझावैं बेल । कनकपुर नगर सोभा है अन ॥
 हिरण्यनाभि राजा तिए ठाम । तसु पटराणी सुमना नाम ॥ १०७९॥
 सौदामनि तास उस भयो । भीक्षणींभी सोभैं सुभ कवा ॥
 वाके गुण का पार न कही । असा बली मूप को नहीं ॥ १०८०॥
 सदेहपारिष बोल परधान । सौदामनी के मन मे कहूँ क्यान ॥
 वैराग भाव कुंमर का चित्त । संसार लसके अनित्य ॥ १०८१॥
 जो उसको उपजै वैराग । बाकी लखैं न करता त्याग ॥
 कन्या विधवा सम क्यूँ दिन भरै । क्यों करि दिवस कत बिन टरै ॥ १०८२॥

बाहि भठारह बरसी कं गए । दिव्या ने केवल उपजए ॥
 महुँते मुक्त रमणि की डोर, धारणमय करे महेरि ॥१०८३॥
 पवनजय कुमार विजयारण बेस । रूपमंद अति बहो नरेस ॥
 ताका सुख भोख सो कहै । कहत सुणत कछु भंत न लहै ॥१०८४॥
 त्रिभु बलस का आश्रय भया । राय रंग सब जरि जरि गया ॥
 कामनी मानै रति अतिभली । जरि जरि गहैं संगम रली ॥१०८५॥
 फूले फूल कोरे तह झब । सब पत्सब सई भई अमंग ॥
 भ्रमर भ्रमरनी करे गुजार । बिह्व तिहां आसति बमाल ॥१०८६॥
 सकल भूष आगे कंलाक । महेन्द्रसेण की पुंकी आक ॥

राजा महेन्द्र एवं राजा प्रह्लाद की भेंट

निहा आया राजा प्रह्लाद । बा सग सेन्या बहुत अवाध ॥१०८७॥
 दोनू मूपति मिले गल लागि । रूपवत अति पूरण भाव ॥
 बारबार पूछे कुसलात । पूजा करे गिए की सुप्रभात ॥१०८८॥
 राय प्रह्लाद महेन्द्रस्युं कहै । मेरे मन को ससा दहैं ॥
 तुम क्यों दुबल अधिक नरेस । अपणैं बित की अणउं असेस ॥१०८९॥
 महेन्द्रसेन बोले मूपती । मुझ घर कन्या अंजनावती ॥
 रूप लक्षण सब गुण समुक्त । परम भव जाणै सुबहुत ॥१०९०॥

पवनजय के साथ विवाह प्रस्ताव

पवनजय पुत्र तुम्हारा सुण्या । तामे विद्या बल गुण घणा ॥१०९१॥
 पवनकुमार ने अंजनी दई । दोन्यु कुला बवाई भई ॥
 त्रिवलसाह लिख भेज्या पत्र । आदितपुर पठया दूत विचित्र ॥१०९२॥
 तीन दिवस रहै साब्दा माफि । मत्री जाय पहुँते सार्फि ॥

पवनजय द्वारा अंजना को बेलने की उत्पुक्तता

पवनजय पूछे अंजनी रूप । सुण्यां कुंवर नैं बहुत अनूप ॥१०९३॥
 तीन दिवस बीते किहू भाति । व्याप्या काम कुमार के गात ॥
 कब बीते ये तीन दिवस । कब अंतपुर होइ प्रवेश ॥१०९४॥
 पवनजय कुमार बिकारै ग्यात । सीतबंत किहू होय अग्यात ॥
 अष्टमुखा काम रनी होय । बिह सौं कील कु खली सोइ ॥१०९५॥
 मो सा कुबत्र जो ब्याकुल रहै । मोहुं अन्त न कोई कहै ॥
 प्रहसित मित्र पै गया कुमार । मन का भेद कहाय तियाबार ॥१०९६॥

अञ्जनी रूप सुन्दरी मे घरा। मोकुं काम व्याप्ता जोसुणी ॥
 जो ह देखुं अपणे नयन। तो मोकुं होवै सुख चैन ॥१०६७॥
 मित्र कहै धीरज घर भात। दोन्युं बल्या भई जब रात ॥
 अञ्जनी मंदिर ढिग गए। भरोखै निकट छिपतिये अए ॥१०६८॥
 नैनू देख्यो रूप अयाह। वह सुख कहौं न बरणी जाय ॥
 वसंतिलका दासी को नाम। अञ्जनी सौ बोली घर भाव ॥१०६९॥
 बडा भांग तेरा अञ्जनी। पवनजय सा वर पाया गुणी ॥
 वा सम बली न दूजा धीर। सीबंगी तू पट की ठौर ॥११००॥
 कचन रतन सी जोडी बनी। उसये है तुम सोभा धणी ॥
 पूरव किया पुण्य तै भला। ऐसा वर सौ सनमध मिला ॥११०१॥

दासी द्वारा विद्युत वेग की प्रशंसा

मिश्र केस बोलैं दूसरी। पिता तुमारे कीनी बुरी ॥
 विद्युत वेग सा राजा छोड़ि। करी सगाई ऐसी ठौर ॥११०२॥
 बाके गुण का वर न पार। मुक्ति गामी ग्रह दातार ॥
 बाकी तो एक घडी बहोत। कहा दीपक कहा रवि उद्योत ॥११०३॥
 समद छाड़ि ली चयरो भरी। अंसी महेन्द्रसेन प्रति करी ॥

पवनजय की निराशा

अंसे वचन पवनजय सुनी। जानु उर आयुष सो हनी ॥११०४॥
 सोवत मिह हंकारधा डेल। मानु दीया अगनि मे तेल ॥
 काढ घडग लीया तिह वार। अञ्जनी सुधा डारु मार ॥११०५॥
 विभचारणी लक्षण इस भाति। इन सुणि करि कछु कहियन बात ॥
 प्रहसित मित्र समभाव बैन। कहा न घडग त्रिया परिलेन ॥११०६॥
 जे वचन सुणि भया मन मंग। व्याह कछु नही याके संग ॥
 कहै पवन मै दीक्षा लेसि। प्रात भये सब तजिस्थो भेसि ॥११०७॥
 प्रात भये उठिया कुमार। मन चाहै ल्यौं दिक्षा मार ॥
 प्रहसित मित्र कुंवर सग बल्या। मता विचार सुणाया भला ॥११०८॥
 जे तुम लेस्यो दिक्षा जाइ। हीण कह्ये सगला राय ॥
 एक बार लुटै इह देस। पाछै होइ दिगंबर भेस ॥११०९॥
 दोनू गये पिता के पास। म्हारै हे दिक्षा की व्रत ॥

दत्तीपुर पर अयाह

एक वीरपती मुंण हो नाथ। दत्तीपुर कौ ल्याउं हाथ ॥१११०॥

इतनी सुखि सबें दीन हेकार । बढधा कोष करि पवनकुमार ॥
 कुज सेन्या रावण तणी बुलाय । दतीपुर को घेरघा जाय ॥११११॥
 बाजें बापु नाना बांति । रोम उठी सूरों के बात ॥
 अजनी काल पड़ी ए वात । सीस धुएँ चितवैं बहु बाति ॥१११२॥
 बिधना कवण पाप मैं किया । मंगलचार समें दुख दीमा ॥
 साथ पछाड धरती पर पडी । ददा उपाय सेवा बहु करी ॥१११३॥
 बडी धार मे भई सभाति । बिभचारिणी कुं दीनी गाल ॥
 इन सब भाष्या घोटा बयण । सुखे पवन देखे निज नैण ॥१११४॥
 मैं अबही माडउ संन्यास । जीवत जनम मे भई निरास ॥
 नगर माहि भनि हुवा सोर । व्याह बीच तब मांची रोर ॥१११५॥
 पवन नाम दुलह का सुण्या । पवन समान घाईया बना ॥
 जैसी बाव वहै बिहु झोर । घेंसी याहि कु मरि मे घोरि ॥१११६॥
 सुगी बान महेन्द्रसेन । प्रह्लाद निकट आया सिख बैन ॥
 हमतैं कहो चूक के परी । तुम आपणो मन घेंसी धरी ॥१११७॥
 हम तुम मे भी पहली प्रीत । कैसे करी कुच की रीत ।
 भाव चाहिये रहसानन्द । किह कारण तुम कीया बंध ॥१११८॥

बूहा

पवनजय अजना बिबाह

महेन्द्रसेन के सुखि बचन, बिटघा कोष का भाव ॥
 बहुस्वा रहस रली भई, दुहु कुल अधिको भाव ॥१११९॥

चौपई

कुंवर के मन की घुटक ना ग्राह । संमा जाबर कीम छर भई ॥
 अजनी का भाज्या मन दुख । सुफल जनम करि मान्या सुख ॥११२०॥
 भए बिदा बीत्या इक मास । जब पहुँचे अपने घर मास ॥
 मन सेती मूलें नही बात । रोवैं घुटक कुमरि दिन रात ॥११२१॥

बूहा

पवनजय के मन की घुटक, कवहि न होवें दूरि ॥
 अजना सु दरि क्या करे, दीदा कुमाया कूरि ॥११२२॥

चौपई

अजना का दुःख

मदिर न्यारा अजनी नैं दीमा । रहे अकेली कंपे हिया ॥
 अपणी निदा बहुतैं करै । भुगल्या बिना करम नही टरै ॥११२३॥

पवनजय कुमार धरम की देह । मे पापणी किय होइ सनेह ॥
 कै मैं जिन गुण निन्दा करी । जिनबाणी नहीं निश्चय बरी ॥११२४॥
 कै गुरु का राख्या नहीं मान । कै मनधर नहीं सुण्या पुराण ॥
 कै किस ही को किबा बिछोह । कै मिथ्या सो ल्याया मोह ॥११२५॥
 कै भोजन उठि खाया रति । परनिदा कीनी बहु भाति ॥
 तो इह मुक्त नै भया वियोग । असुख उदब तैं बाढषा सोन ॥११२६॥
 ऐसे कहि ब्रजनी पछिताहि । सबी सहेली कहैं समझाय ॥
 मनमे चित करी मति बरि । करम उदै ते ऐसी बणी ॥११२७॥
 अजनी कै है पवन का ध्यान । अब उहा कथा चली है आन ॥

रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध

वरण है रतनद्वीप का राय । रावण कौं नहीं भाएँ दाय ॥११२८॥
 रावण ने तब भेज्या दूत । वरण मूप पै जाइ पहत ॥
 बासुं वातां कहै बसीठ । रावण ने तैं दीनी पीठ ॥११२९॥
 उरा राजा जीते सब वेस । तीन पड के करं आवेस ॥
 दन्द्र वैश्रवण जीतिषा कुबेर । जम नलकूबड पकडषा घेर ॥११३०॥
 तु समुद्र मे छिपकरि राधा । अब तु मानि हमारा कथा ॥
 रावण सेव करो कर जोडि । आम्हा भानि तु आव बहुनि ॥११३१॥
 सुख वह देस परगने देइ । आदर महिन नगर मे लेइ ॥
 इतनी सुण कर कोप्या मूप । रक्त नयन अय दाई रूप ॥११३२॥
 बोलै राजा सुण रे दूत । रावण नैं सगहित बहुत ॥
 जै वह बहुत कहावैं सूर । हममो जुध करो भग पूर ॥११३३॥
 धका देइ पुर बाहर किया । दन तरणा मन विस्मय भया ॥
 दूत रावण पै भाषा फेर । कही सकल उन उत नीबेर ॥११३४॥
 सुणत वचन तब उठ्या गिमाइ । सूर सुभट सब लिये बुलाय ॥
 रतनदीप कूँ घेरा जाय । सुनत वरण तब निकस्या जाइ ॥११३५॥
 राजा पीठरी दोउ सुत चले । सेना जोडि सूरमा मिले ॥
 दुहुंघा लडै बडे सामंत । पैदल सुं पैदल मुभ्त ॥११३६॥
 मैगल सो मैगल बहु भिडे । रथ सो रथ टूटि गिर पडे ॥
 रावण की सेन्या अहटाइ । बाधि लिया पडदूषण राय ॥११३७॥
 रावण का मन दुचिन्ता भया । मत्री सेती मता तिन किया ॥
 मंत्री जन दीया उपदेश । बुलाए नगर के मूप नरेस ॥११३८॥

बरस भूप की बेरथा आब । असा नृषा नृप किया उपाइ ॥
सकल ठोर की गए उडील । आबो वेग मति त्यागो डील ॥११३६॥

राज ब्रह्माव के पास रावण का सन्देश

राय प्रह्लाद पै गया वसीठ । बीड़ी दई पड़ी अर डीठ ॥
मागै कावद लिया चढाय । पठि पठि पत्री नवण कराय ॥११४०॥
दल सज किया पत्ताणी सुरी । पवनंजय कुमार बिनती करी ॥

पवनंजय द्वारा मुंड में बाने का प्रस्ताव

तुम ह्या बंठि करो प्रभु राज । तुम भागै हम साथै काज ॥११४१॥
पिता भागै सुत करै न काम । महा कपूत कहै सब गाम ।
बोले राजा सुणी कुमार । तुम क्या जाणौ जुब की सार ॥११४२॥
कुमार पितासो बिनती करै । सिंह पुत्र किसका भय धरै ॥
ताकी कबल सिखावै दाव । भाजै हस्ती सुखलौ नाव ॥११४३॥
हस्ती भाजै बानक छोडि । सिंह के सुत की सहै न डोडि ॥
पिता कहै दिखायो प्राकर्म । मेरे मन का भाजै भर्म ॥११४४॥
जब बोल्या पवनंजय कुमार । तिरुका करै गज तिरु का छार ॥
काम पडै तब देखो वात । बरगह बाधु भव ही जात ॥११४५॥
सोम माल दरी न बस । ज्यों सरबर मे सोमै हस ॥
करि सनान बहु भोजन खरइ । उत्तम बस्त्र तिन पहरे जाय ॥११४६॥
बाधि हथियार सेना सग लई । बहुत असीस बडे जन दई ॥

अंजना द्वारा पवनंजय को बिबाई

सब कुटुब भेट्या गल ल्याइ । तिहां अंजनी ठाडी भाय ॥११४७॥
देह मलीन रही मुरझाय । ताहि देखि मन पवन रिसाय ॥
इह क्यों भाई है इण वार । निठुर वचन मुख कह्या अपार ॥११४८॥
त्रिया की लागे मीठे वरण । सुरिण सुरिण होय बहुत ही चैन ॥
धन्य धन्य है आज का खोस । पिय के वचन सुने करि हौस ॥११४९॥
बहुनि अंजनी बिनती करै । नीची इच्छि करसु नित भरै ॥
जै तुम ये हस नवरी मध्य । तुमरी मितः पावै बी सुख ॥११५०॥
मेरे मन ऐसी बी जात । इक बिग प्रभु बोसेया हास ॥
भव तुम गमन करो परदेस । तुम बिन क्यु जीवस्यु नरेस ॥११५१॥
बहुत बाति बीनवै अंजनी । बाकै दया न प्राप्ती चिनी ॥
हस्ती चढपा साधि सुभ बडी । बहोत सोज लीनी सुभ बडी ॥११५२॥

मानसरोवर उतरे जाय । सेना सकल रही तिह ठाय ॥
 देख सरोवर निरमल नीर । मंदिर देखे तबके तीर ॥११५३॥
 ऊबे बैठा पवन कुमार । देखे इत उत दृष्टि बसार ॥
 घाबे सीतल पवन सुवाम । पपी सब दल बैठिहु पास ॥११५४॥

पवनंजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना

हस आदि बहु जलचर जीव । सर ढिग करै किलोन अतीव ॥
 कोई कूद जल भीतर पड़े । तिहा बैठि अति क्रीडा करै ॥११५५॥
 चकवी चकवा रयण वियोग । व्याप्पा तबै कत का सोग ॥
 भाई जब देखे जल माहि । ताको समझै अपणा नाह ॥११५६॥
 निरखै भाई करै पुकार । कबहा जाय चढ़े ड्रुम डार ॥
 सीतल नीर अगन सम लगै । अंसे सब निस चकवी जगै ॥११५७॥
 अंसा हु ख पवनंजय देख । मनमे उपजी दया विशेष ॥

अजना से मिलने की इच्छा

बाईस वरस मुझे व्याहां भया । अजना सुंदरी ने दुख क्या ॥११५८॥
 इ र हूं चल्या जुब के काज । भुक्ति मर्क' जो पूरी लाज ॥
 मुझ वियोग अजना मरै । विना वस जनम इह गिरै ॥११५९॥
 किए विध जाय अजनी सु मिलु' । सोक वियोग बाको सब दलौ ॥
 घर ते विदा होय मैं चल्या । फेर न येन कहै कोई भला ॥११६०॥
 प्रहसित मित्र सो पूछी बात । अजनी दुख पाया बहु भाति ॥
 बाकी चुकि तउधी कछु नाहि । वदा कही क्या लागै ताहि ॥११६१॥
 कवण जतन देखै अजनी । मोकू कठिन आई यह बनी ॥
 सखजन कुटब लोग की कारण । दोन्यु कठिन वणी है आनि ॥११६२॥
 प्रहसित कहै चनियाे प्रच्छन्न । जैसे कोई लखै न चिह्न ॥
 एक सोच उपज्या इण वार । सेना मे हूँगी जो पुकार ॥११६३॥
 अमाधान दल का तुम करो । ता पाछै यहा तै तुम टरो ॥
 मुगदराय सौं आधी बात । हम समेद गिर जाय हैं जात ॥११६४॥
 इहां तुम सावधान बहु रहौ । श्री जिन के वरसन हम लहौ ॥
 बहुत हार फूलन के सिधे । चंदन केसरि उत्तम फल नये ॥११६५॥
 वहीत सौज से दोनु' बखे । करि आनद हीए मे बिले ॥

अजना पवनंजय मिलन

अजनी के मंदिर में गया । प्रहसित मित्र बाहर ही रह्या ॥११६६॥

घ जनी ने देखा जब पौन । उठी पुकारी तु है हां कौन ॥
 दहा कौ जबै जगावण लगी । पुरुष देखि अंजनी भगी ॥११६७॥
 बोले पवन डरै मति नारि । हूं आयो तेरा भरतार ॥
 इतनी सुंणि मन भयो उल्हासि । बिघना पूरी मन की आस ॥११६८॥
 नमस्कार पवन सौं कियौ । बरसण देखत दुख विसारियौ ॥
 बंठा मेज्जा ऊपर आय । नद गद बोस बोलै बहुबाइ ॥११६९॥
 दासी बात कही छी बुरी । मैं बाकी कछु चित्त न धरी ॥
 भोक्कु दुख लिख्या इ भाति । कर्म रेखा भेटी नही जात ॥११७०॥
 तब पवनजय धीरज देह । अपणो मन नहीं चित करेइ ॥
 मैं तो आप भया अग्यान । मैं तुमकू दुख दीनां जानि ॥११७१॥
 हम तुम है दोउ बालक देह । बहुत दिना दुख होत सनेह ॥
 सोभा रयण चन्द्र तैं वणे । अंस सुख देखेगी घणे ॥११७२॥
 जिम पाछली निशा के समै । चद्र प्रकासि ज्योति कू गमै ॥
 जब म्हे आण किया परकास । तब ही जाणौ भोष बिलास ॥११७३॥
 दोऊ बोलै अमृत बैण । दपति मिलै भय सुख चैन ॥
 दोन्यु करै कोक की रीत । प्रथम समागम त्रिया भयभीत ॥११७४॥
 मरग सुल भुगत्या बलवीर । दोन्युं सुखी इक भया सरीर ॥
 अग्या ने भूते मल लागी । बीनी रात जणि गयो भागि ॥११७५॥
 पवन सरूप देखि छवि आति । हारि जणि मानि भाज्या प्रातः ॥
 रवि उदयाचल उग्या आइ । दरसण देखा चाहै राइ ॥११७६॥
 जमतमाल परमातहि जागि । आयी निकट बारणै लायि ॥११७७॥
 पील खोलि घाई इरा पास । अंजनी बैठी नीचै जास ॥
 कुंभर जगाया कर पद चापि । जागि पवन अग्राया आप ॥११७८॥
 अंगुली चटकावै अरु जभाइ । रक्त नयण बहुलं घ माइ ॥
 गवण काजि सुरत गई बूलि । अए मयन दोउ सुख के भूलि ॥११७९॥
 प्रहसित पास पवनजय गया । भला मतत दीन्युं मित्र ठया ॥
 अवेर भया प्रमटै इह ठाम । कातर होइ हमारा नाम ॥११८०॥
 सब कोई फिर आया कहै । कपूत नाम प्रथी पर लहे ॥
 बागे पहिरि भवे तय्यार । अजनी करै अघिकी मनुहार ॥११८१॥
 हमनै काज रावण का कारणा । कारजसाधि वेवा फिरणा ॥
 अपणा मन राखियो अडोल । अंस कहै पवनजय बोल ॥११८२॥
 अंजनि के अरि आवे नैन । कहौ कुटुंब सौं अपने बैन ॥
 मैं असनान किया है आजि । मरग रहै तो लायै लाज ॥११८३॥

बोले पधन सुणो हो स्त्री । धँसा भय तुम ना चित बरी ॥
 तीस मास लगि लपै न कोइ । फिर धाऊं मास कतीत न होइ ॥११८४॥
 अजनि बोली दो कर जोड़ि । तुम विनंब मोहि लागै षोडि ॥
 जे तुम कहौ कुटुब सौं बात । कोई न दोष लगै किए भांति ॥११८५॥
 अजनी सेती कह समझाय । सबसों मुंह मिलि हुबे हम जाय ॥
 तुमसौ बिदा हुए बे नही । तातैं धाइ मिले हम सही ॥११८६॥

अजना को मुद्रिका देना

जो तुम कछु मनमें भय करो । मुद्रिका भेरी तुम कर धरो ॥
 इह सहनाणी दिखाइयो नारि । हमकों सीध आयो इण बार ॥११८७॥
 बलिया पवनजय और प्रहसित । जड विमाण चाल्या विहसित ॥
 आकास गामनी विद्या संभारि । दोन्यू पहुंता कटक मझारि ॥११८८॥

सोरठा

पुन्य संजोगे होय, भोग ताहि जिय सुख समझि है ॥
 विषय बेल फल होय, तब धँसा बहु दुख सहै ॥११८९॥
 इति श्री पद्मपुराणे पवनजय अजनी मिलाप विधानकं ॥

सोलहवां विधानक

चौपई

अजना द्वारा गर्भ धारण करना

सुख मे माम गये द्वै बीत । प्रगटत भई गरभ की रीत ॥
 पीत वदन कचन सम जौति । दिन दिन उदर अति ऊंचा होत ॥११९०॥

केतुमति द्वारा पूछताछ

चलै खान गयवर की भांति । केतुमती जब सुणी इह बात ॥
 अजनी पासि धाइ पूछी सुरति । तैन कवण करी इह करवृति ॥११९१॥
 साचे वचन कहो मुझ धाय । देखज ताहि लगाऊ हाथ ॥
 उज्जल कुल को कानध बढी । झंसी चिता बास मैं बढी ॥११९२॥

अजना द्वारा स्पष्टीकरण

अजनी बीनवें दोइ कर जोड़ि । मोकुं कछुवन लागै षोडि ।
 मानसरोवर परि तुम्हारे पूत । देखा चकवी वियोग बहुत ॥११९३॥
 मेरी दया बिचारी हिये । ह्वातैं आय रात सुख दिये ॥
 अपार पहर मुझ मंदिर रह्या । प्रात भये उठि मारग गह्या ॥११९४॥

मैं उनसे बहुत विनती करी । कुटुंब सौं कहो बात इयां घरी ॥
 वे बोले यह तो मुंदड़ी लेज । जो कोई पूछी तो इह देज ॥११६५॥
 जो मेरी मायुं नही बात । देख मुंदड़ी मायुं सांच ॥
 केतुमती बोली रिसखाइ । निठुर बचन भाष्या बहु भाइ ॥११६६॥
 बावीस बरष विवाह को भए । तेरा नाम सुणन दुख सहे ।
 जो तेरी ह्वै देखता छाह । महा कोप उपजै या बाह ॥११६७॥
 चलण समय तुमसो रिस करी । तेरी दया नहीं उर बगी ।
 घंसी तोस्यु कया सनमघ । वह फिर आया छनै बंध ॥११६८॥
 विभचारिणी तै किया कुकर्म । मोसुं कहै पवन का भर्म ॥

अंजना को ताड़ना

लाठी नातें मारी घणी । ठौर ठौर अंजनी कौं हणी ॥११६९॥
 बसंतमाला परि कोपी बहुत । हे विभचारिणी तुहैं ऊत ॥
 तेरे आये कारण इह हुवा । झुठा पवनजय कु दे हुवा ॥१२००॥
 तोकु देखि कहा हू करउ । मारि तोहि जम मंदिर धरउ ॥
 अकुरा किकर लिया बुलाइ । इनको पिता घर ले जाइ ॥१२०१॥
 महेन्द्रपुर माहि लेकैं छोडि । दोई जीवस्यौं कया मारुं ठौरि ॥
 जो मैं भव दोन्यु जीव हतौं । नोतम बष भमुं चिटुं गतौं ॥१२०२॥
 इह बान प्रहलाद नृप सुनी । क्रोध लहरि उपजी चित घनी ॥
 बेगि निकाल मंदिर ते देहु । या का नाम न फिर कैं लेहु ॥१२०३॥

अंजना का निष्कासन

रदन करत काढी अंजनी । बसंतमाला ताकैं सग दिनी ॥
 उनकें पीछैं किकर हुवा । बहुत तरास दिसावैं कुवा ॥१२०४॥
 कहैंक बेगि बेगि तुम चलो । उनका चरणन धरती हली ॥
 असुभ करम तें इह दुख भया । पावैं अनी महेन्द्र की घिया ॥१२०५॥
 कठिन कठिन वन अंदर गई । किकर कैं मन चिन्ता भई ॥
 इह पवनजय की पटघनी । या कौं बेला घंसी बणी ॥१२०६॥
 अब मे चौहीं इनको दुख । इनके दिन फिरए सैंहैं सुख ॥
 सुणैं पवन मारै मुकु ठौर । तब मुकु कोण छुड़ावैं और १२०७॥
 किकर करैं बीनती बहु भांति । मेरी बूक नाहीं कछु मात ॥
 तुम्हरे सासु सुसर नैं कहा । उनके बचन तुम्हैं दुख सहा १२०८॥

मैं सेवक विनउ कर जोडि । मेरी चित्त न आणौ धोडि ॥
 कोस च्यार जब नगरी रही । भई रयण वन आश्रम गही ॥१२०६॥
 प्रेता दुख अंजनी कुं भया । देखि रुदन दिनकर लोपिया ॥
 इह सब दोस करम की देइ । ऊंचे नीचे उसास बहु लेइ ॥१२१॥
 गरजे सिंह हस्ती तिह ठोर । वन मे करै स्थाल अति सीर ॥
 इनका दुख देखि सब पछी रोवै । पात बिछाई भूमि पर सोवै ॥१२११॥
 इक दिन बीतै बरस समान । मनमे सुमरै श्री भगवान ॥
 वसतमाला की आष पर मूँड । वन भयदायक दीसै सूँड ॥१२१२॥
 कठिन कठिन बहु पीडित भई । तब कछु भय चितते मिट गयी ॥
 सुमरै जिनवर बारबार । असुभ करम के टारन हार ॥१२१३॥

डूहा

धरती पाव न जे धरै, सोवै सेभ अनूप ॥
 वनमे निस दुखस्पाँ कटी, पांव चली भरि भूप ॥१२१४॥

चोपई

अंजना का महेन्द्रपुरी जाना

भए प्रभात महेन्द्रपुर गयी । पिता द्वारि जाइ ठाढी भई ॥
 पौलिया भीतर जाण न देइ । बसतमाला ताहि जंपेइ ॥१२१५॥
 इह अंजनी राजा की चिया । याकौ असुभ करम दुख दिया ॥
 महिद्रसेन को इह सुधि देहु । तेरी मुता आई तुझ गेह ॥१२१६॥
 सिलकपाट पौलिये का नाम । पहूँच्या राज मभा की ठाम ॥
 नमस्कार करि भावी बात । अंजनी आई आज प्रभात ॥१२१७॥
 प्रश्नकीर्त्ति को दिया उपदेश । आदर सो कीजे परवेश ॥
 नगर छवावो हाठ बजार । बहुत भाति कीजे मनुहार ॥१२१८॥
 तब अकस्तर कहै समझाय । मेरी विनती सुनिये राय ॥
 केतुमती यह दीनी काढि । उनके चित ए चिन्ता बाढि ॥१२१९॥
 बाईस बरष ब्याह कौ भए । पवनजय निज मंदिर गये ॥
 पवन गया रावण के काज । इन ल्याई दोग्युं कुल लाज ॥१२२०॥
 याकूँ भई गरभ की चिति । तुम राखो जे आवै चित ॥

पिता द्वारा निष्कासन

इतनी सुणत कोपिया भूष । रक्त नयन भर क्रोध के रूप ॥१२२१॥

बेग नगर तें देह निकार । उनको नीकै बडौ कुमार ॥
 बसतमाला राजा पै गई । करि डंडौत चरख को नई ॥१२२२॥
 धजनी बहौत लाडली सुता । बासी मोह बहुत तुम हुता ॥
 निसदिन जीव सम गिणते ताहि । बाका वचन डारते नाहि ॥१२२३॥
 अंसी प्रति प्यारी को धिया । केतुमती बाकों दुख दिया ॥
 मानसरोवर पवनजय गया । चकवी रुदन देखि भई दया ॥१२२४॥
 ब्रह्मते भ्राय किया सजोग । च्यार पहर निस भुगत भोग ॥
 करो खोज तब कीजौ क्रोध । नीके न्याय समझो नृप बोध ॥१२२५॥
 केतुमती इह दीनी काढि । पाकौ भव बनी प्रति गाढि ॥
 पिता गेह नही पामे ठाह । हारे थके बिरछ की छाह ॥१२२६॥
 सब मत्री समभाव्य मान । कोई चित्त नही भाव्य भान ॥
 बर्मतमाला ऊपर रिस करी । तू विभचारिणी है प्रति धरी ॥१२२७॥

सब ओर से तिरछत

ए सब भई तुम ही ते पोडि । तो को दुख दीजे ते थोडि ॥
 डेसा ईंट पत्थर की मार । नगर माहि तें दई निकारि ॥१२२८॥
 जिहा जिहा तै भाई बध । धरि धरि फिरी जाणि सनबध ॥
 कोई वारनु न देखन देह । द्वार ही ते पाथर लेख ॥१२२९॥
 सब कुटब की छोटी आस । दोन्यु नारि लिया बनबास ॥
 हस्ती सिंह चीने तहा फिरै । महा भयानक बन मे डरै ॥१२३०॥
 गोवै पीटै करै पुकार । ल्यावै देही घाव विकार ॥
 भूख पियास सतावै देह । कपडा फाटै लागै वेह ॥१२३१॥
 आसी चलै दुख व्याप्या घणा । ऐसा जोष करम का बध्या ॥
 पवनजय मोसो अस करी । विछोहा समै प्रीत चित धरी ॥१२३२॥
 सासु सुसरै दई निकार । मात पिता कछु करी न सार ॥
 करम विपाक जाणि मनमाहि । जननी पिया दया उर नाहि ॥१२३३॥
 वा मुक्तौ कछु किया न मोह । निर्दय बने असर नही लोह ॥
 जो मृगपती मुक्तने इहा साइ । दुख सकल बियोग मिट जाइ ॥१२३४॥
 तानी लू लागै तन तपै । छिन छिन नाम जिनेश्वर जपै ॥
 केस उखारि र पीटै हिया । कवण पाप पुरख मै किथा ॥१२३५॥
 बार बार सुमरै भगवंत । तुम बिरण कुण सरणावति सत ॥
 दूजा कोई नही सहाय । बेर बेर सुमरै जिणाराय ॥१२३६॥

बसंतमाला समभावं ताहि । सुख दुख करमतरा फल आहि ॥
 इनकै होत न लागै बार । कबहुक रंक कबहु भो बार ॥१२३७॥
 वनहि देखि धीरज नही धरै । बसतमाला भ्रंजनी स्युं कहै ॥

भ्रंजना का गुफा में शरण लेना

परवत ऊपरि गुफा है भली । दोन्यु गिरिवर ऊपरि चली ॥१२३८॥
 तिहा भोग्य करै फौकार । बारह कोम होइ वन छार ॥
 देखत वन लागै भय घणी । नाम सुणत भावै कपली ॥१२३९॥
 भाखडी मूल पडे चिहू ओरि । पाव बरख को नाही ठौर ॥
 कपडे भाडो सों लग फटे । बारिभ कोरि देह कौं कटै ॥१२४०॥
 पग भीतर बहु काटे गिडै । भंसे दुखसौं परवत चडै ॥
 तिहा ठोर सोह बहु परी । ताहि देखि बहु दोन्यु डरी ॥१२४१॥
 धकी वृक्ष तल चलै न पाव । बसतमाला बौली इह भाव ॥
 जिम तिम चल करि यांक गहौं । गुफा माहि निरभय छै रहौ ॥१२४२॥
 देही छुलि छुलि हुवा पिड । पाव बिगास हुआ केई पड ॥
 लेइ उसास रोवै भ्रंजनी । चला न जाय कटिन गति बनी ॥१२४३॥
 वामै दाहिणै कही न ठाव । वरी विविष किरा दिस जाउ ॥
 बसतमाला कर पकडघा आइ । धामती द्वेकती गुफा मे जाय ॥१२४४॥

सघन वन मे मुनि वर्णन

बैठि गुफा मे प्राश्नम लिया । मातग वन सकल दृष्ट मे किया ॥
 देखे वृक्ष मनोहर फले । ता वन मे मुनिवर तप करे ॥१२४५॥
 नासा दृष्टि आतम ध्यान । नेत्र बिध पालण धरि ध्यान ॥
 सहे परीसा वाईस धीर । छह गिनु की व्याप नहि पीर ॥१२४६॥
 मुनिवर वन मे भय नही धरै । देह तराी ममता परिहरै ॥
 म्यानवत जिम समुद्र मंभीर । मुल्या भव्या बतावै तीर ॥१२४७॥

मुनि वंशना

जाकै हैं उत्तम छिमा आदि । पञ्च इन्द्री का लहै नहीं स्वाद ॥
 भ्रंजनी भाइ प्रदक्षिणा दर्ई । नमस्कार करि चरणां नई ॥१२४८॥
 बसतमाला किया परणाम । बारबार पढै नृणप्राप्त ॥
 समाधान पूछै मुनिराय । मुनिवर भरी करम परमाव ॥१२४९॥
 महेन्द्रसेन की इह पुत्तरी । सप्त सील सयम गुण भरी ॥
 प्रह्लाद राय पवनंजय पूत । बाईस वर्ष दुख दिया बहुत ॥१२५०॥

चलती बेर किया सजोग । केतुभती ने दिया विजोग ॥
 कोई नाही हुआ सहाड । असुभ कर्म उदय भया आइ ॥१२५१॥
 जैसे करम सब ही कुं लगै । कोई नाहि करम तैं भगै ॥
 भजनी बसंतमाला सुष चहै । श्री मुनि सब आगम की लहै ॥१२५२॥

बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पुछना

बसंतमाला पूछे कर जोडि । बात हमारी कहो बहोरि ॥
 कैसा जीव गरभ किम पड्या । कठिन पाप करके अवतरया ॥१२५३॥
 किम वियोग हम कौं इह भया । पूरव पाप कवण हम थया ॥
 बोले मुनिवर लोचन ध्यान । पुन्य जीव गरभ भयो आनि ॥१२५४॥
 याको दूषण नाही कोइ । भजनी पाप उदय तैं होइ ॥
 महापुनीत धर्म को देह । चरम सगीर पुत्र तुभ गेह ॥१२५५॥

मुनि द्वारा समाधान

हनुमान होसी तुभे पुत्र । कामदेव बलवत बहुत ॥
 उसका भव पूरबला सुणौ । रोग सोग मन को सब हणौ ॥१२५६॥
 जबू द्वीप भरत क्षेत्र आहि । अमितवति नगरी ता माहि ॥
 मंदिर अभिष राजा भरमिष्ट । नंदीनमे सम्यक दृष्टि ॥१२५७॥
 जया देवी स्त्री ता गेह । मदी पुत्र की सोमै गेह ॥
 रितु बसंत खेलै सब लोग । नदन वन मे वृक्ष अशोक ॥१२५८॥
 रागरग गावैं सब ठौर । सकल जगत मे सुख का मोर ॥
 विद्याधरी जोषिता घरी । चली जात आकास गामरी ॥१२५९॥
 देखि दमै दौड्या आकास । मुनिवर निरप गई ता पास ॥
 नमस्कार करि पूछ्या धर्म । जुगै बचन ते लागे मर्म ॥१२६०॥
 इक दिन मुनि को दिया आहार । विनयवत होइ कीनी सार ॥
 नित उठ राखै आतम ध्यान । अत समै पडै पंच प्रभु नाम ॥१२६१॥
 देही तजि गया सौषमं विवान । भया देव पाया सुख ठाम ॥
 जहां ते चय मृगाकपुर देस । सूरज चद्र तिहां राय नरेस ॥१२६२॥
 प्रीय अग ताकै पटघरी । सिंघरथ पुत्र सुं सोभा वरी ॥
 समकित पूरण भया काल । उपनी जाय स्वरगपुर बास ॥१२६३॥
 विजयारथ तहा भरननदेस । सुकच्छ नाम तिहां लखौ नरेस ॥
 कनकोदरी राखी सुंदरी । धनबाहन पुत्र भया कुम्भखडी ॥१२६४॥
 जीवन समै विवाही नारि । बीतै निस दिन जोग मक्कारि ॥
 विमलनाथ स्वामी धरिहुत । निरबाल भये श्री भगवंत ॥१२६५॥

तिरण भवस्तर धनबाहन राय । राजकरत सुख मे दिन जाय ॥
 घणहर देखि भयो बैराग्य । राजविभूति कू बही त्याग ॥१२६६॥
 लक्ष्मी तिलक मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई वयन मन काइ ॥
 तेरहु विष चारित्र सो ध्यान । वैयावरत करौ उत्तम म्यान ॥१२६७॥
 सोलहकारण दसलक्षण बरत । रतनत्रय पालत गुण धरत ॥
 बारह अनुप्रेक्षा चितप्रेषि । बाईस परीस्या सहै बिशेष ॥१२६८॥
 बारह विष तपसो मन न्याइ । बाह्याभ्यंतर एकै भाइ ॥
 सब जिय आप समानै जानि । धर्मोपदेस करै व्याख्यान ॥१२६९॥
 आतमदरस ज्योति सौ लगी । सास उसास म्यान करि पगी ॥
 मास उपास पागणा करै । अंसा तप गरबा तन धरै ॥१२७०॥
 सात स्वर्ग मे अमर विमाण । देही छाडि भया सुरथान ॥
 बहा ने चइ तुभू कू पि मे आइ । पुन्यवत कचन सम काय ॥१२७१॥

ब्रूहा

अब भव सुणि अजनी तणा, कहै सवेष बपाण ॥
 वचन लगे अमृत समा, बोलै म्यान प्रबान ॥१२७२॥

चौपई

विजयागध नगरी तिहा अगं । मुकठ भूप सब का दुख हरण ॥
 ताकै घर पटराणी दोइ । सीलवती पतिवरता सोइ ॥१२७३॥
 कनकोदरी न लक्ष्मीवती । दोन्यु सोमै गुण गुणमती ॥
 लक्ष्मीमती प्रतिमा जिए पूजि । अन्नपान आगेगै तुभ ॥१२७४॥

कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा को चोरी

कनकोदरी तब अंगी करी । प्रतिमा चोरी वाइ मे धरी ॥
 लक्ष्मीवती बरन ते उठी । जिनप्रतिमा नही पार्द पुठी ॥१२७५॥
 लक्ष्मीमती मन व्यापी पीर । अन्नखाई नही पीवै नीर ॥
 श्रीमती अजिका तब आइ । लक्ष्मीमती देख मुरझाय ॥१२७६॥
 ताहीं अजिका कहै समझाय । अवर प्रतिमा पूजो जाय ॥
 बेग सनान करि भोजन करो । भाव तुमारो पूरण सरो ॥१२७७॥
 जिए अग्यांन तें प्रतिमा हरी । अपणी यति षोटी तिरण करी ॥
 जनम जनम नरकाँ दुख होइ । प्रनिमा जाणि चुरावै कोइ ॥१२७८॥
 भव भव हूँता जीव कँ रोग । सदा कुटंब मे पई वियोग ॥
 कनकोदरी कपी सुणि बात । प्रतिमा आशि दई ता हाथ ॥१२७९॥

मैं तो महापाप इह कियो । प्रतिमां ले जल मे राखियो ॥
 लक्ष्मीमती न्हाई तिए बार । प्रतिमां पूजि कर लिया आहार ॥१२८०॥
 कनकोदरी कु चिता भई । बाही सम राजा पै गई ॥
 जो प्रभुजी मुक्त आम्ना छोह । तो मैं अब संयम व्रत ल्योह ॥१२८१॥
 राजा की आम्ना जब पाय । श्रीमती भजिका पास आय ॥
 बिनती करि चरणन को नई । मौलौं भंसी चूक जो भई ॥१२८२॥
 दिक्ष्वा देहु ज्यों छूट पाप । जो तप किये मिटै संताप ॥
 दिक्ष्वा दई जिनवाणी कही । तपासुह ह्वै काया देही ॥१२८३॥
 तप करि किया करम का घात । देही तजि पाई सुर जात ॥
 इन्द्राणी भई मोधम बिबाण । न्हा ते भई तू भंजनी भाणि ॥१२८४॥
 बाईस घड़ी जिन प्रतिमा हरी । बाईस वर्ष ही आपदा सही ॥
 भ्राष्ट्राणी जब प्रतिमाधरी । वनमे पग उगाहणे फिरी ॥१२८५॥
 सुणा भरम उपज्या वैराग्य । मुनि कै उठि चरणा मे लागि ॥
 मैं गर्म तैं हो निहृत्त । दीक्ष्वा लेई कर्क मुम वत ॥१२८६॥

पुत्र जन्म की भविष्यवाणी

बोले मुनिवर ग्यान बिचार । तेरे होई पुत्र अवतार ॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण का मित्र । बहुरिड करै धरम की रीत ॥१२८७॥
 कामदेव महा बलवत । ताका नाम होसी हनुमंत ॥
 पवनजय से फिर संयोग । बहुत बरस भुगतये भोग ॥१२८८॥
 तेरे असुभ करम सब गये । सुख अनत देखैगी नए ॥
 ज्यौरा सुधया किया नमस्कार । बैठी आम्न निज गुफा बम्हार ॥१२८९॥
 मनमे रहसि भई अछील । चित मे राखे मुनि के बोल ॥
 सब चिता तब ही मिट गई । प्रगट्या तिमिर रजनी जब भई ॥१२९०॥
 दुष्ट जीव हूँ वनमे बने । बहा भयानक शब्द हूँ सुने ॥
 दावानल सा वन सब जलै । गज टक्कर लें परबत हिलै ॥१२९१॥
 भाई सबद तैं बुझे गुफा । अब व्यापै नहीं जीव में कुफा ॥
 जलंतमाला भंजनी बिललाई । सोवै चरती घात बिछाई ॥१२९२॥
 घैसे हुलमीं बीतै बड़ी । एक एक पलक बरस सम टरी ॥
 एक पहर जब बीती रयन । यां खेन्यां कै हिये अबल बन ॥१२९३॥

रतन चूली खेचर तिह ठाह । रतनचूला राणी का नाम ॥

रतनचूल का अपनी स्त्री के साथ आगमन

अजनी का दुख सुनि अपनी दया । दहै बिलाप कवण ने किया ॥१२८४॥

इनका दुख कगी अब दूर । असे वन मे ए कोई सूर ॥

वाही वनकू देवता आइ । एक भवतर की अवधि उपाइ ॥१२८५॥

ईंके गम मे है हनुवंत । महोच्छे जाके करै बहु भाति ॥

महाबली अर चरम सगीर । साहसैवत महा बलबीर ॥१२८६॥

अमे बालक तरणा अवनार । याही भव पावै मिव सार ॥

गधर्व जानि के आण देव । मगलचार करण को सेव ॥१२८७॥

सब परवत पर भई सुवास । महारमणीक सोमै चिह्न पास ॥

गावै गीत अर नाचै पडी । रतनचूल चित अचरज घरी ॥१२८८॥

अबही सदन होइ था दुद । पलमे देख्या होत आनद ॥

अरे तलाव अर पर्वत भरै । सूके हल्य अए सब हरे ॥१२८९॥

छह रितु के लागे फल फूल । सीतल पवन सुख सम तुल्य ॥

मुनिसुव्रत की जिन प्रतिमा घरी । गधर्व देव सेव बहु करी ॥१२९०॥

संस्कृत मे वे गावै गीत । करै नृत्य अति महा प्रवीण ॥

देवागना बजावै वीण । करै नृत्य अति महाप्रवीण ॥१२९१॥

पूजा करी अजनी आय । तीन काल सुमरै जिए राय ॥

अभी घडी देी कुसुम समाई । बसतमाला तब लई बुलाई ॥१२९२॥

उन इसके सब समझै चिन्ह । सेज्या पर स्वाई करी जतन ॥

पुत्र जन्म

भया पुत्र शशि के उद्योत । तम घट गया उजाला होत ॥१२९३॥

रवि कीसी मोमै छवि काति । बालक मोमै असी भाति ॥

बदन देख रोवै अजनी । कहै बचन सुभ असी बनी ॥१२९४॥

पुत्र जन्म होता घर माहि । तो मनमान्या होत उछाहि ॥

जो होता पवनजय गेह । पुत्र देखि करता अति नेह ॥१२९५॥

जन्म समय देता बहु दान । पीहर का करता सन्मान ॥

अब वनमे आई परदेस । कहा करू किससु उपदेस ॥१२९६॥

देवागना समझावै ताहि । यह बालक मेटे दुखदाह ॥

पुण्यवत जीव जन्मीयौ ! वेव आय महोत्सव कियो ॥१२९७॥

पराक्रमी एकाभवं मोक्ष । अंसा पुत्र भया तुभू कृषि ॥
 अब अपणै मन करी आनंद । यह बालक जैसे मुवि चन्द ॥१३०८॥
 रक्षा बहुत करैगे देव । देवांगना करैगी सेव ॥
 विद्याधर स्त्री संयुक्त । गुफा दुवारै घाय पहुँत ॥१३०९॥
 विद्याधरी बालक ढिग गई । देख बदन बलिहारी लई ॥
 प्रति सूरज रक्षा बारहूँ ठौर । जहा देवता बँठे और ॥१३१०॥
 बसतमाला मन चिता करै । मत कोई दुरजन बालक हरै ॥
 निकलि गुफा तै बाहर छाड़ । विद्याधर ढिग बँठी जाइ ॥१३११॥
 तब बेचर पूछै विरतात । तुम क्यों रही वनमे इण भाति ॥
 तुम अपणा समभावो भेव । जो मेरा भाजै अहमेव ॥१३१२॥

सेखर के प्रश्न का उत्तर

पिछली बात कही समभाय । इह है सुता महेन्द्रराव ॥
 मनोवेगा गर्भ ते भई । प्रह्लाद राय के सुत परणई ॥१३१३॥
 इहै पवनजय की असनरी । बाईस वरष वियोग मे पड़ी ॥
 रावण के कारज कौ चल्या । चकवी वियोग देख फिर मिल्या ॥१३१४॥
 मात पिता धी मिल्या न कुमार । एक रात रह गया तिह वार ॥
 केतुमनी इहै दई निकाल । याकी किनहि न करी समाइ ॥१३१५॥
 नाथी माई गुफा मे रही । सर्वकथा व्योरास्युं कही ॥
 मुनिवर पासि सुंणो परजाइ । किये करम सो मुगत्त काइ ॥१३१६॥
 बसतमाला तब पूछै बात । अपणा कहो नाम कुल जात ॥

सेखर का पारख्य

विजयाराय उत्तर दिस ओर । हनुवह नगर बसै तिह ठौर ॥१३१७॥
 विचित्र नाल तिहा भूपती । सदमावण राणी सुभमती ॥
 प्रतिसूरज हू ताकी पूत । व्योरा सकल कहा संयुक्त ॥१३१८॥
 अजगिण सुणि हिय यह भरी । मामा सो बोली तिह घरी ॥
 कंठ लगाय रुदन करि मिली । बसतमाला खुडावै मन रली ॥१३१९॥
 नीर आणि परछाल्या मुख । दोन्या हीण भयो अति सुख ॥
 थारु संग नाम जोतगी सधात । तास्युं पुछी जनम की बात ॥१३२०॥
 कैसी घडी जन्म्या इह पूत । कबण कबण लक्षण समुक्त ॥
 चंद्र बहि छाठे अचरात्रि । अबण नक्षत्र उदय शशि क्रांति ॥१३२१॥

वा समये हुवा परसूत । कीए लगन मे जन्म्बा पूत ॥
 पींडी लेइ करि जोतिग साधि । सुपभ नाम सबतसर बाधि ॥१३२२॥
 सूरज स्वामि वरय का कछा । सब विरतात जोतिगी लछा ॥
 रवि है मीन चन्द्रा मक । मगल वर्षे मीन मीन का सुक ॥१३२३॥
 बुध मीन बृहस्पति सिंह । सनीस्वर मीन का संह ॥
 जनमपत्री लिखि जीतिगी देधि । सबे भले ग्रह पडे विशेषि ॥१३२४॥
 दक्षिणा दई विप्र ने राइ । निवण करी सब देवा झाइ ॥

अंजनी का विद्याधर के नगर जाना

अंजनी प्रति बिवाए बैठाइ । बसतमाला संग लई चढाइ ॥१३२५॥
 विद्याधर ले निजपुर चल्या । सुगन मुहूरत साध्या भला ॥
 बैठि बिवाए चले आकास । देख्यो रवि बालक आकास ॥१३२६॥

बिमान से हनुमान का शिला पर गिरना

उछल पडघा परबत पर आय । अंजनी पुत्र पुत्र बिललाय ॥
 रुदन करे प्रति सूरज घणा । आसू धार नयण सौं वण्णा ॥१३२७॥
 बालक पडघा शिला पर आय । परबत चूर हुषा तिहू ठाइ ॥
 पुन्यवत कै लगी न चोट । चुखै पाव अगुठा मोठ ॥१३२८॥
 हसीर उछलै बारबार । देख पुत्र सुख भया अपार ॥
 लिया उछग हिया सौं ल्याइ । पुहचे हनू रह पुर मे जाइ ॥१३२९॥
 नगर माहि प्रति थयो आनंद । पूजा करि श्री देवजिणद ॥
 बालक बधे नित उत्तम देह । रहै अंजनी मामा गेह ॥१३३०॥

सोरठा

सब तैं बडो ज पुण्य, जल थल मे रिक्षा करे ॥
 सकट विकट उद्यान, कष्ट पीड सगली हरै ॥१३३१॥

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान जन्म विधानकं ॥

१७ वाँ विधानक

चौपई

पवनजय के द्वारा रावण से बिदा

पवनजय रावण पे जाइ । नमस्कार कीयो सिर नाइ ॥
 रावण ने प्रति आदर किया । बिदा बहण राजा पर किया ॥१३३२॥

पवन संग बहु सेन्यां दई । बरुण भूपसी चरपट भई ॥
वरुण राय के भूके पूत । बांध्या बरुण राय अवबूत ॥१३३३॥
सरदूषण तब लिया छुडाय । बरुण आशि लगाया पांय ॥
पवनकुमार सराहा भूप । या का अधिक विराजै रूप ॥१३३४॥

पवनजय का आदित्यपुर आवमन

भई जीत लंका फिर गया । आदित्यपुर पवन आइया ॥
मात पिता के चरणउं नया । परियण माहि बधावा मया ॥१३३५॥
अजनी तरा महल मे जाय । देखी नहीं त्रिया तिह ठाय ॥
मन माही अति चिता भई । मंदिर श्री राणी कित गई ॥१३३६॥
मात पिता सू पूछी बात । मात कहा उससे बिरतांत ।

पवनजय का अजना के निष्कासन के समाचारों से दुःखित होना

तिण कारण धरते दी काडि । उंण दूषण किया था बाडि ॥१३३७॥
बोले पवन तब वचन गिसाइ । तुम मुझ देते लेख पठाइ ॥
तब तुम देते बाहिर निकान । वा बिन प्राण जाहि इह बार ॥१३३८॥
वाकी मोहि बतावो सार । अजनी पठई किसके द्वार ॥
वा हम भेजी पिता के गेह । तुम उसकी सुधि जाकर लेहि ॥१३३९॥
प्रहसित मित्र लिया तब साथ । दंतीपुर तहा महिद्रनाथ ॥

पवनजय का सुसुराल जाना

पवनकुमार सुसर पै गया । उन सनमान बहुत बिध किया ॥१३४०॥
अजनी तरा महल मे गया । देखी नही सोच तिण ठया ॥
कन्या एक देखी तिण ठाव । पूछै बात पवनजय राव ॥१३४१॥
उन सब कही सुसर की बात । काडी सुता पिता घर मात ॥
भैसी सुंणत लाई पछाड । बडी बार तन भई सवार ॥१३४२॥
महेन्द्रसेन सौ तब कही आशि । तुम क्यों दई अजना जाशि ॥
महेन्द्रसेन बोले समझाइ । वाकु सासु ओलंभा लाइ ॥१३४३॥
सो हम पै क्यूं गली जात । ओलंभा तें सुकुल लजाइ ॥
पवन तिलक घरि घरि सुख लेइ । कोई निश्चै खबर न देइ ॥१३४४॥
प्रहसित सो पवनजय कहे । तुम फिर जाहि खबर के जहे ॥
प्रह्लाद के लुमती पै जाहु । ए बारता कहो समझाय ॥१३४५॥
जो मैं अजनी पाऊ कही । तो मुझ प्राण रहैये सही ॥
जो बहु मेरे चढे न हाथ । तो मैं भी प्राण तजुं उस साथ ॥१३४६॥

प्रहसित मित्र बहु विनती करे । तुमनै छोड़ि जाउ किए परे ॥

अंजना की तलाश

भरनक्षेत्र दू दू सब देश । अंजनी पावै कोई नरेस ॥१३४७॥
 पवनजय विदा मित्र ने दई । हस्ति परि चढ़ि मोघण लई ॥
 वन परवत देखी बहु ठोर । रुदन करे पीछे कर सौर ॥१३४८॥
 पचडी पटकी करै पुकार । कपड़े तनके फाड़े डार ॥
 इस वन मे बहु कोमल देह । वन भय देखि भई मर घेह ॥१३४९॥
 कं वह दुष्ट जिनाबर गही । कं विद्याघर ले गया सही ॥
 कं उन दीक्षा लीनी जाइ । अन्न पाणी बिन मुरझाय ॥१३५०॥
 मै भी मरू याहि वन बीच । ऐसे दुखतै आछी मीच ॥
 हस्ती सेनी भराँ कुमार । तू फिर जाह प्रह्लाद कं द्वार ॥१३५१॥
 मल प्याम तू दुखिया होट । मेरा दुख जागै नही कोई ॥

प्रह्लादराय को पवनजय का संदेश

प्रह्लादराय सो इस जाय बहो । पवनकुमार अगनि भ दह्यो ॥१३५२॥
 हस्ती देखि रुदन अनि करे । आसि पामि कु वन के फिरे ॥
 प्रहमिन गया जहा प्रह्लाद । पवनजय वचन के मुख आदि ॥१३५३॥
 वह अंजनी बिन तजै पराण । मै तुम खबर करी छे आन ॥
 राजा मुणनै खाई पछार । गोबै पीटै सब परिवार ॥१३५४॥
 केतुमती आई मुणि सोर । प्रहसित वाता कही बहोर ॥
 केतुमती गिम करी अनंत । तू यत्र आया छोड़ि तुरन ॥१३५५॥
 केस खसोटै कूटै हिया । सब रजियण दुख अधिका किया ॥
 तिनका दुख बरण्या नही जाय । ऐसे सकल लोग बिलनाड ॥१३५६॥
 मौलवती कु दिया कलक । इन कयो व्यापी अमी सक ॥

अंजना की तलाश

देश देश के धेचर छाड़ । प्रह्लाद ने बात कही समझाय ॥१३५७॥
 पवनजय अंजनी दू डे जाय । उनको तुम पै ल्याडै राह ॥
 अर जो आई पहुंचे नही । पत्नी लिखी प्रति सुरज अही ॥१३५८॥
 भेज्या दूत प्रतिसूरज पास । उनसौं बात कही परकास ॥
 पवन अंजनी के कारण । आपणपै दुख कीनें धरणे ॥१३५९॥

मात पिता विभव घर त्याग । दूढ़ण कारण गया है भाग ॥
पवनजय को तुम दूँबो जाय । अँसा कहै प्रह्लाद जु राय ॥१३६०॥
प्रतिसूरज अजनी सों कही । पवनजय की कुछ सुघ नही ॥

अजना की चिन्ता

अँसे सुने अजनी बँन । चिता व्यापी भयो कुचँन ॥१३६१॥
अब लो थी उसकी मुक्त आसि । ऊनों लीया अब बनवास ॥
अब हू तज्जु आपने पाण । अँसी मोहि बणी है आण ॥१३६२॥
वसतमासा सूरज पै गई । सकल वात तासू वीनई ॥
तुमारी भाणजी व्याकुल होइ । तुम वा घोरज देवो कोइ ॥१३६३॥
प्रति सूरज अजनी सौ कहै । तू काहे को चिता गहै ॥
बैठि विमाण प्रथी सब देखि । पवन मिलाउ तोहि विसेवि ॥१३६४॥
सज्या विमाण चल्या आकास । देखे बहुपुर पट्टण वास ॥
प्रह्लाद तरो विद्याधर घर्यो । विमाण आरूढ भले सब बण्यो ॥१३६५॥
चले बहुत विद्याधर भूप । प्रतिसूरज पहुँच्या रवि रूप ॥
देखै सकल पवन का खोज । बहुत विनय करै सब सौज ॥१३६६॥
देख्या हस्ती वन के आँकि । पहिचान्या सब ही जन ताहि ॥
हस्ती ने देखी बहु भीर । वनमे कोई न आवै तीर ॥१३६७॥
पट्टा चुखै अधिक मयमंत । परिदक्षणा देवै बहुभाति ॥
प्रमुरक्षा करै गयद । चलै न विद्याधर का बद ॥१३६८॥
कागद की हथणी दिललाइ । हाथी बाँधि लियो तिन ठाय ॥
पवन बैठा कर संन्यास । गही मौन जीव तजि आस ॥१३६९॥

पवनजय की प्राप्ति

प्रह्लाद देखि अति चिता करै । मति यह रूप दिगंबर धरै ॥
माथा चुब्या पुत्र का जाय । बहुत प्रकार करी समझाय ॥१३७०॥
इह दीक्षा की नाही बार । अब तुम सुख भुगतो ससार ॥
आगे जब सपति हूँ मली । तब दीक्ष्या लीजो मन रली ॥१३७१॥
मौन माहि इन सैन इस कही । त्रिया वियोग संन्यास मैं गही ॥
जब अजनी मैं देखु नेन । तब मैं बोलूँ मुख सौ बँन ॥१३७२॥
अन्न पान मैं तब ही खाउ । मैं अब चरपा मरख का भाव ॥
तब रोवै विद्याधर घर्यो । राक्षस वानर बसी जण्यो ॥१३७३॥

प्रति सूरज बोले हंसि बात । हू बुलाऊ पवनंजय इक भाति ॥
 तब सब बोले बेग बुलाय । तीन नोक मे होइ जस नाब ॥१३७४॥
 प्रति सूरज पवन द्विग जाय । प्रथम भेद भाष्यो समभाय ॥
 और सब बात युवा की कही । पुत्र जनम सुख रहस्या सही ॥१३७५॥
 मुनि केवली गया था जान । वनमे नारि देखी विनलात ॥
 दया निमित्त मैं तहा आइया । भाणजी कु विमाण परि लिया ॥१३७६॥
 अंसी सुणि मन आनंद भया । सब ही का समा मिट गया ॥
 बहुरि कथा बालक की कही । रूप लक्षण वा सम कोई नही ॥१३७७॥
 रवि नै देखि बालक उछल्यो । तिहा ने आइ परवत परि पड्या ॥
 बहुत दुख चित चिता भई । हमारी सेन्या मगली बई ॥१३७८॥
 बालक की सुणि रोबे पौन । हाई हाई करै सब हौन ॥
 प्रति सूरज तब बोल्या राव । बालक बचा लगा नही थाव ॥१३७९॥
 सिला फूटि थई चकचूर । पुण्यवंत कै लगी न मूर ॥
 अगूठा चूपै बिलकै खरा । पुण्यवंत बालक तिहा परा ॥१३८०॥
 लिया गोद अजनी कू दिया । हनू रह मे आश्रम लिया ॥
 सेना महित हनू रह गये । सब राजन को भोजन दिये ॥१३८१॥

अ'जना पवनंजय सिलन

मास दोय को सकल नरेस । बिदा मागि पहुँचे निज देस ॥
 पवनंजय अजनी सुख कै भाव । पुत्र तरणा घरधा हणुमंत नाम ॥१३८२॥
 कामदेव हे सब तैं बली निमकी कथा जगत मे चली ॥
 हणुमान का सुगं चरित्र । धन सपति बहु लहै पवित्र ॥१३८३॥
 सुनि पुराण जे निश्चय धरै । काटि करम भव सागर तिरै ॥
 रवि प्रकास नै भये अंधेर । पावै मोक्ष नासै भव फेर ॥१३८४॥
 जाय मुगति मे निरभय ठौर । आवागमन न होय बहोर ॥
 दरसन ग्यान तब लहै अनंत । बलबीर्य का नावै अन्त ॥१३८५॥

ब्रह्म

चरित्र सुणै हनुमान का, धरं धरम हिंदु चित्त ॥
 निश्चय पावै परमपद, होइ मुक्ति की धित ॥१३८६॥

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अ'जनी मिलान विधानकं ॥

बीपई

१८ वां विद्यालय

बरण द्वारा रावण से युद्ध

बरण सुणी पवनंजय गृह त्याग । छोड़ि कुटुंब वन में गये भागि ॥
 अब मैं भुगतौं निरभय राज । रावण सौ क्या झटका काज ॥१३८७॥
 रावण का कछु भय नहीं धरूँ । अब मैं पकड़ि बंदि से करूँ ॥
 रावण सुणी बरण की बात । महाकोप उपज्या सब गात ॥१३८८॥
 देश देश को दूत पठाइ । सकल भूपति लिया बुला बुलाइ ॥
 दोइ सहस्र अपोहिणी दल जुडघा । बाजंन बाजें मारु बुरघा ॥१३८९॥
 बजै दमामा घर सहनाहि । मेघपुरी को बन बेरी जाई ॥
 भेजा दूत हनूरुह देस । पवनंजय को दिया सदेस ॥१३९०॥
 पवनंजय रावण की मागि । चल्या देखि बेग्यः फरमान ॥

हनुमान द्वारा युद्ध में जाने की इच्छा

तब हनुमत कहै इरा भाति । मौकू आग्या दोजे तात ॥१३९१॥
 मेरा तुम देख्यो पराक्रम । होइ सहाइ तुम्हारा धर्म ॥
 पुत्र बयण सुणि हस्या पवन । पुत्रै कीया तहां गवन ॥१३९२॥
 सेना बहुत लई तिन साथ । त्रिकुटाचल देखि छिप्यो दिननाथ ॥
 तिहा उतरि कै आश्रम लिया । भया प्रभात पयाणा किया ॥१३९३॥
 रावण पास गया हनुवत । देख्या ताहि बहुत हर्षवंत ॥
 बहुत प्रति थी बोलै भूप । वाका देख्या अधिक स्वरूप ॥१३९४॥
 बाकी कया कहूँ सब लोक । पर्वत परि पडघा माता भया सोक ॥
 पुंन्यवंत कै लगी न चोट । परबत सिला भई सब षोटि ॥१३९५॥
 सिला फोड़ि टूकडे करे । हरीमान जीवत ऊबरे ॥
 बहुत सिरादै रावण राय । पवनंजय भली करी बहु भाय ॥१३९६॥
 अंसा बली भेजा मुक्त पास । पूरंगा मो मन की आस ॥
 सेना देखी नाना भाति । कैई तरह की उनकी जाति ॥१३९७॥
 रतनदीप बेरघा बिहुवीर । बरण राय आया चढ़ि ओर ॥
 सकल पुत्र आए चढ़ि संग । मारु सुणि कातर चित भय ॥१३९८॥
 मूरवीर मन करै आनंद । दुहुंवां सुभट करै चव वंद ॥
 राजसर्वसा दिये अहराइ । मानर बंसी बोले राइ ॥१३९९॥

भाज्या रण तै लागै लाज । अब फिर करो भूप के काज ॥
 सिमट लोग फुंन सनमुख भए । इद्रजीत मेघनाद दोऊ गए ॥१४००॥
 उतने कुमार इतने नृप घने । वरण पुत्र इनी ने हने ॥
 मार मार दोऊ घा होइ । झूके सुभट हटै नहि कोय ॥१४०१॥
 रावण आप कटक मे घस्या । बीस भुजा दस सीरनी कस्या ॥
 स्पंह नगरे रथ बैठ्या भूप । तब हनुवत आया बलरूप ॥१४०२॥
 बाधे वरुण के बहु पूत । वरण राय तब आय पहुत ॥
 मनमें सोचा रावण राय । जे बालक ने मारै ठाय ॥१४०३॥
 ग्रंसे समझ आया सामही । झूके लोग न हारि मानई ॥
 वरण एकै विद्याने संभारि । रावण परि छोड़ि तिए बार ॥१४०४॥

कु भकरण द्वारा विजय के पश्चात् लूटपाट करना

रावण ऊपरि विद्या वही, हनुमान वह विद्या गही ॥
 वानर बसी ने बाधिया कुमार' बेरघा वरण लोह की वाडि ॥१४०५॥
 आण्या बाधि रावण कै पास । कुंभकरणस्युं बोल्या हास ॥
 लूटो नगरि करो तुम बदि । जिहा तिहा जाई मचाई दुंद ॥१४०६॥
 लूटो जिको तिकोही लेह । कु भकरण इम आग्या देह ॥
 लुटपा नगर हाट बाजार । राजा का लुटपा मंडार ॥१४०७॥
 बहुत नारि नर लीन्है बाधि । सीलवती मरै बिन अपराध ॥
 केई जीभ घड कणि मरै । सीलमय तै पतिव्रता डरै ॥१४०८॥
 केई कु भकरण का रूप । राग प्रमाण सु देखै भूप ॥
 घनि भाग जे याफी नारि । यह उनकै ऐसो भरतार ॥१४०९॥
 केई पुत्र पुत्र बिलनाइ । केई मात पिता कोई भाइ ॥
 जिएकै कुटव विछोहा भया । परिवस पड़ी बहुत दुख सहा ॥१४१०॥
 केई बाधि लई सगि नारि । केई ऊटा परि असवार ॥
 केई लई गाढघा पै डारि । बहुत बाधि घेरी तिए बारि ॥१४११॥
 ग्रंसी विधि रावण वै आनि । कु भकरण आया बलिबान ॥
 सगली बधि तब करै पुकार । रावण सुणि करि दया विचारि ॥१४१२॥

रावण द्वारा लूट की निन्दा करना

ए तुम क्यों बाधी अस्तरी । कु भरण तै कीनी बुरी ॥
 अर्थ दवं दे छोड़ी बदि । अपणे घर तुम करो आनंद ॥१४१३॥

जाकी वस्तु लूटि मे गई । ताकी ताहि मंगाय करि दई ॥
 रावण में सब दई असीस । तेरो बलो करो जयदीस ॥१४१४॥
 रावण फिर लंका मे गया । सुंदरसण सहज ही लिया ॥
 जे जे सबद करे ससार । वरण किये बहुते नमस्कार ॥१४१५॥
 मैं तो ब्रूक करो थी बरणी । कछुबन भाव कहतां बरणी ॥
 मैं तो अधिक भूढता करी । तुम्हारी आग्या चित्त न घरी ॥१४१६॥

वरण को पुनः राज देना

वरण भूप तब दीना छोडि । बरण सकल दिये नृप तोडि ॥
 वरण फेर करि पायो राज । रतनवीप का सारणा काज ॥१४१७॥
 चन्द्रमाला की महाप्रभा पुत्री । हनुमान व्याही सुभ घरी ॥

जानर वशी राजा बरान

अपना पुढपथी नगर शुभ देस । हनुमान कु दिया नरेस ॥१४१८॥
 कपपुर का राज नल नील । श्रीमालणी राणी सुभसील ॥
 श्रीजयता ताकी सुता । हनुमान कु दीनी सुखलता ॥१४१९॥
 विजयारध गिर किन्नर गीत । कन्या वाकी व्याही सुभ रीत ॥
 किर्धपपुर रहे सुग्रीव । सुतारा पतनी घरम की नीव ॥१४२०॥
 भावमडला पुत्री ता गेह । रूपलक्षण करि सोमै देह ॥
 कन्या बडी सयानी भई । राजा के मन चित्ता गई ॥१४२१॥
 कहै स्वयंवर छाउ आजि । देस देस के भूपति काज ॥
 जा गलु कन्या डाले माल । कन्या सो व्याही भूपाल ॥१४२२॥
 राजा मता विचारै भला । देस देस को चितेरा चला ॥
 पूनली लिखी सब की जाइ । जहाँ लग थे प्रथ्वीपति राय ॥१४२३॥
 जहा तहा के राजकुमार । चितेरे लिखी सुरति सवार ॥
 हनुमान की लिखी फूतली । समझि बाइ प्रनि सौपी बली ॥१४२४॥
 देखी भाव सकल मडला । हनुमान उपरि चित्त चल्या ॥
 राजा याकी मुरति लिखाय । हनुमान पै दूत पठाय ॥१४२५॥
 गया दूत जेठे हनुमंत । रूपलक्षण का नाही भंत ॥
 दीया पटले बाक हाथ । किया पयाना दूत के साथ ॥१४२६॥
 तिहां मारि होबै मयमंत । जहां जाय निकसै हनुमंत ॥
 आमंडला नृप गई पठाय । भोग भूमि वष करै उछाह ॥१४२७॥

अंजनीपुत्र जाण्या इक ओर । छत्रपति नाम विराजै ठौर ॥
निरभय राज करै तिहा भूप । दुष चिंता सब डारी कूप ॥१४२८॥

ब्रूहा

प्रथमकांड श्रेणिक सुण्याँ, विद्याधर को बस ॥
मिथ्या वेदन मिट गई, सगली ही मन सस ॥१४२९॥

इति श्री पद्मपुराणे प्रथम कांड रावण राज विधानक ॥

१९ वाँ विधानक

सोरठा

बे कर जोडि नरेस, श्रेणिक फिर परसन करै ॥
रावण वंश परमेस, मैं बहु बिध करकै सुण्या ॥१४३०॥

चौपई

जिन कोई बकै त्रिदोष का घणी । अंसी मैं उनके मुख सुणी ॥
केवल बयण कह्यो समझाय । सब ससय तिहा मिट जाय ॥१४३१॥
किम उपजै चौबीस जिह्मंद । द्वादश चक्रवर्त्त गुणवृन्द ॥
नव नारायण बलिभद्र भए । प्रति नारायण कैसे थए ॥१४३२॥
कवण पुण्य पूरवभव किया । कवण स्वर्ग ते चय झाडया ॥
किम गुण पास दिहया लई । कवण भूमि ते इह थित भई ॥१४३३॥

अडिल्ल

वाणी ग्यान गभीर तबै जिरावर कही ।
गौतम करै बखान सुणै श्रेणिक उर गही ॥
समकित सो धरि प्रीत सुणै मन त्याडकै ।
सकल बस का भेद कह्या समझाईकै ॥१४३४॥
जबुद्वीप भरतवड कोसाबी नगरी
सुमुष नृपति करै राज दया चित्त भागरी ॥
सुखी बसै सब लोग दुखी कोई नही,
भाई रितु बसन्त सब न क्रीडा चही ॥१४३५॥

वीरक सेठ एवं वनमासा बर्णन

वीरकसेठ तिहा रहे वनमाला असतरी ।
रूपबत गुणचतुर सनावण अतिपरी ॥
सकल प्रजा नृप साय सुवग क्रीडा करी ।
देख त्रिया नृप नैन सुखित चिंता धरी ॥१४३६॥

वनमाला घर राजा का आसक्त होमा

वनमाला बित चल्थो देखि मूपाल को ।
 राज रिद्धि सब देखि भयी सुख बाल को ॥
 मो सी नारि सरूप राख घर ओइए ।
 कहा बरिण क घर जोवन बिरता खोइये ॥१४३७॥
 राजा सोच अचिक मन मे करै ।
 नरपति करै अनीत सुमर नरकां पडै ॥
 हू नृपति बरमिष्ट पाष कैसे करूँ ।
 व्याप्यो अधिको काम सु धीरज किम धरौ ॥१४३८॥

राजा की व्याकुलता

गही राख तब मौन भेद नहि पाइये ।
 करै वैद्य उपचार सु औषध त्याइये ॥
 कहै दोष पित्त वाय का ग्रन्थ विचारि कै ।
 उसको रहै न विकार पचि हार कै ॥१४३९॥
 पंडित जोतिग कहैं ग्रह चाल को ।
 नवग्रह छोटे व्यापि या मूपाल को ॥
 मुख बोलै नही बोल सुग्रह छोटे लगै ॥
 बहुत बढी गभीर जुडे प्रीतम ससे ॥१४४०॥

ब्रह्मा

सुमति नाम इक मन्त्री, आयो मूपति पास ।
 लोग उठाय दिये सबे, पूछे करि अरदास ॥१४४१॥
 सेवक स्थो मनकी कहो, किण कारण गही मौन ।
 साँच बात मुख उचरो, तुम मन संसय कौन ॥१४४२॥
 राजा मन्त्री सों कहै, सामलि सुमति सुजाण ॥
 वनमाला ने देख करि, चये जात हैं प्राण ॥१४४३॥
 मन्त्री विनव राय सो तुम नृप अछो सुग्यान ॥
 परनारी के संग थी, होइ घरम की हारिण ॥१४४४॥
 बोलै नृप अकुलाय करि, सुण हो मन्त्री बात ॥
 ग्यान भेद कब लग अणों, बा विनमो जीव जात ॥१४४५॥
 मन्त्री सोच विचार कर, दूती लई बुलाइ ॥
 भेजी वनमाला कर्ने, लीनी तुरत मणाय ॥१४४६॥

होन्मुं की इच्छा फली, कियो जुगति सो भोग ॥
 जैसे दुखिया मानवी, भूलै रूख बियोग ॥१४४७॥
 बीती निशि सुरज उदय, दपति कर स्नान ॥
 सुमरै श्री भगवंत कौ, मुनिबर पहुता ग्रान ॥१४४८॥
 उठि द्वाराप्रेषण करथो, मुनि को दियो अहार ॥
 दपति बहु बिनती करी, जिम थाये निस्तार ॥१४४९॥
 जाप करत तस भूमिपै, पढी दामनी भाय ॥
 वे दपति दोउ मुवा, विजयाई उपजा जाय ॥१४५०॥
 उत्तर ओगी हरिपुर नगर, तहा पवन गिर भूप ॥
 मृगावती राणी उदर, जनम्या सुषम स्वरूप ॥१४५१॥

अडिल्स

पूब जग्म

हरि विभ्रम घरा जोतिगी विप्र न ।
 दिन दिन बढे कुमार सुराजा केतु ने ॥
 रूपवत सोमत सुख परिवार मे ।
 दान सुपात्र सहाय भयो ससार मे ॥१४५२॥
 मेघपुरी को नरपति ताकी अस्तरी ।
 वनमाला का जीव गभं तसु भवतरी ॥
 मनोरमा धारधो नाम जोतिगी विप्र ने ।
 रूप लक्षण सामोद्रक काहे तसु तनै ॥१४५३॥
 जोवनवती देखि हरि विभ्रम को दर्द ।
 लगन घडी मुभ साधि विप्र चौगी छई ॥
 रहस रानी सो ब्याह रह रग प्रीत मो ।
 फूलन की कर गेज रमे मुख रीत सौ ॥१४५४॥

बूहा

बीरक सेठ की तपस्या

बीरक सेठ उठि हाठ ते, आयो गेह मझारि ॥
 चिता चित उपजी घणी, तिहा न पाई नारि ॥१४५५॥
 घर की सुधि सब बीसगी, दू डे घर घर नारि ॥
 कही न पाई अस्तरी, जती भयो तिण बार ॥१४५६॥
 करी तपस्या जुगति स्यो, लही देवगति जाय ॥
 अपनी अवधि इक भवतणी, ह्रदभाव सौं भाय ॥१४५७॥

दपति पिछला बर सुं, लो चाल्या आकास ॥
तु सुमुख बनमाला इहै, मै वीर कहूं तो पास ॥१४५८॥
हूँ पूर्वे यो बांणियो, तू पुष्पीपति भूप ॥
अब जो तू कछु बल करै, हूं लहूं जुष के रूप ॥१४५९॥

चौपई

देव होकर पूर्व अब की अपनी स्त्री को बुल देना

दपति को बुल देने चले । सुर का क्रोध कहा लग गिरे ॥
कबहु गहिहि गयण उछालि । धरती पबता केलै ख्याल ॥१४६०॥
कहै समुद्र में देहु बुढाइ । कैले घरू सिला तलि जाइ ॥
कं या भीड करू चकचूर । नखसिख तोडि मिलाऊ धूलि ॥१४६१॥

ब्रह्मा

बहुत त्रास उनको दिये, उपनुं जाती ग्यान ॥
पूरब मे पाली दया, तो सुर लखो विमान ॥१४६२॥

चौपई

दया के भाव

जो अब इनकी हत्या करूं । नोतम पाप आप बट भरूं ॥
जै मानुष करै कोई पाप । अप तप करि निज हरै सताप ॥१४६३॥
मेरा दोष टलै अणरीत । राखुं जीव दया सुं प्रीत ॥
छोडे दंपति आणी दया । नारि पुरुष मन आनंद भया ॥१४६४॥

ब्रह्मा

चंपापुर दक्षिण दिसा, छोडे दंपति जाय ॥
हरितिलपुर को नृप थयो, हुवो प्रताप अभिकाय ॥१४६५॥

चौपई

राज करत बीतै बहू वर्ष । जन्म्या मानी महागिर हर्ष ॥
महा प्रताप प्रगटया ससार । हरवंसी जनमिया कुमार ॥१४६६॥
हिमगिर बसु गिर पीछे भए । महीधर भादि पुत्र बहु थए ॥
केई स्वर्ग देवगति पाइ । केइक मुक्ति विराज्या जाइ ॥१४६७॥
बहुतै नया बसाया देस । हरिवंसी बहुत भए नरेश ॥
सीतलनाथ का दरसन किया । हरिराजा वा समए भया ॥१४६८॥

ब्रूहा

सीनल नाथ जितेन्द्र ते, हरिबंसी हुए अनंत ॥

नाम कहा लग बरणाए, कहत न धावै मत ॥१४६६॥

चौपई

मुनिमुवतनाथ का जन्म

कुसागर नगर सुमित्र नरिन्द्र । पीमा देवी मन ध्यानद ॥

मघन ग्रह नगरी मे बसै । दुखी दलित दी कीई न नसै ॥१४७०॥

पदमादेवी पिछली राति । सुपने देखे नाना भाति ॥

स्वेत गयद दृषभ अरुस्यध । लक्ष्मी माला पूनमचद ॥१४७१॥

सूरज उदै मच्छ जल तिर । कल सरोबर निरमल भरै ॥

सिंहासण रतन की भूमि । देखी अगनि बलै निरधूम ॥१४७२॥

कु भ जुगन देखा जल भरघा । देव विमान अनूपम घरघा ॥

देख्यो घरगोन्द्र देवता नाथ । थयो प्रभात उठी जब जाग ॥१४७३॥

मोलह सपणा देखा इण भाति । सुमित्र भूप सो कही सब बात ॥

सुणे सकल सुपना के बैन । विगसत बदन भयो उर चैन ॥१४७४॥

होय पुत्र त्रिमुवन का धरणी । हरिबंसी कुल बाणी बणी ॥

तीन लोक के सुरपति आई । श्री जिन के सेवेये पाय ॥१४७५॥

नरपति वरपति दानव देव । ए सब धानि करेंगे सेव ॥

पञ्चयान का त्रिमुवन पति । धर्म प्रकासि पंचमी गती ॥१४७६॥

सु णि पिय बयण हीये सुख भया । अबल गाठि बाधि कै लिया ॥

आवण बदि दोइज सुभ घड़ी । प्रभुजी आय गर्भ यित करी ॥१४७७॥

आसण कंप्पा सुरपति इन्द्र । अवधि विचार किया धानंद ॥

श्री जिन देव तगो अबतार । उतर सिंहासण कियो नमस्कार ॥१४७८॥

भृकुटी जल तब लिये बुलाइ । नगर कुसागर बैगा जाइ ॥

छपनकुमारी देवि पठाइ । गरभ सोध तराँ प्रभाइ ॥१४७९॥

रतनदृष्टि फूलो की वृष्टि । जै जै करत भये अक्ष नष्ट ॥

देवी सब मिल सेवा करै । रान दिवस टारी नहि टरै ॥१४८०॥

जैसे रवि बादल की छाह । इम गरभ माहि दपै जिराणाह ॥

स्वाति बूंद पर दमके पत्र । श्री भगवत महा पवित्र ॥१४८१॥

बैसाख बदि दसमी सुभवार । अवण नक्षत्र भयो अबतार ॥

सुरपति संग अपछरा धरणी । शैरपति साध्या विधवारणी ॥१४८२॥

चले देवता जै जै करै । इन्द्राणी जिनवर नै हारै ॥
 माया का बालक उठै राखि । लीया उच्चाइ दीनता आखि ॥१४८३॥
 पति की मोद दिखे जिनराय । दरसण देखि महा सुख पाय ॥
 बाजे बाजै नाचै देव । दसौं दिसापति आए सेव ॥१४८४॥
 मेरु सुदरसण पांडुक सिला । तिहा महोच्छ्व कीना भसा ॥
 करै उबटणा मंगल गीत । घीराचारि करी बहु प्रीत ॥१४८५॥
 सहस्र अठोत्तर इन्द्र ने भरे । धीर देवता बहु कर धरे ॥
 श्री जिए ऊपर डारै आणि । काजल नयन सहित मुख पान ॥१४८६॥
 बीधे करण बख की सुई । कुंडल तणी जीति अति हुई ॥
 ग्रामूषण पहराय अनूप । सब सिंगारै सोम रूप ॥१४८७॥
 अष्ट दरब सू पूजा करी । करै भारती बिनती करी ॥
 श्री जिनवर माता पै आणि । तिहा बाजै आणंद नीसाण ॥१४८८॥
 इन्द्र धरणेंद्र सुरा लै गये । बरक्या रतन पुष्प वरणये ॥
 तीस हजार वर्ष की आय । बीस धनुष की ऊंची काय ॥१४८९॥
 कहूँ जोतियी लगन बिचार । मुनिसुवत त्रिभुवन आधार ॥

मुनिसुवतनाथ का जीवन

परियण माहि बचावा भया । जनम समय बहु बन खरबीया ॥१४९०॥
 खेलै सग देव के बाल । श्रीडा करै तब रूप विशाल ॥
 सात सहस्र अरु वरष पचास । ता पाछै मन भया उल्लास ॥१४९१॥
 जसोमती व्याही वर नारि । रूपवत अशि की उगहारि ॥
 भोग करत दिन बीते घणै । भयो गरम जसोमति तणै ॥१४९२॥
 दक्ष पुत्र जन्म्या शुभ घडी । परियण माहि बचाई करी ॥
 पद्म सहस्र वरष करि राज । मृग मृगनी देखे बन माझ ॥१४९३॥
 बिजली पडि करि दोन्यूँ मुवा । ताहि देखि मन विस्मय हुआ ॥
 मन मे धरया धरम सो काज । दक्ष पुत्र को दीनो राज ॥१४९४॥
 सुपणा सरसी आणि विमूति । सुरलौकातिक आणि पकूत ॥
 धन्य धन देख सबद सब करै । प्रभु भागै सिव सुरका बरै ॥१४९५॥
 बडे पालकी प्रभु बन जाइ । सिब नाम ले लोच कराइ ॥
 भए दिगंबर आतम ध्यान । सुरपति किवा चारित्र कल्याण ॥१४९६॥
 बंसास बदी दसमी दिख चित्त । नो वरष रहिया छदमस्त ॥
 बंसास बदी नवमी शुभ वार । टारे करम कातिया वार ॥१४९७॥

प्रकृति तरेसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु कूँ केवल ज्ञान ॥
 आए चतुरनिकाय के देव । पूजा करी बहुत विष देव ॥१४६८॥
 जोजन तीन रक्ष्या समोसर्ग । भव्यजीव का ससय हर्ण ॥
 कंचन कोट रतन के तीन । सिंहासन भामडल लीन ॥१४६९॥
 चारों वन के वृक्ष प्रति बने । वृक्ष अशोक शोक को हर्ण ॥
 बगी घातिक प्रति गंभीर । तिस मे दीसै निरमल नीर ॥१५००॥
 मानस्यभ मान कूँ हरै । देखत गी मन निर्मल करै ॥
 अठारह गणधर बैठे पासि । च्यारो ग्यान कहै वे भास ॥१५०१॥
 वाणी वेद सुगुँ सब कोय । बारह मभा का संसय खोय ॥
 गणधर ब्योरा कहै बलाण । भव्य जीव साभलै बषाण ॥१५०२॥
 दानपती व्हाँ नृप वाहत्त । महसराय लीयो चारित्र ॥
 बैसास बदि चौदसि निर्वाण । समेदगिरि गए मुक्ति भगवान ॥१५०३॥
 जोतै जोति आय करि मिली । पूजा डन्त्र करै मन रली ॥
 पालै प्रजा दक्ष प्रभु भूप । महाबली प्रति धर्म स्वरूप ॥१५०४॥
 एलदुद्धन कूँ दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ॥
 श्रीवर्द्धन जयवता भया । ताकै पुत्र कु नम बलि भया ॥१५०५॥
 महारथ पुल वासकेत बलबड । बहु भूपन ते लीया दड ॥
 वासकेत कै विमलावती नारि । रूप सील समय की पार ॥१५०६॥
 जनक भूप ताकै उर भया । दान मान सबकौ बहु दिया ॥
 दया दान समय नित करै । पुण्या प्रताप तै दुरजन डरै ॥१५०७॥

ब्रह्म

हरिवंसी राजा

हरिवंसी पुनिवत कुल, भूपति भए अनेक ॥
 काटि करम सिवपुर गए, पाच नाम की टेक ॥१५०८॥

चोपई

कोई पंचम गति को गए । कैई स्वर्ग देवता भए ॥
 हरिवंसी बसाए बहु गाम । इनका कुल तीस की ठाम ॥१५०९॥
 इक्ष्वाकवस आदीश्वर किया । जिनकी कथा सुणौ धरि हिया ॥
 उत्तम कुल सबही ते आदि । तिनकी चालै कथा अनादि ॥१५१०॥

ब्रह्म

आदिनाथ मुनिसुव्रत लौ, नरपति भए अनंत ॥
 नाम कहा लग बरखुड, कहत न आवै अंत ॥१५११॥

चौपई

इणही बस बहु भूपति भए । काटि करम शिव धानक गये ॥
 केई पहुता स्वर्ग विबाण । केई भया पृथ्वीपति आण ॥१५१२॥
 केई पहुच्या नरक मभारि । केई पहु च्या स्वर्ग विमांण ॥
 जंसी करणी तैसी गति । धर्मध्यान मे राखै मति ॥१५१३॥
 सकति समान दान अरु वृत्त । देवशास्त्र गुरु राखै हित्त ॥
 च्यारिउ दान भाव सो देख । सो ऊची गति का सुख लेह ॥१५१४॥

इल्हाकाबंसी राजा वज्रबाहु बर्णन

इल्हाक बंसी बिजय नरेस । मुगतै नगर अयोध्या बेस ॥
 हेमचूल राणी पटधरणी । मानूँ कनक कामनी बणी ॥१५१५॥
 सुन्दरमन ता पुत्र जनमिया । कीर्तवती तसु व्याही त्रिया ॥
 प्रथम पुत्र वज्रबाहु भया । दूजा पुरीन्द्र पराक्रमी थया ॥१५१६॥
 दोन्यु कुमर विद्या बहु बढे । बल पौरस सूर् बहुते बढे ॥
 हयनापुर हसबाहण राय । जूडामणी राणी पटधाय ॥१५१७॥
 मनोदया पुत्री ताके भयी । सो वज्रबाहु कुमर को दर्ई ॥
 लिस्व्या लगन साध्या सुभ छोस । व्याहण चाल्या नूप मन होँस ॥१५१८॥
 पुगे इसो पूछै नव बात । चलोकरम मुनिवर की जात ॥
 नासा दृष्टि आतमध्यान । ताको सोमै अ्याकूँ म्यान ॥१५१९॥
 बसत समि परवत परिजाय । वज्रबाहु हस्ति चढिराय ॥
 मुनिवर एक तिहा तप करै । जैसे केस सुंदर नर घरै ॥१५२०॥
 आतमभाव लगायो जोष । छाडे मकल जाति के भोग ॥
 तन बाईस पीस्यो सहै । अष्ट करम कु नित ही देहै ॥१५२१॥
 तप की अधिक बिगाज जोति । निग्न समान परिग्रह नहीं होत ॥
 दोनूँ कुमर सराहै आइ । धनि साध जे घेसे आइ ॥१५२२॥
 वज्रबाहु तिहां लाया ध्यान । देख्यो मित्र उदयसुंदर नाम ॥
 कहै किम चाहौ दिक्षा लिया । बैरागभाव मै तै चित्त दिया ॥१५२३॥
 कवर बरौं तउ अचिरज कहा । मनुष्य ही पाले चारित्र महा ॥
 उदय सुंदर बोले तब मित्त । जै दिक्षा तुम आणी चित्त ॥१५२४॥
 मै भी समय ल्यौं तुम साथ । बेरी अरज सुणौं प्रभु नाथ ॥
 इतनी सुनत बचन सब ढाली । मन बैराग्य भयो भूपाह ॥१५२५॥

तब उठि मित्र दीनती करी । हासीक ना सांची जित्त घरी ॥
 तुम तो चले व्याह के काज । कवण समय दिख्यां बीं भाज ॥१५२६॥
 बोले कुमर सुपन समरिष । मात पिता कुण भाई दष ॥
 जैसी परफुलत है सांभ । अंसे सुख कू लवकै मांभ ॥१५२७॥
 विणसत बाहि न लागै बार । अंसा है ससार असार ॥
 धन्य धन्य तू मेरे मित्र । तै मोहि कही घम की रीत ॥१५२८॥
 तुभ प्रसाद सिव मारग गहु । तेरा गुण मैं कवि लग कहूँ ॥
 अंसी बात सुंणी परबार । बाल बृद्ध आए तिरा बार ॥१५२९॥
 दादी माता सब मिल ग्राह । और कहै बहु जन समभाय ॥
 तु बालक जोवन की बार । करो विवाह भोग ससार ॥१५३०॥
 कुंवर अणै ससारा धिति । जीवका कोई सगा न इत्त ॥
 सोण बिजोग रहूट की घडी । कबहू रीती कबहू भरी ॥१५३१॥
 सब साता तै पावै सुख । अशुभ करम उदय तै दुख ॥
 सुख मुगति जो सागर बंध । इक पलके दुख मैं सब बुद ॥१५३२॥
 तातै हूँ अथ तप आचरू । घरम नाव भवसागर तरूँ ॥
 गुणसागर मुखिबर के पास । दिक्षा लई मुगति की आस ॥१५३३॥
 दोई सहस अरु छ सँ कुमार । भए दिगंबर केस उतारि ॥
 मनोदया सामली यह बात । दिख्या लई अजिका के पास ॥१५३४॥
 विजयसेन सुरेन्द्र मनिभूष । बँठे सकल भोग के रूप ॥
 वह बालक सुकुमाल सरी । कैसे सहेगा परीस्या पीर ॥१५३५॥
 हम तो राज भोग बहु किए । ऐसी कछुवन आसी हिये ॥
 जरा व्यापी देही जो जरी । कैसे होय तपस्या सरी ॥१५३६॥
 जोवन समय समास्या नाहि । अथ पिछताया होवै काहि ॥
 समभावैं सब मंत्री आय । जो कछु सबै सो करि जाय ॥१५३७॥
 सोई घडी सबै सब धर्म । बाही घडी कटै अथ कर्म ॥
 सकल राज रिष करि त्याग । विजय साह हुधा बैराग्य ॥१५३८॥
 पुरिंदर प्रति सोप्या निज राज । आपण किया दिगंबर साज ॥
 विजयसेन संग राजा घने । भए जती मद आठी हुरे ॥१५३९॥
 निर्वाणधोष धोष मुनिवर के पास । भये साध मन पूजी आस ॥
 पुरींदर राजा हृषीपति अस्तरी । कीर्तिबर पुत्र भया सुभ घरी ॥१५४०॥

कीर्तिधर राजा बर्णन

कुसाल नग्न नरेन्द्र नृप रूप । ता चरि पुत्री अधिक धनूप ॥
 सहदेव्या कन्या का नाम । कीर्तिधर सौ व्याई बाब ॥१५४१॥
 भूप पुरेन्द्र हुआ जब जती । माया लोभ न ताके रती ॥
 क्षेमंकर पास दिक्षा लई । आत्मध्यान मे सदा रहेइ ॥१५४२॥
 कीर्तिधर अधिक प्रतापी भया । पृथ्वीतलां राज सब लिया ॥
 सकल भूप तसु माणे घ्राण । या सम राख न कौ बल जान ॥१५४३॥
 एक दिवस सूरज कौ केत । किया ग्रहण असुभ कै हेत ॥
 सूरज छिप्या भया भ्रष्टकार । उडगन जौति भई संसार ॥१५४४॥
 राजा देखि चित चिता करी । घंसी घाउ जरा सी बरी ॥
 जैसे केतने रवि कूँ ग्रहण । व्यापत जरा पराक्रम डया ॥१५४५॥
 रवि तो छूटि जाय तत्काल । जरा चढ़े तब व्यापै काल ॥
 मंत्रिया सौं हम कहै भूपाल । तुम बालियो घरम की बाल ॥१५४६॥
 प्रजा देस की कीज्यो सार । हम अब लै संयम का भाल ॥
 मंत्री सब कहै सीस नवाय । तुम बिन क्यों देस साध्या जाय ॥१५४७॥
 तुम भुगतो पृथ्वी का राज । हम तुम घाणे संवागं काज ॥
 परजा लोग करे सब घाय । हमारा कहा सुणौं तुम राय ॥१५४८॥
 तुमारे राज प्रजा सब सुली । तुम आगन्या मे कोई न हुली ॥
 तुम जिन छोडयो राज आपणा । तुम तैं हम सुल पाया धणा ॥१५४९॥
 करो राज भोग मन त्याइ । संतति होइ दीक्षा ल्यो जाइ ॥
 राजा इनका मान्या कहा । राज भोग मे फिर रम रहा ॥१५५०॥
 परजाने बहु दीना दान । घर घर बाजै ध्यानन्द निसान ॥
 इक दिन जनम्या पुत्र उदार । तास सुकोसल नाम कुमार ॥१५५१॥
 मंत्री करी एक हिकमती । पुत्र ने राखियो गुपती ॥
 ब्राह्मण मने किये सब जाय । राजा पासि हुवो मति त्याइ ॥१५५२॥
 जब एक मास बीत कर गया । ब्राह्मण जब आसीरवाद दिया ॥
 दई दोब राजा कै हाथ । पुत्र जनम आप्या नरनाथ ॥१५५३॥

बूहा

हुआ सुकोमल तणी फिराई । आय राख बीक्या लई जाय ॥
 तेरह बिष चारित्र्य बत लिया । आत्म ध्यान मुनीश्वर किया ॥१५५४॥

इति श्री पद्मपुराणे श्री मुनिपुत्रत बख्खाहु कीर्तिधर महत्तम बर्णनं ॥

२० वाँ विधानक चौपई

कीर्तिधर की तपस्या

कीर्तिधर मुनिवर इम तप धरै । मास उपास पारगा करै ॥
 महै परीस्या वीस घर दोड । दयाभाव सगला पर होइ ॥१५५५॥
 बहुत ब्रह्म ऐसे तप किया । नगर आहार निमित्त आइया ॥
 द्वारापेयण करै न कोइ । राजा द्वारै ठाढ़ा होइ ॥१५५६॥
 भरोखे बैठी सहदेवी नारि । आवत देख्या मुनिवर द्वार ॥
 देख माध मन बहुत रिमाइ । बाहर काइघा घका दिवाय ॥१५५७॥
 ग मुनिवर हैं बहुत बुरे । राज भोग सुख देख्या जरै ॥
 महा दुख सो लहिए राज । तिरणै कहै नरक का साज ॥१५५८॥
 अपणा घर खोबै व्है जती । पुत्र कलित्र की चित न रती ॥
 घर तजि भीख मागता फिरै । लाज काण बसत्तर परिहरै ॥१५५९॥
 घणा बिरा सोबै घरबार । देह जलाय करै जिम छार ॥
 छोडै सब ससारी सुख । छहु रिता वे मुगत दुख ॥१५६०॥
 ग्रंमी कुबुडि इनामे होइ । बूडै घाप और घर खोइ ॥
 गकै माम तरणा तजि पूत । छोडी सगली राज विभूति ॥१५६१॥
 बावक की न दया चित धरी । ग्रंमी इरिण सब कीनी बुरी ॥
 अब जो याहि दरमै हि कुमार । ती बाओ भी ले जाहि गवार ॥१५६२॥
 निज किकर बोल इम कह्या । मजमी पुर मा देखो जिहा ॥
 तिनको मागि मागि परहा करउ । इह उपदेम द्रिया मा घरउ ॥१५६३॥
 मुनिवर फिर गया वन माहि । करै तपस्या बासुर^१ साभ ॥
 मनमा कछु नही आगै आण । जोति स्वरूप सो लाया ध्यान ॥१५६४॥
 विप्र सग्यामी पाबौ भेष । तिरण की अस्तुति करै विशेष ॥
 ते राखै अजोच्या मे घगो । तिरण पै कुमार कोक विध भगो ॥१५६५॥
 लोटे वेद रात दिन पढै । जिनके सुण्या नरक चिति बढै ॥
 ग्रंमी विध प्रगटघो मिध्यान । जैन धरम की कीनी घात ॥१५६६॥
 नब ते इहा मिध्याती बसै । लोटे वेद कीये तिनो इसे ॥
 बसंतलता ये देख चरित्र । मंदिर माहि रुदन बहु करत ॥१५६७॥

राजकुमार के द्वारा बराम्ब

राजकुंवर तब घाय सो कहै । तेरे मन की बिता रहे ॥
 जो कोई तौमुं बोलै बुरा । ताकी रमना खंडु छुरा ॥१५६८॥
 बयनमाला इम कहै समभाय । तुमारा पिता भवा मुनिराय ॥
 वह आया था लेण आहार । माता तुमरी खाई मार ॥१५६९॥
 वासो राज भोग बन किये । जिमकी दया न आयी हिये ॥
 आण बसाए मिथ्यमती । पुर मैं काढि दिये सब जती ॥१५७०॥
 तुभ को निकसण दे नही द्वार । बाधि राख्यो तु कारागार ॥
 ता कारण मैं किया सदन । इम समयल नृप मोडघो वदन ॥१५७१॥
 अर्द्धरात्रि महला परिजाय । डोरी बाधि तलै उतराय ॥
 तिहा मुनिवर बैठा था एक । दई प्रदक्षिणा आण विवेक ॥१५७२॥
 नमस्कार करि बारंवार । बहुत प्रकार कीन्ही धुनि सार ॥
 जनम जरामृत डोलै जीव । चिरकाल की गाडी नीव ॥१५७३॥
 अपारी गति मे डोलै हस । कबहि नीच कभी उत्तम बंस ॥
 रोग सोग आरति मे फिर । बिन समकित भव सायर पई ॥१५७४॥
 प्रभुजी मो पर कृपा करेइ । अब दधि तार मुक्ति पद देख ॥
 मंत्री मिले आय सब पासि । समभावै विनती मुख भासि ॥१५७५॥
 अब लग थे तुम बाल अचेत । अब जीवन तुम भए सचेत ॥
 हम ससय टूटण की बार । तब तुम ल्यो हो दीक्षा भार ॥१५७६॥
 कुल माहि कौन छै कुमार । ताकाँ राज सौंप हो सार ॥
 पिता तुम्हारे जब दिक्षा लई । महीना तराँ सुत काँ मु दई ॥१५७७॥
 अब तो तुम भुगतो ये सुख । चित्रमाला पावै है दुख ॥
 वाकँ बालक नाही कोइ । ता की गति कहू कैसे होइ ॥१५७८॥
 जब सपति होवै तुम गेह । तुम तब करो दिगबर देह ॥
 बोले भूपति वचन बिचार । चित्रमाला कै गरभ का भार ॥१५७९॥
 वाकँ पुत्र होयगा बली । पूरंगा सब की मन रली ॥
 वाको मैं दीया सब राज । जब वह बनमे तब सारी काज ॥१५८०॥
 इतनी कहि तब वसन उतारि । किया सोच सिर केस उपाहि ॥
 त्यागा चिदानंद सौं ध्यान । गुरु संजति पाया बहु ग्यान ॥१५८१॥

कठोर तपस्या

सहदेवो भारत मे मुई । देही छोड़ि सिधरी भई ॥
 दोन्युं मुनीस्वर करत बिहार । भवि प्रमोद गये बन मझारि ॥१५८२॥
 धरहर करि छाियो आकास । मुनिवर तिहां रह्या चोमास ॥
 वरपं मेह मूसलाधार । तिहा मोर कुहकं धरणपार ॥१५८३॥
 जल पृथ्वी पर उमड्या घाइ । नदी नाला चलै अचिकाय ॥
 दोन्युं मुनि परवत पर जाय । देखि सिला बैठे तिए ठाइ ॥१५८४॥
 क्यार महीने का सन्यास । घैनी विष नित करै उपवास ॥
 वरपं मेह पवन अति चलै । इनकी देह न तपते टलै ॥१५८५॥
 स्याम भुवग मल पाटै देह । डस मखर तन चूटै एह ॥
 बुंद भरै तरु बारबार । बेनि घणी लपटी ज्यो हार ॥१५८६॥
 उगी दोब देह विपरीत । महा भयानक बन भयभीत ॥
 देखै कातर फाटै हिया । जिस वनमाहि इनो तप किया ॥१५८७॥
 आसोज कार्तिक आई रित्त । चद्रमा ज्योति बिराजै अति ॥
 गति चोमासय पूरण योग । आहार निमित्त चित बै नियोग ॥१५८८॥
 बाही वनमे सिधरी घाइ । मुख पसारि घर पूंछ उठाइ ॥
 भय दायक देख्या डर होइ । ता वन मे नाबै वन कोइ ॥१५८९॥
 सुकुमार साधु सिधरी नै गह्या । भवि मारि कै पाबा तल लह्या ॥
 भयं मास कछु दया न करै । घैले स्थषरी मुनि नै हरण ॥१५९०॥
 इह पूरव भव का सनबध । मुगत्या बरणे यही कछु बध ॥
 मुनिवर सुकल ध्यान मन दीया । केवलग्यांन अत छिरण भया ॥१५९१॥
 सुर लौकातिक जे जे करै । सुकुमार मुनीस्वर मुक्त बरै ॥
 देही दहन देवता करी । वह सिधरी तिए ठारण घरी ॥१५९२॥
 कीर्तिधर बोले तजि मौन । तेरा वन क्यों कीया मौन ॥
 तुच्छ धाव धाव तेरी रही । क्रोध छोड़ि मन समता गही ॥१५९३॥
 लियौ सन्यास तजे निज प्राण । पाया पहले स्वर्ग विमोक्षण ॥
 कीर्तिधर सहि केवलग्यान । धर्म प्रकास गये निरवाण ॥१५९४॥

चित्रमाला के पुत्रोत्पत्ति-हिरण्यनाभ

विचित्रमाल तिय जनम्या पूत । हिरण्यनाभ लक्षण संयुक्त ॥
 जोवन समय विवाही नारि । अमितमयी शशि की उजहार ॥१५९५॥
 राजकरत दिन बीते घने । तिए ठामे इक कारण बणे ॥
 भारसी दिखावै नाई आइ । श्वेत केस सिर देख्या राय ॥१५९६॥

कहैक बीती जीवन बेस । दर्ई दिसाई धबसे केस ॥
 जमके दूत दिसाली दर्ई । मेरी भाव अकारथ गई ॥१५६७॥
 घरम राह मे किया न कुच्छ । अब तो भाव रही है तुच्छ ॥
 देह जाजरी तप किम होइ । अब पिछताये अवसर खोय ॥१५६८॥
 सकति समान किया कछ जाय । तप अर दान करो मन माहि ॥

नधुष राजकुमार को राजा बनाना

नधुष पुत्र को राजा किया । विमल साध पै सजय लिया ॥१५६९॥
 सिधकारणी राणी पटवनी । सीलवंत अति सोभावनी ॥
 दिन बीते सुख माहि बहुत । तब इक किकर आणि पहुत ॥१६००॥
 दक्षिण दिश का राजा बली । उन सब भूमि तुमारी बली ॥
 व्हा का ऊपर करिये राय । या कारण भायो तुम पाय ॥१६०१॥
 सेना बहुत भूप सग बली । सूर सुभट सोभै अति बली ॥
 नगर राज राणी नै सोप । आप चल्या दुरजन परि कोप ॥१६०२॥
 उत्तर ओणी के सुणी नरेस । नधुष चल्या नृप दक्षिण देस ॥
 उरा सब लई अयोध्या बेरि । राणी सैन कोपी तिरबेर ॥१६०३॥
 करि संग्राम भया आसत्तु । राणी भैसी महा बिचित्तु ॥
 दक्षन साधि नरपति आइया । राणी बात सुणी अति कोपिया ॥१६०४॥
 राजा को व्यापा जुर ताप । उपजी ज्वाला भयो संताप ॥
 नाई देख बेद सब कहै । या को कोई जतन न रहै ॥१६०५॥
 या का घरण होयगा सही । पंडित बेदों ऐसी कही ॥
 राणी नित जिन पूजा करै । पच नाम का सुमरण करै ॥१६०६॥
 हस्तपालि दीया सुभ नीर । यासो छिडको राय सरीर ॥
 लेकर जल मंत्री नृप देह । किया अगोहल अधिक सनेह ॥१६०७॥
 सीलवती का लाग्या नीर । दग्ध रोग की भागी पीर ॥
 राजा को सुख उपज्या नया । फेर सुहाग राणी को दिया ॥१६०८॥
 बहुत दिन बीते भोग मभार । स्यौदास पुत्र ने सौंध्या भार ॥
 आपण भए दिगबर रूप । स्योदास राज करै तिहां भूप ॥१६०९॥
 कनकाभा व्याही घस्तरी । सिधसेन जनम्यां सुभचडी ॥
 अठाई का व्रत करै पुनीत । आवक करै धरम की रीत ॥१६१०॥

स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध

नगर माहि डुंड़ी फिरबाय । जीवबंध को करै न काइ ॥
 जाकै सुणियो हिंसा नाम । ताकूँ लूट लीजिये नाम ॥१६११॥

राजा ग्रामिण आहार नित लेई । मास बिना कछु मुख मे ना देई ॥
सुंदर नाम रसोईदार । राजा ग्रामे करी पुकार ॥१६१२॥
श्रावण तणी अठार्ह व्रत । तातें ग्रामिण कोई न करत ॥

राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा

राजा कहै ओ ग्रामिण ल्यावै । तो मुक्त आजि रसोई भावै ॥१६१३॥
ब्राह्मण कियो नगर तलास । बधिका कै घर मे नही मास ॥
कहू न पाया तबे मसासा गया । बालक मृतक उठाय कर लिया ॥१६१४॥
गध्या आण रसोई बीच । अंसे करम किये उस नीच ॥
राजा खाइ बडाई करै । बहुत सुबाद हुआ इण परै ॥१६१५॥
तीन सैं गाव विप्र को दिये । विप्र को सुख हुआ अति हिये ॥
ल्यावै नित बालक चुराई । ता बालक नै राजा खाइ ॥१६१६॥
नगर लोक मन चिता भई । छिप छिप मुरति चोर की लई ॥
बालक गह्रा रसोईदार । लोका मिल पकडपा तिन बार ॥१६१७॥
मारपा घणा पासली तोडि । पुछपा पीछै सबै उह चोर ॥
तू नित बालक ले ले जाय । तो कू हम मारेगे ठाई ॥१६१८॥
द्विज बोल्या राजा के काज । इनको मास रसोई काज ॥
नृप ग्राम्या तैं बालक हरै । प्रजा लोग सुण कर परजले ॥१६१९॥
सिधसेन कु वर पै जाय । मंत्रीया सेती कही समभाय ॥
राजा है परजा कै वाडि । खेत करै जे बाडि उखाडि ॥१६२०॥
अंसी हम परि हुई अनीति । कैसे बसैं लोग भयभीत ॥
सब मंत्री मिल कियो बिचार । स्योदास भूप तब दियो निकाल ॥१६२१॥

सिधसेन का राजा बनना

सिधसेन प्रति दीनु राज । भयो सकल मन बखित काज ॥
स्योदास भूप अरु सुंदर द्विज । वनमे देख्या आचारज ॥१६२२॥
नमस्कार मुनिवर कू किया । पाप पुन्य का भेद पूछिया ॥
सुण्या घरम ग्रामिण का दोष । राज लिया सजम का पोष ॥१६२३॥
महापुर नगर किया परवेश । राजा बिना पडपा बहु देस ॥
तहां का राज स्योदास ने दिया । दंड सकल रायन परि लिया ॥१६२४॥
सिधसेन पै भेज्या दूत । हमसूँ आय मिलो तुम पूत ॥
सिधसेन बोलियो नरेस । प्रजा मोहि दीयो नृप भेस ॥१६२५॥

कारण कवण पिता सों मोहि । साची बात कहूँ मैं तोहि ॥
 दूत गया तब राजा पासि । निठुर बचन मुख कहै प्रकासि ॥१६२६॥
 कोप चढपा भूपति स्योदास । मन में जुद्ध करण की भास ॥
 अजोष्या नगर घेरघा चिहूँ और । सिधसेन सौँ कौनी और ॥१६२७॥
 सिधसेन कूँ बाघ्या बाइ । फेर राज जन भुगत्या भाइ ॥
 राज करत कितना दिन गये । चेत्याधर्म दिगंबर भए ॥१६२८॥
 मिधसेन कूँ सोप्या राज । स्योदास किया मुक्ति का साज ॥
 बाके पुत्र भया बर भरथ । चतुर्वर्क घर हेमारथ ॥१६२९॥
 दशरथ उदय पाद पृथ्वीरथ भए । अजिनरथ इंद्ररथ भए ॥
 दीनानाथ मायत वीरसेन । प्रीतमन कमलवध सुभचन ॥१६३०॥
 कमलवाधवा रविमन धौर । वसत तिलक नो सोमैं ठौर ॥
 कुमेरदत्त अकुंभभगत । कीर्त्तमान असा सूरज रथ ॥१६३१॥
 दुदुरथ मृगेन्द्रमेन अति बली । दमन हिरनाकुम मानै रली ॥
 घुज असथान वकुथन ननुरेस । रघुराजा जीते बहु देस ॥१६३२॥
 अरुण भूप परतापी भया । बल पौरथ अति प्रतिपालै दया ॥
 है प्रयवीमती राणी पटघणी । रूप नक्षत्र गुण सोभा अणी ॥१६३३॥
 ताकै गर्भं दोइ सुत भए । अनतरथ दसरथ निरभए ॥
 अरुणराय कै घरम सुँ काज । अनतरथ कौँ सोप्या राज ॥१६३४॥
 सहस्ररश्मि रावण सौँ बुधि । वा समैं एक ऊपजी बुधि ॥

दशरथ का राजा बनना

अरुण अनतरथ दोनु भाइ । सहस्र रश्मि पै दिक्षा पाइ ॥१६३५॥
 राजा दसरथ पाई मही । समद्रष्टी जानु ते सही ॥
 महषमती नगरी का राव । विभ्रमघर राजा तिहुँ ठाँव ॥१६३६॥
 अमृतप्रभा ताकै अस्तरी । अंबप्रभा भई पुत्तरी ॥
 राय दसरथ कौँ दई विवाह । भोग भगन सों करै उछाह ॥१६३७॥
 कौसल नगर अषराजित भूप । अषराजिता पुत्री मुखरूप ॥
 किया व्याह दसरथ सौँ भाइ । भोग माहि मुख चैन विवाह ॥१६३८॥
 महारपुर तिलकराह । भीममती सोमैं पट्याह ॥
 कैकई पुत्री दसरथ कुँ दई । राजभीम तहां बिलसत भई ॥
 मंगलावती नगरी कैकै मात । बुधिना सोमैं इह मांति ॥१६३९॥
 इति श्री पद्मपुराणे कौसल महात्मन दसरथ उदयसि विमानकं

२१ वां बिधानक चौपई

दशरथ वर्णन

राजा दशरथ अजोघ्या धनी । सास्त्र माहि जिनवाणी सुनि ॥
नितप्रति पूजै श्री भगवत । गुरु सेवा साथै नित सत ॥१६४०॥
सरब सुखी नगरी मे लोग । धरम राज सुं भुगतै भोग ॥
राजसभा जे इन्द्र समान । मुनिसुवत का सुणै पुराण ॥१६४१॥

नारद मुनि का आगमन

तिहा नारद मुनि पहुँच्या आइ । सकल लोक उठि लागे पाय ॥
समाधान पूछी बहु भाति । कुण कुण तीरथा करी जात ॥१६४२॥
दीप झठाई मे करो गमन । बैठि बिमाण बलो जिम पवन ॥
पु डरीकरी क्षेत्र बिदेह । सीमधर जिए सासण मेह ॥१६४३॥
समोसरण जो पुराण सुणे । सौ प्रत्यक्ष हम देखे बणे ॥
ससार मेरे मन ते टरा । घनत गुणा सुं देखो खरा ॥१६४४॥
केवल भाषी वाणी सत्य । भवियण लोग सुणै बरि चित्त ॥

नारद द्वारा रावण की बात कहना

अवर कही रावण की बात । कु भकरण भभीषण भ्रात ॥१६४५॥
नलनील अवर सुग्रीव । हनुमान सुभटा की नीब ॥
सोलह सहस्र सभा मैं भूप । हाथ जोडि खडा रहै अमृष ॥१६४६॥
तीन षड जीते सब देश । नरपति सकल करै आदेस ॥
निमित्तग्यानी सागर कौ पूछि । मेरी आव कहौ आगम बुझि ॥१६४७॥
मैं सब जग बसि कीना सही । एक खुटक मेरे मन रही ॥
काल रह्या है मोसु भाजि । बा का जतन करो मैं आजि ॥१६४८॥
कहो बेग मोसु बिरतान । तो मेरे मन होवै साति ॥
तब निमित्त यह कही बिचार । दशरथ सुत लक्ष्मण कुमार ॥१६४९॥
जनक सुता का कारण पाय । तार्क हाथ तेरी है धाय ॥
या मनि सुनि चितवै नरेन्द्र । भूमगोचरी किम जे बध ॥१६५०॥
दान्यु नृप का किजे नास । तो मै रहू अमर जग बास ॥
भभीषण समझावै सुनि बात । दशरथ कनक नाम बहुभाति ॥१६२१॥
किसकौ भारी कहौ भूपाल । विण समझपा क्यो करी जंजाल ॥
तब ही मैं पहुँच्या तिरकूट । साथे कारण भेजे दूत ॥१६५२॥

जे तुम जाय किहा छिप रहो । तो आसा जीबे की सहो ॥
 अब मैं जाय जनक सुधि देहूँ । तुमको सकल सुखाया जेउ ॥१६५३॥
 दशरथ तब बुलाय मतरी । मता बिचारै बिता यरी ॥
 वह बेचर हम भूमि गोचरी । वाकी सुरभर कूणई करी ॥१६५४॥
 राजा देस छोडि भजि गया । निज सुरत कर नृप थापिया ॥
 अंनहै पुग ले राख्या बापि । राणी बा डिंग सेवक राइ ॥१६५५॥
 याही गीत जनक नृप करी । कनहनी इनकी इह बिष टरी ॥
 कु भकरण अभीषण भूपाल । बहुत ले चले साथ चिबाल ॥१६५६॥
 पाई सुरति अजोष्या आन । दशरथ है सतखनै सधान ॥
 याही बिष बाहुकु मारि । दोउ सिर ले गए तिल बार ॥१६५७॥
 दोऊ नगरी पीटै लोग । सब परियण मैं बाडो सोग ॥
 रावण पासि आसि दोउ सीस । पूजा दान निमित्त जगदीस ॥१६५८॥
 अपना मन कीया निश्चंत । अमर हुवा रावण बलबंत ॥
 होलाहार टाड़्यो किम ठरै जाइ । जे कोई करै कोई उपाव ॥१६५९॥
 दशरथ जनक पूर्ब दुख दिया । या भव कौ इनमे व्यापिया ॥
 बहुरि पुन्य कीया सुख ठाम । प्रगट भया तासौं फिर नाम ॥१६६०॥
 दोन्यु नृप आए निज देस । बहुरि दोन्यु भए नरेस ॥
 टरथी कलह निर्मबो आनद । हुवा सहाई धर्म जिएंद ॥१६६१॥

बूहा

होलाहार कैसे टलै, बहुबिष करै उपाव ॥

अलहोली होली नहीं इह निमित्त का भाव ॥१६६२॥

इति श्री पञ्चपुराणे दशरथ जनक काल वत्सा टालण विधानकं ॥

२२ वां विधानक

चौपई

कंकयी वरान

कोतिग मगल उतरै सैन । शुभमति भूप प्रजा सुख चैन ॥
 पृथ्वी राणी ता पटवनी । द्रोणपु कंकया पुत्री वली ॥१६६३॥
 लक्षण रूप सकल गुणभरी । महा विजिज केकं पुत्री ॥
 छहौं राम तीस रावणी । छठतालीस नंदन सोमं धणी ॥१६६४॥
 नाद भेद बीणा के भेद । ग्यान सास्त्र के जाणैं भेध ॥
 देस देस की बोली बैन । कोकिल कठ सुगत सुख चैन ॥१६६५॥

लिखै पढ़े बहु भास्त्र पुराण । च्यार वेद का करै वखाण ॥
 जोतिग वैदक भरी व्याकर्ष । आगम कहै मन ससब हर्ष ॥१६६६॥
 चउदह बिबा बहुतरि कला । जुषगीत कौ जागै मला ॥
 सीलवत रूप की खानि । तीन लोक का समझै ग्यान ॥१६६७॥
 कन्या भई बिबाहण जोष । सुमति मंत्री राजा पूछियो नियोग ॥
 मंत्री सगला लीया बुलाय । बैठर मना बिचारै राय ॥१६६८॥
 कन्या सो है कुण भूपूर । पाते सरस होय जे मूर ॥
 तासो समझि कीजिए बिबाह । उत्तम कुल जाणिजे नाह ॥१६६९॥

स्वयंवर रचना

मंत्री कहै स्वयंवर रचो । भली भली सी जौ तिहा संचो ॥
 देश देश ते आवै राय । कन्या के कर माल दिबाय ॥१६७०॥
 जा गलि डारै तास सो बरौ । यह बिचार हिये मे धरौ ॥
 बहुत भले पाटवर आणि । जिण ते बहुत समाने ताण ॥१६७१॥
 कनक यश रतनन की जोति । नरपति आण तिहा बहुत ॥
 परिवारण हैमप्रभ भूप । सिंहासस तहा धरै अनूप ॥१६७२॥
 तब कन्या वरमाला लई । ताके नाथि नृपति घाइ दई ॥
 चकडोल चढि कन्या तिहा आय । विगदाली बनारै घाइ ॥१६७३॥
 दसरथ के गले घाली माल । तब सब कोप उठे मूपाल ॥
 कहै इक एक नगर का घणी । यामै बल पीरिग क्या हरणी ॥१६७४॥
 पकडन आये रावण के लोग । भायि कब्ब्या अब मुगते भोग ॥
 भंसे परि रोऊ के किया । माला दई राजा की घिया ॥१६७५॥
 बडे बडे फिर चाले राय । या राजा को मारै ठाइ ॥
 हरिवाह्म हेम प्रभु पै गए । भैसे वचन ऊनु वनिण ॥१६७६॥
 सगला नृपा यह मता बिचार । दसरथ को घेरया तिह दार ॥
 मुममति राय कहै समझाय । कंकेया सो अयोध्या ले जाइ ॥१६७७॥

वशरथ द्वारा युद्ध

हम इन सौ समझै बात । तुम निज घर पडु चो कुसलात ॥
 बोले दसरथ राजा सुणी । इनको तो मैं पल मे हरणी ॥१६७८॥
 तुम देखो मेरा प्राकर्म । इनका मारि गमाउ भर्म ॥
 चढया कोप दसरथ मूपती । रथ परि बैठी उजली रती ॥१६७९॥

कैकेया घाय बैठी रथ बीच । विद्या साषी पूरण हीच ॥
 तुम कीज्यो निर्भय हो युध । रथ तुम भरा चलौं सुध ॥१६८०॥
 सुभमति की सेन्या सब चली । जाने सकल युध की गली ॥
 हरिवाहन के सनमुख दोड़ । लौचा घनुष वाण न छोड़ ॥१६८१॥
 सह न सके दशरथ के बाण । सब ही के भूले अवसान ॥
 भाजे तब ही सकल नरेश । हेम प्रभु जपे उपदेश ॥१६८२॥
 रण छोड़या पति नाही रहै । कुल कलकजुगि जुगि कौ दहै ॥
 तब सब समटि एकठे भये । सनमुख लरन भए कछु थए ॥१६८३॥
 सूरवीर दोड़ धा लहै । पंदल सूँ पंदल कट मरै ॥
 हाथी सू हाथी भुक्त । रथ सेती रथ टूट पडत ॥१६८४॥
 नगन लडग दामिन जिम दिपे । छुटै गोली सर कातर छिपे ॥
 जैसे बरसै घणहर धार । ऐसे पडै दोऊ तरफ धौ मार ॥१६८५॥
 दुहु धा पडी पवंत सम लोभ । तिरण को वृध भयै है चुधि ॥
 मार मार वाली तिहा होय । कायर बीरज भरै न कोय ॥१६८६॥
 हेमप्रभु के सनमुख भया । मारी गदा टूटि रथ गया ॥
 हेमप्रभु गिरपडिया राव । रथ नीचे आए तसु पाव ॥१६८७॥
 लोग भूप को लेकर भजे । दशरथ जीत्या बाजा बजै ॥
 राजा सब दसरथ को नये । छोड़ि क्रोध निर्मद ह्वै गये ॥१६८८॥
 सुभमति नै दीएगी ज्योनार । सगला की करिकै मनुहारि ॥
 कैकेया दई दसरथ को व्याह । गये अजोध्या वणे उछाह ॥१६८९॥
 मन्त्री सकल बधाई करी । सकल प्रजा सुख आनद भरि ॥
 नया जनम दशरथ फिरि पाय । कलस डालि पद बैठो राय ॥१६९०॥
 भोग भुगति मैं बीतै घडी । देस प्रदेश की रति करी ॥
 जिहा तिहा दशरथ गुण चले । दुरजन दुष्ट बहुत दल मले ॥१६९१॥

ब्रूहा

देश देश के भूपती, मानै दसरथ आण ।
 कुलमंडल नरपति भया, रघुबंसी जन भाण ॥१६९२॥

जीपई

सकल ठाम की चिता मिटी । दुख संताप की रण सब कटी ॥
 निरभय राज करै नरनाह । कैकेया के गुण कहे सराह ॥१६९३॥

देखी बहुत प्रकार गुण भरी । अबर बात रण की चित घरी ॥
 राणी सु बोलै तिरण बार । जो चाहो सो मांगो नारि ॥१६६५॥
 तब केकया बोलै सुंदरी । प्रभु मुक्त वचन देहु इण घरी ॥
 जब चाहू तब लेखू भाग । एह वचन तू खो हम त्याग ॥१६६६॥

सोरठा

महा विचित्रा नारि, वा समय उन बुधि करी ॥
 पावैगी तिरण बार, जिए बिरया इच्छा करै ॥१६६६॥
 इति श्री वचनपुराणे कंकवा वर प्रदानं विधानक ॥

२३ वां विधानक

जौपई

अपराजिता रानी द्वारा स्वप्न दर्शन

अपराजिता राणी पटघरणी । मीलवत अति सोभा बणी ॥
 भने महूरत पाछली राति । सुपना देख्या नाना भाति ॥१६६७॥
 स्वेता गयंद ऊजलै वर्ण । देख्यो सिध गर्जना करण ॥
 सूर्य उदय देखा परभात । देख्यो ससि पूनिम की काति ॥१६६८॥
 बाजे बाजै गुरियण पाइ । जागो तक चक्रित भई छाइ ॥
 जा दशरथ सुं सुपने कहे । व्योरा मुखि अगणित सुख लहे ॥१६६९॥

स्वप्न फल

होइ पुत्र त्रिभुवन का घरणी । जाकी महिमा जाइ न गिरणी ॥
 कुल उज्जल बालक तागुतरण । नाम जपत होइ पातिग हरण ॥१७००॥
 वा सम बली न दूजा और । घेसा अधिक प्रतापी जोर ॥
 सुणि पिय सबद भया आणद । चित मैं व्यावै देव जिरणद ॥१७०१॥

सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन

सुमित्रा राणी पिछली राति । सुपिना देखे उठी प्रभात ॥
 गर्जत देख्या सिंह केहरी । लक्ष्मी कलस सकल गुण भरी ॥१७०२॥
 कमल फूल घट ऊपर धरे । देखे समुद्र लहरि उच्छरे ॥
 सूरज उदय निर्मला देखि । देख्यो पूनिम चंद्र विशेष ॥१७०३॥
 सुंदरसण चक्र देख तिरण बार । जाणि उठी मन हरस जपार ॥
 पति सो कह्यो सपने की बात । सुण्ये सुपन फल माना भाति ॥१७०४॥
 होसी पुत्र महाबलवत । तीन खंड का राज करंत ॥
 ताकी सरभर अवरन कोय । तीन लोक ताको जस होय ॥१७०५॥

लक्ष्मण जन्म

नवमासै जब जनम्या पूत । रूपवत लक्ष्मण संयुक्त ॥
पंडित तेहि लयन सुभ लिया । दान मान मन बांछित दिया ॥१७०६॥
लक्ष्मण नाम कुंवर का भरपा । जमनत रिष सिध गुण भरपा ॥

भरत जन्म

कैकय गर्भ भरत भया पुत्र । बहूत रूप भ्रू सहा विचित्र ॥१७०७॥

अपराजिता के राम जन्म

अपराजिता भई परसूत । रूपवत लक्ष्मण संयुक्त ॥
पदमनाभ ससि की उद्योत । सब परियण मे सोभा होत ॥१७०८॥
सुप्रभा पुत्र सत्रुघन भया । सो भी देव लोक तै चया ॥
रामचंद्र पदम का नाम । च्यारों बीर दिखे बियाम ॥१७०९॥
सेवा करै देवता घने । बोलै भासा सोभा बने ॥
च्यारों बाल खेल अति करे । देख रूप सब का मन हरै ॥१७१०॥
रावण के घर में अशुभ शकुन
रावण के घर उलका पात । बिजली पडौ कागिर वह जात ॥
रात दिवस रोबै मजार । कूकर रोबै बारबार ॥१७११॥
भेगल चारि सुपने यात्रि । बोलै काग होइ जब सात्रि ॥
उल्लु बोलै दिन तिहा धणै । प्रैसी चिता मन रावण तणै ॥१७१२॥

बूहा

दशरथ अजोध्या का घणी, ताकै पुत्र जु च्यारि ॥
रामचंद्र लक्ष्मण बली, भरत सत्रुघन सारि ॥१७१३॥

अडिल्ल

पूर्ज श्री जिएराय सुगुह सेवा करै,
बाणी सुणै मन लाय सुख समकित घरै ॥
प्रमट्यो जस ससार कीति बहु तिए तरणी,
देइ सुपात्रह दान दया पालै धणी ॥१७१४॥

बौपहं

चारों भाइयों द्वारा बिछा सीकने का कर्ण

कपिला नगर का बान । भारत सिद्ध जत्री का नाम ॥
जब उह पुत्र खामा भया । नित्य उवाहणा आवै नया ॥१७१५॥

गागर फोड़ें निकसै पणिहार । गली गली भे खावै गार ॥
 मात पिता भए कलि कान । दिया निकाल कुपात्र हि जान ॥१७१६॥
 मुख्या प्यासा दूषित घला । भ्रंसा ताहि कठिन दिन बध्या ॥
 मार्ग भीख उदर निठ भरै । इण विध गया राज गिर पुरै ॥१७१७॥
 कुसाग्र राय नगरी का घणी । तार्क विद्या साखा वणी ॥
 वेस्वासुत ते गुरु प्रबीण । आवध विद्या सिखावै लीन ॥१७१८॥
 कु वर साथ शिष्य बहु जुरे । सीखै विद्या ते इण परै ॥
 तिहा एलते पढ़वा जाइ । दानसाला मां भोजन षाइ ॥१७१९॥
 सीखै विद्या रहै उन पास । बहु विद्या सीखी उन पास ॥
 राजा पास गया इक बार । नृपति अग्रे कही पुकार ॥१७२०॥
 आया एक विदेसी भेष । उन विद्या सीखी सब देख ॥
 कुंवर न लही विद्या हीण । परदेसी ते महाप्रवीण ॥१७२१॥
 राजा ने गुरु लिया बुलाय । सिध्य प्रते गुरु कहै समझाय ॥
 राजा देखत चलायो बाण । म्रिडे बं डे छोडे जाणि ॥१७२२॥
 राज सभा गुरु पहुंचे जाय । गये आयुध साला की छाया ॥
 राजकुंवर सर छोडे भले । ओरा का सर बांका चले ॥१७२३॥
 एल प्रदेशी धनुष कर गह्या । गुरु का वाकि सुध लह्या ॥
 टेढे सर कूँ छोडत भया । राजा का संसय मिट गया ॥१७२४॥
 गुरु परदेसी परतुष्ट मान । कन्या देण कही तिण जाणि ॥
 एल प्रदेशी ज्ञान चित किया । माहिन समान गुरु की घिया ॥१७२५॥
 एमई व्याहुं तो लागई दोष । किस ही जनम उहै नही मोक्ष ॥
 अरध रात्रि तब भाग्या एल । अजोष्या नगरी आया तिह बेर १७२६॥
 दसरथ नृप के आया पास । अपना गुण कीना परकास ॥
 राय दशरथ ने कन्या दई । इसकूँ तिहा सुख धिति भई ॥१७२७॥

अपारूँ राजसुत तिहा मिल्या । विद्या गुण सीखै तिहा भला ॥

इति श्री पद्मपुराणे रामलक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न विद्या विधानकं ॥

२२ वीं विधानक

चौपई

जनक भूप विदेही अस्त्री । निर्भय राज करै तिहुं पुरी ॥

अक्रध्वज पुर का इक घणी । मनसेली राणी तसु तसी ॥१७२८॥

चित्रोत्सवा पुत्री तार्क उर गई । रूप लज्जल सोम उर गई ॥
 धूमसेन विप्र स्वाहा नारि । पिगल पुत्र किमो भवतार ॥१७२६॥
 राजसुता सेती अति प्रीत । एक बिचारी छोटी रीत ॥
 दोन्हा ने मिल किमो बिचार । नगरी छोडि भग्ना तिला बार ॥१७३०॥
 लयभी घली लेकर नृप सुता । निकसे दोनूँ करके मता ॥
 विदरभ देस प्रकृति सिधराय । ए उस नगरी पहु ते जाय ॥१७३१॥
 दपति गये नगर के पासि । छग्र भुं पडी करै विलास ॥
 पोया पाय दलिद्री भये । लकडी बेचत कछु दिन गये ॥१७३२॥
 कु डल मडल राजकुमार । बन कीडा आये इक बार ॥
 देखी त्रिया रूप गुण रासि । कुमार काम की उपजी प्यास ॥१७३३॥
 दूती भेज तिन लई बुलाइ । नृप सब मिली महा सुखपाय ॥
 रात दिवस नृगते सुख भोग । इनका ऐमा वध्या संजोग ॥१७३४॥

विप्र द्वारा बिलाप

विप्र आया घर सभधा बार । सूना घर पाया बिन नारि ॥
 सारा दिन का हारा थका । भया अकेला गई कालिका ॥१७३५॥
 त्रिया त्रिया मुख करै पुकार । कबही रोवै साय पछारि ॥
 गली गली मे रोवत फिरै । राय अये जाय गिर पडै ॥१७३६॥
 मेरा न्याव करो तुम नरेस । मेरी अस्त्री गई तुम देस ॥
 मुझ नारी तुम देहु हु डाय । नातर तजो प्राण विष साय ॥१७३७॥
 सरण आइ तुमारे मैं बस्या । महारा घर बिरासै बिन बसा ॥
 राजा मंत्री लिया बुलाय । तिरासै बात कही समझाय ॥१७३८॥

राजा द्वारा वधवचन

अब वह विप्र आवै भो पासि । तब तुम झूठ कहो कै साज ॥
 नृप मंत्रीय सभा सब जुरी । विप्र फेर आयो ता धरी ॥१७३९॥
 मंत्री इक बोल्या इण भाति । मैं देखी मारग में जात ॥
 पोदनपुर के मारग मांहि । मैं आवै या देखी तर छांह ॥१७४०॥
 आरजिका तिहां तप करे । वधी साध बेसी तप करै ॥
 सखी एक अति रूप की सासि । उनकी दिसा जैनी भात ॥१७४१॥
 वेग जाय पोदनपुर डूंड । इहां क्यूँ सोर करत है मूढ ॥
 विप्र कूँ सब ही दिना बहुकाय । पोदनपुर उण सोवण जाय ॥१७४२॥

देखे वन उपवन बहुत ओर । देखी गुफा परवत की ओर ॥
 देह सिंथल वन देखा भला । जिहा तिहा देबालय मिला ॥१७४३॥
 पाई नहीं फिर आधा विप्र । ताकौं आवत देखा नृप ॥
 बड़ी दार तब दीया लगाय । गाय मारि कर दिया भजाय ॥१७४४॥

मुनि बीक्षा

वन मे बहुत दुखी बिलनाय । भारिज गुपति मुनि भेटया जाय ॥
 सुणे धरम के सूक्ष्म भेद । सोह करम की टूटी खेद ॥१७४५॥
 दिक्षा लई दिगम्बर भया । जैन धरम निश्चै चित दिया ॥
 सियालै रहै नदी के तीर । सहै परीसा काया धीर ॥१७४६॥
 उनालै गिरि पर बरि जोग । तपे भानु लू बाजै रोग ॥
 चालै पसेव पाप बहि जाय । अंसा तप साबै मुनिराय ॥१७४७॥
 वरषा काल वृक्ष कै तलै । बर्य मेघ ग्रह नाला चलै ॥
 पानि चुबै मुनि उपरि पडै । माछर डास सदेह सो लगै ॥१७४८॥
 लागे बेलि भग लपटाइ । मुनिबर सहै परीसा काइ ॥
 चिदानंद सौं लाया ध्यान । दया छह काया की जान ॥१७४९॥

रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध करना

अनरण रत्नावली का राय । अहिकु डल का सुण्या अनाय ॥
 चक्रपुरी तिण घेरी आय । कुंडल मडल निकस्या आय ॥१७५०॥
 दुहुधा जुघ भया भयभीत । फिर आया गढ भीतर जीत ॥
 मूंद किवाड गोला की मार । अनरण भूपति मानी हार ॥१७५१॥
 किमहि न पावै गढ का भेद । राजा कै मन उपजी खेद ॥
 दिन दिन हुवै दुरबलि देह । बालचंद्र सेनापति पूछै एह ॥१७५२॥
 किण कारण देही तुम पीण । मन की बात कहो परवीण ॥
 राजा सेनापति सो कहै । मेरे मन मे संसा रहै ॥१७५३॥

मन्त्री द्वारा उपाय बतलाना

चक्रपुरी आई निज हाथ । तार्थे चिंता है मन साथ ॥
 बालचंद्र बोलै बलवान । कुंडल मडल पकडो राजान ॥१७५४॥
 बालचंद्र ले सेन्या संग । गढ ततकाल कियो तिण भंग ॥
 कुंडल मडल बांध्या जाय । निज पति पास आया तिह ठाय ॥१७५५॥
 दई मार पग साकल चालि । असी रीति पड्या वह जालि ॥
 बसन उतारि दिया सब छोडि । वन में गया करम की छोडि ॥१७५६॥

बैराग्य भाव

तिहा ध्वरण मुनिवर तप करै । नमस्कार करि पाइन पडै ॥
साक्षा कहो धरम समझाय । मेरा पाप कटै कहि भाव ॥१७५७॥
राज रिद्धि मद धरम न किया । विपत्ति नै करुणा समझिया ॥
मेरा किए विष होइ सहाइ । किम भवसागर उतरौ पार ॥१७५८॥

उपदेश

बोलै मुनिवर लोचन ग्याँन । सप्त विसनतै धरम की हाणि ॥
सातो नरक अनता भ्रमै । खेदन भेदन बिनसह जर्मै ॥१७५९॥
भूल विषा का नावै अंत । इण विष प्राणी दुख सहत ।
जे तीरथ बहुतेरा फिरै । भद्र होई कु दान नित करै ॥१७६०॥
क्रोध मान माया मद होइ । प्रेसा गुरु सेवो मत कोइ ॥
नख अर केस तीरथे बहाइ । आया वणतै ह्वै पाप उठाइ ॥१७६१॥
अण छाही जल करै सनान । अण गल जल पीवै जल पान ॥
ते निहचै नरक मे जाई । इण विष धरम धरो मन त्याव ॥१७६२॥
समकित सुध आत्मा जोइ । दया भाव जाकै चित होइ ॥
मनुष देव गति ऊँची लहै । दुष्टि हुवै सो नीची गति सहै ॥१७६३॥

राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना

सुणि राजा तबै अणुव्रत लिया । हिंस्या झूठ चोरी परजिया ॥
नमस्कार करि मारग गह्या । दह ससा उसकै मन रह्या ॥१७६४॥
मेरा कुटव अरण की वदि । वे छूटै तब हुबै आनद ॥
अब ह्वै साबू कोई देश । बाधू मै आणि अरन नरेस ॥१७६५॥
मै अणो बल छुटाउं जाइ । अइसै चित बत राजा आइ ॥
तगथा पिव लागी तिस मूल । देही सकल गई तिस सूख ॥१७६६॥
अतै भया प्राण का नास । सुमरथा प्रभु पाज की आस ॥
समकित सो पावै गति भली । अग्रे पूजैगी मन रली ॥१७६७॥

चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना

चित्रोत्सवा उपज्यो बैराग । सकल विभूति कुटव ही त्याग ॥
आयिका पास ली दिक्षा जाइ । बईबरत करै बहु भाइ ॥१७६८॥
बारह विष तप सावै निस । निसवासर अनुप्रेक्षा चित ॥
तप करि कष्ट अति देही वहै । सत संयम आतम सुख लहै ॥१७६९॥

देह छोड़ि लियो स्वर्ग विमार्ग । उहा तै चई जमक घर प्रांग ॥

सीता का गर्भ में बाना

विदेहा गरभ प्राणि धिति करी । कु डल मंडलीमी तसु धरी ॥१७७०॥

पिगल मुनिवर तजे पराण । पुंहुच्या महाणुक विमार्ग ॥

अवधि विचार एक भव तणी । श्रवण पुन्य तै सुरगति बणी ॥१७७१॥

पिछली सुरति तै कोप्या देव । कु डल मडल का जाप्या भेव ॥

उन मेरी थी लीनी नारि । मुझको मारि दीया निकालि ॥१७७२॥

मोहि घरगे दुख दीने भूप । तब मैं भया दिगंबर रूप ॥

नप प्रमाद श्रीमी गति लही । बे दोन्यूं विदेहा उदर मे सही ॥१७७३॥

जनम समै ताकू मैं हकू । अपरां मन माने हू करू ॥

प्राया देव गरभ रिरूया काज । श्रीसी सुरत चितै सुरराज ॥१७७४॥

सीता भामण्डल का जन्म

नव मारु जब पूरण भए । पुत्री पुत्र जनक घरि भए ॥

देवता द्वारा बालक का अपहरण

बालक लिया तबै देव उठाइ । एकडि वाह गयण ले जाइ ॥१७७५॥

मारै पेडि तबै बालक हसै । तबै सुग तरौ क्रोध मन बसै ॥

तू कुंडल मडल था भूप । चित्रोत्सवा देखि स्वरूप ॥१७७६॥

तिसनै चुराय लेय तु गया । मो कूँ भी तैँ अति दुख दिया ॥

तब मैं था भिक्षुक आधीन । पिगल विप्र मै वह सम कीन ॥१७७७॥

फैकू गगन गरुड ले जाय । डालूँ सिध मे मच्छ तोहि लाय ॥

कै पर्वत पर पटकूँ तोहि । सिला तलै दावूँ अइसा छोहि ॥१७७८॥

श्रीसे मनमे करै उपाव । बहुरि भया दया का भाव ॥

मे था विप्र भिक्षुक आधीन । दया प्राणि साधे मुख तीन ॥१७७९॥

सम्यकदर्शन सम्यक ग्यान । तप करि भया देवता प्राणि ॥

अब मैं नया पाप क्यों करूँ । याकु ले सुभ धानक धरूँ ॥१७८०॥

रथनूपुर विजयारध जाय । राय तरौ मंदिर बड्ठाय ॥

नूप तब बालक लिया उठाइ । सुदरसना राणी लई जलाय ॥१७८१॥

उठि तू पुत्र तइही जप्या । मोडत प्राणि उठी जब सुप्या ॥

हूँ थी बांझि जप्या सुत केम । बिना गर्भ सुत होवै एम ॥१७८२॥

राजा कहै गर्भं तुम्ह गूढ । सोचै कहा लेहु सुत मूढ ॥
 देवता कानै कुंडल दिखे । तिनको देखि अचम भए ॥१७८३॥
 सोचै पुत्र जण्यां मैं आजि । किए पहराये कुंडल साजि ॥
 तब राजा बोल्थो सत भाय । या कु सुर त्याग्य इण ठाय ॥१७८४॥
 पुण्यवत मह शशि की जोति । मा की कर्ग्यो सेव बहोति ॥
 नगरी मध्य त्वबर यह बई । रांणी पुत्र प्रसूता भई ॥१७८५॥
 सुख मे बचै धाय कै बाल । अग्रणिंत धन सरब्बो अपाल ॥

जनक राजा द्वारा ब्रिक्ताप

विदेहा बालक देखै नाहि । रुदन करै नयना परबाहु ॥१७८६॥
 जनक राय रोवै तिए वार । हम क्या पाप किगा करतार ॥
 अंसा कवण पुत्र मुझ हरै । पूरव कर्म उदय दुख पडै ॥१७८७॥
 देश देश कौ पत्र लिखाइ । करुं इलाज पावै किए ठाइ ॥
 राजा दशरथ मेरा मित्र । वह दू डंग अतर प्रीत ॥१७८८॥

राजा दशरथ द्वारा खोज

दशरथ सुनि दू डे सब धान । कही न पाया अपणे जान ॥
 जनक त्रिया सो कहै समभाय । पुण्यवत तालक बहु भाय ॥१७८९॥
 वहै तो बढै काहु के गेह । तुम जिता न करो सवेह ॥
 जे कछु सनमध है हम साथि । तो आनि मिलावैगा जिण नाथ ॥१७९०॥

कन्या का सीता नाम रखना

कन्या का सीता धरणा नाम । लीला करै बाल सुख धाम ॥
 रूप लक्षण शशि की जोति । गुण वरण्या कहूं पार न होत ॥१७९१॥
 वस्त्र आभरण वण्या सब अंग । गोद लिया परियण उछरंत ॥
 दिन दिन बाढै सुखस्यौ तेह । मात पिता अति धरै सनेह ॥१७९२॥

इति श्री पञ्चपुराणे सीता नामंडल उत्पत्ति विधानकं

२३ वां विधानक

श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह को जानने की इच्छा

जब जोडे श्रेणिक नृप हाथ । एक ससय भो मन जिननाथ ॥
 रामचंद्र सीता का व्याह । किए निध किया जनक नर नाह ॥१७९३॥
 राम कवण पराक्रम किया । कंसैं व्याही जनक की धिया ॥
 बाणी कहै तबैं जिनराय । गणधर वचन कहै समभाय ॥१७९४॥

विजयारघ गिरि दक्षिण ओर । कैलाश गिर उत्तर की ओर ॥
 वर वर देस और विदग्ध । मैं उरमाल नगरपति बग्ध ॥१७६१॥
 रत्नबर चर राजा तिह नम्र । अकन और मुपती सप्र ॥
 म्लेच्छ षड का राजा जुडघा । असा मता उनु कर मित्या ॥१७६६॥
 भारज षड पर कीजे दौड । कोई नही नामी तिह ठोर ॥
 रावण हे लंका का देस । इह ठाम जाय हम करै प्रवेस ॥१७६७॥

जनक की नगरी मिथिलापुरी पर आक्रमण

म्लेच्छ षंड का दोडघा भूप । ढाहत फोडत आवै जम रूप ॥
 मिथिलापुरी जनक तिहा राय । घेरघा नगर म्लेच्छा आय ॥१७६८॥
 जनक दमन्य कनै दूत पठाइ । निलयो सकल विरतात बनाय ॥

जनक द्वारा दशरथ के पास सन्देश भेजना

म्लेच्छ मोहि घेरघा है आप । धारणा मेरा दिया उठाय ॥१७६९॥
 पीडा परजा कू दे है घनी । देबल ढाहि गड तिहा हरी ॥
 साधा कू देहै उपसर्ग । जिसकू तिसकू मारै खड्ग ॥१८००॥
 मैं तो आय गड म्यतर रहू । प्रजा दुख किया बिरते सहू ॥
 प्रजा सुखी तो राजा सुखी । परजा पीडित राजा दुखी ॥१८०१॥
 जो कुछ प्रजा पुन नित करै । छटा अस राजा नै पडै ॥
 उनका डर तै प्रजा सब भजै । जो हूँ भाजु तो कुल लजै ॥१८०२॥
 तुम जो मेरा ऊपर कगे । तो मैं निकल दुष्ट मो लरो ॥

दूत का अयोध्यापुरी आना

आया दूत अजोध्यापुरी । राजमभा देखै सब जुगी ॥१८०३॥
 दशरथ च्यार पुत्र सयूक्त । करै सत्ताम आय तिहा दूत ॥
 दिया लेख राजन निज हाथ । बग्न पुत्र सूँ करै नरनाथ १८०४॥
 रामचंद्र कुं राजा करो । ढालो कलस मुकट सिर घरो ॥
 करो भारती पटह बजाय । हूँ साधू म्लेच्छ कूँ जाय ॥१८०५॥
 रामचंद्र पूछै तब बात । मो कूँ राज क्युं देत हो तात ॥
 दशरथ कहै तुम सुणो कुमार । म्लेच्छां पगिजास्या इस बार ॥१८०६॥
 तुम साधो पृथ्वी का राज । हम जावै करिवा पर काज ॥

रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना

श्री रामचन्द्र बोले बलवीर । करो राज मन राखो धीर ॥१८०७॥

बे मलेच्छ जैसा सुण लिया । कहा सिध भये वालिया ॥
 जो तुमारी सरबर कहा होइ । ता परि भला कहैं सह कोइ ॥१८०८॥
 हम हैं प्रभुजी भाग्या देह । सकल मलेच्छ मिलाऊ बेह ॥
 राय भएँ तुम हो लघु वैस । बे मलेच्छ भयानक देस ॥१८०९॥
 किरण पर जुध करोगे जाय । प्रीसे भूप कही समझाय ॥
 रामचंद्र तब उत्तर कहैं । स्यंघ पुत्र किसका भय करैं ॥१८१०॥
 हस्ती जूय सबद सुण डरैं । बे भाजैं सकल सुध वीसरैं ॥
 तिरामा एक करैं वन छार । हम सूँ जोवे बहु मारैं हार ॥१८११॥
 भइमै उनही लगाऊँ हाथ । फेरि न बोलैं काहु साथ ॥
 रामचंद्र लक्ष्मण तिहा बले । मूर सुअग सम लीने भले ॥१८१२॥

राम का मिथिला गमन

मिथिलापुर मा पहुँचे जाइ । इनका दल दृष्टि न समाइ ॥
 जनक कनक नैं छोडे बाण । मारि मलेच्छ किये धमसाण ॥१८१३॥
 उत मलेच्छ नीसान बजाय । जनक कनक भेटघा गल लाइ ॥
 बाजे बजैं भेरि करनाइ । बहुत भूप भाये उस ठाँइ ॥१८१४॥
 जनक तणा दल हटघा जाणि । बणें लोगा तज्या पराण ॥

राम द्वारा युद्ध करना

श्री रामचंद्र धनुष टकार । गह्या धनुष लक्ष्मण कुमार ॥१८१५॥
 पडे घाड दल ऊपर जाय । दुहुँ धा जुध भयो बहु भाइ ॥
 दुरजन जाय दहवट करैं । तब मलेच्छ सब फिरि कै लरैं ॥१८१६॥
 लक्ष्मण ऊपर भाये धाव । तोडघा रथ मारे दुरजन राय ॥
 श्री रामचंद्र पहुँच्या तिह बेर । मारि मलेच्छ किये सब डेर ॥१८१७॥
 इनको है रवि जेम प्रताप । इण प्रकार बाए प्रभु धाप ॥
 भंघकार भाजैं जिम देखि । रवि की प्रपटैं किरण विशेष ॥१८१८॥
 जैसे पटल महा धनधोर । माने फाट पवन के जोर ॥
 मलेच्छा की फोज बली सब भाम । ए दोहे उन पीछे लाय ॥१८१९॥
 इनके दल बल हुवा बणा । राम प्रसादै पीरिस अति बणा ॥
 पकड़ें जितनैं मारें ठोर । पड़ी लोच तिरु की नहीं बोज ॥१८२०॥

राम का आवेस

रामचंद्र इह भाग्या भई । हिंसा जीव करो मति कोइ ॥
 माने का पीछा मति करो । अब तुम अपणे मानक फिरो ॥१८२१॥

रामचंद्र लक्ष्मण की जीत । जनकराय सो बांषी प्रीत ॥
जै जै सबद करें सब लोग । भाजे ताके सब सोग वियोग ॥१८२२॥

इति श्री पद्मपुराणे श्लेष्म पराजय विधानकं

२४ वां विधानक

चौपई

जनक की इच्छा

जनक विचारी तब मन माहि । भैंसी वसत कछु भेरै नाहि ॥
रामचन्द्र के अग्रे घरू । इनके गुना को पार न लहूँ ॥१८२३॥
सीता देण की इच्छा करी । नारद कान बात यह पडी ॥

नारद द्वारा कन्या को देखना

नारद जुष इनों का देखि । अपणै मन हरषियो विशेष ॥१८२४॥
कन्या देखण कू घरि भाव । आया अनहपुर की ठाव ॥
जनक मंदिर नारद मुनि गया । दर्पण लीया थी बहा सिया ॥१८२५॥

नारद को देख सीता का डरना

कन्या देखै अपणा जरण । सब सरीर दीसै लगि चरण ॥
सीस जटा जुट देह मलीन । हाथ कमडल पीछी लीन ॥१८२६॥
कटि पडदनी अति तापस मुनी । सीलवन नारद त्रिष मुनी ॥
देखी छाया सीता डरी । भाजी कन्या वाही घडो ॥१८२७॥
मा मा करि दौडी घर माहि । नारद पाछै दोडे ताहि ॥
पोलीदार जावा नहि देहि । नारद सेनी वाड करेहि ॥१८२८॥
भया कोलाहल नरपति सुण्या । कहा सार अनहपुर घणा ॥
आगन्या भई दौडे सब सूर । आबष बहुत लिये भरपूर ॥१८२९॥
नारद निज विद्या सभालि । गिरि कइलास गया तिहु काल ॥
ऊचे नीचे लेइ उसास । नही थी जीवण की आस ॥१८३०॥

नारद का बचकार

नारद मुनी चल्या बडी वार । मनमे उपन्या तब अहकार ॥
मीसु नृप जनक भैंसी करी । मोहि देखि सीता भाजि दुरी ॥१८३१॥
मिथलापुरै जनक की मही । करू उपद्रव तो नारद सही ॥
सीत्था पट्ट सीता का रूप । रघनूपुर चंद्रगति भूप ॥१८३२॥

प्रभामंडल है सासु कुमार । नारद गवौ तिल सभा बभारि ॥
 उठें लोग जोड़े दोउ हाथ । दरसन देखि नारद कुनि नाथ ॥१८३३॥
 नमस्कार बहुत विष किया । नारद तैं बहु आदर किया ।
 प्रभामंडल नें पट्ट दिखाइ । निरखै रूप अधिक सुख पाइ ॥१८३४॥
 पदमावती के सुरपती बणी । कै किनर सोभा अति बणी ॥
 बोले नारद सुणो कुमार । इन्द्रकेतु सुत जनक मुबाल ॥१८३५॥
 मिथलापुर का भुगतै राज । विदेहा राणी लाज जिहाज ॥
 नास गरभ सीता भवतरी । उसका रूप लिख्या तिस बड़ी ॥१८३६॥
 इह सूरत वा मैं गुण धरौ । हाथ भाव बहु जाय न गिरौ ॥
 रामचंद्र को इहै दर्श निमित्त । तबै इहै मेरे आयी चित्त ॥१८३७॥

भामंडल की सीता को पाने की चिन्ता

सैसी त्रिया भामंडल जोग्य । विद्याधर जे भोग नियोग ॥
 इम कारण आया तुम पासि । चलो मिथलापुर पूजै आज ॥१८३८॥
 भामंडल की सुख वीसगी । सीता सीता चित मे बरी ॥
 जे हू मिलू जनक की सुता । दरसन देखै भायें चिता ॥१८३९॥
 घरि आगए ता कछु न सुहाय । अन्न पान मुख कबहुं न लाय ॥
 दिन दिन कुबर भ्रमता जाइ । तन सूकैं राणी पिछताय ॥१८४०॥
 प्रभामंडल मन सीता लागि । सुख ससारी दीया त्याग ॥
 मात पिता की लज्जा करै । बिरह अगनि सूं देही जरै ॥१८४१॥
 मंत्री सोच करै अधिकाइ । ता दिन देखी फूतली राय ॥
 वाही दिन तैं है यह सूल । या की औषधि मन्त्र न भूल ॥१८४२॥
 राणी का संसर्ग किया । सासु सुसरां सू भेद यह दिया ॥
 जब तैं पट्ट देख्या इह पूत । तब तैं याकूँ लाग्या भूत ॥१८४३॥
 खाए पान वस्त्र सब तज्या । बह तो करै तुमारी लज्या ॥
 तुम पूछो तिसका बिरतांत । कारण कवण तुम सूकै गात ॥१८४४॥
 मात पिता कुंवर द्विग गए । बाका मन की पूछत भए ॥
 नरपति कहे करो सनान । भोजन नीरन्धाबो तुम पास ॥१८४५॥
 धामूयण तन तजो संभारि । तुमने इछा सीता नारि ॥
 अब ह्म जतन ब्याह का करा । तेरा कारज बेच ही सरा ॥१८४६॥
 भामंडल का दुख अब गया । करि सनान उठि भोजन किया ॥

चन्द्रगति द्वारा उपास्य सोचना

चन्द्रगति मन सोचैं वणा । कुछ हरषै कुछ चितावणा ॥१८४७॥

राजा जनक भूमि गोचरी । अडर रहै वह मिथलापुरी ॥
 रथनूपुर ते दूर वह देस । बेटी कबहू न देख परदेस ॥१८४८॥
 जे सीता आणिये चुराय । होय अनीत रहसि सब जाय ॥
 उनके घर मे बाई सोग । हमने बुरा कहैं सब लोग ॥१८४९॥
 अपल बेग सू कही बुलाय । तुम अब मिथलापुर मे जाय ॥
 जनकराय आणी मुक्त पास । वाकूँ कछु न दिखायो त्रास ॥१८५०॥
 अपलबेग चाल्या सिरनाय । अडि विवाह मिथलापुर माइ ॥

विद्याधर द्वारा मायामयी अस्व रचना

अस्व एक विद्याधर किया । द्विज यहि हटबाई गया ॥१८५१॥
 तापरि रतन जडित पलाण । नाचत कूदत करै खाचा ताण ॥
 अस्व प्रणसा जनक नृप सुणी । गुणह्य तहां सराहै दुणी ॥१८५२॥
 आप जनक नृप देखण चल्या । गुण लच्छन सब देख्या भला ॥
 व्यापारी सूँ पूछा मोल । तब वह वाभण भायँ बोल ॥१८५३॥
 पृथ्वी धैसा अस्व नहीं । बडे भाग्यता आज्य जनक है सही ॥
 तुम निमित्त आण्यौ इस ठाँव । दोइ सहस्र सोनिया भाव ॥१८५४॥
 व्यापारी कुं दिया बिनार । घोडा ले बाध्या दरबार ॥
 बहु प्रकार सेवा निम होइ । तिहा मास बीता इक दोइ ॥१८५५॥
 किकर एक आयो इस ठाँव । कही हथनापुर सहू लगाय ॥
 दुरजन आइ घेरघा सब देस । तुम चलि करो उपर नरेस ॥१८५६॥
 सुणी बात अब सेन्या पलाण । अस्वकोतिल धिरै निसाण ॥
 सूर सुभट लीया बहु सग । बाजा बाजै लहर तुरग ॥१८५७॥
 परवत पासि ढोल बहु पडे । हाथी तिण भागै टारै न टरे ॥
 तब वह अस्व लिया मगवाय । ता ऊपर चढिया नरनाह ॥१८५८॥
 हय नृप सहित उडघा आकास । सेन्या साहि शोक की त्रास ॥
 सेन्या फिर मिथलापुर जाय । नवौ नृप पाप्या तिण ठाय ॥१८५९॥
 जनक आकास गमन जब किया । पुरपाटण बहुला देखिया ॥
 सब पृथ्वी का देख्या देस । मन आनन्दा जनक नरेस ॥१८६०॥
 विजयारथ गिर पट्ट ता जाय । अस्व मार्ग मे उतरघा आय ॥
 सुषी चालां चलै बुरंघ । रम्यकरण बन देखि सुरंघ ॥१८६१॥
 सहस्रकूट चैत्यालो जिहां । बन उपवन सरवर है तिहां ॥
 पक्षी बँठा करै किलोल । बोलै नाणी अमृत बोल ॥१८६२॥

सीतल पवन कवल की बास । भ्रमर गुंजार करें बिहूँ पास ॥

राजा जनक कः विद्याधरों की नगरी में आगमन

प्रथम पीसि जिन प्रतिमा बली । हस्ती दोह तिहूँ सोभा बली ॥१८६३॥

ढालै कलस प्रतिमा परि भले । अस्व बाधि करि राजा बले ॥

गोपुर देखि भयो आनंद । बहुत वृक्ष तिहूँ पंकति बंध ॥१८६४॥

भीतर जिन सामन की ठौरि । देखी प्रतिमा ध्यारौं ओर ॥

नमस्कार कीनू नरनाह । पूजा अरजा अधिक उछाह ॥१८६५॥

सेवा सुमरण चारु बार । रहस्य आया मनमे तिखु बार ॥

राजा श्री जिएवर का ध्यान । घोडा छोड गया स्वस्थान ॥१८६६॥

विद्याधर का फेरघा रूप । पट्ट च्या तिहा चन्द्र गति भूप ॥

जनक राय आश्या इस देन । चलो बेग तुम मिलो नरेस ॥१८६७॥

जिन धानक बे बंठा आइ । डीन करो तो वह उठि जाइ ॥

सह परिवार विद्याधर मिले । श्री जिन जाति रूप तिहूँ सिले ॥१८६८॥

बजै बहुत बाजे कर नाव । बहु लोग पूजा कौं जाय ॥

साभनि जनक बडि देखि जनग । बहुत लोग भूषण पचरंग ॥१८६९॥

देख्या चंद्रगति तरा बिबाण । के इक है राजा बलवान ॥

केइ भूमि केई आकास । उत्तरधा भूमि चंत्यालय पास ॥१८७०॥

नमस्कार करि बडठा भूप । राजसभा देदीप्य अनूप ॥

जनक प्रति पूछे चन्द्रगति । के इंद्र के बरखेन्द्र तुम अति ॥१८७१॥

के तुम विद्याधर के इन्द्र । तुम पहूँ बे वो धान जिएद ॥

धानिन सकै अस अस्थल आइ । अपना भेद कहो समझाय ॥१८७२॥

बोलै जनक मैं भूमिगोचरी । राजकरै मा मिथलापुरी ॥

माया रूपी बोडा आनि । हूँ आयो हूँ इस धान ॥१८७३॥

चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव

चन्द्रवति भूप आदर करे । एक बात की इच्छा करे ॥

तुम घर सीता पुत्री सुणी । मेरा सुल प्रबामडल मुनी ॥१८७४॥

क्रिया करि कन्या तुम देहु । विद्याधर खुं होइ सनेहु ॥

कहे जनक तुम सुनु हो राख । सीता बई राम रघुराख ॥१८७५॥

जब मैं वचन न देता ताहि । कह्या तुम्हारा फिरता नाहि ॥

चन्द्रवति बहुरि जनक खुं कहे । रामचंद्र बस केता वेहे ॥१८७६॥

ताकू जो पुत्री तुम देई । उनसू प्रीत अधिक कर लेइ ॥
 रामचन्द्र गुण वरणी भूप । वा सम कोई नहीं अनिरूप ॥१८७७॥
 बरबर म्लेच्छ मिथलापुर छाड़ । बहुता नै घेरघा मै घाड़ ॥
 रामचन्द्र ते मारघा घेरि । गए भाज ते नाये फेर ॥१८७८॥
 वा समये मै दीनी सिया । तासु कथन मैने यह किया ॥
 चन्द्रगति कहै हम देव समान । भूमिगोचरी हैं पसू समान ॥१८७९॥
 कहा म्लेच्छ हैं इसा वराक । उनकू मारू मै इक आक ॥
 बाधु म्लेच्छ पल मे पचपड । वे देहै मोकू नित दंड ॥१८८०॥
 हमरी संका रावण मन चरै । भूमिगोचरी क्या सरभर करै ॥
 जो तूम हमसो करो सनेह । तो हम सिखावै विद्या अत्रेह ॥१८८१॥
 आकास गामिनी विद्या देह । देश देश का कौतुहल करेह ॥
 सब पृथ्वी पर हो तुम बली । हम सो प्रीति किये होवै रनी ॥१८८२॥

जनक का उत्तर

बहुरि भणै जगक इह भाइ । तुम समुद्र वे तो भील गइ ॥
 बापी नीर पिदै सब कोइ । समुद्र उदक न बाछै कोइ ॥१८८३॥
 तुम हो णणि वे सूर्य समान । देवत भान कला होइ आन ॥
 पाडल पत्र दीमै बहु भाति । मूरज तेज सो नामी क्रान्ति ॥१८८४॥
 अग्नि पतंग त्रिण बहु जलै । दीप जोति मंदिर सब बलै ॥
 होइ उजाला सब घर माहि । ता सरभर क्या करि है राइ ॥१८८५॥
 तुम गयद वह सिंह केसरी । विन देखै भाजै तिह घडी ॥
 विद्याधर सुणि कोपे घणै । इन हमको ऐसे अब गणै ॥१८८६॥
 भूमिगोचरी पशु सम चलै । हम आकाश तै पृथ्वी दलै ॥
 किसकी तू बहु करै सराह । भूमिगोचरी बखारै ताहि ॥१८८७॥
 पि रि जनक नृप ऐसे कही । वस इध्याक दसरथ नृप सही ॥
 ताकै पटराली हैं बार । पुत्र चारि त्रिण कूँवि अबतार ॥१८८८॥
 एक सो पाच राणी है और । ने सोमै मंदिर की ठौर ॥
 उत्तम आदिनाथ का वस । धरम तीर्थ भए जिन अस ॥१८८९॥
 पछी जिम तुम उछो अकास । ऐसा बल पौरुष उबहासि ॥
 जो तुम दिक्षा लेण मन करो । आरजवड ते सिव सचरो ॥१८९०॥
 तिहां सलाका बसैठ पुरुष । पूजै मुरपति मानै हरष ॥
 दहा कोई भावै मूर देव । करण चरैय जिणवर की सेव ॥१८९१॥

आरिजयड सम देस नहीं श्रीर । महापुरुष उपजै तिन ठौर ॥
रामचंद्र लक्ष्मण बलवंत । तिनके गुणा को नाहीं भंत ॥१८६२॥

चन्द्रगति द्वारा स्वयंवर रक्षाने का प्रस्ताव

चन्द्रगति ये कहा उपदेस । रच्यो स्वयंवर जनक नरेस ॥
वज्रावर्त्त धनुष है एक । बा कूँ लो मंडप तल टेक ॥१८६३॥
जो नर करै धनुष टकार । वाण चलावै मंडप पार ॥
ताकू दीजे सीता धिया । अम्मा वचन जनक सौँ कहा ॥१८६४॥
जनक राय सोचै तिए बार । कछु मन हरष कछु विस्मै सार ॥
रामचंद्र तै धनुष ना उठै । मेग वचन पडै सब भूठै ॥१८६५॥
चन्द्रगति प्रभामंडल सुकुमार । विद्याधर सहू लीला सार ॥
रथ परि जनक राय बैठाये । मिथिलापुर के वन मे आय ॥१८६६॥

मिथिला नगरी

केई मूमि केई आकास । उतरे मिथला के बिहुँ पास ॥
देखि नग्न मन भयी उलास । भामंडल मन लील विलास ॥१८६७॥
जनक मूप नगर मे गया । सकल लोक को अति सुख भया ॥
गली बटाई बाजार उछाड । भाकै अटा भरोखा वाडि ॥१८६८॥
हाट पटण छाई सब ठोर । बाजा बजै नग्न मे सोर ॥
हस्ती चढया उछालै द्रव्य । दई असीस प्रजा मिल सर्व ॥१८६९॥
पट बैठै जनक नरेन्द्र । राजमभा मे अर्घक नरेन्द्र ॥
कलस ढालि फिरि बैठा राज । सीधा सगला मनबंछिन काज ॥१८७०॥

रणवास मे राजा जनक

राजा जनक गया रणवास । ऊंचे नीचे लेइ उलास ॥
विदेहा राणी सेवा करै । चमर सहेली के कर डलै ॥१८७१॥
पूछै राणी सुणी नरनाथ । तुम चित अटके काहु साथ ॥
कवण देस की देखी नाहि । तासू मन लाग्यो अपार ॥१८७२॥
मन माने तुम आहो ताहि । मेी बात सुणी नर नाह ॥
तब राजा बोले सत भाव । पिछला भेद सुणाया राय ॥१८७३॥
मायामई अस्व मै लिबा । मो बिजयारष गिरि ले गया ॥
विद्याधर घेरया सब देस । सीता मानै आर्यवर्त्त नरेस ॥१८७४॥
बजरावरत धनुष है एक । बाकी उनकी है इह टेक ॥
जो कोई करै धनुष टंकार । सो ही कन्या का भरतार ॥१८७५॥

रामचंद्र न सके संभार । बे से जाहि सीता नारि ॥

इह चिता मेरे मन बसै । रामने न यूँ तो जग हंसै ॥१६०६॥

राणी द्वारा चिन्ता प्रकट करना

इतनी सुरात राणी पिछ्छताय । कवण पाप उदय मेरे भाय ॥

जनमत मया पुत्र का हरण । कन्या जाइ तो पूरा मरण ॥१६०७॥

हाय हाय करि रोवै घणी । अँसी कठिन आणि कै बणी ॥

नब राजा समभाव बयण । अपणा मन राखो तुम अयन ॥१६०८॥

मारु विद्याधर सब ठौर । बे नहि आवै पाव न पौर ॥

सीता स्वयंवर

राजा ने नवै स्वयंवर रच्यो । भली भली सौंज कर मच्यो ॥१६०९॥

देस देस कु पठाए दूत । सकल पृथ्वीपनि आई पहुत ॥

रामचंद्र लक्ष्मण रु भरत । सत्रुघन सब का ले मन हरत ॥१६१०॥

आए सब मंडप राजान । कन्या कर जयमाला भान ॥

मुभस्वर ता है धीयता सग । रनन जडित कर छड़ी सुरग ॥१६११॥

बेचर भूचर भूपति घने । पहिरि आभूषण आछे बणे ॥

एक नै एक नृप आये बली । कहा लागि वरणी नामावली ॥१६१२॥

चंपापुर का हर्षिवाहन राय । ता दिग धनप्रमु बैटा आय ॥

केतुमुख दुरमुख और प्रभामुख । श्री जैवाणारस का गुरुमुख ॥१६१३॥

जडराजा भान मु प्रभा भूपती । मदिग विसाल श्रीधर सुभमती ॥

वीरधर बधक भद्र तिह ठोर । नदकेस के पुरु नृप और ॥१६१४॥

गोविंद धर रघुपुरु का राव । राजा भोज सुभोज निण ठाइ ॥

घाय नाम सगला का कहै । कन्या देखि फिर मारम गहै ॥१६१५॥

राजकुंवर देखे बहु भाति । रामचंद्र की देखी कान्ति ॥

बज्जार्त्त धनुष तिहा धरघा । सेवा करै देव तसु षडा ॥१६१६॥

जे कोई धनुष खदावै आय । सो सीता नै परणै राय ॥

जैसी बिजली तैसा बख । ज्वाला वत धनुष बहु अख ॥१६१७॥

कुकार फिर तिहा पाय महान । कंप भूपति जावै आणि ॥

केई धनुष पासि नहीं जावै । सूर सुभट करै बहु उपाय ॥१६१८॥

जो कोई पहु चै किए ही भाति । भस्म होइ प्राण उड जाति ॥

भूपति कहै जनक कहा किया । इतने लौमो के प्राण जु लिया ॥१६१९॥

हमने छोड़धा घैसा ब्याह । हम जीवत अपने घर जाह ॥ ~
 रूपवत त्रिय सों क्या काज । बुरी भली सेती रह लाज ॥१६२१॥
 सारा मान भंग इत भया । ब्रह्मचर्य पाले हम नया ॥
 सकल भूप त्यां हारी मान । रामचन्द्र उठ्या तिरु बार ॥१६२२॥

राम द्वारा धनुष लेंचना

बशरब नूप की माग्या नई । त्रिभुवन नाथ सो प्रसपति करी ॥
 रत्रि सम तेज चन्द्र उणिहार । रामचंद्र का बल अंत न पार ॥१६२३॥
 जंमा भेस सुदर्शन घीर । सोमं कंचन वरण सरीर ॥
 जिम समुद्र अति अगम अथाह । नही राम गुण को अवगाह ॥१६२४॥
 कर सू धनुष जब लिया उठाइ । ततक्षण धिन मे लिया उचाइ ॥
 करि टकार गह्यो जब बाण । गरज्यो धनुष अति मेघ समान ॥१६२५॥
 बोलें मयूर पवीहा रटै । दादुर सबद सरोधर रटै ॥
 घरतीस्वर गिर कये धर्यो । जलह नीर तब उछले धर्यो ॥१६२६॥

सीता द्वारा बरमाला डालना

जै जै कार देवता करै । पहुप दृष्टि वरपै सिर परै ॥
 रामचंद मलें घाली माल । जै जै कार करै भूपाल ॥१६२७॥
 मान भग विद्याधर भए । लजावत होई उठि गए ॥
 जनक दसरथ कै बाजे बजै । ता सबद सौं दुरजन लजै ॥१६२८॥
 मिधामन परि दसरथ राय । नमसकार कियो तिह श्राव ॥
 सीताराम की जोडी बनी । ते सोभा मुख जाइन गिनी ॥१६२९॥
 घेसी वस्तु नही जग माहि । जाकी पटतल दीजे ताहि ॥
 चद्रकिरण बेचर भूपति । कन्या अष्टदस गुणवती ॥१६३०॥
 रामचंद्र कू दई विवाह । सीता संग अधिक उच्छाह ॥
 लक्ष्मण नै लीना करि धनुष । उतारि चढाइ किया मन सुख ॥१६३१॥
 राजा सकल रहे मुंह बाहि । इन सम हम कोई जोषा नाहि ॥
 भरत सोच करै मन बहुत । एक पिता हम चारू पूत ॥१६३२॥
 भो पै धनुष उठ्या नहीं काय । इनुं का पूरब पुन्य सहाय ॥
 पुन्य प्रताप ए हुआ बली । इनकी तरभर किम पावैं रशी ॥१६३३॥
 केकई बितवी पुत्र की और । मन मनीन देख्या तिरु ठोर ॥
 सुरत मन की लाधी बात । पति सों बचन कहै बहु भाति ॥१६३४॥
 भरत तर्ण अनर्थ बैराग । दीक्षा लेती सब घर त्याग ॥
 कनक नेह सुप्रभा नारि । लोकबुंदरी बुनी तिरु बार ॥१६३५॥

भरत का लोकसुंदरी से विवाह

बाहि कही बरमासा लेहि । भरत तएँ गले घालेइ ॥
 जनक जनक प्रति कहै बुलाइ । कन्या आई मडप ठाइ ॥१६३६॥
 देखै सकल भूपती राइ । माला दई भरत गले घालि ॥
 लोकसुंदरी व्याही भरत । तजि बैराग भोग मुख करत ॥१६३७॥
 धर्म धर्म करम महा बलवत । मोह सिधु भे बूडे अन्त ॥
 भवसागर ते कठिन निकाल । जे उछलै काहु बाल ॥१६३८॥
 मोह सिला ले बोलै फेरि । जीव करम ने राख्या घेरि ॥
 जनक नरेन्द्र दीनी जिवणार । देस देस के नृप की करै मुनहार ॥१६३९॥

मिथानो का बर्णन

मडप तलै बे बैठा भूप । सोवनघाल भरि रखे अनूप ॥
 रत्नो जडित तवाई धरे । सुवन कटोरा दुग्ध ले भरे ॥१६४०॥
 फीणा फीणी धरु बरफी स्वेत । घेवर लाडु परुष्या हेत ॥
 खुरमे सीरा पूरी घनी । बहुत सुवास तनो की बनी ॥१६४१॥
 घोल बडे व्यजन बहु भाति । हरे जरद बहु गणो न जात ॥
 भात दाल अति अन्न सुवास । सिस्तरण का दौना धरि पाति ॥१६४२॥
 तामे बूरा लायची लौंग । मेवा मेल्या तिहा मोहन भोग ॥
 मीठा मिरच जीरो का मेल्या । लूण सघातै तिहां घिल्या ॥१६४३॥
 जीम्या भूपति एकई पाति । बलु लेइ मुख सोध करात ॥
 लौंग कपूर केशरि जावतरी । बीडा बाध्या चोली घरी ॥१६४४॥
 भावे रत्न जनक नग जरे । बीडा बाधि तिन अग्रे धरे ॥
 नृपति खाय सभा के बीच । लगाए अडिग चावै गला नीच ॥१६४५॥
 केशरि छिडकी बहुत गुलाब । रंगारंग हुषा बहु भाब ॥
 कामणि गावै मगलचार । सह कुटब की भावै नार ॥१६४६॥
 चोरी रची चउपड बणाइ । पढै वेद धुनि पडित राइ ॥
 बाजा बहु बाजै दरबार । नृत्य करै गावै नर नारि ॥१६४७॥
 रामचंद्र सीता का व्याह । दोऊ कुल मे अधिक उछाह ॥
 बाही लगन विवाहो घणी । ते सुख सोभा जाय न गिली ॥१६४८॥
 सोदा बहुत दिया भूपती । नाही गिरत मैताछती ॥
 रहस रली सु सुघरघा काज । आय अयोध्या सुगतै राज ॥१६४९॥

ब्रूहा

चल कुटब लक्ष्मी बरणी, पाई पुन्य पसाइ ॥

रामचंद्र लक्ष्मण बड़े, भए मुकटमखि राय ॥१६५०॥

इति श्री वधपुराणे रामचंद्र सीता विवाह बरखन विचालकं

२५ वीं विधानक

चौपई

अयोध्या आगमन

सह परिवार अयोध्या आई । करी बघाई दसरथ रोइ ॥

सुख मे बीतै घाठो जाय । भोग्यां भुगतै सीताराम ॥१६५१॥

सुद अवाढ अष्टमी सुभषडी । पूजा की सामग्री करी ॥

देव सथान सवारधा बरणा । भला भला चंदोबा तणां ॥१६५२॥

अष्ट दरब सब सीये सुख । पूजा पढै पढित सुबुधि ॥

गया का जल उत्तम नीर । भरे कलस भारी तिहुं तोर ॥१६५३॥

अति सुवास जल बरचा मुबास । ब्रत अठाई करै परिवार ॥

अरचा बरचा पूजा पाठ । सैसी विष बीते दिन घाठ ॥१६५४॥

पूरणवासी करै सातीक । उत्तम चले धरम की लीक ॥

किया महोछव श्री जिन पान । देवलास्त्रगुण प्रबांन ॥१६५५॥

गंधोदक लेना

गंधोदिक सिर लिया चढाइ । महल माहि फिर दिवो पठाइ ॥

सब राणी निज अंग लगाइ । सुप्रभा ने नहीं पहुंच्या जाइ ॥१६५६॥

जे व भ त्रिया गंधोदिक लेइ । ताकू पुन जिनेश्वर देइ ॥

कुण्टी का कुण्ट जु भर्ग । निरमल होइ देही जगमगै ॥१६५७॥

कंचन सम काया तसु होइ । निसचै ब्रत करै जो कोइ ॥

सुप्रभा राणी की बरबा

सुप्रभा राणी कर अहंकार । अखसण जे चौडी तिखबांर ॥१६५८॥

पसनाताप मन में अति धरै । हीन पुन्य जो पूरब करै ॥

पति का तो कहूं दूषण नही । तातैं हमारी काण न रही ॥१६५९॥

अब मैं तब दूंगी निज पराण । हमारी आब अठाई काण ॥

राजा आये महल मंझार । देखी पढी सुप्रभा नार ॥१६६०॥

मलिन रूप देखी वहा पडी । जाणें प्राण नजै इस घडी ॥
 दशरथ जाइ पलक परि बैठि । राणी उतर कर बँठी हेठ ॥१६६१॥
 बाह पकड करि लई उशाय । पोसग ऊपर निज पास बिठाय ॥
 किरण कारण तू करै अहकार । किरण मनुष्य तो कूँ दई गार ॥१६६२॥
 ताकी जीभ कटाऊ तुरन्त । जैसे ही पाऊ सुध तत ॥
 सुप्रभा कहै सुणो नरेम । मोकू कहा देखी हीग भेम ॥१६६३॥
 सकल कला गुण माहि प्रवीण । कवग वस्तु मै जाणों हीण ॥
 गधोदक सब कूँ तुम दिया । मेरे ताई क्यु न याटिया ॥१६६४॥
 प्रब हूँ मरु माहि मग्यास । छपगो जीवण की तज आस ॥
 गय कहैं तै सुण्या पुराण । छेमी चित्त मैं भून न आग ॥१६६५॥
 क्रोध करि जो आत्मा दहै । लख चौगमी मा दुख सहै ॥
 कुमति मरण भवभय होइ दुख । चिह्न गति माहि न पावै सुख ॥१६६६॥
 गधोदक लीया थी कचुकी । सुप्रभा राणी क्रोध मा वकी ॥
 सुप्रभा बोलै सुणु नाथ । मुह मोडचा भीर ईनह हाथ ॥१६६७॥
 मित्यो तिहा सगलो रसबास । बँठी बेरि राणी चिह्न पामि ॥
 इह गधोदक श्री जिनवर तरणी । इस पर क्रोध न कीजे घणो ॥१६६८॥

कचुकी को नृत्य का आदेश

अंजुली भर छिठकी सब त्रिया । ततक्षिण क्रोध पयाण मिया ॥
 राजा कचुकी सो तब कह । बेग नाचि राणी सुख लहै ॥१६६९॥

कचुकी का उत्तर

बोलै कचुकी सुणो नरेण । वृध्य भए पंडुरा केस ॥
 टूटै दात देही जा जुगी । सब सरीर मे लीलरी पडी ॥१६७०॥
 कापै चरण धर हरै सरीर । बहै नाक नैणा थी नीर ॥
 लाठी टेक सुर ढीले भए । तरुण पाका पौरुष गये ॥१६७१॥
 जैसी फूल है अति साभ । जिम जोवन विनसै पल साभ ॥
 हूँ किरण पर नाचू भूपती । देही मे बल रह्या न रती ॥१६७२॥
 तुमारै ही इह प्रसाद । बहुतेरा सुख भुगतै स्वाद ॥
 रूपरग चतुराई धरणी । मुझ सो कोई न गुंणी ॥१६७३॥
 वृद्ध भये कला सब घट गई । अण्ण्यर पद की सुध भई ॥

दशरथ पर प्रभाव

दशरथ के मन साची लगी । बैराग भाव की चेष्टा जगी ॥१६७४॥

जोबन जल बुदबुदा समान । पनमें होइ जाइ तिहा हानि ॥
जोबन समं घरम कबहू ना करै । अगले भव कुं वो हित धरै ॥१६७५॥
जीव लपटियो माया जाल । आय अचित्तियो व्यापै काल ॥
जरा घटाई देखी मांस । तो भी इच्छं भोग विलास ॥१६७६॥
अगली सुख सब दई विमान । पुत्र अरु लक्ष्मी नाडई नार ॥
सुपना की सी है सब गिद्ध । जागति कबहू न दोसैं सिध ॥१६७७॥
सकल विभूत पुण्य तैं होइ । ताका भेद समझैं सब कोइ ॥
पुण्य सिवाय संगी कोई नहि । कहा राखै ऐसा सुख माहि ॥१६७८॥
उपज विणसैं होइ विछोह । तासु कहा कीजिये भोग ॥
धन्य साध जिन तजियो गेह । ममता कबहू न राखै गेह ॥१६७९॥
मेरा है यह पुत्र सपूत । तिसको सौंपो राज विभूत ॥
आतम का हित करू मन लाय । धरू साधु व्रत मन बच काय ॥१६८०॥
अंसी चित चिता नृप करै । पच महाव्रत कब मन धरै ॥

सर्व विभूति मुनि से अनुरोध का अर्थ

सर्वभूति मुनिवर पै आइ । चार ग्यान भलकैं तनु काय ॥१६८२॥
बहुत शिष्य मुनिवर ता संग । तीन ग्यान सां सोम अंग ॥
केइ तब तल केई जिन भूमि । केई सिला केई परवत गिन ॥१६८३॥
केई सरिता के तट तीर । धरयो ध्यान मन मेर सुधीर ॥
गिरु चौमासो काली घटा । सकल गयण मेपमो पटा ॥१६८४॥
चमकैं दामिण गरजै घणा । मूसल घाग बरसै घणा ॥
मुनिवर बैठा अपणैं ध्यान । लगै बूंद अति तीर समान ॥१६८५॥
सहै परीस्या बीस अन दोष । दया भाव सब ऊपर होइ ॥
बाजा बजै बहुत परभात । उठै लोग जिन सुमरै प्रात ॥१६८६॥
कारे सनान जिन पूजा करी । भूपति मुनि बदन चित धरी ॥
राय संघात चात्वा बहु लोग । देख्या साध आत्मा जोग ॥१६८७॥
दीनी तीन प्रदक्षिणा राय । केवल ब्रह्म सुण्या मन लाय ॥
सकल सदेह चित्त का गया । राजा फिर मंदिर आइया ॥१६८८॥
राणी सो बहु मंदिर याँक । राजा सेव करै दिन साँक ॥
भोग मुगति मैं बीतै काज । दसरथ करै अजोष्या राज ॥१६८९॥

इति श्री पद्यपुराणे विश्वभूति मुनिवर समीप सर्व अर्थ अर्थ विधानकं

२६ वां बिधानक चौपई

भामंडल की चिन्ता

गई चउमास सरद रितु आई । कार्तिक मास महा सुखदाई ॥
 घान पाण पाणी का स्वाद । फूले कमल करै अलि नाद ॥१६६०॥
 चद्रसूरज की निरमल क्रांति । उज्ज्वल जल सोमै बहु भाति ॥
 भामंडल मन चिंता घणी । अई कंसी करम गति बणी ॥१६६१॥
 मम इच्छा सीता की कगी । व्याही राम भूमि गोचरी ॥
 हम विद्याधर देव समान । हमारी कछुयन रही काण ॥१६६२॥
 अंसी झुटक रहै दिन रात । वस्तछुज कही मन की बात ॥
 बृहतकेत साभलि सब भेद । करै मोच मन मा बहु खेद ॥१६६३॥
 बोलै अन्त्य मंत्री तिहा घणा । दाब न को हम पास ई वणा ॥
 सीता सम कोई नहि नारि । स्वरग मध्य पाताल मभारि ॥१६६४॥
 रामचन्द्र सम अबर न बली । ते सीता सु मानै रनी ॥
 लक्ष्मण तणी अस्यौ प्राकम । उनकै सदा सहाई धर्म ॥१६६५॥
 जब सीता व्याही थी नाहि । तब चोर न्यावते ताहि ॥
 तब कैसे लेता रामचन्द्र । हमौ किया जब झुठा दुद ॥१६६६॥
 अब वह कैसे हरियन जाय । राम लषण तै देव डगाइ ॥
 बृहस्पति केतु मंत्री तब कहै । कहा मोच तुम मनमें रहै ॥१६६७॥
 विद्याधर हम जइसा देव । सीता हरन लागै ई भेव ॥
 राम लक्ष्मण माई जुध । भूमि गोचरी लई असुध ॥१६६८॥
 हम विमाण चढि लेइ अकस । भूमिगीचरी के पुरबास ॥
 भामंडल वीमाण चढ चलै । बृहतकेत मंत्री सब मिलै ॥१६६९॥
 बहुत सुभट सग लीया चढाट । पट्टे विदग्ध देस मा जाय ॥

भामंडल को जाति स्मरण होना

महीधर परवत देख्या बहुदेस जाती समरण भया नरेम ॥२०००॥
 पूरव भव करते इहा राज । द्विज नारी राखी वे काज ॥
 तप करि विप्र भया वह देव । चित्रोत्सवा मै जुगल भए एव ॥ २००१॥
 जनमत समै मुअें सुर हरधा । चद्रगति तगै मंदिर ले बरधा ॥
 महाकुबुधि बिचारी बुरी । बहन हरन की इच्छा घरो ॥२००२॥
 अपने कुल की निन्दा कगी । आई मुरछा मृतक सम परी ॥
 बहुर गये रघुपुर देस । चन्द्रादण देख्या सुत भेस ॥२००३॥

वेद किया कुलाय उपचार । सीत कमल उर धरे समार ॥
 कामिन करे देही पर हाथ । बीजणा करे सखी तिए साथ ॥२००४॥
 ह्वं सचेत बोलिया कुमार । पूछे राय पुत्र की सार ॥
 पिछला कहा सकल सनमध । विषयां कारण कुभा ग्रंथ ॥२००५॥
 सीता बहिन हूँ बाको भ्रात । उपजे कुंठ बिदेही मात ॥
 जनम समै हरि ल्याया देव । तुम घर छोड़ दिया इह भेव ॥२००६॥
 सकल सभा साभलि सनमध । सब ससार जाखियो बंध ॥
 पोता कू दीनूँ सब राज । चले सुत पिता दीक्षा काज ॥२००७॥
 महेंद्र गिर इक उत्तम धान । सरवभूत हित मुनि ढिग ग्रान ॥
 करि जोड़ कीनूँ नमस्कार । प्रभु हमे दिखा खौ इलाबार ॥२००८॥
 बाजा बाजै गुनी जसपाय । नृत्य करै भ्रमछर तिए ठाय ॥
 करे भारती महोच्छा धरौ । भाट जैजै कार जनक भणौ ॥२००९॥
 प्रभामंडल जनक सुत सूर । ग्यानवत दाता भर पूर ॥
 धन्य धन्य धरी धरम की देह । धरमध्यान सुं ल्याया नेह ॥२०१०॥

सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन

सीता सुध्यां पिता का नाम । सोचै धरणां राखि चित ठाम ॥
 जनक पुत्र इहै है नृप कौण । मो सनि जनम हुवा या जौण ॥२०११॥
 कोई हर ले गया जनम की बार । ताकी कबहु न पाई पार ॥
 सीता के भरि धाये नैण । रामचंद्र तब पूछै वयण ॥२०१२॥
 किम हय भरे कहा तुस दुःख । तुम कू है मुंह मांग्या सुख ॥
 साची बात कहो समझाय । क्यूँ दिसगीर भई किए भाइ ॥२०१३॥
 पिछली कही जनक की बात । मो साथै इक जन्म्या भ्रात ॥
 बाहुं कोई ले गया उठाइ । बोलै भाट जनक सुत राय ॥२०१४॥
 तुम चालो तो देख्या जाइ । दरसन भ्रात को पाऊँ राय ॥

दशरथ का मुनि के पास जाना

बीती रयण भयो परभात । दशरथ चल्खौ मुनिवर की जात ॥२०१५॥
 व्याकूँ पुत्र सहित परिवार । बहुते लोभ भए असवार ॥
 विद्याधर की सेध्या धरौ । मंदिर जाया कपी बनी ॥२०१६॥
 राजसभा वेधर की जुडी । धनै अजोभ्या छाई सरी ॥
 दरसन कियो मुनिवर को जाइ । नमस्कार कीया बहू भाइ ॥२०१७॥

विद्याधर आय सब मिले । समाधान पूछे बहु धले ॥
 चरचा करै धर्म की सर्व । सातों तत्व और छट द्रव्य ॥२०१८॥
 नव पदार्थ नै काया पच । जिनवाणी मुख बोन सच ॥
 आदि अंत की चरचा करै । जिनेश्वर वाक्य हिये मे धरै ॥२०१९॥
 दसरथ नृप पूछै कर जोड़ि । प्रभुजी इनकी कहो बहोड़ ॥
 किरण कारण यह लेत है जोग । छोड़े केम राज सुख भोग ॥२०२०॥

मुनि द्वारा बतलाना

बोले मुनिवर ग्यान विचार । विदग्ध देस महीधर की पार ॥
 कु डलमडल तिहा भूपती । पिंगल बिप्र करी तिहा घियनी ॥२०२१॥
 नारि लई बिप्र की छीन । बिप्र दलिद्री था अति दीन ॥
 चक्रध्वज प्रभावती का सुता । राजा ले त्रिय भोगता ॥२०२२॥
 बिप्र महा दुख घणा मन करधा । जती पास संयम आदरधा ॥
 तप करि लह्या महेन्द्र विमाण । पिछला भव समझ धरी ग्यान ॥२०२३॥
 अनरण कुंडल मडल गह्या । वाध्या ताहि बहुत दुख दिया ॥
 बहुरि कुंडल दीया छोड़ि । मुनि मुख सुनी करम की खोड़ि ॥२०२४॥
 तिहाँ प्रणुबत लिया मन नाइ । चित्रोत्सवा तप कीया जाइ ॥
 दोउ उपज्या गरभ विदेह । जनक भूप के जुगलया एह ॥२०२५॥
 वैर समझि इन बालक हर्या । गयण गया गिर कदर फिर्या ॥
 विजयारघ रथनूपुर जाग । चद्रगति फिर धेर्या आय ॥२०२६॥
 पुष्पवती नै पाल्या याहि । नाम धर्या प्रभामडल ताहि ॥
 नारद लिखी सीता का रूप । प्रभामडल तब मोह्या भूप ॥२०२७॥
 उन बाछी हरणे कु सीया । जानी सुमरण ग्यान उपजीया ॥
 इण कारण उपज्या वैराग । राज रिध दी सब ही त्याग ॥२०२८॥
 व्योरा सुणि सब चक्रि भए । सब सदेह इन् के गये ॥

प्रभामडल द्वारा प्रश्न करना

प्रभामडल तब पूछै प्रश्न । चद्रगति पुष्पवती प्रसंग ॥२०२९॥
 कवण सनमध इणु सग मिल्या । पुत्र समान इनु कै पल्या ॥
 भरतवैत्र मोद इम गाम । विमुं'ब बिप्र निबलैं तिरण ठाम ॥२०३०॥
 अनकोसा ताकी है हथी । अतिभूत पुत्र सरिसा पुत्तरी ॥
 ग्याना बिप्र उर जामात । सरसा कु ले भाज्या भ्रात ॥२०३१॥

मात पिता सुत निकसे खोज । तीनों व्याकुल रोवें रोख ॥
 भर्या सौंज सों छोड़्या गेह । तीनों बिछुड़े दूँढत एह ॥२०३२॥
 बहुत प्रकारैं ले ले नाम । दूँढत फिरैं नगर पुर ग्राम ॥
 घर कूँ खोर लूट ले गये । तीनों फेर मिलारी भए ॥२०३३॥
 विमुच विप्र जमुना पर गया । भिक्षा मागि निज मारग लिया ॥
 इन कुंवास नरइ मलीन । भ्रमत भ्रमत देही भई छीन ॥२०३४॥
 उरजा देखि सब वामों मिली । अनुक्रम बात पाछली मिली ॥
 उनव मती कही समभाष । बेटी किसके घरै समाष ॥२०३५॥
 हम तुम दोन्युँ एक ही जात । मेरै पुत्र हरी है राति ॥
 पुत्र कूँ मिले गया संदेह । सरबार पुर गये दोऊँ एह ॥२०३६॥
 कमलाति अजिका कै पास । दिसा लई सुगति की घास ॥
 विमुच विप्र भी दिसा लई । करी तपस्या मन बच कई ॥२०३७॥
 पहुँचे तीनों ग्रीव विमाण । भद्रमृत सरिसा भवर कयाण ॥
 तीनु थापै आन की आन । करै बहुत मिथ्या मत ध्यान ॥२०३८॥
 जँन धरम की निदा करै । मिथ्या धरम को निश्चै धरै ॥
 सरसा बहुगति भ्रमी अयाइ । भ्रत भई हिरणी परजाइ ॥२०३९॥
 चन्पो केहरी पाछें दोड़ि । हिरणी बसी दवानल माहि ॥
 बहुरि कनक परवत परिजाइ । सिध देखि भागी उचकाय ॥२०४०॥
 छुटे प्राण हिरणी तहा मुई । चक्रध्वज सुता चित्रोत्सवा भई ॥
 ग्याना भ्रम्या बहुत ससार । धूमकेत धर लीया अवतार ॥२०४१॥
 पिगला नास पुत्र ते भया । चित्रोत्सवा पुंगल ले गया ॥
 अतिभूत व्यापी गति भ्रम्या । भ्रंत समै हस गति जम्या ॥२०४२॥
 ताराछ सरोवर श्रीडा करै । इक दिन जाय कीच मे पडै ॥
 साम्यो कीच पास भर गई । उड न सकै अघाहिज भई ॥२०४३॥
 जिनवर थान जाइ गिर पडै । जसोमित्र तिहा मुनि तप करै ॥
 भ्रत सुण्या परमेष्ठी नाम । किन्नर देव भया तिण ठाम ॥२०४४॥
 दस हजार संवतसर आव । कु डलमंडल हुवा राव ॥
 विदग्ध नगर का राजा हुवा । पिगल संग पहुँची चित्रोत्सवा ॥२०४५॥
 त्रिया खोर द्विज नै दुख दिया । पिगल तप करि देवता भया ॥
 विमुच जीव चन्द्रगति भूप । अनकोसा पुण्यावती रूप ॥२०४६॥
 उरजा भई विवेहा नारि । चित्रोत्सवा सीता अवतार ॥

भाई बहिन भित्तन

भाई बहन जुगलिया भए । पुत्री पुत्र जनक घरि गए ॥२०४७॥
 पूरब भव का कारण मिल्या । इस सनबध इसके घर पल्या ॥
 सुप्यो सकल पिछलो बिरतात । उठी रोम सब ही के गात ॥२०४८॥
 भामंडल सीता मिले रोइ । समझावै उनको सब कोइ ॥
 जनक कनै ए सब वेग पुचाई । अनितेडाइ विदेहा माई ॥२०४९॥
 गया दूत पत्र दीया ताहि । वाञ्छित मोह उदय भयो आइ ॥
 पवनवेग तब कहै तुम चलो । पुत्र आपना सेती मिलो ॥२०५०॥
 चढे विमान सहित परिवार । भयो सुख मन हरष अपार ॥
 गए अजोष्या मिले गल लागि । मात पिता मिलिया बड भागि ॥२०५१॥
 धन्य जननी जिन पायो वीर । बाललीला देखी सघीर ॥
 दिखलाई लीला बहुभाति । भयो सुख अति पित अरु मात ॥२०५२॥
 रामचंद्र कै मन उल्लास । सकल कुटुंब मिल्यो ता पास ॥
 भामंडल कहै दिक्षा लेहुं । रामचन्द्र ममभावै भेट ॥२०५३॥
 तुम बालक जोवन भरी देह । हम तुम हुवा अधिक मनेह ॥
 जब हम दिक्षा लेस्या जाइ । तब तुम हम मग लीज्यो आइ ॥२०५४॥
 भामंडल सेना सयुक्त । रथनूपुर मे जाय पहुँत ॥
 जनक कनक का सब परिवार । मिथलापुरी गए तिहवार ॥२०५५॥
 सीता राम अधिक सुख भया । बहु प्रकार आनंद सब गया ॥
 सगला की चिंता मिट गयी । दिन दिन सहस विभव गुण थई ॥२०५६॥

अडिस्त

पुष्य उदय परिवार बर्ष दिन दिन वरणा ।
 बिष्टुरै प्रीतम मिलै बहुत घरि सज्जणा ॥
 बैरी लागै पाय धरम परभाव सू ॥
 संपति मिलै अनेक कृपा जिनराज सौं ॥२०५७॥

इति श्री वचनपुराणे भामंडल समायम विद्यानकं

२७ वां विद्यानक

चौपई

दशरथ का मुनि के पास जाकर अपने पूर्व भव पुछना

राजा दशरथ मुनि पासै गया । नमस्कार करि चरखौ गया ॥
 स्वामी मो मन रङ्गौ सन्देह । मो पूरब भव भावो तेह ॥२०५८॥

कवरण पुण्य मे पाई रिख । जनक कनक सुत प्यारीं विष ॥
 सरवभूति मुनि अक्षयि विचार । ज्यों ज्यों भ्रम संसार ॥२०५६॥
 हम तुम कल्या अनंती बार । भ्रमता कबहुं न पायो पार ॥
 तीन लोक में नही विसराम । स्वर्ग मध्य पातास सुठाम ॥२०६०॥
 प्यारी गति मे डोल्यो हस । कब उत्तम कब नीच बंस ॥
 सप्त तत्त्व के सूक्ष्म भेद । जाय सुणत ससय तर छेद ॥२०६१॥
 नित प्रति राखै उत्तम ध्यान । जैन घरम का सुणै पुराण ॥
 दान बार दे वित्त समान । शीषद अन्न अमय का दान ॥२०६२॥
 जीव तत्त्व का सुणै बयाण । एक जीवइ निरंजन जान ॥
 दोह प्रकार ससारी प्रान । भव अभव्य जीव घरि ध्यान ॥२०६३॥
 भव्य सोही जाएँ ये भेष । मन वच सत्य जिनेस्वर देव ॥
 पूजा दान सामायिक करै । पाप कर्म सबै परिहरै ॥२०६४॥
 तो निश्चय सिद्धालय जाय । समकित सुं रहै दया के भाव ॥
 कई सिद्ध होइये और । पावैये तो निमंय ठौर ॥२०६५॥
 अभव्य जीव दरसन तै दूर । देव शास्त्र गुरु समझै नही भूल ॥
 जिन बाणी ताकूं न सुनाइ । कुगुरु कुदेव कुशास्त्र तै भाइ ॥२०६६॥
 समकित दया न समझै कुछ । प्यारो गति माहि सबै तुच्छ ॥
 उपजत बिनसत लगै न बार । ऐसे जीव कसै संसार ॥२०६७॥
 तिहु लोक धरित घट जिम भरै । तिहा के जीव नही नीबरे ॥
 मोक्ष धानक भरि पूरन थाइ । नरक निषोद न रंच घटाइ ॥२०६८॥
 घरम अघरम ह जीव अजीव । काल आकास द्रव्य घट नीव ॥
 तब पदार्थ आने पच काय । सकल भेद कहियो समझाय ॥२०६९॥
 सेना पुर नग्र तिहा बसती पणी । उपसत नृप नामणी तसु तणी ॥
 जैन धर्म सौं प्रीत न चित्त । बंडी मुंडी मंडी पूजै सु चित्त ॥२०७०॥
 मिथ्या घरम करै मन त्याय । तीरथ तीरथ सप्त भ्रमाय ॥
 दया दान समझै नहीं भेष । पाप प्रभाव की इच्छा करेब ॥२०७१॥
 करै बरत आवैं कंद मूल । तिल दाणा बहुला फल फूल ॥
 सिखावा बीध्या को चूँन । बरत खांड नै सीधा लूण ॥२०७२॥
 काया पोष बरत बहु किया । झूठी प्रीया सौं चित दीया ॥
 जल में क्रूष बिराचै मीन । आपा विलक प्यान करि हीन ॥२०७३॥

अणुक्षणां जल करं रसोह । बहुत पाप ताकूं मित होई ॥
मरि करि पहुते नरक मभार । चउरासी लक्ष भ्रम्या अपार ॥२०७४॥

वशरथ के पूर्व भाव

भ्रमत भ्रमत इद्रकपुर नग । करै राज राजा जसोभद्र ॥
धारणी त्रिया तामु पट घनी । धारण पुत्र सोभा अति बनी ॥२०७५॥
व्याही नयण सु दरि नारि । आया मुनिवर लेण आहार ॥
विधसुं द्वारा पेषण किया । ऊचा आसण बैसण दिया ॥२०७६॥
चरण धोय जल सीस चढाइ । बडयावत्त किया बहु भाइ ॥
मास उपासी मुनिवर जती । सुध आहार दिवो भुपती ॥२०७७॥
अथ दान दियो मुनिवर तहा । अधिक पुनीतण दपति कहा ॥
समकित सु पालं अनुवत्तं । देवसास्त्र करै गुरुभक्त ॥२०७८॥
पूरण आव करि तज्या परान । क्षेत्र विदेह घातकी आन ॥
भोग भूम दपति तिहा पाइ । दोनुं भए जुगलिया आइ ॥२०७९॥
तीन पत्य की आयु प्रमाण । भुगति तीसरे स्वर्ग विमाण ॥
उहा तै अए प्रथम देस । नदधोप रहै तिहा नरेस ॥२०८०॥
वसुधा है ताकी असतरी । नदवरधन जनम्या सुभ घरी ।
कोडि पुरव की भुगती आव । जसोधर पाम सुण्या घरम के भाव ॥२०८१॥
दिक्षा लही जतीश्वर पास । जसोधर मुनि लौकातिक वाग ॥
नद वरधन पञ्चम सुरधान । भुगत आव फुन चया निदान ॥२०८२॥
मेरु सुदरसन पछिम ओर । विजयारथ परवत की ओर ॥
ससीपुर नग रत्नमाली भूप । विद्युलता राणी सु स्वरूप ॥२०८३॥
मुरजय ताकै भया सुपुत्र । विद्याधर बल सूं संजुक्त ॥
सिध नग बज्र लोचन राय । रत्नमाली चढे जुधकर भाय ॥२०८४॥
दारुन यूध दोउ धा भयो । रत्नमाली नै क्रोध उपनुं भयो ॥
अगनि बाण कर लिया सभारि । मारि मारि किये दुरजन ठार ॥२०८५॥
देव एक आयो तिण ठाम । समझाया रत्नमाली नाम ॥
जो मारैगा इतने लोग । तोकू होसी भव भव विजोग ॥२०८६॥
जे कोई एक जीवनें हनै । ताको हुवै नरक की गनै ॥
भव पिछला देव निज कहै । राजा क्रोध छोडि इम कहै ॥२०८७॥
गधारी नगरी नृप भूत । उपमती नामइ पिरोहित ॥
हिंसा करै था घणी । इक दिन लबाधि पुन्य की वणी ॥२०८८॥

दशरथ का पूर्व भव

कमल गर्भ मुनि आगम भया । सुणि नरेस पूजा कूँ भया ॥
 प्रदक्षिणा दई नृप तीन । नमस्कार करि बोलै दीन ॥२०८६॥
 स्वामी कहो घरम समझाय । पाप पुन्य का कैसा भाय ॥
 कहै मुनीसर सुणी नरेस । पुंनि तैं जस होबै देस विदेस ॥२०८७॥
 पुंन्य तैं तूँ ससार मे रिद्ध । पु नि ते पावै सगली सिद्ध ॥
 पाप करम नित करै ते मूढ । दया पालै हिस्या रुद्ध ॥२०८८॥
 मरि करि चहुगति माहि भ्रमई । छोटी गति मां वनसै जमई ॥
 राजा सुण्यां घरम का भाव । थर हर कर कंप्पा सब गांव ॥२०८९॥
 उन नरेन्द्र उपसमी द्विज । दिव्या पालै ब्रह्मचर्य ॥
 तप करि पहुँता स्वर्ग बिमांग । पत्न्य पाच तिहा प्रायु पमाण ॥२०९०॥
 प्रोहित जीव मिथ्या मन घरी । जैन चरचा राजा कै घरी ॥
 उहां तैं लोक मध्य भए आइ । राजहस्त भूत का जीव है राइ ॥२०९१॥
 प्रोहित जीव चय बडवा भया । हस्तीनी गर्भ बडवा जिय चया ॥
 हस्ती भूपति का गजराय । बहुत दिबस तिहा गए बिहाय ॥२०९२॥
 जुष समे लागे बहु घाव । छूटा प्राण सग्राम की ठाव ॥
 धीमत पुत्र हसति घर जाइया । जोजन गंधा राणी व्याहिया ॥२०९३॥
 भर सूदन पुत्र हस्ती का जीव । दिन दिन बढे सुभट की नीब ॥
 जाति स्मरण उपज्या निरा बार । कमलमर्द पले तप सार ॥२०९४॥
 सतार स्वर्ग पाइया विमाण । हस्ती जीव मदार बण आण ॥
 भया मृग तीहा पुगी आव । उपज्या गरभ भीसन की ठाव ॥२०९५॥
 कालजर भील कहाबै नाव । आखेटक करम सु राखै भाव ॥
 मरि कर गया सरकरा भूमि । कठिन करम तिहा आया भूमि ॥२०९६॥
 भ्रम्या जीनि चउरासी लाख । समकित कदेइ न मुखतै भाव ॥
 भ्रम ससार मनुष गति लही । तिहा आइ कछु आश्रम गही ॥२१००॥
 मैं अब आइ संबोध्या तोहि । असुम करम का टूटा मोह ॥
 करी तपस्या छोडे प्राण । रत्नमाली नृप तू भया भान ॥२१०१॥
 रत्नमाली अन सूरज रज । दोड़ करघा पाप का कज ॥
 तिलक सुन्दर मुनि पै तब आइ । विश्वा लई मुमति कै भाइ ॥२१०२॥
 सूरज रज महा सुक विमाण । उहां तैं अब बसरण भया आण ॥
 नदघोष ग्रीवक तैं चया । सरबभूति मुनिवर ये भया ॥२१०३॥
 चय इक देव हुवा है जनक । रत्नमाली जीव भया है जनक ॥
 इण विष सुण्यां सकल परजाइ । ससय मन तैं गया बिलाय ॥२१०४॥

ब्रूहा

सब परजाइ दसरथ सुण्या, ज्यो ज्यो भमिया हंस ॥
पु न्यवत सब जग प्रगट, सबतै उत्तिम वंस ॥२१०५॥

चौपई

दसरथ का वापिस घर पर आना

राजा फिरि आयो घरमाहि । मंदिर गये भई तब साभ ॥
सरद रितु सुहावणी घणी । आभूषन की सोभां घनी ॥२१०६॥
चदन अंगर सो अंगीठी भरी । बास मदक रही तिन खरी ॥
ऊनमई सेज्या पाटवर सोडि । केसर भरे गीदवे तिए ठोर ॥२१०७॥
दुखपान के कीजे भोग । जो दुख भूल देख प्रसोग ॥
बिछे गिनम तिहा अति ही अनूप । तणे चद्रवे सेज्या रूप ॥२१०८॥
उत्तम औषध खावै बणाइ । तिनले गुण बरभे नही जाइ ॥
अंगे मुखिया भुगतै सुख । दुखिया तणा सुणुं अब दुख ॥२१०९॥
फाटे बसतर लूथी देह । मैलो मन अर पाप सनेह ॥
काठा मन अने पानी घपे । चौस होई धाम मे तपे ॥२११०॥
कठिन कठिन सो बीतै काल । पाप करम का एही हुवाल ॥
जैमी करणी तैमी गति । जासै ए मसारी धिति ॥२१११॥

ब्रूहा

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समझि विचार ॥
मुपना का सा सुख ए, जानि न लानै बार ॥२११२॥

चौपई

बैराग्य भाव—रामचन्द्र को राज सौपना

राजा मंत्री सब लये बुलाइ । अब हम दिख लेस्या बाइ ॥
रामचन्द्र को सोप्यो राज । प्रजा तणी वह राखै लाज ॥२११३॥
मन्त्री रुदन करै तिए बार । राणी रोवै महल मभार ॥
भरत विचार करै जाहि । सोचै बहुतिहा भै दुखदाहि ॥२११४॥
अधम पुन्य ते अब मैं तरधा । मोक्ष नाही राजा करधा ॥
अब मैं दिख लेस्यु पिता सग । जो नही हुवै मेरा मान बंध ॥२११५॥
कैकेयी पुत्र देख्यो विरक्त । राजा बर आय्यो तब चित्त ॥
गई भूप पासै तिए बार । सकल सभा कीयो नमस्कार ॥२११६॥

कंकयी का दशरथ के पास जाना एवं अपने घर भांगना

अर्द्ध स्पर्धासण दियो नरेस । हाथ जोड़ि बोले भुवनेस ॥
मोकु बर दीना तुम क्या किया । अब मोकूँ दीजे करि दया ॥२११७॥
तुम सम दाता कोई नहीं । जुग जुग की तरह तुम मही ॥
बोलै राय सुणों कैकिया । अब हम चाहै दिव्या लिया ॥२११८॥
जो कछु वस्तु भली मो पासि । मागि बेग ल्यो पुरीं आस ॥
राणी नयण भरै बहू नीर । व्याप्या कत बिछीहा पीर ॥२११९॥
नीची देखै धरती खणै । बड़ी बेर पीछै मुख भणै ॥
भरत लेण कहत है जोग । मैं किम सहस्यौ पुत्र विजोग ॥२१२०॥
अब जो भरत नै छो राज । तो अब रहै हमारी लाज ॥

दशरथ द्वारा विचार

राजा दशरथ करै विचार । कठिन वस्तु तै मागी नारि ॥२१२१॥
रामचन्द्र सुत महा पवित्र । लक्ष्मण भेरै महा विचित्र ॥
भरत राज पावै किण हाथ । हारघो वचन त्रिया कै हाथ ॥२१२२॥
रामचन्द्र जे पावै राज । भरत करै दिव्या का काज ॥
मरै कंकयी पुत्र विजोग । मोकूँ बुरा कहै सब लोग ॥२१२३॥
रामचन्द्र हरि लियो बुलाय । सब विरतात कहै समझाय ॥
कंकयी नै मैं कह्यो बर दीन । बल करि कियो राज सब लैन २१२४॥
जो मैं बाब कुबाब अब करू । पृथ्वी माहि अपजस सिर धरूँ ॥
भरत लेय जो दिव्या जाय । तो कंकयी मरै हलाहल जाय ॥२१२५॥
मोकूँ होइ घणी अपलोक । यो मुझ अधिक व्याप्यो लोक ॥
भरत राज देहु संसार । रामचन्द्र बोलै तिए वार ॥२१२६॥
मात पिता की धार्या सार । जाका वचण कुंण सके टार ॥
निज मंदिर चढ़ि देखै भरत । दीक्षा की मन इच्छा भरत ॥२१२७॥
कब सो पिता निकलै घर बार । ताके लेस्युं संजम भार ॥
बुलाया राय सभा के बीच । राय बचन ज्यौं अमृत सीख ॥२१२८॥

भरत को धर्मवत्त्व

अजोध्या का तुम भुगतो राज । अब हम करै धर्म का काज ॥
विणवै भरत सुणौ तुम तात । बडे राम लक्ष्मण हैं भात ॥२१२९॥
इन हजूर किम बैठो पाट । कस्या नै ताणौ मोसुं हाठ ॥
राज्य विभूत धरत भंडार । जाणौ लहु ससार असार ॥२१३०॥

पुत्र कालित्र सगा नहीं कोय । सपति तग्गा बिछोहा होय ॥
 देही आदि कोई साथ न चलै । अब मैं फिर माया मे मिलै ॥२१३१॥
 जो तुम दिक्षा समझी भली । मैं भी संयम ल्युं मन रली ॥
 हमने किम नाखो इह माहि । राज भोग की इच्छा नाहि ॥२१३२॥

राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव

रामचन्द्र लक्ष्मण टम कहै । हमारे चित्त अमी क्यू रहै ॥
 तुम बाल घर जोवन वेस । तुमकू दियो पिता सब देस ॥२१३३॥
 अजौध्या तगौ राज तुम करी । चउथै आश्रम दिक्षा घरी ॥
 दोइ कर जोडि भरत हम कहै । तुमारी आग्या मै सरदहै ॥२१३४॥
 तुम प्रभुजी करि हो बिस की सेव । मोकू कहि समझावो भेव ॥
 रामचन्द्र भरत सु इम कहै । हम बन बेहड विनर रहै ॥२१३५॥
 सेवा करि हैं कुगु की जाय । बन मे बँठि जपै जिरागइ ॥
 दशरथ के चरण को नये । बिदा मागि माता पै गये ॥२१३६॥

माता के पास जाना

राजा दमरथ भयचक्र भया । मुरछा खाड धरणि गिर गया ॥
 सब सेवग मिल थाम देह । पुत्र बिछोहो व्याप्यो नेह ॥२१३७॥
 माता सुगनै खाड पछाड । बडी बार तन भई सभार ॥
 माता कहै सुणु रघुनाथ । हम कू भी ले चालो माथ ॥२१३८॥
 भरत राज गिरधी का रही । तुम अपने घर बैठा रही ॥
 रामचन्द्र बोले सुग मात । रवि आगै शशि की नही क्रान्ति ॥२१३९॥

राम का उत्तर

हम आगै किम रहउ राज । वह पट बैठा हम कू लाज ॥
 हम दक्षिण दिस करि हैं गौन । बन बेहड निहा नाही भौन ॥२१४०॥
 तुमकू किस विध लेकर जाहि । गैला मे दुख कैसे साहि ॥
 जब हम कही लहै विश्राम । तब तुमसो मिलवे का काम ॥२१४१॥
 सीता साथ लही तिलवार । बज्रावत्त धनुष सभार ॥
 हम तुमकू कदा देख्या कपूत । भरत नै सौपी राज विमूत ॥२१४२॥

लक्ष्मण द्वारा कोष करना

पिता न समझा घरम की बाल । हम कू दीया देस निकाल ॥
 त्रिया चरित्र सू मूल्या राय । लक्ष्मण नी तब भौह चढाय ॥२१४३॥

घरती उठाऊं बक्राकार । भरत माहि बल कहा अपार ॥
नगर माहित देहु निकास । राज देहु रामचंद्राई इण बार ॥२१४४॥
बहुरिग्यान लक्ष्मण मन भयो । क्रोध लहर सब ही मिट गयो ॥
पिता आग्या किम टारी जाय । हमकूं भव भव करम बधाय ॥२१४५॥

राम बनवास

राम माहि मोतै बल अति । उणा न आणी अपनै चित्त ॥
तातै कहि हैं ए वरुण । पिता तणी आग्या नही हरी ॥२१४६॥
आनै राम अनै पाछै सिया । लक्ष्मण ताकै पाछै किया ॥
श्री जिन चैत्यालय जाय । विश्व सेती बंदे जिन राय ॥२१४७॥
सकल कुटुब नगर का लोग । पाछै लागि चले मन सोष ॥
राजा दशरथ भरथ सन्नुघन । सब रणवास भयो सब सून ॥२१४८॥
मोहनतै बिदा कर दिये । वे तीनू तबै बन मा गए ॥
रोवै स्वर्ग लोक के देव । सबै पृथ्वी अण पायो भेव ॥२१४९॥
लोग कहैं चलिस्या सम राम । बन खड मे कैसें बिसराम ॥
मूरज देख दुल का भाव । जाइ छिप्यो अस्ताचल ठाम ॥२१५०॥
पछी रुदन करै चड रुख । जलहर गए सकल जल सूख ॥
भई रयण जिए मंदिर जाड । नमस्कार करि बैठा ताड ॥२१५१॥
भरत सन्नुघन पायो राज । दसरथ गयो दिव्या कै काज ॥
राज बहुत भए बैराग्य । राज भोग सहू जन करि त्याग ॥२१५२॥

इति श्री पद्मपुराणे भरत राज, राम लक्ष्मण बनवास, दशरथ विज्ञा, विधानकं

२८ वां विधानक

श्रीपई

बनवास की पंचम रात्रि

रामचन्द्र लक्ष्मण अरु सिया । जिन मंदिर में आश्रम लिखा ॥
भई रयण सोया कछु बार । अरथ निस चाले वनुष संभार ॥२१५३॥
निकसे एक नगर के बीच । देखे मंदिर ऊंचे अरु नीच ॥
अपनी अपनी सेज्या ठोर । सोबै लोग न सुणिये सोर ॥२१५४॥
कामी यकै त्रिया गल लाग । केई सुरत करै हैं जाग ॥
कई त्रिया भदन विस गवा । कोकिला पंडित जन किया ॥२१५५॥

केई हारे पडे बेसुष । केई मूरख महा कुबुषि ॥
 केई कथा धरम की चलै । सुणै भेद घस्त्री सुख लहै ॥२१५६॥
 केई दुखी दलिद्री पडे । टूटी भूपडे कं नल गिरे ॥
 केई पडे माहि बाजार । केई पडे रहै पइमारिनी सार ॥२१५७॥
 चोर फिरै गर धन हरै । पाहरुवा का सबद सुण डरै ॥
 देखे सकल नगर के चित्त । दुखी सुखी देखे भिन्न भिन्न ॥२१५८॥
 पुह फाटी उग्यो जब भान । बहु सावंग अजोष्या ते भान ॥
 मारग घेर रहे वे आय । रामचंद्र जिह पडे जाय ॥२१५९॥

राजाप्रो का अनुगमन

छोडा रथ कौतिल कर लए । भूपति सकल पयावे भए ॥
 सखिया भू मनि घरते पाव । चल्या न जाय थके तिरा पाव ॥२१६०॥
 जोता निबहै पाछै घने । कालिंदी जमुना कूं हने ॥
 उछलै लहर मच्छ बहु चलै । गडगडाट सो जल न हलै ॥२१६१॥
 लबै सहू राजा बिनती करै । प्रभु हम कैसे पार उतरै ॥
 तुम तो प्रभुजी उतरौ पार । हम कैसे पहुंचै निरधार ॥२१६२॥

सबको वापिस आने को कहना

रामचन्द्र बोलै सुणु लोग । तुम स्या मारै सहू विजोग ॥
 हम नापन वन वेहड वाम । करिहौ कहा हमारे पास ॥२१६३॥
 तुम फिर जाउ घर आपणै । दिन पलटपा मिलिबो आपणै ॥
 रामचंद्र सीता गहि बाह । पैगि गया तिहां तटनी थाहि ॥२१६४॥
 बैठा एक रूख तलि जाय । वारि लडा भूपति बिललाइ ॥
 देखो प्रभुम करम का भाव । प्रैसा क्या दुख व्याप्या आय ॥२१६५॥
 अवर मनुष्य की कीजे कहा । राम सगीखा इह दुख लहा ॥
 हम फिर जाहि करै बहा गेह । करि हा चिदानंद सो नेह ॥२१६६॥
 सब मिल प्रैसी चितबै चित । इनु जिन भवन करी जाइ धिति ॥
 श्री जिन मंदिर उज्जल वरण । वृक्ष असोग दुख के हरण ॥२१६७॥
 पूजा करी जिनेस्वर भगत । ऊचै चडि देख्या सब जगत ॥
 ठाम ठाम देख्या देहुरे । रतन सभव मुनि तिहा तप करै ॥२१६८॥
 देह प्रदिक्षणा पूछै धर्म । जती सरावण का सब धर्म ॥
 पार उतरि आयै मब राय । सुण्यो धर्म तहा चित लगाय ॥२१६९॥

बहुत भूपति यां दिशा लई । धरम भेद सुनि निश्चय यई ॥
 बहुतेँ श्रावक का व्रत लिया । दया धरम मांही चित्त दिया ॥२१७०॥
 घराँ फिर गया अत्रोध्यापुरी । भरत सूँ मिले वीनती करी ॥
 कही बात सगली समझाय । रुदन करै सुख दुख अधिकाय ॥२१७१॥

दसरथ द्वारा रुदन एवं वीराग्य

दसरथ करै करम व्यवहार । पुत्र वियोग भयो दुख अपार ॥
 कबला करम मैं खोटा किया । पुत्रा हैं देम निकाला दिया ॥२१७२॥
 बहुति समझिया मन मे ग्यान । अंसा मोह मे भया अयान ॥
 कुण कुण भवका चितवो पुत्त । केई पुत्र कलित्र सजुत्त ॥२१७३॥
 स्वरगा का सुख के के बार । देवलोक की भुगती नाहि ।
 चिहूँ गति का दुख सुख घरौ । देह जीव सों प्रीत न बरौँ ॥२१७४॥
 पुद्गल अणुत धरै सब जौण । जीव सघाती कहिए कौण ॥
 पाच चोर हैं काया बीच । विष भय करै करम नित नीच ॥२१७५॥
 विषय अभिलाष तै बाढ़े दुख । विसहर डमते जैसा सुख ॥
 पाछै हुवै प्राण का नास । अही समान इन्दी सुख जास ॥२१७६॥
 मोह जेल बधियो संसार । भूरख मगन हुवै निरधार ॥
 स्वारथ रूपी है जग सार । धरम एक जिय को आधार ॥२१७७॥
 बारह अनुप्रेसा हुवै चित्त । आतम ध्यान विचारै नित ॥
 दसरथ मुनि अंसा तप करै । चिदानंद लिव चित्त मैं धरै ॥२१७८॥
 अपराजिता रोवै दिन रात । कैकई सोग करै बहु भाति ॥
 भरत करै माता का मोच । कहै चल देखु माता मन सोच ॥२१७९॥

भरत का राम के पास जाना

उनकू आनि बिठाऊ राज । उन आमी मैं साधूँ काज ॥
 भरत सत्रुघ्न अस्व पलाण । बहुत संग लीया राजान ॥२१८०॥
 पहुँचे कालिंदी पर जाय । गये पार बैठा तट ठाय ॥
 ह्वां तै मारग पूछत चले । छठे दिवस राम कूँ मिले ॥२१८१॥
 उनर दूर थी करै डडोत । विनती तिनसी करै बहुत ॥
 रोवै सत्रुघ्न भरत और । रामचंद्र बीनै तिण ठौर ॥२१८२॥
 भरत वीनवै इं कर जोडि । तुम प्रभू हो त्रिभुवन सिर मौर ॥
 गैवर बोझ चर्ल किम बहल । हमसूँ राज चर्ल नही छयल ॥२१८३॥

तुम राजिन लक्ष्मण परधान । तुम प्रभु हम छत्र उठावन वान ॥
सत्रुघन ढारैगा चमर । तुम पर बैठि बाघं कमर ॥२१८४॥

कैकयी का प्रागमन

पाछें आई कैकई माई । राम लखग उठि लागे पाय ॥
रुदन करै समभावे बात । तुम बिन दुख पावा दिन रात ॥२१८५॥
अजोध्या चालि राज तुम करौ । मेरी चूक न जित मैं धरौ ॥
लघु भारी सेबंगा चरण । तुम त्रिभुवन के तारण तरण ॥२१८६॥
रामचंद्र बोले सुग मान । हमकुं वनवास दिया है तात ॥
विता आग्या किम कीने भग । हम तपसी भेष हैं सुख अग ॥२१८७॥
भरत सत्रुघ्न हम दीया राज निरभय सारी बखित काज ॥
तुम सब बिदा अजोध्या किया । आपण उठि वन मारग लिया ॥२१८८॥
विद्युत मुनी अजोध्या बास । भरत सुनै जिन मत का पास ॥
अरहनाथ के मंदिर जाइ । तिहू काल जिन पूज रचाइ ॥२१८९॥
धरम मार्ग का कीजे काज । प्रजा सुखी अरथ के राज ॥

राम का उज्जयिनी जाना

मालव देस उज्जयिनी नगर । वन उपवन की देखत सैर ॥२१९०॥
गाय रु मैस चरै तिहा धणी । खेती हरियल सोभा बणी ॥
मनुष्य न दीसै किएही ठौर । नगर सोमै रमणीक सु घोर ॥२१९१॥
लक्ष्मण राम अचभा करै । इहा का लोक कहा है पुरै ॥
देखो पवन ऊपर जाय । सकल बात भाषो तुम प्राय ॥२१९२॥
लक्ष्मण जाय परवन चढ़या । देख देहुरो अत सुख बढया ॥
नमस्कार करि तरु परि चढयो । मनुष्य एक तहा दृष्टि पडयो ॥२१९३॥
ताहि देख मन सोचै माहि । ताको भेद न पाऊ जाहि ॥
कै इह मनुष्य कै उभौ ठूँठ । कैसे बिन समझ्या कहू भूँठ ॥२१९४॥
इह कू देखू अपने नयन । तब मे कहू राम सौ बयन ॥
उतर खूब सौ वाढिग चल्या । पैडा माहि वह आवत मित्या ॥२१९५॥
लूणी देह कूबडो वेह । फाटे बसतर लागै छेह ॥
नगे पाव दुषित अति रूप । ताहि साथ ले आए भूप ॥२१९६॥
रामचंद्र सीता ढिग आणि । बटोही नै जाण्यो देव समानि ॥
कहै यह इन्द्र अथवा धरणेन्द्र । कै विद्याधर सूरज चन्द्र ॥२१९७॥

रामचन्द्र ता करुणा करो । तू कहा चाख्यो किए नमरी ॥

सिधोदर मिलन

देस मालवो नगर उज्जैन । करै राज सिधोदर सैन ॥२१६८॥

दमापुर नगर घकी हूँ चल्थो । बख्खकिरण समदृष्टी भली ॥

रामचन्द्र पूछै फिर बात । उण समकित पायो किए भांति ॥२१६९॥

पथी भएँ राय विरतात । दशारण बन भहैडे जात ॥

इह बन छोडि किए कारण गया । प्रीतदरसन मुनि दरसन भया ॥२२००॥

ग्रीष्म रितु पर्वत बहु तपै । ध्यानारुह तहां भगवन जपै ॥

राजा मुनि नै पूछै आइ । काया कष्ट सहो किए आइ ॥२२०१॥

मनुष जनम कै लाहा लेह । तप करि वाद जलावै देहि ॥

आत्मा कु कही दीजे दुख । पञ्चइंद्री का मुगतो सुख ॥२२०२॥

भोजन कारण घर घर फिरो । निरस सगस ग्रहारह करो ॥

आतम दुख करो तुम बुरा । मनुष्य जनम दुर्लभ है खरा ॥२२०३॥

बोले मुनिवर भूपति सुणौ । मैं निज सुख कहां लग भणुं ॥

राजा हंस करि पूछै बात । तपै सिला दुख पावै गात ॥२२०४॥

उडै घूल दुख सहै सरीर । मूख पियास परीसा पीड ॥

मुनिवर भएँ सुणुं भूपाल । इन्द्री विषय दुख का जाल ॥२२०५॥

सात नरक मुगतै इण साज । विषय सेव्या बिगरै सहु काज ॥

जे जीव विषय इन्द्री की करै । मान तजत कछु बार न धरै ॥२२०६॥

कारण मोह विषै है जीव । भ्रमै ससार दुख की नीव ॥

राजा सुणि चरण कुं नया । पाप प्राक्रम सगला मिट गया ॥२२०७॥

जती सगवग का सुणि धर्म । अणौघत लीया सुभकर्म ॥

मुनि पै नेम लेई तिण बार । अरिहंत बिन न कहुं नमस्कार ॥२२०८॥

गुरु निर्ग्रन्थ अरु शास्त्र जैन । इनकू सेऊ कर मन चैन ॥

राजा आये अपने गेह । दया घरम सु लाया नेह ॥२२०९॥

विषय बिना रहै नहीं घडी । श्री जिनवाणी हिरदै धरी ॥

प्रीतिवरधन मुनि मास उपास । निश्चिन्ता धरि भोजन की आस ॥२२१०॥

बख्खकरण द्वारा पेषण किया । मुनिवर कूँ तब भोजन दिया ॥

बरखे रतन पुष्प तिण बार । मुनिवर जब लीयो आहार ॥२२११॥

राजा पासि रह्या उहै आइ । नमस्कार करै किए प्राय ॥

मुनिमुक्त की प्रतिमा घडाइ । मुंदडी में थे बा लगाई ॥२२१२॥

नमस्कार प्रतिमा कूँ करै । तुमारी कारण न मनमें धरै ॥
 लोक नैं कछु समझत पडै । रघर बिन राजा सो कहै ॥२२१३॥
 सिंहोदर मन कोप्या राइ । राते नयन ओष के भाय ॥
 बृहद गति बज्र किरण पै जाइ । सगली बात कही समझाइ ॥२२१४॥
 सिंहोदर कोप्या है घणा । नाका जीव कूँ चाहै हृष्या ॥
 जे तुम भाग जाइ किए ठाम । तब तुम बचो तजो यह गाम ॥२२१५॥
 पूछै तैं जाणी किए भाति । मांसूँ कहि समझावो बात ॥
 कुंदनपुर नगरी का नाम । समुद्र मिस बणिक तिण ठाम ॥२२१६॥
 जमना नाम जाकैं अस्तरी । दोइ पुत्र जनम्या सुभ घडी ॥
 विधुत ज्वाल प्रथम मुत्त भया । बृहतवत दूजा कूँ थया ॥२२१७॥
 मोकूँ पिना द्रव्य बहु दिया । विराज हैत उज्जेली गया ॥
 कमला लता गरिका कूँ देख । मन अटक्यो ता रूप बिसेष ॥२२१८॥
 अरथ खोयो सब दलिद्री भया । अति समझ चोरी चिन दिया ॥
 सिंहोदर मंदिर गरिका गई । श्रीधरी रागी को देखन आई ॥२२१९॥
 कुंडल देखि चितवैं तिए बार । अपसो कुंडल धरे उतार ॥
 मखी सु बोली बेम्या अस्त्री । मोकूँ कुंडल लायें बुनी ॥२२२०॥
 जेमे कुंडल है रागी कान । छेमे मोकूँ दीजे छान ॥
 मैं सुए नृप मंदिर मे गया । सिंहोदर सूँ पूछै जिया ॥२२२१॥
 किए कारण तुम दुचिते घरो । चिता कवन तुम्हारे मने ॥
 वज्रकिरण मन दुविधा धरै । मेरी काम नवैं नही करै ॥२२२२॥
 प्रतिमा नैं वह करै नमस्कार । मान भग करै सभा मभारि ॥
 मेरा अन्न खावैं वह राय । मोमुं ऐसा करै दुराव ॥२२२३॥
 बाकू भाकू तो सुख लहू । इह मतो मैं तो सूँ कहू ॥
 ऊचै चढ़ि देखियो नरेम । घेर्या उमनै तुम्हारा देस ॥२२२४॥
 वज्रकिरण तब गढ मैं गया । कागुरैं कागुरैं बेंठा सुरया ॥
 पोलि किवाड मजबूत दिवाय । जुध निमित्त रूप बेंठा राइ ॥२२२५॥
 रंघरबिसुत सिंहोदर का दून । बज्र किरण पै छाव पहुत ॥
 कहै क तू प्रतिमा कूँ नवैं । जनी पासि सुणि क्यूँ निजदवैं ॥२२२६॥
 जनहै मुहावैं अंगी रीत । नबकु चाहे किया अतीत ॥
 तू काहे कूँ खोवैं जीव । राजा शतं न बावो ग्रीव ॥२२२७॥

बोले बज्रकिरण भूपति । राजरिष छोड़ूं सब भती ॥
 धरम द्वार हमनें तुम देहु । दंपति जाया निकाला सेहु ॥२२२८॥
 मैं तिस्च छोड़ूँ नाहि । राज भोग की इच्छा नाहि ॥
 दूत घर आया नृप पास । बाकु एक निरजन पास ॥२२२९॥
 धरम द्वार की इच्छा ताहि । राज भोग की इच्छा नाहि ॥
 सिहोदर फिरिया भूपति । सेना पड़ी सब घेरै घरती ॥२२३०॥
 आस पास सब दिया उजाड़ि । तबतै आजे हैं सब छाड़ि ॥
 सुरगीत मते मम आइया । इसकी खबर मैं अभी पाइया ॥२२३१॥
 लागी अगनि जली भुं पड़ी । बनी टूट अग परि पड़ी ॥
 हेम साकली रत्न सो जड़ी । रामचंद्र दीनी तिण घड़ी ॥२२३२॥
 पद्देसी पढ़ंतो निज ठाम । भया सुखी जगत मे नाम ॥
 उहा तैं चले असन निमत्त । दशागपुर चँत्यालै करी बिति ॥२२३३॥
 चन्द्रप्रभ की पूजा की । लक्ष्मण सुं बोले तिस घड़ी ॥
 नम्र माहि सुं सीधा लाव । बिन सेती ज्युं भोजन खाय ॥२२३४॥

लक्ष्मण की बज्रकिरण से भेंट

सीता त्रिषावती है घणी । दशागपुर तिहा गढ अति बली ॥
 चहुषा घेर रहै मामत । लक्ष्मण ने जाना बरजत ॥२२३५॥
 धका धूम करि भीतर गया । गढ की पोलि खडा जिम भया ॥
 बज्र किवाड अटल तिहा दग्ये । सूर सुभट रखवाले घण्ये ॥२२३६॥
 लक्ष्मण सूं पूछ्ये तू कुण्ये । किहा तैं किया तुमनें गौण्ये ॥
 बहेक हम परदेसी आय्ये । अन्न हेत हम गढ में जात ॥२२३७॥
 पोले दीनी लिडकी खोलि । बज्रकिरण आदर सो बोलि ॥
 तुम किहा तैं आवाण किया । लक्ष्मण को आदर अति दिया ॥२२३८॥
 बोले लक्ष्मण सुनौ नरेस । अन्न इच्छा आये तुम देस ॥
 पचाभृत सूं थाल भराइ । लक्ष्मण आये बरा मंगाय ॥२२३९॥
 तब बोले लक्ष्मण कुमार । भाई भावज हैं जिए द्वार ॥
 उन जीम्या बिन मैं किम लाउ । कहो तो तिस पास ले जाउ ॥२२४०॥
 भोजन अन्न दियो भरि थाल । लक्ष्मण नैं बूझै भूपाल ॥
 लक्ष्मण ले आये जिए धाम । जिहां बैठा श्री सीताराम ॥२२४१॥
 अंसी आणी उत्तम वस्तु । राम कहैं लक्ष्मण नैं हस्त ॥
 फासु जीम्या आण्यो भला । बहुत मुनन ता माहि मिल्या ॥२२४२॥

करि प्रहार मन रहसे घरो । बञ्जकिरण की भस्तुति भरो ॥
 धन्य यह सम्यक दृष्टि भूप । घंसा भोजन दिया भनूप ॥२२४३॥
 सिहोदर वाकूँ देहै दुख । किस विध होवै या कूँ सुख ॥
 हम तो लाया इसका धान । या का कारज करै प्रमान ॥२२४४॥

लक्ष्मण का सिहोदर के पास जाना

लक्ष्मण भेज्या सिहोदर पास । पुष्य जीव का किम करै नाम ॥
 बज्जवर्त्त धनुष ले हाथ । तरकस बांधि खडग ले साथ ॥२२४५॥
 राय द्वार तै उभा भया । पौलिय घटक्या जाण न दीया ॥
 कहै किमई हू भरत का दूत । कही सिहोदर स्यौँ इह सून ॥२२४६॥
 राजा नै तब लिया बोलाइ । भरथ संदेसा कल्या समझाइ ॥
 बज्जलोचन कहा किरी बिगाड । तै उसका दिया देस उजाड ॥२२४७॥

वह तो सेवै श्री जिनराज । तै वाकूँ भयवता आज ॥
 वा को बेधि छोडि तू देई । इह अपलोक मती तू लेह ॥२२४८॥
 बोले राजा सुणि हो दूत । घंसा कहा भर्त रजदूत ॥
 आपणै देस मनावो आण । ता पाछै हू राखस्यौँ काण ॥२२४९॥
 बज्जलोचन लावै मुझ धान । बहुरि मग करै मम मान ॥
 वाकूँ भला लगाऊँ हाथ । घंसी करै न काहू साथ ॥२२५०॥
 जो याकूँ मै भब बू छोडि । तो बिगडै और ड या होड ॥
 बोले लक्ष्मण सुणु नरेम । या कूँ छोडि मानि उपदेस ॥२२५१॥
 राजा कहै सुण रे तू मूढ । वा मंग तू का हुवै आकूढ ॥
 जैसा हुवै उमका मूल । घंसा तेग ह्वै है मूल ॥२२५२॥

लक्ष्मण और सिहोदर के मध्य झगडा

लक्ष्मण कहै आया तुझ मरण । मानै नहीं भरथ की मरण ॥
 कोप्यो भूप आदि सब मभा । क्रोध सकल ही के मन पुवा ॥२२५३॥
 कैई गदा गही तरवार । सगला घावघ लिये सभार ॥
 लक्ष्मण कहै डील क्यो कगी । तुम मे बल है तो वेगा लड़ी ॥२२५४॥
 ध्याय पडे सब ही सामत । लक्ष्मण करै प्राण का अत ॥
 जाहि गहै ता पटकै मूमि । मारै मुंठी लाता घुंस ॥२२५५॥
 मारि थपेड करै संहार । सगली सेन्या दीनी मार ॥
 राजा देखि अचभा करै । एक पुरुष घंसा बल धरै ॥२२५६॥

राजा धाड़ पड़धा तिए बार । जोसै सज्ज मार ही मार ॥
 कोई निकट घाई नहीं सकै । जा पकड़ै ता मारै बर्क ॥२२५७॥
 तोड़धा रथ भर छत्र नीसांण । बज्जकरण वैसै राजान ॥
 इह तो कोई हितू हमार । सब दुर्जन कीने सहार ॥२२५८॥
 सिंहोदर के घाए सुभट्ट । गदा जडग से किया सघट्ट ॥
 गोला सर वरषै ज्यो मेह । पु निवत कं लगै न देह ॥२२५९॥
 बज्जावर्त्त लक्ष्मण संभार । सगला दिया मारि कर छार ॥
 मारै लखन विजली सी घात । दाएण जुघ भया बहु भाति ॥२२६०॥
 देखै लोग अचमै होइ । इन्द्र कहै बरणेन्द्र है कोई ॥
 कं विद्याधर कं इह देव । सिंहोदर सोचै मन एव ॥२२६१॥

सिंहोदर को लक्ष्मण द्वारा बांधना

लक्ष्मण तबै दुपट्टारोड । सिंहोदर नें बाध्या दोड ॥
 मारै लात धमुं के घरे । राध्या उसकी विनती भरे ॥२२६२॥
 मोहि भीख दीजिये भरतार । तू दूजा भेरै करतार ॥
 लक्ष्मण कहै रघु पासि ले जाहु । जे बे करै ब्या का भाव ॥२२६३॥
 तो मै छोडु या कौ न्याइ । ल्याये रामचन्द्र की ठाइ ॥
 चंद्रप्रभु की पूजा करी । रामतणी अस्तुति चित धरी ॥२२६४॥
 बज्जकरण सेती रघु कहै । मागि वेग जो इच्छा बहै ॥
 बज्जकरण कहै मागू एह । सिंहोदर ने छोडि तू देइ ॥२२६५॥

राज्य का बटवारा

धन्य धन्य भाषै सब लोग । अग्रयदान का दीया जोग ॥
 सिंहोदर कु दसागपुर दिया । उजेणी का राज बज्जकरण किया ॥२२६६॥
 बहुत राय दरसन कूं आय । तीनसै कन्या भेट क्यौं ल्याइ ॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण कहै बात । हम परदेसी फिर अमात ॥२२६७॥
 वन मे फिरै तहा घर नाहि । कैसे इनस्यौं करै विवाह ॥
 बारह बरस फिरा बहु देस । ता पाछै सबक्रिये नरेस ॥२२६८॥
 राजा सकल विनती करै । अब ए कन्या किए ने वरै ॥
 तुमको आणी ए बरि भाव । कैसे दीजे औरै ठाव ॥२२६९॥
 कन्या सकल रही सुरभाय । जैसे फूलमाल कुम्हनाइ ॥
 रामचन्द्र जिए यानक गए । आधी रात विदेसी भए ॥२२७०॥

मनमे कछु नही अहमेव । सुमरत चले जिनसुर देव ॥२२७१॥

बूहा

जिनवाणी निश्चै घरै, दया करै पट्काय ॥

दुरजन सकल चरणा नमै, श्री जिन धरम सहाय ॥२२७२॥

पर उपगारी राम हरि, परदुख भजन हार ॥

पर कारज सारण निमित्त, प्रगटघो जस ससार ॥२२७३॥

इति श्री पद्मपुराणे बज्रकरण सिंहोदर विधानक

२६ बाँ विधानक

चौपई

लक्ष्मण और विद्याधर मिलन

रामचंद्र सीता तिसाया भया । नीर लेण कु लक्ष्मण गया ॥

तहा सरोवर निरमल नीर । छाया सगम विहगम तीर ॥२२७४॥

नेत्र तसकर विद्याधर भूप । विजयाद्ध पति गणी अनूप ॥

क्रीडा देखन आयो तिहा । वन लीला सब निरखी जिहा ॥२२७५॥

देख्यो लक्ष्मण पैले पार । रूप क्रांति कर दिपे अपार ॥

बहुन लोक भेजे ता पास । मनमे उपज्या अधिक हुलाम ॥२२७६॥

सेवग आइ करै नमस्कार । करै बीनती बारबार ॥

चलो प्रभु बुलावै तुम राय । तुम दरसन देख्या को चाव ॥२२७७॥

लक्ष्मण विद्याधर ढिग गयो । नेत्रतसकर अति आदर दियो ॥

लक्ष्मण उठि बीनती करै । बैसाण्या सिंघासन परै ॥२२७८॥

पूछै आए तुम किए काज । कबर वस्तु बाछो तुम आज ॥

लक्ष्मण बोले सुणौ नरेस । आहार निमित्त आए इण देस ॥२२७९॥

रामचंद्र सीता जिए थान । मैं पटुच्या पाणी कुं आन ॥

नेत्रतसकर धोलिया निह बार । सलोदन तेडिया रसोईदार ॥२२८०॥

व्यजन भले मवारे भोग । हीरे पीले बहुत पयोग ॥

अवर पकवान संवारे घणै । उलम घी मीठा मे बणै ॥२२८१॥

राम बुलाये तिहां नरिंद । सीता सहित अधिक आनंद ॥

नेत्र तसकर चरणन कू नया । बहुत प्रकार महोत्सव किया ॥२२८२॥

सिंघासण ऊँचे बैठाये । करै भारती सेवै पाय ॥
 रतन जडित सोने के चौक । करै उबटण मूले सोक ॥२२८३॥
 करि सनान फिर भोजन खाइ । विदा होइ आगे कूँ जाइ ॥
 वनमे देखी सुभट मडली । मारग की रोकी तिहा गली ॥२२८४॥
 ए धसि करि तिह आगे गये । कचुकी देखि अचमै भए ॥
 देखी कन्या बहुत स्वरूप । वा समान कोई नहीं चुप ॥२२८५॥
 मामुद्रिक की सोभावणी । अन्य कहा लग बरणी गुणी ॥

लक्ष्मण द्वारा प्रश्न

लक्ष्मण तिम कूँ पूछे बात । बालवित्य नृप मेरो तात ॥२२८६॥
 पृथ्वीदेवी कूँ लि ह भई । कुबड नग महा सुख मई ॥
 धर्म राज मैं बीतं घडी । दुरजन दुष्ट सेती धरहरी ॥२२८७॥
 राजा मलेच्छ है रुद्रभूत । चढ़ि आए सेना सयुक्त ॥
 पिना मेरे मे किया जुध । बांधि ले गया करि बल बुध ॥२२८८॥
 पृथ्वी देशी कारण कंत । निसदिन रुदन करै बहुमत ॥
 बसुधा मंत्री निमती बुझिया । कहि हौंणहार सूजिया ॥२२८९॥
 राणी जब बालक नै जणै । सो तो सब दुर्जन कूँ हणै ॥
 बहुरि राज नगरी को करै । दुरजन तिम के पावा पडै ॥२२९०॥
 कल्याण माला हू पुत्री जणी । निमित्त जानी नै प्रैसी भणी ॥
 कन्या एक पुरुष के भेम । वनमे रहै नित्य विसेश ॥२२९१॥
 दोई पुरुष को दग्गण लहै । ताहि देख दुख कोई न रहै ॥
 मिहोदग्ग नृप को मैं दई । या कारण मैं वनमे रही ॥२२९२॥
 मन्या मो पडी घेर चिहू पास । कुचुकी निकट मोहि इह आस ॥
 मैं तुम दग्गन पायो आज । हूवा मनबांछित मम काज ॥२२९३॥
 एक अचभा मो मन घणा । जो मैं पुत्र होता गुण गणा ॥
 तो नगरी का होता साज । पुत्री कैसे पावै राज ॥२२९४॥
 रामचन्द्र इह आग्या दई । याही भेष रहो तुम यई ॥
 तीन दिवस रहिगौ वन माहि । आधीरात छोड़ि तिहा जाइ ॥२२९५॥
 कन्या जागि कहै बिललाइ । मे सोय गई वे उठ गये आय ॥
 मेकला नदी उत्तर वन गए । करकारण वन देखत भए ॥२२९६॥
 वामैं वृक्ष बेर के काग । देख्यण पेठ नारियल लाग ॥
 नीता सबै विचारपा सौन । हूँसी जुध दो घडी मैं पौन ॥२२९७॥

अत जीत कं हूं भी मली । रामचन्द्र तब चाले टली ॥
असुभ सोए की छोडि बचाइ । वन ही वन निकसे रघुराइ ॥२२६८॥

रुद्रभूत राजा से युद्ध

रुद्रभूत राजा तिए ठाम । सेना घणी क्रोध कं काम ॥
रामचन्द्र सै माडचा जुध । हारी सेन्या भई असुध ॥२२६९॥
रुद्रभूत पग ल्याग्या आइ । रामचन्द्र का दरसण पाइ ॥
रामचन्द्र पूछै बिरतात । उन भाषी पिछली सब बात ॥२३००॥
कौसबी नगरी का नाम । अहित अगन विप्र तिए ठाम ॥
प्रतिसरजा तार्क नारि । रुद्रभूत पुत्र मई अवतार ॥२३०१॥
सात विसण का सेवणहार । तसकराइ करत घेरघा कोटवाल ॥
विस्वानल राय पास ले गया । नृप तब उस पर कोपिया ॥२३०२॥
कंहक इसकूं सूली देइ । किंकर उस गह्या बहुत दुख देइ ॥
सेठ एक नृप आगै जाइ । विप्र जाणि कं दिया छुडाइ ॥२३०३॥
उहा तै मे आइया इह देस । काकोनद मलेछ पै भया नरेस ॥

बालविल्य को मुक्त करना

रामचन्द्र डम आग्या दई । बालविल्य नै छाडो सही ॥२३०४॥
मलेच्छराय ने दीया छोड । सेवा करी दाय कर जोड ॥
सभा सहित कुबडपुर आइ । करी बघाइ बालविल राइ ॥२३०५॥
सिंहोदर बज्रकिरण भी मिले । रुद्रदत्त बिदा कर चले ॥
इनका दुख कीया सब दूर । बालविल सुख लह्या भरपूर ॥२३०६॥

दूहा

रामचन्द्र अति ही बली, लक्ष्मण भी बलवत ॥
परकाज के कारण, करै उपाव अनन्त ॥२३०७॥

इति श्री पद्मपुराणे बालविल्य विमोचन विधानक

३० वा विधानक

अडिल्ल

वन भ्रमण

रामचन्द्र लक्ष्मण कुमारै साथै सिया ।
आधीरातनि षड गमण तहा तै किया ॥
त्रिदस वन सुप्रसन्न नदी परवाहनी ।
तरवर अशोक सघन वन शोभा बनी ॥२३०८॥

चौपई

सीता की व्यास बुझाना

पंथीयातएँ सुहावै बोल । छाया सीतल बेल तंबोल ॥
 उत्तरमस्तोही बन गए । महाभयानक देखत गए ॥२३०६॥
 सीताने लागी तिस धरणी । पड़े धूप बहुत अरामणी ॥
 कइ नकट न देखीए नीर । लागी त्रिषा अनंत अघीर ॥२३१०॥
 ऊचे चढ़ि देख्यो कोई ठाम । उहाँ तै देख्यो धरन इक गाम ॥
 कपिल बिप्र बसै तिस ठोर । अगनिहोत्री अरु ठाढी पोल ॥२३११॥
 यहां ते गए ब्राह्मण घर एह । करुणावत धरम की देह ॥
 देख प्रदेसी दया ऊपजी । सीतल नीर झारी भरि लई ॥२३१२॥
 पाणी पीय लिया विश्राम । कपिल ब्राह्मण आयो ताम ॥
 बड़ी पोट कांथा परि लिया । लकड़ी का बोझा सिर किया ॥२३१३॥
 अगोछा मस्तक परि लपेट । मँली धोती बांधी देह ॥
 बाध जनेऊ तिलक लगाट । जाणै होम क्रिया इह बाद ॥२३१४॥

विप्र द्वारा क्रोध करना

देह कूबड़ी चपटी नाक । अति क्रूरप रही तसु आल ॥
 देखि विदेसी घर के पास । क्रोध बचन मुख बोल्या तास ॥२३१५॥
 सीत चढाइ मुखस्यो बोलै बरडाई । कुबचन कही त्रिया ने जाई ॥
 देसी ब्यू बँटण दीये । लाज नहीं कछु इनके हिये ॥२३१६॥
 पौन पौन फड़ता फिरई पड़े । असे इनको जक नहीं पड़े ॥
 ए उठि चलेइ देखै सब लोग । बहुत भीड़ दरसन के जोग ॥२३१७॥
 कपिल विप्र लोगा सौ कहै । ए निलज्ज ऐसे ही रहै ॥
 कहा इनका दरसन तुम करी । मूढ लोग तब बोले बुरो ॥२३१८॥
 लक्ष्मण कोपि कपिल द्विज गह्या । फिर फिराय पटकन कूँ चहा ॥
 रामचंद चित करुणा आई । कपिल विप्र कूँ दिया छुडाइ ॥२३१९॥

दया के पात्र

हरि नै समझावै रघुनाथ । इस पर कहा उठावो हाथ ॥
 जती सन्यासी विप्र अतीव । बाल बृद्ध नारी पसु जीव ॥२३२०॥
 पसु अपाहज मत मारो भूल । इनकी हत्या है अघ भूल ॥
 आपते सबल ता ऊपर चोट । परजा जीव दया की ओट ॥२३२१॥
 लक्ष्मण दया चित मे धरी । अन्य साथ जे रहै वन पुरी ॥
 पापी किहपण जे अग्यांन । उनको कही न पाणुं धान ॥२३२२॥

बस्ती में जाने का त्याग

अब हम चलि बनवासा लेइ । बसती मे फिर पाव न देह ॥
 वनफल बीग करै आहार । किम किस की सुणि मांडै राडि ॥२३२३॥
 बसती तजि आये बनवास । अघकार निमवासर सास ॥
 वरखा रितु घग्गहर् बहु ओर । काली घट सोमं चिहु ओर ॥२३२४॥
 रवि की किरण छाइ घर लई । सबै पृथ्वी अधियारी भई ॥
 वरखें मेह भूसलाधार । चमकैं दामिन चारू वार ॥२३२५॥
 लक्ष्मण राम दुचिते घरें । छाया बिणा रहबो किम यणें ॥
 दृष्टि पसार देखि चिहूपास । मंदिर देखे चित्त उल्लास ॥२३२६॥

राम लक्ष्मण का मान्दर मे विधाम करना

मंदिर मे बैठा तब जाई । कपडे निचोड करि दिये सुवाद ॥
 भई रयग पोढे तिण ठाम । इतरकरण देव का नाम ॥२३२७॥
 इणें देखि तनक्षण भजि गया । बिनाषुक प्रतै संदेसा दिया ॥
 दोइ विदेसी अस्त्री एक । मेरे थान रह्या कर टेक ॥२३२८॥

देव द्वारा नायामयी नगरी की रचना

देवता बोन्यो अवधि विचार । ए बलिभद्र नागयग अवतार ॥
 ए आये है मेरे देम । सेव करू न सेवग भेम ॥२३२९॥
 नगर मवारया मंदिर भला । रत्न खचित सुवर्ग निरमला ॥
 बाही जागई सेज्या सवार । गिलम चद्रवा बादरवाल ॥२३३०॥
 देव पुनीत आभूषण घणें । पागी अन्न सौंज नव बणें ॥
 हाथी घोडा रथ पालवी । बसती बनी नई राम की ॥२३३१॥
 लक्ष्मण राम उठे परभात । सीता जागी बीनी रात ॥
 गधवं जात के गावैं देव । बहुत प्रकार कगी सुर सेव ॥२३३२॥
 राम लक्ष्मण तब करै बिचार । या वन में तों थी ऊजाइ ॥
 किम प्रकार ए भई विभूति । तब यह वनसुर आय पहुत ॥२३३३॥
 करि डडोत बीनती करैं । वमो राज हम सेवा करैं ॥
 बंदि भरोसे भुगतो सुख । नगर देख भूले सब दुख ॥२३३४॥

कपिल ब्राह्मण की चिंता

कपिल बिप्र सिर लकडी भार । बन तें काठि आए तिण बार ॥
 निबा माहि देखैं है नगरी । कंचन मंदिर रतन सूँ जडी ॥२३३५॥

तब द्विज मनमें अचरज धरें । इहा तो थे वन बेहड़ घने ॥
 किण प्रकार इहा हुवा नगर । राति बी चालै बणीयो सगल ॥२३३६॥
 कै इह सुपने हैं परतक्ष । कै ममता माया है को जख ॥
 ऐसे सोच करै या खडा । मिल पणिहारी भरि सिर घडा ॥२३३७॥
 पूछै ताहि इह नगरी कीण । कहै पणिहारी रामपुर भौन ॥
 इह तो बसी धरम की पुरी । देव सगति इह माया करी ॥२३३८॥
 पीलीदार रखवाले घरें । पापी दुष्ट नै परहा करैं ॥
 धरमी हुवै सो दरसण लहै । देखी माणस दूरै रहै ॥२३३९॥
 पूछै विप्र मैं किण विध जाऊ । पणिहारी कहै ले श्री जिण नामु ॥
 मुणि पै सुण्या धरम का भेद । तातै हुआ पाप का विछेद ॥२३४०॥

धर्मोपदेश सुनना

चरित्र सुर मुनि पासै जाइ । नमसकार करि लाव्या पाइ ॥
 मुणि जिणधरम अणुव्रत लिया । धर्म लेस्या मांहि चित दिया ॥२३४१॥
 राम लखण का दरसन पाइ । कपिल विप्र ने लिया बुलाइ ॥
 बहुत विभव विप्र कुं दई । मनमें कछुवन आणी नही ॥२३४२॥

बूहा

जैन धरम पालै सदा, दया करै बहु भाय ॥
 नवनिधि पावै जगत में, बहुरि मुक्ति में जाय ॥२३४३॥

इति श्री पञ्चपुराणे कपिल जैनधर्म व्याख्यान अध्याय विधानकं

३१ वां विधानक

चौपड़

चातुर्मास के पश्चात् गमन

मुख में इहां बीती चउमास । बहुरि फिर निकले बनवास ॥
 विनायक पति जोडे हाथ । नमस्कार करि नमायो साथ ॥२३४४॥
 जै सेवा मुक्त से भई हीन । पिमा कीज्यो बिनबुं आधीन ॥
 बिन उपदेश कियो इह काज । क्रिया करो सेबग परि आज ॥२३४५॥
 रामचद्र लक्ष्मण कहै बैन । तेरा नवर में पायो बैन ॥
 तै बहु कीनी सेवा भगति । तेरा सुजस भया सब जगति ॥२३४६॥
 हम तुमकुं सकुचाया आय । तुम जस महिमा कहिय न जाय ॥
 इनका मोह देव बहु किया । मोती हार भान कर दिया ॥२३४७॥

कुंडल दिया सिया कूँ आण । ताकी जोति रवि किरण समान ॥
नगर छोड़ बन मारग गह्या । नए बसे थे ते बर रह्या ॥२३४८॥

माया रूपी खिगी विभूत । लोग उदास भए तब बहुत ॥

विजय बन मे गमन

बन ही बन मारग कूँ चले । विजय हरि के बन मे नीकले ॥२३४९॥

पृथ्वीधर थे तहा भूपति । इद्राणी राणी उज्ज्वल मती ॥
बनमाला जाकै पुत्तरी । रूप लक्ष्मण गुण सोमै खरी ॥२३५०॥

कन्या भई विवाहण जोग । निमित्तग्यानी इम कहा नियोग ॥
लक्ष्मण की पटराणी होइ । दसरथ दिक्षा लई इण सोइ ॥२३५१॥

लक्ष्मण राम गये बनबास । भरत सत्रघन करै विनास ॥
लक्ष्मण कूँ अब पावै कहा । कन्या व्याह दीजिये जिहा ॥२३५२॥

मकल कुटंब रहसि मन करै । कन्या बहु सुख मनमे घरै ॥
राजा सुषी अजोध्या बात । दसरथ दिक्षा लई इण भाति ॥२३५३॥

बनमाला का लक्ष्मण पर आसक्त होना

बनमाला कहै लक्ष्मण बिन और । मेरे पिता भ्रात की ठौर ॥
लक्ष्मण कूँ सुमरै दिनरात । इण भव मेरे अन्ध न बात ॥२३५४॥

साभ पडघा देवी की जात । बनमाला आज्ञा लहि तात ॥
कहै कहु फासी ले मरूँ । कत बिना कैसे दिन भरूँ ॥२३५५॥

छाडि ऊढणा तरु सू बाधि । गल मे मेल्थो चाहै फाधि ॥
लक्ष्मण ने आई सुभ गध । देखण गया ते सनबध ॥२३५६॥

वाहि देखि तरु हेठै छिप्या । बनमाला लक्ष्मण गुण जप्या ।
बनदेवी सु विनती करै । जे लक्ष्मण मो कूँ अब बरै ॥२३५७॥

तेरा मठ चुगाउं देव । पूजा करूँ बहुत विष सेव ॥
गल मे चाहै फासी लिया । इस भव मेरै लक्ष्मण हिया ॥२३५८॥

अगल जनम होई जियो मेल । असे करै वह कन्या खेल ॥

लक्ष्मण का प्रकट होना

तबै प्रगटघा लक्ष्मणा कुमार । तू अपघात करै किम नारि ॥२३५९॥

मैं हू लक्ष्मण तू रख मन ठाव । नै पताजै तौ रघु दिग आव ॥
इतनी सुरिण ऊढणी लइ खोलि । ऊमल केरि कैं बोले खोल ॥२३६०॥

राम का लक्ष्मण के लिये में वृक्षलाञ्छ

रामचंद्र जाम्बा अचरात । तिहीं न बैस्या लक्ष्मण कुमार ॥
सीतां सूं पूछी किल गया । ता समय इस बोली सिया ॥२३६१॥
पुकारो तुम आवैगा दोड़ि । रामचंद्र करै सोरा सोरि ॥
रामचंद्र पूछै हसि बात । कैसे समझे तुम बिरतात ॥२३६२॥
भासीरबाद तू ऊन दिया । साची बात कहो तुम सिया ॥

सीता द्वारा उत्तर

सीता कहै अरथ निस गई । चंद्रप्रकास उजैली भई ॥२३६३॥
बाही षडी लक्ष्मण वनमाला । दोऊ भाये रूप रसाला ॥
जैसे रयण चन्द्र की प्रीत । जैसे सदा आनन्द की रीत ॥२३६४॥
रामचन्द्र द्विग लक्ष्मण बंठि । वनमाला सीता कै हेठ ॥
चारु वारता कथा कहै । सब सुख सुहावणां लहै ॥२३६५॥
सीतल चालै पवन सुवास । वनमाला पुंगी आस ॥

वनमाला की तलाश

दासी जागी देवी धान । कन्या नै रोवै हैरान ॥२३६६॥
सूर सुभट बहु चौकीदार । तुरी पलाणां गहि हथियार ॥
केई पाला केई सुबार । निकसे सब कन्या की लार ॥२३६७॥
वनमाला देखी इस ठोर । सब सेन्या का हुवा सोर ॥
देव्या रूप राम लक्षणा । चंद्रसूरज का जोडा बन्या ॥२३६८॥
कै इह इन्द्र स्वर्ग तै आइ । किसकी पटतर न वीया जाय ॥
करि प्रणाम बिनबै बहु भाति । तुम हो कथण कहां तुम जात ॥२३६९॥
रामचंद्र यह लक्ष्मण बीर । सोहैं दोन्हु कनक सरीर ॥
कही प्रभू सब बात पाछली । सपलां कै उपजी मन रली ॥२३७०॥
जै जै सबद करै सब लोग । सगलां का भाज्या मन लोग ॥
राजा पासि खबर तब दई । राखी सुनि आनंदित भई ॥२३७१॥
छाया नगर हाट बाजार । बरतै उमही बर नार ॥
रामतणां सोहैं अति रूप । भूपति दीनी भेट धनूप ॥२३७२॥
करि महोच्चर बाजा बजवाय । रहस रली सूं हुवा उछाह ॥
बैठि सिंहासन रायचंद्र । सकल प्रजा मग जयो आनन्द ॥२३७३॥

लक्ष्मण पृथ्वीधर नृप पास । करै बधाई अन उल्लास ॥
महासुख मे ययो विहाण । और बजै आनंद नीसाण ॥२३७४॥

पूरव भव के पुण्य तें, पायो सुख अनंत ॥

वनमाला रहसी घणी, देख्या लक्ष्मण कत ॥२३७५॥

इति श्री पद्मपुराणे लक्ष्मण पटरानी नाम विधानकं

३२ वां विधानक

चौपई

अतिवीर्य राजा द्वारा अजोध्या पर आक्रमण

श्री नदनगर अतिवीरज राव । बायगत दूत प्रथीधर कर्ने आय ॥
दिया पत्र राजा के हाथ । विमुच प्रधान पढी सहु बात ॥२३७६॥
विजय साहूँल वत्रधर भूप । वेगरथ सिंहरथ जम के रूप ॥
आठसहस्र मंगल तसु डोर । हय गय रथ पायक नही ओर ॥२३७७॥
मिलेछ षड का राजा घना । आरज खंड के जाय न गिण्या ॥
वे सब आय एकठा भए । और बहुत आवैगा नए ॥२३७८॥
बिठी देख चले ततकाल । अजोध्या मारि चहै भूपाल ॥
भरत सत्रुघन करै ऊपर दोह । दस ओहणी दल हुवा इक ठौर ॥२३७९॥
रामचंद्र तबै दूत नै कहैं । अतिवीर्य कयो उपद्रव चहैं ॥
कहा भरत तुम किया बिगार । हमसे कहो बात निरधार ॥२३८०॥

लड़ाई के कारण

बोले दूत भगत के वैन । अतिवीर्य बंटा सुख चैन ॥
सहज विचार कियो मनमाहि । भरत भेट मुझ भेजै नाहि ॥२३८१॥
सब राजा मानै है आण । भरत सत्रुघन करै न काण ॥

दूत द्वारा सन्देश

सुरत बुध्य तिहा भेज्या दूत । अजोध्या माहि जाय पहुत ॥२३८२॥
भरत सत्रुघन नै कही जाय । अतिवीर्य सेवा करो आय ॥
कैं तुम देस छोड़ि कैं जाव । मला चाहो तो मो संघ आय ॥२३८३॥

अत्रुघ्न का उत्तर

जैसे पढ़्या अयन मे तेल । सोंवत सिध जयाया हेल ॥
कोपि सत्रुघ्न बोलैं वाक्य । अतिवीर्य हूँ गो कहा बराक ॥२३८४॥
ताकी सेवा हम जो करै । भ्रंसा कहा अपर बल धरै ॥
उन तो सुतो सिध जगायो । वह जीवत छूटै किण पायो ॥२३८५॥

अब वह बचै हमतै किए भांत । देखत ताहि सगावै हाथ ॥

दूत का पुनः निवेदन

बोलै दूत कोप करि बला । तुमतो हो बालक बुद्धि विना ॥२३८६॥

अतिवीरज है इन्द्र समान । सकल भूप मानै तसु भाण ॥

पिता तणै भोलै मति भूल । किसकै भोलै करत हो फूल ॥२३८७॥

बान कहै ता काहा तुम वित्त । बहुत गर्भ कहा करते हो चित्त ॥

उत्तर प्रत्युत्तर

सन्नुषन कहै अरे सुण दूत । वाकी करत है सराह बहुत ॥२३८८॥

जैसें गज रुई का फील । तिरुगा एक करै कस खेह ॥

जैसें बरमातै बैसाख । लोटै भूकै त्यागै सन राज ॥२३८९॥

हस्ती की सरभर कहा करै । वह मूरखि जो हम तैं लहे ॥

बाकू कहि तू वेग सभारि । मारू मीठ मिलाऊ छार ॥२३९०॥

दूत दिया धक्का दे काछि । दूत चल्या दत्ता मन बाछ ॥

गुद की तैयारी

भूप पास परकास्यो भेद । अतिवीर्य सुणि कीयो मन खेद ॥२३९१॥

देश विदेश के भूपति जोड़ि । जनक कनक राजा हैं और ॥

वज्रकरण महोदर राय । अजोध्या तैं बाले हरि भाइ ॥२३९२॥

अब वे तुम परि डोवा करै । तुमतो घर मे निश्चल पड़े ॥

अतिवीरज कोप्या तिए बार । बहुत भूपति नैं लिए हकार ॥२३९३॥

अतिवीरज सूं जनक तणै सनबंध । सबही भाण जुड़े बलबंध ॥

राम लक्ष्मण कोप्या केहरी । दसौं दिसा कापो भय घरी ॥२३९४॥

अतिवीर्य गर्भ मनमाहि । तब लगि नही देखै हरि छाहि ॥

जने भरत सौं बांध्या बेर । अब वे हमकूँ मारै बेर ॥२३९५॥

पृथ्वीधर का निवेदन

पृथ्वीधर बिनवै कर जोड़ि । तुम दोई बीर कर हो भोड़ ॥

वाकै दल जुडिया अधिकाय । कंसै कुछ करोये जाय ॥२३९६॥

हम कूँ धाम्या हो तुम धाजि । धब ही करै तुमारा काज ॥

बोलै रामचन्द्र तब बली । पराये बल पूजै नही रली ॥२३९७॥

आपणा बल तैं धावै काम । पराया भरोसा करै न राम ॥

रथपर बैसि रामसक्करां । सीता द्विज सुख मानै चण ॥२३९८॥

प्रण्वीधर के आठों पुत्र । नंदनगर से जाय पटुंत ॥
 सीता कहे सुण हो रघुनाथ । किम वरुं जुघ अतिवीरज साथ ॥२३६६॥
 बढैनयँ दलबल अतिघरुण । अतिवीरज किम जावँ हणुण ॥
 वा का तो है अतिवीर नाम । बहुत राय आये उस ठाम ॥२४००॥
 जैसा नाम तैसा पराकरम । अतिवीरज कै मन आया धरम ॥

भरत सन्नुघन को आश्वजय

भरत सन्नुघन सीया बुलाय । अपने हेतु करो इकठाय ॥२४०१॥
 तबै ईणसौं माडो जुघ । अपने हिरदै बिचारो जुघ ॥
 राम लखन मन हंसि कर इम कहैं । अनंत वीरज नाम वह लहै ॥२४०२॥
 जे निरबल ते कहै अतिवीरज । माहरे आगैं हैं अनवीरज ॥
 हम हैं प्रति ही गंडुबा । बाका भय तुम क्यों क्या हुआ ॥२४०३॥
 भरत सन्नुघन कुल प्रताप । या परि वह बाय हैं आप ॥
 जे हम मानै याकी सक । कैसे जीतेंगे गढ़ लक ॥२४०४॥
 जो बल नही आपणी मृजा । कहा आणि करि है नर दुजा ॥

भरत की सेना

भरत कै मँगल सात सँ भोर । बौसठ सहस्र अश्व हैं और ॥२४०५॥
 बाकै दस लोहणी दल जुडघा । इस सेती जावँ किम लडघा ॥
 जे हमपै जीत्या नही जाड । भरत सन्नुघन करि हैं कहा आय ॥२४०६॥
 जो हम कबहु सुणते नाहि । भरत दूत मारघा था जाहि ॥
 अतिवीरज सेती जो होती राड । इह उनको हणता तिण बार ॥२४०७॥
 रघुवंसीया न ह्वैती लाज । अजोध्या तगैं बूझता राज ॥
 हम रावल की जाणी नही सार । बाको डारैं अब ही मार ॥२४०८॥
 औरै नै काहे कूँ हतु । मारे चाहो सो करु मतो ॥
 जब लग दिवस आयवँ नाहि । अबही बालि मारिये जाय ॥२४०९॥
 मतो विचारत ह्वै गई रात । तब ही समझेंगे परभात ॥
 जिन मंदिर मे वासा लिया । जिन प्रतिमा का दरसण किया ॥२४१०॥
 बृद्धि धरम मुनि कूँ नमस्कार । पूजा रचना बारंबार ॥

गणिका का नृत्य

गणिका असाहँ सजुत । करि आई नृत्य बहुत ॥२४११॥
 बहरि गई नृप के दरबार । देखण बसे लोक हजार ॥
 सकल कला पात्र गुणवत । नृपकै आगैं जावँ बहुत ॥२४१२॥

गावें बीण मृदंग भर ताल । मृगलोचनी सोही सुनिसाल ॥
 दंत नासिका बणे कपोल । मधुर वचन कोकिला बोल ॥२४१३॥
 सुषर कलाई सोनै हाथ । वेणी बली मृदंगम नाथ ॥
 कुच अति कठिन उदर त्रिवली । स्वाम केस की सोभा बली ॥२४१४॥
 कदली जघ चरण अति भले । गज गति बाल हंस की बली ॥
 बा रहै सोलह शृंगार । भाई पात्र राज के दुवार ॥२४१५॥
 ठाम ठाम आभूषण बणे । अति वीरज राजा तब सुणे ॥
 सभा जोडि बैठो नरपति । गावें गुण कोकिला अति ॥२४१६॥

नृत्य के भाव

नाचें पात्र दिखावें भाव । येई येई करता देखैं राव ॥
 कबहु लटि छूटै भर पुलै । मानौं भी नाग का बलै ॥२४१७॥
 ज्यो घटा मांहि दाघिन उद्योत । सरब सरीर कंचन सी जोत ॥
 कबहु उछलै तोवैं तान । मारै खेचि नैन सर बाण ॥२४१८॥
 सभा मोहि ताकरि पायो दान । वस्त्र कनक लीला आसमान ॥
 नए गीत गावें अपछरा । देखण कू मुरपति मन टल्या ॥२४१९॥
 भरत शत्रु जस गुण गावें । अतिवीरज कौं समझावें ॥
 तेरा मंत्री बुधि हीण । ताकौं मति दीनी है बीण ॥२४२०॥
 भरत शत्रुघन रजपूत । महाबली व्याकूँ अवधूत ॥
 जे तुम चाहो अपनों प्राण । भरत भूप की मानूँ प्राण ॥२४२१॥
 वह सूरज सम तुम हो चंद । रवि अग्ने कला अमंद ॥
 प्रेसी सुणि कोप्या मन राय । उठी सगली सभा रिसाइ ॥२४२२॥
 राजा काडि लडव लियो हाथ । गणिका परि तक मारघो मांथ ॥
 टूटी तरवार बची अपछरा । अपणैं मन कछु भय मही करघा ॥२४२३॥

पातरा का उत्तर

पातर बोली सुणि हो नरिंद । भरत ध्यान तैं मो जया आनंद ॥
 कटघो नही मेरो इकबास । तेरा लडव टूटा मिटे जजाल ॥२४२४॥
 जब भरत आबैना आप । होइ सहाइ भरत गुण जाय ॥
 सुणि सब लोक अवचैं जया । सब विचार उपाया गया ॥२४२५॥
 मंत्री तब समझावैं वैन । देखि सीस राजा नैं वैन ॥
 भरत सुभरण तैं पातर बची । अपणैं वन तुम समझो सची ॥२४२६॥

भरत नै चालि करी नमस्कार । तो तुम जीव का होइ उबार ॥
 राजा कहै कहा है भरत । ताकी हम आज्ञा सिर धरत ॥२४२७॥
 राम कहै गणिका सुनि बात । जे तुम चालो मुझ सघात ॥
 तिहा आप बंठा श्री राम । लक्ष्मण सीता सो जिए धाम ॥२४२८॥
 राजा श्री जिन मंदिर जाय । अष्ट द्रव्य सू पूज रचाय ॥

सीता के दया भाव होना

धरम मु नि को करि डडोत । रामचंद्र पग नम्या बहुत ॥२४२९॥
 सीता कै मन उपजी दया । लक्ष्मण स्यों कहौ कीजिए मया ॥

अतिवीर्य को अभयदान

रामचंद्र लक्ष्मण कृपावत । अतिवीरज सो बोलै इए मत ॥२४३०॥
 करी राज तुम निरमं जाइ । अयोध्यापति की आज्ञा पाइ ॥
 बहुरि न करे भरत मुं बैर । अबर देस दीनां तुझ फेर ॥२४३१॥
 बोले अतिवीरज भूपाल । गज करत जे व्यापा काल ॥
 मरि करि जीव नरक मे पडै । ऐसे दुख नीची गति भरै ॥२४३२॥
 छह षंड तएँ पावै राज । माया अध त्रिमना विण काज ॥
 अब मैं लावो धरम को मार्ग । अब तक रह्यो माया मे लागि ॥२४३३॥

अतिवीर्य द्वारा बेराग्य लेना

तुम प्रसाद अब भयो सचेत । अब हूं करु धरम सूं हेत ॥
 केसरवक्र मुत ने दे राज । आपन कियो दिगबर साज ॥२४३४॥
 तीन रतन तेरह विध धरम । दशलक्षण हूं पालै छह कर्म ॥
 अवधिज्ञान मुनिवर कूं भया । जीव जतु की पालै दया ॥२४३५॥
 नासा दृष्टि आतमाध्यान । धरम कथा का करै बखान ॥
 सहै परीम्या बीस अरु दोई । देह मात्र परिग्रह होइ ॥२४३६॥
 द्वादस प्रेय्या नु लाइ चित्त । दया भाव सयजां सौ निष्ठ ॥
 जंसे पिता पुत्र सो नेह । बटु काया सो पालै नेह ॥२४३७॥
 दश लक्ष्यण गुण अक्र सभार । भावै सोलह भावन सार ॥
 आरुख रौद्रध्यान करि दूर । धरम सकल राखै भरिपूर ॥२४३८॥
 भरत सनुचन सुखै इह बात । जस पै दिव्या पालै किछ भाति ॥
 अतिवीर्य माझि भति शोध । उन पाया किसका प्रतिबोध ॥२४३९॥

भरत कहै हम बात समझाइ । सूरवीर जत पालै न्याइ ॥
कायर पालै किम चारित्र । पालै दिख्य सकल पवित्र ॥२४४०॥

ब्रूहा

जैन धरम दुर्लभ घरणो, पालै बडे कुलीन ॥
कायर पालै केम तप, अग्यानी मति हीण ॥२४४१॥
अतिवीरज अति ही बली, करी धर्म सों प्रीत ॥
राज रिचि सब छोड करि, भजै श्री अरिहंत ॥२४४२॥

इति श्री पद्मपुराणे अतिवीरज विधानकं

३३ वां विधानक

ब्रूहा

विजय और अतिवीर्यजुत, रामचंद्र के भक्त ॥
पाया राज नंद नगर का. प्रगटपा जस सहु जुक्त ॥२४४३॥

चौपड़

विजय राजा का विचार

विजय असफदन करै विचार । ऐसी वस्तु कहा संसार ॥
राम लक्ष्मण नैं दीजे भेट । ऐसी कवण वस्तु शुभ होत ॥२४४४॥
रवि दा मात रितुमाला पुतरी । अति वीरज सुता रूप गुण भरी ॥
लक्ष्मण कूँ दीनी तिहु बार । बहुत विनय कीनी मनुहार ॥२४४५॥
चल्या भरत फिर अजोष्या देस । मारग मैं मिल गयो नरेस ॥
विजय असफदन चरण कुं नया । भरत ताकुं जठि कंठ स्याइया ॥२४४६॥
कंदर्पमा सुता विजय सुंदरी । भरत निमित्त दीनी पडी ॥

अतिवीर्य को कठोर तपस्या

मानगिर पर्वत ऊपरै भाय । अतिवीरज बैठा मुनिराय ॥२४४७॥
करै तपस्या मन बख काइ । र्यान लहर उपजै बहु भाय ॥
तप कै तेज देही मैं जोति । मानुं पुंन्य शशि उद्योत ॥२४४८॥
भरत शत्रुघन विजय असफंद । गए तिहुं अतिवीर्य मुनीव ॥
उतर सिवासण करै प्रणाम । सहु परिवार बया तिए ठाम ॥२४४९॥
पर्वत मारग महा कठिन । चढगये तृपति बहुत जतन ॥
मुनि कूँ देखि भयो धनंद । बंदे चरण कमल मुख कंद ॥२४५०॥
विनयवंत करि बैयावस्थ । अन्य साध पालै जे चरित्र ॥
सुणे चरम सब पातिन गये । नमस्कार करि बहु विधि गये ॥२४५१॥

घाए अजोध्या भुगतै राज । मनबांछित हुआ सब काज ॥
 विजय असफदन किया बिदा । प्रीत रहेगी दहुंवा सदा ॥२४५२॥
 पृथ्वीधर कहूँ करो विवाह । राम कहैं हम तो वन जाह ॥
 पूरण दिन होसी वनमाहि । तबें व्याह करणें की चाह ॥२४५३॥

वनमाला को छोड़कर आगे बढ़ना

वनमाला नै लक्षमण कहै । बागह बरस वनमाही रहैं ॥
 तुमनै साथ ले कहा दें दुख । फिर आवैं तब होवैं सुख ॥२४५४॥
 तब वनमाला रोवैं धरणी । लक्षमण समझावैं कामगणी ॥
 हम फिर आवेंगे तुम पास । करो मति मन चित उदास ॥२४५५॥
 होवैं समकित बिन सूल । मिथ्यादृष्टी मिथ्या मैं भूल ॥
 भ्रंसा हम कुं जो होवैं पाप । जे हम फिर आवैं नही आप ॥२४५६॥
 आधी राति उठे दोड़ भात । सीता ले चाले सघात ॥

सुलोचना नगर

सुलोचना नद्य के वन में गए । अन्न पाणी आण भोजन किये ॥२४५७॥
 जिनमारग ये निकसे आय । देखि रूप सब मोहित थाय ॥
 ए अपने मन निर्मय चलैं । देखे देश गाम अति भले ॥२४५८॥
 केमोजलपुर आश्रम लिया । रामचंद्र लक्षमण निय सिया ॥
 देस देस के मानस देख । भाति भाति की बोली भेष ॥२४५९॥
 रंग रंग के पर्वत घने । नामावली कहा लग गिये ॥
 एक मनुष्य कहे था बात । सत्रद्रुम की कछु कही न जात ॥२४६०॥

जित पद्मा की प्रतिज्ञा

कनक भाजन की अस्त्री । जित पदमा वाकी पुत्री ॥
 राधा पै कीनी इक टेक । मेरे हाथ की बरछी सह एक ॥२४६१॥
 बाकुं पुत्री देहु विवाह । करहु मगलाचार उछाह ॥
 भ्रंसा पृथ्वी पर है कोण । मरण घापरणा चाहै जोण ॥२४६२॥
 जो कोई निज तज दे प्राण । कुण विवाहै भंसी जाण ॥
 जीव करछा तबै बरबार । जीव समान नही ससार ॥२४६३॥
 जिह सौना से तूटै काम । बाकौं वहरें कौच समान ॥
 भंसी अणकरा मेने सुणी । बाहिर बुला कर पूछी बखी ॥२४६४॥
 लक्षमण राम अणभा किया । देखैं इह राजा की बिबा ॥
 भंसा नुण दामैं है कहा । एता गमं बनये है वहा ॥२४६५॥

लक्ष्मण का जितपदमा के पास जाना

लक्ष्मण गया नवर के पार । ऊँचे घर जैसा कैलास ॥
 फटिक समान ऊँजले वरुं । जिनमंदिर देखे दुख हारुं ॥२४६६॥
 लक्ष्मण पहुँचा राज दुवार । पोल्या भाय फिरधा भ्रष्टवार ॥
 तुम हो कौण कबरण कहा जाव । मो सो बात कहो सत भाव ॥२४६७॥
 हम आए नृप दरश निमित्त । देखण कारण हुआ चित्त ॥
 पोल्या कहै कुछ उभा रहो । मैं अब जाय राय नैं कहो ॥२४६८॥
 मूपति प्रतै कही समभाय । रूपवंत कोई आयो राय ॥
 तुम दर्शन कूं ऊँभो द्वार । हृकम हुवैं तो ल्याउ हकार ॥२४६९॥
 राजा पामि लाए बुलाय । लक्ष्मण राजसभा मे जाय ॥
 पूछै नरपति तुम हो कोण । किहू नगरी सौ कीया गौण ॥२४७०॥
 लक्ष्मण कहै हम भरत के दास । इहै बात सुणौ परकास ॥
 जितपदमा पुत्री तुम गेह । तुम हती बहुला की देह ॥२४७१॥
 जे प्रनिय्या है तुमारी नाच । तो तुम मुझ बरछी मारो पाच ॥
 भ्रचरज करै राग मन माहि । भ्रमा घोरज यामे काहि ॥२४७२॥
 जो मैं घालू इस पर घाव । भ्रवजम चढै बुरा ब्रह्म नाम ॥

पद्मा द्वारा बरछी के बार करना

लक्ष्मण कहै कहा करे विचार । बेग पाच बरछी मोहि मार ॥२४७३॥
 भ्रगन प्रजलनी एक चलाय । लक्ष्मण ग्रही बीच मा घाइ ॥
 दूजो बरछी फै की बली । लक्ष्मण नैं पकडी मन रली ॥२४७४॥

लक्ष्मण की बिजय होना

इगु विष चूकी पाबु चोट । पुंन्यवंत धरम की ओट ॥
 तब राजा लक्ष्मण कु नया । जितपदमा दीनी निज चिया ॥२४७५॥
 लक्ष्मण कहै वन मे मोहि भ्रात । सीताराम जगत विस्वात ॥
 उनकी आग्या ले कर्णों विवाह । मेरा वचन सुणों नरनाह ॥२४७६॥

राजा रासी सहित राम के पास जाना

राजा रागी जितपदमा पुतगी । मंगलाचार गीत विष करी ॥
 परियण सहित राम पै चले । बाजा बहुत बजाये भले ॥२४७७॥
 ठडी धूल आलोप्यो मार । सीताराम बिचारै ग्यान ॥
 लक्ष्मण सूँ कछु भया विरोध । ऊँचे चढि करि लेहुं सोधि ॥२४७८॥

देख्या रहस रली सूं लोग । आवत देख्या करण सजोग ॥
 सत्रुदुम आइ चरण कु नया । जित पदमा सीता पद लया ॥२४७६॥
 कियो महोत्सव पुर ले गये । पुन्य प्रसाद बहू सुख भये ॥
 अधिक आनंद नगर मे भया । जित पदमा चित हरष्या यया ॥२४८०॥

सौरठा

पूरब पुन्य पसाय, जिहा तिहा रस्या करै ॥
 जीत भई सब ठाई, रघुबसीन प्रताप अति ॥२४८१॥

इति श्री पद्मपुराणे जितपद्या विधानकं

३४ वां विधानक

लौपई

जितपद्या को छोडकर आगे बढना

राजा सौंज व्याह की करै । ए चलणे की इच्छा करै ॥
 जित पदमा सू लक्ष्मण कहै । तू अपने मन निरमै रहै ॥२४८२॥
 फिर प्रावै तव करस्या व्याह । तुम कूँ वनमे कहा ले जाहि ॥
 जित पदमा के लोयण करै । नगर लोक सह विनती करै ॥२४८३॥
 लक्ष्मण राम रहै हम देस । पुन्यवन ए बडे नरैस ॥
 राणी राय करै अरदास । पूरण सकल मनोरथ आस ॥२४८४॥
 अरव रात्रि वन मारग लिया । राम लखण जनक की धिया ॥

राम लक्ष्मण का बसवल गांव में पहुँचना

देख्या गाम नगर रु नयरी । बंसवलपुर बसती खरी ॥२४८५॥
 लोग भागते देखे घणै । तीजे दिन इक कारण बने ॥

पर्वत पर बाजा आदि बजना

पर्वत पर कोई करै पुकार । ताके भय भाजै ससार ॥२४८६॥
 पुरुष छिपे मुहरा मभार । तिहा रहेगे साभ सकार ॥
 बाजै घणै दमामे डोल । ज्यौ वह कान पडै नही बोल ॥२४८७॥
 जो कोई वह सुणै हकार । पुरुष नपुसक होवै तिस बार ॥
 कोई सुणि कार तजे पराण । असा दोष अछै तिस बान ॥२४८८॥
 सीता सुणि बोली तब वैन । इस पर्वत परि होइ कुचैन ॥
 इन लोग संग तुम भी चलो । भय की ठौर रहै नही भलो ॥२४८९॥

राम लक्ष्मण तब हसइ । सुणों ये जबें भजोष्या बसइ ॥

राम द्वारा विचार करना

दक्षिण विसं इक पर्वत ठाम । हाक श्रवण सुंण डरपैं गांम ॥२४६०॥
 सो प्रतप्य हम देख्या आजि । मनबाधित का हुवा काज ॥
 गिरवर पर कुंण करै पुकार । ताका डर मानैं संसार ॥२४६१॥
 सीता जो तुम डरपो घली । तुम भी जाहु जहां ए दुली ॥
 रामचंद्र सीता लक्ष्मण । परबत चढि देखैं हैं सब वन ॥२४६२॥
 रयण भई वन के सब जंत । हस्ती स्पृघ बोलैं दुरदंत ॥
 स्याला सबद भयानक लगै । राम लक्ष्मण उस वन में जगै ॥२४६३॥
 बसन उतारि पहर कोपीन । धरे ध्यान ऊभा तप लीन ॥
 जैसे सोहै कलस सुमेर । अैसे सोहत हैं तिण बेर ॥२४६४॥

अजगरों का निकलना

नीलांजन नगर की उणिहार । अजगर निकले तिहा ब्यार ॥
 दामनी ज्यौ त्रिज्वा नीकले । फुंकारता अगनि पर जलै ॥२४६५॥
 महा भयभीत करै चिधार । इनकें हे समकित आधार ॥
 बहुत चिधारे विलखे भये । पुन्यवत डर भय नहीं गए ॥२४६६॥
 क्यार अजगर रूप धरि देव । राम लक्ष्मण की कीनी सेव ॥
 पूजै चरण बजावैं वीण । नाचैं गावैं गीत नवीन ॥२४६७॥

देशभूसण कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग करना

वा वन मे देशभूसण मुनी । कुलभूसण करै तपस्या बनी ॥
 राघ्यस आण दिखारै नृत्य । वह अपने मन भय ना कृत्य ॥२४६८॥
 उनको चाहे तप से टाल । वह हैं मन जब काया हुसियार ॥
 अंधकार घण घटा बनाई । उपसर्ग दिया मुनिबरातै घाइ ॥२४६९॥

अडिस्त

मुनिवर ध्यान गभीर चित्त आतम दिया,
 हृदय सुमरि नवकार ध्यान निर्मल किया ॥
 धारत रौद्र निवार घरम सुकल गह्वा,
 ऐसा सुभट मुनिराज कष्ट बहुला सद्वा ॥२५००॥

चौपई

राम लक्ष्मण का मुनि के पास जाना

लक्ष्मण राम सीण सब चल्या । ब्रह्मावर्त बनूष संभास्या भला ॥
 साधा नै क्यूं देहै दुःख । बितर भाज्या उपज्यो मुख ॥२५०१॥

दोऊ मुनिवर नै केवलग्यान । जय जयकार करै सुर आन ॥
 पूछै राम द्वैज कर जोर । नोल बघ किम पिछली खोर ॥२५०२॥
 कारण कबग उपद्रव किया । वितर किम तुम कूँ दुख दिया ॥

व्यसनगे के पूत्रं भाव

बालै मुनिवर पूर्व भव भाव । पद्मनी नगर विजयगिर राव ॥२५०३॥
 पट्टराणी नामै धारणी । भोग भुगति रति मानै धरणी ॥
 अमृतस्वरित राजा का दूत । उपयोगा स्त्री उदित पूत ॥२५०४॥
 मुदिन नाम का दूजा पून । वसुभूत विप्र मित्र बहूत ॥
 उपयोगा विप्र पाप की रीत । अमृतस्वरित तै रहै भय भीत ॥२५०५॥
 पर्वतभूत मन्त्रीय बुलाय । अमृतस्वर कही दिया पठाय ॥
 वसुभूति विप्र कू लीया साथ । विप्र षडग लीयो निज हाथ ॥२५०६॥
 अमृतस्वरित को तिहा मारि । आय कही उपयोगा नै मार ॥
 वे दोनु मन रहसे घरगे । डाव पडै दोन्युं सुत हरगे ॥२५०७॥
 वा दोन्या वीर सुणी इह बात । इरा भाभरण मारधा तुम तात ॥
 अब तुम कूँ मारैगा आइ । सावधान रहज्यो इरा ठाड ॥२५०८॥
 इक दिन सोवै था दोउ भ्रात । मारण आया द्विज अघरात ॥
 उदित ने मागे नरवार । वसुभूत मारधा तिख बार ॥२५०९॥
 विप्रजीव म्लेच्छ अवतार । खोटी ज्यौन भ्रम्यो ससार ॥

मतिवर्धन मुनि का आगमन

मतिवर्धन मुनिवर मुनी । अनधरा आरज का ग्यानी मुनी ॥२५१०॥
 वसत तिलक वनमे ते आय । छह गितु फूल फले वन राय ॥
 सूका नरवर हुवा हरघा । जलहर सकल नीर सुं भरघा ॥२५११॥
 माली गया राय के पास । कही वीनती सह सब भासि ॥
 राजा सह परिवार हकार । हाथी चडि चाल्यो नरवार ॥२५१२॥
 नगर लोक चाल्यो नृप सग । पहिरि तने आभरण सूरंग ॥
 वन के निकट गया जब गया । गजते उतरि भूमि पग दिया ॥२५१३॥

मुनि की तपस्या

मतिवर्धन मुनि के सग घने । वे ठाढे ध्यान माहि आपणे ॥
 कोई पदमासन तप करै । तीन रतन हिरदै मे भरै ॥२५१४॥
 राजा अमृतुति करि दडोत । दसन देखि सुख भया बहुत ॥
 नरपति कहै सुणो मुनिराय । तुमारी है राजा सी काय ॥२५१५॥

तुम काहूँ कूँ लीया जोग । छाड़े सकल राज के भोग ॥
 बोले मुनिवर सुणी विचार । राजभोग तिहा धिर न संसार ॥२५१६॥
 सुभ अरु असुभ करम परभाव । भ्रमै जीव पावै नही पार ॥
 सुपना का सा है सब सुख । बहुर लहै नरक का दुख ॥२५१७॥
 इत ऊबरै निगोदरी आस । जनम मरण नही टूटी आस ॥
 दिव्या नै पावै सिव आस । निरमै लाभ भोग विलास ॥२५१८॥
 दरसन ग्यान बलबीज अनंत । सामय सुख लहै बहु मत ॥
 विजय परवत सुणि दिव्या लई । राज विभूत पुत्र को दई ॥२५१९॥

उदित मुदित द्वारा बैराग्य लेना

उदित मुदित उपज्यो बैराग । भये दिगंबर घर सब त्याग ॥
 सम्मेद सिखर की मनसा करी । गुरु आग्या लीनी तिह घरी ॥२५२०॥
 वन में गए भील बी पुरी । मग नही लहे तिहा स्थिति नरी ॥
 साधे जोग घरम के काज । ग्यान अकुस से मन गज राज ॥२५२१॥
 पंचइन्द्री की रोकै चाल । मोह करम की तोड़े माल ॥

मलेच्छों द्वारा उपद्रव

मलेच्छ आय तब कीनी बुरी । साथ हतण की इच्छा करी ॥२५२२॥
 उदित कहै मुदित सौ बात । मलेच्छ आबै है धालण घात ॥
 हमकू माग्या चाहै भाइ । तुम राखो दिख मन बच काय ॥२५२३॥
 अपनु चित्त राख्यो ठौर । टूटे जनम मरण की डोर ॥
 उन मर्ये उपसर्ग निमित्त । पापी पाप विचारघो चित्त ॥२५२४॥
 पहुँच्या तिहा भील का राय । दोन्यु मुनिवर लिये छुडाय ॥
 तिन मलेच्छा नै मारघा बाध । तोनै कपु दुख दिया साथ ॥२५२५॥
 पूछै रम राय की कथा । बाके भव भाषो सरबथा ॥
 भरत नगर तिहां दोढ़ किमाण । सुरपक करपल्लव जानि ॥२५२६॥
 सुकतवाल कहारिया चोर । तिरा किसान छुडाय तिरा धोर ॥
 उन बालक जब बुधि सभारि । तप करि उपज्यो राजकुमार ॥२५२७॥
 सब मलेच्छु का हुवा राय । करै राज सोभा अधिकाम ॥
 सुरपक करपल्लव घरम जाणि । तप कर उदित भए महा भान ॥२५२८॥
 पूरव जनम दिया अमय दान । ता सतबध छुडायै इस थान ॥
 मलेच्छा को दीनी अति मार । मरि करि पहुँच्या नरक मभार ॥२५२९॥

तोड वन उदर पूरणा भई । संन्यासी पै दिव्या लई ॥
 पंच अग्नि साधो बहुभांति । मरकरि भया देव की जात ॥२५३०॥
 अग्नि केतु नाम तसु भया । उदित मुदित समेदगिर गया ॥

उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति

समाधि मरण करि छूटे प्राण । पाया स्वर्ग मे देव विमाण ॥२५३१॥
 अरिष्ट नगरी प्रिय वन भूप । कंचन नामा नारि अनूप ॥
 दूजी पदमावती अस्तरी । रूपवत लब्धरा गुणभरी ॥२५३२॥
 दोऊ देव चचे अंत धाय । पदमावती गर्भ भए धाय ॥
 प्रथम रत्नरथ चित्ररथ और । रूपवत सोहै तिण ठौर ॥२५३३॥
 आभा और अग्निकेत पुत । अनरथ नाम रूप बहुत ॥
 गजा सुषुं धरम व्याख्यान । छह दिन धाव रही परमान ॥२५३४॥
 राज भार पुत्र ने दिया । धापण भेम दिगंबर लिया ।
 रत्नरथ औरप्रभा मौं व्याह । राजभोग मे करै उछाह ॥२५३५॥

अनरथ राजा का मान भग एवं वैराग्य

अनरथ करै राय सौ बैर । माने राज प्रथी का खैर ॥
 चित्ररथ मंत्री सौ मन विचार । सेना जोड कीण जुध भार ॥२५३६॥
 मान नग अनरथ का होय । भये संन्यासी ग्यान वियोध ॥
 काय कष्ट सुं साधे जोग । छोडे सब समागी भोग ॥२५३७॥
 रत्नरथ चित्ररथ मुनिवर पै गये । साभलि धरम जतीसुर भये ॥
 ईसान स्वर्ग मे हुवे देव । सुर बहु करै तिना की सेव ॥२५३८॥

देसभूषण कुलभूषण का जन्म

सिधरत्नपुर ओ मकरण नरेश । विमलाराणी पतिव्रता भेष ॥
 ताके गर्भ स्वर्ग तें चई । देसभूषण कुलभूषण भई ॥२५३९॥
 सागरघोष भूप की साल । विद्यापति दोउ भए गुणाल ॥
 लब्धविद्या ब्रह्मर कला । सर्वविद्या सीखी गुण भला ॥२५४०॥
 विप्रसाध दोऊ शिष्य के जाय । सुत गुण देख धानधो राइ ॥
 सागरघोष बहु पायो दान । लेमकर बीयो सममान ॥२५४१॥
 नरपति प्रीसा करै विचार । जीवनकाल भयो सु कुमार ॥
 रूपवत नृप को जोड सुता । ताहि समभि कोई कीये प्रता ॥२५४२॥
 उहै भूपति को जाचै जाइ । ऐसेी जान विचारै राय ॥

वनक्रीडा

दोऊ कुंवर वनक्रीडा चले । हंस गय रथ पायक बहु भले ॥२५४३॥

रथ परि बैठा दोन्हुं बीर । कल्पलक्षण करि दिपै सरीर ॥
 कमलोत्सवा झरीले द्वार । बैठी नयन आभरण सँवार ॥२५४४॥
 देसमूषण कुलमूषण देखि । यासौं कहूँ विवाह विसेष ॥
 वे दोन्हुं आपस मे जिद । नारि रूप हिया मे निद ॥२५४५॥
 उतत भाट आवता मित्या । आसीवादि दीया उन भला ॥
 क्षेमकर कै कुल आनंद । विमला उदर भए भुविचंद ॥२५४६॥
 जिरजीव हूँ ज्यो तुम सदा । इनका सुजस बख्साएँ मुदा ॥

कमलोत्सवा का विचार

कमलोत्सवा इमकूँ देखिया । घन्य बहू जिनकै दोउं भया ॥२५४७॥
 प्रैसी सुणी जई इन बात । सोच करै मनमे दोउ भ्रात ॥
 सराह्या इन मैया की ठौर । हम मनमे आणी थी और ॥२५४८॥
 जे इह अनि रायती भाव । तोऊ न कहती बहिन का भाव ॥
 हम तो चित मा आण्या था पाप । क्यूँ उतरैगा इह सताप ॥२५४९॥
 मन ही मन मे बाचे करम । जानवत किम करै अघरम ॥
 धिगू यह जनम धिगू संसार । विषय भाव मे रह्यौ अधियार ॥२५५०॥
 अब किए विध मिट सी अलगध । करै तपस्या मन बच साध ॥

दोनों भाइयों के बैराग्य भाव

फिर आये जहा माता पिता । बैराग तराए करि दोन्हु मता ॥२५५१॥
 कहै कि हय तुम इह सनबध । इन्द्रिय विषय पाप का बंध ॥
 अब तुम हम कूँ आग्या देई । तो हम मुनि पासै व्रत लेहि ॥२५५२॥

माता पिता द्वारा संताप

दपति सुनि मूरछा गति आइ । पुत्रा प्रतै कही समझाय ॥
 तुमारा न देख्या मगलाचार । तुम दोनों बालक सुकुमार ॥२५५३॥
 करो राज तुम भुगतो सुख । कारज विन कवण सहो ए दुख ॥
 बडयै आश्रम दिक्षा जोग । अब भुगतो संसागी भोग ॥२५५४॥

कुमारों का उत्तर एवं बैराग्य लेना

बोले कुवर ससार असार । व्यापत काल न लागै बार ॥
 बाल वृद्ध सगला नै लाय । काहु की कछणा न कराइ ॥२५५५॥
 आग्या ले मुनिवर पै गये । लुंभे केस दिगबर भए ॥
 बारह तप तेरह चारित्र । अठाईस मूल गुण है पवित्र ॥२५५६॥

तीन रत्न पालै धरि भाव । साधै तप या विष इए ठाम ॥
 अनरघ संन्या कौमुदी नय । सुम राजा जा की बल अय ॥२५५७॥
 रतिवती राणी सम्यक् दिष्ट । ग्यान क्रिया मे अधिक श्रेष्ठ ॥
 राय सुणीहा ऐसा महह । दरसन कारण चल्या तुरत ॥२५५८॥
 ऐसे तपसी करिण सेव । राणी निंदा करै अछेव ॥
 बाद भयो राणी अन राव । समझै केम सुभासुम भाव ॥२५५९॥
 साधुदत्त मुनि के उपदेश । राणी माइधो बाद नरेस ॥

नागदत्ता का अनरघ तपस्वी के पास जाना

नागदत्ता कन्या सुं कही । अनरघ पासि जाह तुं सही ॥२५६०॥
 सारे दिन रहियो बन माहि । तपसी पास जाइयो साझ ॥
 जब वह चुकै आपणा ध्यान । बाकु त्याज्यो करिका थान ॥२५६१॥
 पुत्री गई जहा अनरघ । लाग्या ध्यान आतम के मध्य ॥
 कन्या की पाई नबै बाम । अनरघ कहै फली मन आम ॥२५६२॥
 मैं तो बहु प्रकार तप किया । अपछर यह फल पाइया ॥
 तब कन्या तापम ने वहे । मेरी माता मनोहर रहे ॥२५६३॥
 तू पुत्री अपनो वर दूढोल । अब तुम चली मीहि घर गल ॥
 तुम चरणन की सेवा करुं । तुम साथै तप व्रत आदरु ॥२५६४॥
 तब तापम आइया पास । कन्या बोली वचन प्रकास ॥
 अब तुम चलो माता के पास । मोकूँ देमी तुरत निकाम ॥२५६५॥

तपस्वी का कन्या के साथ जाना

तपसी बाल्यो कन्या मग । त्रिया लाजी जिम व्याघ्र कुरग ॥
 तिहा सुमुख राजा जा छिप्या । वेस्या के घर आया तपा ॥२५६६॥
 वेस्या दई अपणी पुत्तरी । भोग भुगत भाने तिह घडी ॥

दुशान्ती होना

राजा तबै बाध्या तापसी । पनिया सौ पीटघो करि हसी ॥२५६७॥
 गरुडो राति पाइगा बीच । मु त लाद की माडी कीच ॥
 प्रभात भये बुलायो तुरत । मुंड मुंडाय कं पाछणा बहुमत ॥२५६८॥
 गदह चढाड फिराया देम । अंसा किया तपा का भेस ॥
 मगि करि भुगती सातो नर्क । ऐसै महे भव भव उपसर्ग ॥२५६९॥
 अत भया बाभण का पत । मन्यामी ह्वै तप करै बहुमत ॥
 ज्योतिग पटल देवता भए । वा सनमंघ हमनै दुख दए ॥२५७०॥

अमन्तवीर्य मुनि को पास देखों का जाना

इक दिन चतुरनिकाया देव । धनंतवीर्य दर्शन कुं सेव ॥
तिहां इन्द्र नें पूछी बात । मुनिमुन्नत उपजे जिननाथ ॥२५७१॥
उन पीछे कबण होइ केबली । देवभूषण कुलभूषण कबा बली ॥

दोनों मुनियों के केवलज्ञान होना

उनकूं उपजं केवलज्ञान । उन प्रभु देव बिचारघा ध्यान ॥२५७२॥
पूर्व भव का जाण्यां भेव । आया उपसर्ग कीमा गहेव ॥
धेमकर धर बिमला माय । ले सन्यास तजी निज काय ॥२५७३॥
पहुंचे सौधर्म स्वर्ग बिमोण । उपसर्ग देल आए इस ठाण ॥
महालोचन धेमंकर जीव । आया मोह करम की नींव ॥२५७४॥
हम घातिया कर्म सहू टाल । माया मोह का तोड़पा जाल ॥
केवलम्यान उपज्या इस घडी । मुर नर सहू मिलि सेवा करी ॥२५७५॥

बूझा

रवि प्रताप जग मे तर्प, ध्यानी उबोति अनंत ॥
सुणत भेद समय मिटं, सुल पावै बहु मंत ॥२५७६॥

इति श्री पद्यपुराणे देसभूषण कूलभूषण केवलज्ञान विधानकं

३५ वां विधानक

बीपई

सुरप्रभ राजा द्वारा राम का स्वागत

सुरप्रभ बंसस्थल को राई । बंसगिरि सोमै बहु भाई ॥
बारह सभा सुणें तहा बरम । रामलक्षण को पायो मर्म ॥२५७७॥
भूपति सकल बर्णन कूँ नए । वरसन पाइ क्रतारण नए ॥
नारायण बल अष्टम अवतार । सुमरघां हुवैं जीव आचार ॥२५७८॥
मुप्रभराय गवद सवार । पचबर्ण कीने इकसार ॥
कियो महोच्चव आण्यो गेह । दीपै यह कंचन मय देह ॥२५७९॥
किरैं छत्र सिर डारैं चवर । बिछे कुमुद सब मारिण ठीर ॥
बहु पकवान मिठाई बनी । बहुत भांति की रसवती बली ॥२५८०॥
नात दाल तरकारी वृत्त । रस मोरस बीनां भरि बर्त ॥
रतनतवाई कंचन बाल । बीकी जंघत बहु मोती जाल ॥२५८१॥

सुवर्ण भारी धमृत नीर । जीर्मे राम लक्ष्मण दोउ बीर ॥
 सीता न लीयो आहार । दर्ई मुख सोधि बहू पुष्प सवार ॥२५८२॥
 अग्गजा चालया बास गंभीर । बाते उपजै सुख सरीर ॥
 लक्ष्मण गम बस गिर चले । वनक्रीडा देखत मन बले ॥२५८३॥
 चंत्पालय देयै बहु भाइ । रतन विब बीसो जिनराय ॥
 कही कचन के देहुरे । कही पाषाण लगाये खरे ॥२५८४॥
 करै प्रतिष्ठा पूजा दान । सकल भूपती मानै आण ॥
 रामचंद्र लक्ष्मण सो कहै । वरगै नही जो हम इहा रहै ॥२५८५॥
 लोग करै हमरी सब सेव । भरष सीब सौ रहिये छेव ॥
 कैसे रहिये भरष की ठौर । रहै जहाँ तहा लयै न और ॥२५८६॥
 सतवादी श्री रामचंद्र, लक्ष्मण चित्त विवेक ॥
 वगगिरि तजि आगै चले, चारि धरम की टेक ॥२५८७॥

चोपई

राम का आगे गमन

राम गिरि छोड़ि वनमारग चले । बहु प्रकार तरु देखे भले ॥
 अगले वन सब देखे सघन । मनुष्य न दीर्घ मारिग कठिन ॥२५८८॥
 निम वामग तिहा एक समान । सघन वृक्ष दीसै तिहा भान ॥
 सारे दिन चलिया कोस एक । गिरि कंदरा मे रह्या टेक ॥२५८९॥
 वनफल बीग करै आहार । पहुँचे करण रेवा तट पार ॥
 उत्तम वृक्ष लागे फल फूल । सीतल पवन जाय दुख भूल २५९०॥
 तिहा जाय रामचंदर रहै । वनफल आणि अन्य न चहै ॥

वन जीवन काल

वासण मोटा तिहा संवार । रसवती करै सीता त्रिण बार ॥२५९१॥
 पानन की पानन ले वणाड । सुरही धेनु का दुग्ध मगाइ ॥
 नारिकेल के तदुल अनूप । दाडिम दाख मुख स्वरूप ॥२५९२॥
 चारोली पिस्ता बिदाम । ए वसता लाई करै आराम ॥

राम द्वारा चारण मुनियो को आहार देना

चारण मुनि सीता दृष्टि देखि । भास उपवासी बिगबर भेष ॥२५९३॥
 रामचंद्र ने सीता कहै । उठो बेगि पडगाहो यहै ॥
 दोउ मुनिवर ने देख अहार । रामचंद्र उठियो त्रिणवार ॥२५९४॥

नमस्कार करि पूजे चरण । मुनि दर्शन भव पातिग हर्ष ॥
 वेयाव्रत करि दीयो दान । विधि सेती कीयो सनमान ॥२५६५॥
 मुनिवर को दीनी मुखसोधि । अर्पदान बोले प्रति बोधि ॥
 पुष्टप रत्न बरखे तब घरणे । सुर नर सब जै जै कूँ भयो ॥२५६६॥

गृध्र की कृपा

गृध्र एक बंठा तरु डाल । भव सुमरण उपज्यो ततकाल ॥
 केह बेर लही मानव देह । धरमध्यान सुँ चरणो न सनेह ॥२५६७॥
 प्रकारध लोयो सब जन्म । नटवत मेघ करे सब कर्म ॥
 मानुष होय कबहु पुन्य न कियो । शास्त्र सुखन को चित न दियो ॥२५६८॥
 मुनिवर को नहीं दियो ग्रहार । चरणो नही व्रत संजम भार ॥
 पथी भयो नित आमिष भण्यो । अब मैं कैसे भलेष लिय्यो ॥२५६९॥
 चरणोदक मुनिवर का पिया । अंसा ग्यान गृध्र को भया ॥
 पथीन तै कहा संयम पनै । मुनिवर चरणो मे चित मिलै ॥२६००॥
 बटारल सम पथी जगै । सोभा तसु कहत न बनै ॥
 रामचंद्र पूछै बिरतान्त । सुमुख पति भूपति भावै बात ॥२६०१॥
 जनपद करण नाम निहा देस । बहूत नग्न ग्राम बहु बेस ॥
 कई गिरिपर कई तलै । कई बसै नदी तट तलै ॥२६०२॥
 कई निबसै महा उद्यान । कई निकट नगर के धान ॥
 करण कुंडल का डंडक भूप । अस्वकरणी राणी सस्वरूप ॥२६०३॥
 प्रवस्य सौ राजा आसक्त । भई रयस करिबा चाली रित्त ॥
 मारग मे मुनि ध्यानारुह । सर्प एक भंवायो नृप दूँड ॥२६०४॥

मुनि पर उपसर्ग

कीडी चढी साध की देह । परिवस्य कै गयो भूपति मेह ॥
 मुनिवर तबै भांडयो संन्यास । वाके देह तरणी नही आस ॥२६०५॥
 बिसहर मृतग चुबै गरल । असो भैहि घाल्यो मुनि गल ॥
 जो कोई जाय उतारै सांप । तब वह कासो करे संताप ॥२६०६॥
 अन्य देश का भूपति भाई । देख्यो सर्प मुनिवर की काई ॥
 अस्व तै उतरि मुनीसर पठतारि । राजा ये कीया नमस्कार ॥२६०७॥
 उत्तम बस्त्र सैं पूँछियो शरीर । जेयावृत्त करि भेटी पीर ॥
 गयो भूप उपसर्ग निवार । डंडक फिर आयो तिरण बार ॥२६०८॥

बोले किणउ उतारघी साप । उतारथा अनही राजा घाप ॥
चढे कोप कहै कैलूँ प्रांन । साधा नै पीडूँ इस बाण ॥२६०६॥

मुनि के चारो ओर अग्नि जलाना

फिर बोल्या वाडा चहु फेर । काठ सवारो बहु तिहा घेर ॥
काहू कू निकलग मत्त घोह । दावानल माहीं कीघो स्थोह ॥२६१०॥
पापी दुष्ट विचारी बुरी । झाई नरक जायँ की घडी ॥
अगरो तरफ लगायी आग । मुनिवर ध्यान निरजन लाग ॥२६११॥
लम्बा भील देही सब जरै । मुनिवर नहीं ध्यान तें टरै ॥
पावकध्वज सबन को देव । अगनि बुझाइ करी मुनि सेव ॥२६१२॥
बाही अगनि देही सब जाल । सकल प्रबी बल हुई लाल ॥
दाभे जीव जन्तु सब मुये । राजा नरक सातवीं गये ॥२६१३॥
भरम्यो लख बीरासी जौनि । अब ए गुड भए करि गौनि ॥
हमारा भव देख्यो परतक्ष । बानारसी नष्ट रहै तिहां रक्ष ॥२६१४॥

अचलराय एव गिरदेवी द्वारा मुनि को आहार देना

अचलराय गिरदेवी अस्तरी । रूप लक्षणा गुण सोहे घरी ॥
त्रिगुप्ति मुनिन कूँ दियो आहार । दिखाया आपणा हाथ पसार ॥२६१५॥
मेरे सति होय कि नाहि । भाषो मोहि जिम मिटै दाह ॥
मुनि बोल्या होसी सुत दोह । सुगुपति गुपति तेरे गरभ होय ॥२६१६॥
सोमप्रभ प्रोहित है राय । सोमिला स्त्री गर्भ के भाय ॥

सुकेत और अग्निकेतु द्वारा बीछा लेना

प्रथम सुकेत अनं अग्निकेतु । दोनूँ बीर हैं बहु देत ॥२६१७॥
सुकेत अनतवीर्य मुनि पास । दिक्षा लही सुगति की आस ॥
अग्निकेतु सन्यासी भया । पञ्चअगनि साथी तप किया ॥२६१८॥
सुकेत विचारै अंसा ध्यान । अगनि केतु तप करै अय्यान ॥
काय कलेसस्यौं दहै सरीर । अन्य जीव किन आवै पीर ॥२६१९॥
सूक्ष्म बादर विराधे प्राण । अग्न्याले जल करै असनां ॥
वा कूँ परमो धूमै जाय । गुरु सूँ आका भागी आव ॥२६२०॥
अनतवीर्य सुकेत सूँ कहै । अग्निकेत मन मिथ्या गहै ॥
तुम्हारा मानैगा नहीं बैन । अग्न्यानी किम समझै अन ॥२६२१॥
क्रोध मान भाया का बली । जैन वर्म लाडा की अली ॥
रागदोष वाकं मन बसै । संयम क्रिया नहीं उल्लुसै ॥२६२२॥

वह तो समझैवा इस भाति । तोय्युं हम समझावै बात ॥
 प्रकर महाजन सुचरा तिरी । बाकी साथ तीन अउर तिरी ॥२६२३॥
 भावैवा गंगा जल भरल । तीन दिन पाछै उसका मरल ॥
 पावैगी भू डा अवतार । बीजे भव महिषी अवचार ॥२६२४॥
 जहां तैं भी मरि विलास कै गेह । जा कंवर ग्राम सुतां हुइ एह ॥
 जती सुकेत भ्राता पै गया । दोन्या सूं तिहां जेला भया ॥२६२५॥
 बाही समै रुधराजव भाइ । तबैं सुकेत बोले मुनिराय ॥
 अगनिकेत नैं पूछे ध्यान । कहो कछु आगम व्याख्यान ॥२६२६॥
 इस कन्या का क्या होइ लिखत । तो मैं जानुं तुं महत ॥
 अगनिकेत कहै तुम मरणी । तुमारा ग्यान सही मई निखो ॥२६२७॥

कन्या का भविष्य

सुकेत कहैं कन्यां इह मरैं । तीजो दिन या को नहिं टरै ॥
 भेड भैस गति छूं भी सुता । विसाल देह रूप की लता ॥२६२८॥
 जब कन्या होइ जीवनवंत । प्रवर विलास मामा सु कहंत ॥
 इह कन्या मोकु तुम देह । भाणजी जाखि कही उल लेहु ॥२६२९॥
 व्याहृण आया मामा द्वार । अगनिकेत आयो तिल बार ॥
 है संन्यासी प्रवार सुं आया । इह तो सुता तेरी इह आया ॥२६३०॥
 तू कहा ऐसा हुआ अग्र्यां । बेटी व्याहन कुं जोड़ी जान ॥
 प्रैसी कथा कन्या नै सुणी । उपजी अवधि भव सुमरणी ॥२६३१॥

कन्या द्वारा वैराग्य के भाव

धिग् धिग् भाई मोहनी करम । प्रैसै जीव भ्रमैं है मर्म ॥
 इह अचिरज सब लोभ्यां सुण्यां । भया वैराग सबही मरणा ॥२६३२॥
 अनसवीरज मुनिवर डिंग गया । दिव्या लई करि मन बच कया ॥
 रामचंद्र सीता नै सुखैं । अवर वह गृध्र बीनती भरैं ॥२६३३॥
 अचल राजा गुपति सुगुपति । अगनिकेत लह्या समकित ॥
 प्रवर अवर मामा विलास । बिचरा नाम प्रौर कन्यां तास ॥२६३४॥
 घरम मारग तुम मोसु कहो । तुम प्रसाईं गति उत्तम लहौं ॥
 रात्रि भोजन हिस्सा वृत्त । अइसी रीत वह पंथी बरत ॥२६३५॥
 मुनिवर गए आपखैं ध्यान । सिंघावृत्त भविजन मान ॥
 लक्ष्मण नैं हस्ती बस्त्र कीया । ऊपर ताके चढि आइया ॥२६३६॥

पुष्पवृष्टी देखै तिहा डेर । जटा पंथी देख्यो तिहा डेर ॥
 रामचंद्र सूं पंथी कथा । प्रभु नैं कछा भेद सरवसा ॥२६३७॥
 घन्य साध जे नारी तरै । बेर बेर सबै भस्तुनि करै ॥
 ससय मिटघा गया सदेह । दया धरम सूं धरघो सनेह ॥२६३८॥

सोरठा

नर देही निष पाया, दान सुपात्रा दीजिये ।
 सुरग नरणा सुख बाय, अत मोष्य पद पावही ॥२६३९॥
 इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र सुपात्र वान जटापंथी विधानकं
 ३६ वां विधानक

चौपई

राम का आगे गमन

अग्ने चलेण की इच्छा करी । करन रेवा नदी बहै तिहा खरी ॥
 नाथ बिना किम होजे पार । अंसा तिए ठा करै विचार ॥२६४०॥
 सहर माहि सत्ते साह एक । ताकी मोभा बणी अनेक ॥
 छत्री कलस भुगताहल घग्गे । रतन जोति सूरज सम बग्गे ॥२६४१॥
 मिहामरा परिवसत अनेक । मज्या मोहै अधिक विवेक ॥
 चंदवा चंदव अरगजा और । बहुत जुगनि राखी तिए ठौर ॥२६४२॥
 बाजा बाजै ताके पास । उसपरि चढ़ि चाले बनबाम ॥
 पार उतर देखे बहु देस । वन बेहड अति परबत बेस ॥२६४३॥
 रग रग के गिर पाषाण । उत्तम ठोग रहै मन सान ॥
 कहि भरै पर्वत तै नीर । कही नदी निकसी तिहा तीर ॥२६४४॥

बडक वन में पहुँचना

बडक वन मे पहुँचे जाय । बहुत पुष्प फूली वनराइ ॥
 सोहै वन सुगंध अति वाम । देखत उपजै चित्त उलाम ॥२६४५॥

अडिल्ल

वन की शोभा

बेलि चवेली जातिक चपा केवडा ।
 बने सरोवर कमल नीर निरमल भरघा ॥
 अमर करै गुंजार सुसब्द सुहावणे ।
 फूले फूल अनंत कवल कव लग गिणे ॥२६४६॥

नारिकेल लखुर भंड भर्गे भामली ।
 नींबू सदाफल बेर सेव कह्ये भली ॥
 बड पीपल भर महुवा छाह सीतल जिहां ।
 सकल जाति के रूख देखि बहु सुख लहा ॥२६४७॥
 केसरी भगर सुवास पुष्प चदन बरगे ॥
 बाख बिखड़ी अवर पेड पाइल बरगे ॥
 पुंगी वृक्ष उत्तम जायफल के बरगे ।
 घान तरगे बहु खेति तिहा सु दर भगे ॥२६४८॥

चौपई

कहि हंसने कहा चकोर । बोले सन्द मुहाबन मोर ॥
 कहे तीतर कहे लवै कपोत । सारस वग बतक बहोत ॥२६४९॥
 घुघू कबुआ गिरध बटेर । सूबा सागे पपी बहु हेर ॥
 जे जे सबद करै बिहु बोर । राम नाम सुमरण का सोर ॥२६५०॥
 दडक पर्वत तिहा उतण । गुफा मे रहै सिध उमंग ॥
 कहू चीता कहि सारंग रीछ । साभर सूकर मैडा हीछ ॥२६५१॥
 आरणां मैसा सुरही गाय । पसु जाति सगला तिह ठाँइ ॥
 सरवर माहि कमला का फूल । बलै पवन अति सुख का मूल ॥२६५२॥
 बलै समीर तिहा गभीर । पावै सगला सुख सरीर ॥
 सबल वृक्ष हालै पात । भयो भानंद वन मैं बहु भाति ॥२६५३॥
 क्रीडा करै हंस वन माहि । भरना भरै तिहा सीतल छाह ॥
 हरवै सकल दिवस धन्य भाजि । रामचंद्र आए वन मांकि ॥२६५४॥
 वन सोभा देखै अति भली । गति दिवस देखै मन रली ॥
 रंग रंग के दिपै पाखान । दमकै किरण उखोत है भान ॥२६५५॥
 फिटक सिला की जोति अनूप । सब ठा सोहै महा स्वरूप ॥

बंडक वन की सोभा

ता तलि करावरन बहै । महा अग्नि उज्ज्वल जस रहै ॥२६५६॥
 परबत की भाई जलमाहि । भले वृक्ष तहा सीतल छाह ॥
 स्वर्ग सूर ससी उज्ज्वल बरगे । जल मे दीखै अति सोभा बरगे ॥२६५७॥
 रामचंद्र लखमण भर सीया । जटा पपी निज कर पर लीया ॥
 करि सनान जल क्रीडा करी । नीर उछालै अजुल भरी ॥२६५८॥

वे सुख क्लेश पर वरण्ये जाइ । विदष नगर बसैं तिए ठाँइ ॥
 वरषा रुति का आगमन भया । तहाँ प्रभु ने वासा लिया ॥२६५६॥
 दडक बन अति उत्तम ठोडि । तिहा रघुपति त्रिभुवन सिरमोड ॥
 पञ्चवरण बादल आकास । वरषै मेह अधिक सुखरासि ॥२६६०॥
 पर्वत तैं उतरै जल भीमि । काली घटा रही अति भूमि ॥
 दामिन जोति पृथ्वी पर होइ । हंपति रहसि करै सब कोइ ॥२६६१॥

दूहा

दडक बन वासा लिया, प्रगट्यो तिहा चउमास ॥
 रामचंद त्रिभुवन षणी, मन मे घरैं उल्हास ॥२६६२॥
 इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र बंडक बन निवास विधानकं

३७ वां विधानक

लक्ष्मण को सुगन्ध आना

लक्ष्मण वन फोडा को जाइ । बहुत सुगंध उठी तिए ठाय ॥
 लक्ष्मण मनमे करै विचार । इह सुगंध कैमी अपार ॥२६६३॥
 घेंसी कही देखी न सुणी । इह सुगंध वन में षणी ॥
 कै इह मम सरीर की बास । कै इह रामचंद्र की सुवास ॥२६६४॥
 लक्ष्मण सोचैं बारंबार । इस विध बास नही संसार ॥
 इहो श्रेणिक पूछै कर जोडि । श्री जिन भावैं कथा बहोडि ॥२६६५॥

पूचै कला

घेंसी है किसकी सुवास । नारायण जु सराही तास ॥
 श्री जिन भावैं समझाय । श्रेणिक राय सुणै मन ल्याय ॥२६६६॥
 आदिनाथ स्वामी छदमस्त । नमि विनमि भागै इह बस्त ॥
 भरत बाहुबलि पायो राज । सुधरषा नही हमारा काज ॥२६६७॥
 भाषो बात तजो प्रभू भीन । हम हे राज नग्री का कौन ॥
 धरणेन्द्र ने दीयो इन राज । विजयारव का सौंप्या राज ॥२६६८॥
 वाकैं बस धनबाहुन भया । अजितनाथ कै समोसरण गयो ॥
 भीम नाम राष्यस पति देख । घाया करण श्री जिन की सेव ॥२६६९॥
 धनबाहुन स्यों भया मिल'प । त्रिकूटाचल कुं ले चाल्यो आप ॥
 दीयो लंका कौं तब राज । जोजन आठ लंक गढ साज ॥२६७०॥
 घेंसी हार दियो बा हाथ । सुं'चि सेती पूजी इह नाथ ॥
 वाकैं बस रावण भयो बली । तिहुं पढ साध्या मन रली ॥२६७१॥

वाकै भगनी है चद्रनशा । वरद्वेषण पट राणी सज्जा ॥
वाकै गर्भ पुत्र द्वै भए । संबूक कुंवर निरमए ॥२६७२॥

सूरजहास वडग निमित्त संबूक की तपस्या

सूरजहास वडग निमित्त । संबूक साध्या तब बहु भंत ॥
बारह वर्ष दंडक वन रह्या । साधी विद्या वडग तब लह्या ॥२६७३॥
दिवस सात श्रौंषि मुख रह्यो । संबू कुंवर वडक न ग्रह्यो ॥
जे वडग भावै मो हाथ । तत ले जाउं अपर्यौ साथ ॥२६७४॥
तस सुगंध वन भयो सुवास । लक्ष्मण गयो वडग के पास ॥
बहुत कष्ट थी पायो वडग । बारह वर्ष सह्यो उपसर्ग ॥२६७५॥
ग्रंसे बाबू ल्यायो ध्यान । आप ही भावै कर्म प्रमान ॥
तब मैं ले जाउं निज गेह । इए प्रकारै साधी जन देह ॥२६७६॥

लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति

लक्ष्मण सूरजहास नै पाइ । पुण्यवन नारायण राइ ॥
ततविण मूठ लडग की गही । जाण्यो जोति सूरज की लही ॥२६७७॥
देख्यो बहोत ऊजलै वरस । लक्ष्मण चाहै परिष्या करण ॥
यो है कसोळ देखू चनाय । या की कैसी बार ठहराय ॥२६७८॥
बेडो वास को रह्यो तिहा छाय । संबू कुंवर बैठो तिण ठाइ ॥
लक्ष्मण करै बेडा परि चोट । संबूक कुंवर कटयो तिण वोष ॥२६७९॥
उतर मूंड धरती पर पड्या । गिरी लोथ तिहां लक्ष्मण लडा ॥
सूरजहास लडग इह भेव । करै देवता सगला सेव ॥२६८०॥
देव सकल बोलै तिण बार । ए पुंन्यवंत भण्टम भवतार ॥
संबूक कंवर जु कीया तप । विद्या निमित्त किया बहु जप ॥२६८१॥
द्वादस वर्ष कष्ट बहु सह्या । वाका हेत मन ही मे रह्या ॥
बिन लह्यौ पावै किम भानि । बारह वरष सहै दुखगात ॥२६८२॥

बोहा

बिना पुन्य पावै नही, कष्ट सहै दिन राति ॥
हीन पुन्य परभव किया, सुम फल केम लहंत ॥२६८३॥
पुंन्य जिहां तिहां फिर, इतना लहै सुभाय ॥
विद्या विभव सरीर सुख, सो मिलै अगाऊं आय ॥२६८४॥

चौपई

देव पुनीत आभूषणो की प्राप्ति

देव पुनीत आभूषण पते । केसर चंदन सोभा बरणे ॥
 देवा नै लक्षमण कूँ दिये । नमसकार चरणन कूँ किये ॥२६८५॥
 आनछा लक्षमण कुमार । वनमे खड़ा लगी बहुबार ॥
 सीता रामचंद्र सुं कहै । लक्षमण कहा अब लग वन रहै ॥२६८६॥
 बेगा उठि बाकी सुधि लेहु । जटा पषी तुम मोकूँ देहु ॥
 तब ही लक्षमण पहुँचे आय । तब पूछै सब रघुपति राइ ॥२६८७॥
 तुम यह खडग कहा ते लया । लक्षमण तब व्योरा सब कहा ॥
 तब वह करै बहुत आनंद । खरदूषण घर हवा बंद ॥२६८८॥

चन्द्रनखा द्वारा बिलाप

चन्द्रनखा आवैं धी नित्य । पुत्र मनह धनुं धो चित्त ॥
 नित प्रति देती आन ग्रहार । करती सदा पुत्र की सार ॥२६८९॥
 देख्या बड़ा बास का कटघा । पुत्र ने देख्या मन सहु घटघा ॥
 कुमार खडग किस पर बलाइया । वन कुं काटि कहा उठि गया ॥२६९०॥
 अग्रे देखी सुत की लोंछ । पडघा मुंङ कुंडल की बोध ॥
 देख्या कुंवर खाई पछाड । रोवैं पीटै करै पुकार ॥२६९१॥
 किस दुरजन मेरा मेरा सुत हथ्या । चन्द्रनखा सिर पीटै घणा ॥
 भई चित्त भ्रम विचारै एह । विद्या सु काटि निज देह ॥२६९२॥
 उठो पुत्र कहा करो चरित्र । तेरी बाट जोवैं सब मित्र ॥
 चन्द्रहास रावण पै खडग । तुम चाहो लियो वह मागि ॥२६९३॥

चन्द्रनखा की राम लक्षमण से भेंट

बहुरि सभल करि बोलैं मात । देखु मैं किए कीषा वात ॥
 राम लक्षमण कुं देखे कही । इन मेरघा सुत मारधा सही ॥२६९४॥
 देखि रूप सो भद्र आसन । धन्य वह नारि ज्यासौं ए रतन ॥
 चन्द्रनखा रोवैं तिए वार । सीता आय पूछी तिए सार ॥२६९५॥
 किए कारण तू रोवैं घणी । कहो सांच काहे अणमणी ॥
 चन्द्रनखा बोलैं तव वैन । मेरा जीव कुं महा कुचैन ॥२६९६॥
 मात पिता मेरे को नाहि । अब मे गही तुमारी छांह ॥
 जे लक्षमण मोकूँ करै व्याहृ । तुम जाई समझावो ताहि ॥२६९७॥

नहीं लक्ष्मण नै इच्छा करी । मान मंड गई विद्याधरी ॥
चढ़ि विमाण लंका को गई । रामलक्षण मन ऐसी गई ॥२६६८॥

जो इच्छै थी चन्द्रनला, लक्ष्मण बरी न चित्त ॥
कुमति विचारै प्रति घणी, कवण जहै त्रिय हित ॥२६६९॥

इति श्री वधपुराणे संयुक्तवध विधानकं

३८ वां विधानक

चौपई

चंद्रनला का खरदूषण के पास जाना

चंद्रनला पहुंची निज भूमि । कपडा फाड़ि मचाई धूम ॥
मोस्या केस लगाई बेह । नखतैं सब चीतरी देह ॥२७००॥
इए विष खरदूषण पै गई । सोमबंत तिहां बोलत भई ॥
पूछै पति साची कहो बात । तो कूँ किसै कही भवदात ॥२७०१॥
जिन बरांक तेरा किया सूझ । वाका मरणा भाया भूल ॥
जे यह छिपै जाइ पाताल । मारुं धेर ताकूँ ततकाल ॥२७०२॥
चंद्रनला कहे दंडकारण । तिहा संजूक गया तपकरण ॥
सूरजहास लहग तिहां लह्या । रहै भूमिगोचरी तिहां ॥२७०३॥
मेरा पुत्र उनुं मारिया । मोसूँ घली करी है प्राणीया ॥
मैं तो घली करी पुकार । कोई सहाय भयो न तिण बार ॥२७०४॥
हू भबला वह पुरुष सरीर । कैसें उनसौ हुबै धीर ॥
मत राखन बहुतेरा करघा । एक बटोही तिहा दिठ परघा ॥२७०५॥
उन मोकूँ तब दइ छुडाय । मेरा सील रहा इण भाइ ॥

खरदूषण का कुपित होना

खरदूषण कीप्या सुन बात । चउदहै हजार भूपति संघात ॥२७०६॥
घउवह सहस्र भगल तसु डोर । हय नय पायक रथ बहु धीर ॥
मंजी सूँ पूछै तब मत्र । मंजी मंत्र कह्यो तिण भत ॥२७०७॥
बारह वरष काबर तप किया । लक्ष्मण भावत ही पन लिया ॥
सेवा करै देबता घरों । वासी जुष किया किम बर्य ॥२७०८॥
जो तुम जुष करण की बात । मेजो दूत दसानन पास ॥
एकठा होय सेन्यां बडु सेव । तब तुम वासों जुष करेय ॥२७०९॥

रावण के पास दूत भेजना

इतनी सुणि भेजा तिहा दूत । रावण पासि जाय पहुंत ॥
 सोलह सहस्र मुकटवध जुड़े । हाथ जोड़ि प्रभु आगे सड़े ॥२७१०॥
 दस सिर बीस मुञ्जा बलवत । चन्द्रहास खड्ग सोमंत ॥
 असक्त बाण गदा तसु पाम । इन्द्र समान विभव बल तास ॥२७११॥

खरदूषण का दडक बन पहुँचना

खरदूषण वेटा कै मोह । बहुरि उठा नारी का छोह ॥
 बड़े भुभारू चढ़े विमाण । दडक बन ते पहुँचे आण ॥२७१२॥
 सुण्या देव नदीश्वर ज्याह । कै कोई दुरजन चढ आव ॥
 कै कोई गरुड चढ़ आकास । रामचंद्र हम बोसै भास ॥२७१३॥
 देखे दल नागी तलवार । बज्रावर्त्त घनुष संभार ॥
 सुर जहा सरकत सौ भरघा । एक मनुष्य विडे तल मरघा ॥२७१४॥
 उन अस्त्री उनके घर जाइ । कछो सकल व्योरी समझाइ ॥
 ता कारण चढ़ि लाए घणा । अन्न सावधान हुवा ही वण्णा ॥२७१५॥
 सुण्या सबद सीता निज कान । रामचंद्र सुं लिपटी आन ॥
 बहुत मोर काहे ते होइ । केसरी सिंघ दहाडै कोइ ॥२७१६॥
 लक्ष्मण तब करै वीनती । तुम सीता सग छोडो मती ॥

लक्ष्मण द्वारा युद्ध करना

इनसूँ जाय करूँ मैं युध । मे हारू तब लीज्यो सुध ॥२७१७॥
 हार जाणौ तब पूरू संख । तब कीज्यो तुम मेरा पक्ष ॥
 सूरजहास खड्ग कर लिया । बज्रावर्त्त टकार तब किया ॥२७१८॥
 उततै छूटै विद्या बाण । बरछी घरसे गदा मेघ समान ॥
 गोला गोली पडै अनत । इततै छूटै बज्रावर्त्त ॥२७१९॥
 लक्ष्मण कै लागै नही धाव । बिद्याधर भुलै तिण ठाव ॥
 जैसे कमल सरोवर माहि । ऐसे भुंड भुवि मध्य तिराहि ॥२७२०॥
 हाथी घोडे पर्वत डेर । पही लोथ सगलो बन घेर ॥
 भूमे सुभट स्वामि के काज । जिनकू धान खाये की लाज ॥२७२१॥

रावण का आगमन

रावण सुणि आयो तिण बार । पहुँच्यो दंडकवन है मंझारि ॥
 रामचंद्र सीता बैठारि । रावण दृष्टि सीता पर डारि ॥२७२२॥

सीता को देखना

सीता की देखी छवि धरणी । ते मुख गोचर जाइ न भली ॥
 जे सीता के नख की कांति । भेसी नहीं मंदोदरी गात ॥२७२३॥
 जुष तणी गति गयो भूल । उपजी कुबुधि मरण अनुकूल ॥
 करे सौच सीता किम हरू । मैं तो सील महाव्रत धरू ॥२७२४॥
 सीलव्रत टालो किण भाति । सौचै धरणा बली नही बात ॥
 अब लग मे नही करी भनीत । छोड़ू नही धरम की रीत ॥२७२५॥
 अब जो सुणै दूसरा कोइ । तो अपलोक प्रथी पर होइ ॥
 जो मैं छोड़ू भेसी नारि । तो बिरहानल सहूँ अपार ॥२७२६॥
 भेसी विष याकूँ ले जाउ । कोई न समझै मेरा नांव ॥

करणगुप्ति विद्या का ध्यान करना

करणगुप्ति विद्या सभारि । विद्या बोली बात विचारि ॥२७२७॥
 रामचंद्र सीता के पास । लक्ष्मण जुष करै वन नास ॥
 रामप्रति भेसी हरि कही । मेरी हारि तबैं जाणो सही ॥२७२८॥
 सख नाद सबद मैं करूँ । तब तुम आपणा चित मैं धरूँ ॥
 करके नाद तब ऊपरि आइ । लक्ष्मण एम गये समझाइ ॥२७२९॥
 जै तुम संखनाद कगे भरपूर । रामचंद्र उठि जावैं सूर ॥
 तब तुम तुम सीता हर ले जाव । इण प्रकार तुम करो उपाव ॥२७३०॥

रावण द्वारा शखनाद करना

छोटयो बाण भयो अवकार । सिधनाद पूरयो चिचार ॥

राम का लक्ष्मण के पास जाना

नाद करत रघुपति साभल्यो । रामचंद्र लक्ष्मण डिग बल्यो ॥२७३१॥

रावण द्वारा सीता हरण

छोटा हुवा राम ने सीण । सीता ले रावण करै गौण ॥
 पुहप विमाण ले बैठा बल्यो । निकले भनि पाष विचार न करयो ॥२७३२॥

सीता का बिलाप

सीता राम नाम उर जपै । लौचै केस देह अति कपै ॥
 रे पापी कहूँ तू है कौण । मोकीं लेना चाहै जिम पौन ॥२७३३॥

जटायु द्वारा आक्रमण

रोवै सीता पीटै निज देह । जटा पंथी प्राक्रमै करै एह ॥
 मारै बाँच रावण के सीस । नष सौं भूँष करै बहु रीस ॥२७३४॥

बली खिर रावण के मुख्य । जटा पंथी दीयो अति दुःख ॥
रिस करि रावण पंथी गहा । तोड़ी पक्ष छेदन कुल लहा ॥२७३५॥
नाखि दियो पड़्यो घरती घाव । घबघुवा सुतै तिल्ल अय ॥

रावण द्वारा खेद करना

सीता देख करत विलाप । रावण बुणै सीस निज आप ॥२७३६॥
अनंतबीरज स्वामी अरहंत । तिरपै लियो सील इणमंत ॥
कबण कुबुधि उपजी मो चित्त । परनारी सो लगाया हित ॥२७३७॥
पतिव्रता है सीता सती । इसके मन मे पाप न रती ॥
छोड़ि राज मैं दिव्या लेहुं । उपनु बैराग विचारै भेव ॥२७३८॥
याने ले लंका मैं जाउं । बिन बाछा मैं संग न करूं ॥
इसकी इच्छा होवै जबै । करूं सग मिलाप मैं तबै ॥२७३९॥
मांही तो बह पुत्री समान । इह विचार पहुतो निज यान ॥
लक्ष्मण रामचंद्र सो कहैं । तुम क्यों आए वहां कुरण रहै ॥२७४०॥
मैं तो सब दुरजन संहार । खरद्वेषण को मार्यो डार ॥

राम का विलाप

रामचंद्र तब बोले बैन । सिधनाद सुणि भया कुबैन ॥२७४१॥
रामचंद्र फिर आये तिहा । सीता दृष्टि पड़ी नहीं बहां ॥
खाय पछाड धरती पर गिरे । सीता सीता मुख तै करै ॥२७४२॥
फाडे वस्त्र सिर केस खसोट । गह्यो धनुष किस पर करै चोट ॥
वन बेहड़ सरवर भर वृक्ष । कही न देजी सीता प्रतप्प ॥२७४३॥
जटा पंथी मारग मे पड़्या । सास उसान ले चाहै मर्या ॥
पंच नाथ संमलाए कान । जटा पंथी का चया प्रांन ॥२७४४॥
सीता तुमते रही कठि । बह तो नाद सबद था भूठि ॥
हम कु तुम कहा देहो दुःख । उठि आवो देखो तुम मुख ॥२७४५॥
व्याकुल भया रघुपति का मन । रुदन करत तब अमिमो वन ॥
दोइ आईं तीजी सीता सग । भयो विछीह जीव का रंग ॥२७४६॥
हेर्या वन हेरी सब लोह । रामचंद्र ने व्याप्या मीह ॥
बहुत वियोग भया तिरण बार । उठै लहर तब खावै पछाड ॥२७४७॥

बूहा

जैसा दुख रघु नै भया, कहां लग करूं बलाण ॥
चित भरम्या त्रिभुवन बणी, जलया सकल सर्याण ॥२७४८॥

इति श्री वधपुराणे सीताहरण रामबिलाप बिधानकं

३६ बां बिधानक

ओपहुं

लक्ष्मण खरदूषण युद्ध

लक्ष्मण खडदूषण सों जुष । कायर देख रही ना सुष ॥
 सूरवीर मन करै उल्हास । सुर नर असुर करै जैकार ॥२७४६॥
 विराधित चन्द्रोदिक का सुत । विद्याधर सेना संजुत ॥
 लक्ष्मण को कीयो नमस्कार । विनम्रवंत हूँ बारंवार ॥२७४७॥
 प्रभुजी मुक्त को आग्या देहु । दुरजन दल नाशुं करि वेहु ॥
 लक्ष्मण विद्याधर प्रति कहैं । मेरा पराक्रम अब तू लहैं ॥२७४८॥
 देख जु इनकूं परलय करूं । खडदूषण जम मंदिर घरू ॥
 विद्याधर सब विस्मय होय । या सम दूजा बली न कोय ॥२७४९॥
 धन्य धन्य करि विनती करै । खडदूषण सौं जे तुम लडै ॥
 सब सेना बाकी मैं हणूं । अपने आगै भवरन मिलूं ॥२७५०॥
 विद्याधर विद्या संभालि । खडदूषण के सेनापति का काल ॥
 वा सनमुख विद्याधर हुआ । पायक सो पायक लडि मुवा ॥२७५१॥
 रथ सूं रथ टूटै निर पडै । हाथी सूं हाथी तिहां भिडै ॥
 खडदूषण विद्या संभालि । गर्दभ मुख कीया तिए बार ॥२७५२॥
 बडी दाढ भयदायक घणां । कहैक तैं मेरा सुत हणां ॥
 अब मैं लेस्यूं सुत का बैर । चद्रनखा विगोई तैं घेरि ॥२७५३॥
 अब तुम को भेजूं जम पास । तो कूं अबर जनम की आस ॥
 खैच चलायो कानिक बाण । लक्ष्मण कै लाम्यो आई कांण ॥२७५४॥
 लक्ष्मण कहै सुणि रे तू गवार । तू तो गदहा की उणिहार ॥
 सिध गदह सरभर किम होइ । अब तूं आया आपा खोइ ॥२७५५॥
 मारघो बाण लखण नैं खैचि । टूटघा छत्र निसान रथ पैच ॥
 खरदूषण घरती गिर पड्या । गहि तरवार भूमि पर पड्या ॥२७५६॥

लक्ष्मण की खरदूषण पर विजय

लक्ष्मण सूरजहास संभार । मार्या खरदूषण भूपाल ॥
 ज्यूं माली उडि जाय बयार । त्यों सब सेन्या आगी हार ॥२७५७॥

जीत्या लक्ष्मण जै जै थई । पुष्प दृष्टि लक्ष्मण पर हुई ॥
 भाया रामचंद्र कै बान । देख्या सोनत चिता भई भान ॥२७६१॥
 सीता नही देखी तिण ठौर । मनमे चिता व्यापी और ॥
 रामचंद्र जगयो जाय । पूछी चिता खबर सुभाय ॥२७६२॥
 रामचंद्र बोले तिण बार । किण ही चोरी सीता नारि ॥
 कै कोई सिध गया है लाय । कै छल करि ले गया कोई राय ॥२७६३॥

लक्ष्मण का विलाप

लक्ष्मण करै बहोत विलाप । कवण कर्म तै भयो सताप ॥
 वन में भ्राय लिया आश्रम । कोई उदय भयो अशुभ कर्म ॥२७६४॥
 इहा ह्वै है सीता का हरण । पावै नही तो पूरा मरख ॥

विद्याधरों का आगमन

विराधित विद्याधर तिहा भ्राय । रामचंद्र कै लाग्या पाइ ॥२७६५॥
 रामचंद्र पूछै इह कौन । इतुं कितही तै कीया मौन ॥
 लक्ष्मण नै महिमा करी घणी । या की कीर्त्त जाई न भणी ॥२७६६॥
 मो कूँ कीनी बहुत सहाय । चद्रोदित सुत विराधित राय ॥
 लक्ष्मण विद्याधर सूँ कही । तुम सीता कूँ दू डो मही ॥२७६७॥
 जो नही सीता की सुघ होई । हम दोन्या मे बचै न कोइ ॥

धारों और दूत भेजना

कनकजटी का रतनजटी पुत्र । ठाम ठाम पठाए दूत बिचित्र ॥२७६८॥
 रतनजटी सुगियाँ इह बोल । राम राम करि पुकारै रोल ॥

रावण के पास जाना

तिहा जाइ रावण कूँ घेर । पापी त्याग सीता इण बेर ॥२७६९॥
 रामचंद्र त्रिभुवन जगदीस । अब तू जाइ नबावो सीस ॥
 तेरी लंका होइ विनास । इम भासै विद्याधर तास ॥२७७०॥
 तो तू जीवैना दिन घणै । नाही तोकूँ जीवत हणै ॥
 भयो जुक रावण सुँ तिहा । रावण सोच करै है जिहा ॥२७७१॥
 इसकै साथ सेन्या है घणी । मैं एकाकी सुँ भंसी बणी ॥
 माया सो सीता भृत करी । रतनजटी इह चिता घरी ॥२७७२॥
 या कारण भायो इस ठौर । सीता भुईं करि दुख प्रति जोर ॥
 रावण प्रवै लगाऊँ हाथ । बा को बाँध ले जाऊँ साथ ॥२७७३॥

रे पापी रावण बुधि हीण । इह तो बहून् भामङ्गल की चीण ॥
तेरा काटंगा दस सीस । तोड़ैगा तेरी भुजा सब बीस ॥२७७४॥
रावण नै तब मार्या बाण । रतनजटी तब पड़्या समुद्र मे घ्राण ॥
पच नाम का सुमरण किया । समुद्र तिर बाहर भाइया ॥२७७५॥

कपि द्वारा देखना

कपि पर्वत परि उभो भयो । रावण लका मे तब गयो ॥
बिराधित नै दूँडी सब दिसा । सीया न लापी मनमे संसा ॥२७७६॥
सब फिर आये नीची दृष्टि । राम लज्जन नै व्यापियो अति कष्ट ॥
बिराधित नै बोले रामचन्द्र । पूरव भव के छोटे दुन्व ॥२७७७॥
असुभ उदय हम पाये दुःख । तुम मो काहि न वाछउं सुख ॥
अवर फिरे तुम व्याकूँ देस । मेरा तुम मान्या उपदेस ॥२७७८॥
मकल हमारे कर्म की चाल । तुम बिता मति करो मूपाल ॥
बिराधित बोले विनती करै । प्रभू अरण्य संसय परिहरे ॥२७७९॥
दीप भटाई दूँड जाइ । तुमको सीता देहा भाइ ॥
इक बिता इक मनमे गणी । तुम खरदूषण ग्रीवा हणी ॥२७८०॥

प्रलका गढ में पहुँचना

रावण कुंभकर्ण बलिबत । भीषण इन्द्रजीत सामंत ॥
मेघनाद मे बल अपार । किषदपुर सुग्रीव अगद गुण सार ॥२७८१॥
किषदपुर नल नील हनुमान । ए तुमसौं करि हूँ धमसान ॥
चलहु प्रलंका गढ लेहु । सद कुंमर निकाल कै देहु ॥२७८२॥
पवन भामङ्गल विद्याधर राव । वे सब आये हूँये भाव ॥
दोय रथ समराउ भले । लक्ष्मण राम प्रलंका चले ॥२७८३॥
जाइ प्रलका गढ ले लिया । चद्रनखा सुत काठिकं दिया ॥
वे पढ़ले रावण के पास । राम कहै भलो बनवास ॥२७८४॥
सीता बिन सब देस उजाड । रामचंद्र चितवै उपगार ॥
श्री भगवंत का तिहा देहुरा । पूजा करी भाव सु खरा ॥२७८५॥
अष्ट द्रव्य सूँ पूजै पाय । दुख संताप गए बिलाइ ॥
इण बिब रहै प्रलंका माहि । सीतां कारण चित कराहि ॥२७८६॥

बूहा

असुन कर्म परभाव तै, बापी बिता बेल ॥
जो कछु भिख्यो खलाट में, ताहि सर्क कुण पेस ॥२७८७॥

इति श्री व्यापराणे सीता विधौ विधानकं

४० वां विधानक

चौपई

रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति

रत्नजटी कबु पर्वत धिस । रावण देखे दक्षिण भयो बिस ।।
 मद चाल से चलै विमान । रावण लग्या काम का बाण ।।२७८८।।
 सीता प्रति बोलै घाघीन । मुल दिखावो भोकूँ परवीन ।।
 जे भोकूँ दर्शन नही देहु । मेरे प्राण छुटैगे अबेह ।।२७८९।।
 तुम कारण प्राण मम जाहि । इह तो पाप लग्यो तुम थाय ।।
 तपसी कहा राम लक्ष्मणा । तिनका दुख मानै मत घणा ।।२७९०।।
 कहा अजोघ्या तिमका घणी । वनमे रहू तपसी रूप खुच्या घणी ।।
 मै तो नरपति सक समान । इछो सो पावो मन माहि ।।२७९१।।
 सर्व प्रथई पर है तुम राज । करो भोग मनबंधित काज ।।
 जे तूँ मेरा कोरा सिर मै देइ । तो मै मनतै तजूँ सनेह ।।२७९२।।
 सोलह सहस्र राणिया मभार । तुम्हें पटराणी करू सिरदार ।।
 तुमकूँ फेर दिसाउ सुमेर । देखो यह सागर बहु फेर ।।२७९३।।
 एह सुख देखो छडो सोग । राजरिष का भुगतो भोग ।।

सीता का करारा उत्तर

सीता कहै सुणरे पापीष्ट । जे तू खोबै खोटी द्रष्ट ।।२७९४।।
 जे तू फरसै मेरी देह । खू मराफ तू होवंगा बेह ।।
 परनारी भगतै ने मूढ । पडै नरक दुख सहै मटूढ ।।२७९५।।
 मेरे रामचंद्र का ध्यान । उन बिन ततक्षण तजी पराण ।।
 राम बिना जितना नर और । मेरै तान भ्रात की और ।।२७९६।।
 हस्त प्रहस्त खरदूषण का लोग । चालकेत महासेड कै मन सोण ।।
 गिरवा नरथ भूपति मिले आइ । खरदूषण तिहा भुम्है राई ।।२७९७।।
 रावण निकट आयकै मिले । खरदूषण की सुणी पर जले ।।
 गुण गीवाहर रख बाग । तिहा फल फूल रहे बे लाग ।।२७९८।।

प्रसोक बाटिका में सीता को रखना

प्रसोष वृक्ष तले सीता राखि । चन्द्रमाला बिनबै सहू साखि ।।
 खरदूषण संबूक को मारि । हमैं पताल तैं दिवा निकारि ।।२७९९।।

चन्द्रनला का रावण से निवेदन

रावण चन्द्रनला ने कहै । तुम उपाय ए फल लगे ॥
 एता सब तुम भया उपाय । मारवा खरदूषण ला राव ॥२८००॥
 गाव देस्या तू बंठी लाह । अपणा तन मन राखो ठाह ॥
 प्रेसी कहै अंतहपुर जाइ । सेव्या पोढ़े व्याकुल काह ॥२८०१॥

मंदोदरी द्वारा रावण से पूछना एवं रावण का उत्तर

मंदोदरी पूछै कर जोड़ि । दुचिते कहा भए तुम खोजि ॥
 रावण कहै सीता की बात । हरि लीवो बाकुं इण भाति ॥२८०२॥
 खरदूषण सबुद कुमार । लक्ष्मण ने वे मारे डारि ॥
 अबलोकिनी बिछा ने पूछ । वन मो बताई सगली गुह्य ॥२८०३॥
 मैं बाकी सीता को हरी । बाहि बिछोहा कत की पडी ॥
 बाकै राम नाम की जाप । अन्नपाणी बिन सहे कलाप ॥२८०४॥
 प्रेसी चतुर दूती जो होइ । बा कूँ जाय समझावै कोइ ॥
 मो सेती जो मानै रति । तो मेरे जीय की मिटै चित ॥२८०५॥
 वा बिन ए जात है प्राण । सुध बुध मुजि गई सब स्वाण ॥
 मंदोदरी मन करै बिचार । करु उपाव तो बचै भरतार ॥२८०६॥

दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास

दूती सुघड विचक्षण नारि । बा कौं ततक्षण लहे हकार ॥
 सीता नै समझावो जाय । अन्नपाणी जो अब ही लाय ॥२८०७॥
 रावण तीन खड का धरि । राम लक्ष्मण तपसी भुरी ॥
 उनक कारण क्या इतना दुःख । करो योग युगतो सब सुख ॥२८०८॥
 दूती चली ग्रीवारव ठाव । सोभा देखी नदनवन भाव ॥
 भले कृष्ण बेल बहु बरणी । नामावली न जाये गिरणी ॥२८०९॥
 इन्द्रलोक सम उपवन बन्धा । सीता सबद असोक तलि मुन्या ॥
 आ मुख राम नाम का ध्यान । ताकै चित न भावै ध्यान ॥२८१०॥
 दूती जस रावण का नाथ । करै नृत्य बाजिब बजाय ॥
 सीमन सबै न देखै सिवा । अति पतिव्रता जनक की बिया ॥२८११॥
 दूती दूत कर्म सब किये । सीता के कछु नाही हिए ॥
 हाथ भाष दिखलावे बने । मन नहि मानै सीता तने ॥२८१२॥

दूहा

दूती फिर आई सबै, किये बहुत उपचार ॥

सत राखै करतार सु, कवण दुलावण हार ॥२८१३॥

जोषई

रावण की व्यकुलता

रावण सू दूती कहै वयण । सीता तो खोलै नहीं नयण ॥

अन पाणी तजि लियो संन्यास । ऊंचे नीचे लेत उसास ॥२८१४॥

बहुत भाति समझायी ताहि । मंत्र जंत्र कछु लागे नाहि ॥

सुणी बात रावण अकुलाइ । हाथ मसलकर बहु पछताइ ॥२८१५॥

पिण बाहर धिण भीतर जाइ । ता कै चित्त कछु न सुहाइ ॥

अम्या चित्त सब सुध बीसरी । चिता मिटै न एकै घरी ॥२८१६॥

अभीषण च्यारु मंत्री ते डाय । बैठि मतो इण भाति उपाइ ॥

मन्त्रियों द्वारा विचार

रावण क्या तै विभल हुयो । बाको कछु भेद न पाइयो ॥२८१७॥

सुभन मंत्र मंत्री इम कहै । खरदूषण के सोग मे रहै ॥

इह आशचर्य विचारै खरा । बारह वरष सबुक तप करचा ॥२८१८॥

सूर्यहास खडग तब लह्या । लक्ष्मण नै पल ही मे गह्या ॥

वे दोन्युं थे मेरी वाह । ग्रैमा मारचा छिनकै माहि ॥२८१९॥

ता कारण रावण दुख करै । अम्या चित्त सुधि बुधि बीसरी ॥

पचमुख दूजा मंत्री कहै वैन । रावण को इस विध नहीं जैन ॥२८२०॥

लक्ष्मण एक खरदूषण दल घणा । उन तो सब सेन्या बल हम्या ॥

खरदूषण मार्या सबूक । तातै होइ रह्या है मूक ॥२८२१॥

सह आमती तीजो मंतरी । उनतो समझि बात कही खरी ॥

अश्वप्रीव प्रतिनारायण हुआ । सुप्रतिष्ठ नारायण नै ध्यो किया ॥२८२२॥

अब यह लक्ष्मण है अति बली । खरदूषण की सेन्या दली ॥

वाकै सेन्या जुडत न वार । रावण के मन इसो विचार ॥२८२३॥

चाथा मंत्री बोलै विनयवत । विराधित विद्याधर बलवत ॥

बह तो रामचंद्र सु मिल्या । वाका हित सुप्रीव सों मिल्या ॥२८२४॥

उसका मित्र बली हनुमान । रामचन्द्र सों मिलि है आन ॥

तो लंका टूटै तिहू घडी । ऐसी बात चित्त मे खरी २८२५॥

सुग्रीव राज अष्ट जो करे । लका परि हथनाला बरे ॥
 सूर सुभट राखे चिह्न और । सुग्रीव राज छुडावो ठोर ॥२८२६॥
 विद्याधर इक किर्यदपुर गयो । तारा राणी सुं धासक्त भयो ॥
 सुग्रीव दियो देस ते काहि । सूरज के सुत चिता बाहि ॥२८२७॥

बहुत सोच दुहु वा बली, निसबासर इह ध्यान ॥
 रामचंद्र सीता धरणी, बनी कहा अब धारिण ॥२८२८॥

इति श्री पद्मपुराणे त्रय्या प्रकार विद्यामकं

४१ वां विद्यामक

श्रीपई

राम सुग्रीव मिलन

किंचन नगर सूरज राज भूप । ताको पुत्र सुग्रीव स्वरूप ।
 तारा राणी ताके पटधरणी । अंगद पुत्र बल सोभा धरणी ॥२८२९॥
 सुग्रीव दडक वन माहि धाय । देखी सोय पड़ी तिरण ठाय ॥
 बटोही पूछ सुण्यो सब भेद । भयी सोच मन मे अखेद ॥२८३०॥
 मेरे मन इच्छा थी और । लखनूषण भूम्या इस ठौर ॥
 अब हू मना कबल सूं करू । रावण की सरणागति परू ॥२८३१॥
 बहुरि विचार करे सुग्रीव । जो मोकूं बाधे दस ग्रीव ॥
 रामचंद्र सों आकर मिलूं । तो मैं राज लहू निरमलूं ॥२८३२॥
 मात छोहणी दल सुग्रीव के संग । जाके भयो राज मे भंग ॥
 राम लक्ष्मण पै गयी सुग्रीव । करि डडोल नवाई ग्रीव ॥२८३३॥
 मलिन रूप सुग्रीव कूं देखि । पूछै रघुपति ताहि विशेष ॥

राम के द्वारा सुग्रीव के सम्बन्ध जानकारी पाना

विराधित सूं पूछयो विगतांत । सुग्रीव दुखित है सो कहि भांति ॥२८३४॥
 विराधित वचन कहे समभाय । किंचनपुर नगरी का राव ॥
 मायारूपी विद्याधर एक धाय । सुग्रीवरूप अंतहपुर जाय ॥२८३५॥
 तारा राणी करे विचार । इह तो है धवरै अणुं हार ॥
 किकर तब ही लिए बुलाय । कही बेग सुग्रीव पै जाइ ॥२८३६॥
 वन फीटा कूं भूपति गयो । मेरे मन एह संसय भयो ॥
 किकर दोडया वनह मझार । दुचिता देख्यो भूप तिरण बार ॥२८३७॥

सोचै नृप किकर कुं देखि । अंगद गया बेर दक्षसु बिसेष ॥
 वाकूँ लार्य कछु इक बार । तो इहै आया इसै बिचार ॥२८३८॥
 के मन कुं बर भयो बैराग । दिव्या लेहै ब्रह कुं त्याग ॥
 के तारा राणी दुख दिया । यह कारण हू दुचिता भया ॥२८३९॥
 पट्ट्या किकर बिनती करी । प्रभू चलो उठि बा ही षही ॥
 एक अचंभा देख्या आज । तुम सूरत कोई आयो राज ॥२८४०॥
 अंतहपुरी कियो परबेस । राणी तुमसौ किया सदेस ॥
 राजा अयो नगर मभार । दरबानें रोख्या तिरुबार ॥२८४१॥
 अटक बचन मुख सेती कहै । राजा घंस्या तिहा यह लहै ॥
 अण्णी सूरत देख्या और । दोनूँ भूप करै तिहा सोर ॥२८४२॥
 मंत्री सोच मता इह किया । अंगद प्रतै राज पद दिया ॥
 वे दोन्यु नृप दिया निकाल । बाढी मनमे चिता जाल ॥२८४३॥
 जब लग समझ पड़े कछु नही । तब लग राज तुमारा सही ॥
 बिराधित दुजाइ हणुमत । उनै न पाया इनका अत ॥२८४४॥
 ए दोन्युं एकं उणिहार । इनका न्याव नही निरधार ॥

राम द्वारा सुग्रीव को राज देना

रामचंद्र की क्रिया अई । सुग्रीव भूप को उपमा दई ॥२८४५॥
 तुमारे दुसमन को मारी ठौर । अण्णो बीज्यो राज बहोरि ॥
 जो न सुधारो तेरा काज । तो मैं दिव्या लेम्युं आजि ॥२८४६॥
 धिम धिम इल मंसारी गीत । ना कारण ऐसी विपरीत ॥
 जंसा दुख तुम्है तैसा मोहि । हु अब देम माध छो तोहि ॥२८४७॥
 तू भी करो हमारा काम । सीता दूँठ सुणावो ठाम ॥
 कहै सुग्रीव सात दिन माहि । वाकी सुधि पढ़ुं चाऊ आहि ॥२८४८॥
 सात दिवस मैं जो मोहि काम न करो । तो हू अगनि माहि जब मरू ॥
 भेज्यो दूत बिट सुग्रीव पास । वहै बढि आया जुष की आस ॥२८४९॥
 दोनु तरफ दाखण जुष भया । सुग्रीवै गदा मारि धर गया ॥
 निर्भयवंत ते भया अठोल । ह्या सुग्रीव बेत्या फिर बोल ॥२८५०॥
 रामपास इक दून पठाइ । बेरी मदद करो जो आय ॥

सुग्रीव की विजय

उन तो मारि किये चकचूर । मो सूर् जुष भया जरपूर ॥२८५१॥

रामचंद्र सेना बहुत जोड़ि । बिट सुग्रीव परि दीनी दोड़ ॥
 चढ़ि दोड़्या इन सनमुख छाड़ । बाजा मारु सब बजाइ ॥२८५२॥
 दोन्युं छोड़े विद्या बाण । बहुता का उड़ गये पराण ॥
 रामचंद्र भय करै न गान । बिट सुग्रीव लड़े इस भात ॥२८५३॥
 सुग्रीव राज पायो फिर देस । बहुत आनंद मुख लख्यो नरेस ॥
 रामचन्द्र का महोद्धव किया । तेरह कन्या भेट त्याइया ॥२८५४॥

सुग्रीव द्वारा तेरह कन्याओं को भेंट में देना

चन्द्राभान हृदया आवली । हिरदै दया धर्म की भली ॥
 अनधरा नाम चउथी श्रीकांति । सुदरवती चन्द्रसम क्रान्ति ॥२८५५॥
 मनोवाहनी व्यास सिरी । मदनोत्सवा गुणवंती खरी ॥
 पद्मावती जिनवती बहुरूप । सुण लावण्य अति विसं अनूप ॥२८५६॥
 पुण्य संजोग मिली ए नारि । रूप लक्षण गुण अगम अपार ॥
 रामचंद्र कूँ करि डडोत । सगला विनती करी बहोत ॥२८५७॥
 देस देस के आये राय । कोई नहीं हम द्रष्टं छाड़ ॥
 तुमांगी सेवा हम करि हे भनी । बहुत भांति होसी मन रली ॥२८५८॥
 श्री रामचंद्र पुनिवत धरम अवतार हैं ।
 पुण्य गुण बल रूप लख्यो अपार हैं ॥
 कनक बरण कामिनी के मन चाब हैं ।
 हरी जु सीता नारि असुभ पर भाव हैं ॥२८५९॥

इति श्री पद्यपुराणे बिट सुग्रीव विधानकं

४२ वां विधानकं

चौपई

कन्याओं के हाव भाव

कन्या सकल परम परबीण । ताल मृदंग बजावैं बीण ॥
 कोई नाबं कोई नृत्य जु करै । नो तन तान से चारै करै ॥२८६०॥
 रामचन्द्र का दुल्या न चित्त अधिक सोच सीता को नित्य ॥
 कामनी हाव भाव बहु किया । जन के कछु न आई हिया ॥२८६१॥
 राम लवण्य जोसे तिह बार । सुग्रीव अपणुं काज संवार ॥
 अपणुं मुख की भावैं रवि । सीता का कछु करै न सोच ॥२८६२॥

राम लक्ष्मण कियदपुर जाइ । सुग्रीव सौं बात कही समझाइ ॥
 सुग्रीव धाय चरण कूं नयां । प्रभुजी मोइ ऊपर कीजे दया ॥२८६३॥
 भैंस सीता सुधि ल्याऊ तोहि । तब मैं करू तुमारी सेव ॥
 रामचंद्र सुग्रीव सूं कहै । इह ससय मेरे मन रहै ॥२८६४॥
 मोह फंद मे बिसर गयो सुघ । भज मे भैंसी थापु बुधि ॥

जक्षदत्त द्वारा माता प्राप्ति की कथा

ज्यो जक्षदत्त नै माता नही । तारा इरा मुनिवर नै कही ॥२८६५॥
 जक्षदत्त किम पाई माइ । ते विरतात कहो समझाइ ॥
 अंजन नगर भूप निहा यज्ञ । राजनदे नारि उत्तम पक्ष ॥२८६६॥
 यज्ञदत्त बेस्या के ग्रह । देखै कौनिष धरै सनेह ॥
 दमंत्रवती ताकै निज बसै । जक्षदत्त तामूं नित हसै ॥२८६७॥
 तारायण मुनिवर यह देख । जक्षदत्त समझाया प्रेष ॥
 इह तो तुभ माता परतक्ष । कहा अग्यान भया दत्तदक्ष ॥२८६८॥
 कुंवर भएँ कैसे इह मात । व्योरा सु भाषो ते बात ॥
 मुनिवर कहै मृतकवती देस । कनक महाजन सुग उपदेस ॥२८६९॥
 धरणी नाम तास की नारि । धनदत्त पुत्र लियो अवतार ॥
 दमंत्रवती व्याही अस्तरी । रूप लक्षण सौं सोभै खरी ॥२८७०॥
 धनदत्त बाल्यो लाद जिहाज । दमंत्रवती नै सौंपी लाज ॥
 रत्नकवल दे निसको गथा । दमंत्रवती सुं गर्भ स्थित भया ॥२८७१॥
 सासु सुसरं दई निकाल । उत्पलका संग दीनी नारि ॥
 रोवत चली साह की बहु । कोय न बैठन देवै कहू ॥२८७२॥
 विणजारै संगि दुख सौं जाइ । वनफल कबहु भोजन खाइ ॥
 उत्पल दासी भुयगम इसी । देह छोडि जम मंदिर बसी ॥२८७३॥
 रही अकेली दुखित घणी । प्रभुभ कर्म तैं भैंसी वणी ॥
 भयो पुत्र अति चिंता करी । मे तो मृत जनम्यी इस घडी ॥२८७४॥
 जे रालुं तो पालूँ किहू भाति । रत्नकंबल में लपेटी राति ॥
 जसराय को दीया पूत । जक्षदत्त नाम संयुत ॥२८७५॥
 दमंत्रवती को दीया दाम । यह ती रहै बेस्यां निज ठाम ॥
 जे तेरै मन आबै नही । रत्नकंबल गांठ कीडी में सही ॥२८७६॥

जशदस सुणि दोहियो तुरंत । रत्नकंबल गठडी में बहुमंत ॥
 माता बूँ पूछ्या सब भेद । मनतें कुमति भई सब छेद ॥२८७७॥
 धनदस सेती मिलिबो कुमार । भयो आनंद सकल परवार ॥
 दया विष तुम की सीता मिलै । सूर सुभट बुलाइयो अलै ॥२८७८॥

चारों ओर सीता की खोज

दोप अढाई मैं सब ठौर । बेगा जाइ करो तुम दौर ॥
 जहां सीता देखो तुम जाइ । तिहा की खबर बेगा खो भाय ॥२८७९॥
 देन देस को नरपति गए । सुधीव बहुरि चरग को नए ॥
 प्रभुजी भोकूँ भाग्या होइ । मैं भी पानक सोखूँ कोइ ॥२८८०॥
 बंठि विमाण चल्यो सुधीव । कांबु पर्वत की आयो सीव ॥
 रतनजटी विद्याधर तिहा । फरहर्ता देस्या नेजा तिहा ॥२८८१॥
 इह किसकी बुजा फरहराइ । उतर भूमि तिहा देखै भाइ ॥
 रतनजटी डरप्या तसु देखि । इह कोई है दुरजन भेष २८८२॥

रतनजटी और सुधीव की भेंट

सुधीव भूप पूछै रतनजटी । ते कहि रावण सीता हरी ॥
 मैं बहु तेरा किया उपाय । ता तै कोई न लागो डाव ॥२८८३॥
 राम का नाम जपे थी सिया । दुलित बहुत जनक की चिया ॥
 मुनि सुधीव रतनजटी ल्याइया । बंठि विमाण राम दिग आइया ॥२८८४॥

रतनजटी द्वारा लंका का परिचय

रतनजटी कीयो नमस्कार । बात सकल भाषी निरधार ॥
 राक्षसपुर इस सागर माहि । सातसैं जोजन चौडाइ जाहि ॥२८८५॥
 एक वीस जोजन की लंबाई । त्रिकुटाचल नव जोजन चौडाइ ॥
 पचास जोजन की उंचाई । बा सम गढ नाहीं किए ठाई ॥२८८६॥
 तीस जोजन कै लंका फेर । रावण कुंभकरण ज्युं जेर ॥
 भभीषण तै दुरजन सब डरै । इन्द्रजीत मँचनाव बल भरै ॥२८८७॥
 पंद्रहसैं ओहणी बल संव । इंद्रादिक कियो मान मंग ॥
 बस नगर वसै ता पास । भुर्बा सुमेरपुर अहिलापुर बास ॥२८८८॥
 जोषपुर हरिपुर सागरपुरी । अक्षरपुर तिहां नयरी ॥
 रावण सब भूपति कोई नाहि । ऐसे बचन सुणै नरनाह ॥२८८९॥

अइसी पईज कहा तुम करो । सीता तखो सोम परिहरो ॥
 अवर विवाहो भुगतो भोग । कहा करो तुम इतना सोम ॥२८६०॥
 राम कहैं सीता जिन धोर । ककं नारि प्राणन कौं ठोर ॥
 रावण कूँ भेजूँ जमलोक । रहै सदा लका मे सोक ॥२८६१॥

जांबूनद मंत्री का कथन

जांबूनद मंत्री कहे बयन । अपने मन कूँ राखो चैन ॥
 सीता किसपे छोणी जाइ । रवि समान तपैं रावण राख ॥२८६२॥
 जैसे बंदर मोर के काज । व्याकुल भयो छोड़ि सब राज ॥
 ऐसे तुम भरमुं हो राम । जिह भरम्या कछु सरै न काम ॥२८६३॥

बंदर मोर की कथा

पूछै राम बंदर की बान । उसका मोर गया किहू भाति ॥
 बंनान नदी चैनपुर नगर । सर्व रुचि रहै नांमी समर ॥२८६४॥
 गुण पूरणा बाकी अस्तरी । विनयदत्त जनम्या सुभ बडी ॥
 ग्रह लक्ष्मी परणई नारि । जोवन बंस सुख भोग मभार ॥२८६५॥
 विसालभूत द्विज सो बहु प्रीत । ग्रहलक्ष्मी बीबागी विप्रीत ॥
 द्विज सौं कही विनयदत्त कुमार । हम तुम सुख भुगतै संसार ॥२८६६॥
 ब्राह्मण मन मे पाप बिचार । विनयदत्त को लेगया धरण मभार ॥
 बाधि नेज सौं ऊची डारि । फिर धायो विनयदत्त के द्वार ॥२८६७॥
 ग्रह लक्ष्मी कूँ जगाई मार । मैं मारधा तेरा भरतार ॥
 दोन्यू लुसी हुमा मन बीच । विसालभूत कीया कर्म नीच ॥२८६८॥
 दया न समझ्या मारधा जजमान । जिसपे लेता नित उठि दान ॥
 छुंदर सेठ बा वन मे गया । बाहि तरु तलि ठाढा भया ॥२८६९॥
 ऊचे कूँ देख्या विनयदत्त । चढ़घा डाल परि दया निमित्त ॥
 सोलि दिया सबं रुचि का पुत्त । वा कुं पट्टचाया घर जुत्त ॥२८७०॥
 ब्राह्मण सुत भाज्या तजि देस । सेठ घरे बघाई बहु भेस ॥
 नउतन जनम पुत्र का भया । छुंदर के हाथ सुं मोर उडि भया ॥२८७१॥
 राजकुमार नै पकड़यो मोर । छुंदर करै वुर मे अति सोर ॥
 विनयदत्त प्रती छुंदर इस कहे । मो सेती तुभ प्राण ए रहै ॥२८७२॥
 मेरा मोर कुंदर ने पछ्या । जब बहू तेरा मानै कछ्या ॥
 मेरा मोर छुंदाय दे मो हाथ । मैं तो बचा किवा तुम साथ ॥२८७३॥

वह तो भूपति वह बाण्या छुंदर । कैसे मोर लहै वह भगर ॥
 बिनयवत्त बोले तिल बार । हु बाण्या इह राजकुमार ॥२६०४॥
 कैसे कहूँ राज सो जाइ । घउर मोर लेहू मन ल्याइ ॥
 वह तो मोर फिरणे का नही । एह बात हम सुक सों कही ॥२६०५॥
 संसा कवण बली है सूर । रावणस्यो सरभर करै पूर ॥

लक्ष्मण का क्रोधित होकर निश्चय प्रकट करना

इतनी सुनि लक्ष्मण कोपाइ । जो रावण में बल अधिकार ॥२६०६॥
 तो क्यों उन चोरी सूँ लइ । बा कुबुद्धि मरण की भई ॥
 कायर डरपै नपुंसक लोग । मोर मन्याई मानै दुख सोक ॥२६०७॥
 क्षत्री डर मरने का करै । निश्चय जाय नरक में पडै ॥
 भव लौ रावण था बलवत् । बन मैं जब लग बलवत् ॥२६०८॥
 केहरि की जब सुनि हकार । निरमद ह्वै नासै तिल बार ॥
 लक्ष्मण कहे इण परि उपदेस । राजसभा मैं सुण्यो नरेस ॥२६०९॥
 कुसुमपुर नग्नप्रभा सेठ रहै । जमुना त्रिय निसदिन सुख लहै ॥
 आत्मसंज्ञि ताकै सुत गया । इक दिन बन कीडा कौ गया ॥२६१०॥
 प्रथमसेन का दरसन पाय । सेव करी बहु मन बच काइ ॥
 उन तपसी चुरा इक दिया । सर्व गुणों का परचा किया ॥२६११॥
 राजा की राणी अहि डसी । गढक गुणी जुडे गुण बसी ॥
 शीघ्र जतन लगै नहि काइ । आत्म शक्ति राजा पै जाइ ॥२६१२॥
 चुरा घोइ लिया पंच नाम । डसी थी ज्याचेती नृप भाम ॥
 राणी का विष उतरा सुध्या । राय तणा मन रहस्या बर्या ॥२६१३॥
 आत्मशक्ति को दिया बहु साज । बहुत बिभव घर आघो राज ॥
 कुछ लछमी गडी थी कहां । खोदण गया आत्मशक्ति तिहा ॥२६१४॥
 अजगर लेकर गया पाताल । देखि बोह तिहा बस्या भुवाल ॥
 अजगर ने मारी फौकार । उठै सिला मारणा तिह बार ॥२६१५॥
 लिया द्रव्य सर्व उन जाय । हय सीता छोडै किण भाय ॥
 जैसे उन अजगर कूँ हथ्या । तैसे हम मारंगे रावणा ॥२६१६॥
 संका कूँ करि हैं चकचूर । हय भामैं कहा रावण चूर ॥
 सकल भूपती बोले बयल । सुखौ प्रभु राखो चित्त बन ॥२६१७॥
 दीप घातकी अनंतवीर्य जिनेस । रावण ने पूछे बहु जेस ॥
 दीन बंड जीते सब देख । आख्या मानै सकल नरेस ॥२६१८॥

रावण की मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

मेरी छाव कवण है हाथ । व्योरा सूँ कहिए जिन नाथ ॥
 श्री भगवत की वानी हुई । कोटि सिला उठावें जो कोई ॥ २६१६॥
 बाकें करि है तेरी मीच । निसर्चें जाणि बात मन बीच ॥

लक्ष्मण द्वारा सिला उठाना

जो तुम सिला उठावो जाइ । तो रावण कूँ मारो भाइ ॥ २६२० ॥
 लक्ष्मण कहै उठाऊ सिला । तब मो पौरिख देखो भला ॥
 सुग्रीव साथ नृपति सब चले । साजि विमार्ण सौज नो भले ॥ २६२१॥
 राम लक्ष्मण विमार्ण परि बैठि । पहुँचे कोटि सिला कै हेठि ॥
 अरथ निसा गई सिला कै पासि । तिहा होइ सिवपुर की घासि ॥ २६२२॥
 नमस्कार करि बारम्बार । छाठ मिध गुण पढ़े सभार ॥
 बहुत विनय सो पूज त्रिनेस । मुनिमुव्रत पूजिया नरेश ॥ २६२३॥
 लक्ष्मण पढ़था पञ्च प्रभु नाम । सिला उठाइ लई तिस ठाम ॥
 जोजन एक सिला उच्चत । अठ जोयण चकली दीपत ॥ २६२४॥
 दश जोजन की हैं लबाइ । लक्ष्मण ततक्षण लई उठाइ ॥
 जघा लग पहुँचाई आन । बहुर बगी तब बाही पान ॥ २६२५॥
 जे जे देव दु दभी भई । ए लक्ष्मण नारायण मई ॥
 नल व नील धनै सुग्रीव । सब नै मता मै गाढी नीब ॥ २६२६॥
 बहुरि नरेन्द्र कहै ए बली । कथा नारायण की तब चली ॥
 सात नारायण आगै ह्रस्वा । तिए श्री प्रतिनारायण मुवा ॥ २६२७॥
 केई कहै इन उठाई सिला । रावण कैलास उठाया भला ॥
 कोई कहै रावण विद्या सहाइ । हम लहै विद्या लेइ उचाइ ॥ २६२८॥
 इन उठाई देही के बल । लक्ष्मण महाबली भू अटल ॥
 कोऊ कहै ए दोनू आत । रावण का बल कछ्पा न जात ॥ २६२९॥
 ए उसको जीतै किस भात । भ्रंसा करो दोनू घर सात ॥
 रामचन्द्र पै भूपति गए । राम कहै डीले किम गए ॥ २६३०॥
 बेगि चलो लका परि अबै । रावण मारि डायी गड सबै ॥
 कहै भूप सुणी त्रिभुवन राय । जब वह सीता बेइ पठाइ ॥ २६३१॥
 तो कीजे काहे कूँ बुध । हम बाकूँ समझावै बुध ॥
 भभीषण ज्ञानवत घरमेष्ट । दयावत है समकित द्रष्ट ॥ २६३२॥

तासूं कही बात समझाइ । जो कहै है रावण नै जाइ ॥
 रावण के सोलहत की टेक । अण बांझित किम तजै विवेक ॥२६३३॥
 सिया तुम्हारी देवा भारिण । भेजो दूत कोई चतुर सुजाण ॥
 पवनपुत्र बलीं हणमत । सूरवीर महाबल भ्रमन्त ॥२६३४॥
 जो बह जाइ तो ल्यावै सिया । श्रीभूत दूत हणुमत पै गया ॥
 लिप्या पत्र विबरां सू' मला । दूत लेई ततक्षण बला ॥२६३५॥

इति श्री पद्मपुराणे लक्ष्मण कोटिसिखा उत्तमोपल विधानकं

४३ वां विधानक

बूहा

रामचद्र लक्ष्मण सबल परदुख भंजण हार ॥
 कोटिसिखा उठाइ करि, प्रगट भए ससार ॥२६३६॥

जौपई

श्रीपुर नगर राजा हनुमान । सर्व सुखी परजा तिए ठाम ॥
 नगर सोभ कछु जाय न गिणी । स्वर्गपुरी की महिमा बखी ॥२६३७॥
 अनग कुसमा खरदूषण पुत्री । दक्षिण आसि फुरकै खरी ॥

लंका से दूत का आगमन

नरमद दूत लंका तै धाइ । सबुक खडदूषण की कहे समझाय ॥२६२८॥
 रामचद्र लक्ष्मण दोउ वीर । सीता नाम त्रिया उन तीर ॥
 लक्ष्मण नै मारघा संजूक । खडदूषण भी हृष्यां भजूक ॥२६६६॥
 सेना जुडी नरपति बने । नामावली कहां लग गिणे ॥
 श्रीसी बात अंतहपुर सुणी । रोवै हनुमान सब दू'णी ॥२६४०॥
 अनग कुसमा सब परिवार । धाई भूरछा लाय पछाड ॥
 पीटै द्वियोर खोलै केस । हा हा कार करै बहु भेस ॥२६४१॥
 पपी बजवीए अनई कोकिला । श्रीसा सबद उहाँ का नीकला ॥
 श्रीसे भोमगोचरी कौण । इण बिष प्रगट भए भड जौण ॥२६४२॥
 खडदूषण सा मारघा राय । करै सोच अति दुखित भवाय ॥
 श्रीभूत सुग्रीव का दूत । म्यानवंत अतिबल सजुत ॥२६४३॥
 कबण काज आये तुम दूत । श्रीसा कारिज कबण बहुत ॥
 हनुमान को करि नमस्कार । पवनपुत तोले तिए बार ॥२६४४॥

द्रं करि जोडि करि जोलैं दूत । निरभय वचन कहै भदभूत ॥
 किषंदपुर का राजा सुग्रीव । माया रूपी बिट् सुग्रीव ॥२६४५॥
 राज लिखा सुग्रीव का छीन । सुग्रीव आप ऋरिया आधीन ॥
 राम लक्ष्मण भूमिगोचरी । तिरण सूँ जाइ वीगती करी ॥२६४६॥
 रामचंद्र का दरसन पाय । तिरण सुं भेद कह्यो समझाइ ॥
 मेरो दुःख दूरि करो तुम दूरि । काम करो कहणा भरि पूर ॥२६४७॥
 बिट सुग्रीव दूत दोउ जुटे । बहुत सुभट दोऊ धा कटे ॥
 रामचन्द्र ने मारधा चोर । सुग्रीव ने दीया राज बहोरि ॥२६४८॥
 इह सुणि हनुमान भानद । बनि बनि पुरुष राजा रामचंद्र ॥
 पर दुख भजन हैं श्रीराम । कोटिसिला, उठाई लक्ष्मण ताम ॥२६४९॥
 उनकी सीता किरण ही हरो । तिरण धी खबर तुम कोई नीकली ॥
 हनुमान सुंणि अस्तुति करै । कुल कलंक सुग्रीव के टरै ॥२६५०॥
 भावमंजला सुग्रीव की धिया । पिता राज सुणि हरषा हीया ॥
 आदरमान दूत को दिया । उचित दान बंदीजन लीया ॥२६५१॥
 सुरास पुंख सगला बुझि गया । बाजा बाजि बधावा भया ॥

हनुमान द्वारा राम के दर्शन करना

हनुमान सेन्या ले धरणी । बैठि विमान सोभा अति बरणी ॥२६५२॥
 घोडे हस्ती रथ मुखपाल । लागे कनक रतन बहु लाल ॥
 राम लक्ष्मण वरषन निमित्त । किषिषपुर आये हनुमत् ॥२६५३॥
 कोडि सिला का सुध्या बखान । अनंतवोर्य का वचन प्रमाण ॥
 ये रावण का करि हैं नास । हूँ सेवा करिहुं उण पासि ॥२६५४॥
 किषदपुर की समराई गली । सुग्रीव भूप माने अति रली ॥
 धरि धरि बाधी बदरवाल । घर घर छाये हाठ बाजार ॥२६५५॥
 बहुत लोग भगवाणी चले । जाय करि हनुमान सुं मिले ॥
 हस्ती पर हनुमान कुमार । सेन्या चली नगर मझार ॥२६५६॥
 सिचासण बैठे रामचन्द्र । लक्ष्मण पासि सोहैं जियचंद ॥
 सुग्रीव नल नील बैठे तिण पासि । विराधित अगद अंग सुवास ॥२६५७॥
 बहुत नरेन्द्र समा ये खडे । सूर सुभट महामुख भरे ॥
 अंग चबर रघुपति सिर धरे । बदनही जोति सोभा अति टरै ॥२६५८॥
 स्याम कैस लोचन अति बरणे । नासा कपोल विराजैं बरले ॥
 रक्त उष्ट्रदन छवि कुं व । हीरा जोति बडकाफी बुद ॥२६५९॥

हीया कंठ भुजा सोमत । उदर कमर केहरि की मंत ॥
कदली जंघ कमल से चर्ण । नख की जोति जैसी ससि कर्य ॥२६६०॥
रवि प्रताप कशि की ज्योति । हनुमान की दर्शन होत ॥

राम का हनुमान को गले लगाना

चरण कमल बंदे हनुमन्त । रामचंद्र भए कृपावन्त ॥२६६१॥
कंठ लगाइ सनमुख बैठाइ । धादरि मनोहारि बहु भाय ॥

पवनपुत्र द्वारा अस्तुति

पवन पूत बोले कर जोडि । प्रभु तुम पुन का नावै बोरि ॥२६६२॥
जैसे रतन समुद्र मे घने । ते गुण जाय न किस बँ गिछें ॥
तुमारे गुण प्रभु भगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ॥२६६३॥
तुम जीत्या बरबर मलेख । ब्रह्मावर्ष वनुष कौ खैचि ॥
सिधोदर राजा ने जीत । पिता बचन की पासी रीत ॥२६६४॥
दडकवन मे बह्या सूर्यहास । संबु क खड्गदूषण कीए नास ॥
प्रति सुग्रीव विद्या बँताल । तुम कूँ देखि भाज्या तस्काव ॥२६६५॥
परपची कु मारघा ठोर । सुग्रीव राव दीया बहोर ॥
किए ही पास न हुबो न्याव । ततक्षय कीयो तुम उपाव ॥२६६६॥
कहाँ लौं बरयो तुमारा उपगार । इह जल कीरत चलै संसार ॥
बेद पुराण कथा यह चलै । सीता कौ भार्यौ कौ मिलै ॥२६६७॥
सफल जनम मेरो तब सही । हनुमान बात ए कही ॥
रावण परि नका को जाउं । सीता को भार्यौं इस ठाव ॥२६६८॥
रामचन्द्र बोले जगदीश । जे तुम वचन मानें दशमीस ॥
तो सीता भार्यौ हय पास । चोरी सुं भार्यौ उपहास ॥२६६९॥
रावण चोरी सूं ले गया । हम चोरै तो अपयस नया ॥
सीता अपपाणी सब तज्या । बाकु बोनुं कुल की सज्या ॥२६७०॥
हम बिन बह छोडंगी प्राण । इह बूँदबी दीज्यो सहिनाण ॥
कहियो मन रलियो निश्चय । कियचपुर राम जगमण निवसत ॥२६७१॥
अपपाणी बाकुं खवाज्यो जाइ । निरन्ध्र मन राखियो बीरपाइ ॥
जानुनंद मोल्यो मंडरी । जन इक मुनि बतार्ह खरी ॥२६७२॥
रावण लंकापति बलवन्त । ब्रह्मर्षि आचर्यो सीनुं बंड ॥
कुंमकर्ण मधीपल बीर । इन्द्रजीत मेघनाद बलि बीर ॥२६७३॥

लका के रखवाले घने । पंथी जाण न पावै कियो ॥
 तुम इण विष जाऊ परछन्न । लखै न कोई इसे जतन्न ॥२६७४॥
 तुम हो एक वही है घरों । तिनसुं विगाडघा नही बरों ॥
 मनुष जनम पावना कठिन । देख सोच के कीज्यो गमन ॥२६७५॥
 हनुमान जब चढ़ें विमारा । त्रिकुटाचल कौं कियो पयान ॥
 रघुपति गले लाइकै मिल्या । लक्ष्मण आदर कीने भल्या ॥२६७६॥
 सीव लगै भूपति सब आइ । पट्टचाए तिहा हणुवत राय ॥
 हणुमान सुग्रीव सुं कहै । राजा सब किषिदपुर रहै ॥२६७७॥
 आवरै लोग बुलावो सूर । सेन्या जोड़ो दल भरपूर ॥
 आप चले रघुपति के काम । मनमे सुमगो सीताराम ॥२६७८॥

अडिस्त

रामचन्द्र जगदीसर परमपुनीत हे ॥
 भव भव की हैं पुन्य बर्म सो प्रीत है ॥
 सूर सुभट सब आइ मिले बड भूपती ॥
 राबण भया मुन हीन राम जागी रती ॥२६७९॥

चौपई

प्रगटघो पु नि मिलइ सब सुख । जनम जनम का भूलै दुख ॥
 सज्जन मित्र मिलै बहु लोग । मनबछित सब भुगतै भोग ॥२६८०॥
 तार्तै पु नि करो सब कोइ । पुत्र कलित्र लक्ष्मी बहु होइ ॥
 रामचन्द्र का सुणै पुराण । भव भव पावै ते कल्याण ॥२६८१॥

ब्रूहा

चडि विमारा हणुमत, चलयो राम के काज ॥
 सूर सुभट अति ही बली, रूपबत सब साज ॥२६८२॥
 इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

४४ वां विधानक

चौपई

महेन्द्रपुर नगर

चडि विमारा देखे बहु देश । बंती पर्वत महेन्द्र नरेश ॥
 महेन्द्रपुर की शोभा अति देख । भया मोह जन अति परेश ॥२६८३॥
 इस नगरी भेरा ननसाल । गर्भ समै भा दई निकाल ॥
 मेरी माता कुं दुख दीया । परजक गुफा में भेरा भव भया ॥२६८४॥

अमृत गुपति मुनि देखा सही । अंजनी सूँ सब पिछली कही ॥
इह राजा महेन्द्रसेन । मुक्त माता कूँ देता नहीं चैन ॥२६८५॥
तो क्यूँ होता इतना बूझ । रतन बूझ तैं पाया सुख ॥
अब मैं इण सौँ लेहूँ बैर । महेन्द्रपुर कूँ माखूँ बैर ॥२६८६॥

हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बचला सेना

बाजे मात धिमक्यो महेन्द्रसेन । सूर सुभट सूँ बोलै वधण ॥
कवण देस का आया राह । सेना सजो युध के आय ॥२६८७॥
दुहुधा छूटै बिछा बाण । प्रसन्नकीर्ति आगै बसवान ॥
भया जुध प्रसन्नकीर्ति को बाधि । महेन्द्रसेन कोप्या सिर साधि ॥२६८८॥
अर्क असफंदन हार । धाए सनमुख करि मारामार ॥
परंत सिला बिरल उलारि । पडै बणी हनुमंत परि मार ॥२६८९॥
तब हनुमंत बिद्या सभारि । बानर बहुत भए धिकराल ॥
जा कूँ पकडै लु चैं देह । कबहु उठाइ सिला कूँ लेह ॥२६९०॥
जाकूँ मारै होइ सहार । तोडघा रब महेन्द्र तिल बार ॥
कूद चडे हणबंत विमाण । मारै मुकी क्रोध मण आण ॥२६९१॥
हनुमान तब राखै काण । पुरुषा सम नाना कुँ जाणि ॥
उस ऊपर तू उठावै हाथ । पुकारै सकल लोक जे साथ ॥२६९२॥
दुहिता कूँ मारै अग्यान । अंजनी सुत इह है हनुमान ॥

परस्पर मिलन

इतनी सुणत मिल्या गल ल्याइ । जैसा सुणै था तिसा दिखाइ ॥२६९३॥
कुल मडण तू उपज्या पूत । सकल गुण लसल सजुक्त ॥
प्रसन्नकीर्ति दिया तब छोडि । मिलकै अस्तुति करी बहोड ॥२६९४॥
पुर मैं आणि महोछा करै । सब बिरतात सुणि मन मैं धरै ॥
मो कूँ हे कारज उत्ताल । तुम किचंदपुर जाज्यी दरहाल ॥२६९५॥
रामचंद के सेवज पांय । सेना ले बेगा तुम जाव ॥
महेन्द्रसेन प्रसन्नकीर्ति जले । श्रीपुर जाइ अंजनी सूँ मिले ॥२६९६॥
बहुत दिया लक्ष्मी अनै थीर । कथा कही सुख हुधा सरीर ॥
हनुमान लंका कूँ गया । हम किमंबपुर कुँ गम किया ॥२६९७॥
रामचंद्र लक्ष्मण पै जाय । सुणी सुरत सुग्रीव नरनाह ॥
महेन्द्रसेन आइया नरेल । आदर बहुत दिया आनंद ॥२६९८॥

ब्रह्म

भया मिलाप कुटुंब सून, महेन्द्रसेन वरेन्द्र ॥

हनुमान अर अजनी, मान्या अति आनन्द ॥२६६६॥

इति श्री पद्मपुराणे महेन्द्रबोहिता मिलान विधानकं

४५ वां विधानक

चौपई

दक्षिमुख द्वीप मातरा देस । मंदिर स्वेत शोभा बहु भेस ॥

वन उपवन में बावडी कूप । महा रमणीक सुहावै रूप ॥३०००॥

अंतर वन सुभ धानक खरो । अजगर स्पृश देख मन डरो ॥

तिहां दोइ मुनिबर तप करै । आत्म ध्यान सु निश्चय करै ॥३००१॥

तीन कन्याओं द्वारा तपस्या

कन्या तीन फिरै तिए ठाव । दावानल सुं जलै ए भाव ॥

एक तप करै न डोलै चित्त । चलै पसेव परीसै सहंत ॥३००२॥

हनुमान द्वारा दावानल बुझाना

हनुमान कु उपजी दया । समंद्र माहि तै जल भर लिया ॥

दावानल बुझाई दीयाइ । सगला तपसी लिया बचाइ ॥३००३॥

उनकूं विद्या की सिध भई । जाय मेरु प्रदक्षिणा दई ॥

दोई बडी मे आए फेर । मुनि दर्शन कीया तिए बेर ॥३००४॥

हनुमान कीया नमस्कार । पूछ्यो कन्या का व्यवहार ॥

तुभ तप करो कवण निमित्त । अपनी बात कहो उत्पत्ति ॥३००५॥

कन्या के विवाह की अभिषेकाएली

मित्रादेस नृप गंधर्वसेन । जाकी कन्या बोलै बयन ॥

अमरवती राखी वर भई । चद्रेषा हु पहली बई ॥३००६॥

भगमाला विद्युतप्रभा तीसरी । हमारे पिता स्वयंवर विध करी ॥

देस देस के नृपति आय । कोई न हमारी दृष्टि पड़ाइ ॥३००७॥

मानसंग ह्वै नृप फिर गये । परियख माहि खोच अति अये ॥

मुनिबर कू पूछ्यो मो तात । ए कन्या दीजे किण भाति ॥३००८॥

मुनिबर बोले ग्यान बिचार । विट सुग्रीव जो मारें डार ॥

सो होसी शूणका भरतार । मुनिबर कह गये उपहार ॥३००९॥

सकल देस का देखा राव । वह है कबल तिसका सु'लाउं ताम ॥
 मुनि के बचन यह झुठे पडे । वह संसय परियल सब करै ॥३०१०॥
 अनाकं बिद्याबर छाह । मेरे पिता सू' कहै समझाव ॥
 मैं हूं बिद्याबर बलवंत । कन्या बिवाह सो मोहि तुरंत ॥३०११॥
 बासों कही जो मारें ताहि । बिट सुग्रीव नाम है जाहि ॥
 सो बिवाह सी इस नै न्याइ । तू अपणे घर कू' उठ जाहि ॥३०१२॥
 बारह दिन हम कू' इत भए । मुनिवर कू' अष्टम दिन भए ॥
 अगारक आग लगाई बन । तुमे उपाया मोटा बु'न्व ॥३०१३॥
 अष्ट बरष जो तपकू' करै । तब इह बिद्या ताकू' फुरै ॥
 तुम दरसन बिद्या सिध भई । महापुरुष छो तुम गुल भई ॥३०१४॥
 गववं सेन आये नूपती । बंदे चरण देखि मुनि जती ॥
 हनुमान सू' पूछया भेव । सकल बात मुनि कीनी सेव ॥३०१५॥
 रामचन्द्र हन्या बिट सुग्रीव । कियवपुर है समंद की सीव ॥
 उनसो जाइ मिलो तुम राइ । हम जका सीता कर्ने जाइ ॥३०१६॥
 राजा सु'णि कियो उल्लास । ततअण गयो राम के पास ॥
 रामचंद्र लखमण मू' मिल्या । गंधर्व सेन बली अति जला ॥३०१७॥
 कन्यां तीनू' राम कौं दई । मन की चिंता सह मिट गई ॥
 अधिक उछाह भयो मनमाहि । सकल दूरि भाजी उरदाह ॥३०१८॥

बूहा

मनबांछित कारज भए, तप साधे भी तीन ॥
 बिद्या की तिहा सिध भई, पायो बर प्रवीण ॥३०१९॥
 इति श्री कथनपुराणे गंधर्वसेन नाम विद्यामकं

४६ वां विद्यामक

ओपई

हनुमान का आगे जाना

त्रिकुटा चल बिरि ऊंचा नाम । ताहि न सकै उलंघ विमान ॥
 पास रही चाल्यो हनुमान । वा पर कोट देख्यो हनूराव ॥३०२०॥
 प्रथम मंत्र मंत्री सो कहा । यह गड कबल सवारथा तिहीं ॥
 तब मंत्री बोले सुबिचार । सीतां हरी तबै ए सवार ॥३०२१॥
 खरपूवण सू' भुज्या सुण्या । एक पुरुष सगला दल ह्वया ॥
 जब कहू ये यहां आये बोइ । तो हम दल सब परतई होइ ॥३०२२॥

तार्थ माया का गढ़ करषा । बहुत सोंब सुभट सौ भरषा ॥
कोई देख सकै नही कौट । जो कोइ जोबै ता परि बोट ॥३०२३॥
इतनी सु रिण भाया हणवंत । तोडि पोलि भीतर पैसत ॥

बख्खमुख एवं हनुमान की बार्ता

बख्खमुख साभलि इह वान । चढघो कोन उड़ी रोम गात ॥३०२४॥
दोनू जुध करै बहु भाइ । दोन्या माहि न कोई हटाइ ॥
हणवंत क्रोध चढै तिण बार । बख्खमुख भक्त्या तिहां राव ॥३०२५॥
लंका सुंदरी बख्खमुख की धिया । पिता बयर सांभलि जुध किया ॥
सेना जोडि हणवंत से लडै । मन मे बयार पिता को धरै ॥३०२६॥
छोडै बिद्या बाण अनत । भूभे सूरबीर सामन्त ॥
देखा हनुमान का रूप । लका सुंदरी मोही भूप ॥३०२७॥

लंका सुन्दरी और हनुमान के मध्य प्रेम होना

ऐसा रूप पुरुष नहीं कोइ । जैसा सु संगम अब होइ ॥
उलसौं हणुमंत देखी ए नारि । हाथा सू छोडे हथियार ॥३०२८॥
दोनू कै रहमि मन भया । लकासुन्दरी के विमान पै गया ॥
दोनू कै मन उपजी प्रीत । भूली सकल युध की रीत ॥३०२९॥
लका सुंदरी बाण पन लिख्या । उलटा बाण हनुमान पै नषा ॥
दोनू मिलिया कियो विवाह । सुल भोगवै मन उछाह ॥३०३०॥
रहसरली सू पृर मे जाइ । पंचइंद्री सुल भुगतै काय ॥
हणुमान बोले तिण बार । हम जाइ है लंका मझार ॥३०३१॥
रामचंद्र का करना काम । हमकू बिदा देहु तुम भाम ॥
लका सुन्दरी पूछै बात । सुण्या सकल पिछला बिरतात ॥३०३२॥

लंकापति का प्रभाव

कहिक लंकापति अति बली । तिण रोकै है सगली गली ॥
तिहा वेवता सकै न पैठ । तुमकी होइ है रावण सू भेट ॥३०३३॥
पकडै तोकू वह राखै बाधि । जे तुम चलो मता मन सांधि ॥
कहै हणसत जो रावण लरै । बा का भय हम बिल न धरै ॥३०३४॥
इण विष जाइ करी परवेस । कोई न लहै तुम्हारा भेस ॥

हनुमाह द्वारा समझाना

लकासुंदरी पिता का सोग । रोवै बखी भर भया बियोग ॥३०३५॥

इस विष समझावै हणवत । बाका था ई मही निमित्त ॥
 क्षत्री ये रण में दई पीठ । कुल कलंक लागै तसु दीठ ॥३०३६॥
 बा का जानहु इह विष लेख । ताका कबहु न करो परेष ॥
 समझाई लंका सुन्दरी । लिखे कसैं सो टरै न बरी ॥३०३७॥
 जैसा कर्म उपावै जीव । तैसा भुगतै अपनी ग्रीव ॥
 तुमारा था प्रैसा संयोग । पिता मरण पुत्री संभोग ॥३०३८॥
 अब तुम सोग करो सब दूरि । सुख भुगतो बांछित अर्थ पूरि ॥
 भोग भुगत सो बीती रात । राम के काम उठ्या परभात ॥३०३९॥

बूहा

पुष्य पुष्य प्रति ही बली, इक पसमें अई जीति ॥
 देव बेचर सुख ते लहैं, इह ही बरम की रीत ॥३०४०॥

इति श्री पद्यपुराणे लंकामुन्दरी बिबाह बिधानक

४७ बां बिधानक

बीषई

हनुमान का लंका में बहुत बना

लंका में पहुँचा हणमत । भीषण नै जाणि दयावत ॥
 अंजनी सुत संदिर में गया । आवर मान बहुत तिए दिया ॥३०४१॥

बिभीषण से भेंट

बेर बेर पूछैं कुसलात । बड़ी बार बतलाया बात ॥
 कहै भीषण सुख हणवत । रावण कूँ अपनी कुमत्त ॥३०४२॥
 सीता कुँ त्याइया पुराय । परदारा सब को लय जाइ ॥
 देस देस हुवा अपलोक । राजनीत में दोषी होक ॥३०४३॥
 तीन पंड का रावण राय । झोटी मति हंण करी अन्याय ॥
 प्रैसे भूप कर्म ए करै । पृथ्वी पर अपजस सिर बरै ॥३०४४॥
 उत्तम करम करै जो नीच । उत्तम मध्यम में क्या बीच ॥
 मैं याका सेवक हनुमान । तारैं मैं कही है आन ॥३०४५॥
 सीता रामचन्द्र कूँ देइ । इतना जस जे तुम लेहु ॥

बिभीषण का रावण को समझाना

भीषण सुखि रावण वै गया । बहुत भाति कर समझाइया ॥३०४६॥

सील रतन भत खोबो बीर । सीलवंत सुख सहै सरीर ॥
 सीलवंत की कीरत होइ । सील भला कहै सब कोइ ॥३०४७॥
 लक्ष्मण खरदूषण ने मारि । सेना सकल करी तिए छार ॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण दोऊ बीर । जानै सकल जुष की भीर ॥३०४८॥
 जब बे भ्रावेंगा इस ठौर । माचैगी लका मे रोइ ॥
 सीता देई रघु पास पठाइ । प्रथवी तणी दुःख मिट जाय ॥३०४९॥

रावण का ओचित होना

इतनी सुंणि कोप्यो दस सीस । मेरी कवण सकै करि रीस ॥
 रामचन्द्र से मारे घरों । इनको मिएती मा को गये ॥३०५०॥
 अब मैं सीता भ्राणी सही । भ्रंसा कवण पुरुष है मही ॥
 सीता भेजधुं उन पास । लाजं कुल होवै उपहास ॥३०५१॥
 कहा करेगा तपसी राम । मोसुं जीत सकै सग्राम ॥
 जीती है मैं सगली मही । मोकूं किहू का ही डर नही ॥३०५२॥

हनुमान का बानर रूप धारण कर सीता के पास पहुंचना

भभीषण कही हनुवत ने भ्राय । हनुमान उठि बन मे जाय ॥
 प्रमदा वन मे बैठी घरणी । फलें फूल वृक्षावली बणी ॥३०५३॥
 लगूर रूप विद्या सूं करधा । सीता कूं देखण तब परि चढधा ॥
 वदन मलीन हंगलो छै हाथ । सुमरण जाप जपै रघुनाथ ॥३०५४॥
 जाकै राम नाम का ध्यान । जाकै चित न भ्रावै भ्रान ॥
 दई छाष सीता डिंग जाइ । निरवत सीता नयन उघाडि ॥३०५५॥
 तज्या सोग मन भयो उलास । दूती मुख देख्यो सु प्रकास ॥
 जाय रावण सों विनती करी । सीता सोग तज्यो इए बडी ॥३०५६॥
 झूती ने दीया बहु दान । मंदोदरी पठई सीता धान ॥

मन्दोदरी और सीता की वार्तालाप

मदोदरी भ्राय सखी सजुक्त । सीता की अस्तुति की बहुत ॥३०५७॥
 सीता बोली तबै रिसाइ । हे निलज्ज मति पाप कहाइ ॥
 राम तणी भुषि पाई भवै । मेरा सोग विसर गया सबै ॥३०५८॥
 भली करी तैं छोडा सोग । रावण सुं भुगतो सुख भोग ॥
 तुमकुं सब तैं करि है बडी । भला समझि तैं छोडी गुंडी ॥३०५९॥

मंदोदरी कहैं छाप तैं लही । बे तपसी भुवा हैं कहीं ॥
 तिए ही पंखी भांगी छाप । तू मन में गरजे है आप ॥३०६०॥
 काहू बन में मारया तापसी । पंखी छाप से आयो नसी ॥
 छाप देख मन गई गही । कहा अबोध्या ताकी मही ॥३०६१॥
 एक नगर के बे भूपती । रावण तीन खंड का पती ॥
 उनका इतना करे भरम । प्रैसा बचन लगाया मरम ॥३०६२॥

सीता द्वारा राम के सेवक को प्रकट होने के लिये कहना

तब सीता बोली सत बँन । राम का सेवक देख्या नयन ॥
 कोई हूँ हो प्रगटयो आय । मेरे मन को संसय जाय ॥३०६३॥

हनुमान का सामने आना

हनुमान प्रगटया तिए ठाढ़ । रही सहेली दृष्टि लगाय ॥
 कै इह सुर कै खेचर भूप । कै इह कामदेव का रूप ॥३०६४॥
 सीता कूँ किया नमस्कार । अस्तुति बहुत करी तिए बार ॥
 भनि भनि हो तुम सीता मात । ग्यारह दिन दुख सह्यो इए भाति ॥३०६५॥
 देह सुकाई करी अति धीए । राम नाम सुमरण मे लीन ॥
 अण्णा राखियो मन अडोल । रामचंद्र इम बोल्यो बोल ॥३०६६॥
 किबबपुर मे सेना जोडि । अब करि हैं लका परि दोड ॥

सीता के प्रश्न

सीता कहै सुणुं हनुमान । तुम अन राम कब की पहचान ॥३०६७॥
 मैं तुम कूँ नही देख्या सुण्या । किस बिष उण्णस्यो सनबंध बण्या ॥
 उनु कै कारण आये लंक । मनमे कछु अन भाणी संक ॥३०६८॥
 व्यौरा सूँ समझावैं बात । मिटैं संदेह सुंणि विरतांत ॥
 लक्ष्मण तणी कह्यो कुसलात । आप एह पाई किब भाति ॥३०६९॥
 कै रामचंद्र नैं दीक्षा लई । कै इह आप पडी तुम पई ॥

हनुमान का उत्तर

हराबंत बात कही समझाइ । रामचंद्र बंडक बन रहे आइ ॥३०७०॥
 संतूक चन्द्रनला को पूत । साबी बिद्या तप किया बहुत ॥
 द्वादश वर्ष मे बिद्या फुरी । सूरजहास आया सिंह बडी ॥३०७१॥
 लक्ष्मण नैं बहु लीया लखन । संतू कू मार किया उपसर्ग ॥
 चंद्रनला देखैं पुन का सुख । तब सुनि गई सने भूलि ॥३०७२॥

सरदूषण सूँ करी पुकार । कपड़े फाड़ि लगाई डार ॥
 सरदूषण अति क्रोध कराय । सेव्या ले तिहां घाये आय ॥३०७३॥
 लक्ष्मण बासूँ माडधो जुष । रावण नें इह पाई सुघ ॥
 कोप में चले पुहप विमांण । दंडक वन मे पहुँच्या आन ॥३०७४॥
 तुम को देखि राम के पास । बाकी सुधि गई सब नास ॥
 राजनीत सह बीसर गई । तुमारे हरन की दृष्टा ठई ॥३०७५॥
 सिधनाद रावण पूरिया । रामचंद्र लक्ष्मण पै गया ॥
 रावण नें सब तुमकूँ हरघा । जटापंखी बल करि तिहां लडघा ॥३०७६॥
 बाकौं गहि रावण मागिया । ऊपर तैं धरती डारिया ॥
 लक्ष्मण रामचंद्र कूँ देल । कहिक तुम क्यो प्राए लेल ॥३०७७॥
 सीता छोड प्राये एकली । एह तुम बात करी नही भली ॥
 बेग जाओ सीता के पास । तुम बिन दुख होवैगा गात ॥३०७८॥
 दूँठे बन बेहड सब सोह । उनकां तुम सेती अति मोह ॥
 सिवकति पाया पंथी जटा । देखा अतसमय बन बटा ॥३०७९॥
 पंच नाम सुनाए कान । जटा पथी गया स्वर्ग विमांख ॥
 लक्ष्मण सरदूषण नें मारि । तुमरा हर्ण सुण्या तिए बार ॥३०८०॥
 रतनजटी तुम पाछें दौडि । आण करी रांवरण सूँ ओडि ॥
 रतनजटी कै लाग्या घाव । समुद्र मे पडे रतनजटी राब ॥३०८१॥
 उहा तैं तिरि कंबू गिरि गए । रामचन्द्र ने भेद तिए दिये ॥
 बिराधित नैं लंका पाताल । आणि बिठाए रघु ततकाल ॥३०८२॥
 सुग्रीव राज परपंची छीन । तातैं हुआ फिरघा आधीन ॥
 रघुपति परपंची को मारि । सुग्रीव राज दियो तिएबार ॥३०८३॥
 जंनी बडा किया उपगार । ता कारण हम कियो है बिचार ॥
 रावण तीन लड का भूप । सीलवंत ककणा का रूप ॥३०८४॥
 ताकी कीरत है संसार । अठारह सहस ताके घर मारि ॥
 मैं सेवक रावण का सही । मेरा वधन फिरैगा नही ॥३०८५॥
 तुमकूँ देना मेरे साथ । ले पहुँचाऊं जिहा रघुनाथ ॥
 सीता हनुमान सूँ कहै । तुमसे किते राम ढिग रहै ॥३०८६॥

मंदोदरी का कथन

राम पास कित्ता दल जुडघा । मंदोदरी बोली एही बडा ॥
 कै इह बली के राम लक्ष्मणा । और न कोई बडया जला ॥३०८७॥

जब होता रावण का काम । हनुमान करता संश्राम ॥
 इह बाकं भाई की ठोर । भैंसा हितु न कोई और ॥३०८८॥
 चद्रनसा की दीनी पुत्री । भैंसी याकी कृपा करी ॥
 या कै कर्म भैंसी मति दई । याकं हिरदै भैंसी मति दई ॥३०८९॥
 कहा राम भूम गोचरी । ताके दूत होह धाया इण पुरी ॥
 सुधीव मति मरण की भई । कियवपुर तपसी कु दई ॥३०९०॥
 भव जो सुगै रावण इण बात । देख जू तोहि लमावै हाथ ॥

हनुमान मन्दोदरी संवाद

हराबंत कहै मंदोदरी सुणु । तो पै बुधि नपै कों गिणु ॥३०९१॥
 तेरी बुधि भई है हीण । छोटी मुति रावण को दीण ॥
 तोहि कहे ये नव जोबना । तो मैं गुण एकौ नहि बण्यौ ॥३०९२॥
 तो मैं जो होता गुण सार । तो वह क्या नै हरता परनारि ॥
 छोटा करम उदै तुज भया । तेरा गुण सगला गिर गया ॥३०९३॥
 रावण की दूनी तू भई । पटकी महिमा सगली गई ॥
 तू बईरण रावण की सही । बाके जीव का तोकूँ डर नही ॥३०९४॥
 तै मति दई मरण की ताहि । तोहि रंडापा की भई बाहि ॥
 मंदोदरी धादि कोपी सब नारि । रे बानर कहो बचन सभारि ॥३०९५॥
 कहो राम लक्ष्मण कूँ मारि । बानर बसी कहा गंवार ॥
 जितने जुड़े राम के पासि । होसी उनुं सगला को नासि ॥३०९६॥

सीता का उत्तर

सीता बोली सुगो सब तिरि । राम लखण की कीरति खरी ॥
 पहला बरबर भलेछ कूँ जीति । बध्नावर्त तै सब भयभीत ॥३०९७॥
 भैंसा वनुष चढाया तुरंत । उनसे कौ नहीं बलवत ॥
 खरदूषण मारधा संभूक । उनका बाण है महा मधूक ॥३०९८॥
 सेना का नाही कछु काम । रावण कूँ मारै नही राम ॥
 समुद्र उत्तरि जो भावै एक । राखै रघुवंस की टेक ॥३०९९॥
 तुम भव निषर्च होस्यो राव । तुम जसकीर्ति मा होस्यो भांड ॥३१००॥

मन्दोदरी का नाटक

मंदोदरी धादि अठारह हजार । सधुं मिल बोसै मुंह बी माल ॥३१०१॥

कोसे सब ऋभोई बाह । हनुमान ग्रहटाई जाहि ॥
 सकल नारि धरती मै मिलै । कैसे हनुमान को लेइ चलै ॥३१०२॥
 बसन फाड़ि सोचै सिर केस । गई तिहा दशकष नरेस ॥

हनुमान का सीता से निवेदन

सीता सो बोलै हनुवत । तुम कछु मन मा धरो मति चित ॥३१०३॥
 जो तुम कहो तो भव ही ते जाउं । अपणौ मन राखो चित ठाउं ॥
 भ्रम खावो जल पीवो मात । नमस्कार कीयो बहु भाति ॥३१०४॥

हनुमान द्वारा भोजन

इला बाहण सो कहै हणवत । करो रसोई व्यंजन बहुमंत ॥
 किये पकवान सुगंधा घणा । छहरि रसोई उत्तिम दणा ॥३१०५॥
 भात दाल उत्तम बहु घृत । प्राणुख जल सो स्नान करंत ॥
 श्री भरिहंत का सुमरण किया । एक पहर दिन कर उगिया ॥३१०६॥
 मन मे धैसी इच्छा बरी । कोई मुनीस्वर धावै इस घडी ॥
 प्रथम सुपात्र नै छुं दान । पाछे हम करिहु जलपांण ॥३१०७॥
 पूरब जनम किया मैं पाप । तो इह भयो मोहि संताप ॥
 कै मैं दान कुपात्र है दिया । कै सुत मात बिछोहा किया ॥३१०८॥

सीता द्वारा आहार ग्रहण करना

सीता जी लीयो आहार । इला हणवत जीम्या तिण बार ॥

सीता का चिन्तन

सीता चित् राम की बात । तीरथ करण पिया संग जात ॥३१०९॥
 कै मैं मुनिवर कियो अपमान । कै जल पीयो भ्रमछारण ॥
 कै मैं भोजन खायो राति । कै बिन घरम न सुहात ॥३११०॥
 श्री भगवत भज्या ब्रिण भाव । समकित चित न हुबो सुहाव ॥
 कृगुरु कुदेवा की कीनी सेव । कुशास्त्र उर धार्या भेव ॥३१११॥
 कदमूल फल खाये घणै । भला शास्त्र मन धर ना सुणै ॥
 परनिदा कीनी भजिकाइ । तो इह उदय भया मुझ आइ ॥३११२॥
 भश्चुपात चुबै दृग भरे । तबइ हनुवत वीनती करै ॥
 जै तुम मात जलो मुझ साथ । पट्टुबाळं तुमनै जिहां रघुनाथ ॥३११३॥

सीता के वधन

सीता कहै सुणो हनुमान । रामचन्द्र भाई इस वान ॥
तो मैं बखूँ तिनो के संग । उणो बिणो चलणो नहीं रंग ॥३११४॥

हनुमान का प्रस्थान

सीताजी की आग्या पाइ । बिदा भए तब हनुवंत राव ॥
पुष्ट पिरिवर पर ठाढा भया । तहा बहुत भाई हैं तिरिया ॥३११५॥
वन क्रीडा देखी भी नारि । हनुवंत रूप देखिया अपार ॥
बाजै वीण सुणावैं तान । कोई कहै एही हनुमान ॥३११६॥

मन्धोदरी का रावण के पास जाना

मन्दोदरि संगि गई सब तिरि । रावण सुं पुकार त्यां करी ॥
हनुवंत तणउं कह्यो बिरतात । उठ्यो कोपि रावण सुणि बात ॥३११७॥

रावण का क्रोधित होकर युद्ध का आह्वान

सूर सुभटो कूँ आशा दई । वेगा मारो हनुवंत जई ॥
दोड़्या बहुत सुभट तिए बार । हाथों मे नांभी तलवार ॥३११८॥
गदा गुरज बरछी तीर कवान । इसी प्रकारैं वेद्यों हनुमान ॥

हनुमान का युद्ध कौशल

लागुली बिद्या भली समारि । ठौरि ठौरि के वृक्ष उखारि ॥३११९॥
मारै सुभट किये तिहा डेर । उजाड़ि दिया उपवन बिहुं फेर ॥
सिला थभ मिदिर सब ढाहि । चौपटि किये तिहा डेर उखारि ॥३१२०॥
सूरवीर भुञ्जे तिह ठौर । कायर भाजि गये सब घोर ॥
हनुमान बैठे तिन ठाम । जाके हिए राम का नाम ॥३१२१॥
रावण सुणु सुभट परिहार । तब भेज्या बहुला असवार ॥
इंद्रजीत नै मेषनाद । जाणै सकल जुघ अनै बाद ॥३१२२॥
मारि मारि करि दौड़े घरो । जइसै वन प्राणन कूँ हरो ॥
हनुमान सनमुख भया आण । मारई सिला करै बमसाण ॥३१२३॥
मैगल को पकड़ै बिहु पास । फेकै ताहि घरो रहै ठाय ॥
तब उपाड़ि कर मारै सीस । एक ही बार मरै दस बीस ॥३१२४॥
सेना भुझी राक्षस बंस । इन्द्रजीत मनमे करै सस ॥
हनुवंत एक महा बलवंत । जिण मारे सगले क्षामंत ॥३१२५॥

इन्द्रजीत मेघनाद इस कहै । इन्द्रभूष हम ही तब गहै ॥
 इह विध हम तैं कोई न लइया । हणवत उपरि ढोवा कइया ॥३१२६॥
 छूटै सर गोला जिम मेह । धरती गगन उडी अति धेह ॥
 गदा खड्ग की होवै मार । जित जित दीसै बानर वारि ॥३१२७॥
 जाकू पकड़ै लेई भूमोर । लका मा हुआ तब सोर ॥

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकड़ना

इन्द्रजीत बिष्ठा संभार । नाग पास है इन्द्र का जाल ॥३१२८॥
 दासौ बाध लिया हणवत । मार्या घणा किया दुखवत ॥
 रावण पास आया हनुमान । कोप्या क्रोध बहुत मन आन ॥३१२९॥
 बाधि मुसक हथकडी डाल । गल मे नीष जड़े तिहकाल ॥
 पाव माहि बख साकुली । मारे वहुविध हणवत बली ॥३१३०॥

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान का परिचय देना

इन्द्रजीत रावण सु कही । सु मगोचरी का दूत है अही ॥
 इस पहिली महेंद्रपुर जाय । महेंद्रसेन जीते तिह ठाढ़ ॥३१३१॥
 भेजा ताहि कनै रामचन्द्र । गधर्वसेन का मिटषा दद ॥
 मुनिवर का उपसर्ग निवार । भेज्या किवधपुरी मभार ॥३१३२॥
 बखकोटि लका का तोड़ि । बखमुखी नै मार्या ठोड़ि ॥
 लकासुन्दरी आप विवाहि । बहुरि आया ल का माहि ॥३१३३॥
 सीता नै खबर राम की दई । मदोदरी आदि मान भंग भई ॥
 पुहप वन इन दिया उजाड़ि । ढाहे बहुत हाट बाजार ॥३१३४॥
 मिदर घणा मिलिया छार । सुरसूभट बहु डाले मार ॥

रावण का क्रोधित होना

फोड़्या कुआ बाव तालाब । रावण कहै क्रोध के भाव ॥३१३५॥
 मै तोहि ऊपर राखैं था मया । तू उठि रामचंद्र पै गया ॥
 राम लक्ष्मण सौ कद की प्रीत । उनकी मिल्या भया तू मित ॥३१३६॥
 मेरा डर तुम कू नही भया । मेरा गुण तू वीसर गया ॥
 खरबूषण की तो कु कन्या दई । देस माहि तो कीरत भई ॥३१३७॥
 बहुत देस दीने तुम सही । तैं आपखे मन अंसी गही ॥
 कहा राम लक्ष्मण तापसी । भ्रमति भ्रमति उन पाई महीवसी ॥३१३८॥

उनका बूत भया है घ्राण । तोड़ न भई कोक की काण ॥
 घई मिलज्ज पया है तेरा । जिय में कछु बिबेक नहीं घरा ॥३१३९॥
 पवनजय का तू नाही पूत । काहू बरांक तैं उपज्या बूत ॥
 जे तू होता उत्तम बस । तो नाही मानता उपदस ॥३१४०॥
 अब तोकुं मार करू निरजीब । चंद्रहास सुं काटूं ग्रीव ॥

हनुमान का उत्तर

हनुमत बोख्यो निरभय बैन । तो पापी को होसी कुचैन ॥३१४१॥
 भठारह हजार तेरें थी अस्तरी । तैं काहे कूँ सीता हरी ॥
 तेरा मरण आया है सही । छोटी मति तैं मनमें धरी ॥३१४२॥
 रत्नधवा कुल ध्योआ भया । राक्षसवंस कलक तैं दिया ॥
 तेरे कुल का हूँ है नास । अब तु छोडि जीव की भास ॥३१४३॥
 तेरा नही देखण का मुख । चौर जार क्या मानै सुख ॥
 रावण कोपि गह्या कर लडग । हणवत को कियो उपसर्ग ॥३१४४॥
 देखैं बहुत पुरुष अब नारि । नंगा करि फेर्यो घर वार ॥
 अण्णां प्रभू नै ज्यां दीषा पीठ । ताका सुल ए सब दीठ ॥३१४५॥
 घर घर का रावडा बहु जुडे । डारै खेह सहू मूँठी भरै ॥

हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका बहन

हनुमान सब बचन तोडि । विद्या को संभालि बहोडि ॥३१४६॥
 संगूर रूप तिहां सेना करी । बीजली सम पूछ अगनि संभरी ॥
 सगली लका बई जलाय । सगला मंदिर दीए बहाय ॥३१४७॥
 चौपटि करि लंका का देस । जडि विमान हनुमान नरेस ॥
 सीता सुष्यो पकड़्यो हनुमान । रोबें बहुविध करै आयाण ॥३१४८॥
 इला बाहन कहै चिता मति करी । हनुमान अपरं बल धरी ॥
 लका कूँ दहवट करि गया । सीता आसीरवाद यह दीषा ॥३१४९॥
 चिरजीव हूँ है हणमत । सीता असीस कहै बहुमत ॥
 तिहूलोक हूँ जो तुम्ह नाम । लहियो सदा सुख विश्राम ॥३१५०॥

ब्रूहा

हनुमान साका किया, पुन्यवत बलवान ॥
 वानर राव जस प्रवट्यो बणीं, कारिब कियो प्रवांन ॥३१५१॥

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान सीता मिलन विधानकं

४८ वीं विधानक

बीपई

हनुमान का पुनः राम के पास आकर पूरा वृत्तान्त कहना

हनुमान सेन्यां मे मिल्या । फिर छत्र ता ऊपर भला ॥
 किंवधपुरी में पहुँच्या जाइ । अरण्य मंदिर बैठा आइ ॥३१५२॥
 सुग्रीव आदि भूपति सब चले । हनुमान सेती सह मिले ॥
 लका तणुं सुप्युं विरतात । सुग्रीव कहै रघुपति सौं बात ॥३१५३॥
 बीती रयण उगोयो भाँख । राम पास पहुँचे हनुमान ॥
 नमस्कार करि करी डडोत । तिहा भूपति लडा बहुत ॥३१५४॥
 पूछै राम सीता कुसलात । हनुमान कहै सब बात ॥
 प्रमदा जन मे सीता रहै । दूती दूत वचन तिहा कहै ॥३१५५॥
 सीता अनपांखी नहीं रोच । नाडि निबाय करै बहु सोच ॥
 उसकै सदा रहै तुम ध्यान । मनमे कछुवन आवै ध्यान ॥३१५६॥
 मैं उनकुं लवाई रसोई । राति दिवस नीतैं ह्म रोइ ॥
 सब दूती मैं दई बिहारि । राबण भानै करी पुकार ॥३१५७॥
 राबण तबै भेजी निस सैन । मैं लंका मैं कियो कुचैन ॥
 तोडि बाग फोड़्या सब गेह । लका जाल करी सब खेह ॥३१५८॥
 तुम सूँ आइ कहा संदेस । मन आवै सो करो नरेस ॥

राम की चिन्ता

राम नयन सेती बहै नीर । जा हिरदै सीता की पीर ॥३१५९॥
 धिग धिग भाई भैसा जीवणा । हम जीवत सीता दुख जणा ॥
 जे सीता का दुख करै दूर । तो हम बली कहावै सूर ॥३१६०॥
 जिम केहरि दावानल नाहि । ताका बल चालै कछु नाहि ॥
 भैसी कठिन बली भव आय । इण विष सोच करै रघुराय ॥३१६१॥
 लक्ष्मण कहै तो पहुँचो लंक । तो मन की पोखैं सब संक ॥
 अन्य सुग्रीव अन्य हनुमान । हनुं दई सीता सुधि धानि ॥३१६२॥
 भव जो भावमडल हूँ सग । राबण तखो करै मान भग ॥
 सुग्रीव सेती बोलैं रघुनाथ । भामडल आवै हम साथ ॥३१६३॥
 बाकू हम डिग लेहु बुलाय । कै हमने खो पथ बताइ ॥
 सायर तिर हम ल का जाइ । तुल इहा रहो अपणी ठाई ॥३१६४॥

राजाओं द्वारा निवेदन

तिथनाद बोले भूपती । हनुमान कीनी यह गती ॥
 उपाह वृक्ष ढाहे प्रासाद । अवर कियो रावण लूँ बाध ॥३१६५॥
 सूरवीर मारे बहु लोग । धरि धरि कियो लंका मे सोम ॥
 लंका बाल करो इण खेह । कुवा बापा ढाहे सब खेह ॥३१६६॥
 रावण मन मे राखै बैर । सगलों कूँ मारैगा धेर ॥
 रावण ने पकडी अनीत । बिसर गया धरम की रीत ॥३१६७॥

पुष्ट की तैयारी

वासुं सब मिल करस्यां जुष । अवर न कछु विचारो बुधि ॥
 चंद्रमगीच इम भए नरेस । नृप एकठा भए सहु देस ॥३१६८॥
 रामचंद्र का करो उपहार । रावण मारि मिलावो छार ॥
 धनगति गज धुंन गति कुरकेत । भीम नल नील सुग्रीव समेत ॥३१६९॥
 बज्रभूकरण अर भूपति धणे । सब का नाम कहां लग गिणै ॥
 महेन्द्रसेन पवनंजय राय । प्रसन्न कीर्ति की अधिकाइ ॥३१७०॥
 विद्याधर एकठे सहु भए । सेना जोडि राम संग गये ॥
 अरबनी सुखी पंचमी दिनेस । दीतवार को चले नदेस ॥३१७१॥
 नक्षत्र कालिका मेष या लगन । अवर भए सभी सुह सुकन ॥
 लक्ष्मी सिर गागर दही । बलै अगनि तिहां बुझां नहीं ॥३१७२॥
 पीछै आवत मंद समीर । बोलै काक वृक्ष गुण बीर ॥
 मुनिवर ई देखे ले अन्न । तीसूँ उपजै काया चैन ॥३१७३॥
 लंका तणा मिरा कागुरा । रावण चित तब चमक्या सरा ॥
 घडी साथ सुम कीया पयाण । सैमा जुडी बिना उनमान ॥३१७४॥
 राम लक्षण बोक चडे बिमाण । हय गय रथ पायक नीसान ॥
 मैगल डोरि लाख पचास । बहुत विद्याधर रघुपति पास ॥३१७५॥
 बेल धर परबत परि गया । समुद्र नाम राजा तिहां रह्या ॥
 नल नें पकडि वही नरेन्द्र । आणि दिया बाको करि बन्द ॥३१७६॥
 लाम्या रामचंद्र के पाय । छोडि दिया तनै रघुराय ॥
 बेलधरपुर इण ने ले जाय । कन्या थ्यारि हरि नै दई आय ॥३१७७॥
 श्री कमला दूजी गुणमास । सुखी रतनकुवा सुबिसाल ॥
 उहां तै चले भये परब्रात । सुबेल परबत पहुंचे रघुनाथ ॥३१७८॥

सुखेम राय परि भेज्या नील । पकड़िया तुरत न लागी डील ॥
 हंस दीप कीयो विश्राम । सब सेना उतरी तिण ठाम ॥३१७६॥
 जब लग भामंडल नहीं मिले । तब लग हम दीप तैं न चले ॥
 रही सेन सगली तिन ठौर । भूपति प्राय मिले सब और ॥३१८०॥

अडिल्ल

पूरव पुन्य उदै बहुत सेना जडी
 जीत भई मग चलत ही साधी पुरी ॥
 चरण नये सब प्राय भूप बदे धरौं
 दिन दिन अधिक प्रताप बढे चऊ गुरौं ॥३१८१॥

इति श्री वचनपुराणे राम लंकापुरी प्रस्थान विधानकं

४६ वां विधानक

चौपई

रावण का चिन्तन

रावण भ्रंसी पाई सुधि । क्रोधवत होई सोचै दसकंध ॥
 भजोव्या नृप भूमिगोचरी । हम ऊपर आवैं डर नहीं करी ॥३१८२॥
 देखो इनहूँ लगाऊ हाथ । मेरे लोग सब मिलिया साथ ॥
 यह देखो संसारी रीत । जिरणकौं मैं जागैं था मित ॥३१८३॥
 सेवग मोसौं गैरी भए । भ्रंसा कर्म उना न किये ॥
 रामचंद्र किंवधपुर राखि । सुग्रीव मेरी अपकीरत भाष ॥३१८४॥
 हनुमान अवर नरपति मिले । मेरा उदय न चाहैं भले ॥
 उनको समझा मैं आपणा । एसहु किये उनु का उपणा ॥३१८५॥
 जे तपसी सो मिलते नहीं । तो आए सकते नहीं ॥
 ए त्याये उनकू इस ठौर । एती सेन्या उन साथै जोरि ॥३१८६॥
 ऐसा निडर नहीं कोई और । ताथी माची इण ठा रोर ॥
 देख जू इनसौं ऐसी करूं । पकड़ि लेय जममंदिर धरूं ॥३१८७॥
 मेरा भय कछु चित्त न बर्या चित्त । अपणा नहीं विचार्या बित्त ॥
 परजा डरपै ल का माझि । करै सोच निस वासर साझ ॥३१८८॥

गुड की तैयार

रावण के सोलह सहस्र भूप । मुकुटबंध ते दिवै अनूप ॥
 मारिच भगदत्त अमीचद । हस्त प्रहस्त अने असफंद ॥३१८९॥

राजा बने सभा में खड़े । एक एक तैं प्रतिबल भरे ॥
रावण कै बाजैं नीसान । रहे सेनां सबद सुंए कान ॥३१६०॥

सौरठा

बनि बनि घाज दिनेस, करै काज जो प्रभु तखौं ॥
भानंदीया नरेस, सबद सुनत रणभेरि को ॥३१६१॥

चौपई

मोढ़ाग्रों का रावण को पुनः समझाना

जोधा सुभट जुड़े सब धाय । कुंभकरण भभीषण राव ॥
इन्द्रजीत बोले कर जोड़ि । उज्जल कुल मति लगावो खोड़ि ॥३१६२॥
अब लौं जस निर्मल चहुं देस । परत्रिय खोरी सुनो नरेस ॥
बड़े अपलोक कछु किये अनीत । समझो प्रभू धरम की रीत ॥३१६३॥
वेद पुराण सुणी इह बात । परनारी है विष की जात ॥
लाय हलाहल इक भव मर । परदारा तैं भव भव दुख भरै ॥३१६४॥
सीता रामचंद्र कूं देहु । निर्मय बँठा राज करेहु ॥
अठारह सहस्र हतै तुम नागि । रूपवंत शक्ति की उणहारि ॥३१६५॥
कहा एक सीता बापड़ी । ता कारण एह अड़ी आपड़ी ॥

रावण का पुनः कोषित होना

सुणि रावण कोषियो बहुत । इन्द्रजीत क्यो बरयै वृत ॥३१६६॥
अस्त्री है चितामणि रत्न । जो आ पावै काहू जतन ॥
हाथ बड़ी किम दीजे खोड़ि । सूर सुभट को लागै खोड़ि ॥३१६७॥
भैंसा भय किसका मैं बरूँ । जे हूँ अपणी टेक तै टरूँ ॥
जो तुम जुध करबे सौं बरो । जाय कहा छिपकै दिन भरो ॥३१६८॥

बिभीषण का इन्द्रजीत से वचन

भभीषण इन्द्रजीत सौं कही । तुम सम कोई दुरजन नहीं ॥
तू नै इसे सुणावे वैन । या के मनकूँ भयो अर्चैन ॥३१६९॥
भली बात थाहे लागै बुरी । आई याके मरण की बड़ी ॥
राम लक्ष्मण दोऊ बलवंत । उनका सेवन है हनुमंत ॥३२००॥
सुग्रीव और बिबाधर बने । भामंडल पराक्रमी सुणे ॥
दिन दिन सेना उन संग बचै । पल में उनके कारज सघै ॥३२०१॥

इन्हें अपरणा नहीं जाण्या मर्ण । कीए जाय सीता का हर्ण ॥

रावण का विभीषण पर धावा बोलना

उठ्यो कोप रावण सुणि बात । चन्द्रहास ऊपर धरि हाय ॥३२०२॥

भभीषण कू मारण निमित्त । ग्रंसी खोटि विचारी चित्त ॥

भभीषण कू तब चढ्यो विगेष । गह्या यम पाषर का सोष ॥३२०३॥

दोऊ वीर क्रोध कै भाय । कु भकरण बोल्या समभाय ॥

भभीषण सु कहै तु धरि जाह । तब लग क्रोध चटै मन माहि ॥३२०४॥

सीतल वचन रावण ने कहै । भभीषण लका मे नही रहै ॥

मात पिता बहु पाये पडै । सगला सज्जन अरज करै ॥३२०५॥

विभीषण का राम के पास जाना

तीस क्षोहणी दल लिया साथ । चलयो सणै जिहा रघुनाथ ॥

तीन सहस लिया सग नारि । धीर सकल छोड्यो परिवार ॥३२०६॥

हस दीप है जिहा श्री रामचद्र । गयो भभीषण को सब दु'द ॥

बानर बंसी भभीषण कु देख । ग्रंसी समझ करै मन प्रेष ॥३२०७॥

रावण भेज्या है जुघ निमित्त । हनुमान अ'दि सभल्या सामत ॥

गहि हथियार उभा सबै तिहा । आगन्या होय तो अब मारै इहा ॥३२०८॥

वज्रावर्त्त धनुष गहि राम । समुद्रावर्त्त लक्ष्मण गहि ताम ॥

भभीषण सेना बाहिर रही । आप आय पोल्या सौं कही ॥३२०९॥

विभीषण का द्वारपाल से निवेदन

भभीषण आय खडा है बार । मेरा जाय कहो नमस्कार ॥

आग्या होय तो दरशन करै । सेवग आइ बीनती करै ॥३२१०॥

करी बीनती द्वं कर जोडि । भभीषण ऊभा है तुम पौलि ॥

मन्त्रियो का परामर्श

आग्या होय तो देखै चणै । मयी लागे मजो कर्ण ॥३२११॥

रावण तनो भभीषण वीर । कछु परपच आया तुम तीर ॥

अब इह जो माड्यो राडि । आवाद्यो मति सभा मभार ॥३२१२॥

मति सागर दूजा मतरी । उणी इक बुधि उपाई करी ॥

रावण भभीषण भयो वडर । दूती इसी कह गई सबेर ॥३२१३॥

तुमारी सणै भभीषण आव । कृपा करो तो दर्शन पाइ ॥

भभीषण रामचद्र कु देखि । लक्ष्मण तणु रूप अति प्रेष ॥३२१४॥

बिभीषण द्वारा राम का वर्णन

रामचन्द्र का देख स्वरूप । बंदे चरण भभीषण रूप ॥
 राम कहैं आबो संकेस । तोकुं दिया लंका का देस ॥३२१५॥
 भभीषण मन मे भयो आनंद । मेरे तुमही देव जिएद ॥
 कहो सकल किम लडिया भ्रात । होवै कौच कर्म की बात ॥३२१६॥
 गिरगो भ्राता बे बे दोइ । चंपापुरि जागै सब कोइ ॥
 सूरज देव राज सु करत । मतिबती पटराणी गुणबंत ॥३२१७॥
 सुगुपति मुनि आप्यो धर्म । लीयो व्रत उण जाण्यो मर्म ॥
 गिरगोभूत जाय था कही । इनै रत्न लिखमी बहू लही ॥३२१८॥
 आवत देखे लोग बहुत । डांक बही लिखमी सयुक्त ॥
 फिरि बे आए घरि आपणै । उहा भवरै की भवरै बर्यै ॥३२१९॥
 कौसंबी नगरी के मध्य । बहुधन सेठ कुपदा मध्य ॥
 अहदेव महादेव दोइ पूत । बहुधन मूँवा आव पहुत ॥३२२०॥
 ए दोन्युं उदिम कू चल्या । बे रत्न लखमी पाया भला ॥
 लखमी घर लाया आरणै । बे दोई जाई बरती बर्यै ॥३२२१॥
 दोन्यु लडे न मानै हार । गिरि गोभूत सूँ भई राडि ॥
 गोभूत कू मारै तिन ठोर । असुभ कर्म तैं हुवा और ॥३२२२॥
 अहदेव महादेव ल्याया रतन । गिरितें पहिचान्या सब जतन ॥
 सुणी बात मन मे पछिताइ । उठै लहरि पावक कै लाग ॥३२२३॥
 मैं क्युं भारघा अपना वीर । अइसै समझि न भारै धीर ॥
 तातै करम इह करतूति । लोमै हणै पिता नै पूति ॥३२२४॥
 सुणी बात भाज्या सदेह । हंसद्वीप दिन आठ रहेइ ॥

सेना के साथ लंका द्वीप मे पहुँचना

अयोध सहस कोहणी दल जुझ्या । बार सहस रावण कै पड्या ॥३२२५॥
 भामंडल साथ कोहणी सहस । अष्ट दिवस रहे द्वीप हस ॥
 बाजा बजाइ लंका मे गए । ए सबद रावण कै भए ॥३२२६॥

सौरठा

रावण सकल बुलाये लोग । अइसा बण्वां तिहां सजोव ॥
 सूर सुभट सब इकठे भये । बाँनई घारी भूपति नए ॥३२२७॥

रावण खोटपा कुट, घंतरिगति सोच्या नहि ॥

खोइ धरम का मूल, सज्जन तै बुरजन भया ॥३२२८॥

इति श्री वधपुराणे भगीषण राम सजीव आगमन विधानकं

५० वां विधानक

श्रीपई

अशोहिणी संख्या

श्री शिक नृप जोडे दोइ हाथ । क्रिया करि भाषो जिन नाथ ॥

शोहिणी गिनती किस भाति । मोकू समझावो बिरतात ॥३२२९॥

श्री सरवज्ञ के उत्तम वैन । सुणते सब के मन चैन ॥

गोतम स्वामी करै बलान । बारह सभा सुणै खरि कान ॥३२३०॥

अष्टप्रकारी सेन्या सग । प्यारि प्यारि इक इक के अग ॥

पति हाथी घोडाने रथ । पायक और सुभट बहुय ॥३२३१॥

हाथी एक पयदल पाच । तिगुने एक एकतै बांख ॥

अंसी विधतै गिराती चढ । इस लेखे आठ लौ बडे ॥३२३२॥

प्रथ शोहिणी कहै छै । पति १ सेना २ भुप ३ अनीक ४ बाहनी ५ चमू ६ बरू ७ दड ८ ये आठ प्रकार की सेना कही । नवमी अशोहणी कहजे । नवघोडा ९ अर तीन रथ ३ तीन हाथी ३ पनरह पायक १५ ए प्यार प्रकार सेना का भेद छै ॥ हिवै मुख कहै छै । हाथी ९ रथ ९ घोडा २७ पयदल ९१ पयादा १३५ ए अनीक हुई । अय बाहनी कहै छै । गज ९१ रथ ९१ घोडा २४३ इक्यासीय दल प्यार सँ पाच । ए बाहनी कहैजे । चमू कहै छै । दोय सँ तियालीस २४३ हाथी रथ २४३ सात सँ गुणतीस ७२९ घोडा बारा से पनरा १२१५ पयादा ए चमू कहैजे । बिरयनी कहै छै । रथ ७२९ सात सँ गुणतीस हाथी ७२९ सात सँ गुणतीस । घोडा २१८७ इकबीस सँ सत्यासी । पायक छत्तीस सँ पैंतालीस ३६४५ । हिवई दड कहै छै । इकबीस सँ सत्यासी २१८७ हाथी । इकबीस सँ सत्यासी २१८७ रथ ।

घोडा पैंसठ सौ इकसठ ६५६१ । पयादा नवसौ पैंतीस । अर दस हजार हुवै ए दडक कहैजे । अशोहणी कहै छै । गज इकबीस हजार । आठ सँ सिंहतर रथ । पैंसठ हजार छ । सँ दस घोडा । एक लाख नौ हजार तीनसँ पचास पैंदस । एक अशोहणी कहै जे । प्रथम पति १ सेनापति २ गुलम ३ बाहिनी ४ पंचम सति । छठी प्रतिनाथ ६ । सातमी चमू ७ । अनीकनी ८ मने दस गुनी भई ।]

दोंनों दलों के सामर्थ्य की चर्चा

इतने तै शोहिनी डक होय । इस बिब समझो गुनीअन लोय ॥

दोउं आ दल हुमा इक ठोर । मत्ता करै दोन्युं कोजा सोर ॥३२३३॥

कोइक कहै रावण दल घणा । रामचंद्र संग बौडा जना ॥
 राक्षस बंसी है बलबत । वानर बंसी किम होइ करंत ॥३२३४॥
 जे राध्यस वानर कु भयै । ऐसे लोक आपस में बकै ॥
 कोई कहै बली हनुमान । सका कूँ बाही उन ग्रान ॥३२३५॥
 सब लोगन कू दीनी मार । बन उपवन कर दिया उजार ॥
 सनमुख कोई जुष न करि सकै । इसही विष राध्यस संसकै ॥३२३६॥
 कोई कहै रावन प्रति बली । कुंभकरण की कीरत बली ॥
 इन्द्रजीत मेघनाव बलबंत । इन्द्र भूप कौ कीना मड ॥३२३७॥
 रामचंद्र जीतै किस भात । रावण का बल कक्षा न जात ॥
 कोई कहै ए दोन्हु वीर । दंडक बन मे कोई न तीर ॥३२३८॥
 खरदूषण सु लक्षमण लडधा । सेन्या सुधी परलव करधा ॥
 रामचन्द्र पै बज्रावतं । लक्षमण कनै समुद्रावतं ॥३२३९॥
 रामचन्द्र लखमण सु पुनीत । रावण करी पाप की रीत ॥
 जिहा धरम तिहां ह्वै जय । रावण का होवंगा लख ॥३२४०॥
 ऐसै आपस में करै सोच । अन्य बस्तु की भूली कच ॥
 कोण मरै कोण जीवत बचै । को ध्ययं बात में पचै ॥३२४१॥
 धरम भार्य किया सुध भूल । रात दिवस मन किया अडोल ॥
 जे कोई छोडि जाइ सग्राम । दिखा ले करि आतम काम ॥३२४२॥
 तो होबै लोक मे अपलोक । कातर कहैं ताकू सब लोक ॥
 भैंसी आणि वणी है कठिन । तांको कछु न होबै जतन ॥३२४३॥
 इह भवसागर मे जीव । भ्रमै ध्यार गति गाढी नीव ॥
 धरम दया तै उतरै पार । जो कोई सहै सयम का भार ॥३२४४॥

बुहा

भारत रौद्र निवार करि, धरम सुकल धरि ध्यान ॥
 आतम सौ लव ल्याइके, तो पाबै निरबाण ॥३२४५॥

इति श्री पञ्चपुराणे उन्नय बल मान विधानकं

५१ वां विधानक

औषई

गुह के लिये सैनिकों का प्रस्थान

रावण नृप हम आज्ञा वई । साजो सैन भूप सज वई ॥
 रामचंद्र सो करियो जुष । सब कूँ भई मोह की बुधि ॥३२४६॥

अपने अपने गेह मंभार । करै आलिंगन सब नर नारि ॥
 पुत्र शौचादि सकल परिवार । लपटै कंठ अनै करै पुकार ॥३२४७॥
 पोषी देह स्वामी के काज । अब जो रहै तो पूरी लाज ॥
 जे जीवोमा तो मिलि हैं आब । उत्तम क्षमा कहि निकसे राय ॥३२४८॥
 रोवै कुटुंब सब बारबार । उन कूँ व्याप्या मोहि अपार ॥
 न कछु जनम सेवग का जान । तजि कुटुंब देवै निज प्रान ॥३२४९॥
 करै बीनती रोवै अस्तरी । जइ तुम जीत फिरो तिण घरी ॥
 जब हम तुमतै हुवै मिलाप । तुम मुझें होइ संताप ॥३२५०॥
 अपणा तजो तिण बार । तुम बिन सगलो जगत उजाड ॥
 कोई नही विवाही नारि । ते तेहीं समझै सुख की बार ॥३२५१॥
 मोह फद मैं बाधी दुनी । अंसी कठिन सबसौं वनी ॥
 कोई आभरण करि असमान । सुधरे बागै पहरे आन ॥३२५२॥
 सब ही नै बाधे हथियार । अपणा अपणा रूप संवार ॥
 पूज्या पहलां देव जिएणंद । सूरवीर मन करै आनद ॥३२५३॥
 धन्य दिवस सही है आज । सावै स्वामि घरम का काज ॥
 कोई कहै कित सीता हरै । ता कारण इतने दल जुडे ॥३२५४॥
 कुण कुण मरि है रण के माझ । रावण माही अघरम की भाझ ॥
 सीता को जो देई पठाइ । तो कां जुघ होता इण बार ॥३२५५॥
 अब हम जाई दिखै लेहु । छोडि सब ससारनि एहु ॥
 कातर कहै लोग सब कीइ । ए बिचार उनके मन होइ ॥३२५६॥
 रावण कै बाजै नीसान । निकले सकल लोग तजि घान ॥
 हस्त प्रहस्त अगाऊ चले । तिण कै सग सुभट बह मिले ॥३२५७॥
 मागीच स्यध जान भूपती । स्वयम्भू प्रयोत्तम उज्जल मती ॥
 पृथ्वी बल चंद्राक अवर चद्रसुक । नरपति बहुत अवर असुक ॥३२५८॥
 कु भकर्ण अनै इन्द्रजीत । मेघनाद अति महा पुनीत ॥
 अढाई कोडि कवर असवार । सोमै जिंसा देव उणिहार ॥३२५९॥
 रतनश्रवा अरु मालवान । रावण आत्स्यो गज पलाण ॥
 केई भूमिर केई बिमान । छाई किरण जानुं लोपै आण ॥३२६०॥
 होवै कोलाहल सबद न सुणै । उडो धूल अघियारो बणै ॥
 पचास लाख रावण की डोर । हस्ती मातै उमै पीर ॥३२६१॥

बूहा

रावण की सेव्या बली, तिसको नाही अंत ॥

एक एक रही सरस रावण प्रति बलवत ॥३२६२॥

इति श्री वधपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

५२ वां विधानक

चौपई

राम की सेना

रामचंद्र धव साजी सैन । कीयो गवन महुरत सैन ॥

नल भर नील अगाऊ चले । सूर सुभट सीने संग भले ॥३२६३॥

हनुमान जांबूनंद समान । जैमित्र चंद्राभ बलवान ॥

बरधन कुमार रत्न महेश्वर । भागंडल बहु अपर नरेन्द्र ॥३२६४॥

ब्रिह्म रथ प्रति कठ महाबल । सूरज उबय सरव प्रिय अटल ॥

बेल प्रिय सरब सार्दूलबुध । सर्वोत्तम सरब बुध ॥३२६५॥

निव निष्ठ धव संत्रास । विघन सुदन नटवर पास ॥

पापी लोल महामंडल । संग्राम चपल का बहु बल ॥३२६६॥

परम धीर प्रस्तर दिनवान । अगदत्त द्रुपद पूर्ण चंद समान ॥

बिधुसागर निससागर भूप । असकेद पादप चंद्र सरूप ॥३२६७॥

इंद्रोदधि और गोतर त्रास । सकट पीन बख्खकरण पास ॥

बलसील सिधोबर समेद । अचल साल जाणै सुभ भेद ॥३२६८॥

महाकाल अवर रविकाल । अंगतिलक सुखेन तरवाल ॥

भीम महामोम रथ भरम । मनोहारि हर मुख बहु भरम ॥३२६९॥

धरमति सार भर सूरजजटो । सिधबुधन अवर रत्नजटो ॥

विराधित मनोहर छेम । नंद नंदनी विषत बाहुन जो हेम ॥३२७०॥

बहुत भूप की सेना बली । नामावली न जाये गिणी ॥

पचीस लाख हाथी की डोर । तुषीव साथ उभा नृप और ॥३२७१॥

भागमंडल फिरावै छत्र । अग्रे लक्ष्मण महा विचित्र ॥

बाजा बाजै होवै सोर । अगद अगाऊ हुषो तिरण ठोर ॥३२७२॥

रावण के हस्त ग्रहस्त योद्धाओं की हार

दोड़ सेव्या सनमुख भई आय । हस्त ग्रहस्त लई दोड़ राय ॥

उत नल नील लई शस्त्र बांधि । बदन जुब भयो बहु भांति ॥३२७३॥

हस्त प्रहस्त कै लाम्या घाव । भुम्भै ऊभा सेनापति राक्ष ॥
नल नील दोऊ जीत्या बीर । रामप्रताप धति साहस बीर ॥३२७४॥

श्री रघुबस प्रताप, इनका बल सवतै बर्या ॥
राबण मन संताप, हस्त प्रहस्त दोन्युं मरघा ॥३२७५॥

इति श्री वक्त्रपुराणे हस्त प्रहस्त बध विधानकं

५३ वां विधानक

चौपई

हस्त प्रहस्त कथा

श्रेणिक नृष पूछै कर जोड़ि । हस्त प्रहस्त की कथा बहोड़ि ॥
राक्षस बंसी के सेनापती । उनै हणै बहुते भूपती ॥३२७६॥
इन सनमुख कोई जीत न सकै । नल नील आये किम भकै ॥
नल नील नैं मारघा ततक्षणे । इह अचिरज कछु कहत न बणे ॥३२७७॥
इनका भेद व्योरा सुं कहो । इह संसय भो मन का गहो ॥
श्री जिन की बाली तब हुई । बारह सभा सुणै सब कोइ ॥३२७८॥
श्री गौतम समझावै भेद । सब संसय का हो बिच्छेद ॥
कंस सुमत सोमर का नाम । इद्र कपिल बाभण तिए ठाम ॥३२७९॥
करण खेती करम किसान । ते नित करै क्या सुं दाण ॥
नित उठि दान सुपार्थ देइ । पूजा रचना सदा करेइ ॥३२८०॥
रागद्वैष इन कै मन नहीं । लोक पडघा उपजाय्या कही ॥
निस्वा कुटुंब नयासिक दार । इन्द्र कपिल द्विज लेहु हुकार ॥३२८१॥
मार्ग दामनि उपज्या खेत । मारै किसान द्रव्य के हेत ॥
भोग भूमिहर खेनै जाइ । दोन्युं विप्र देवगति पाइ ॥३२८२॥
दोय पत्य की मुगती आव । जहां तैं लही स्वर्गगति ठाव ॥
निस्वा कुटुंबन बन कै माझ । दोनुं बले पड गई साझ ॥३२८३॥
दोय पत्य की मुगती आव । जहां तैं लही स्वर्गगति ठाव ॥
निस्वा कुटुंबन बन कै माझ । दोनुं बले पड गई साझ ॥३२८३॥
सीतकाल सुं दुखित भए । मरकरि सातमी नरक गये ॥
मरमे लख चौरासी जौनि । ते दुख बरुं सकै कबि कौन ॥३२८४॥
दोऊ विप्र घर सुत भए । जनमत मात पिता मर गये ॥
दुख में दोऊं सयाणां भए । सन्यासी पै दिव्या लये ॥३२८५॥

पंचाग्नि साधे तप करै । कबहु भोग लडा ही धरै ॥
 दोऊ हाथ उन ऊँचा किये । नल बढाइ मृगछाला लिये ॥३२८६॥
 बढी जटा उरग्यांन मिथ्यात । भये देव दोऊ बे भ्रात ॥
 दक्षिण उर विजयाद्ध मेर । अरंजय नगर बहू फेर ॥३२८७॥
 बहून कुमारां अस्वनी अस्तरी । बे दोऊ बेवां स्थिति धरी ॥
 कंजिला सकार दूजा अतो करा । अस्वनी राणी गर्भ अवतरा ॥३२८८॥
 रथनूपुर इन्द्र के पास । करता सेवा अधिक उल्लास ॥
 इन्द्र कपिल द्विज नृप के संग । दुरजन दल को करता भंग ॥३२८९॥
 इनके सनमुख कीई न धरै । ए प्रधान रावण के तपे ॥
 इन्द्र कपिल बे स्वर्ग मे गये । वहां से च्यवरि सूर्यभट भए ॥३२९०॥
 सुख माही कीने बहु भोग । भये दिगम्बर साधो जोग ॥
 वाईस सहै पगीसह गात । दया लाल चउरासी जात ॥३२९१॥
 तेरह विष चारित्र पालै । काया तजि सुर भया विसाल ॥
 उहा तै अब किचदपुर धाइ । सूरजरज के नल नील कहाइ ॥३२९२॥
 पूरब भव के ए सनमध । तातै सिवा बैर प्रतिबंध ॥
 ग्यानी वयर करै नहीं कोइ । रघु परिणाम छोटी गति होथ ॥३२९३॥
 रण भन बैर टलै नही काहूँ । जनम जनम बहुतै दुख सहूँ ॥
 जे राखै दया सुभ भाव । उनका तीन लोक में नाम ॥३२९४॥
 सर्वसेती उत्तम क्षमा करै । छोटे बंधन जिय मे धरै ॥
 जित जाबै तित धादर होइ । उसकी कीर्ति करै सब कोइ ॥३२९५॥

सौरठा

पूरब भव, प्रतिबंध, नृगत्या बिन कैसें टले ॥
 इही कर्म सनमध, या माही एको तिल न खरै ॥३२९६॥
 इति श्री पद्यपुराणे हस्त प्रहस्त नल नील पूर्व भव वर्णनं विधानकं

५४ वां विधानक

श्रीपई

दूसरे दिन का युद्ध

रावण मुनि सेनापति जात । उठ्या ओष सुभटां कै गात ॥
 दोऊ बां सेन्यां उठी परभात । करि सनान सुभरे जिए गात ॥३२९७॥

आंमूषण पहरे निज ग्रंग । सस्त्र बांधि चाल्या नृप संग ॥
 रण की ठाम लडा दोउ धाय । मारीच के सनमुख भये जाय ॥३२६८॥
 घोडा से घोडा तब लडे । मंगल सौं मंगल अति भिडे ॥
 रथ को रथ पर दिया हिया पेल । धीसे भिडे ज्यों खेलत दूँ मल्ल ॥३२६९॥
 दोउ धा बरखै विद्या बाण । गोला गोली करै घमसान ॥
 मारै लखन टुक दूँ होइ । पीछा पाव न हटिहै कोई ॥३३००॥
 मारै गदा बज्र के समान । सेतपराजा भुक्के बलवान ॥
 तिहु जदी क्रोध करि लडे । बहुत लोग दोऊ धा कटै ॥३३०१॥
 प्रथक राव भुक्क कै पडा । उदै मद ससत्र जघन दल जुडा ॥
 भई मार इततै टलै न सूर । क्रोध करि भट लडे बल पूर ॥३३०२॥
 सकनदन पाप जुध करै । पापनदन भुक्कि करि पडे ॥
 रामचंद्र के भुक्के लोग । रवि आ लोप्या करि के सोम ॥३३०३॥
 भई रयण मिटियो संग्राम । सधला ही पायो विश्राम ॥

तीसरे दिन का युद्ध

भयो दिवस उग्यो जग भोन । दुहुषा जुट्या सूरमा भान ॥३३०४॥
 बर्षा बाण पडे चहु ओर । जैसे पडे मेह की डोर ॥
 जुडा मूप छोडे जुरवान । विसोलदूत के हरे परान ॥३३०५॥
 वानर बंसी अति भयभीत । राक्षस बसी की भई जीत ॥
 सुग्रीव आयो गज पलाण । अर्ज करै आइ हनूमान ॥३३०६॥
 तुम अब ही बैठो इण ठाम । राक्षस बंस ऊपरि दोड़ूँ मैं जाम ॥
 हनूमान धाया केहरी । राक्षस बसी की सुध बीसरी ॥३३०७॥
 भाजै जिम मगल मदमगबत । सुखे सबद केहरि गरजंत ॥
 तब कोप्या रावण बलवान । अवर धर्यो विनती करै भान ॥३३०८॥
 तुम आने सारै हम काँम । हमारा देखो तुम सज्जाम ॥
 धाए तिहा मूपती धर्यो । पड़ी मार दुरजन बहु हर्यो ॥३३०९॥
 हनूमान तबै गदा संभारि । चला मूपति मारे डारि ॥
 रावण की सेना बली भाग । तबै उसके हिरदै दोइ लाग ॥३३१०॥
 कुंभकरण अन सबकुमार । चन्द्रक सादूल दल भार ॥
 जंबुमाली तन उदरी सुत बाल । महोदर तीन पुत्र सुविसाल ॥३३११॥

धाय पडे सब एकै बार । जंजूमाली काजक बाज सौं बार ॥
 तब भुमै राखण का पूत । कुंभकरण कोपिया बहुत ॥३३१२॥
 मूर्खा बाण कुंभकरां छोडिया । सौह गया सह कावा भरणा ॥
 देखै तबै तिहां नल नील । बाय पडपा ज्यों उतरहै नील ॥३३१३॥
 मारै गदा तीर तरवार । भाज्या कुंभकरण तिण बार ॥
 जोते रामचंद्र के बली । नल भर नील सह सेना दली ॥३३१४॥
 रावण बडि दौडियो नरेन्द्र । इंद्रजीत बोले बस कुम्भ ॥
 हमकूं भागन्या कीजे तात । देखो जुध करूं किहू भांति ॥३३१५॥
 मनबोद्धित हू कारज करूं । दुरजन दल जम मंदिर घरूं ॥
 त्रैलोकसार हस्ती सुपत्तान । इन्द्रजीत दोढे बलवान ॥३३१६॥
 मेघनाद जंजूमाली चले । अस्त्रशस्त्र बहु कर लिये असे ॥
 कुंभकरण अवर हनुमंत । सुग्रीव इन्द्रजीत सामंत ॥३३१७॥
 मेघबाहन भाभडल लडै । बध्मकरण घिराधीत दोढ भिडै ॥
 ज्यों घनहर बरषै घनघोर । छुटै सर गोली बिहूँ ओर ॥३३१८॥
 बरछी गदा चक्रों की मार । बाजै लोह उडै जंगार ॥
 गज सेती गज टक्कर लेह । घोडा सो घोडा घरमेह ॥३३१९॥
 पयदल रथ तिहां भुमै चले । मनमें हरष बरि जोषा बसे ॥
 इन्द्रजीत राय सुग्रीव कह भाइ । हमारा बस परमना साइ ३३२०॥
 हमारा डर तै घरा न बित्त । समझै नही आपणा बित्त ॥
 देखि तोहि लगाउं हाथ । दूरि करौं देही तैं मांथ ॥३३२१॥
 सुग्रीव छोडे बिद्या बाण । राक्षस दल कीया बलहाण ॥
 इन्द्रजीत छोडपा मेघबाण । बरषै मेघ मुल्या अबरसाण ॥३३२२॥
 पडै बीजली परलय करै । पवन बाँन सुग्रीव संभरै ॥
 उडै पटल राक्षस दल उडै । रावण सुत क्रोध मन बडै ॥३३२३॥
 अंधकार बाँल कूँ छोडि । भया अंधेरा सुग्रीव की वोड ॥
 नागपासनी बिद्या संभार । सपटे सर्प मुरछा तिहू बार ३३२४॥
 सुग्रीव कौ नागपास सौं बाँधि । मेघनाद एही बिष साँधि ॥
 भाभंडल कुं इण ही भांति । करै मूरछा साँस न यात ३३२५॥
 कुंभकरण पकडे हणवंत । दोभूँ मुजा भरि चाबै दंत ॥
 जंद फंद मल्यो हनुमान । बां समये ना छुटे प्रान ॥३३२६॥

बिभीषण का राम को परामर्श

भभीषण राम सक्षमण सों कहूँ । तुमारे दल मे सुभट न रहे ॥
 तुम मातै रहियो सावधान । सुग्रीव भामंडल कै लाग्या बान ॥३३२७॥
 उनकी त्याज लोष उठाय । जो कोई बणि आय उपाय ॥
 अंगद सोच करै मन माहि । सुग्रीव भामंडल रहे इहाहि ॥३३२८॥
 कुंभकरण सो हुवा जुष । बाकी मारव वाही सुष ॥
 हनुमान छूटि करि गया । बहु उपाय अंगद नै किया ॥३३२९॥
 भभीषण आयो लोष कुं लेन । इन्द्रजीत मेघनाव कहूँ वैन ॥
 हम तो जीते हैं सब लोग । हमारी सरभर कूँ कोनै जोम ॥३३३०॥
 आचा आए करवा जुष । या सनमुख किम लरिये युष ॥
 पुरुषां परि किम करिए दाव । अब इहाँ चलै नही कहूँ दाव ॥३३३१॥
 समझि ग्यान भाग्या तिए घरी । सुग्रीव लोष इनकी देखै पड़ी ॥
 भभीषण देखै इन ही को आइ । पडे मूर्छा मृतक की नाइ ॥३३३२॥
 लक्ष्मण रामचंद्र सूँ कहै । नल कोमकु विद्याधर गहै ॥
 उनसो जीत सकै नही कोइ । रावण सूँ किण परि जुष होइ ॥३३३३॥
 रामचंद्र बोले सुण वीर । अयणा मन तुम राखो घीर ॥
 रावण कु मारैगे ठाव । समर माहि राखो तुम भाव ॥३३३४॥
 देशभूषण कुलभूषण केवली । चितागति देव कही भी भली ॥
 जब तोकुं हुँवंगा काम । तुम चितारो आउंगा उस ही ठाम ॥३३३५॥

देवों द्वारा राम को विद्या प्रदान करना

रामचन्द्र पै आए देव । नमस्कार करि कीनी सेव ॥
 रामचन्द्र भाष्यो विरतांत । सुर विद्या दीनी बहुभाति ॥३३३६॥
 विद्या सिध करि कारज किया । दोय रथ विद्या सिध का दिया ॥
 छत्र चमर मोतियन का हार । चितवत सेन्या होइ अपार ॥३३३७॥
 मनबंछित कारज सब होइ । दुरजन जीत सकै नहि कोइ ॥
 विद्या लई सकल सुख मूल । मन की चिता गई तब मूल ॥३३३८॥

ब्रह्मा

जैन धरम सब तैं बडा, निसचल राखै चित्त ॥
 संकट विकट उद्यान मे, आइ मिलै बहु मित्त ॥३३३९॥

इति श्री पद्मपुराणे विद्यासहाय विधानकं

५५ वां विधानक

चौपई

राम रावल द्वारा मुढ़ की तैयारी

रामचन्द्र लक्ष्मण इह चित्त । पहरधा देव वस्त्र पहिन ॥
 चंद्रहास बाबा तरवार । आयुष सगले लिये संभार ॥३३४०॥
 बजावर्त समंदरावर्त । लिये अनुष रखजीत के करत ॥
 सिंघरष ऊपर चढ़े रामचन्द्र । गऊड बाहन लक्ष्मण सुंद ॥३३४१॥
 सेव्यां बालू साध जो लई । रिब की किरण उभिल जई ॥
 कापे तरवर कापी मही । कपे गिरिवर जलहर सही ॥३३४२॥
 रामचन्द्र कोप्या भगवान । कौण कौण का जासै परान ॥
 रामचन्द्र सुमरिया बिणंद । दोनूं सोई जिम सूरज चंद ॥३३४३॥
 आकाश गामिनी विद्या संभार । रथ सुं फरख चली तिलावार ॥
 बहै पवन लागे तन व्याल । उतरघो विष बेत्या मूपाल ॥३३४४॥
 नाग फास के टूटे बंध । भया उजाला भाज्यौ ग्रंथ ॥
 जेते पडे थे मूछांबंत । बोल उठे नाम जगबत ॥३३४५॥
 राम लक्ष्मण का दर्शन पाय । मन आश्चर्य भये सब राय ॥
 राम लक्ष्मण ये भूमिगोचरी । किण बिष इनने विद्या फुरी ॥३३४६॥

विद्या द्वारा मूछांबंतों की मूछां दूर करना

आकाश गामिणी इन ही ने किया । जीव दान सब ही कूं दिया ॥
 उठे सकल लोग भुवि पडे । विद्या लाभ सुंलि रह जे बखे ॥३३४७॥
 सुप्रीव भामडन पूछै सहुबात । बितागति सौ समबध किण भात ॥
 रामचंद्र लक्ष्मण समभाय । देसमूषण कुलमूषण मुनिराय ॥३३४८॥
 बंसलगिरि उपरि घरघा आतमछ्यान । उनकू उपसर्ग भयो तिए धान ॥
 हम उनका उपसर्ग निवार । केवलम्यान उपज्या तिए बार ॥३३४९॥
 प्राये सुरपति पूजा करी । बितागति भिन्न भयो तिए बरी ॥
 दोन्युं मुनि का था इह तात । तपकरि भया देव की जात ३३५०॥
 या सम अबर नहीं सुर कोइ । इन्द्र समान बितागति होय ॥
 इन म्हाारी स्तुति करी बखी । छैखी बात वासव भखी ॥३३५१॥
 हूं सेवक पारो रघुपति । जब चितवो सब आबुं तित ॥
 तब तुम मूछांबंत होय पडे । बितागति ने चित मध्ये बरे ॥३३५२॥

घ्राये देव तिए विद्या दई । ज्योरो सुणि चिता मिट गई ॥
 सुभ अरु असुभ करम का जोग । सुभ कै उदै करै बहु भोग ॥३३५३॥
 असुभ करम तैं पावै दुख । दोनूं सरभर दें दुख सुख ॥
 धर्म चितवता टूटै पाप । पुण्यवत का टलै सताप ॥३३५४॥
 संकट विकट मे धरम सहाय । सुरपति नरपति सेवै पाय ॥
 धरम समान सगो नहीं कोइ । धरम हि तैं बहु विष सुख होइ ॥३३५५॥

ब्रूहा

धरम दान सबतैं बडा, यातैं भलो न धीर ॥
 ससारी सुख मुक्त करि, फिर पावैं सुर ठौर ॥३३५६॥
 इति श्री पद्मपुराणे सुग्रीव नामक सप्तमोऽध्यायः समाप्तः

५६ वां अध्यायक

चौपड़

दोनों ओर के योद्धाओं द्वारा युद्ध

इह प्रकार नृप रावण सुग्या । घ्राए घ्राप राम लक्ष्मणा ॥
 लकापति हस्ती सुपलाण । बली सेन्या बाजे नीसाण ॥३३५७॥
 उत मारीच इत है सुग्रीव । बलमुख सारन जुष की नीव ॥
 मिरत अबर जुटे सुग्रीव । मेघनाद विराधित ए जोष ॥३३५८॥
 मेदयत भगद दोउ लडै । कुंभकर्ण हनुमान सूं भिडैं ॥
 अभीषण देख्या रावण हृष्टि । क्रोध मई बोल्या अभिष्ट ३३५९॥
 रे कपूत मूरख अग्यान । भूमगोचरी का सेवक भया घान ॥
 तो कू अवही मारूँ ठोर । आता जाणि दिया है छोडि ॥३३६०॥

अभीषण रावण युद्ध

अभीषण कहै सुण रे पापिष्ठ । तैं तो करी पाप की हृष्टि ॥
 सतवती सीता कुं हरी । पाप पुन्य का भेद न धरी ॥३३६१॥
 तेरी मई आयु बल धीर । तातैं बुधि है मई मलीन ॥
 जे तू जीया चाहैं आत । रघु नें मिलाउ मा हरै सवात ॥३३६२॥
 सीता देखर लागो पाई । तेरा भ्रान मैं देखं छुडाई ॥
 इतनो सुणित रावण कोपिया । क्रोधवन्त तब बँ भया ॥३३६३॥
 जैसा तू तैसा वे जुटै । पाछैं पाँव न कोई हटै ॥
 सबमुख भए भूपती धरौ । उनके नाँव कहा लागि गिरौ ॥३३६४॥

वनुष खींच करि मारे बाण । मभीषण कै कंठ सोझा बाण ॥
 टूटपा वनुष मभीषण बन्धा । बहु बुध दोउबा मण्वा ॥३३६५॥
 बिजुली सम चिमनै बढग । बाई रहां तिहां सगला सरग ॥
 तिहा होवै तीर तुपक की मार । बख्खार सुं करै संभार ॥३३६६॥
 मारै सहंग मुंढ गिर पडै । तोड न सुभट बरती पर पडै ॥
 रुंढ मुंढ हूँ सडै सासत । कुम्है बली महा बसवत ॥३३६७॥
 सोखित की बंतरणी नही । पडी लोच कहाँ रही नहीं मही ।
 हाथी घोडे कुम्है घले । परबत सम डेर तिहां बले ॥३३६८॥
 पग धरबे कूँ रहीमन ठौर । दोउ घाँ मांची बहु भोडि ॥
 राम कुंभकरण सुं बुध । लक्ष्मण नै इन्द्रजीत सुं बिरुध ॥३३६९॥
 दूहुवाँ बाण पडे ज्यों देह । भालिन फूटै इन्तु की देह ॥
 लक्ष्मण इन्द्रजीत डिंग प्राय । अपडि रथ सौं पटके जाइ ॥३३७०॥
 रावण की सेना बाजि कै चली । इन्द्रजीत संभात्या बली ॥
 रथपरि चढपा बहुरि सभारि । सेन्यां सकल लई हुंकार ॥३३७१॥
 घुवा बाण छोडपा इन्द्रजीत । लक्ष्मण सूर्यवाण मन चित ॥
 छोडे बाण उजाला भया । अंधकार सगला मिट गया ॥३३७२॥
 नागपासनी छोडी बिद्या । गरुड बाण तें होई बिद्या ॥
 वह बिद्या लक्ष्मण ने गही । छोडी इन्द्रजीत सामही ॥३३७३॥
 रावण का सुत मुखीवत । नाफ फास सुं बांधि तुरन्त ॥
 कुंभकराँ रामचद्र सुं लडै । रथ समेत वह ऊंचा पडै ॥३३७४॥
 रामचद्र फिर रथ परि चढे । वा समए कोच भति बडे ॥
 नाग फासि बांध्या कुंभकराँ । मूर्छावत प्राण का हूँ ॥३३७५॥
 लागे सर्प उन्तु की देह । काटै तिह का प्राण हर लेह ॥
 खँचै देह दुस व्यापै घना । शैला कण्ट उन्तु कौ बणा ॥३३७६॥
 भामंडल इन्द्रजीत डिंग प्राण । रथपरि डाल लिये बलवान ॥
 बिराधित कुंभकराँ लिये उठाय । रथ परि ततक्षण लिया चढाय ॥३३७७॥

लक्ष्मण रावण युद्ध

बोले रावण सुनि लक्ष्मण ॥ तेरा भी आया है मरवाँ ॥
 लक्ष्मण कीलै रावण सुनौ । तो कुं अब पलही में हूँ ॥३३७८॥
 दाखण बुध दोउबा होय । हारि न मानै हूँ में कोय ॥
 अवधित बाण रावण ने ताखि । लक्ष्मण कै जर भात्या प्राखि ॥३३७९॥

गिरधा भूमि साँस तब बक्या । रामचंद्र रावण सों जुटै ॥
 बध्नावर्त्तक बाण जू छुटै । रामचंद्र रावण सो जुटै ॥
 धरणी बेर लग कीया जुघ । रावण नै मारि किये बेमुघ ॥३३८०॥
 गज के रथ सूँ दीया डारि । सिंघो के रथ चढे संभारि ॥
 उहाँ तै फिर रावण दिए डारि । मारि नदा तिहां तिह बार ॥३३८१॥
 कोई न घाव रावण कै फुहा । रामचंद्र तब भैंसा कहा ॥
 भरे रावण तेरी उमर है धरणी । तू छूटा है अबकी धरणी ॥३३८२॥
 लका जाइ धाश्रम गहो । तो परि वयर लक्ष्मण को रहौ ॥
 तेरे टूक टूक जब करू । तोऊँ ले जम मंदिर बरू ॥३३८३॥
 रावण सब सेन्यां ले साथ । लका पहुंच्या हरषित वात ॥
 मैं लक्ष्मणां मारधा है सही । मोऊँ कुछ चित है नहीं ॥३३८४॥
 जे रामचंद्र मुझसों फिर लडै । बाँत कछु कारिज ना सदै ॥
 भ्रात पुत्र की चिन्ता चित्त । देखो यह ससार अनित्त ॥३३८५॥
 दुख सुख जीव तरौं सगि लग्या । भैंसा ग्यान उरासमैं जग्या ॥
 करै सोच ग्यान धरि चित । होणी टरै न भैंसी स्थिति ॥३३८६॥

अडित्स

लक्ष्मण पड्या अचेत राम व्याकुल धरणां ॥
 रावण भए नचित क्योकि दुरजन हरणां ॥
 भैंसा भबर न कोई तां हाथ रावण मरै ।
 देखो कर्म प्रभाव कहा ते कहा करै । ३३८७॥

इति श्री पद्मपुराणे संप्रभाम विधानकं

५७ वां विधानक

चोपई

राम विलाप

रामचंद्र लक्ष्मण कैपास । देख्या मृतक कहूं न साँस ॥
 रघुपति देखरि छाड़ पछाड । रोवै पीटै बारबार ॥३३८८॥
 हाय भाइ हम कैसी बरणी । मंत्री वात कहैं ये धरणी ॥
 जब हम छोड़ि अजोप्या बले । सब परिवार कहैं मिले ॥३३८९॥
 लक्ष्मण कूँ नीकै राखियो । मनोहार वांणी आखियो ॥
 किस भाँति नै बलाबो चित्त । लक्ष्मण कीज्यो भक्त हित ॥३३९०॥

मो कारख सलमन जीव बिया । अबर मोहरी बिछड़ी बिया ॥
 किम दिलाउं मुख आपणा । मोहि अपसोक चढ्या है बणा ॥३३६१॥
 मैं देख्या भाई का भरख । अबर भया सीता का हरख ॥
 काठ सकेल भगनि मैं जकूँ । लक्ष्मण का कैसे दुख भकूँ ॥३३६२॥
 सहू राजन सूँ रघुपति कहै । तुम हम संव बहुत दुख नहैं ॥
 मेरा बहुत किया उपगार । पर उपगारी हो भूपाल ॥३३६३॥
 बोले भूपति इण परि बात । जीबंगा लक्ष्मण तुम भ्रात ॥
 इसका हम करि हैं उपचार । अउरस राखो चौकीदार ॥३३६४॥
 दुरजन कोई सकं नही भाइ । कोई उपाधि न करि है यहां भाय ॥
 विसौं दिसा रखवाला रहो । उला पैला का भाहट लहो ॥३३६५॥
 सब जागियो नरपति बिहु ओर । चौकीदार मिलो कर सोर ॥
 तिए धानक कोई पैठ न सकं । सहू जागियो हम जाख न सकं ॥३३६६॥

इति श्री पद्मपुराणे सकती भेद, राम विलाप विधानक

५८ वां विधानक

चौपड़

मन्दोदरी और सीता का विलाप

रावण मन मे चिता करै । कुंभकर्ण इन्द्रजीत दोउ मरे ॥
 रोवै राणी मंदोदरी । सुवरण वास तणी असतरी ॥३३६७॥
 कैसे जीवा भइसे दुःख । अब सहू बाद उनू बिण सुख ॥
 भंसा दुष रावण के मना । सीता सुण्यो भुबो लक्ष्मणा ॥३३६८॥
 रोवै लुंचै सिर के केस । राखै सदा राम सुं सनेह ॥
 हम भरती तो टलतो पाप । मेरे कारण हूबो विलाप ॥३३६९॥
 सीता तबै समभाबै बैन । धपना चित राखो तुम चैन ॥
 लक्ष्मण का होबैना जतन । भंसा दुख निवारै यतन ॥३४००॥
 सीता समझि रही मुरझाय । अब सेनां मैं करै उपाह ॥

भामंडल और चंद्रप्रति का आगमन

भामंडल जागियो नरेस । चंद्रप्रति नैं कियो प्रवेस ॥३४०१॥
 पूछै भामंडल तू कूँए । किहू कारख तैं कीयो गोए ॥
 बोले परदेसी दरसन निमित्त । मैं तो ध्यान धर्या है चित्त ॥३४०२॥
 भामंडल को है भूपति । लक्ष्मण कै बाण लाम्या सकति ॥
 रामचंद्र बैठा उन पास । रघुपति तिए ना बहुत उदास ॥३४०३॥

चंद्रप्रति तब विनती करे । मैं हूं बंध कारज तुम सरें ॥
 भामडल इतनी सुणि बात । बाकौ ले चाल्यो सभात ॥३४०४॥
 लंडा माहि रोके नही कोइ । इनका मनबाछित जो होइ ॥
 रघुपति कौं उन करि डडोत । नमस्कार फिर किया बहुत ॥३४०५॥
 रामचंद्र पूछे तिरा बार । इहै है कोण तुम लार ॥
 कहैं ए बंध गुणवंत । लक्ष्मण जतन करे बहुमत ॥३४०६॥
 परदेसी कूँ पूछे राम । तू किततै आये इण ठाम ॥

बंध की जीवन कहानी

कहै विदेसी अपनू भेद । विजयारथ तहा बिद्या भेस ॥३४०७॥
 गीतपुर नगर समेइल राइ । सुप्रभा राणी रूप की काय ।
 ताकै पुत्र चन्द्रप्रति भया । बल पौरिय सो सोमै नया ॥३३०८॥
 वेलंघर का सहस्रबीर्य पुत्र । चंद्रबाण मोरिया तुरत ॥
 मैं पड्या जाय अजोघ्या माहि । तिहा भयं भूप आए साभ ॥३४०९॥
 मोकूँ देखि दया उन करी । गधोदिक छडक्या उण घडी ॥
 उतरया दोष मोकूँ भया वेत । उना घरम सु कीनुं हेत ॥३४१०॥
 मैं उठि भरत सूँ विनती करी । इस विद्या हैगी गुण भरी ॥
 इसका मोहि सुणावो भेद । भरत भूप भाष्यो सब भेद ॥३४११॥
 महिन्द्र उदै रावण मेघ भूप । गुणमाला राणी बहु रूप ॥
 बाकै यम विसल्या भई । रूप लक्षण सोमै गुण भई ॥३४१२॥

बिशल्या की कथा

जब वह कन्या करै सनान । वह जल पट्टौ रोगी धान ॥
 तिनका रोग तबही मिट जाइ । सकति बाण का दोष विलाइ ॥३४१३॥
 अजोघ्या माहि रोगी ये घरए । वाही जल तें नीके बरए ॥
 तब तैं प्रगट भया वह नीर । गई सकल रोगी की पीर ॥३४१४॥
 पूछै भरथ बिसल्या परजाइ । बाका भव भाषो समझाय ॥
 कवण पुन्य तैं पाई सिध । जिसके चरणोदक इह विष ॥३४१५॥
 सकल रोग कूँ परिहा करै । असे गुण चरणोदक बरै ॥
 बोले मुनिवर म्यान विचार । श्रोत्र विदेह स्वर्ग अनुहारि ॥३४१६॥
 पु डरीकनी सीमधर जिनंद । अक्रवति त्रिभुवन आनंद ॥
 चक्रधरा बाकै पटवनी । रूपलक्षण गुण सोमै खरी ॥३४१७॥

धनंसेना ताकी पुतरी । दानादिक गुण में लावण्य भरी ॥
 जोवन सम पुनर्वस को दई । दोन्या मां प्रीत अति गई ॥३४१८॥
 एक दिवस धनंसे कुसभा नारि । सोवत देखी दुरधरि तिहु बार ॥
 बिजयाछ' का विद्याधर वीर । देखी प्रिया भावा तिहु तीर ॥३४१९॥
 मही बाहु बिमल बैठाइ । से कै बिजयाछ' कू' ते जाइ ॥
 मंदिर मांहि भई पुकार । त्रिभुवन नंद सुणी तिहुं बार ॥३४२०॥
 भेजे सुभट सुता की लोज । सब परियण मां मांषी रोर ॥
 विद्याधर देख्या गमन आयास । धनंसे सेना बैठी ता पास ॥३४२१॥
 वह बेचर एह भूमिगोचरी । सकल लोग बोल्या तिए बडी ॥
 रे रांक सुण हो दुर वीर । हमसू' जुध करै तो वीर ॥३४२२॥
 पडी मार तीर तरबार । टूटघा रथ भाज्यो तिए बार ॥
 वह कन्या रथतै गिर पडी । पंचनाम सुमरण आलखी ॥३४२३॥
 महा उद्यान भयानक ठोर । करै विलाप रुदन अतिधोर ॥
 मात पिता का सुमरै नाम । मनुष न दीसै है तिए ठाम ॥३४२४॥
 हाय कर्म तै भ्रंसी करी । भूल प्यास सो सुख बीसरी ॥
 वही विरया कुण होइ सहाय । वही विरया कछु न बसाय ॥३४२५॥

बूहा

चक्रवर्ति की थी सुता, करती भोग विलास ॥
 अशुभ कर्म के उदय से, पडी आय बन वास ॥३४२६॥

बोधई

बनवास के दुःख

तिहा स्थव चीता बहु व्याल । भयदायक रटै बहु स्याल ॥
 बन के भयदायक तिरजब । पडे सीत बस्तर नही रच ॥३४२७॥
 भंसा बुल सो बीतै काल । बन फल खाइ सुता भूपास ॥
 उनाने तपे सब मही । सीतल ठोर न पावै कहीं ॥३४२८॥
 दुल मे बीतै आठु जाम । तिनहीं नही कभी विश्राम ॥
 बरषा आगम वर्ष मेह । सहे परीसा कोमल देह ॥३४२९॥
 पवन चलै बरषा झुकभोर । चमकै दामिन खाइ बटा बनधोर ॥
 छोडि भास संसारी भोग । मन बच काय लवाया भोग ॥३४३०॥
 दोय हजार वर्ष तप किया । अन्न पाणी तजि संयम लिया ॥
 भव्य तीन सु विद्याधर खाइ । नमस्कार करि आग्या पाइ ॥३४३१॥

धन्य साधु असा तप करै । छह रति का दुख मन नहीं धरै ॥
 चिदानन्द सो ल्याया ध्यान । दया करै सब ऊपर जान ॥३४३२॥
 वन मे ए तप इण बिध किया । जीव दया समय व्रत लिया ॥
 लबधदास कहै तुम चलो । त्रिभुवन आनंद पिता सुं मिलो ॥३४३३॥
 अनग सेना मन मे समझाइ । मैं संन्यास करया इण ठाय ॥
 छोडे सब संसारी मोह । लबध दास समझाऊ तोह ॥३४३४॥
 तब उठि गया भूपति सो कही । अनगसरा देही सब दही ॥
 उण वन मे लीयो संन्यास । छोडि दिये सब भोग विलास ॥३४३५॥
 त्रिभुवन नंदन देखण निमित्त । आया वन मे देखी बहुमंत ॥
 अजगर भया दुरधी का जीव । उन बहु घरी पाप की नीव ॥३४३६॥
 इसी अनगसरा तिह घडी । देही छोडि स्वर्ग सचरी ॥
 भुगति आव द्रोवनमेध गेह । गुणसाला गर्भ विसल्या एह ॥३४३७॥
 इण प्रकार की पाई रिध । चरण उदिक होवै सब सिध ॥
 त्रिभुवन नद इह कारण देखि । उपज्यो ससार वैराग परेव ॥३४३८॥
 जाण्यो इह ससार सरूप । अम्यो जीव धरि नाना रूप ॥
 देही आवि सगो नहीं कोय । सपति तणा बिछोहा होइ ॥३४३९॥
 चारू गति भरम्युं चिदानंद । सुभ अनै असुभ तणो दोइ फद ॥
 कबहु रंक कबहु भुवनेस । जैसी करनी तैसा भेस ॥३४४०॥
 मन बच काय लगाया ध्यान । काठि कर्म पढ़ूँवा निरबाण ॥
 बाईस सहस पुत्र समेत । ल्याया चिदानंद सो हेत ॥३४४१॥
 दुरिम मुनिवर के पास । दिध्या लई भुगति की भास ॥
 तेरह बिध चारित्र व्रत लिया । बिधसु पंच महाव्रत किया ॥३४४२॥
 तीन रतन वरण्या दस दोइ । बाईस परीसह उन भंग होइ ॥
 उसन काल गिर ऊपर तपै । वरणा समै रख तलि छिपै ॥३४४३॥
 सियालै सरिता तट ध्यान । उपज्या उनकूँ केवलम्यान ॥
 गए भुक्ति तिहा सिध अनत । ज्योत ही ज्योत भई एकत ॥३४४४॥
 पुनवसु कै त्रिया का सोग । भए दिगंबर छांडषा भोग ॥
 पंच महाव्रत पाबु सुमति । मन बच काया तीनू गुपति ॥३४४५॥
 बाईस परीसा सहै भ ग । द्वादश अनुप्रेक्षा तह संग ॥
 छह रति के सुख दुख सहै सरीर । जाणै षटकाय प्राणी की पीर ॥३४४६॥

दसौं दिसा बाकै आभरण । श्री जिन बिना कोई नहीं सरा ॥
 तप करि देह बाजरी करी । अत समय अंसी मन बरी ॥३४४७॥
 जै मैं निर्मल नृपति भया । यो पै श्रिया दुरभी ले गया ॥
 मेरे तप का एह फल झैक्यो । मो सम बसी न दूजा मां कह्यो ॥३४४८॥
 अनगसरा सुं फिर समबध । हो जो भंसा किया बहु बंध ॥
 देही छोडि सही अमर बिमाण । पायो स्वर्ग तीसरे थान ॥३४४९॥
 प्राब भुगति दसरथ के गेह । अप पुत्र लक्षमण की देह ॥
 अजगर मरि मैसा गति भया । हस्तनापुर जनम जू लिया ३४५०॥
 वर्धमान बगिक तिहा रहै । विणज हैत बेसातर बहै ॥
 मैसा लावि अजोध्या गया । तहा महिष गल कुष्टी भया ॥३४५१॥
 कीडा पडि सहै दुल बर्यो । पाप उदय तें ए फल बर्यो ॥
 कोई बालक मारै डेल । खैवै पूंछ करै बे खेल ॥३४५२॥
 इस दुल नई भईसा मुवा । बज्जावत्तं कुमार देवता दुभा ॥
 रहै नरक मे तिहा नारकी । उनूं कुं दुल करै मार की ॥३४५३॥
 समझि कुबोष विचारि चित्त । मइय्या महिष अजोध्या करि यित्त ॥
 उन लोग मोकु दिया दुल । अब लेहुं बयर तो पावं सुल ॥३४५४॥
 उन छोडी कोई असी बयार । सर्व कु भ या रोग तिण वार ॥
 सगला दुसी धया पुरलोक । अजोध्या मैं प्रगटघा था रोग ॥३४५५॥
 द्रोवण मेघ की विसल्या पुत्तरी । उसके चरणोदिक पीडा टरी ॥
 वह विसल्या लक्षमण की नारि । या तें होइ इनका उपमार ॥३४५६॥

बूहा

पूरव भव सब ही सुणो आज्या सब संवेह ॥
 जैसा कर्म कोई करै, तैसी गति पावेह ॥३४५७॥
 इति श्री वधपुराणे विसल्या पूर्व भवांतर बिधानकं

५६ वां बिधानक

ओपई

हनुमान अंगद को अजोध्या भेजना

सुध्या रामचन्द्र पर जाइ । हनुमंत अंगद अजोध्या पठाइ ॥
 भामंडल कूं दीया साध । बिरियांन लागी इण्की जात ॥३४५८॥

भरत सोई या सख्या ठोर । ए पटुषे भूपति की पीर ॥
 बीस बजावै गायै तीन । रघुवंसी कुल का करै बखान ॥३४५६॥
 भरष भूप सोभनी ए बात । तजि निद्रा बस्तर पहिरे नात ॥
 छारै उभा देख्या तीन । महा सुघड बजावै बीन ॥३४६०॥
 तिनकुं पूछै भरत नरेश । तुम हो कवण कहौ संदेस ॥
 कवण काज आये तुम रयण । साचे मोहि सुणाबो वयण ॥३४६१॥

भामंडल का उत्तर

भामंडल बोले समझाय । राम लक्ष्मण डडक वन रहे जाय ॥
 सुरजहास लडग तिहा लिया । सरभूषन शंभुक जिहां दहा ॥३४६२॥
 राबण सीता हर ले गया । वानर वसी का मदद भया ॥
 हरि के लाग्या सकती बांन । हरि के हर ले गए पराण ॥३४६३॥
 देहु नीर सजीवन मूल । तो कछु होवै जीवन मूल ॥
 इतनी सुणि कोप्या भरत । सत्रुघन सुणिएर क्रोध करत ॥३४६४॥
 प्रैसा क्या राबण बलवान । सीता कुं ले गया निज थान ॥
 मारु राबण कू भ्रम जाइ । वाही समय नीसान बजाय ॥३४६५॥
 जागे सब नगरी के लोग । भरत कुं व्याप्या लक्ष्मण सोग ॥
 सुणिवाजंन जान्या सबै । अनिवीरज सुत आया तबै ॥३४६६॥
 कं कोई दुरजन यहा आई । आण चडै बाजिन वजाय ॥
 भए एकठे नरपति धरौ । भरत सू कहै उपाव किये बरौ ॥३४६७॥
 जे तुम लंका पहुचो राइ । तो इह रयण बीत कै जाय ॥
 लक्ष्मण का होवै काज । विसल्या भेजो इण साथै आज ॥३४६८॥
 कंकई गई मेघदत्त के गेह । विसल्या सुण्या लक्ष्मण सुं नेह ॥
 रोवै कन्या लग्या सुन बाण । या समै हु पाऊं जाण ॥३४६९॥
 तो लक्ष्मण अब जीवै सही । सूरज उदय कछु जतन नही ॥
 सब मिल कियो यह बिचार । भामंडल संग विसल्या तिए बार ॥३४७०॥
 यासुं पवन फरस कै लाग । उसही घडी लक्ष्मण उठि जाग ॥
 असक्ति बाण भास्या आकास । लक्ष्मण को भई जीने की आज ॥३४७१॥
 पवनपुत्र पकड्यो वह बाण । बोली बिद्या पूछै हनुमान ॥
 असक्ति बाण नैं छोडे प्राण । पुण्यवंत सो चली न सवान ॥३४७२॥

लक्ष्मण पुण्यवंत अति बली । विसल्या नारि सर्वगुण मिली ॥
 मैं विद्या अंसी असकति । मोकूँ जाऊँ सबै जगत् ॥३४७३॥
 वरणेन्द्र ने ए विद्या दई । रावण कीं तिहां प्रापति भइ ॥
 बालि मुनीश्वर गिरि कैलास । वा समये असक्ति दिया तास ॥३४७४॥
 मोकूँ कोई सकै न टारि । जो मिल जलन करै संसार ॥
 विद्यालया पूरब भव तप करै । ऐसी रिष उस तपतैं फुरै ॥३४७५॥
 आगत सुणी विसल्या नारि । अगले भव का लक्ष्मण भरतार ॥
 मै भागी लक्ष्मण तजि देह । पुन्य बराबर अवर न एह ॥३४७६॥

विसल्या द्वारा मूर्छा दूर करना

विसल्या आइ लक्ष्मण के पास । केसर चन्दन लई सुवास ॥
 रामचन्द्र कू किया नमस्कार । लक्ष्मण तणी करी बहु सार ॥३४७७॥
 कन्या सहस्र विसल्या साथ । सब मिल गावैं जस रघुनाथ ॥
 ताल मृदय बजावैं बीण । गावैं सकल नारि प्रवीण ॥३४७८॥

लक्ष्मण का होश में आना

लक्ष्मण तब उठे अंगराइ । मुख तैं सुखरे श्री जिनराइ ॥
 बोले लक्ष्मण रावण कहां । भार भार सबद मुख तैं भष्या ॥३४७९॥
 रामचन्द्र समझाई बात । असक्त बाण लप्या तुम गात ॥
 विसल्या मेघद्रवण की धिया । असक्त बाण इने दूर किया ॥३४८०॥
 गाए अनंत बधाये बणे । मूर्छा तणे सब दूखण हणे ॥
 वेदया सब सेना के लोग । जूत्या तब परजा का सोग ॥३४८१॥

ब्रूहा

वाईव परिषह उन सहे, षष्ठी प्यार कथाय ॥
 असुख करम सब टारि करि, अथा नरायन राव ॥३४८२॥
 इति श्री वधपुराणे विसल्या आगमनं विधानकं

६० वां विधानक

बीपई

रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना

रावण मुनि लक्ष्मण उषचार । किये सचेत विसल्या नार ॥
 सकती बाण तैं हुवा असकति । पुन्यवंत कुँ कसु न लयत ॥३४८३॥

बैठि सभा बहु मंत्री बुलाई । पूछी माता लंका जाइ ॥
 मृगांक मंत्री बिनती करै । कहुं सांच प्रभु हिरदै घरै ॥३४८४॥
 स्यधा कै रथ थी रामचन्द्र । ते जाणै विद्या के बंद ॥
 गहड़ वाहन लखमण कुमार । विबल्या जाणै विद्या सार ॥३४८५॥
 जे तुम चाहो भुगल्या राज । राक्षस बंसी राखो साब ॥
 सीता से मिलो राम के संग । जो न होवई राज का मग ॥३४८६॥
 सदा रहै ज्यों ऊन सौ प्रीत । छूटै कु भकराँ इन्द्रजीत ॥

रावण का मन्तव्य

रावण कहै सुणू मतरी । भेज्यी दूत उनपै इन घरी ॥३४८७॥
 रूपवत हूवै चतुर सुजाण । निरभय वचण सुणावै जाम ॥
 छुडावो कु भकराँ इन्द्रजीत । हम उनसौ करै मत्र की रीत ॥३४८८॥
 मै नही वा करै धमसान । चाल्या दूत सुघड़ सुजान ॥

रावण के दूत का राम के पास जाना

सु गग उपदेस राम पै गया । सेन्या देखि विचार इह किया ॥३४८९॥
 इनकै है सेन्यां प्रति तुछ । रावण कै है सब कुछ ॥
 जाइ पौलि ठाढ़ा भया दूत । रामचंद्र सेन्या सजूत ॥३४९०॥
 पट्टध्या त्वरति बुलाई बसीठ । स्वामी काज को देह न पीठ ॥
 रामचंद्र का दर्शन पाइ । नमस्कार करि ऊभा जाइ ॥३४९१॥
 बिनती करू सुण हो रघुनाथ । कु भकराँ इन्द्रजीत छो मो साथ ॥
 रावण सु राखो सनमध । इत उत तै चूकै इह बध ॥३४९२॥

प्रजा बचै सब का दुख जाय । छोड़ो क्रोध धर्म के भाय ॥

राम का उत्तर

रामचंद्र बोलै तिए बार । जो सीता भेजै हम द्वार ॥३४९३॥
 भाई पुत्र उसका देउं छोड़ि । जब वह जीया चाहै बहोड़ि ॥

रावण के दूत का पुनः निवेदन

दूत कहै साबलि राजान । रावण सम कोई नही ध्यान ॥३४९४॥
 उन जीत्या है तीनू पड़ । सब भूपन पै लिया है दड़ ॥
 जीत्या इन्द्र दशौ दिगपाल । राक्षस बंसी बली भूपाल ॥३४९५॥
 जे तुम जीया चाहो राम । तो सीत का मति लेहु नाम ॥
 छोडो कु भकराँ इन्द्रजीत । तो तुमसौं छूटै नही प्रीत ॥३४९६॥

हमारे कुल को लागै गाल । बोलै नही बचन संभाल ॥
 सीता कुं दूजा कहै भरतार । लवै कलंक तिहुं लोक मझारि ॥३४६७॥
 रामचंद्र ओ डील न करै । रावण कूँ हम परलय करै ॥
 लक्ष्मण भावमंडल सूं कहै । दूत कु कछु दोष न लहै ॥३४६८॥
 रावण के बचन कहै इस ठौर । याकूँ कछु न लागै खोडि ॥
 सिंह कोप हस्ती परि करै । मुलक परि कछु काज न धरै ॥३४६९॥
 इह बसीठ उदर सामान । ता परि कोपै स्यंघ क्या ध्यान ॥
 इतनूँ कहि मारै क्या पाप । जोग्या नीतै समर्थ आय ॥३५००॥
 बलि वृद्ध बिप्र तापसी । जोगी जती बुद्ध मानसी ॥
 पशु आश्रित पंथी अस्तरी । इनै मारि भुगतै गति बुरी ॥३५०१॥
 दूत मारै का लागै दोष । सकल ही जीव दया कौ पोष ॥
 ब्रिहा दया तीहां धरम । अदया आणहु पाप का मर्म ॥३५०२॥
 भावमंडल का घट गया क्रोध । लक्ष्मण नै दीया प्रतिबोध ॥
 सामंत दूत फिरि बोले वयन । समझो राम ज्युं पावो चैन ॥३५०३॥
 तीन सहस्र विद्याधर सुता । व्याही सकल सुख की लता ॥
 जो विद्या तुम चाहो राम । मानुं नगर गलेरा गांम ॥३५०४॥
 पुहपक विमान छत्र सुलपाल । हाथी घोडे मोती लाल ॥
 अर्द्ध राज लंका का लेहु । सीता का हट छाडि देहु ॥३५०५॥

राम का प्रत्युत्तर

तब श्री रामचंद्र इस कहैं । अरे मूढ तू विवेक न लहै ॥
 रावण के कोई मंत्री नाहि । भली बुधि समझावै ताहि ॥३५०६॥
 नारी देकरि भुगतो राज । ते अपणा बिगारै काज ॥
 बातें भलो जांणु अतीत । वन मे रहैं आतम सुं प्रीत ॥३५०७॥
 फिरै वयावा वन फल खाइ । वा सम सुखी अवर न कहवाइ ॥
 श्री जिन जी सूं लगावै ध्यान । राखै सदा आतम स्थान ॥३५०८॥

बूढ़ा

राज काज प्रीया तजै, भुगतै सब विष सुख ॥
 विग् जनम वा पुरुष को, कुलहै लगारै दोष ॥३५०९॥
 धरका दीया दूत को, दिया समा तैं काडि ॥
 बचन न बोलै समझ करि, तातै व्यापै गाडि ॥३५१०॥

चौपई

दूत का रावण के पास आना

गया दूत रावण के पास । भाषी सकल बात परकास ॥
भामंडल बचन कहा समझाइ । लक्ष्मण ने तब दिया छुड़ाइ ॥३५११॥

ब्रूहा

वह तो हठ छोड़ै नहीं, तजै न सीता नारि ॥
धरम नीत जे तुम करो, बेग बिटावो राडि ॥३५१२॥

इति श्री वधपुराणे रावण दूत आगमन विधानक

६१ वां विधानक

चौपई

रावण द्वारा चैत्य बनना

रावण सुंछे दूत के वैन । करै सोच मन भयो कुचैन ॥
कुंभकर्ण अने इन्द्रजीत । मेघनाद तीनों भयभीत ॥३५१३॥
वे बंधे मै मृत्यु राज । मेरा दुष्मा घना अकाज ॥
बै ठाडे गलहयै हाथ । सोगवत करि नीचा माथ ॥३५१४॥
बहुत किया उनसो संग्राम । हारि न मानै लक्ष्मण राम ॥
जानो अब मुझ कैसी बनै । निसर्चै वे प्राण मम हनै ॥३५१५॥
अँसी विद्या साधू कोइ । दुरजन सकै न सनमुख होइ ॥
बडी बेर उपज्यो चितग्यान । सब राडें सातिनाथ जिन धान ॥३५१६॥
मुनिसुन्नत स्वामी की सेव । करुं बिब बीसौं जिनदेव ॥
सहस्रकूट कचन देहुरे । रतन बिब कचन मो जडे ॥३५१७॥
वेश देस चीठी पठवाह । करो चैत्याले सगली सज्याइ ॥
पर्वत वन नगर अने गाँव । अए देहुरे उत्तम ठाम ॥३५१८॥
पूजा प्रतिष्ठा करै सब लोग । धरै भाव करि तीनों जोग ॥
मवोवरी आदि अठारह सहस । पूजै सब त्रिय उत्तम बंस ॥३५१९॥
धरम महातम हिए बिचार । देव गुरु सास्त्र करै मनुहारि ॥
पूजा दान करै सब नित्त । दया धरम सो लगाया चित्त ॥३५२०॥

इति श्री वधपुराणे सातिनाथ मुनिसुन्नत चैत्यालय विधानक

६२ वां विधायक चौपई

अष्टाहिनका महोत्सव

फागुन मास अष्टमीं स्वेत । अठाईं दत्त करै धरि हेत ॥
नदीश्वर दीप जिनैस्वर भवन । सुरपति करै तिहां गवन ॥३५२१॥
अमराधिप पूजै जिन देव । करै नृत्य मन बच सुनेह ॥
कंचन कलस धीर जल लाव । ते डालै मस्तक भगवान ॥३५२२॥
रतनपुंज धरि पूजा करै । जै जै सबद पाप कूं हरै ॥
खेचर भूचर चैत्यालय भगवंत । रचना रचै तिहां बहुवंत ॥३५२३॥
तणै चन्द्र बे सोभय ठोर । वाजतर बाजै तिहां सोर ॥
अष्ट द्वय सामग्री धरणी । वांदरवाल को सोभावणी ॥३५२४॥
पंडित मुनी पढ़ै जिनदेव । कहै ग्यान के सूक्ष्म भेद ॥
वत्तं अठाई उत्तम ध्यान । करुणा अग वलारुणै ग्यान ॥३५२५॥
दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूजा बारंबार ॥
दुहुधा घोर करै सब धर्म । जीव जत करुणा का मर्म ॥३५२६॥
सब ही सू छोड़ै तिहां कैर । पुण्य काज लागे चहु फेर ॥
चरचा करै धरम की रुची । पालै क्रिया बहुत ही सुची ॥३५२७॥
सामाईक करै त्रिकाल । सावधान सब ही भुवाल ॥
आत्मा लिव ल्यावै बहु भाई । विडसूं कृति करै सब राय ॥३५२८॥

ब्रूहा

वत्तं अठाईं जे करै, राखै समकित सुख ॥
सो ही उत्तम जिन सही, करै धर्म की बुध ॥३५२९॥

चौपई

शांतिनाथ भिंदर सु धनूप । पूजा करै तिहां रावन भूप ॥
अष्टांग करै नमस्कार । अस्तुति पढ़ै सु बारंबार ॥३५३०॥
मन में विचारै प्रेसा भाव । जिहां लग बसै नगर अन्न गांव ॥
आठ दिवस का पोसा सेह । नित उठि दान सुपात्रां देहि ॥३५३१॥
जमदंज कुं इह आम्हा आई । दुडैरा फेरि दुहाई दई ॥
जे ते हैं उत्तम कूल लोग । आठ दिवस अठाईं जोग ॥३५३२॥
आरंभ तजि करो दिड वरम । आठ दिवस छोडो सब कर्म ॥
जा के घर मे नाहीं अन्न । तिस कूं खो मुंहपांथा अन्न ॥३५३३॥

भडारहु दीज्यो ताहि । जो कुछ चाहै सो सो वाहि ॥
 सुणु सहु लोक भयो आनद । पूजा रचै श्री देव जिनद ॥३५३४॥
 तीन काल पूजै जिनदेव । सुगई सास्त्र गुरु की सारें सेव ॥
 दान सुपात्रां विधि सो देइ । भठार्ई व्रत सफल कर लेहु ॥३५३५॥
 अपैं जाप राखैं चित ठौर । गहै मोन व्यापइ न है और ॥
 कोइ चरबा कोइ आतम ध्यान । कोई कहै धरम व्याख्यान ॥३५३६॥

रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न

रावण चौबीस दिना की टेक । सिध होवैं तब विद्या एक ॥
 जाकी वह विद्या सिध भई । दरजन जीत सकै नही कोइ ॥३५३७॥
 वे पूजै स्वामी सातिनाथ । रावण सुभरैं जहा हाथ ॥
 चित्त न चले रहै मन धीर । जाणु बंठा बख सरीर ॥३५३८॥

बूझा

विद्या साधन कारणैं, दिढकर लाम्या ध्यान ॥
 हीनहार समझै नही, कहा होइती आन ॥३५३९॥

इति श्री पद्मपुराणे रावण विद्या साधन विधानकं

६३ वां विधानक

अडिल्ल

सुणी इसी जब बात कहै सब सजुत सूँ ॥
 उनतो लगया ध्यानक श्री श्री भगवंत सूँ ॥
 जो कोई आश्रम लेई पुरुष के मान कौ ॥
 वह नही छोडै वांछ सम की कान कौ ॥३५४०॥

चोपई

व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना

कैसे विष उसको दुख देई । उनतो कियो धरम सूँ नेह ॥
 वाकै करै धरम की हान । होइ पाप समझो धरि ध्यान ॥३५४१॥
 जब हमसूँ वह सनमुख लडै । तब हम भी उसमे जुष करै ॥
 धरम नीव सूँ कीजे जुधि । पाप कर्म की छोडो बुधि ॥३५४२॥
 वरत भठार्ई उसका सही । बाकौ बूषण है यह नही ॥
 वानर बंसी कहई नरेस । तुमलो कहो धरम उपदेस ॥३५४३॥

जई बालक ती विगई काज । तो नहि लामै उनको लाज ॥
 हम बारै रावण कूँ जाइ । ए आठ दिवस जाइ बिहाइ ॥३५४॥
 पूरणभासी तणै बिहाण । अपणै अपणै बैठि विमाण ॥
 मकरध्वज राजा संटोप । रतिबद्धन छाया करि कोप ॥३५५॥
 बाताइए भरु सूरज उद्योत । महारथ पीतकर बहु जोत ॥
 नलनील अणै नृप बणै । नामावली कहाँ लग गिणै ॥३५६॥
 पट्टजे लका सभले बे भूप । रत्नवाले करै रावन रूप ॥
 कोप्या सकल सूरवा घेर । मदोदरी समझावै तिए बेर ॥३५७॥
 लंकापति आगम्या दई । हिमा कर्म करो मति नई ॥
 ए इस धान धर्म की ठोर । भुभु कीये ते लामै घोरि ॥३५८॥
 आग्या बिन कीजे नहीं जुध । घैसे कहि मंदोदरी बुधि ॥
 सगलां मिल तोडी पोल कु वाउ । लका मांहि पडी तब राडि ॥३५९॥

बंदरो द्वारा लंका में उपद्रव करना

लगुर निज विद्या संभार । वानर वारन घर घर वारि ॥
 जाकूँ पकडै लौचै गात । बालक अस्त्री डरपै बहु भाति ॥३५९॥
 रावण की माला लई छीन । लुचै ताहि बहुत दुख दीन ॥
 भाजे लोग कोट मे घसे । लुटै गाम वानर जु हंसै ॥३६०॥

क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा

क्षेत्रपाल कोप्या तिए षडी । भाया रूपी सेना करी ॥
 भुल बिकराल राजा नयन । मुदगर हाथ भार भुल वयन ॥३६१॥
 कोई रूप स्यंध भरु सांग । अगनि रूप धरि देह संताप ॥
 लांबी डाडि देह अस्थूल । पकडै विरछ उपाई मूल ॥३६२॥
 उनुं वृक्ष की कीनी है मार । वानर बंसी मानी हार ॥
 भाजि छिये भूल्या अवसान । छुट्या दुख लंका के वान ॥३६३॥
 बहुरउ विद्याधर संभार । मारे देव मनाई हार ॥
 दे भाजे ए पीछा करै । देखै सकल अचंभा बरै ॥३६४॥
 पूरणभद्र मणिभद्र क्षेत्रपाल । विद्याधर मारे भूधाल ॥
 भाजे नरपति खंका जोडि । सूरवीर फिर लई बहुरि ॥३६५॥
 सनमुख भए विद्याधर भूप । घै हटै नही क्रोध के रूप ॥
 करै देव बीजली मात । जलै पग पवन हटै नही राति ॥३६६॥

बरसै मेह मूसलाधार । भाजै विद्याधर कुंवार ॥
 बे दोन्धुं बेवस मांक गये । हाथ बोडि तिहां ठाढे भये ॥३५५८॥
 बानर वंसी कुमर सब भाइ । हमकुं दुख दिया बहु भाइ ॥
 श्री जिन सातिनाथ के बान । रावण राव लगाया ध्यान ॥३५५९॥
 सब परजा कूं उनो दुख दिया । जिन मंदिर में उपद्रव किया ॥
 तुम अग्रे हम करै उपचार । बरजौ तुम उनसौं ईण बार ॥३५६०॥
 लक्ष्मण कहै रावण है चोर । सीता हर ल्याया इस ठौर ॥
 सावै विद्या सुं अजीत । एहै कवण धरम की रीत ॥३५६१॥
 अब हम बहै सरभर हैं सही । जे वह विद्या पावै नही ॥
 तो हम पावै सीता नारि । जई विद्या न हुवै अधिकार ॥३५६२॥
 कारिज हमारा बिगडै सही । अबर सोच हमकुं कछु नही ॥
 पापी कूं तुम भए सहाइ । हमारा दुख तुम चित्त न सुहाइ ॥३५६३॥
 अइसा तुम कछु करो विचार । टरै ध्यान पावै नही पार ॥
 कहै देव हम बोलै नाहि । परिजा दुख करिय न चाहि ॥३५६४॥
 जासो बयर तामुं करो युध । प्रीसा वचन कहै गए सुर सुध ॥
 सुरो वचन सब निरभय भये । मन सदेह सहु के गए ॥३५६५॥

बूहा

रावण सावै ध्यान धरि, विद्या महा अजीत ॥
 एक छोट वामैं बडो, प्रमदा माहीं चित्त ॥३५६६॥

इति श्री पद्मपुराणे समविष्टो देव प्रहृष्टः जईकीर्ति विधानकं

६४ वां विधानक

चोपई

अंगव का लका में जाकर वहां की स्थिति देखना

अंगद संका देखण चल्या । किषककांड गज साध्या भला ॥
 चौरासी अरु सोहै भूल । घंटा वादि सुहावरण मूल ॥३५६७॥
 ऊपर बणी अंबारी लाल । जिहां बैठा अ गव मूपल ॥
 सूर सुभट संग मूपति घरों । पयादा लोग न जावै गिरों ॥३५६८॥
 बादल मांहि जिम पुंनिम चंद । तिम गज ऊपर अंगद सुरेन्द्र ॥
 लका देखि नगर की गली । बोडि बोडि सोभा अति अली ॥३५६९॥

लाल मृगं बजै गुडगुली । करै नृत्य पातर स्वडी ॥
 जिहां जिहां जिन के देहरे । पूजा पढ़ै पंडित सहु खरे ॥३५७०॥
 बाजा बजै सुहावण रूप । तिहा कमिनी नारि अनूप ॥
 अंगद कूँ देखे तिरण बार । अन्य नारि जिसका वह भरतार ॥३५७१॥
 कोई कहै इह जननी अन्य । जिसकी कूल अया उत्पन्न ॥
 कोई कहै बहन है अन्य । जिसका है वह बीर रवन् ॥३५७२॥
 सब मिल नारि सराहै रूप । नमस्कार करि फिरियो भूप ॥
 लका के गढ किया प्रवेश । चंद्रकांति मणि मिदिर भेस ॥३५७३॥
 मंदिर का बहुतै विसतार । जो भूलै सो लहै न द्वार ॥
 इन्द्र नील मणि मंदिर और । रतन सफोटिक मिदिर तिरण ठौर ॥३५७४॥
 श्री भगवंत का है तिहां सथान । अंगद नृप तिहां पढ़ै ज्या आन ॥
 नमस्कार करि करी डबोत । अस्तुति जिन की पढी बहांत ॥३५७५॥
 तीन प्रदक्षिणा दर्श नरेद्र । सातिनाथ पूजिया जिनेन्द्र ।
 रतनवंत चैत्याले लगे । उनतै अंचारा सब भगै ॥३५७६॥
 बेदी माही बनी अनूप । छत्री सोभै अधिक सरूप ॥

ध्यानाखंड रावण को वेलना

जिहां रावण था ध्यानाखंड । अंगद नै तब पाया दूढ़ ॥३५७७॥
 रे पापी पाखंडी नीच । धरषा ध्यान कपट मन बीच ॥
 प्रेसा परपच करै हे झूठ । गही गौन जैसा है ऊट ॥३५७८॥
 बिन विवेक देही को दहै । सत्य शील का भेद न लहै ॥
 रावण चित्त हुलाबै नही । करतै जाप्य अंगद नै गही ॥३५७९॥
 पुहुप उठाय भारे मुंह माय । पकड़ि झंझोडे दोनू हाय ॥
 मदोदरी आदि सकल रणबास । खोटी पकड़ि आनी उन पास ॥३५८०॥
 करै आलिंगन मोठे बांह । रावण भूँह तै बोलै नांह ॥
 सगली सखी पुकारै षण्णी । करै कंहा अन्न अंसी बणी ॥३५८१॥
 तुम बँठाँ हमको दुख होइ । तुमकोँ बुरा कहै सब कोइ ॥
 रावण का तिहां चित्त न टरै । तब अंगद मुख तै डक्करै ॥३५८२॥
 रे रावण तै सीता हरी । हूँ ते जाऊँ मदोदरी ॥
 जै तूँ बली तो लेहु बुझाय । दासी करि हूँ पिता की जाय ॥३५८३॥
 मैं चाल्या जे तोहि दिखलाइ । मति कहियो ले यथा चुराय ॥
 रावण मुख तै कछुबन कहै । बिद्या का ध्यान जीव मे रहै ॥३५८४॥

रावण द्वारा विद्या सिद्धि

चिहुं ओर उजियाला भया । विद्या पाइ सुख उपज्या नया ॥
 बोले विद्या प्रभु आगन्या देहु । जो मन हुनै सो कार्य करेहु ॥३५८५॥
 रावण कहै लक्ष्मण कु बाधि । मेरा इहि बिधि कारज साधि ॥
 बहुरूपिणी विद्या गुण धरै । रावण सों वह विनती भएँ ॥३५८६॥
 आगन्या देहु प्रभुजी मोहि । कुंए सुटक हिरदा मा तोहि ॥
 तब रावण बोले तजि मौन । उठो बेग अब कीजे गौन ॥३५८७॥
 बाधि आणु राम लक्ष्मण । तो समझौ तो मैं गुण धरौ ॥

विद्या का रावण से निवेदन

विद्या कहै लकापति सुनु । दानव देव सकल मैं हनु ॥३५८८॥
 चक्रधारी सूर् कछु न बसाय । अवर सकल कौ बाधू जाय ॥
 सातिनाथ का दरसन पाय । दई प्रदक्षिणौ नवण कराइ ॥३५८९॥

अडिस्त

रावण सोच विचार बहुत मन मे करै,
 बिक्रा भई जू सिध सुगुंण बहुला धरै ॥
 जो यन इछू बात सो यापै है नही,
 मो पै विद्या बहुत एक ये भी सही ॥३५९०॥

इति श्री वचनपुराणे बहुरूपिणी विद्या आगमन विधानकं

६५ वां विधानकं

चौपई

रावण का गमन

सब रणबास जु करै पुकार अंगद दुख दिया तिरा बार ॥
 तुम अग्रे अंसी करी । तुमारे संक न मनमे धरी ॥३५९१॥
 अंगद गौड का कहा वित्त । उन कछु भय आँखी नहि वित्त ॥
 तुम नै हमारी न आनी दया । सब त्रिया कूँ दुख वे गया ॥३५९२॥
 रावण कोप कहै ए बैन । मइतो ध्यान धगे दिड जइन ॥
 जई किरौष करता धन माहि । तो मोकुं विद्या फुरती नाहि ॥३५९३॥
 वाकुं बुधि मरणे की भई । बैडर वात उपाजाई नई ॥
 बे तो सब ही है कीट समान । मारूँ भीठक कळूँ बसमान ॥३५९४॥

सब प्रिया तल्ली करि अनुहार । पहर आभूषण किन्हे भूषार ॥
 चल्पा सेह बाबा ब्रजबाइ । सुहरण लीका प्रिया मयाइ ॥३५६५॥
 बरन उतारे करे समान । तेल कुनेब उबटणा खान ॥
 कंचन कलस बंगा का नीर । करई सेवा राखी सीर ॥३५६६॥
 सातिनाब की पूजा करी । अष्ट द्रव्य सामग्री बरी ॥
 बहुदि प्राय लीया आहार । पुष्पक विमान परि हुवा असवार ॥३५६७॥
 बहुरूपणी का भव देखू बल । प्रीती है या विद्या अटल ॥
 जितनी थी विद्या की सईन । सब पुंन देखे अपलने नयन ॥३५६८॥
 कंपी भरती गिरि बरहरे । रामचंद्र का दल ऊपरे ॥

रावण के मंत्रियों द्वारा पुनः निवेदन

रावण के बोलें मंतरी । तुम पाई विद्या गुण अरी ॥३५६९॥
 रामचंद्र लक्ष्मण हैं बली । सीता देहु ज्यों होबैं रली ॥

रावण द्वारा परस्ताप

मोहि भई आण्णा की लाज । मोहि नहीं सीता ह्युं काज ॥३६००॥
 जई फेरू तो मोहि लगै कलंक । सब कोई कहै इन मानी संक ॥
 मोहूँ उपजी बुधि कुबूधि । तुम्कि हरि लामा भूली सुधि ॥३६०१॥
 मेरी प्राय थी जो हम ही लिखी । बैठि विमान देखठ भू सखी ॥
 पुष्पक विमान सीता वँठाएँ । विलसामा समसा संसार ॥३६०२॥
 धिग धिग धिन है मेरी बुधि । कछु नही करी परम की सुधि ॥३६०३॥
 परनारी मैं काहे हरी । अपनी कीरत कीनी बुरी ॥
 जो मैं जटा पंखी के पास । छोड़ि आवता बंक ब्रजवास ॥३६०४॥
 भभीषण समझाबैं बा मोहि । मैं बापरि कीया अति छोह ॥
 बाके मारण की मति करी । जाई बीछकि बयां तिन बडी ॥३६०५॥
 के मैं मानता उस तयां बचन । तो किम होती ऐसी कठिन ॥
 कु भकरां भनै इन्द्रजीत । मेघनाद तीनुं अबसीत ॥३६०६॥
 पडे बंदि मोरा सब जाइ । ए बुल भीषैं सखी न जाइ ॥
 उत्तम कुल को कालम ल्याइ । सीता कुं आखी पुराइ ॥३६०७॥
 सकल लोक निसदिन निदा करै । ओ सुनि है सो कहि है कुरै ॥
 परनारी है जिहा पुषंन । सब सब बुल होबैं जिय संग ॥३६०८॥

मैं सबको का समुत पाय । बिष समान लावे मुक्त दाइ ॥
 कई हूँ वेहुँ राम न जाइ । तो सब हूँ रक सबै राख ॥३६०६॥
 उन अंगद बोसुँ करी यति बुरी । बिगोवा मोहि सब अस्सरी ॥

रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय

अंगद और मारु सुग्रीव । दोनों मारि करुँ बिन ग्रीव ॥
 प्रभामंडल तम मडिल करु । हनुमान जम मंदिर घर ॥३६१०॥
 चंद्रहास से सबको काटि । उनकुं भेजूं जम की बाटि ॥
 देख जू अब मैं अंसी करुँ । मारि सबन कूँ परलय करुँ ॥३६११॥

बूहा

समझि म्यान बिह्वल भया, पहुँची आवजु पूर ।
 घरम रीत जांणी नहीं, उन जु कुमाया कूर ॥३६१२॥

इति श्री पद्मपुराणे कुचनिश्चं कृत विधानकं

६६ वां विधानक

श्रीपई

रावण की वैनिक क्रिया

बीती रयण किया सु बिहाण । रावण उठि कीयो असनान ॥
 पूजा करी देव भगवत । बारबार सुमरं बिनयवत ॥३६१३॥
 भोजन करि भूषण सवारि । मात पिता की कीन्ती मनुहार ॥

बारबार हास

सब कू दीने कंचन लाल । स्यधासन बैठा मुवाल ॥३६१४॥
 तिहा भूपती ठाढे घणा । रावण सोचै मन आपणा ॥
 कुंभकर्ण या मेरी बाह । इन्द्रजीत मेघनाद भी नाहि ॥३६१५॥
 वे तीनूँ रामचंद्र के बंदि । उन बिन सगली सेना अंग ॥
 हाथ गला धै सोचै सोच । अन्नपाणी भी छोडी रुच ॥३६१६॥
 देखै तिहा सकल मंतरी । उनू बुधि उपजाई खरी ॥
 मन की बात उनू सब पाइ । कहै बीनती सबै समझाई ॥३६१७॥
 तुम कुछ बिता आयौ आपणै । तुम संग नरपति छूँ बें कहीं ॥
 बिद्या एक एक तैं भली । पूबैगी तुम मन की रली ॥३६१८॥
 सुरवीर नहीं करै बिचार । बडो बेग बोचो हथियार ॥
 मदोदरी भासै भरोसा द्वार । कंसी आजि करै करतार ॥३६१९॥

अपराधगुण होना

रावण आचमनाला मल्ला । त्रिहृत् सुवन खोट सहं मिल्ला ॥
 डंढ सौं खन पड़यो मूषि । दूरी भुरि धाया रच खुनि ॥ ३६२० ॥
 धावै होइ निकल्या मांभार । त्वान कान आकषा शित बार ॥
 खोट सुयन रावण को भए । मंदोदरी सोवै निज हिये ॥ ३६२१ ॥

मन्दोदरी की चिन्ता

मंदोदरी पूछै निज मंतरी । बे रावण टालै अवुध बली ॥
 समझावो तुम मेरी बात । ज्यों टलि जावै एही बात ॥ ३६२२ ॥

मन्त्री का उत्तर

बोलै मन्त्री माता सुणु । रावण समझै सबही तैं वणु ॥
 वेदपुराण करै व्याख्यान । बा सम सुघड न दूजो जाण ॥ ३६२३ ॥
 हम कछु कहैं तो मौनै बुरा । हमारे कहे काज कहा सरा ॥
 जो तुम वा समझावो आप । तोइ हमन को मिटै संताप ॥ ३६२४ ॥
 मन्त्री पास सुणो उपदेस । गई जहाँ दसकंच नरेस ॥

मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना

हंस गमन सोई मंदोदरी । बहुतें संग सखीयां खरी ॥ ३६२५ ॥
 जैसे गग समुद्र कूं मिली । मंदोदरी इम पति पै बली ॥
 जैसे सबहै कालिंदरी । तिन बे संग सोहे अस्तरी ॥ ३६२६ ॥
 जैसे इन्द्र इन्द्राणी कैं हेत । अइसी प्रीत इनांको होत ॥
 आवत देखी रावण निज तारि । बाधे पा कटिस्पु तरवार ॥ ३६२७ ॥
 खोलै भूपति कारण कवन । काहे कूं तुम कीया गवन ॥
 मंदोदरी बिनवै कर जोडि । मोकुं देइ सुहाय बहोड ॥ ३६२८ ॥
 प्रभुजी मेरा मानों बचन । करो राज घर बैठा बहन ॥
 रामचंद्र हैं सूर्य समान । तुम हो सब तारा समान ॥ ३६२९ ॥
 कैसे लगै मान कूं खेल । बालक ज्यों करता होइ खेल ॥
 वह हैं तीन लोक के ईस । जनसौं करि न सकैं कोई रीस ॥ ३६३० ॥
 सीतां उनकी देहु पठाइ । निरखय राख करो इण ठाह ॥
 परनारी है दुष की मान । तासौं होइ बरम की हानि ॥ ३६३१ ॥
 कुल बध होइ जाहि हैं मान । भैंसी समझि विषयहुं मान ॥
 लोक बदी अति ही अमीर । प्रिता वह जहुं जाने सीर ॥ ३६३२ ॥

है कालिन्त्री अगम अबाह । बुझत बांह गही तुम नाहि ॥
 उत्तम कुल ए राजस बंस । तुम इह किया पाप का घंस ॥३६३३॥
 तैं कुल डोव्या परनारी काज । कीर्ति तुम खोई अकाज ॥
 परनारी के भुगतण हार । ते क्षय भए हैं इस संसार ॥३६३४॥
 अर्ककीर्ति जैसे क्षय गया । श्री विजय की नारी ले गया ॥
 असनघोष भने विजयसेन । श्री विजय के मन भया कुचैन ॥३६३५॥
 उनू अकीर्ति कों मारि । रूपणी त्रियां लई तिणतार ॥
 प्रेसी तुमकूं भई कुमुदि । अपणे जीव की करी न सुख ॥३६३६॥
 सीता देहु रामकूं जाहि । निर्भय राज करो तुम राय ॥
 कछा हमारा करो तुरत । ज्यो नगरी मे होवै संत ॥३६३७॥

रावण का उत्तर

रावण कहै मंदोदरी सुणु । अर्ककीर्ति सम भो मति गिणों ॥
 मे जीते है सकल नरस । इन्द्रमूप मान्यां आदेस ॥३६३८॥
 मेरा बल है प्रगट तिहुं लोक । तू कोई चितबै मन सोक ॥
 कहां राम हैं भूमि गोचरी । जिसका भय तू चित में धरी ॥३६३९॥
 उनकी सेना दहवट करूं । राम है बांधि बंदि मैं बरूं ॥
 जे मैं आणी सीता नारि । फेर सकूं कैसे इछा बार ॥३६४०॥

उत्तर प्रत्युत्तर

मंदोदरी सु नि धुंयो माय । मेरा बचन तुम मानुं नाथ ॥३६४१॥
 कहा दीपक कहा सूरज कांति । तुम दीपक रवि हैं रचुनाथ ॥
 भानु उदय तब दीपक किता । उनका बल भानै तुन जिता ॥३६४२॥
 तुम काहे को होवो दुखी । सीता देह तुम रहो सुखी ॥
 रावण धोलै करि नीचो मांघ । करै सोच बहुत है साथ ॥३६४३॥
 जे पुरुष काहु का कर ग्रहै । तो न्यूं छोडै किसही के कहै ॥
 मोहि भई आणे की काण । कैसे छोडूं अपणीं जाणि ॥३६४४॥
 मंदोदरी बिनबं सुणु नरेन्द्र । परनारी है पाप के फट ॥
 कीरत नासै अपजस होइ । पति परसीत करै नहीं कोइ ॥३६४५॥
 फल इन्द्रायण अधिक स्वरूप । ऐसा परनारी का रूप ॥
 देखत लागै सोभावंत । फरसत लात लवै बिच नंत ॥३६४६॥
 जैसे मणि भुयंग सिर देख । जो कोई लोभ करै बहु पेघ ॥
 उसै बियाल आईं तबु प्राण । बह मणि तब कोई मुगलै घ्राण ॥३६४७॥

जै बाबी मैं झरि हाथ । निरखै कुँवाँ प्राण का बाध ॥
 समझि कुँवाँ नयन घावनि । बरनाही हरि कसि कोन ॥३६४५॥
 जाइ नरक भुगतै बिरकास । जैवन मेवन दुख का सास ॥
 ताती फुलसी त्यागै भय । ए कस नबै सीस के जय ॥३६४६॥
 जे कुलीन ते पालै सीस । तबै सीस जे कुल कुँवैन ॥
 सीता को कूँ बाबी वेहु । तुम इह मेरा वचन करेहु ॥३६४७॥
 जे तुम चाहो हो बसि रूप । मैं हूँ सबतें महा स्वरूप ॥
 जैसा कहो तैसा करूँ मेव । योक्किया रूप कर्क असेत ॥३६४८॥
 सीता नै छो मेरे साथ । पहुँचाऊँ जइने रघुनाथ ॥

रावण का कोपित होना

भ्रंसी सुणि कोप्या दशजीस । भूँह चडाई नयनही बीस ॥३६४९॥
 तू मेरा भजे सूँ जाह । रावण तबै इह बिष रिताह ॥
 परपत्नी की अस्तुति करै । मेरा भय जिय मैं न बरै ॥३६५०॥
 तेरै कहा रामसूँ काम । तो कूँ जात हे उनकी ठाम ॥

मन्दोदरी का वृत्तः निवेदन

मन्दोदरी कहै फिर बैन । प्रीतम तुम राखो चित बैन ॥३६५१॥
 इतनां बुल सीता में कहा । ता कारण इतना हठ बद्धा ॥
 बहु तो कोई ह्मके नाहि । अटल सीस बरतै है ताहि ॥३६५२॥
 उत्तम कुल जनक की भिया । महा सती राम की भिया ॥
 जे कुल हान तजै ते सीस । बिभचारी कुल छाँटे नीस ॥३६५३॥
 बिना कारिय मरि है ए जीव । ए सब पाप चढेये नव ग्रीव ॥
 पहिलां तजै भ्रापनी वेहु । तब परबारासुँ कित्ता सनेहु ॥३६५४॥
 जिनकी तुमने सीता हरी । नै सोहि मारैये इस बरी ॥
 सीस बेल मानुँ तुम बुरा । तुम मरने कारन ही बरा ॥३६५५॥
 बिसन कुमार बिक्रिया रिद्ध । दारा दुख बाका पुनि सिध ॥
 बलि पै मांसी पैड बुझीन । तब बोल्वा बाँधल सति हीन ॥३६५६॥
 छोटा भाव बाँधल का सही । तीन पैडि ही मांसी मही ॥
 इतनी बुल तब बाई वेहु । मानबोत्तर पबैत पग वेहु ॥३६५७॥
 पूजा बरल सुदर्शन मेव । तीजा पग कूँ रक्षा हेर ॥
 तीजा बरल बलि नै हूँए । बेबी नै संबोध तब बिते ॥३६५८॥

तुम हो बली दिपंबर भेत्त । सभखो व्यांन दया उपदेस ॥
 सब मुनिबर कुं उपजी दया । बलि कूं छोड़ि बनवास लिया ॥३६६२॥
 मूला ने दीजिये बताय । व्यांनी मूरख नहीं रिताइ ॥
 सीता देहु ज्युं मिटै राइ । मानुं बचन ज्युं न पडै धाइ ॥३६६३॥
 भागै भए नारायण सात । प्रतिनारायण भारे इण भांत ॥
 प्रथम त्रिविष्ट विजई बलमद । अश्वघोष भारे करे चक्र ॥३६६४॥
 सुप्रतिष्ठ अचल पूजा अवतार । तारक भार किया बंधार ॥
 स्वयंभू धर्म तीजे भए । बैडन उन हृष्यां समए ॥३६६५॥
 पुरुषोत्तम सुप्रभु चौबो बली । निसुंभ कीर्तिण श्रीवा दली ॥
 पुरुषसिंह सुदरसन पंचसै । मेरकूमर जिम मदिर हसै ॥३६६६॥
 पुंढरीक नंद भए छठा । मदसुदन मारघा चक्र पडै ॥
 दत्त नामात्र नारायण सातए । बल्लभ कौं मारघा घातए ॥३६६७॥
 अब है यह अष्टम अवतार । तुम प्रतिनारायण हैं इस बार ॥
 नारायण का है इहै नियोग । प्रतिनारायण कै कूल करै बिजोग ॥३६६८॥
 तातै मुझे व्यापै है इही । तुमकुं लक्ष्मण मारंगा सही ॥
 तातै निबळं बाधं बार । अब जे सकं कलह कुं टारि ॥३६६९॥
 प्रकारय क्यूं दीजिये जीव । अब कछु करो घरम कीं नीब ॥
 अणुगत पालो घर मांहि । सुख सो बैठा सीतल जांह ॥३६७०॥
 छह दरसन बिष स्यो खो दान । सास्त्र सुणुं नित व्याख्यान ॥
 अथ तेरह बिष चारित्र जीतो । पंच इन्द्री सत्रु ॥३६७१॥
 आठ कर्म जीतो तुम ईस । प्रकृति ते रहै एकसो अडतालीस ॥
 भव जल तिर जावो सिब मध्य । अजर अमर तिहाँ पूरण रिख ॥३६७२॥
 उत्तम ध्यानी करै न पाप । सीता देहु राम कूं प्राप ॥
 छुडावो कुंभकरण इंद्रबीत । मेघनाद छूटै इह रीत ॥३६७३॥

रावण का उत्तर

रावण सुणि इम उत्तर देइ । तुम ए वचन काहे कहेइ ॥
 तोरी कूँस उपजे बलवत । तू किम हो है भयवन्त ॥३६७४॥
 मैं तो प्रतिनारायण नही । कौण नारायण है इस मही ॥
 इद्र भूप सम अवतर न कोइ । वाकुं बस कीयों अन्न खोइ ॥३६७५॥
 ऐसे हैं ये कहा बराक । जिन की तुम मानो ही बाक ॥
 मरण सुं कातर होइ सो इरै । तरस होइ सो बेधा भरै ॥३६७६॥

करुं राम लक्ष्मण सुं युध । सब मैं भवतन समभुं युध ॥

भई रयण अस्त भया भान । क्षति की ज्योति उदय भई भान ॥३६७७॥

रावण की रात्रि

रावण अंतहपुर जाइ । भोग भूगत सों रयण बिहाइ ॥

नगर लोच सब नाने रली । कोई दुली न सोभा बली ॥३६७८॥

घरि घरि वपति भूयतैं भोग । ज्यों दुल्लि भली देख असोय ॥

उज्ज्वल सिन्ध्या उज्जल बर्या । सोभैं तिहां बाद की क्षिरण ॥३६७९॥

सुरगपुरी छुर करै किलास । बैठी नारि कंत के पास ॥

फूल सुगंध भरगजा ल्याइ । जिसकी बात मधुकर लुभाइ ॥३६८०॥

बीज बजावै गावैं तान । बोलैं बचन सुल कीं तान ॥

सखी विचक्षण डोलैं बाइ । पान लुबावैं बीड़ी बलाइ ॥३६८१॥

बउका बण्यां बिराजैं बंत । सोहैं हीरा की सी बंत ॥

कउक कला जानई विचित्र । सोहैं हाव कलस के पत्र ॥३६८२॥

कामी कामनी मय अंत । बोलैं सबद कोकिला अंत ॥

ते लुल कितपै बरखे जाइ । जे बरखें तो पार न जाइ ॥३६८३॥

सुख भूं भुगते ज्योतु जाय । करि समान सुमरे जिन नाम ॥

पूजा करी निरंजन देव । भोजन भूज विचारैं देव ॥३६८४॥

पुत्र के लिये प्रस्थान

प्रभु की आज्ञा बजै निसान । सुण्यां सबद डोहैं बलवान ॥

काहू कूं व्यापै बालक मोह । रोवैं नारी प्रभु भयो विखोह ॥३६८५॥

भ्रांसू नयन भरे सब नारि । जुब करण आस्था भरतार ॥

कहैं कंत सुनुं बर भान । हूँ साए हूं प्रभु को भान ॥३६८६॥

स्वामि काज को करघा सरीर । करो काज मन राखो भीर ॥

करै बेगि भूपति का काज । जे विचनो प्रब राखैं सज ॥३६८७॥

जीवांग तो मिलस्या भाइ । सह कुटंब जेठघा तल लाइ ॥

भया बिदा ने पलाय्यां तुरी । ऊंची बढि देखैं सब तिरी ॥३६८८॥

गए दूर सब दृष्टि न पडै । नुरखारत नारी निरं बडै ॥

रावण की सेनां सब बली । कई बीछ पावै नहीं बली ॥३६८९॥

देखैं अटा अटारी लोच । हृष सब पाथक सुमट भोच ॥

भूपति तडे बडे सामंत । बानी नारी बलैं बलवंत ॥३६९०॥

घोडा रथ अग्ने सुखपाल । हस्ती पर रावण भूवाल ॥
 दस सिर वीस भुजा सोबंत्त । के आकास गामी विद्यावन्त ॥३६१॥
 भूमिगोचरी पृथ्वी पर चली । विद्याधर ऊंचे बहु भले ॥
 लोप्या भानु न दीसै आकास । महासंघट सेना चिहुं पास ॥३६२॥

ब्रह्मा

रावण की सेना चली, कंव्या सब ससार ॥
 सूर सुभट जोधा घने, कहत न पावै पार ॥३६३॥

इति श्री वधपुराणे रत्नजोग विद्यानकं

६७ वां विद्यानक

चौपई

मन्दोदरी से अन्तिम भेंट

मन्दोदरीं सुं रावण डम कहै । तू काहे चित्त चित गहै ॥
 सुभटा साथ वणै है काम । जो जीवता बचै सप्राम ॥३६४॥
 फिर तोहि सेती होइ मिलाप । हीरणी होइ टरै नही आप ॥
 बहु विष समझाई अस्तरी । बिछड़े कंत हिए गम भरी ॥३६५॥
 ऊंचे बढि देखी सब सैन । परि अगण जीवकुं कुचैन ॥
 मैं समझाई रवि पवि हार । बचन न मान्यां मोहि भरतार ॥३६६॥
 अब कै कहा बणावै दई । अठारह सहस सोच चित्त भई ॥
 एक सहस मगल मयमंत । रथसो लगे अंजन मिर भत ॥३६७॥
 छत्री कलस अति सोभा बणी । रतन जोति सी दमकै घणी ॥
 रावण बैठा रथ परि आइ । दससिर सोहैं बीस भुजाइ ॥३६८॥
 इन्द्र रथ सम रथ नही कोइ । ग्रंसी सुरी रघुवंसी बोर ॥

रावण द्वारा युद्ध की तैयारी

रावचन्द्र केहरि रथ चढे । गच्छ वाहन लक्ष्मन बढे ॥३६९॥
 सेना चली चतुर विष सघ । सुर सुभट मन उठै तरंग ॥
 इन्द्ररथ रघुपति ने देखि । पूर्खे इह का कहो परेषि ॥३७०॥
 कै परवत कै कोई देस । कही न देख्यो इसका भेस ॥
 अगद बोलै जाबूनद । इह रथ रावण विद्यावन्त ॥३७०॥

लक्ष्मण सुणि कोप्या बहु भाइ । वा सनमुख सेना से बाइ ॥

दोनों की सेनाओं में युद्ध

इत उत सेना सनमुख भई । काढि खडग लडाई लडी ॥३७०२॥

दनी अजनधिर जिम जुटै । मद के माते चुबे पटै ॥

मारै टक्कर टूटै दंत । मसतक फूटै बहै रक्त ॥३७०३॥

छोई चरखी मारै बाण । पंदल सब भुझै धमसान ॥

किसही काढि लई तरवार । घाइ पडे करि माहंमार ॥३७०४॥

तीर तुपक का लागै घाव । सुरमाँ सभी लडै तिह चाव ॥

तउव न मानै दोउघा हार । घायल घूमे रणह मभार ॥३७०५॥

रुडमुंड परवत सा पडे । रय सुं रय अस्व सु अस्व भिडे ॥

धोउ धां भुझै भूपत बगो । उनुं का नाम कहालूँ गयो ॥३७०६॥

धनुष खैंचि तक मारै बाण । बहुतू का छई तिहा प्राण ॥

अथ आदि भपै तिहा आइ । सुरनर किनर देखै जाइ ॥३७०७॥

वाने धारी जोधा लरै । उनू के पीछे पाव न पडै ॥

कातर भाजै जै रण कू देख । कोई न उवरै श्रैसा लेख ॥३७०८॥

श्रैसी कठिन बणी चिहु फेर । जित भाजै तित मारै घेर ॥

बडगी संग बडगी जुटे । तिनका ओष बहुनें घटे ॥३७०९॥

मारै गटा करै चकचूर । चक्र मारता भुझै सूर ॥

बरछी मारै लेइ उंचाई । कोई गहि कर देहु बगाई ॥३७१०॥

बाथी बाथ नडे बलवान । सोणत बड़े अति नदी समान ॥

इहै हनुवत उतै मारीच । घेरि निमा मेना के बीच ॥३७११॥

तब घाए अ मद सुग्रीव । सद्रुक कु भ विष्म रण सीव ॥

पडी मार राखण की सैन । भुझे राक्षस भया कुचैन ॥३७१२॥

चिहुं कोर बाए सामत । टूटै खडग लोह बाजत ॥

राखण देखे हारे नोग । आखा आप जुष कं जोग ॥३७१३॥

रामचद्र लक्ष्मण बलवत । सन्मुख ए घाए पुन्ववत ॥

पुन्य ती होवै निज जीत । पापी मरै महा भयभीत ॥३७१४॥

राखण रामचद्र सो कहै । अजहूँ कछु तास रहे ॥

मारुं तोकु श्रेय सवारि । लक्ष्मण बोलै बात विचार ॥३७१५॥

दे गवार पापी तू चोर । अमकै पकडि मारुं ठीर ॥

अजावर्त्त राम का गह्वा । लक्ष्मण लसुद्रावर्त्त से राख ॥३७१६॥

जाएँ पड़े गिरि सुमेर । सोमै दंत गिरघा रण घेर ॥
 राक्षस बसी रोवै भूप । सुग्रीव आदि सोय वे सख्य ॥३७६८॥
 रोवै सकल उपाई केस । देखै सब रावण के भेस ॥
 हा हा कार करै बहु सोर । रावण मृत्यु पड़ा तिरण ठोर ॥३७६९॥

दूहा

परनागी के कारणै, रावण दीये प्राण ॥
 इह तन अपरणा खड़ीए, समझो एह सुजाण ॥३७७०॥

इति श्री पद्मपुराणे वसुधोव षष्ठ विधानकं

७० वां विधानक

चौपई

बिभीषण द्वारा भाई के मरण पर विलाप करना

भभीषण व्याप्या भाई सोय । रोवै और चहु घा लोग ॥
 हाइ भाई ए नैने क्या किया । मेरा कहाँ तै नहि माना दिया ॥३७७१॥
 जो मोहि सेती भई कछु चूक । गही मोत रहै ह्वै मूक ॥
 किरपा करो सुणावो वयन । तो अब मोहि होय सुख चैन ॥३७७२॥
 तुम बिन कैसे जीऊ वीर । तेरे दुख सो जलै मरीर ॥
 तुम बिन चले जान है प्राण । आइ सूर्क्षा मृतक समान ॥३७७३॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण तब देख । भभीषण पड़घा मृतक के भेस ॥
 बंध बुलाइ करै उपचार । ऊषद दे करि वीजगा बयार ॥३७७४॥
 बड़ी बार मे भया मचेन । व्याप्या मोह भाइ के हैत ॥
 रावण का तब पकड़ै हाथ । ले ले लावै छाती माथ ॥३७७५॥
 बार बार आनिगन करै । हाथ वीर तू अरधन भरै ॥
 बहुरि भयो वह मूर्खावत । जाएँ भया प्राण का अत ॥३७७६॥
 बहुत जतन सो भई सभार । अंतर्पुर पहुँची यह सार ॥

रावण की रानियों द्वारा विलाप करना

मंदोदरी रभा चंद्रान । चंद्रमन उरवसी त्रिय आन ॥३७७७॥
 मलीन रूपणी सीला रत्न । रत्नमाला रामोदरी बिला ॥
 लक्ष्मी पदमा सु विसाल । रानी सहस्र सभी बेहाल ॥३७७८॥
 पीटें छाती कूटै देह । सब मिल घालै सिरमे वेह ॥
 बिनवै सब भिल रावण भोग । सब नगरी का रोवै लोग ॥३७७९॥

हाथ करम तैने कहा किया । बिषया भई महा दुख दिया ॥
 कैसे जीवै कत के मुगै । सब मिल पीटै अपना हियै ॥३७८०॥
 कोकिल सबद सुहावन बोल । सब परिग्रामा माची रोर ॥
 सब आए जिहां रावण पड्यो । देखै लोय ज्यौं पर्वत गिरयो ॥३७८१॥
 ले ले हाथ लगानै हिये । इन रावण बहुतें सुख दिये ॥
 बहुत भाति के मुगते सुख । अब कु जीवै कन के दुख ॥३७८२॥
 सब नारि आलिंगन करै । अण आर्य रावण का मरै ॥
 जै सीता कुं देता आं गु । तो क्याने ये नजता प्राण ॥३७८३॥
 भूमिगोचरी की अस्त्री हरी । परनारी ज्युं पैनी छुनी ॥
 असी विष रावण का मरै । करम अटारे किम टरै ॥३७८४॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण तब आई । समभाजै इनकु बहु भाई ॥
 रावण का था यही निगो । अब तुम तजो सकल निज सोग ॥३७८५॥
 भावमंडल कहै उपदेस । सुणु वचन अभीषण भुवनेस ॥
 रावण रण मे साका किया । रह्या खेत सनमुख जिय दिया ॥३७८६॥
 ते बलव त टेक सो मरे । तिनका पावन रण मे टरै ॥
 धन्य पुरुष जे राख टेक । ते सहस्र मे गिलाये एक ॥३७८७॥
 पत्नी होय मरै पडि छाट । जनम अकारथ तिसका घाट ॥
 इह रण था सुभटा की बोर । असा मरण न पावै और ॥३७८८॥
 धनि धनि ए रावण महाबली । जाकी बुधस्यौ पूजी रली ॥
 चक्र चलाया भै चित्त न किया । ए दिह रावण मनमे निवा ॥३७८९॥
 सफल मरण ए तिन विष जान । असे है उत्तम परमाण ॥

श्रेष्ठ मरण

सग्राम माहि जे क्षत्री मरै । कै तपकर सज्जम व्रत घरै ॥३७९०॥
 जीतै आठ करम धरि ध्यान । ते उपजानै केवलज्ञान ॥
 पावै अजर अमर पद ठाम । जुग जुग रहै उनू का नाम ॥३७९१॥
 ले सन्यास तजै जे प्राण । समाधि मरण जग मै ए जान ॥
 असी विष सी मरै जो कोइ । ताका सब बिषसं जस होइ ॥३७९२॥
 असी का किम करिये सोच । ऊनू का हठ बलाने लोग ॥
 तीन सोक मे अमर है जान । बेद पुराण करै है बलान ॥३७९३॥
 वे नही मुवा सदा है अमर । अरिबम सा मुवा जान्या सगर ॥

लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना

लक्ष्मण कै वह बैठा हाथ । पुण्य सहाइ हुआ रघुनाथ ॥
 पुन्य समान सगा नही कोई । पुंन्य ही तै जग मे जस होइ ॥३७४२॥
 पुंनि सहाय दुर्जन हीन । पुन्य पावै बुध्य प्रवीन ॥
 पुण्य तें भोग भुगतै ससार । पुन्य बडो त्रिभुवन आचार ॥३७४३॥
 पुन्य तै दुख दालिद्र जाइ । सकट बिकट मे पुन्य सहाइ ॥
 जल थल महियल मैं भय टरै । ठग ठाकुर न उपद्रव हरै ॥३७४४॥
 पुन्य तै कंचन वरण सरीर । रोग मोग ने व्यापै पीड ॥
 सब जग सेवै भय नहि ताहि । पुन्य समान भला कछु नाहि ॥३७४५॥
 पुन्य तै पावै धन सिध । पुन्य ते पावै सुर की रिष ॥
 पुन्य तें पावै परियण सुख । पुन्यवत का भाजै दुख ॥३७४६॥

सोरठा

रघुवसी सु पुनीन, चक्र मुदजन राइया ॥
 तब सब भए नचीन, पूरव भव के पुन्य सु ॥३७४७॥

इति श्री वचनपुराणे चक्रमुदर्शन लाभ विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण चक्र मुदर्शन पाय । आनंदे रघुवसी राइ ॥

रावण का परचाताप

रावण बेर बेर पिछताइ । भुभी सब भेन्या इस ठाइ ॥३७४८॥
 हय गय रथ अरय भंडार । पुत्र मित्र सगी नही लार ॥
 नारी लक्ष्मी आवै फिर जाई । जैसे बुंद बुंद जाइ विलाई ॥३७४९॥
 हु माया जाल माहि पड्या । परनागी जाय करि हरया ॥
 मैं माया तजि लेता जोग । तो क्यू होता इतना सोय ॥३७५०॥
 लक्ष्मी तज न सक्या अग्यान । मोकु छोडि गई सुविहान ॥
 जे नर माया कै बस भए । धर्म विदारक स्वान ही हिए ॥३७५१॥
 जनम अकारथ खोया आप । अइसां रावन करै विलाप ॥
 अनतवीर्य स्वामी के वचन । ते मै देखे भेद भिन्न भिन्न ॥३७५२॥
 कोटिसिला उठावै जाइ । चक्र मुदर्शन पावै आइ ॥
 ते निसर्च रावण कु हएँ । हुआ परतक्ष श्री जिन भएँ ॥३७५३॥

राज मद मे मैं हुआ अंध । बाध्या धसुभ कर्म का बंध ॥
 धन जोवन सुपने की रिख । जाग्या कलुषघन देखे सिध ॥३७५४॥
 जो मुख ते मोह बसि पड़े । वे क्यों भवमायर मे नडे ॥
 जे विषफल को देख लुभाइ । जाके भयै प्राण उड जाइ ॥३७५५॥
 उस साया इक भव ही मरे । परत्रिया तै भव भव दुख भरे ॥

विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श

रावण अपणी निंदा करै । भभीषण मुं लक्ष्मण उच्चरै ॥३७५६॥
 अवर नृपति जो मारीं छाँस । ज्यो रावण राखै हम काग ॥
 तो करो राज लका का वही । जीव दान वाली छू मही ॥३७५७॥

रावण का क्रोधित होना

रावण सुनि भ्रमनि जिम बलै । रे लक्ष्मण क्या मन मे खिलै ॥
 मैं रावण हूँ बली बलवान । जे तै चक्र लह्या अब छान ॥३७५८॥
 चक्र पाया क्यों काज न मरै । जैसे चक्र कुभार का फिरै ॥
 चक्र फिराए होय न कछु । जैसे धन पागे कुल तुच्छ ॥३७५९॥
 वे मन मे ही अति गरवन्त । अद्र पुरुष गमे बहुवन्त ॥
 जे तू नारायण होता आज । मे कहूँ सोही करूँ तू काज ॥३७६०॥
 इन्द्र मरीखा फेरूँ तू रूप । तो तूँ सही नारायण भूप ॥
 तू नारायण कैसे भया । दसरथ देस निकाला दिया ॥३७६१॥
 वन बेहड तू भ्रमना फिरघा । तब तै कुछ कहूँ न बन करघा ॥
 मैं बालकस्थौ बूढा भया । तब ते मैं प्राकर्म बहु किया ॥३७६२॥
 मो पै हे विद्या बल वही । हूँ रावण जीती सब मही ॥
 मोकू तू जाणै है भली । मो सूँ कहा चक्र की चली ॥३७६३॥
 तू भरम्या है चक्र फिराड । वराक पुरखौँ एहै सभय ॥
 जितना तरे सगी भूपाल । माकूँ गदा धसै पाताल ॥३७६४॥
 मैं रावण किस की करूँ सेव । तुम कु अब जिम मिदिर देव ॥
 निठुर वाक्य बोल्या बहुजाति । सकल सुण्या राज रघुनाथ ॥३७६५॥

लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना

लक्ष्मण कोप्या चक्र फिराई । छुटषा ज्यों बीजनी धाई ॥
 रावण इन्द्रधनुष कर गह्या । अपणै बल पोरष उमह्या ॥३७६६॥
 चन्द्रहास लडग नीकाल । रोकै मार चक्र की चाल ॥
 लाम्या चक्र रावण के हीए । दोए खड होइ प्राण उड गये ॥३७६७॥

धनुष लीया रावण नै तागि । दाउ बा छुटे विद्या बाण ॥
भीषण मयमत सु जुघ । बाध्या में भूपति बहु बुध ॥३७१७॥

इहा

बहुत जुघ दोउधा हुवो, कब लग करै बलाण ॥
सुर असुर गधर्व सु, सह जीवने दीये पराण ॥३७१८॥
इति श्री पद्मपुराणे रावण लक्ष्मण जुघ विधानकं

६८ वां विधानक

चौपई

देवताओ द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन करना

रावण लक्ष्मण दोउ लरै । दस दिन बीते दोउ न टरै ॥
सुर असुर किर गधर्व । देखै जुघ मराहै सर्व ॥३७१९॥
वर्षे फूल होई जैकार । इनका जस प्रगटथा संमार ॥
चन्द्रवरघन कै आठ पुनगी । वैठि विमाण आई सु दगी ॥३७२०॥
देखै जुघ पूछै अपछरा । तुम हो कवन ध्यान रहा धरया ॥
चन्द्रवरघन राजा की धिया । जा ममै बीबाही थी सिया ॥३७२१॥
तब हम लक्ष्मण कु पिता दई । जै लक्ष्मण जीतै अब कही ॥
हमारे मन का कारज होइ । नातर हममें जीवै नहि कोइ ॥३७२२॥
दुतनी सुणि देई अमीय । लक्ष्मण जीवो बहुत बरीस ॥
उचै चित लक्ष्मण वली । आनदे सब मनमें रली ॥३७२३॥
किनर दीया सिधारथ बाण । वह विद्या पाई तिह धान ॥

रावण द्वारा चिन्ता करना

रावण मनमें करै विचार । किमहि न मानै लक्ष्मण हार ॥३७२४॥
विघन विनायक छोडे बाण । लक्ष्मण बाकी करै न काण
सब विद्या छोडी तिह वार । चले बाण ज्यो बनहर धार ॥३७२५॥
बाण सकल निकल होइ गए । रावण साच विचारै हिए ॥
मेरी विद्या बाण अचूक । इह विरया पराक्रम गए सूक ॥३७२६॥
बहुरूपणी विद्या सभानि । कोप चडे रावण भूपाल ॥
लक्ष्मण का त्रकवाण छोडि । एक मुंड रावण का तोडि ॥३७२७॥

अनेक रूप में रावण का लडना

टूटथा एक भया होइ दस ओरि । वीसतैं दूली भुजा तिह ओर ॥
 सूरजहास लक्ष्मण कर गह्या । काटै मु ड रक्त तिहां बह्या ॥३७२८॥
 ज्यो ज्यों काटै त्यों त्यों बर्च । सहस्र मु ड भुज दूणा बढै ॥
 ज्यो ज्यो काटे भूजा अरु भूँड । लाख सीस भुज दोई लख दंड ॥३७२९॥
 सकल भुजा आयुध को लिये । मार मार सबद मुख किये ॥
 जिहा काटै तिहां चलै रक्त । नदी बहे डूबै सहु जत ॥३७३०॥
 परवत मु ड भुजा का भया । पड़ी लोथ पग जाई न दिया ॥
 सोनन नंदी बहै तिहां लोथ । हाथी घोडे रथ सूर बहोत ॥३७३१॥
 जैसे मगरमछ जल तिरै । जैसे लोथ रक्त मे फिरै ॥
 जेता रण भुभा दोउ सेन । तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७३२॥
 रावण की सब सुध वीमरी । लक्ष्मण भुजा बकी तब हरी ॥

रावण द्वारा चक्र चलाना

रावण तबै संभाल्या चक्र । सुदर्शन नाम भयानक चक्र ॥३७३३॥
 सहस्र देवता सेवा करै । चक्र सुदर्शन बहु भुण भरै ॥
 रावण कं कर आया तिह घडी । रवि की ज्योति सब उन हरी ॥३७३४॥
 चिमक सकल भाज्या रण लोग । कौण कौण का होय वियोग ॥
 जिहा चक्र चलै सब दलै । कोई न बचै फिर जीवत मिलै ॥३७३५॥
 चक्र तेज तै सहु जन डरै । बा सनमुख कोई न उबरै ॥
 रामचंद्र लक्ष्मण सुग्रीव । भामडल भीषण नीव ॥३७३६॥
 हनुमान सुभट शिर अण । कछु सक न मानै हीवे ॥
 बोलै रामचंद लक्ष्मण । रे बराक सोचै क्या मना ॥३७३७॥
 छोडि चक्र ककं डै टूक । बज्जावर्त सू हनूं भजूक ॥
 कोप्या राबन चक्र फिराह । खुटथा सुदर्शन मुख जाइ ॥३७३८॥
 रामचन्द्र कर बज्जावर्त । लक्ष्मण कर समुद्रावरत ॥
 भीषण सबाल्य विसूल । चक्र फेर गयावै मूल ॥३७३९॥
 हनुमान उठाई गदा । सुग्रीव बज्ज संभाल्या तदा ॥
 चक्र नै फोडि करै चक्रचूर । घेसा मता करै सब सूर ॥३७४०॥
 चन्द्ररत्न अर भूपति धरो । खलबल निपुण राम संग धरो ॥
 सुदर्शन चक्र लक्ष्मण छिग जाई । तीन प्रवर्तिया दीनी भाई ॥३७४१॥

अरिदम की कथा

अईमा केसो गहै न्याई । जे वह मुवा जीव छिपाई ॥३७६४॥
 अघ्यरपुर नगर हरदक्ष भूप । लछमीवती राणी सुलरूप ॥
 अरिदम पुत्र बाकं गर्भ भया । जोवन समै उछाह अति थया ॥३७६५॥
 वसुसुंदरी व्याही अमनरी । रूप लघ्यन गुण लावन भरी ॥
 राजा राणी भए वैराग । राजबिभूत सकल साहिबी त्याग ॥३७६६॥
 अरिदम पुरु का राजा किया । आप जाह संयम व्रत लिया ॥
 अरिदम अधिक प्रतापी थया । भूप प्रताप सकल छिप गया ॥३७६७॥
 सब पृथ्वी का जीत्या नरेस । मनाय आण लीया सहू देस ॥
 फिर आया अक्षरपुर नगर । हाट बाजार छाए तिहा सगर ॥३७६८॥
 घर घर बाधी बादरवार । भया रहसि अति नगर मभार ॥
 धरि धरि रनी बधावा भग । परियण में सुख उपजे नये ॥३७६९॥
 बहुत आनदस्यो आयो राय । रत्नमुष्टि भर डारत जाय ॥
 राजा अतहपुर न गयो । राणी सुं इम हसि बोलियो ॥३८००॥
 जो कछु नई बात तुम सुणी । अंसी हमस्यो कहिये मुणी ॥
 राणी कहे तुम सुणियो कन । कीरतधर मुनिवर सु महंत ॥३८०१॥
 इक दिन आए लेण आहार । भोजन पाय चल्या त्रिण बार ॥
 मैं पूछघा तुमारा परताप । कब आवै प्रथिवीपति आप ॥३८०२॥
 मुनि बोले जीतैगा सब मही । पण वाकी आरबल तुछ रही ॥
 बा दिन तै चिता है मोह । सुणु प्रभु समझाउ तोहि ॥३८०३॥
 राजा सुणि कै गयो उद्यान । जहाँ बैठ्या मुनि आतम ध्यान ॥
 पूछै मुनि सू तब ही नरेन्द्र । मेरे मन की कहो मुनिद ॥३८०४॥
 बोलै मुनिद पूछो तुम आव । रहे दिन सात जीवण के राव ॥
 पूछै नरपति कारण कोण । नमभायो स्वामी तजि मौन ॥३८०५॥
 कहै मुनीस्वर सुणी भुवान । विद्युन पात सो तेरा काल ॥
 सोचै भूपति मुनि सुण बात । करू उपाव बचै जिव घात ॥३८०६॥
 बुलाइ मतरी मतो उपाइ । मुनि के वचन निरफल जाइ ॥
 एक जतन सु उवगो गइ । लोह की कोठी तुम करवाइ ॥३८०७॥
 बाह वामे राजा तुम पैठ । साफल लगाव हवा हेट ॥
 बज्र साकुल कठाहवा बाधि । डारै वह में जिहा नीर अघाध ॥३८०८॥

जहां दामनी का नहीं प्रवेश । या प्रकार जीवस्थी नरेस ॥
 छह दिन भीत सातवां गया । डबै पैठि ब्रह्म भीतर गया ॥३८०६॥
 नाबासुं सांकुला लयाइ । उठी बटा सहज कै भाइ ॥
 घन बटा होइ संसार उबार । कइकी दामनी मारघा तिएबार ॥३८१०॥
 टूटा बबा राजा दोइ खंड । होनहार महा प्रचंड ॥
 करम रेख किम मेटी जाय । हौणहार सौं कहा बसाय ॥३८११॥
 राजा बीजली नें मारिया । उन मरणे का प्रति भय किया ॥
 भैंसे का सोग करया न्याइ । राबण भुझा सामों घ्याइ ॥३८१२॥
 प्रीतकर ने पाया राज । भरिदम मुवा सरघा नहि काज ॥३८१३॥

कूहा

करघो सयाण्य बहुत बिष, मत्र जंत्र अनै उपाइ॥
 हौणहार टलना नही, बहुत वणावो दाव ॥३८१४॥

इति श्री वचनपुराणे भरिदम विधानक

७१ वां विधानक

चौपई

राबण का बाह सस्कार करना

रामचंद्र लछमन सजुत । तिहा बंठा भूपती बहुत ॥
 भभीषण ने बहुते समझाय । दहन क्रिया कीजे सब जाइ ॥३८१५॥
 राबण तीन खंड का राव । जाका तिहू लोक मे नाव ॥
 बेगी क्रिया तास की होइ । काया बिगडन पावै सोइ ॥३८१६॥
 जो मृतक कौं होई अबार । उपजै जीव वा देह मभार ॥
 ग्यानवंत डील नही करै । उठौ बेग ज्यों कारज सरै ॥३८१७॥
 सब मिल गए मंदोदरी पास । अठारह सहस जिहां त्रिया उदास ॥
 सोगवंत बैठी सब नारि । देख राम नै करै पुकार ॥३८१८॥
 नैनन नीर तहै असराल । रोवै सगली खाइ पछार ॥
 तब रघुपति समझावै ताहि । भभीषण बीनबै गहि बाह ॥३८१९॥
 मंदोदरी बोली तब बात । दहन क्रिया कीज्यो भली भाति ॥
 साज बिमोण पदमसिर गए । चंदन अगार बहु बिष सए ॥३८२०॥
 पदम सरोवर अंदर धान । चिता संवारी उत्तम धान ॥
 बोले तबै श्री रामचन्द्र । कू'भकर्ण इन्द्रजीत हम बन्द ॥३८२१॥

मेघनाद और वदमय । व्याकूँ अटके मानइ भये ॥
 इनकूँ अब तुम छोडो जाइ । दरसन करै पिता का आइ ॥३८२२॥
 बानर बसी बोले तब राइ । रावण ते बे बल अघिकाइ ॥
 जे वह छूटै तो ले बैर । राक्षस बसी मिल उनसों फेर ॥३८२३॥
 अंसा बल हम पै है नही । अब कै उनसुं जीतै कही ॥
 उनकूँ मारि करो तुम पेह । दूरजन सू अब कैसा नेह ॥३८२४॥
 मारि मारि करि लीजे जीव । अब ही उनकी काटो ग्रीव ॥
 रामचंद्र चित करुण आइ । उनका पिता जलै इस ठाँइ ॥३८२५॥
 अब नही दरसन पार्व तात । बहुरि देखेंगे किह भाति ॥
 फिर बोले सेना के लोग । अंसानैँ किम छोडन जोग ॥३८२६॥
 भावमंडल कहै छोडो उननैँ । जं तुम भय राखो नहि मनमे ॥
 तुम मति कीज्यो उनसो राडि । जब वे चतुर ता हम भी व्यार ॥३८२७॥
 जो वे फिर भी हमसौ लडैँ । तो हम भगोसा नाही करै ॥
 भावमंडल अनैँ हनुमान । सुग्रीव अगद चले बलवान ॥३८२८॥
 बे व्याकूँ है बन के माझि । महादुखी है दिवस न सांझि ॥
 लोह पिजरा चहुघा मूल । ऊभा तिहा दुख का मूल ॥३८२९॥
 हाथ हथकडी पाव साकुली । मन मे तोप देह सब जली ॥
 मन का छोडया सब मंदेह । राजभोग से तज दिया नेह ॥३८३०॥
 अबकैँ छूटैँ तो तप करैँ । फेर नही भवसागर पडैँ ॥
 अंसा ऊना किया था ध्यान । भावमंडल तहा पहुँच्या आन ॥३८३१॥
 कै रावन भुझ्या सग्राम । तुमनैँ कोकैँ लक्ष्मण राम ॥
 दरसन करो पिता का आइ । खोलि पिजरा अपने संग ल्याइ ॥३८३२॥
 नीची दृष्टि गैवर की चाल । आवैँ ते व्याकूँ भूवाल ॥

कुंभकर्ण एव इन्द्रजीत को छोडना

रामचंद्र प्रति आणै सर्व । गलत भया जोषा का गर्ब ॥३८३३॥
 कहै राम तोकूँ दू छोडि । जो तुम बैर न करो बहोडि ॥
 बोले कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हमतो छोडी संसारी रीत ॥३८३४॥
 जब छूटै तब दिध्या लेहि । राजभोग जल अंजलि देहि ॥
 बेडी काडि छोडिया कुमार । रावण कीरिया करी संवार ॥३८३५॥

बहुता नं उपज्यो वैराग । धर परियण सगला सुख त्याग ॥
बहुता ने माइयो सन्यास । अन्नपाणी तजि करे उपवास ॥३८३६॥
कोई भए सन्यासी रूप । कोई गए लंका मे भूप ॥
अणो जाइ कुटुब वे मिले । धरि धरि कथा राम की चले ॥३८३७॥

अपर मध्य मुनि का संघ सहित आगमन

अपर मध्य मुनि लहर तरंग । छपन्न सहस्र मुनिबर ता संग ॥
रिधवत भ्रंसे वे साथ । जिहा रहैं तिहां मिटै उपाधि ॥३८३८॥
वैर भाव सब ही का टरै । कोई नहीं उपद्रव करै ॥
लंका मै वे आया मुनी । व्यार ग्यान का धारक मुनी ॥३८३९॥
कुसुमादि वन मे धारयो जोग । दरसन कू आया बहुलोग ॥
तपकिरात कंचन सम गात । सब कोई करै मुनीस्वर जात ॥३८४०॥
भ्रंसा मुनि तब करता गौन । तउ रावण ने हतता कौन ॥
जादे समै रहै वे जती । तिहा कष्ट नही व्यापै रती ॥३८४१॥

मुनि को केवल ज्ञान की प्राप्ति

सर्वं मही है स्वर्ग समान । दोइर्मं जोजन लौ परवान ॥
सुकलध्यान आतम ल्यो लाइ । केवलध्यान भया मुनिराइ ॥३८४२॥
अनत सत स्वामी अरिहत । भया जनम बातकी भगवत ॥
इन्द्र धरएँन्द्र चहु विध देव । जनम महोछव कीनी सेव ॥३८४३॥
मेरु सुदर्शन पाडु का शिला । श्री जिए का महोछव किया ॥
सहस्र अठोतर कंचन कुभ । खीर समुद्र नीर भरि सुभ ॥३८४४॥
कलस ढालि जय जय करी । तीन लोक मे महिमा धरी ॥
श्री जिन जी जननी कौ दिये । सुरपति फिर सुरआलय गये ॥३८४५॥

धरएँन्द्र का आसन कपित होना

आसण कप्या तब धरएँन्द्र । अवधि बिचार कियो आनद ॥
त्रिकुटाचल लका मे थान । अपर मुनी कूँ केवलध्यान ॥३८४६॥
जय जय सन्द देवता करै । बाजा बाजे देव उच्चरै ॥

राम द्वारा विचार करना

रामचन्द्र बाजे जब सुरो । तब भूपति सोचै मन धरो ॥३८४७॥
भ्रंसा कवण बली इस ठाइ । जिसके बाजा बजे इह भाइ ॥
रामचन्द्र लक्षमण सुग्रीव । भावमंडल अ गद गुण नीव ॥३८४८॥

मलनील कुंभकरणा भूप । इन्द्रजीत मेघनाद अनूप ॥
लंका सींव गए सब राय । जय जय बुनि सुणी तहो आइ ॥३८४६॥

राम का मुनि के पास जाना

सब मिल समझ्या हम राजान । मुनि नै उपज्या केवल म्यान ॥
उतर भूप पयादे चले । ले पूजा सामग्री भले ॥३८५०॥
दे परदक्षिणा करी ढकोत । रघुपति पूछै धरम बहोडि ॥
ध्यारू गति भाष्या मुनि भेद । सुभ अर असुभ करम का लेद ॥३८५१॥
उत्तम किरिया सगी जीव । मध्यम अघर अगति की नीव ॥
आरत रौद्र ने नीची गति । सात बिसन नरक की धिति ॥३८५२॥
धरम सुकल जीव का आघार । भवसागर तें उतरें पार ॥
इन्द्रजीत मेघनाद जोड़ दोड़ हाथ । हमारा भव कहिए मुनिनाथ ॥३८५३॥
बोले मुनिवर म्यान विचार । सब जीवो का होइ आघार ॥

मुनि द्वारा पूर्व भवों का बर्णन

जबूद्वीप भरत छह पंड । कोमबी नगरी तस मड ॥३८५४॥
भवदत्त पंच सेठ के बाल । रूप लक्षण गुण अति सुबिसाल ॥
सम्यक दृष्टि दोऊ बीर । सकल जीव की जाएँ पीर ॥३८५५॥
म्यान समुद्र मुनि आगम भया । दोऊ बीर दरसन कू गया ॥
पूछि क्रिया सरावग जती । क्रीया करिकै कहो सब भती ॥३८५६॥
साभल धरम अणुव्रत लिया । मुनि के पास बैठ तप किया ॥
अद्वरस्मि नगरी नूपाल । दरसन कू आया ततकाल ॥३८५७॥
करि प्रदक्षिणा कहै नमोस्तु । धर्म वृद्धि बोले मुनिरस्तु ॥
नंद सेठ ता नगरी माभ । पूजै जी जिन वासर साभ ॥३८५८॥
लक्ष्मी घणी महा धरमेष्ट । चलै बाल जे सम्यक दृष्टि ॥
इन्द्रमुखी बाकी अस्तरी । जिनवाणी निरुचै मन घरी ॥३८५९॥
सेठ चल्या मुनिवर की जात । हय गय वाहन नाना भाति ॥
बहुत लोग आएँ मग सेठ । राजा विभव छिपी ता हैठ ॥३८६०॥
पचसम देख अचभा करै । नंद सेठ इतना बल धरै ॥
राजा तैं अधिक परताप । भरम्या चित्त बिसारी जाय ॥३८६१॥
मेरे तप का एही निदान । पाउ जनम याके जर भान ॥
छोड़ी वेह भया गर्भ आइ । इन्द्रमुखी सुल उपज्या काइ ॥३८६२॥

तप के महातप का परबेस । चन्द्रस्मि भयानक रस ॥
 गिरे कोट के कागरा भूमि । कांपी मही आए भूम भूमि ॥३८६३॥
 निमित्तग्यानी जोतिनी बुलाइ । इह निमित्त पूछी बसराइ ॥
 कहूँ जोतिनी जोतिन देखि । नंद पुत्र के ग्रह विसेष ॥३८६४॥
 दोई पुत्र भुगतैये राज । जैसे सकुन भए हैं धाजि ॥
 राजा सोच करि करे विचार । होली होइ सर्क को टारि ॥३८६५॥
 जे उसका है वही निमित्त । तो क्यो आणो विकल्प चित्त ॥
 राजा गरम की चिता करे । नवमास पूरा अवतरै ॥३८६६॥
 रतन वरचन जनमिया कुमार । बदन जोति जति की जनहारी ॥
 पाई बुद्धि भति भए सचेत । राजा सेव करे बहु हेत ॥३८६७॥
 रतन वरचन परतापी भया । पृथ्वी जीत भति ऊचा भया ॥
 सकल भूपति सेवै पाइ । कर बदन देखै सब आय ॥३८६८॥
 भवदत्त तीजे स्वर्ग विमान । इन मन माहि विचारा म्यान ॥
 हम थे पुत्र सेठ के दोइ । पसचम जीव रतनवरचन होइ ॥३८६९॥
 राजविभव मे हुवा अघ । बार्क नही घरम का बंध ॥
 भरमंगा वह इस ससार । माया फंद मे लहै न पार ॥३८७०॥
 तार्त वाहि सम्बोधू जाइ । ज्यू वह भवसागर मे ना भरमाय ॥
 जैसे चित भर आए देव । धारधा रूप दिगंबर मेव ॥३८७१॥
 पौलिया जाण न देखै ताहि । रतनवरचन रूप धरधा नरनाह ॥
 राजसभा माही सुर गया । पूछै नरपति अचरज भया ॥३८७२॥
 सुर समभाव पिछली बात । हम तुम थे दोन्युं भ्रात ॥
 तू पसचम हूँ हो भवदत्त । माया मोह मे डूबै मत्त ॥३८७३॥
 अजहूँ समझि जिम पावै पार । रतनवरचन कू भई सभार ॥
 तजै राज तप साध्या जाइ । नवग्रीवा परि पाई ठाह ॥३८७४॥
 उहा तैं चये ऊरबब नय । दोन्युं देवराज के कुंवर ॥
 राज भुगत उपज्या वैराग । भए दिगंबर मुख धन त्याग ॥३८७५॥
 तप करि वसमे स्वर्ग विमान । मंदोदरी गर्भ भए तू भान ॥
 पसचम जीव भया इन्द्रजीत । भवदत्त मेवभाव इह रह रीत ॥३८७६॥
 इन्द्रमुखी इच्छा इह धरी । ऐसा पुत्र भए सुभ धडी ॥
 चन्द्रसम सेठ अरनंद । भए जती भला गुरुवंदि ॥३८७७॥

तेरे तप का यह फल सही । हमारा बहुरि पुत्र होय कहीं ॥
 इन्द्रमुखी मदोदरी भयी । इह विभूत नव पाई नई ॥३८७८॥
 साभति घरम दिगंबर भए । मंदोदरी पछतावा किये ॥
 विधवा भयी पुत्र हुवा जती । कु भकरण है इह भती ॥३८७९॥
 अब हम दिन कैसे भरै । बारह अनुप्रेष्या चित खरै ॥
 मदोदरी सग अठारह हजार । तीस सहस्र राणी परिवार ॥३८८०॥
 आरजिका सहस्र अडतालि । दिक्षा ले सुमरधा तिहू लोकपाल ॥
 चंद्रनखा आरजिका व्रत लिया । करै तपस्या मन बच कया ॥३८८१॥
 आतम ध्यान लगाया जोम । अवर विसारधा सगला सोम ॥३८८२॥

दूहा

मुण्या भवातर पाछला, मन का मिटधा अबमास ॥
 राक्षस वसी प्रतिबली, करै मोक्ष की आस ॥३८८३॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रजीत मेघनाथ नव निरुपम विधानकं

७२ वां विधानक

अडिल

राम लक्ष्मण का लका मे प्रवेश

रामचंद्र लक्ष्मण चलि लका । सकल मेना की मिट गई सका ॥
 सेना सकल मई एक ठौर । इन सम वाली न दूजा और ॥३८८४॥
 पचास लाख हाथी की डोर । हय गय रथ का नाही बोर ॥
 हस्ती पर रामचन्द्र लक्ष्मण । मोहै जैसे हैम रतन ॥ ३८८५॥
 चक्र सुदर्शन आगै खरै । जिसकी ज्योति तेज रवि हरै ॥
 भूपति भूप चले सब सग । मोमै उनके भले तुरंग ॥३८८६॥
 हाट बाजार छाए चउहटै । देखै नारि अठारी अटै ॥
 कोई झारि भरोखा तिरी । स्वर्ग लोक की सोभा घरी ॥३८८७॥
 जर्क सके समाने वणे । जिहा तिहीं सुं बराबर तणे ॥
 बिराधित सुग्रीव हनुमान । रथ बैठा अंगद बलवान ॥३८८८॥
 नरपति अवर बहुत ही वणे । नामावली कहा लौं गिणे ॥
 रतनवृष्ट करै रामचन्द्र । दरसन देख्या होई आनंद ॥३८८९॥
 पहुँचे पोनि लका के कोट । इनकी छवि भानि भया घोट ॥
 रत्नावली नू पूछी सीता बात । पुहप करण परवत विरयान ॥३८९०॥

उह बन मे इह सीता सती । सुप्रीया सेव करै बहु भती ॥
 भावत देख्या श्री रामचन्द्र । रहसी सेवग भवो भानद ॥३८६१॥
 जंसे शशि पूनम की ज्योति । एक पति का है अति उजोत ॥

सीता की बसा

बाह पसार सुप्रिया कहै । श्री रामचंद्र का आगम लहै ॥३८६२॥
 देखो सीता दृष्टि उधार । करो दरसन बेग भरतार ॥
 सिंग सीता कै जटा मलीन । दुरबल बेह घणी अति खीन ॥३८६३॥
 कत बिछोह लज्या सिंगगार । बहुत लगी काया सूँ छार ॥
 जाकै रामचन्द्र का ध्यान । महासती जगमे परधान ॥३८६४॥
 पतिव्रता जनक की धिया । अपना मन सब बिष दृढ किया ॥
 धनि सीता जे पालै सील । पञ्चइन्द्री विषय राखै कील ॥३८६५॥
 अपना पति नै जाणै सत्य । अवर माता पिता सुत चित्य ॥
 सीता सत दिढ राध्या भला । निश्चै तें तब रघुपति मिल्या ॥३८६६॥

राम सीता बलन

खोलि दृष्टि देख्यो रघुनाथ । नमस्कार करि जोडे हाथ ॥
 ज्यूँ जल पीबै सूका खेत । फूल फलै बहु होइ सचेत ॥३८६७॥
 अंसे सुखसो वर्षे अरीर । बिछोहा की भूल्या पीर ॥
 भयो समागम बेह समार । लक्षमण आई मिल्या तिलाधार ॥३८६८॥
 सीता कुँ मसतक नवाइ । नबा चरण कू लक्षमण राइ ॥
 असीस बई सीता बहुभाति । बिछोहै की पुछी सब बात ॥३८६९॥
 भावमडल बहन सूँ मिल्या । सब पगियण सुख माध्या भला ॥
 विराधित सुदीव अवर हनुमान । नलनील अवर अगद भान ॥३८७०॥
 भूपति सकल करै नमस्कार । दई भेट फूलो के हार ॥
 कु डल कएँ मोती अति दिवै । जिनकी जोति क्रान्ति रवि छिपै ॥३८७१॥
 राम लक्षमण ज्यो सूरज चद । सोभैँ दोन्यु अधिक भानद ॥
 इन्द्र इन्द्राणी की सी जोड । सीता राम सोभैँ तिहु ठौर ॥३८७२॥
 चद्र रोहिणी जोडी बणी । असी इनकी महिमा घणी ॥
 मुखसो बीतै बासर रयन । सकल प्रथी मे हुआ चयन ॥३८७३॥

अडिस्त

अशुभ करम सब टाल आई शुभ करम भले,
 दोउषां दल संचार सूरमा अति भले ॥
 सीता का सत फला जीत रघुपति भई,
 रावण घाट्या कूडज जु कीरत सब गई ॥३६०४॥

इति श्री कथपुराणे सीता राम विनाय विधानकं

७३ वां विधानक

चौपई

लका की शोभा

लंका के गढ़ भ्यतर चले । तिहा चैत्यालय देवे भले ॥
 रतन समान लगे पालाए । तिनकी ज्योति दिपे ज्यो भान ॥३६०५॥
 सातिनाथ जिन प्रतिमा तिहा । सहस्र कूट चैत्यालय जिहां ।
 दरसन कीया देव जिएद । सीता के मनमे आनद ॥३६०६॥
 सब नरेस तिहां अस्तुति करे । जे जे सबद सुणत मन भरे ॥
 परिक्रमा दीनी तिहां तीन । ताल पलावज बजावै बीन ॥३६०७॥
 घुरे दमामा नै करनाइ । कंसाल भेर बाजै तिहां ठाई ॥
 गुणीयन गावै जिनपद भले । पढै सतोत्र भूपति सब मिले ॥३६०८॥
 सातिनाथ देवनपति देव । इन्द्र धरणेन्द्र करे सब सेव ॥
 देइ मुक्ति तिहां निरभय भान । अजर अमर जिहा पूरण भान ॥३६०९॥
 भैसी बस्तु नही ससार । जिसकी पटंतर कहे बीचार ॥
 दरसन अनंत नै ज्ञान अनंत । बलबीरज का नाही अन्त ॥३६१०॥
 तारण तरण साति जिन भये । भव्य जीव त्यारि मुक्ति को गये ॥
 सब भूपति मिल पूजा करे । सातिनाथ पूजा मन धरे ॥३६११॥
 तिहा सुमाली अर मात्यवान । रतनश्रवा नरपति तिह थान ॥
 गये भभीषण इनके पास । भूपति वे बैठा उदास ॥३६१२॥
 मोह अंध तै व्याकुल घरो । संसार रूप समझावै इने ॥
 बहुगति माहि अमर नहीं कोइ । जामर मरण सब ही को होइ ॥३६१३॥
 इस विष है ससारी भोग । जैसे नदी नाव सयोग ॥
 उतर गए पार वीछड़ गये सर्व । पुत्रकालित्र भूमि अर दवं ॥३६१४॥

जेता विभव तेजा संताप । सूल थोडा बहूली आताप ॥
 पीडा चिता कबही ना मिटै । सोग किये काया बन घटै ॥३६१५॥
 कबहुँ हूँ पिता कबहुँ हूँ पुत्र । कबहुँ होइ मित्र कबहुँ होइ सनु ॥
 कबहुँ भाई कबही हूँ बहिन । भ्रम जीव मोह के जतन ॥३६१६॥
 ग्यानी सोग तजै इह भांति । इह चिता छोडो दिन रात ॥
 सुख दुख जायै एक समान । हिरदै राखै उत्तम स्थान ॥३६१७॥
 राखै सदा धर्म सो प्रीत । पुण्य पाप की जायै रीत ॥
 चिता कूँ छंडो तुम मात । मूँ सेवा करि हूँ बहुभांति ॥३६१८॥
 दे प्रतिबोध घ्राणै निज गेह । रसोई करवाई बहु नेह ॥
 विदेहा रावण पटघनी । ताकै संग सहेली धनी ॥३६१९॥
 बइठे मंदिर साति जिएद । सुमरण करै देव गुरु बंदि ॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण नै सिया । विदेहा कुँ आदर बहु दीया ॥३६२०॥
 छोडो सोग करो चित ठाव । हम सेवा करि हूँ बहु भाइ ॥
 तुम माता मन राखो चैन । करै बीनती मधुरे बैन ॥३६२१॥

बिभीषण द्वारा राम का स्वागत

तिहा भभीषण आये पहुच । वाकै हिये घरम की रुचि ॥
 दोइ कर जोडि बीनवै लरो । चलो प्रभू भोजन बिध करो ॥३६२२॥
 बाजा बाजे मन आनन्द । हस्ती परि चढे रामचन्द्र ॥
 लक्ष्मण आदि भूपती सबै । भभीषण हरखै मन मे जबै ॥३६२३॥
 मेरा धन्य जनम है आजि । राम आए इतना दल साज ॥
 मो परि क्रीपा करी जो आज । मेर इहा आया भोजन काज ॥३६२४॥
 महोछव सब नग्र मे किये । सबही आनछा निज हिये ॥
 पदमप्रभू निज मंदिर गये । दरसन देखि अधिक सुख भये ॥३६२५॥
 पूजा रचना बारंवार । सकल नरैस करै नमस्कार ॥
 रतन जडित कचन के कलस । उत्तम नीर वास तिहां सरस ॥३६२६॥
 उबटणा ल्याए बहुत सुवास । भ्रमर न छोडै उनके पास ॥
 हेम रतन की चउकी बणी । रतनजोति बिराजै अति धणी ॥३६२७॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण तिहां न्हाइ । मर्दन करै मर्दनयां आइ ॥
 सकल भूपति करि करि सनांन । पूजा कीनी श्री भगवानं ॥३६२८॥

विविध व्यंजन

बहु पकवानं शर व्यंजन घने । भात दाल सामग्री मिले ॥
 कनकतवाई सोवन थाल । बैठा जिमें सब भूपाल ॥३६२६॥
 निरमल जल सौ भारी भरी । पीबै भूपति मानै रली ॥
 दूध दही जीमे सब भूप । घट्टरम व्यंजन वणे अनूप ॥३६३०॥
 बीडा माहि लेइ मुख मोघि । चोबा चदन ह्यावै सुगन्ध ॥
 पहिरि भीणे बस्तर सुवास । सीतल पवन बीजणा व्यार ॥३६३१॥
 भभीषण जस प्रगटै भया । सब सेना कु भोजन दिया ॥
 मंत्री मंत्र करै सुविचार । राजदेहु श्रव पट बैठाइ ॥३६३२॥
 कोई कहै अजोय्या घनी । निहा पट्ट बैठा सोभा शरी ॥
 कोई कहै लंका बडी ठाम । रावण तीन षड का राव ॥३६३३॥
 इण्ढी ठाम दीजिण राज । मनबद्धित सीमै सब काज ॥
 अटोत्तर कलम राम पै डार । लक्षमण कौ नीका बैठार ॥३६३४॥
 दिया राज लंका का सर्व । कचन कोट लहे बहु श्रव ॥
 लक्षमण बिसल्या सू करि व्याह । सब मिल मंगल करै उछाह ॥३६३५॥
 एक था दसाग नगर को राव । रूपवती कन्या का नाव ॥
 कुबेर ईस बार निल भूप । कन्या कलसण माल सरूप ॥३६३६॥
 उजेणी नगर सहोदर राव । बज्र किरण राजा तिह ठाह ॥
 भेजी कन्या बहु गुणवत । व्याह लक्षमणा बलबंत ॥३६३७॥
 जे थी रामचन्द्र की मांग । कियो विवाह दुख सब त्याग ॥
 जे नारी पूरब पुनि कर दई । राम लक्षमण की नारी भई ॥३६३८॥
 सुख मे बीत गए षड वर्ष । सब नगरी मानै बहु हर्ष ॥

इन्द्रजीत एवं मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति

इन्द्रजीत मेघनाद तप करै । रिध पाय सब कूँ परिहरै ॥३६३९॥
 मेघनाद नै केवनम्यान । इन्द्रजीत धरि आतमध्यान ॥
 टूटे चारि घातिया कर्म । उपज्या पचम ग्यान सुधर्म ॥३६४०॥
 विष भरियण तै गए सिवपंथ । मेघवर तीरथ ग्यान समर्थ ॥
 तुंगी गिर पबंत कै यान । जबू माली तप की ध्यान ॥३६४१॥
 अहिमदर पायो सुविमाण । सुख विलास मे होइ बिहान ॥
 शब कै चउवीसी तप करै । एबैव वेनई जिम पद धरै ॥३६४२॥

अनंतबोध घर प्रथम जिनंद । मुगति रमणी सुख होइ आनंद ॥
 कुंभकरण तप करै बहुत । नरबदा नदी पर केवल हुंत ॥३६४३॥
 मुरपति करै महोछव तिहा । देही छोडि पहुंच्या सिब जिहां ॥
 मई स्वामी मुनिवर तप करै । पोदनापुर मे ध्यान दिढ घरै ॥३६४४॥
 आकास गामिनी पाई रिध । सब तीरथ फरस्यां उन सिब ॥
 तप करि सया पचमे रवंग । भया देव मिटिया उपसंग ॥३६४५॥
 मारीच मुनी तिहां माघै जोग । करै बंदना सबही लोग ॥
 पाई रिध तप कै परसाद । रागद्वेष छंढे सब बाद ॥३६४६॥
 सहै बाईष परीसा धीर । भ्रंसा तप साघै बलबीर ॥
 नीला सम सती नहि कोइ । अब कै अब गणघर पद होइ ॥३६४७॥
 रावण होइ देव अरिहस्त । बाणी भालनी सिबपद संत ॥
 इहा पूछै श्रेणिक कर जोडि । सीलवत नारी भीऊर ॥३६४८॥
 जे नारी उत्तम कुल बडी । पालै सील ऊपमां चडी ॥
 जिहा ने दोऊ कुल की लाज । ते नही तबै सोल का काज ॥३६४९॥
 जे विध वे पालै हैं सील । मन गयद नै राखै कील ॥
 सीता किए कारण अधिकाइ । गणघर होइ मुकति को जाइ ॥३६५०॥
 श्री भगवत तब कहै विचार । सीता महासती है नारि ॥
 विपत्ति मैई फिरि कंत के संग । अगन्या किम ही करी न भग ॥३६५१॥
 रावण हरी परीसह सही । अपणां सत टात्सा बह नही ॥
 ग्यान अंकुस सों मन गयंद । वैगय्य भाव सो राख्या बढ ॥३६५२॥
 बा का सत तै जीत्या राम । मन बाधित सब सीधा काम ॥
 जे मन वच पानै इह कोइ । ऊंची गति पाबै जिव सोह ॥३६५३॥
 लोक लाज सो राखै मत्त । निसचल रहै न ऊनका चित्त ॥
 वे क्यो बाकी सरभर करै । जैसा भाव तइसी गति भरै ॥३६५४॥
 जैसी करणी तैसी ठाव । पानै धरम नी सील सुहाव ॥
 पचवंसि राजधान का ग्राम । नौदर विप्र रहै तिस ठाव ॥३६५५॥
 अभिमाना बाकी अस्तरी । अंसे अगनि पवन तै जरी ॥
 द्विज कौ सदा देहि बह दुख । कदे न राखै घर मे सुख ॥३६५६॥
 रात दिवस कतह वै करै । बाह्यण देखि अंसी दुख भरै ॥
 नौदर बाभण आन्या अन्न । अभिमानां निकस गई वन्न ॥३६५७॥

पोदनापुर का रुद्र नरेस । बामनी उठि गई तिहां देस ॥
 पुहुप कर्ण नगर ना नाम । लवष प्रसाद राणि तिह ठाम ॥३६५८॥
 हेमकर पंडित तिहां गुणी । राजा कदरप क्रीडा घणी ॥
 लम्बा पाव राजा के माथ । मनमे सोच करै नरनाथ ॥३६५९॥
 भया परभाति काया करि सुध । बैठा पाट विचारी बुध ॥
 भूपति बहुति सभा मै आइ । नमस्कार करि लागे पाई ॥३६६०॥
 पंडित गुणी आए परधान । राजा उनसो पूछै ग्यान ॥
 राजा कं माथ त्याबै चोट । वासी कहा कीजिये खोट ॥३६६१॥
 मंत्री बोले सब तिए बार । वाका चरण काटो मुपार ॥
 हेमकर द्विज बोल्या करि ग्यान । बेही चरन तुम उत्तम जान ॥३६६२॥
 दीजे बाहि भला आभरण । प्रेसी बात सुणी उन कर्ण ॥
 भये कोप सभा के लोग । इण विष किम भाषी ये फोक ॥३६६३॥
 विप्र ने कहा भेद समभाय । बहुत विभूति दई तबै राइ ॥
 मित्र जसा ब्राह्मणी एक । असांक द्विज मु वा घरि टेक ॥३६६४॥
 सिधइंद कवर अवर पुत्री । तिहा जटसाल द्विज नै थिति करी ॥
 सीखी विद्या भए सुजान । सस्त्र सास्त्र सखिउ परवान ॥३६६५॥
 राजा की पुत्री उन हरी । सिधइंद दोइया तिह घरी ॥
 घेरघा द्विज तिहां हुवा जुध । सेना की खोई मव सुध ॥३६६६॥
 कन्या जीत गया द्विज गेह । लवष प्रसाद नै छोडी देह ॥
 विप्र भया नगरी का राव । सब भूपति मे प्रगटघो नाव ॥३६६७॥
 मील वृधि श्रीवृधन सजोग । पोदनापुर का मुगत भोग ॥
 राजा सुकेत बाधरपुर घणी । भूपति सू वा भय व्यापी घणी ॥३६६८॥
 सिधोद देवी ता असतरी । श्रीवरधन की सका घरी ॥
 रयण समय दपति उठि भगे । पोदनापुर बन जाइ न लगे ॥३६६९॥
 तिहा मुरंग डस्यो सिध इंद । देवी राणी कै हुवा दुद ॥
 रोवै पीटै बन मै बही । तिहा सहाय हुवा कोई नहीं ॥३६७०॥
 मधु मुनिद करै तिहां तप । दयाभाव श्री जिनवर जप ॥
 मुनि नैं सपरस आइ बियाग । मृतक विष उतर भई संभार ॥३६७१॥
 श्री मुनिवर कू करी डंडोत । पूजा स्तुति करी बहुत ॥
 बीती रयण उगीयो भाण । विनयदत्त पहुच्यो तिहां आण ॥ ३६७२॥

सुण्या भेद रात का सेठ । अस्सुति करि उनकी ढिग बैठि ॥
 श्री वरधन आया भूवाल । सिध इंद्र सुं मिल्या तिह काल ॥३६७३॥
 सील बृद्ध माया सूं मिली । क्रोध लहर दोनुं की टली ॥
 श्रीवर्धन जोड़्या दोउ हाथ । मेरा भव भाखो मुनिनाथ ॥३६७४॥
 अवधि विचार करै मधु मुनि । सोभापुर नगर प्रथी घरणी ॥
 भद्रसेन आचारिज तिहा । राजा धर्म सुणै नित जिहां ॥३६७५॥
 एक दिन चाल्या जती कै पास । मारग मे आई खोटी बास ॥
 दुगं ध तै भया जीव बुरा । राजा अपरणा घर कुं मुडा ॥३६७६॥
 एक नारी को भैंसा दुख । देह वसाई गधार्ब मुख ॥
 जिहा निकलै ते गली बसाइ । भैंसी नारी बहै तिण ठाई ॥३६७७॥
 मुनि दरसन पाया तिण नारि । गया दुख बहै उतनी बार ॥
 अमल राय सुणि अचरज करै । अणुवत गुरु पासै बरै ॥३६७८॥
 आठ गाव आठ को राखि । राज विभूति पुत्र को भाषि ॥
 दया दान बिचारै ग्यान । आठ पोकनि सोधमैं विमान ॥३६७९॥
 उहा तैं जइ श्रीवर्धन भए । सुण्या धम्म चरण कु नए ॥
 मित्रजसा पूछै परजाइ । इह माता हू किह भाई ॥३६८०॥
 विप्र नै तब दे दिया सराफ । नगरी जलै उदै भयो पाप ॥
 बहुते लोग क्रोध को पाइ । हुतासन मे दियो विप्र जलाइ ॥३६८१॥
 वह द्विज मर करि हुवा वरामन । रसोई करै राजा कै दिन दिन ॥
 एक दिन मुनि नृप कै घर आइ । भोजन निमित्त ऊभा मुनिराइ ॥३६८२॥
 वगमन मुनि कू विष दिया । देही छोडि सुरपद पाइया ॥
 विप्र मरि करि पट्ट्या नकं । लख चौरासी रह्या गकं ॥३६८३॥
 मित्र जसा भई अस्तरी । असोषसरक की हुई पुत्री ॥
 राजा पूछै एह संदेह । पुरुष सौं नारी भई क्युं एह ॥३६८४॥
 कहै सुनीसुर सुणुं नरेस । अब तुम परतक्ष देखो भेस ॥
 राजा सुकात राज मे मुवा । भोजन पुत्र सेठ की अस्तरी हुवा ॥३६८५॥
 अभिमावा प्रसाद लवध की असई । कररुह की राणी तब थई ॥
 मधु मुनि किया भत सन्यास । ईसान स्वयं पद पाया बास ॥३६८६॥
 जे कोई बरै धरम सूं चित्त । निसचै पावैं पंचम गति ॥
 भवजल तिर जाई सिव मध्य । तिहीं सासती पूरण रिष ॥३६८७॥

ब्रूहा

धरम ध्यानं सब त्याइ करि, धरै ज सजिम भार ॥

बिहु गति भयंतर ना रहै, पावै सुख अपार ॥३६८८॥

इति श्री पद्मपुराणे मधु आख्यान विधानकं

७४ वां विधानक

चौपई

नारद मुनि का अयोध्या मे आगमन

नगर अजोध्या उत्तम धाम । भरथ प्रताप तप उबु भाम ॥

परजा मृली दया चित घणी । इन्द्रलोक की मोभाबणी ॥३६८९॥

अपराजिता मिदर सतलखे । पञ्चात्ताप करै मन आपणै ॥

मेरी कुल रामचन्द्र भग । जीवन समए वे उठि गये ॥३६९०॥

धरती पर खरने नही पाव । वन बेहड भ्रमै दुख के भाव ॥

पुर्वा ने देखू किय भानि । अपराजिता रोवई मात ॥३६९१॥

अन नागी भेवै ता मग । ज्यो घनहर बरसै बहती गंगा ॥

नारद मुनी आए तिग घरी । नमस्कार असतुत बहु करी ॥३६९२॥

चउका दिया बैठगा आण । बहुत कियो आदर सनमान ॥

मीनवत वे नारद मुणी । जटाजूट वाली करि गुनी ॥३६९३॥

कमडल पीछी कर मे लिये । असम लगाइ तल धोती किये ॥

अपराजिता से प्रश्न

पूछै नारद कहो मो मात । सुकोमल का कुल उत्तम भात ॥३६९४॥

राजा दमरव की पटघणी । तुम किम हो किम अखमणी ॥

तब बोली अपराजिता माइ । नारद मुनी तुम वे किस ठाई ॥३६९५॥

रामचन्द्र लक्ष्मण वनवास । तिम कारण हम रहा उदास ॥

घातकी खंड मे पूर्व विदेह । सुरेन्द्रपुर नगर बसा था एह ॥३६९६॥

त्रिलोक ईस जित का अवतार । मिदर मेरु सुरपति तिहां वार ॥

त्याई करी जनम की रीत । द्वारि कनस उपजाई प्रीत ॥३६९७॥

इंद्र वरणेन्द्र आरती करै । नर मानुष बहु सेवा करै ॥

आमृषण पहराय कीए मिगार । माता ने सोप्या तिल बार ॥३६९८॥

नेईस व प र ह्या मै निहा । तुमाग भेद कछुअन मै लह्या ॥

राम कथा

सर्व प्राण हित मुनि पै सुणी । रामचन्द्र की कथा उण भणी ॥३६६६॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण अरु सिया । दंडक बन में आश्रम लिया ॥
 सीता कूँ रावण ले गया । रामचन्द्र लक्ष्मण नैं दुख भया ॥४०००॥
 विराधित सुग्रीव राम सूँ मिल्या । रावण सुँ जुधा किया उनो भला ॥
 लक्ष्मण लाध्या सकती बाण । हुवा मूरछा गए पराण ॥४००१॥
 द्रोवणमेघ की बिसल्या धिया । उवैं उपाव लक्ष्मण का किया ॥
 सुणी बात अपराजिता माय । गिर गई भूमि मूर्छा लाइ ॥४००२॥
 जे लक्ष्मण कै मारै सकनि । कैसी हुई उनू की गती ॥
 सीता का सुवभास सरीर । बन बेहड़ तिहा अन्न न नीर ॥४००३॥
 बन फल खाइ रहै बन माहि । बदी बीच महादुख ताहि ॥
 जाय पडे समुद्र मन्धार । कैसे पाऊँ उनकी सार ॥४००४॥
 नारद मुनि बोले समझाई । लक्ष्मण जीया करै उपाव ॥
 बाध्या कुंभकरण इन्द्रजीत । मेघनाद ने किया भयभीत ॥४००५॥
 रावण ने मारी राज बे करै । तुम मनमे चिता मति धरै ॥
 अब मै लका गढ मे जाइ । राम लक्ष्मण आणु इस ठाँइ ॥४००६॥

नारद का लका मे आगमन

नारद चाल्यो बैठि विमान । त्रिकुटाचल कु कियो पवान ॥
 पदम सरोवर रावण की चिता । अंगद क्रीडा करै सुख की लता ॥४००७॥
 अतहपुर अंगद के सग । खेलै राणी मन उछरग ॥
 चउकस बंटे चौकीदार । नारद पूछै रावण सार ॥४००८॥
 रखवाले कहै सुणि रे अगवान । तू आकास से बैठा आन ॥
 रावण कु मारया लक्ष्मण ठोर । रामचन्द्र सा बली न ओर ॥४००९॥
 धाई किकर लक्ष्मण सो कही । अंगद ने तब हासी गही ॥
 तपसी कूँ ल्यावो मो पास । देखैगा राम तब करै उपहास ॥४०१०॥
 हस्ती चढ अंगद सु नरेन्द्र । नारद कु ले चाले करि बन्द ॥
 धकाधकी सूँ किकर गहिलिया । रामचन्द्र आगे कर दिया ॥४०११॥

राम द्वारा नारद का स्वागत

रामचन्द्र नारद कुँ देखि । आदर दिया ऋषीश्वर प्रेव ॥
 नमसकार करि बैठाया पाट । मूपति सभा जुडी थी ठाट ॥४०१२॥
 रामचन्द्र पूछै कुसलात । मुनि जी कहो धरनी की बात ॥

नारद द्वारा अयोध्या । वर्णन

नारद कथा अजोध्या कही । अपराजिता केकई सुख नही ॥४०१३॥
 तुम कारण भूरै दिन रयण । उनके मन को नाही चयन ॥
 जो तुम उनकी सुख ना लेहु । प्राण तजै जाएँ निसदेहु ॥४०१४॥
 वेग चलो तुम मेरे संग । सोग वियोग सब होवै मंग ॥
 रामचन्द्र लक्ष्मण सुनि बंन । व्याप्पा मोह भरे दोउ नैन ॥४०१५॥
 विराधित सुग्रीव अगद हनुमान । इनकी अस्तुति कही बखानि ॥
 तुम कीया परमार्थ काम । तुमते रही हमारी माँम ॥४०१६॥
 परदुख मजन तुम भूपती । तुमसौं उर हो हा किम भती ॥
 भावमंडल की अस्तुति करै । तुम तै ए सब कारज सरै ॥४०१७॥
 बहिन तगी भेटया सब दुख । तुम प्रसाद हुषा सब सुख ॥
 अभीषण सु बोले रघुनाथ । जे तुम आनि मिले हम साथ ॥४०१८॥
 तो हम जीत्या नका देस । हमारा तुम मान्या उपदेस ॥
 अजोध्या को हम करि हैं गौन । तुम उपगार सकै कहि कौन ॥४०१९॥
 लंका राज हम तोकूँ दिया । अभीषण बहरि चरण की नया ॥
 मेरी अरज मुगी जगदीश । कगे राज तुम बहुत बरीस ॥४०२०॥
 हूँ सेवक दिनऊँ कर जोडि । मात बुलावो इस ही ठौर ॥
 हम पै राज सबै किग भाति । मैं सेवक मेऊँ दिन राति ॥४०२१॥
 रामचन्द्र बोलै लक्ष्मणा । जनम भौम देखग बौ मना ॥
 फिर बोले अभीषण राइ । सोलह दिवस रही इस ठाइ ॥४०२२॥

अयोध्या मे राम द्वारा दूत भेजना

भेज्या दूत अयोध्या नगर । सावधान होवै जन मगर ॥
 विद्याधर तिहाँ भेज्या दूत । अपराजिता आवत देखे दूत ॥४०२३॥
 आप दूत भगत कै पास । सुगी जीन मन अया हूलास ॥
 बहोत दिया दूत को दान । आदर भाव किया सनमान ॥४०२४॥
 अपराजिता केकई पै आन । सुणे बचन भया मन आन ॥
 पीछे आवन देखी सैन । बहुत हुवा नगरी मे चैन ॥४०२५॥
 रत्न कचन बरमे तिह घरी । सब अयोध्या कंचन सू भरी ॥
 मरन मृष यह आग्या दई । अयोध्या फेर समारो नई ॥४०२६॥

सकल गेह कंचन के किये । रतनजडित चित्रसाली किये ॥
 विद्याधर ध्याये सूत्रधार । ते मंदिर प्रति भले सभार ॥४०२७॥
 जे जे द्रव्य हीण वा लोय । तिरु का भेटया सब ही सोय ॥
 जे कोई नगर गये थे छोड़ि । उह दुनियाँ ले प्राणि बहुरि ॥४०२८॥
 बहुत लोग भ्रम भी बसे । लंका तें यह अधिकी दिसै ॥
 राजामंदिर सब तै जला । देखत ही सब का मन जुला ॥४०२९॥
 बाग्ह जोजन लांबी मही । दस जोजन चौड़ाई सही ॥
 नगरी का कचन भई कोठ । अन्य सह मिट गई लुट ॥४०३०॥
 श्रीजिन का चंत्पाला कियो । आदिनाथ मंदिर तिहां भए ॥
 दोई सहस्र बरष की साल । सहस्र कूट सोम सुबिसाल ॥४०३१॥
 सहस्र धम की बेदी बणी । बंदरवाल मोती की बणी ॥
 सहस्र एक ध्वजा तिहा लगी । रतन जोति बहुदिस जगी ॥४०३२॥
 कमल सरोवर वापिका रूप । सीतल पवन सुहावन रूप ॥
 अठतीस जोजन बन बहु पास । फूल फलें बहु रुख सुवास ॥४०३३॥
 सोलह दिन में संपडा सही । सुर नर देख अचंचल रही ॥
 रामचंद्र इह पाई सुख । चलणे की कीणी तब बुच ॥४०३४॥

बूहा

प्रजोध्या कंचन की बणी, रतन लग्या बहु भाइ ॥
 प्रमर सुख ब छोड़ करि, मोहे सुरपति घाइ ॥४०३५॥
 इति श्री पद्मपुराणे साकेत वरखनं विधानकं

७५ वां विधानक

चौपाई

राम सीता का प्रजोध्या गमन

लंका राज अभीषण दिया । प्रजोध्या कूँ पवाणा किया ॥
 बइठि जले पुहुपक विमाण । विद्याधर सग हैं जलवान ॥४०३६॥
 त्रिकुटाचल लंकागढ छोड़ि । भाई सोमैं है बिहु घोर ॥

पुष्पक विमान से सीता को मार्ग का परिचय देना

मेघ सुदर्शन देख्यो सिया । पूर्वै कवण ए ठाम सोभया ॥४०३७॥
 बोले राम सुदर्शन मेघ । महोछा श्रीजिन जनयत बेर ॥
 ए है जनम कल्याणक ठाम । इनका सुखार्थ पुराण नाम ॥४०३८॥

दडक बन देख्याबै राम । तुम दसकंध हरी या ठाम ॥
 उहा ते भ्राइ देखी बहै नदी । चारण मुनी भ्राए थे जटी ॥४०३६॥
 भोजन दान दिया था ढने । जटा पखी पूरब भव सुने ॥
 जटा पखी इत सेती गह्या । रावण वा के प्राण कुं दह्या ॥४०४०॥
 बंसगिर पर्वत देख्या बही । देसभूषण कृन्भूषण मही ॥
 उनु का जब उपसर्ग निवार । केवल ग्यान लह्या तिए बार ॥४०४१॥
 बालखिल्य जिहा था भूप । कल्याण माला पुत्री मुम्बरूप ॥
 रध्या भूप करै था बरौ । बाकौ माग्या था लक्षमणौ ॥४०४२॥
 दशाग नगर बज्जकरण नरेस । तिहा आय परदेसी भेम ॥
 उन दीया था हम प्रतै आहार । वाका दु ख चले थे टार ॥४०४३॥

अयोध्या दर्शन

भ्राए तिहा अजोध्यापुरी । कचन मविर सोभा अति खरी ॥
 सीता पूर्छै इह नगरी कोण । कनकभय दीसै है जिहा भौन ॥४०४४॥
 लका तै दीसै आगरी । बसै सघन उत्तम जन बरी ॥
 रामचंद्र बोले समझाइ । अजोध्या जनम भूमि यह टाइ ॥४०४५॥
 विद्याधरै सवारी भान । प्रेसा कोई अबर न थान ॥
 भ्राए जिहाँ बीस देहुरे । रिपमदेव सोमै प्रति खरे ॥४०४६॥
 उतरे भूमि जिनदरम निमित्त । भरत सत्रुघन भ्राए पहुत ॥
 देखी सेन्या घणौ विभूति । पुहुपक विमाण सोभा सजुक्त ॥४०४७॥

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन मिलन

रामचंद्र लखमण कै पाउ । भरत सत्रुघन लाग्या धरि भाउ ॥
 उनु लगाया उननै कंठ । छूटि गइ मन माहिली गंठ ॥४०४८॥
 मैगल डोर लाल पचास । अस्व रथ पाइक बहु भास ॥
 देखै नारि पुरुष सब लोग । सब नगरी मे मिट गया लोग ॥४०४९॥
 पुहुपक विमाण परिच्छाकूँ वीर । सोमै कनक वरण सरीर ॥
 मोती माणक हीरा लाल । बाले रामचंद्र परि उछाल ॥४०५०॥
 सीता सती बहु सोमै पास । जैसे पूनम ज्योति प्रकास ॥
 विराधित कूँ देखि लोग सब कहै । बद्रोदिक सुत इमै सग रहै ॥४०५१॥
 जब खरदूषण भूँ भई मार । तब विराधित किया उपमार ॥
 दडक बन तैं से गए पाताल । रामलखण पहुचाए हाल ॥४०५२॥

देख्यो जंगल सुखीय हनुमान । इन सुग्रीव सेनां सब आन ॥
 रामचन्द्र का कीया काज । राखी रघुवंस की लाज ॥४०५३॥
 हनुमान बल महिमा धरणी । इसकी बात भागी भी सुणी ॥
 भावमदल जनक का पूत । देव एक कीया बह पत ॥४०५४॥
 जनमत ही सुर नै इह हरघा । विजयाद्वं गिरिष गिर पडघा ॥
 पुहुपावती नै पाल्या याहि । पुंन्यवंद पराक्रमी ताहि ॥४०५५॥
 जितने राजा सेना साथ । जैसे इन्द्र देव की छाथ ॥
 बाजंतर बाजै बहु सग । ता सबब सुख पावै छव ॥४०५६॥
 गावै गुणि जन मधुरे वंदन । करै राम होई सुख बैन ॥
 बिरदावली जाचक जन कहै । नगर लोक धक्ति होइ रहै ॥४०५७॥
 अपराजिता अपर कैकया । सुप्रभा और सकल सुख भया ॥
 सतस्त्रिण मिदर बढी जाइ । दरसन देखै पुत्र का भाइ ॥४०५८॥
 निकट पोल भाइया बिवाण । माता पुत्र सू भया भिजगल ॥
 चारू माता के पद नए । भरे नयन तब उनके द्विजे ॥४०५९॥
 कठ लगाय परिमल भेटिया । नए जनम ए भव भाइया ॥
 असुभ्र कर्म तै भया बिबोध । पुंन्य उदय तै भया संजोय ॥४०६०॥

अद्वित्य

पुंनि मिलै कुटुब और सुख सपति धरणी,
 वृद्धि होइ परिवार जितै भावै धरणी ॥
 करो घरम सु प्रीत रिष बहू पाइये ।
 मध्य लोक सुख देखि मोक्षपुर जाइये ॥४०६१॥

इति श्री पद्यपुराणे श्री रामचन्द्र सप्तमः अयोध्या आगमन विधानकं

७६ वां विधानकं

श्रीपई

अयोध्या वैभव

दोइ कर जोडे श्रेणिक राइ । प्रभु जी कथा कहो समझाइ ॥
 केती विभव सम कै अई । केती पृथ्वी साधी नई ॥४०६२॥
 श्री जिन बाणी नहर बंजीर । सुगती भाजै प्राणी की पीर ॥
 गौतम स्वामी व्योरा कहै । सुणि श्रेणिक मन निश्चय बहै ॥४०६३॥
 कनक कोट चतुःसाता नाम । तीत कोट अक्षोभ्या ठाम ॥
 एक कोट नगर के फेर । कूजा कोट फिर भीतर घेर ॥४०६४॥

तीजा कोट सब ही तें बडा । वातिका तीन निरमल जल भरधा ॥
 ध्याऊँ पोल बख किवाड । हस्ती पोल बनी मन्मथार ॥४०६५॥
 जिन प्रतिमा की महिमा बरणी । डालि कलस अति सोभा बरणी ॥
 रतनजोति सोमैं चिह्न घोर । चद्रवा बरणे घणे सब ठोर ॥४०६६॥
 बरणी पूतली जिहा लूबत । सोमैं सब ठामें बहु मत ॥
 वृक्षावली का बरणि कटाव । उनूँ को कहा लग बरणाव ॥४०६७॥
 सभामडल भरौला सु अनूप । सुख सेज्या परि पोढे भूप ॥
 बहु सुगंध पाटंबर तिहां । मानसबंध बिराजैं जिहां ॥४०६८॥
 बडठे पट्टु फिरैं सिर छत्र । चमर ठरै गयाजल जत्र ॥
 सोनैं सहस्र मुकट बंध राई । करैं सेव तेव मन बच काई ॥४०६९॥
 वैजयंती सभा तिहा जुडी । बड्ढमान मंदिर रिष बडी ॥
 अनोपम गदा लडग कनकार । सूर जहां सुसोमैं तरवार ॥४०७०॥
 अस्त्रावतं समुद्रावतं । अंसा अनुध बहु सोभा अतं ॥
 उत्तम वस्त्र सोमैं सब अंग । जकं सुवसन बरणे पचरंग ॥४०७१॥
 पंचास लाख गड को खीर । छपन लाख गड लक्षमण घीर ॥
 सत्तर कोटि नगर में आन । तीन खंड के भूपति जान ॥४०७२॥
 सेव करैं नित सकल नरेन । नरपति खगपति मानैं आदेस ॥
 चक्र सुदर्शन जोति अपार । प्रगटैं तीनू लोक मभार ॥४०७३॥
 अस्त्र बीर पट्टु बंढे नित । सकल सभा मे उनु का चित ॥
 वन उपवन के फल अरु फूल । देखि ताहि पथि करि हैं भूल ॥४०७४॥
 उछलैं जल फिर उतरैं भूमि । वृक्षावली तिहा रही भूमि ॥
 मंदिर बरणे सब रोस के भले । तिहां बंढि नृप मानैं रले ॥४०७५॥
 आस पास पर्वत उत्तम । निर्मल नीर बहै तिहां गंग ॥
 गिरवर तै इहै ऊचा कोट । छिपैं भानु उह गड की ओट ॥४०७६॥
 सुगं सुख तजि मोहे देव । अजोघ्या इछैं रघुपति सेव ॥
 रामचंद्र की आगन्या भई । धर्मसाला सब राबो नई ॥४०७७॥
 पर्वत परि चैत्याला किये । नगर नगर जिन मंदिर अए ॥
 अटूट मंडार बटैं है नहीं । भोग्य भूमि सब है मही ॥४०७८॥

सीता की नगर में चर्चा

नगर नगर चर्चा इह बली । रामचंद्र कीनी नही भली ॥
 सीता कूँ राबन ले गया । सीता का सत कैसे रहा ॥४०७९॥

रामचंद्र सां करै ए कर्म । कैसे रहै जन्म का धर्म ॥
 जे मारी बाहिर पन देख । ताहि सुभट कैसे घर मैं सेह ॥४०८०॥
 उत्तम कुल की पूरी लाज । पर घर भर्म तिन सो नहीं काज ॥
 धसी चरबा घर घर होइ । असुभ कर्म मति बांधो कोइ ॥४०८१॥

भरत के मन में बेराग

भरत तहाँ मन मया बेराग । सकल रिष सौ मेल्यो लाग ॥
 राजभोग विष समझ्या सबै । सब ही विनासी जाणौ सबै ॥४०८२॥
 जोवन जल बुदबुदा समान । जरा व्यापै तब बकी परान ॥
 पांचुं इन्द्री दुबं क्षीण । पराक्रम यकं देही होइ हीण ॥४०८३॥
 तब कैसे पालै चारित्र । चार कषाय जीव के सत्र ॥
 विषय सताइस सहु दुख के मूल । जे दग्धान मोह मे भूल ॥४०८४॥
 लोही मुत्र हाड ग्रामिष । ताहि देखि जिय मानै सुख ॥
 काया कूटै काबा पिड । जिम कुंभा बरणाबं मंड ॥४०८५॥
 एक घडी में होई छार । ग्रंसे सूं कहा करै पियार ॥
 मनुष्य जनम किस ही विष लहै । समय को निश्चय सों गहै ॥४०८६॥
 इह बिभूति सग्या उगहा । सोभी जात न लायै बार ॥
 जैसे दावानल वन दहै । बड़े बुझ पल मे भस्म करि रहै ॥४०८७॥
 सब बन भस्म करै वह श्राप । तउ न हारै पल पल जाय ॥
 जेता ईं बन डारै ताहि । तो भी पावक तृपत न नाहि ॥४०८८॥
 ऐसे भुगतै सब जग मही । तो भी तृष्णा मिटती नही ॥
 ज्यो समुद्र अति ही मभीर । गंगा नदी मिस्या सब नीर ॥४०८९॥
 उमड़ै मही समुद्र कहि भाति । ग्रंसे जीव मोह के नसात ॥
 रागद्वेष छोडो करि ग्यान । सुख दुख समकै एक समान ॥४०९०॥
 जैसे गंगाजल के पास । काक धरै ग्रामिष की आस ॥
 मृतक परि बैठ चला जल माहि । उठै लहर घनम घनाह ॥४०९१॥
 समुद्र माहि पहुंझ्या वह काग । तिहां तैं निकसै न मारग लाग ॥
 देखै उदक बिहूँ विसि ओर । उड़ने का पावै नही ठोर ॥४०९२॥
 ऐसे जीव माया बस पडै । भवसागर में भ्रमता फिरै ॥
 जैसे मीढक पंकज रुचि करै । तिहां भुयंग आय पकडै ॥४०९३॥

अैसे लोभ वे जीव नैं दुःख । नकै पदुषावैं तिहां नही सुख ॥
 इह विभूति सपरौ उणिहार । अब हू ल्यूं संवम का भार ॥४०६४॥
 करै विचार भरष भूपती । किण ही प्रकार होस्कुं जती ॥
 अब जैहूं सयम वत धरूं । सकल लोक मुज भस्मै बुरूं ॥४०६५॥
 अब लू राज भकेलै करा । रघु नैं देख जैन वत घरघा ॥
 कछु राखिये लोकाचार । कछु कीजिये जीव का आधार ॥४०६६॥
 जैसे केहरि पिजरा माभ । इम भरष विचारैं वासुर सांभ ॥

राम से भरत की प्रार्थना

रामचन्द्र सो बिनवैं भरष । ग्राम्या द्यो तो लेहु चारित्र ॥४०६७॥

राम का उत्तर

रामचन्द्र समझावैं बात । तो कूँ राज दिया है तात ॥
 हम ग्राम्या देवे कूँ कौन । तुमारे मिलन कूँ किया था गौन ॥४०६८॥
 करो राज परजा सुख देहु । चउथं ग्राम्यम दिव्या लेहु ॥
 चक्र सुदर्शन तुम पै रहो । जो कुछ ग्राम्या हमसू कहौ ॥४०६९॥
 छत्र चराबो अपने सीस । तुम हो सब पृथ्वी के ईस ॥
 सन्नुषन चमर डारैगा लडा । लक्षमण मंत्री सब गुण बडा ॥४१००॥
 तीन घड का मुगतो राज । हमनैं नही राज सौं काज ॥
 करैं वीनती भरत कर जोडि । कीया भोग कछु रही न खोडि ॥४१०१॥
 स्वर्ग लोक सुख देखे धरौ । तो भी जात न जाणै बले ॥
 इह विभूति बिनसत नही बार । माया मे मरि भ्रमैं ससारि ॥४१०२॥
 ऊष नीच गति भरमैं जीव । सुभ असुभ की बाधैं नीच ॥
 करो दान पालो रतन तीन । ब्यार दान विष सो द्यो नित ॥४१०३॥
 दयाभाव सो राखो चित्त । सुख दुख सम जाने ज्ञानवत ॥
 समझावैं मंत्री परवीन । दया दान राखो मन चित्त ॥४१०४॥
 कारिमो दीसै परिवार । कोई न चलै जीव की लार ॥
 धरि चारित्र लहूं गति मोक्ष । तिहां सासता सुख मतोष ॥४१०५॥
 स्यंधासन सौं उतरया भण्य । तब जखमख करै है धृति ॥

भरत को पुनः राम के द्वारा समझाता

अब ही तुम मति खडो राज । जोवन समैं जहीं नप का काज ॥४१०६॥

वेगग भाव हम चित्तें धरै ॥ लुकारे संग तुम तप आचरै ॥
 केकश्या माता विजलाइ । राणी रुदन करै बहु भाय ॥४१०७॥
 सीता अबर किसलस आइ । सहु परिवार कहैं सयआइ ॥
 कोमल काया लघु है बेस । महु कठिन मुनिवर का भेस ॥४१०८॥
 षट रिनु के दुख कैसे सहो । सज्या भूमि परीसा लहो ॥
 नीरस भोजन वन का बास । किम छाँडो तुम भोग विलास ॥४१०९॥
 स्वर्ग लोक सम है यह रिद्ध । अन्य जनम किए देखी सिद्ध ॥
 श्रावक धर्म पालो घरमाहि । परजा दान करो नित बाहि ॥४११०॥
 बाल समें तप करणा नहीं । अउरै अश्रम दिज्या कही ॥
 बेग बनो अब करो समान । लुमारा बचन सुनु दे कान ॥४१११॥
 पकड़ि बांह खेंचै सहु अस्तरी । ल्यावै उषटणु सुगव अति खरी ॥
 भारै जल धोवै सब अय । भरख ध्यान हूबा नहीं जंग ॥४११२॥
 पूजा करी श्री जिनदेव । सकल अस्तरी करै कमी लेख ॥
 त्रिलोकमंडण छूटो गयद । लोडि बंधण करणा अति दुंद ॥४११३॥
 पाडै हाट मंदिर अरु पील । सब नगरी मा माची रौर ॥
 छूटै अगन जत्र अरु बाण । गज नहीं मानै कोई काण ॥४११४॥

उन्मत्त हाथी का अकस्मात् आगमन

जिहा भरख करै पूजा ध्यान । मैगल आया उनही आन ॥ ५
 व्याकुल हुई सब अस्तरी । भरख भूप भय चित्त न धरी ॥४११५॥
 रामचंद्र लक्ष्मण सह कुची । उनकूं देखत हू सब कुची ॥
 डारै फास हस्ती कू घनी । मानै नही कोष का घनी ॥४११६॥
 देखि भरख कूं हाथीनिया । नमस्कार सब कहु बिष किया ॥
 भरख नरस अर्चन भया । या का मद काहे तै गया ॥४११७॥
 जातीं समरण भयो मयद । पुरव अब का समझ्या बिद ॥
 ब्रह्मोत्तर सुरग सुरगति पाई । उह्रा तै अइ राधा के आइ ॥४११८॥
 दान देह कीया बहु मान । तातै हस्ती उपज्या आन ॥
 शीजे कछु दया के निमित्त । बइयाअत कोजे बहु सत ॥४११९॥

सोरठा

जो कछु दोखे दान, तजो सकल अभिमान कूं ॥
 पावइ निरभय धान, दया बरम परभाव सूं ॥४१२०॥
 इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन मंडल खंडोभ विधानकं

७७ वां विधानक

चौपई

भरत का हाथी पर चढ़ना

हाथी खड़ा बरम के ध्यान । राम लक्ष्मण दिग पहुंचे ध्यान ॥
 मूचर लेचर नरपति बने । चउपां फेर मनस इम भयै ॥४१२१॥
 इह बती सब तै मयमंत । कैसे भाव भरपा इन सत ॥
 भरत छाइ चढे ता पीठ । सीता विसल्या प्राक्रमो दीठ ॥४१२२॥
 एभी संग चढी तिण बार । अपनी अपनी ठाम बिचार ॥
 डोली डोला अनै चकडोल । रथ पालकीया बहुत अमोल ॥४१२३॥
 सेना बहुत चली ता संग । पहिर आभूषण भले सुरंग ॥
 कुसुम अमोद नदन उणिहार । तिहाँ आए सगला परिवार ॥४१२४॥
 उत्तर अंतहैपुर सब गये । सगले लोग अचमै भए ॥
 इह गैवर या महाबलीष्ट । ऊभा रथा बौन करी बिष्ट ॥४१२५॥

हाथी द्वारा तप साधना

बहु महावत आए पास । मला मलीदा सौंख सुवास ॥
 हाथी खाबै न खोलै नयन । सेबग बोले मधुरे बैन ॥४१२६॥
 आभूषण डारे सब डारि । गज नही देखै आसि उचारि ॥
 आया अनै सचानिक खड़ा । खम्बा सकल सर्वज तिहा पढपा ॥४१२७॥
 जैसे खड़ा खंभ पाषाण । तैसे मंगल त्याया ध्यान ॥
 जन की बात न पावै कोइ । ए अचरज सब कै मन होइ ॥४१२८॥
 बंधक प्रथ संभाले बंध । अउचव त्यावै मन में बंध ॥
 विद्याधर जत्र मत्र बहु करै । कुछ उपाय नही सुसरै ॥४१२९॥
 करै जोतिगी ग्रह बाल । कोई कहै भारथा है इन बाल ॥
 भैसा गज पृथ्वी पै नही । ए रावण कै या पारोबन सही ॥४१३०॥

जो कोई कहै सो करे उपाव । कोई न जागै उसका भाव ॥
अपनी अपनी सब ही कहै । भोई वैदन कोई रहै ॥४१३१॥

बूहा

करै जतन सब गुणीजन, वैद्यक ग्रंथ विचार ॥
मन की को जागै नही, रहे सकल पवि हार ॥४१३२॥

इति श्री पद्यपुराणे त्रिभुवन अलंकार समाधान विधानकं

७८ वां विधानक

चौपई

वेश भूषण कुलभूषण मुनि का आगमन

वेशभूषण कुलभूषण केवली । अजोध्या आए पूजी रली ॥
महेन्द्र वन अग्नि उत्तम धान । मोम दोऊ चन्द्र अरु भान ॥४१३३॥
तीन लोक मे प्रगटे मुनी । रामचन्द्र लक्ष्मण यह सुनी ॥
रघुपति मन मे भए उछाह । दरसन हित चाले नरनाह ॥४१३४॥
भरथ सत्रुघन चारो बीर । सोहैं कचन बरग सरीर ॥
त्रिभुवन अलंकार हस्ती पलाण । तिहां बाजै आनंद निसाण ॥४१३५॥

स्त्रीव नील अगद हनमान । भूपति संग चले बलवान ॥
अपराजिता घर केईया । सुप्रभा सग चाली बहु त्रिया ॥४१३६॥
सीता आदि चली बहुनारि । आने लोक सकल परिवार ॥
पट्टचे वन तब उतरे भूमि । दर्शन पाय चरण कौं भूमि ॥४१३७॥
दई प्रकमा करी डडोत । कहो वाणी घरम उखोत ॥
कैसी विध घरम जती का होइ । कैमे आबख पालै सोइ ॥४१३८॥

केवलम्यानी ज्ञान अपार । कहैं घरम मुनि प्राण अघार ॥
घरम समान सगा नही कोइ । घरमही तैं ऊंची गति होइ ॥४१३९॥

घरम सहाय जीव के सम । अन्यवि बरख्या रंग पतंग ॥
अंसा है ससारी भोग । कबहु साता असाता जोग ॥४१४०॥

घरमहि सेती इन्द्र फणीन्द्र । चक्रवर्ति घर देव जिलाद ॥
ऊंची गति बहुरि निरवाण । पार्वं मोक्ष सासता धान ॥४१४१॥

लक्ष्मण द्वारा हाथी के सम्बन्ध में जानकारी चाहना

लक्ष्मण पूछे द्वं कर जोडि । हाथी की कथा कहिये बहोडि ॥
 किए कारण इण कीया दुद । समता भई भरत कूं बड ॥४१४२॥
 केवल लोचन ग्यान अगाध । पूजत है प्राणी के साथ ॥
 नगर अजोध्या नाभि नरेस । मरुदेई परस्वती कै भेस ॥४१४३॥
 सरवारथ निध रिषभ देववारा । छह महिना आगे परकास ॥
 भई भौमि कनक सी सग्न । रतनवृष्टि वरण्या बहु दर्व ॥४१४४॥
 गरभ जनम कल्याणक भए । सुरपति खगपति सब ही नए ॥
 बज्रवृषभनाराज सस्थान । प्रथम जिनेन्द्र महा बलवान ॥४१४५॥
 लख त्रियासी पूरव राज । पाछे किये घरम का काज ॥
 चार महल भूपती साथ । आतम ध्यान घरै जिन नाथ ॥४१४६॥
 जैसे सुदरसन अटल मेर । ऐसे तप साधै मन घेर ॥
 अनि भूप सहि सकै न भूख । लगी त्रिषा मन लाम्या सूख ॥४१४७॥
 तब वे मुनि करे विचार । जई फिर जाउं नगर मझारि ॥
 मारै भरथ सहु नै ठौर । तातै मत हम थापै और ॥४१४८॥
 दरसन च्यारि निराले भए । उनने भेष निराले किये ॥
 उनमे भृष्ट भयो मारीच । ग्यानामृत तै सब को सीच ॥४१४९॥
 सुप्रभा राजा प्रहलना अस्तरी । ते भी बसै अजोध्या पुरी ॥
 पुत्र दोइ वाकै गर्भ भए । सूर्य उदै चन्द्र उदै निरभये ॥४१५०॥
 जब वे कुंवर जोवन के वस । मारिच पास सुण्यो उपदेस ॥
 सन्यासी का साधै जोग । छोडि दिया ससारी भोग ॥४१५१॥
 च्यारू गति भरम्या वे दोइ । कबहु देव मनुष गति होइ ॥
 कबहु कि तिरजंज गति फिरै । तप करि राज पुत्र अवतरै ॥४१५२॥
 हस्तनागपुर हरिपति भूप । मनोलता राणी सु स्वरूप ॥
 तास गर्भ चन्द्रउदय जीव । कुलकर नाम घरम की नीव ॥४१५३॥
 विश्वकर्म विप्र अगनिकुल नारि । सूरज उदय लिया अवतार ॥
 मुगति गति नाम पुत्र का धरथा । बेद पुराण विद्या सुं भरथा ॥४१५४॥
 हरपति राजा तपकूं गया । राजभार कुलकर कूं दिया ॥
 सुरति रति पोहित भूपति हेत । सन्यासी महत शिष्य सो हेत ॥४१५५॥

पंचा भयनि साथै वन मांहि । करै तपस्या बसुार सांभ ॥
 नरपति सुणि दरसन कूँ चल्या । अभिनदन मुनि देख्या भला ॥४१५६॥
 तेरह विष चारित्र का धणी । मति श्रुत ग्यान भवधि उपनी ॥
 मुनि देख्या वाकी ढिग जाय । नमस्कार करि लाग्या पाइ ॥४१५७॥
 मुनि बोले राजा सु बंन । दादा निज देखूँ तुम नैन ॥
 जहिं तापसी साथै ध्यान । जलै सरप वा लकड़े यान ॥४१५८॥
 राजा गया ते लकड़ा निकाल । चीरघा ठु ठ निकल्या व्याल ॥
 जैन धरम की धरी परतीत । धन्य साथ जे इन्द्रो जीत ॥४१५९॥
 पालडी जाण्या सब भेष । निश्चै जैन धरम सुं प्रेष ॥
 राजा चाहै दिक्षा लेई । सुरति रति प्रोहित तब शिक्षा देइ ॥४१६०॥
 तुम बालक भर मतति नाहि । सतति बिन दोषा नही काहि ॥
 जे बिन मतति तप को धरै । मर करि जीव कुगति मे पडै ॥४१६१॥
 जब वह पुत्र सु ईसरथ । सौपो राज रिष सब गरथ ॥
 अपणा कुल का करिये धरम । अनि भेष धरो मति भरम ॥४१६२॥
 ज्यो क्षीरकदम का पर्वत पुत्र । नारद सुं वाद किया बहुत्त ॥
 वसू भूप कों भेज्या नरक । भ्रंसा प्रोहित बरै जे भडक ॥४१६३॥
 श्रीमदाराणी सुणि बात । राजानै समझावै बहुभाति ॥
 नृप बाका मानै नही कहा । प्रोहित खोट हिया मे गह्या ॥४१६४॥
 राणी सो विप्र कहै समझाय । राजा जैन धरम रुचि ल्याइ ॥
 मील हमारी सुणूँ न राय । मेरा जजमान हाथ तै जाय ॥४१६५॥
 विष देकरि भारै इस घडी । राणी प्रोहित इह चित्त धरी ॥
 विष देकरि तब मारघा राव । राणी कु कोट चुवै सब ठाम ॥४१६६॥
 प्रोहित सातवा नरक दुख पाय । महा दुःख सों तिहा विहाइ ॥
 राजा चउगै भरम्या जैन । अन समव भए इक भौन ॥४१६७॥
 मीडक भूसा मृष नै मोर । कुकर गति दोन्युं इक ठौर ॥
 ऊंच नीच गति भरम्या भाइ । प्रोहित जीव हाथी की काय ॥४१६८॥
 राजा जीव मीडक जल बीच । हाथी नै रौष्या तिहां कीच ॥
 फिर मीडक उपज्या तिहुं ठौर । कोवा खाय गया भी और ॥४१६९॥

मीडक जीव मूँसे गति पाय । हाथी तै विलाव गति प्राय ॥
 मूसा कु बिलाव किया भक्ष । दोनू उपज्या जल मै मच्छ ॥४१७०॥
 कुकडा मच्छ बिलाव ने मूसा । भीवर ने गह्या जाल मे बस्या ॥
 उहा तै मरि बाभण कै गेह । राजग्रही नगर विप्र का एह ॥४१७१॥
 बहु बाकै सिध जउलका अस्तरी । अतर सौ पुत्र जणे सुभ घडी ॥
 प्रथम रमन दूजा विनोद । मात पिता ले पालै गोद ॥४१७२॥
 जीवन समै विचारै एह । रमन धरै विद्या सु नेह ॥
 कुपड मनुष पसू ते बुरे । जिन कछु भेद चित्त नही घरे ॥४१७३॥
 पशु भला जो उठावै बोझ । मूरख जैसा न गल रोझ ॥
 गुनी होय तो समझै ग्यान । कुपड कहा जानै पहचान ॥४१७४॥
 गुण तै राज सभा मे काण । आदर भाव सदा सनमान ॥
 गुण हीणा जैसे बिनु आख । जैसे पक्षी बिनु पाखि ॥४१७५॥
 अँसी सोच बाणारसी गया । गुरु पै जाय धरण कूँ नया ॥
 तिहा सिष्य पढै थे घने । सेवा करै उनू ढिग भरो ॥४१७६॥
 वै सिष्य भोजन देवै याहि । रमन पढै मन मे उछाह ॥
 व्यास बेद पढे मन त्याइ । िद्या कला सीष्या बहु भाइ ॥४१७७॥
 गुरु पै विदा होय करि चत्या । राजग्रही वन देख्या भला ॥
 बर्षा भई घनहर घनघोर । बरषा भई वन नाच्या मोर ॥४१७८॥
 भीजत चत्या रमण तिण बार । देख मढी डक वस्त्र उतार ॥
 वस्त्र निचोड वह सूतो तिहा । स्यामा भावज आई जिहा ॥४१७९॥
 विनोद त्रिया असोग दत्त सू नेह । उनै कीया वचन जध्य कै गेह ॥
 जब उठ स्यामा वन कू गई । विनोद विप्र तरवार नागी लई ॥४१८०॥
 त्रिया पाछै चाल्या लाग । असोगदत्त अग्रै आवै था जाग ॥
 कोटवाल कै आया हाथ । बाघ मसक वह ले गया साथ ॥४१८१॥
 गई बाभणी मड के बीच । रमन सोवै था लागी मीच ॥
 विनोद जाणै यह इस का जार । खडग काढि तसु सीस उतार ॥४१८२॥
 देह छाडि मैमा भया अंध । दोनू जले वयर सनमंध ॥
 भये भील मृग गति पाइ । वनमै रहै वापै भए काइ ॥४१८३॥

नगर कपिला राजा स्वयंभूत । विमलनाथ दरसन हित कुत ॥
 बे दोनु मृग आ लडे राय । जिन मंदिर राखे तिहां जाय ॥४१८४॥
 अनपाणी घास तिहां हरषा । सेवा करे जतन मुं सरा ॥
 समाधिभरण मे त्यागी देह । विनोद जीव सेठ के भया गेह ॥४१८५॥
 नाम धनदत्त लक्ष्मी गेह अपार । वाइस कोडि जुडे दीनार ॥
 रमन जीव लहि स्वर्ग विमान । भए पुत्र धनदत्त के धान ॥४१८६॥
 बारुणी नाम सेठ की घणी । याणी जाकै पुत्र धिति बणी ॥
 निमित्तग्यानी पंडित बुलाइ । जनमपत्नी लई लखाइ ॥४१८७॥
 घडी मृहत्तं उत्तम बार । उपज्या वंराग तजे घर बार ॥
 इतनी सुणी दंपती वात । पुत्र नै बरजें बाहर जात ॥४१८८॥
 वन उपवन मंदिर सवराइ । खाणा पीवणा सेवा सार ॥
 फूल पान उबटणा सनान । आभूषण दे बहुला आण ॥४१८९॥
 भ्रंसी जुगत दिन बीते धरे । प्रभात समय सुपना मे सुणे ॥
 अगले भव हम थे दोइ भ्रात । अब कै भए पुत्र अने तात ॥४१९०॥
 भानुं उदै बाजेंतर होई । जै जै सबद करै सब कोइ ॥
 श्रीधर मुनि कौं केवल ग्यान । भ्रंसी भूप नै सुणी कान ॥४१९१॥
 पच भूमि तै देखी भीर । पहुच्या चाहै मुनिवर नीर ॥
 तबै उतरै था साह का कुमार । डस्या भुयगम लाइ पछाड ॥४१९२॥
 मर करि स्वर्ग मा देवता भया । मनबाछित सुख मुगतै नया ॥
 चंद्रातपुर प्रकास यस भूप । माघई राणी महा सरूप ॥४१९३॥
 उहा तै चया भया जगदूत । पाई सरोध जोवन संजुत ॥
 प्रकास जस नै दिसा लई । राज बिभूत जग दूत ने दर्ई ॥४१९४॥
 भोग मगन मे बीतै काल । दुर्जन दुष्ट तराँ सिर साल ॥
 राजा कूँ उपज्या वंराग । राज भोग कूँ चाहै त्याग ॥४१९५॥
 मंत्री समझावै राजनीत । सतति बिना नही होय अतीत ॥
 जब होइ पुत्र तब छंडो राज । पालो प्रजा धर्म सुं काज ॥४१९६॥
 राजा कूँ लामें बुरा सब कर्म । अणूअत पालै जिएवर धर्म ॥
 राजभोग मे छंडघा प्राण । ईसान स्वर्ग पाया सुख धान ॥४१९७॥
 जंझू द्वीप क्षेत्र विदेह । अचल छत्री बालहरनी सूं नेह ॥
 रतन संचय नगरी का नाम । ईसान स्वर्ग तै चया तिह थान ॥४१९८॥

अभीराम पुत्र जनमीया कुमार । छहूं बंड रहसी या संसार ॥
 जनम समये दीया बहु दान । और बजे आनद नीसान ॥४१६६॥
 दिन दिन कुमार बढै जिम चंद । देख रूप सुख होइ आनद ॥
 जोवन समय बिवाही नारि । राजसुता बरी तीन हजार ॥४२००॥

भोम माहि बरतै दिन रयन । कुमार बिचारै मनमे जयन ॥
 स्वर्ग लोक सुख देखे धरौ । तेभी जात न जाणै गिरौ ॥४२०१॥

इह विभूति ससारी जरजरी । भगन हुवा पावै गति बुरी ॥
 बैठौ पट्ट तिहा रणबास । म्यांन उदय हुवा परकास ॥४२०२॥

ए सुख समझै जहर समान । जो कोई भलै ताहि जहर समान ॥
 बिष खाइ एक जु बार । बिषय लपटी भ्रमै संसार ॥४२०३॥

जोवन जात न लागै बार । पडै जीव माया के आधार ॥
 पुण्य पापनै जाणै एक । जाके गलै मन मे टेक ॥४२०४॥

ऊच नीच गति डोलै हम । उत्तम मध्यम पाए हस ॥
 पुण्य उदय पावै बहु सुख । जब बिहडै तब मानै दु ख ॥४२०५॥

रोग सोग चिन भारत घरै । फिरि फिरि जोनी सकट परै ॥
 भ्रम मै सयम व्रत कू धरू । जौन घरम निषचय मू करू ॥४२०६॥

राणी सुणकर भई अडोल । असे सुणै कत के बोल ॥
 पालै व्रत तब राजकुमार । एक अंतर लेइ अहार ॥४२०७॥

पाल महीनै करै पारणा । मंदिर देखै जिहा सतधरणा ॥
 उभा जोग लगावै ध्यान । देही दुर्बल कीनी जान ॥४२०८॥

काल अनंत इन्द्रिया ने पोष । भरम्या जीव बिना सतोष ॥
 तातै देह डमौ इस भाति । सहू परीसा अपना गात ॥४२०९॥

चउसठ सहस्र वर्ष तप किया । ब्रह्मोत्तर स्वर्ग पर बासा लिया ॥
 धनदत्त सेठ काल को पाइ । लख चौरासी भरम्या जाइ ॥४२१०॥

पोदनापुर सकनाकं द्विज । महिणी नारि घर की द्विज ॥
 ता घरि अवतरथा धनदत्त भाइ । जोवन समये कर्म कमाइ ॥४२११॥

जूषा खेलै सेवै सात बिसन । सातै विष लेस्या घर किसन ॥
 ब्राह्मण नै सहू को दीये गाल । उनु जब बेटा दियो निकाज ॥४२१२॥

मृदवत निकल्पा देसांतर गया । गुहसंगत विद्यारथी भया ॥
 बसंत नगर मे विद्या पाइ । वहुन पीदनापुर में घाइ ॥४२१३॥
 ग्रीष्म रित त्रिषा अति लगी । विप्र गेह माता धी समी ॥
 तिहाँ घाइकें मार्ग नीर । महिनी बाह्याणी आई तीर ॥४२१४॥
 भरि भारी पाया जल ताइ । अवर जला नयनुं भरिवाह ॥
 तब परदेसी पूछें बयन । तैं का माता अरे जल नैन ॥४२१५॥
 कहे बभ्राणी मेरे धा पूत । बाहिर नीकल्पा दुःख बहुत ॥
 जैं तैं देख्या हूँ तो कही । तो मोकुं समझावो सही ॥४२१६॥
 जब वह बोल्या मैं हू तेरा पूत । अब हूं विद्या पडे बहुत ॥
 सकताकें पिता महिणी माय । मिल्या पुत्र कठ लगाय ॥४२१७॥
 जिहां तिहा आदर होइ । जोतिग बैद्यक पूछें सब कोइ ॥
 बहुत दिना सुभमारग चले । अत फेर छोटे मति गये ॥४२१८॥
 सात विसन सेव्या दिन रात । धर्म छाडि कुहावे कुशात ॥
 वसत अंगना बेस्या रित भया । वा समति सगला गुण गया ॥४२१९॥
 मात पिता का लोया दबं । बाको बुरा कहै हैं सर्व ॥
 लज्यावंत होय देस ही तज्या । ससाक नन्न गया वह भज्या ॥४२२०॥
 नदवर्धन रामा के भटार । चोरी निमित्त गए तिह बार ॥
 भूप मता राणी सू करे । प्रभात समय हम दिव्या धरे ॥४२२१॥
 अंसी चीवर साभली बात । समझि ग्यान कंप्या बहु गात ॥
 इतनी बिभव राय ने त्याग । मनम्या धरा बहुत बैराग ॥४२२२॥
 मैं जन्म्या मात पिता कै जाय । भिक्षा करि करि पोषी काय ॥
 छोटे करम कमाये धरौ । अब प्रायश्चित्त कहा लुं गिरौ ॥४२२३॥
 मदमत्त गया ससाक मुनि पास । दिक्षा लई भुगति की आस ॥
 गग गिर पै परीसैं सटै । गुण निधान मुनिवर तिहां रहै ॥४२२४॥
 विद्या पटि समकित चित धरधा । गुणनिधान केवल तप कुरधा ॥
 सुरपति नरपति पूजा करी । देखि विप्र जिन दिव्या धरी ॥४२२५॥
 आचिरज भया सबा कै चित्त । कईसी भयाकें मन धिति ॥
 मास उपवासी त्यावैं ध्यान । ब्रह्मोत्तर पाया सु विमाण ॥४२२६॥

इन्द्र समा इनका प्रताप । सुख मा भूल गए संताप ॥
मदमत देव गए धावेंल पुर । सुख मे भया दुःख का मूर ॥४२२७॥

भरत के पूर्व भव

हा हा कार करै बहू भंति । ए सुख छोड़ि भवै कहा जात ॥
माया माभि बया लोक मध्य । समेद सिलर धानक है सिध्य ॥४२२८॥
हाथी उपज्या अति मयमत । सहस्र जूष माहै गरजंत ॥
जइसै समुद्र गरजना करै । इह विष मंगल वन मे फिरै ॥४२२९॥
जिहा सरवर देखै वह भले । क्रीडा करै कमल तिहा खिले ॥
गगातट पर पावै पीर । डरै सकल देखै इस वीर ॥४२३०॥
महा भयानक दीसै रूप । या सनमुख नही भावै भूप ॥
जैसा बादल सजल बडा म्याम । असा दती सोहै उस ठाम ॥४२३१॥
पवंत पर चूबै भरना भरै । अमर गुंजार तिहा अति करै ॥
तब रावण आया था जिहा । हाथी सब दल मारे तिहा ॥४२३२॥
रावण ने पकड़या उस बार । त्रिलोक मडल मा नही संसार ॥
रामचन्द्र लज्जमण की जीत । रावण भुझ्या हाथी भयभीत ॥४२३३॥
त्रिलोक कंटक त्रिलोक मडल नाम । अइरापति सम इसका भाव ॥
मरथ तराँ मन भया गैराग । तब घाए बा सनमुख लाग ॥४२३४॥
जाती समरण उपज्या चित्त । गहै मौन होइ रहै अनित्त ॥
अभिराम देव स्वर्ग तै बया । दमरथ के या सुत भया ॥४२३५॥

सोरठा

सुणि पिछला सनबध, सकल सभा चक्रित भई ॥
समझे भेद अनत, पूरव भव सब आपरणे ॥४२३६॥
इति श्री पद्मपुराणे भरत त्रिलोक अल कर भवकीर्तन विधानक

७६ वां विधानक

चौपई

भरत द्वारा वंराग्य लेना

भये अचभय सगला लोग । रहै धक्ति जैसे साधै जोग ॥
जाण्या सकल कर्म का बध । बहुते तज्या मोह का फद ॥४२३७॥

भरत मूपती हूँ कर जोड़ि । नमस्कार कीया तबै बहोड़ि ॥
 जीव भ्रम्याँ चिरकाल अनत । हीडत हीडत नहीं पायो अंत ॥४२३८॥
 थके बहुत न लहे बिसराम । ज्यौ पथिक भ्रमं गामों गाम ॥
 रीतल छाहूँ दू ठै वन मांही । वाको कही पाइये नाहि ॥२३९॥
 चहुंगति भ्रमत लह्यो नहीं पथ । सुण्या नहीं त्रिणवाणी ग्रन्थ ॥
 मिथ्या धर्म तँ लहीव न ठोड़ि । प्रभू बिन सरणा नाही प्रौर ॥४२४०॥
 भवसागर अति भयम अथाह । सद्गुरु पकड़ै बूझत बांह ॥
 अजर अमर तहां पाबै सौख्य । गुरु सगत तँ लहीए मोघ्य ॥४२४०॥
 आभूषण सब दीने डार । कुंडल सोभै जोति अपार ॥
 सहु छतारि कर लु बे केस । मुनिवर भए दिगंबर भेस ॥४२४२॥
 राजा सहस्र दीक्ष्या लई मग । केकई नयन बहै जिम गग ॥

कैकयी का बिलाप

हाइ पुत्र तँ बीनी बुगी । मेरी दया हूँ हिय नहीं धरी ॥४२४३॥
 जीवन समे तजे भरतार । पुत्र लिया समय का भार ॥
 ए कुल मैं कैसे करि महुँ । पुत्र बिना हूँ कैसे रहूँ ॥४२४४॥
 मूर्च्छाबंत भई केकईया । बँछ उपाव घणा ही किया ॥
 भई सचेत बहुरि बिललाइ । रामलक्षण बोले समझाय ॥४२४५॥
 माता मति करो तुम बिलाप । हम सेवा तुम करिहूँ आप ॥
 भरथ जु कुल उबारण भए । सुभट बरत जिण रुचिसौँ लए ॥४२४६॥

कैकयी का बँराध

पहले ही मन था वेराग । अब इन करथा सकल ही त्याग ॥
 केकईया मन आध्याँ ग्यान । धरम विचार किया सुभ ध्यान ॥४२४७॥
 प्रथीमती आरजिका कै पास । दिक्ष्या लही मुक्ति की आस ॥
 तीन सँ सग अनि असतरी । सत्य सोल संयम सुं भरी ॥४२४८॥
 आतम ध्यान लगाया जोग । छुंड़था सब ससारी भोग ॥
 दया भाव सगला पर नित्य । समकित सु भया निश्चल चित्त ॥४२४९॥

ब्रह्मा

धरथो ध्यान भगवंत सुं, आतम सुं धरि प्रीत ॥
 भरथ मूप हौ बहुबली, करी धरम को रीत ॥४२५०॥

इति श्री पद्मपुराणे भरत केकईव । निःकलण विधानकं

चौपई

श्रेणिक गाय करे प्रसन्न । कौण कौण सगति हुवा मौन ॥
 कैसी कैसी पाई ठाम । तिरुका व्यवर सुखावो नाम ॥४२५१॥

वाणी एक तसु भेद अनेक । प्राणी करे व्याख्यान अनेक ॥
 सिद्धार्थ रतनवरधन राय । अनुवाहन जंबुनद घरि भाव ॥४२५२॥

सुमीमा नन्द आनदकद । सुमति महा विधि सेती चद ॥
 जनवल्लभ इन्द्रध्वज सतवाहन । हरि सुमित्र धर्म बलवान ॥४२५३॥

सपूरन नद सुदन सात । सहम स्वेतावर भये इह भात ॥
 केई गये पंचमी गति । केई स्वर्ग लोक की गति ॥४२५४॥

रामचन्द्र लक्ष्मण द्वारा बुद्ध प्रकट करना

रामचंद्र लक्ष्मण बिललाइ । भरत बिना कछु चित्त न सुहाइ ॥
 हा हा कार भए चिहुओर । आभूषण सब ढारे तोड़ि ॥४२५५॥

रुदन करे फाँडे सब चीर । रुदन करे बहु चले जल नीर ॥
 हाय भरथ हम आए क्यू । हम भी तो संग दिव्या ल्यू ॥४२५६॥

तुम बिन कैसे जीवै बीर । तुम बिछूडे बहु पावै पीर ॥
 तब मन्त्री समझावै बैन । सुणीं बात चित राखो चैन ॥४२५७॥

भरथ ने कीये उत्तम कर्म । रघुब सी कुल उपज्या धर्म ॥
 सब परिवार चढ़ाई रती । आप करी मुक्ती की गती ॥४२५८॥

राम का राज्याभिषेक

करो राज अब ढालो कलस । परजा सुख पावै ज्यु' सरस ॥
 राम करै राज का काज । लक्ष्मण राज करो महाराज ॥४२५९॥

सब नरपति लक्ष्मण पै गये । नमस्कार करि गढे भए ॥
 प्रभुजी चलो करो तुम राज । पटाभिषेक करो तुम आजि ॥४२६०॥

लक्ष्मण चले सभा संयुक्त । बाजंतर बाजैया बहुत ॥
 आए रामचन्द्र के पास । दोऊ भ्राता मन उल्लास ॥४२६१॥

पट ऊपर बैठे दीउ बीर । रतन कनक कलस भरि नीर ॥
 ढारे कलस एक सो आठ । पदम नरायण राज का पाट ॥४२६२॥

मुकुट छत्र पुहपन की माल । सोमं मुगताह अनं लाल ॥
 आभूषण पहरेण अनूप । तीन खड का सेवै मूप ॥४२६३॥
 जं जं सबद करै सब लोग । कष्ट कोतुहल भरि भति भोग ॥
 सकल नारि सीता पै गई । पट गैठाणि बघाई दई ॥४२६४॥
 विसल्या कूँ पटराणी किया । किंषधपुर सुग्रीव ने लिया ॥
 अनि नगर नल नील कुं दिया । अवर राजा मार्ग सोइ दिया ॥४२६५॥
 लक्ष्मण विशल्या राम के सिद्धा । इनसौं बड़ी अवर न को लिया ॥
 करै राज इम भ्राता दोह । नगर मे हर्ष मानै सब कोइ ॥४२६६॥
 लका राज विभीषण दिया । ककणपुर सुग्रीव ने लिया ॥
 श्रीपुर नगर दिया हनुमान । किनर नगर रत्नजटी मान ॥४२६७॥
 भावमडल रधनूपुर देस । भौमी अपनी लही दरेस ॥
 जेते राजा थे उन पाम । त्या त्या की सब पु गी आस ॥४२६८॥

ब्रह्मा

असुभ करम को टाल करि, मिले कुटुब सरेस ॥
 मनबंछित सब सुख भए, पाया बहुला देस ॥४२६९॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र लक्ष्मण पट्टाभिषेक विधानकं

८१ वां विधामक

चौपई

सन्नुवन को राज देने की इच्छा

राम सन्नुवन लिये बुलाइ । कहै वचन प्रभुजी समझाइ ॥
 अरध राज प्रथवी का लेहु । देस भोग मनुष्य करेहु ॥४२७०॥
 आनि देस के वंछइ दरेस । तिहाँ निहाँ थाप कऊं महेम ॥
 आणई मनमे करो विचार । जे मागो ज के खु इराबार ॥४२७१॥

ब्रह्मा

पोदनापुर राजग्रही, पुरपट्टण बहु ठाम ॥
 जो मन इच्छो सन्नुवन, कहो तिहा का नाम ॥४२७२॥

चौपई

सन्नुवन द्वारा मथुरा का राज्य चाहना

ईं कर जोडि सन्नुवन कहै । मथुरा नगर मेरे मन रहै ॥
 रामचंद्र कहते तिह बार । मथुरापति का है बल अपार ॥४२७३॥

रावण नगों जमाई बली । बापें बरछी कहिए भली ॥
 एक चउट सूँ हरौ सहल । अनि भले हैं बापें सस्त्र ॥४२७४॥
 बरछी कर की करमे रहै । ऐसे गुण गरब तन गहै ॥
 तुम बासो मति माडो युद्ध । अवर देस मागो तुम सुष ॥४२७५॥
 सत्रघन कहई सुनो रघुनाथ । कोई मति आवो मो साथ ॥
 मेरी भुजा आवध समान । दशरथ पुत्र महा बलवान ॥४२७६॥
 जो तीडी दल अति संघट्ट । गरुड चलै सब जाई अहट्ट ॥
 प्रेमा दल बज बाकै जुडघा । मारु घेर बाहि ठा सरा ॥४२७७॥
 रामचन्द्र मनमे बहु दिया । मधुराय विगार नह कीया ॥
 बिन अश्वगुन कैसे दुख देह । सबसो राखै घरम सनेह ॥४२७८॥
 सत्रघन सुन वीननी करै । आग्या प्रभु इन मन नहीं धरै ॥
 प्रेसा मधु है कहा बराक । जाकी मानु इतनी धाक ॥४२७९॥
 जैसे मधु बडा सहेत । वार न लागै उसको गहेत ॥
 घेर लेट इस विधि तुरंत । तो मैं सत्रघन महंत ॥४२८०॥
 राम लक्ष्मण इह आग्या दई । सेना साथ घनी कर लई ॥
 समुद्रावर्ण धनुष को लिया । वाजतर सबद बहु किया ॥४२८१॥
 माता मुप्रभा पै गया । नमस्कार करि टाढा भया ॥
 आग्या खो माता जो मोहि । जोतु दुग्जन पाउं सोइ ॥४२८२॥
 माता दीये आसिरवाद । होज्यो जीत भगवंत प्रसाद ॥

सत्रघन द्वारा मथुरा पर चढ़ाई

चले सत्रघन सेना जोडि । पहुँचे आय मथुरा की ठोर ॥४२८३॥
 चहुधा घेरि दमामा दिया । जईसै पंछी पिजरा किया ॥
 इह विष घेरी व्याहूँ ओर । सहू नगरी मा माची रोर ॥४२८४॥
 मधुराजा सोचै मन माहि । मो सम बली अबर कोउ नाहि ॥
 घेरया मोहि सत्रघन आइ । मन्त्री मन्त्र करै उन पाय ॥४२८५॥
 अबाणक घेरे मथुराई । करई विचार बईठतए ठाई ॥
 जँ उमडै दल मथुरा धणी । या कूँ सजा लगावै बणी ॥४२८६॥
 कोई कहै रावण सा बली । रामचन्द्र सो कछु ना चली ॥
 रावण मारि जीते सहू देस । इन समान कोई नहीं नरेस ॥४२८७॥

रामचन्द्र का छोटा भीर । याकों कौण सके करि भीर ॥
 वे सुख फेरि रामचन्द्र बढै । एक एक का मुँह बहु उढे ॥४२८८॥
 के ते लकरें अपनै बार । जल नबका महा गुंण सार ॥
 जीतै सन्नुघन के हार । प्रसी उनू कहीं गवार ॥४२८९॥
 सन्नुघन भेजिया बसीठ । ठाम ठाम दोडिवा भीठ ॥
 दूत गए वे नगर मझार । बिहां सहर मधुरा का दरबार ॥४२९०॥
 सन्नुघन पै धाए दूत । पूछै नरपति भेद बहुत ॥
 कुबेरछव वन पूरब धौर । मधु मूपति अब है वा ठौर ॥४२९१॥
 श्रीराम करत बीते दिन षष्ठ । वे सुख देखि झूले कष्ठ ॥
 प्रसा मैं घेरा बा ठाव । अवसर चूका बरौ न दाव ॥४२९२॥
 सन्नुघन धाया तोडि किबाड । वन बेहद घेरधा सब बाट ॥
 तोडि बंध बेडी दई खोलि । दे प्रसीस बोले सह बोल ॥४२९३॥
 तेरी जीत करै जगदीस । सब मिल धारि नमाबै सीस ॥
 अघं राज घेरधा सह देख । कोटि डाहि कीया परबेस ॥४२९४॥
 राजा मधु की भई सभार । बरछी रही गेहे मझार ॥
 मोचे राजा मण आपनै । धीरज भी छोडधा नही बसै ॥४२९५॥
 सेना मधु साथे जब जुरी । दोउधा मार बाण की पडी ॥
 गोला गोनी बरबै ज्यु मेह । बाव लगै सुभट की देह ॥४२९६॥

बूहा

हाथी सूं हाथी लरै, रथ घोडे पाइवक ॥
 मुह फेरै नही सूरमा, पाछा हटै नही मग ॥४२९७॥
 पडी लोथ परवत जिंसी, बाजै लाल सुरग ॥
 कायर भाजै देख रण, हीसै लडे तुरंग ॥४२९८॥
 लौनारण मधु सुत बली, बस्या मृगराज समान ॥
 धनुष गह्वा कर आपणै, सन्नुघन मारधा तान ॥४२९९॥

मल्लपुत्र

गिरधा सन्नुघन रथ बकी, दूजा रवै सभार ॥
 मारी गदा कुमार कै, रथ टूटधा तिरु बार ॥४३००॥
 फिर संमाल दोन्यु लडै, जैसे लडै जु मल्ल ॥
 कोई हार न मानई, जीवन बंत अटल्ल ॥४३०१॥

लौना रण विद्या बान सहि, तोड़े घुजा का दंड ॥
सत्रूघन खड्ग सभास करि, लिए प्राँन जब छंड ॥४३०२॥

चौपई

भुक्ता कुमार मधु सुँएर तणा । पुत्र मोह तब व्याप्या घणा ॥
चढ़े कोप सनमुख ए भाइ । सत्रूघन बोलिया रिसाइ ॥४३०३॥
मधु राबा जो तेता नाम । करो वेग तुम सनमुख काम ॥
तो मैं बल है तो तुं भाष । जममंदिर तोहि भेजों राब ॥४३०४॥
दोनों दल मे माची रार । कायर सबहु पड़े पुकार ॥
विद्यावान सुं छाया भानु । अँसे जुव महा भयवान ॥४३०५॥
महासुभट भुक्कं पडि व्यार । कातर भाज गये तिणवार ॥
मधु सूदन सोचै मन माहि । सत छड्या पति रहनी नाहि ॥४३०६॥
एक दिन मरणा सही निदान । काल रहै नही किम ही मयान ॥
तातैं सनमुख भुक्ता जाई । कोप्या भूप माभटी आई ॥४३०७॥
नदा खड्ग करि गहे सभार । वान छुटै ज्यों घनहर घान ॥

मधु राबा द्वारा युद्ध भूमि मे बैराग्य

सत्रूघन मारी तरवार । मधुराजा घुमै तिह बार ॥४३०८॥
आतमध्यान सु हिये विचार । भरमत फिरथा जीव संमार ॥
समकित कबहि न आया चित्त । मिथ्या मोह भ्रमसा चहु गति ॥४३०९॥
मनुष्य जनम घरि धर्म न किया । जनम प्रकारथ खोइ कर गया ॥
पुत्र कलित्र हय गय मडार । इणमे यू ही राच्या निरधार ॥४३१०॥
अष्ट मदो मे माता फिरथा । सात विसन सू परचा करथा ॥
सजम व्रत सू करथा न नेह । विष अभिलाष मु पोषी देह ॥४३११॥
अचानक मरण मए है आज । अब कैसे होइ जीव का काज ॥
अन्न पान तजि लियो सन्यास । राज भोग की छोडी भास ॥४३१२॥
भारत रौद्र राग अनै द्वेष । धरम ध्यान मन मैं करि पेष ॥
उत्तम छिमा दमौ विष धर्म । दया भाव का जाण्या मर्म ॥४३१३॥
कायोत्सर्ग धरथो न जोग । आभूषण अणौ छोडे संजोग ॥
सत्रूघन आदि सकल भूपती । ऊभा देख्या मधुसूदन जती ॥४३१४॥

हस्ती सूं उतरा तिह धडी । नमस्कार बहू स्तुति करी ॥
 जै जै सबद करै सुर भाइ । वरखै पुहपे तहां मुनिराय ॥४३१५॥
 देही छोड़ि गये सनसुमार । भवा देव मधुसूतनीवार ॥
 मथुरा के पट सत्रधन बँठि । पूजा दान जिम भविर पैठि ॥४३१६॥
 नगर लोग भए सब सुखी । तिहां न दीसै कोउ दुखी ॥४३१७॥

बूढ़ा

मधुसूदन भूपति बली, धरधा धरम दिड बित्त ॥
 संयम का परसाव तैं, भई स्वर्ग मां बित्त ॥४३१८॥

इति श्री वधपुराणे मधुसूदन विद्यालकं

८२ वां विद्यालकं

चौपई

सत्रधन राज मथुरा का करै । सहू पिरजा सुखस्यो दिन टरै ॥
 बिद्या सूल देव की सगि । उठि गई देव के भानै भाग ॥४३१९॥
 सत्रधन राज मथुरा का करै । सहू परिजा सुखस्यो दिन टरै ॥
 सुर के भागै करै बसान । सत्रधन हरे मधुसूदन प्राण ॥४३२०॥
 राज लए मथुरा का छीन । वा भागै मो मुन भए हीन ॥

मधु राजा के मित्रों द्वारा आक्रमण

सुण्यां देव मित्र मोहनां । वा समय मित्र कोप्या घनां ॥४३२१॥
 भैंसा कहा मानुष्य बलवत । जिनें मारधा मेरधा मित्त ॥
 तल की धरती ऊपर उलट । लेस्युं बैर मित्र का पलट ॥४३२२॥
 ह्वा तै चित गया पाताल । व्यतर देव बुलाए तिह काल ॥
 सेन्यां जोडि चल्या तब देव । धरणेन्द्र नें पूछधा तब भेव ॥४३२३॥
 कहो चमर सुर अपनी बात । सेना जोडि कहा तुम जात ॥
 चमर इन्द्र कहै समझाइ । मेरा मित्र मारधा सत्रधन राइ ॥
 बैर सेण चान्या दण घरी । वा निमित्त ए सेना जुडी ॥४३२४॥

धरणेन्द्र द्वारा समझाना

सु रिण वचन बोल्यो धरणेन्द्र । सत्रधन लक्ष्मण रामचन्द्र ॥
 तीन लोक के हूँ जगदीश । इनसै कुंए करि सकैं है रीस ॥४३२५॥
 हम रावण कुं दीये बांण । सगती उन भाये भई असगति ॥
 लक्ष्मण तशी बिसल्या नारि । वा भागै सब मानें हार ॥४३२६॥

उसका गधउदक लायें कोइ । सब की बिद्या निर्फल होइ ॥
 दोन्यून देव भ्यतरी और । वाहि देखि भाजी घर छोड़ि ॥४३२७॥
 बाकं भय पवन लगि चलै । सब निरोगी होइ पवन मे मिलै ॥
 हमारी विद्या बाधूँ भई लीए । वे हैं महाबली परवीण ॥४३२८॥
 जइ कउपसै राम लखमण । बाधै मोहि करै बेजतन ॥
 ते मन माहि बिचारी बुरी । अँसी जीव मे इच्छा घरी ॥४३२९॥
 तब सूर बोलै मैं हां देव । कहा मानुष जा का करै भेष ॥
 बाधु सागर भति गंभोर । सन्नुषन कहा अँसा बलवीर ॥४३३०॥
 मध्य लोग मे ल्याया सेन । बिचारै देव घरएँन्द्र के बँन ॥
 भूमिगोचरी हैं बलवान । या की परजा मानै आण ॥४३३१॥
 परजा नै ऊपर नही किया । सब ही का फूटा हिया ॥

प्रजा को दुख देना

पहली दुख प्रजा कु छ । मधुसुदन का बँर हू लू ॥४३३२॥
 जुरि ताप पीडा फैनाइ । उछलै कउवा जम प्रागै बिललाइ ॥
 मरै लोग मिट गया भोग । व्याप्या दुणा सोग विजोग ॥४३३३॥
 सन्नुषन करै बहुत उपाव । कछुवन चलै काल सौ दाव ॥
 छोड़ि नगर अजोध्या गया । भाई मिले महा सुख भया ॥४३३४॥
 सुप्रभा माता कै सनमुख । पुत्र विछोहा मिल्या भूले दुख ॥
 श्रीजिन सुवन इक समराइया । करी सातक दान बहु दिया ॥४३३५॥
 मनबाछित दान भला सनमान । बजै तिहा आनंद निसान ॥
 सुणी जीत घरि घरि आनद । सन्नुषन के मनमे दुखदुँव ॥४३३६॥
 मे मथुरा पाई थी भली । कवण करम तैं मोहि न मिली ॥
 सपति मिल कर होय बिछोह । जाका हूवै घणा अ दोह ॥४३३७॥
 घर अंगणै न सुहावै ताहि । रात दिवस मथुरा की दाह ॥
 मथुरा नगरी उत्तम खेत । इसकुं बँछै मुर करि हेत ॥४३३८॥
 इन्द्रपुरी तैं मथुरा सुभ ठौर । वा पटतर नगरी नही और ॥
 पुंनि तैं लहीए अँसा घान । मथुरा इन्द्र के लोक समान ॥४३३९॥

बूहा

मथुरा नगर सुहावना, असा अन्य न कोई ॥
जिना बहु पूरव पुंश्व कीए, ताहि परापति होइ ॥४३४०॥
इति श्री पद्यपुराणे मथुरा उपसर्ग विधानकं

८३ वां विधानक

चोपई

श्रेणिक राय करै प्रसन्न । मथुरा स्रु बहु न्यागा मन ॥
नगर अन्य बडे हैं अनेक । सत्र घन किरिया कयो अति टेक ॥४३४१॥
इतरा किम राखैं वह सनेह । कहो प्रभु भो भाजैं सदेह ॥
श्री जिनराय पिछला भव कहे । काहू मन मंसा नही रहै ॥४३४२॥
मथुरा मे जनमे देवकुमार । गदहा लादै मांटी भार ॥
काल पाय याछउ करा । लागी अगनि तिहा बल मरघा ॥४३४३॥
उहा तै मरि भैसा अबतरघा । वहै बारमैं महिष पद भरघा ॥
सातवे भव विप्र कै गेह । कुलधर नाम उत्तम गति देह ॥४३४४॥
अरिचा चरिचा मगत साध । क्रीया घणी सील विण बाद ॥
असकनि राजा मथुना घणी । ललिता राणी स्यौ जोडी बणी ॥४३४५॥
राजा गये साधने देस । ब्राह्मण खोलै नंदी केस ॥
राणी देखै भरोला द्वार । बाभरण देख्या रूप अपार ॥४३४६॥
टेर लीया ऊपरि बडि बोर । भोगे मनमानी तिह ठोर ॥
घणा दिवस बीना इस भाति । मंदिर पै आया नृप राति ॥४३४७॥
राणी प्रछन राख्यो द्विज । राय लख्यो मनमे अचिरज ॥
कहो राणी इह नर है कौण । किस विष आया मेरे भोन ॥४३४८॥
राणी त्रिया चरित्र विचार । राजा सौं कहै निण बार ॥
इह भाज्या या बदीवान । आइ घुस्या मंदिर कै थान ॥४३४९॥
याके पीछे दीडे सुभट । इतनी कारा मु रहे भटूट ॥
इह बोल्या जे छूटू भाजि । तो दीषित होउ मुनिराज ॥४३५०॥
मै या प्रति छिपाया राज । छोडो याहि दिण्या ले जाय ॥
भूपति सुणि कीयो नमस्कार । छोडे विप्र उसही बार ॥४३५१॥

बं राग्य भावना

विप्र के मनमे आयो साच । अब हू जीतू इन्द्री पाच ॥
इन्द्रिय विषय किये बहु स्वाद । संयम बिना जनम गयो बाद ॥४३५२॥

तृष्णा लोभ कदे घाटै नाहि । भरमत फिरघा चिहुं गति माहि ॥
 साध नाम मुं उबरे प्रान । कळुं तपस्या घातम घ्यान ॥४३५३॥
 कन्याए मुनीसुर के द्विष गया । केस उतारि मुनीस्वर भया ॥
 महै परीसा बीस अने दोड । तप प्रसाद ऊची गति होइ ॥४३५४॥
 स्वर्ग तीसरे रतन विमान । करै भोग तिहा सुख निधान ॥
 मधुरा पति तिहा चन्द्राभद्र । सुधा राणी महा विचित्र ॥४३५५॥
 सूरज अबद राणी का भ्रात । मउल्लात पुत्र भए आठ ॥
 कनक प्रभा राणी इमरी । रूप लब्धन गुण लावन्य भरी ॥४३५६॥
 कुलधर का जीव आए ता कुल । जन्म्या पुत्र भए धन सुल ॥
 रूपवंत रवि जेम प्रताप । रहसे दोनूं माय अने बाप ॥४३५७॥
 जनम समे दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ॥
 दिन दिन कुंवर बडै पल घडी । देखत नयन रली घति खरी ॥४३५८॥
 सावधी नगरी का नाव । कल्पद्विज बसै तिह ठाव ॥
 अ गक भिया विप्र कै गेह । दंपति करै सदा सुख सनेह ॥४३५९॥
 अचल पुत्र ताकै गरभ भया । जोवनवत सोमै बहु कया ॥
 भूव माहि सुत दीना काडि । तिलक वन माहि विप्रसुत ताडि ॥४३६०॥
 अचलकुवर के आठो वीर । तीनू मामा के मन पीर ॥
 इह तो एक ही दीसै बलवत । निसचै राज लहैगा अंत ॥४३६१॥
 टरके चाहै हण्वा परान । कनक प्रभा सुणी इह कान ॥
 अचल पुत्र वइरी के साथ । मारघा चाहै पुत्र अनाथ ॥४३६२॥
 जाहि पुत्र देसांतर लेह । करो जाइ काहू की सेव ॥
 दुरजन के सग फिरणा बुरा । तोहि उपदेस दिया मै खरा ॥४३६३॥
 इतनी सुणत भाजिया कुमार । वन मे रुदन करै हा हा कार ॥
 माय सोच करै द्विज तिहा घणी । कै कोई देव कै पडित गुणी ॥४३६४॥
 कै भूपति कै बगपति राय । पूछै कुमर विप्र जू धाय ॥
 कहो कुमर नूं अपरा नाम । किहू कारण आए इस ठाम ॥४३६५॥
 योसैं बचन तब अचलकुमार । मोकू वन मे दिया निकाल ॥
 ता कारण रुदन करू वन माझ । कंसी वितई इण ठा सांझ ॥४३६६॥

करै विप्र बात ग्रंथ भाई । कोसंबी नगरी इन्द्रदत्त राई ॥
 मनोग कला बाके पटघणी । इन्द्रदत्ता पुत्री बहु गुणी ॥४३६७॥
 विद्या गुण अति ही प्रवीण । और सकल जाइया नही हीण ॥
 जो बाहि जीतै ताहि वा बरै । नमती कहा अचल बसि करै ॥४३६८॥
 विसाल पंडित राजा के द्वार । विद्या सीखै राजकुमार ॥
 अचल है राव पंडित बसक । राजकुमारी जीती असिक ॥४३६९॥
 सुख मैं दिन कछु बीते ताहि । अचल हुआ तिहा नर नाह ॥
 आस पास जीतै सब देस । मथुरा आह कियो परवेस ॥४३७०॥
 बाजतर चंद्रभद्र ने सुणै । सब सामंत अगाऊ बणै ॥
 राजा सुणी पुत्र की सुख । भए आनंद बिचारी बुध ॥४३७१॥
 चंद्रभद्र दिगम्बर भया । मथुरा राज अचल कू दिया ॥
 घाठौ भाई मामा तीन । ए सब जाइ भये आधीन ॥४३७२॥
 आप बाभण आवी तब द्वार । पोल्या अटक करै तिह वार ॥
 राज सभा मे नाचै नट । विप्र सो करै पौजिया हठ ॥४३७३॥
 राजा दृष्टि बाभण पर पडी । आयो बुलावो बाही घडी ॥
 आभूषण नीका पहराइ । आप बराबरि राखै राय ॥४३७४॥
 हय गय विभव दीने बहुदेस । बहुतमया नित करै नरेस ॥
 सुखसौ राज बहु अने किया । सावरी नगर विप्रकू दिया ॥४३७५॥
 जय समुद्र मुनिबर पै गये । साभलि घरम दिगबर भये ॥
 तेरह विध सौ चारित्र बरघा । दया अग दस विध तप करघा ॥४३७६॥
 आतम चित्त लगाया ध्यान । महेन्द्र स्वर्ग पाइया विमान ॥
 चउथै स्वर्ग देवता भए । पूरण आब तिहा तै चए ॥४३७७॥
 अचल जीव सत्रुघन जान । आप कृतात वक्र भया आन ॥
 सेनापति सत्रुघन बली । जानै घरम करम की गली ॥४३७८॥
 कई जनम मथुरा मे पाइ । मथुरा कू चाहै इह भाइ ॥
 पुण्यवत पूरव तप किया । ऊची गति बहूतै भव लिया ॥४३७९॥

सोरठा

पूरव भव का नेह, तातै मोह किया घणा ॥
 रूपवत बल बेह, फेर राज मथुरा वष्या ॥४३८०॥

इति श्री पद्यपुराणे सत्रुघन पूर्व भव विधानकं

८४ वां विधानक

चौपड़

मथुरा में सात मुनियों का आगमन

मथुरा आए मुनिवर सात । चारण मुनि ग्यानी विख्यात ॥
सुरमन श्रीमन श्रीनव जाणि । सर्व सुंदर जोवानव छाणि ॥४३८१॥

विनयलाल अवर जयमित्र । अष्ट कर्म जीते उन सत्रु ॥
श्रीनदा राणी सुंदरी । जाके पुत्र भए सुभ घडी ॥४३८२॥

प्रीत कर मुनि केवलज्ञान । जै जै करै देवता भान ॥
श्रीनदराज घरम कुं मुण्या । पुत्र सहित दिग्म्बर बन्या ॥४३८३॥

रथ देह पुत्र बालक मास एक । थापे राज काज की टेक ॥
श्री नदमुनि केवली भया । घरम प्रकास मुकति कौ गया ॥४३८४॥

धैसा तु तप करैइ बहुत । सदै परिस्था बहु रुत ॥
इनको उपजी चारण रिध । पौदनापुर गये वै सातुं सिध ४३८५॥

ह्वा ते आये अजोघ्या देस । अरहदत्त देखे मुनि भेस ॥
देखै सेठ मन करै विचार । रति चउमासै किया बिहार ॥४३८६॥

ए काहे का है ए मुनी । चउमासा मांडे उलै दुनी ॥
वे मुनिसोत्रत जिन भौन । दरसन हेत किये थें मोन ॥४३८७॥

पडित नई देखै चारण जती । आदर भाव किये बहु मती ॥
अष्टांग मना सेठ अरहदत्त । सु पो मुंतीसर थकत ॥४३८८॥

अंसे साथ आए मो गेह । मैं उनसों कीया न सनेह ॥
अपणी निंदा बहुतै करी । मेरे मनकूँ आई बुरी ॥४३८९॥

कठिन पाप आपकी किया । गदगद बोलै उमडै हिया ॥
वे मुनिवर थ चारण जती । हिंसा कर्म न लागै रती ॥४३९०॥

घरती तैं अधर रहै चरण । दरसन कीया ह्वै दुख हरण ॥
मैं माघा की निंदा करी । मोहि कुछ न भई सुष तिह घडी ॥४३९१॥

पर निंदा है पाप का मूल । उपजी कुमति गई सुष मूल ॥
अण जाण्या नर करै जे पाप । मनकूँ समझि करै पश्चाताप ॥४३९२॥

पाप छोड़ करै उपवास । तुटै पाप पुन्य की आस ॥
जहा साथ सोइ उत्तम ठाम । उनकूँ देख बरै मन भाम ॥४३९३॥

मेरे घर तईं मुनिवर फिरै । आदर भाव सबी बीसरीं ॥
दानांतराय भई कुबुधि । तत्त्व रूप की करी न सुष ॥४३६४॥

बूहा

कोटि मिथ्याती दान दे, एक संजमी न समान ॥
अणुव्रती ताई बडा, महावरती परमान ॥४३६५॥
तीर्थकर सम को नही, जा घर लेई आहार ॥
धन्य भाग उस जीव का. सब ही करै मनुहार ॥४३६६॥

चौपई

इस बिध च्यार मास पिछताई । करै पाप लयक समझाई ॥
दान देण की इच्छा नित्त । धरमध्यान सो एकै चित्त ॥४३६७॥
कातिग सुदि सातै सुभवार । मुनिवर आये वनह मभार ॥
छह रति के फल फूले घणै । भरे सरोवर निर्मल भरे ॥४३६८॥
अरहदत्त सुणि आया जिहा । बहुत लोग सग पहुँचे तिहा ॥
अस्वगयद का नाही बोर । करै महोछव जँ जँ सोर ॥४३६९॥
रामचन्द्र लक्षमण सत्रुघन । भये आनंद सबन कै मन ॥
दरसन कू आए तिए बार । नमस्कार करै बार बार ॥४४००॥
स्वामी हम परि क्रीपा करो । भोजन लेह पु न्य विस्तरो ॥

आहार बिधि

मुनिवर बोले सुनो नरेस । जती न कहै भोजन उपदेस ॥४४०१॥
जे मुनि अपनी भोजन कहै । पाप खोट अपने सिर गहै ॥
मुनिवर उठै आहार निमित्त । फामु भोजन लेय तुरत ॥४४०२॥
छह रस का समझै नही स्वाद । ऊच नीच देखै रह प्रसाद ॥
कर पात्र करि भोजन लेह । फिरि जोग बन ही मै धरेह ॥४४०३॥
घरि घरि लोग नित करै रसोद । द्वारापेयण ढाढा होइ ॥
सत्रुघन पूछै जोडे हाथ । कहो धर्म भोसुं मुनिनाथ ॥४४०४॥
धरम जिनेस्वर कब लौ चलै । प्रागम कहौ सुणौ हम भले ॥

पचम काल का प्रभाव

कहै मुणीस्वर सुणौ नरीद । पचम काल उपजै न जिगुंद ॥४४०५॥

प्रतिपक्ष की हीवैगी हांण । वेब सहाइ होसी नही प्रांण ॥
 उत्तम जन सेवई मिथ्यान । कुगुरु कुदेव की मानै जात ॥४४०६॥
 उत्तम कुल न करंगा राज । नीच लोग भुगतैंगे राज ॥
 जैन धर्म की होवैगी हांण । मन वच काय सुनै न बख्शाण ॥४४०७॥
 माया घारी हूँगा जती । ते पावैगा छोटी मती ॥
 श्रावक होइये निदक धर्म । देव सास्त्र गुह लहे न मर्म ॥४४०८॥
 छोटा मत पोखैये घरणे । मिथ्यावेद निसचै सौं सुणै ॥
 पुत्र पिता मे होइ विरोध । भाई भाई करि करैंगे क्रोध ॥४४०९॥
 एक भूखा एक भुगतै सुख । कोई न पूछै दुखिया दुख ॥
 जई भाई कू देइ उधार । दुरजन होइ लहे तिन बार ॥४४१०॥
 क्रोध कषायी होइ है मुनी । श्रावक सेवा न करि हैं धनी ॥
 जैन धर्म की हीवै विछत्त । मिथ्यादृष्टी श्रावक चित्त ॥४४११॥
 कुगुरु कुदेव की महिमा होइ । छोटा वेद सुणै सब काइ ॥
 बहोत लोग होइंगा दुखी । को को होइ है सुखी ॥४४१२॥
 सत्रुघन बोलै सुणो मुनीन्द्र । तुम ऋषा तैं होई आनन्द ॥
 तुम से साधक आवै मो गेह । करघा क्रितारथ मिटै सदेह ॥४४१३॥

आर्षोर्वाद

सप्त मुनिस्वर बीलै वैन । मधुरा राज करौ मुख चैन ॥
 घर घर पूजो प्रतिमा भगवंत । जैतवालय कीज्यो बहुमन ॥४४१४॥
 पूजा अरिचा सूं मन ल्याइ । दुख सताप सब जाइ बिलाय ॥
 मुनिवर गए अउर ही थान । नरपति आए अपणौ जान ॥४४१५॥
 रामचन्द्र की आगन्या पाइ । मधुरा चले सत्रुघन राइ ॥
 मुनि धानक बदे मुनिराइ । रामचन्द्र कै पहुंचे आन ॥४४१६॥
 द्वारा पेशण कीए नरेस । चरखोदक लाए सुभ पेय ॥
 विनयवत होइ दीए दान । उत्तम भोजन करि सनमान ॥४४१७॥
 अक्षय दान मुनि बोले बोल । धरि धरि चरखे रतन प्रमोल ॥
 सत्रुघन मधुरा पहुंच्या बली । सकल प्रजा अति मानी रली ॥४४१८॥
 जिनवर भुवन किया उज्ज्वल । पंडित सेव करै बहुमंत ॥
 वेद सास्त्र होवै दिन राति । सुणै लोग सुख मानै गात ॥४४१९॥

घरि घरि पूजै प्रतिमा सोय । रोग कष्ट भागियो बियोग ॥
 सप्त रिष प्रतिमा चिह्न बोर । काहू कौं नही लायै सोडि ॥४४२०॥
 नव जोजन मधुरा लबाइ । जोजन तीन बसै चौडाइ ॥
 सर्व सुखि कोई नही हीण । पंडित सुषड बसै परबीण ॥४४२१॥
 स्वर्गपुरी तैं मधुरा भली । महा सुगंध विराजै गली ॥
 राजा राज बिचारै नीत । सर्व सु राखै उत्तम प्रीत ॥४४२२॥
 इन्द्र समान सन्नुषन राइ । बहुले भुपति सेवै पाइ ॥
 जिसका है रबि जेम प्रताप । भाजि गए सब दुख सताप ॥४४२३॥

बोहा

मधुरा नगर सुहावना, देवलोक समवास ॥
 सर्व सुखी निवसै तिहा, मानै भोग बिलास ॥४४२४॥

इति श्री वधपुराणे मधुरा उपसर्ग निवारण विधानक

८५ वां विधानक

चौपई

दक्षिण थोड बिजयारथ मेर । रत्नपुर नगर बसै बहू फेर ॥
 रतन असफदन लेबर भूप । पूरणातन राणी सु सुरूप ॥४४२५॥
 मनोरमा पुत्री ता गेह । रूपवत कचन सी बेह ॥
 हरिमन पुत्र भये बलवंत । सेवा करै बहूत सावत ॥४४२६॥
 कन्या जीवनवन्ती भई । नरपति सोच बिचारै मही ॥
 मंत्रीया सेतो बोलै वयन । ठूँढो नरपति देखो नयन ॥४४२७॥
 उत्तम कुल लक्षण संजुक्त । कन्या ते होइ गुण बहूत ॥
 मूरख पंडित देखि बिचार । उत्तम कुल जो होइ कुमार ॥४४२८॥
 प्रति पंडित बैरागी होइ । दिव्या लेई उहैं बेगी सोय ॥
 महामूरख होइ दुःख की खान । कारज करै जाण पिछाण ॥४४२९॥
 देस देस कूँ भेजा दूत । नारिद रिष तिहां धाई पहूत ॥
 सब मिल उठि चर्य कू नए । दरसन कीया कृतारथ अए ॥४४३०॥
 कन्नड नग्र किया था गौन । भाखो बात तजो मुख मौन ॥
 बोलै नारद सुणो नरेस । देखे पुर पट्टण अरु देस ॥४४३१॥

साधा का बरसन निमित्त । दीप अढ़ाई माँहि भ्रमत ॥
 नृप पूछ्य नारद सू बात । तुम देस देखे भली भाति ॥४४३२॥
 राजकुमार कोई देख्यो आप । ताम कन्या देहु मिटै मताप ॥
 नारद रिष बोले तिहु बार । नगर अजोष्या स्वर्ग उनहार ॥४४३३॥
 रामचंद्र का लक्ष्मण बीर । रूप लषण कचन सुसरीर ॥
 बल पौरिष चक्र उन पास । तिहु खड्ग का भोग बिलास ॥४४३४॥
 भू खेचर सहु सेवै ताहि । उन सम बली अवर कोई नाहि ॥
 सगई करो लक्ष्मण सु' राह । उत्तम कुल रघुपति के भाई ॥४४३५॥
 इतनी सुणि कोपिया नरेन्द्र । हमारा मारथा है वन भाई बध ॥
 रावण उन मारथा है ठौर । लकागढ ढाह्या है तोड़ि ॥४४३६॥
 उन कुं मारा तवै हम जाई । अपणा जनम तब जाणा भाई ॥
 बैरी सुं कंसा सनबध । क्रोध चढ़े राजा मनि अंध ॥४४३७॥
 धक्का दे नारद नै दिया काडि । मान भंग रिख चिता बाडि ॥
 लिख्या लेख पट मनोरमा पेखि । दीये हाथ लक्ष्मण कू देखि ॥४४३८॥
 देव रूप नारायण कहै । इहै पट रूप सैदरूप कहाँ है ॥
 कै किनर कै खेचर सुना । देखत उपत्रै कान की लता ॥४४३९॥
 इद्राणी कै पदमावती । भोमि गउचरी नही इस भनी ॥
 बोलै नारिद गिर बंताडि । रत्नपुर नगर सबही तैं बाडि ॥४४४०॥
 रतन असफदन खेचर राय । हरिमन पुत्र क्रोध कै भाय ॥
 मनोरमा पुत्री है गुणवत । वे नरैस चित्त बैर धरन ॥४४४१॥
 लीजे जुध करण का साज । मारी दुर्जन ज्यौ सीभै काज ॥
 विराधित कहे प्रभू तुम सुणौ । सेना जोडि दोऊ को हणौ ॥४४४२॥
 बे विद्याधर हैगे धरौ । उनु सै जुध अकेले न बरौ ॥
 देश देश का तंडो नरैस । राम लछ्मन चले रत्नपुर देस ॥४४४३॥
 धेरथा नग्न मुण्यौ रत्नरथ । हरिमन पुत्र बली समरत्थ ॥
 जिहा ली थे विद्याधर राव । एकठें भए महा क्रोध के भाव ॥४४४४॥
 हम धाया चाहै थे सही । भूमिगोचरी आए आप ही ॥
 अब हम गलै अपनी टेक । करो जुध सेना होइ एक ॥४४४५॥

राखै पति पर्वत की धाज । उन जीतैं लाने कुल लाज ॥
 दोउ थां सेना भई सभार । सर बरसै ज्युं बनहर बार ॥४४४६॥
 गोलो गोला धन हथनाल । सिला पड़े ज्युं परसै काल ॥
 मारि मारि दोउघां होइ । किलर देव देखइ सब कोइ ॥४४४७॥
 हाथी घोडा पैदल लडैं । बहुत लोथ दोउघां भिडैं ॥
 मारै गदा बाज की घात । बरछी लडग प्राण ले जात ॥४४४८॥
 पडी लोथ परवत सी जान । सोनत बहै नदी तिहां असमान ॥
 पडे लोथ गिरध उनीहैं लाइ । ऊपर चली नील मडलाइ ॥४४४९॥

दूहा

भई जीत लक्षमण तणी, हारे विद्याधर भूप ॥
 नारद रहैस्या वा समै, देख जुष का रूप ॥४४५०॥

चौपई

विद्याधर भागे रण छोडि । बे भाने घे मारै दोडि ॥
 नारद हसि हंसि ताली देहि । सब मिल नीची मूंड करेय ॥४४५१॥
 भागण कू रही नही ठोडि । फेर संभाल करै बे भोडि ॥
 ज्यों केहरि तैं सारग डरै । इम लक्षमण तै डर करि मरै ॥४४५२॥
 मनोरमा तिहा जुष को देख । मनमे धारधो ग्यान विलेप ॥
 मेरे कारण इतने मुए । पसचात्ताप मन माही किये ॥४४५३॥
 बैठि विमरण लक्षमण दिग धाय । फूलमाल घाली गल जाइ ॥
 लक्षमण कूं हुआ सतोष । मिटधा जूध भया मन पोष ॥४४५४॥
 दंपति आई बनकी ठोर । सुणियो राय सुता का सोर ॥
 मनोरमा लक्षमण सुं मिली । सब मिल कहि यह हूइ भली ॥४४५५॥
 हम ढडोला बहुला देस । लक्षमण महाबली मुबनेस ॥
 मन की इच्छा पूरण भई । सबही की चिता बुझ गई ॥४४५६॥
 रत्नरथ नृप सहो परिवार । लक्षमण पास आए तिहु बार ॥
 सबही मिले भया सनबंघ । तूटा असुभ करम का घष ॥४४५७॥
 रत्नरथ सेती नारद कहैं । तो मैं गुण पराकम ना रहे ॥
 तूं कहै था वचन असार । अब काहे तैं मानी हार ॥४४५८॥

रत्न असफद न बडले राई । तुम तो कोप्या रिष खाई ॥
 मान मंग साध का किया । तो इह दुःख हमें पाइया ॥४४५६॥
 तुम कल्पै हम भया दुख । अब तुम कीया दोउ बला सुख ॥
 करै महोछव पुर मे गए । मनोरमा बीबाही सुख भग ॥४४६०॥
 भोग मगन मे करै उछाह । मनोरमा लछमन सा नाह ॥
 पुंय प्रसाद नै जीडी भई । ते सुख सोभा जाई न गिरा ॥४४६१॥
 बहो एकवान भोजन करे । कचन धाल भरि अग्ने घरे ॥
 घटरस अजिन कीए घरों । सब भूपति मिलि जीमे भरो ॥४४६२॥
 बीडा दिया हाथ ही हाथ । जितने लोग राम के साथ ॥
 रहेसे सकल किया आनद । बाजंतर बाजे सुख कंद ॥४४६३॥

अडिल्ल

पुण्य तराँ परसाद जीत सब ठां हई ॥
 साध्या सगला देस सबद जै जै हई ॥
 मानै भूपति आनि सुजस प्रगटघा घण्यां ॥
 रामचद्र गुण अगम अपार जाइ किस पै गणा ॥४४६४॥

इति श्री पद्मपुराणे मनोरमा विवाह साध विधानकं

८६ वां विधानक

चौपई

रतनपुर सुख भुगत्या सब साथ । बहुत देस जीत्या रघुनाथ ॥
 रवि नभ बीच सोभित पुरी । मेघ स्वाम सिब मध नगरी ॥४४६५॥
 गंधर्ववति अमरपुर देस । लिषमीधर तसु नगर नरेस ॥
 किनर गीत अमरपुर देस । लक्षमीधर तसु नगर नरेस ॥४४६६॥
 श्रीगहभा सकत अरंजय जोतपुर । अवरधणां तिहा साध्या नगर ॥
 ससिधा गंधारमल बैस । धनसिध सुधान मनोभद्र नरेस ॥४४६७॥
 श्री विजैकांतिपुर तिलक सधान । बहुत भूप साथे बलवान ॥
 विजयार्ध साथ मनाई आण । राम लक्षमण अनि राजान ॥४४६८॥
 इहा श्रेणिक पूछै परसन्न । लबनाकुस की कहो उत्पन्न ॥
 राम लक्षमण कै केती असतरी । केता पुत्र कुल वृद्धत करी ॥४४६९॥

राम लक्ष्मण का परिवार

जिनबांणी सुं सयय जाय । कहै भेद गोतम मुनि राइ ॥
 सत्र सहैष लक्ष्मण कै नारि । रूपवत ससि की उणिहार ॥४४७०॥
 तामें घाट पाठ की बणी । गुण लष्यण अति सोभा बणी ॥
 विसल्या मेघद्रवण की सुता । प्रबम पटराणी सुख की लता ॥४४७१॥
 रूपवत अवर बनमाल । कल्याण माला अनै रतनमाल ॥
 जितपदमा मुखश्री मनोरमा । गुणलष्यण सब ही सो अमा ॥४४७२॥
 अष्ट सहस्र राम के भोम । सोमै च्यारि पट्ट की घाम ॥
 प्रथम सीता अनै पदमावती । रतिप्रभा श्रीदामा सोभावती ॥४४७३॥
 लक्ष्मण कै पुत्र दोह सै पचास । सात रत्न की पुंगी आस ॥
 चक्र सुदर्शन छत्र अनै गदा । अनुष खड्ग अत्र बरछीक धुजा ॥४४७४॥
 श्रीधर विसन्या कै गर्भ लह्या । प्रथवी तिलक रूपवन जनमिया ॥
 मंगल कल्याण माना का पूत । बिमलप्रभू पदमावती सयुक्त ॥४४७५॥
 बनमाला का अरजन वृष्य । जयवती कै सुत कीर्त'रष्य ॥
 मनोरमा सपूरण कीर्त । रतिमाला कै श्रीकेस उनपति ॥४४७६॥
 अन्य कुमार कहा लागि बिणो । नामावली कहा लौ भणौ ॥
 द्योढ काडि उत्तम कुमार । च्यार बीर का वध्या परिवार ॥४४७७॥
 पुन्य उदै ते बाधे वृष्य । करै राज निकटक रिष्य ॥
 मान दिवस सुख मे विहाइ । भोग भुगति मानै तिहा राइ ॥४४७८॥

सोरठा

उदय अण जब पु न्य, सुख सपति बाधी बनी ॥
 अधिक प्रतापी अरुन, जीत्या सब दुरजन अनी ॥४४७९॥

इति श्री वधपुराणे राम लक्ष्मण विभव विधानक

८७ वां विधानक

श्रीपई

राजमहल

अति ऊंचे मंदिर रमणीक । कंचन रतन सहित रमणीक ॥
 भले भले समराये बित्त । सीज्या तिण ठां बणी पवित्र ॥४४८०॥

सीता द्वारा स्वप्न दर्शन

कचन पलंग पाट सुं वण्णा । रतन जोति सूं सोमं वणां ॥
 पुहुप बिछाया पटवर तलं । केसर भरषा गीदवा भलं ॥४४८१॥
 स्वेत विसन तिस परं बिछाइ । महा सुगंध भ्रमर लोभाइ ॥
 छिडके कुंभकुम मा समारी ठोर । चंदन किवाड लग्या ता पोल ॥४४८२॥
 तणे चंद्रवा मोती भालरी । अनेक प्रकार तिहा सोमं खरी ॥
 तिए वस्त्रां की जीति अपार । सीता करे सोलह सिंगार ४४८३॥
 आभरण चीर मोती का हार । सग सहेली रण भरणकार ।
 पान फूल का डबा भरि भरै । सीता सुपनां देखै खरे ॥४४८४॥
 रात पाछली घटिका प्यार । सुपिना निष पाई तिह बार ॥
 दोई केहरि गजंत देखे । सामर निर्मल प्रेवे ॥४४८५॥
 देव बिमारा आवता जाणि । जाणु सुख मैं वसै आण ॥
 भए प्रात जागरण की बेर । गावै गुणीजन मधुरी टेर ॥४४८६॥
 पच सबद बाजै तिह थडी । सीता जागी करे मनरली ॥
 करि सनान सुमिरे जिननाथ । बहुत मखी उन सीनी साथ ॥४४८७॥
 पति सौ जाइ वीनती करी । सुपनां फल भाखो मन भरी ॥
 सुणि रघुपति समभावं बात । पुत्र दोइ होसी ससिक्रांत ॥४४८८॥
 देव दोई तेरे गर्भ जए । निसचै समझि आपणै हिये ॥
 सीता कै मन भए आनंद । पंचनाम सुमरषा जिएद ॥४४८९॥
 रित बसंत दपति सो प्रीत । घर घर गुणीयण गावै गीत ॥
 मजरि अब सकल वनराइ । कोकिल वचन अति चित्त सुहाइ ॥४४९०॥
 पछी सबद सुहावन बोमै । कामी तिहां अति करै किलोल ॥
 दिन दिन बाधैं वरम पुनीत । उत्तम वसन परि डालै चित्त ॥४४९१॥
 पुंन्य पाप का इनं विचार । पापी बलिद्वी का इह विकार ॥
 गर्भ विषै लप्यण को चिह्न । जाणौं ते पंडित परवीन ॥४४९२॥
 पापी जीव गर्भ मे पडै । क्रोध प्रमाद बेह दुख भरै ॥
 खावै ठीकरी माटी मांस । पुण्य हीण का इह प्रकास ॥४४९३॥

सीता का होहिला

पुन्यवंत के लप्यण जाण । उत्तम वस्त खावै नित पाण ॥
 सब सो राखै अधिक सनेह । दिन दिन जोति दिपै अति देह ॥४४९४॥

धरमध्यान सु' सुणी पुराण । नित उठि देई सुपात्रां दान ॥
 सीता दुर्बल देखी राम । पूछी कहो बित्त का नाम ॥४४६५॥
 सीता कहै मेरे मन इही । पूजा रचना करइ सब मही ॥
 जिहा लग तीर्थ भने केबली । जिन मंदिर पूजा बिष भली ॥४४६६॥
 रामचन्द्र हम लखमण सुणी । देस देस कूँ बिठी बली ।
 जिहा लौं जियधानक किवलास । संजैद सिखर भ'पापुर वास ॥४४६७॥
 कपिला भवर बाणारसी नगर । जिनमंदिर समराजं सगर ॥
 महेन्द्र बन नवन बन साब । मुनिसुवत मंदिर जिन नाब ॥४४६८॥
 सहस्रकूट चैत्यालय तिहां । फेर संवारषा कंचन सो जिहां ॥
 एक एक सहस्र सभ चिहु फेर । वेदी माफ बणी बहु बेर ॥४४६९॥
 राम लखमण कुटुंब समेत । गए महेन्द्रपुर पूजा हेत ॥
 तिहा सरोबर निरमल नीर । छाया सीतल विहगम तीर ॥४५००॥
 हंस चकोर सारस बहु जीव । सबद पपीहा बोले पीव ॥
 बमनर उतारि करई सनान । अष्ट दरब सु पूज्या भगवान ॥४५०१॥
 दूध दही रस घृत की बार । श्री जिन के गल घाले हार ॥
 करी भारती हवण कराइ । बाजा बाजे गुणि गए गाइ ॥४५०२॥

ब्रूहा

पूजा करि भगवंत की, देय सुपात्रां दान ॥
 निसचै पावै परमपद, पहुचै मोक्ष सुधान ॥४५०३॥

इति श्री पद्यपुराणे सीता बोहिता विधानकं

८८ वां विधानक

चौपई

पूजा करि फिर आये गेह । बहुत दान सनमान्या देह ॥
 सुख में बीत गये दिन बरों । ईह आयगा कारख इक बने ॥४५०४॥

सीता का नेत्र फटकना

दण्ड्यण आशि फटके सिया । पश्चात्ताप मनमें करै सिवा ॥
 करम उई बन बेहड़ फिरी । बन माहें ते रावण अपहरी ॥४५०५॥
 सोण मुसुह मे तब बहु पडी । बरस बरस सम बीती पडी ॥
 वे दुल मुगत अब गया था चीन । क्यों फरकै अब दण्ड्यन नैन ॥४५०६॥

धनमन देखी कहै बीचार । असुम करम को सकै न टार ॥
 सुभ असुभ संगि लागा कर्म । भादि भनादि जीव कै भर्म ॥४५०७॥
 जइसै ससी का बघै प्रताप । पूनम ताईं पूरण आप ॥
 अइसै करमन का उहै हुबै । जैसें ग्रहनें ग्रहै कुबै ॥४५०८॥
 पडिवा सेती कला हुबै हीण । असुम कर्म करै भाषीन ॥
 दुख सुख लग्या जीव कै सग । तुम भति करो अपना मन भंग ॥४५०९॥
 गुणमाला बोली गुणबंत । वेद पुराण सुणो मन भंत ॥
 सीता मन बिता मा करो । एता सोच कहा बित घरो ॥४५१०॥
 तुम सबतै पटराणी बडी । राम तुमनें छाडि नही घडी ॥
 रामचन्द्र जीवो चिरकाल । तुमको भय है किसका हाल ॥४५११॥
 करो पूजा पुनि सातिक । पाप करम की भेटो लीक ॥
 पुनि दान तप काटै व्याघ । बैयावृत्त कीजिये माघ ॥४५१२॥
 दुख कलेस सब जाड बिलाड । डील न कीजे देहु मगाड ॥
 भद्रकलम मीता प्रधान । सब बिध जागै पूजा दान ॥४५१३॥
 तहि बुलाद आजा इह दई । उत्तम वमत मगाओ पई ॥
 जो मन दन्त्रै ताकूँ देड । पूजा प्रतिष्ठा बहत करेड ॥४५१४॥
 रोग कल्पना हो गई दूर । बढै पु नि रिष भरि पूर ॥
 सुणी दान मन हुवा हुलास । भानि सोज राखी उन पाम ॥४५१५॥
 जैसा कोई चाहै त्याग । तइसा दे जइसा को मांग ॥
 सातिक प्रतिष्ठा होइ दिन रयण । पडित पढै सुहावने बैन ॥४५१६॥
 वेद पुराण सब ही ठा होड । बहोत पु नि खाटै सब कोड ॥
 राम लक्ष्मण बैठा पट भाइ । बहोन लोग मिले तहु ठाड ॥४५१७॥
 सोलह सहस्र मुकट बंध राड । नमस्कार करि लाग्या पाड ॥
 पौण छत्तीस ठाडी भई । ते सब नृप द्वार अग्रै षडी ॥४५१८॥
 रघुपति चितवै प्रजा दसी । नीच लोग मिल मिल करि हसी ॥
 रामचन्द्र ने लिया बुलाड । अपने अपने दुख कहो समझाड ॥४५१९॥
 विजय सूरज मध्य परवीन । बसकासव पीगल तीन ॥
 राज सभा मे ठाढे भाइ । करि डंडोत नवण करि भाइ ॥४५२०॥

राम द्वारा प्रश्न पूछना

पूछै राम कहो तुम सांच । किह कारण आये सब पंच ॥
 सब मिल धकित रहे तिहां लोग । जिन पाषाण ध्यान धरि जोग ॥४५२१॥

निष्ट बबल कैसे करि कहैं । भय चित चला मूक होय रहै ॥
राम कहैं चिता मति करौ । कहो निसंक सब बध परिहरो ॥४५२१॥

प्रतिनिधियों का उत्तर

विषय सूरज बोलै कर जोडि । प्रभा भणी लागी इह खोडि ॥
रूपवत जोवन भरी नारि । निकसै भ्राय्या बिन भरतारि ॥४५२३॥
जिहा मन होवै तिहा बह जाइ । वे कछु कत कहैं तो रिसाइ ॥
तब उत्तर बोलै असतरी । सीता रावण कां हरी ॥४५२४॥
ते सीता रामचंद्र नै भ्राणि । ता का सब बिष राखै मान ॥
झैसे हैं वे त्रिमुवन पती । तिणी मन मे न भ्रांणी रती ॥४५२५॥
सीता को वे बोडा कहै । जे मुख निकसै सो ही कहै ॥
सीता सनी पतिव्रता असतरी । सील सयम सो सब बिष खरी ॥४५२६॥
रावण सीलव्रत लीया । उनका सन सब बिष राखीया ॥
सत्त सील इह बिष रह्या सबै । उनकी रीत करै ए सबै ॥४५२७॥
झंसा हमे बतावो ग्यान । तासो रहै सवां की बान ॥
देस देस मे हूवा इह सूल । परजा बई सब सुख झूल ॥४५२८॥
जिह बिष बसै होइ मुख चैन । तैमे समझावो प्रभु बैन ॥
रामचन्द्र मोचै मन माहि । मेरे साथि देखै दुख याहि ॥४५२९॥

राम की व्याधा

रावण दडक वन मे आइ । सीता कु ले गया चुराइ ॥
बानर बंसी भए सहाइ । उनकी संगति पटूषे तिन ठांड ॥४५३०॥
मारपा रावण सेना घणी । सीता ले भाए आपरणी ॥
प्रब तो भई सुख की बार । कैसे घरि नैं देहुं निकार ॥४५३१॥
तजूं राज वन मे करू बास । तो भी होइ महा उपहास ॥
उत्तम कुल को बढै कलक । किस बिष तजैं मन की संक ॥४५३२॥
पराया मन की जाएँ कौन । बुरा कहै छत्तीसो पीण ॥
नारी महा दुःख की खानि । अपकीरत हो इनकै जान ॥४५३३॥
प्रतक्ष जानौं कुगति कामनी । झंसे चित बिचारो घनी ॥
मोही चित चुरा ले जाहि । लख बौरासी जीनि भरमाइ ॥४५३४॥

सर पडस्या मरं एक बार । नारी बिस मरं बारबार ॥
 जै ले नीकलिया त्रिय संग । तो अब भया मान का भग ॥४५३५॥
 बिभचारिणी करं कुकर्म । कुल की लाजइए कुंए धर्म ॥
 सीता कूँ ले आया ग्रहै । निर्मे वा कीना सु कहै ॥४५३६॥
 किस किस के मै मूँह मुख । मोकूँ आइ बध्या है दुख ॥
 मेरे राज प्रजा सुख भरो । सीता राख्या अपजस धरो ॥४५३७॥
 मै जाणू हूँ सीता सती । इसकूँ दोष न लागै रती ॥
 राख्या चाहै लोकाचार । दोई विध है निश्चै व्योहार ॥४५३८॥
 राजा छोडै धरम की रीत । घटै मरजाद वधे बिपरीत ॥
 राजा मुँह देखी प्रजा करं । सब का पाप अपने सिर धरं ॥४५३९॥
 धरम बिचार कोजिये न्याय । अपणा पराया जाणै समभाव ॥
 बहु बिध सोच करं रामचंद्र । कहा बिचार कीजिये दुद ॥४५४०॥

ब्रह्म

राजनीति रघुपति करी, कछुयन भाष्या मोह ॥
 प्रजाने उन कारणई, त्रियास्यु किया बिछोह ॥४५४१॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र प्रजारिष्या बिधानक

८६ वां बिधानक

चौपई

राम का कनध

रामचन्द्र बँठा पट आइ । निसकत सो कहा बुलाइ ॥
 बेग जाइ लखमण कु लाव । गया दूत नारायण ठाव ॥४५४२॥
 ममस्कार करि ठाढा भया । राम वचन हरि सों भाषिया ॥
 लखमण उठि आया तिण साथ । बँठा निकट तिहा रघुनाथ ॥४५४३॥
 रामचन्द्र भाष्या विरतात । प्रजाने सकल भाष्यो विरतात ॥
 धरि धरि नारि कुमारग गह्या । मनमे कुछ सका नबि रह्या ॥४५४४॥
 सासु सुसरा कत की जाण । कबहू न मानें उनूँ की आण ॥
 बे पोछा सीता का लेह । बिन सवारथ कलक मे देह ॥४५४५॥
 जिसमे कुल को लागै लाज । तिसकुँ राख्या बली न काज ॥
 अब लौ कुल को लग्या न दोष । पुरुवारथ करि पहुँचे मोष्य ॥४५४६॥

कोई न हमारै पापी दुष्टा । ए दूषण अब लाग्यो नवा ॥
 जे राबण ने सीता कृ हरी । तो इह बिपत्ति हमको पडी ॥४५४७॥
 सीता सत राख्यो आपणा । परजा दोष लगावै धरणा ॥

लक्ष्मण का क्रोध

इतना लक्ष्मण सुणिया बैन । बढ्या क्रोध गते करि नयन ॥४५४८॥
 कैसी परजा कहा बराक । वे तुमसे जोनै इह वाक ॥
 सब कुं मारि मै परलय करूं । जीभ काडि खाल भुस भरूं ॥४५४९॥
 सीता सती कृ इम विष कहैं । उनके मन मंका नहीं रहै ॥
 नृप की चरचा परजा करै । ताकूं हाथ लगावै खरै ॥४५५०॥
 अपना बित्त समझे नहीं आप । राज कथा को बोलैं पाप ॥
 सबकुं बेरि निकट दहै । फेर न भैसी मुख तैं कहै ॥४५५१॥
 रामचन्द्र तब कहै समझाइ । परजा सुख चाहिण राइ ॥
 परजा तो राजा सोभन । बिण परजा कुण राय कहत ॥४५५२॥
 जिह विष दुख परजा का जाय । तैंसा करिए भरत उपाइ ॥
 बोले लक्ष्मण सुंण हो भान । महासती है सीता मात ॥४५५३॥
 वे है दुःख देण्या हम सग । मुख की बेर करो ग्रह भग ॥
 परिजा है कूरडो समान । हस्ती नै जू भोंकैं स्वान ॥४५५४॥
 हस्ती मन न धाएँ ताहि । उनका कहाँ भैंसा नर नाह ॥
 जे कोइ शशि पर नालै घूल । वाही के सिर पडै भ्रमूल ॥४५५५॥
 भ्रम्यानी बोलै भ्रम्यांन । उनका वचन कहा परमान ॥
 सीता दयावंत बहूत । कोमल देह रूप सजुत ॥४५५६॥
 गर्भवती किम दीजे काडि । दोई जीब सौं पावै दुख बाडि ॥
 रामचन्द्र बोलै जगदीस । या कौं ले गया था दस सीस ॥४५५७॥

राम का निर्णय

ता कारन भैसी कहै न लोग । धिर नहीं इह संसारी भोग ॥
 अपणी कीर्त को इह समार । जे अपकीर्ति हुवै अपार ॥४५५८॥
 हम तुम सा अपकीरत करै । प्रध्वी पर जस को फिर धरै ॥
 जैसी परजा तैंसा राजा जिसी । जुग जुग चलैं हमारी हसी ॥४५५९॥
 धरमनीत करूं हू सही । मेरै बात मुह देखी नहीं ॥
 कृतातवक तब लिये हुंकार । रथि परि चडि दौडे असवार ॥४५६०॥

सेना घणी तास के साथ । देखै लोग धुणै सब भाय ॥
 किस पर कोप्या रघुपति आज । कृतातवक आया दल साज ॥४५६१॥
 नमस्कार करि ठाढ़ा भया । रघुपति वचन मानि कर लिया ॥
 मिथनाद बन भयानक घणा । तिहाँ मानुष्य न कोई जणा ॥४५६२॥
 सीता को करि जात्रा भाव । तिहा छोड़ि फिर ल्यावो मति ना ॥
 कृतातवक तब गया सीता द्वार । माता तीर्थ चलो मोहि बार ॥४५६३॥

सीता को यात्रा के बहाने से ले जाना

समेदशिखर तीरथ निर्बाण । पूजा करो जिनेस्वर भान ॥
 जैसा कर्म उदै होवै आय । तैसी तैसी देखै ठाढ़ ॥४५६४॥
 रहस रली सू सीता चली । सब कुटब सू तब ही मिली ॥
 रथ पर चढ़ि चली समेद । देखै सकुन विचारै भेद ॥४५६५॥
 सूबः वृक्ष पर बैठै काग । चुंच मूडपरि पटकण लाग ॥
 देखै बुढ़िया मारग माहि । बाल खसोटै बैसे छाह ॥४५६६॥
 सकुन विचारई सीता तलै । हम तीरथ कारण कौ चलै ॥
 कहा सकुन करैगा मोहि । कछुवन मन धरघा न रंच ॥४५६७॥
 अग्रे देखै पर्वत भरई । मानूँ खदन सब कोइ करई ॥
 कहि खलखलाट जल बहै । देखि रूख तिहा आश्रम गहै ॥४५६८॥
 महा गग तिहा अगम अयाह । जलचर जीव सुखी बन माहि ॥
 तटपरि ऊंचे सोमै रूख । सीतल पवन तँ भाजै दुःख ॥४५६९॥
 वनफल उत्तम लागै घणै । निरमल नीर सोभा अति वणै ॥
 गडगडाट मूँ उछलै नीर । देखत ताहि रहै नही धीर ॥४५७०॥
 स्पध नाद गंगा पार अणै । तिहा नाहि काहु की सणै ॥
 एक नाम भगवंत सहाइ । धीर न कोई है इस ठाढ़ ॥४५७१॥
 कृतातवक तिहा रोवै भान । हाथ मुड धरि सोचै ग्यान ॥
 सीता माता अति धर्मैष्ट । इनकों फिरै उदै हुवा कष्ट ॥४५७२॥
 अंसी महा भयानक ठौर । वन का जीव करै तिहा सौर ॥
 मैने आग्या प्रभुजी की पाड । सीता कूँ ल्याया इस ठाढ़ ॥४५७३॥
 कृतातवक सौ सीता कहै । सूर बीर धीरज कौं धरै ॥
 जई तुं बाढस डारै तोड़ि । तो हम मन दिढता रहै छोड़ि ॥४५७४॥

कृतांतवक्र का रहस्य खोजना

कृतांतवक्र तब विनती करे । सत्य वचन मुख तैं उच्चरे ॥
 प्रजा पुकारी रघुपति पास । हमारा नहीं नगर मे बास ॥४५७५॥
 धरि धरि नारि करै विभचार । छोड़्या सब लज्जा का भार ॥
 जब बल्लै घर का भरतार । उत्तर देह सकल बे नार ॥४५७६॥
 सीता रावण कैं घर रही । रामचन्द्र कुछ बात न कही ॥
 फेरि आशि पटरीणी करी । तुम काय हमने भाखी बुरी ॥४५७७॥
 ऐसे पुरुष जे धर्मीकर्त्त । तुम तो दू डो हमारा चरित्र ॥
 रामचन्द्र सुंणि प्रजा बईन । मन मे सोच भया कुचईन ॥४५७८॥
 लखमण रक्षा बहुत समझाय । उसका कक्षा न मान्या राइ ॥
 मोहि बुलाइ आग्या इह दई । तब भोकू चिता इह भई ॥४५७९॥
 कंस छोडू बन मे मिया । कहैत सुगता फाटै हिया ॥
 उनसूँ उत्तर कक्षा न जाइ । तातै तुमनें आणी इस ठाड ॥४५८०॥

सीता का सन्देश

बोलै सीता गदगद बोल । प्रजा रघुपति करो किलोल ॥
 हमा बंनू की इहां लागि प्रीति । धन्य जीव जे होइ अनौत ॥४५८१॥
 बहु सुख भुगते राज प्रसाद । यूही जनम गमायो सब बाद ॥
 धरम न चेत्या मुख की बेर । मानुष जनम कहा लहीए फेर ॥४५८२॥
 जैसे कोई रतन को पाइ । फेरि समुद्र मे दिया बुहाइ ॥
 बेर बेर कहा पावै रतन । जे कोई करै कोटि जनन ॥४५८३॥
 भ्रंसा रतन मानुष्य अवतार । तामे भले भू ड गमार ॥
 करो धरम भवसागह तिरौ । बहुरि न मोह फद मे पडौ ॥४५८४॥
 आई मूर्छा खाई पछाड । बडी बार मे भई सभार ॥
 फिर बोली सीता महासती । रामचन्द्र सू कह्यो वीनती ॥४५८५॥
 परिजा नैं बे दुखि मत करौ । दया समकित चित्त मे धरो ॥
 पूजा दान करी दिन रात । तुमारे समरण में इह भाति ॥४५८६॥
 कृतांतवक्र तब रोवै पुकार । अपने सिर लिया मैं भार ॥
 सेवक का है जनम अकथ्य । अपने बल होवै समरथ ॥४५८७॥
 तो अपणें मन मानी करै । पाप अपने पुंनि समकित चित्त धरै ॥
 पराधीन कछु बोल न सकैं । जहां भेजैं तिहां पल नहि टिकैं ॥४५८८॥

जैसी आग्या सोई होय । ताको बरज सकं नही कोइ ॥

जे मै पराया भया आचीन । तां भैं करम कमाया आचीन ॥४५८६॥

सीता का बन में अकेलीपना

अपणी निंदा कीनी धरणी । सकल बात सीता नैं सुणी ॥

सीता कहै पुत्र तू जाहि । तेरा दोस इसमे कछु नाहि ॥४५८७॥

रथ तैं पाव सीता तिहा धरधा । कृतात बक्र अयोध्या कु फिरधा ॥

बहुत सोच सीता मन करं । धीरज मनमे कैसे धरं ॥४५८८॥

महा भयानक बन की ठाब । तिहा नही माणस का नाब ॥

सिध गयद तिहा अजगर धरि । पसु पंछी बोलत जब सुणि ॥४५८९॥

पग धरणें कूं नाही ठौर । आखण मूल कटक घोर ॥

वे मंदिर पाटबर सोज । रतनजोति सुख देखे चोज ॥४५९०॥

पान फूल सुगंध फुलेल । चोबा चदन सो करता खेल ॥

प्राठ सहस्र मेरे थी साथ । पटरागी थापी थी रघुनाथ ॥४५९१॥

हमागे आग्या मानैं थी सर्व । नीन खड की लक्ष्मी दर्व ॥

अंसा कर्म उदय हुआ आय । वे सुख खोसि भेजी उस ठाय ॥४५९२॥

कैं मैं बच्छ बिछोही गाय । कैं मैं बाल बिछोही माइ ॥

कैं सरवर नैं बिछोहा हस । कैं पर वो नीका राख्या अस ॥४५९३॥

कैं जिन भक्ति करी न मन ल्याय । कैं जिनबानी चित्त न सुहाइ ॥

मुनीस्वर सेवा कही नह लगी । साधां की निंदा चित्त घरी ॥४५९४॥

अगलाध्या जल पीया जाइ । कंद मूल भये अयाह ॥

ओछा तप कर लिया अवतार । मोहि बिछोह भया भरतार ॥४५९५॥

कुगुरु कुदेव कुसास्त्र पर चित्त । थायै माइ भई इह चित्त ॥

पछी दिया पिजरा माहि । थायै हुवा इह दुख दाहि ॥४५९६॥

हाइ राम लक्ष्मण कहा किया । मोकूं देस निकाला दिया ॥

हाइ जनक भावमंडल वीर । या समैं कोई ना राखै धीर ॥४६००॥

बलजंघ द्वारा सीता का बिलाप सुनना

बलजंघ पु डरीक का धरणी । वाकें संग सेन्या है धरणी ॥

हस्ती कारण बन मे माइ । पकड्या गज बाजत्र बजाइ ॥४६०१॥

सुण्या सबद सीता का रोज । भया अचभैं देखैं खोज ॥

इह बन इसा भयानक रूप । देखैं सबद सुणैं बहु भूप ॥४६०२॥

कं इद्राणी कं पदमावती । कं किनर कं विद्यावती ॥
 सब सेन्या कर भई हथियार । तिहां नाबी चिमकै तरवार ॥४६०३॥
 हय गय रथ किकर ता सग । महाबली राजा बखजंघ ॥
 भ्रंसा बन भयानक भति घोर । मानुष्य नै आई सकै कोई घोर ॥४६०४॥

ब्रूहा

सुभ असुभ दोऊ करम, अपणी चली तिहां बाल ॥
 भूपति नै भिक्षु करै, रंक नै करै निहाल ॥४६०५॥

इति श्री पद्यपुराणे सीता वनवास विलास बखजंघ सनागम विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

सेना शक्ति रही वा ठाव । भागै कोई घरै न पाव ॥
 सूर सुमट अघे होइ चलै । धर्म कर्म समकिसी भलै ॥४६०६॥
 उतरे भूमि सीता कू देख । माता कहो तुम अपना भेष ॥
 तुम हो कबण भ्रंसे वनमोहि । ऐसा दुःख करो तूम कोहि ॥४६०७॥
 सस्त्र देखि सीता भय करै । भीड देखि मन मे भति डरै ॥
 अरे वीर मव देहु डारि । आभूषण एही तू उतारी ॥४६०८॥
 मेरे नाम राम की आस । लेहु सकल छोडो मो पास ॥
 बोलै सुभट तुम मति करी । बखजंघ इहां नरपति खरो ॥४६०९॥
 हाथी पकडन आया भूप । सम्यक्दृष्टी दया स्वरूप ॥
 तीन रतन है वाके चित्त । जती भाव राखै हे नित्त ॥४६१०॥
 यु ही आया बखजंघ भूपती । बहुत लोग राजा के संगती ॥
 सीता नै पूछियो नरेस । माता कहो आपना भेष ॥४६११॥
 महागमा तिहा बहै अपार । ताहि उत्तर कैसे भए पार ॥
 ए वन महा भयानक बुरा । कारज कबण पयाणा करा ॥४६१२॥
 अपणा कहो सकल बिरतात । सांची बात सुखावो मात ॥
 पिछली बात कहो समझाइ । जनक सुता हू मै इस ठाय ॥४६१३॥

सीता द्वारा अपनी परिचय देना

भावर्महल है मेरा भ्रात । विदेहा राणी है मुझ बात ॥
 दसरथ है अजोध्या का राज । अर पुत्र ताके अधिकार ॥४६१४॥
 रामचन्द्र की मैं पटवनी । सुखपाई प्रैसी गति बली ॥
 केडकेड कुंवर दशरथ दिया । राम लखन बासा लिया ॥४६१५॥
 भरथ सत्रुघन पाया राज । बहु बिष प्रजा का खारै काज ॥
 हू भी फिरी राम के साथ । दडक बन मे श्री रघुनाथ ॥४६१६॥
 तिहा मारघा संकुक कुमार । सरदूषण लडिया तिस बार ॥
 रावण नें तिहा मोकू हरी । बाकै सील की थी आखडी ॥४६१७॥
 अनतबीरज पासै लिया सील । गया लक लागी नहीं डील ॥
 बिराधित मुग्रीव हनुमान । बानर बमी अति बलवान ॥४६१८॥
 राम लक्ष्मण है बिमान बैठाइ । लका मे पट्टवे सब जाइ ॥
 रावण मारे लका तोडि । तब मिलीया रघुनाथ बहोडि ॥४६१९॥
 उहां ते आया अयोध्यापुरी । परजा ने चरचा इह करी ॥
 रामचन्द्र ने इह चतुराई करी । फेरपट दिया सीता अमनरी ॥४६२०॥
 सीता कुं रावण ले गया । ईना फेर घर बासा कीया ॥
 उहा प्रैसी चरचा माहि । भरथ बैराग अयो मनमाहि ॥४६२१॥
 दिध्या ले पाया निरबाण । बीते मोह दिन गर्भ का जान ॥
 अए दोहला डछा यही । तीर्थ पंचकल्याणक सही ॥४६२२॥
 कहुं जाना पूजा घरी । सब सामग्री उत्तम बली ॥
 महेन्द्रवन पूज्या भगवत । मुनिमोत्रत स्वामी अरिहन्त ॥४६२३॥
 कैलास जात्रा पूजण जोग । पचमेठ बदना निवोग ॥
 पुहुपक बिमाण कीया संजुत । परजा तिसा वा आय पहुत ॥४६२४॥
 करी पुकार राम पै जाय । नारद विगडै है सब ठाड ॥
 सब प्रताप सीता का कहै । कैसे हम नगरी मे रहैं ॥४६२५॥
 बखजंघ समभाबै ग्यान । तुम समझो हो वेद पुराण ॥
 भारत ध्यान तुम करो दूर । बारह अनुप्रेक्षा समझो मूर ॥४६२६॥
 अ्याहं गति माहि डोल्या हंस । कही नीच कहीं उत्तम बन ॥
 रोग सोग भारत मै राह्या । अमत अमत बिसराम न गह्या ॥४६२७॥

बारों गतियों के दुःख

सुभ नै असुभ कर्म देख साय । सुख दुख देखे नाना भांति ॥
 देव हुआ सुख श्रिपता नहीं । छह महिना आव जब रही ॥४६२८॥
 सब सुख भूल्या चिता बीच । बहुत भ्रम्यां गति उत्तम नीच ॥
 मानुष्य जनम भुगते बहु भोग । तिहां भया कुटब का सोग ॥४६२९॥
 रोगी रहे कहै नहीं सुख । पीडा चिता व्यापै दुःख ।
 पाई गति पसू तिरजंब । ताभे सुख पाया नहीं र'ब ॥४६३०॥
 खूंट बाध्या है संताप । मरै भूष तिस करै सताप ॥
 माछर देस देह कू' लमै । लछा फिरै निस बासर जगै ॥४६३१॥
 नरक गति दुख की तिहा खानि । छेदन भेदन सहै परान ॥
 सहै दुख यह बार'बार । भवसागर तें तिरषा न पार ॥४६३२॥
 जनम जरामृत आसा डोरि । इनसो कदे न भया विछोर ॥

बज्रजंघ का परिचय

इद्रवसी दूरि नवाह नरेस । मुगतै पु'डरीक का बेस ॥४६३३॥
 संबोधमती बाकै पटनारि । तामु गर्भ' लीया अबतार ॥
 बज्रजंघ है मेरा नाब । घरम बहन का राखो भाव ॥४६३४॥
 महा पु नि पूरव भव किये । रामचंद्र से प्रभु तुम दिए ॥
 असुभ कर्म तैं डोले घने । ते सहु बाकि मोनु' सुने ॥४६३५॥
 अब रघुपति आवैगे आप । तुमारा मेटेगा संताप ॥
 तेरा गर्भ मे जीव सुपुनीत । घरम उदै जाणी इह रीत ॥४६३६॥
 तीरथ नाम करि तुम कू' काढि । रामचन्द्र मन चिता बाढि ॥
 तुम कू' हुवा घरम सहाइ । गज निमित्त मैं पहुँच्या आइ ॥४६३७॥
 चलो बहन तुम मेरे ग्रेह । दूरि करो मन का सदेह ॥
 भावमडल सम मोकू' जानि । सीता बैठाइ लई सु विमान ॥४६३८॥

झूठ

बज्रजंघ श्रुपति बल घरया, घरम का बहो भाव ॥
 सीता कु' वन माँह तैं, बहिन कहि ले आव ॥४६३९॥
 इति श्री पद्यपुराणे सीता समाश्वास्त-विधानकं

चीपई

सीता के साथ ब्रह्मजघ का आगमन

रतनजडित सोहे सुखपाल । मणिए माणिक लागे बहू लाल ॥
 पाटवरणे पाटंवर बिछे । छत्री कलस मोती के गुथे ॥४६४०॥
 सोहइ मुखमल तणे गलेस । जणे पंचरग के भेस ॥
 तामे बईठ सो सीता चली । डोला डोला ता सग चिली ॥४६४१॥
 बहुत सखी बा पाछै हुई । ढिग ढिग गाब सब हरियल मही ॥
 देस देस के नृपति आइ । नमस्कार करि ठाढे राइ ॥४६४२॥
 पुंढरीक सुराष्ट देस तिहा । सहू कोई सुखिया जिहा ॥
 धर्मोष्ट सर्व बसै तिहा लोग । पानफूल सौं धाके भोग ॥४६४३॥
 नगर बसै स्वर्ग अनुहार । जिसका बहुत बडा विसतार ॥
 बन उपवन वापिका कूप । सोभा कमलौ तणी अनूप ॥४६४४॥
 हाट बाजार छाए सब ठोर । कचन कलम घरे मिग पोर ॥
 छाटी गलियो नीर सुबास । देखै नागि चढी आवास ॥४६४५॥
 सीता आई नगर भभार । मंदिर मे पट्टची तिस बार ॥
 ब्रह्मजघ की राणी आइ । लागी सहू सीता के पाय ॥४६४६॥
 ब्रह्मजघ बहु स्तुति करै । आजि भाग धनि म्हारा करै ॥
 सीता बहन आई हम द्वारि । सब मिल कगे नणद की सार ॥४६४७॥
 उषी पीहर मे रहै पूतरी । अैसे रहे सीता तिह पुरी ॥
 मुख सौं बीतै बासर रैन । पूजा दान करै मन चैन ॥४६४८॥

कृतांतवक्त्र की व्यथा

कृतांतवक्त्र मारग के माझ । रोवत ताहि पड गई मांझ ॥
 हाइ हाइ करि रोवै रोज । सीता का पाऊ कित खोज ॥४६४९॥
 महा भयानक बन भयभीत । छोडी तिहा महा विपरीत ॥
 किण पसुव सीता कू भल्या । वा बन मे को करि है रिध्या ॥४६५०॥
 आया रामचन्द्र कै पास । नीचो मु डी खडा उदास ॥
 नैना नीर बहै असराल । मानू चुवै मेघ की बार ॥४६५१॥
 कठिन कठिन करि निकसै बात । वन मे छोडी सीता मात ॥
 महासती दई तुम निकारि । राजनीति करी नहीं विचार ॥४६५२॥
 वन है भयानक संग पार । अजगर तिहां बडा बिसतार ॥
 रहै म्यघ तिहां खोह भभार । भरना मैसा माड सीपार ॥४६५३॥

हसती भर्त्स रीख बाराह । पदें बूष पावें नहीं छांह ॥
वे दुख कैसे सीता सहै । बहै तुमारे सगँ में रहै ॥४६५४॥

राम लक्ष्मण का वचन

रामचन्द्र लक्ष्मण सुंरि बँन । मूर्छां खाई पडे कुबँन ॥
हाइ हाय करि बरणी पडे । भोई वैदि बसन बहु करे ॥४६५५॥
तुम देख्यो बिन कैसें जीवो । बिन अपराध दुःख दिया नवां ॥
अब तोऊं कहां पाऊं सिया । महासती जनक की घिया ॥४६५६॥
वे दुख देखि नहै वे सुख । अब फिर पाए ऐसा दुःख ॥
कोमल बगँन कोमल बेह । दुख पशु का है तिहां नेह ॥४६५७॥
कंठक बरो भारग नहीं चलै । तिहा भीता जीबंत क्यों मिलै ॥
वन मे दो लगी है बरणी । घंसी कठिन तिहां उनकौं बरणी ॥४६५८॥
कं कोई पशु के डसैं बीयाल । कं कोई भील से गबे बीयाल ॥
धैसा दुख सौं घ्राणी सिया । अब मैं देस नीमाला दिया ॥४६५९॥
कहां पाऊं मैं सीता सनी । मैं तो बुधि करी दुरमती ॥
रतनजटी जब तो सुघ दई । हनुमान तैं चित्ता गई ॥४६६०॥
अब किसको भेजौ वन माहि । त्याबै खबर मिटे दुखदाह ॥
कृतांतवक तुम बोलो साब । किरण बिष सहै दुख की घाच ॥४६६१॥
सीता छोडी है कि नही । सत्य बचन भाखो तुम सहै ॥
जैसे कहा क्रोध कं भाइ । तैं ले छोडी वन मे जाइ ॥४६६२॥
सीता बिन हूं तजूं परान । बेग मिलाबो मोऊं आन ॥
ज्यौं ज्यौं लहर हिया मैं उठाइ । त्यौं त्यौं रघुपति दुख भविकाइ ॥४६६३॥
वस्त्र फाडि पचडी मुँह डारि । महीपति लाई तबैं पछाडि ॥
लक्ष्मण लागया मूरछाकंत । मानुं भए प्रान का अंत ॥४६६४॥
करै वैद सीतल उपचार । तबे उनुहु कुं भई संभारि ॥
हा हा कर नित करत बिहाइ । परजा सकल दुःख कं भाइ ॥४६६५॥
घरि घरि रोवइ पीटइ लोग । घरि घरि करइ सीता का सोग ॥
नो महीना सोग में गबे । लक्ष्मण समझाबै विमती किए ॥४६६६॥
सीता सीलबंत सु पुनीत । ता ये राखैं मननैं चित ॥
सील सहाई होय सब ठीर । पुन्य बराबर सगा नही घीर ॥४६६७॥
जल थल महियल सील सहाइ । वन बेहूह जिहां लागै लाइ ॥
बरवत समुद्र बिषय जो होइ । घरम सहाई कहैं सब कोइ ॥४६६८॥

मे जाणुं सीता नै मुई । करो पु नि चिता कखू नहीं ॥
 भद्रकलस तब लिया बुलाइ । दैह दान सब को मन भाइ ॥४६६६॥
 रामचंद्र राजसभा सभालि । मन तै टरै न सीता सालि ॥
 बहुत दिवस में भूले दुख । राज भोग मे मानै सुख ॥४६७०॥

ब्रूहा

प्रीतम बिछुडै दुख घणा, भूलै नही दिन रयन ॥
 सीता नै वनवास दे, कैसे मानै चैन ॥४६७१॥

इति श्री पद्मपुराणे राम विलाप बिधानकं
 ६२ वां बिधानक

सीता के पुत्र जन्म

चौपई

पूरण गर्भ भया नव मास । श्रावण सुदि पून्यूं परगास ॥
 श्रवण नक्षत्र उत्तम शुभवार । जुगल पुत्र जन्म्या तिह बार ॥४६७२॥
 लवनाकुस मदनीकुस ओर । तातै अधिक बिराजै ठौर ॥
 जोतिगी पंडित जोतिग साव । भले मुहुर्त गुनां अगाव ॥४६७३॥
 इन सम बली न होइ है आन । महापुनीत घरम की खान ॥
 बज्रजंघ अरु सब रणवास । सकल लोक प्रति करै हुलास ॥४६७४॥
 दान मान सब ही कूँ दिया । घर घर रली बधावा किया ॥
 परियण की भाई सब नारि । सब मिल गावै मगलाचार ॥४६७५॥
 करै नृत्य गुनीजन सब भाइ । गावै ताल मृदंग बजाइ ॥
 डोल दमामा करनाइ । वीण बासुरी अनै सहनाइ ॥४६७६॥
 भाति भाति के बाजा बजै । सुनत सबद मन सुख ऊपजै ॥
 बहुत नारि सीता कै संगि । करै सेव सुख पावै अंग ॥४६७७॥

बालक्रीडा

निस बासर आग्या मे चलै । दोनु बालक प्रसी मे पलै ॥
 तेल उबटना अरु अमनान । सोमै दोन्यूं चद्र अरु भान ॥४६७८॥
 पल पल घटिया बघै कुमार । बदन जोति शशि की उणहार ॥
 निकस्या दत तारा की ज्योति । नख करात की सोभा होत ॥४६७९॥
 बालक लीला सीता देखि । मूल्यौ सोग इनानै प्रेषि ॥
 कबहु हंसै कबहु करै रोज । खलै गुढलियां उपजै चोख ॥४६८०॥
 उठै लागि अगुली गहि चलै । गिरै भूमि तै सोमै अलै ॥
 कबहु जननी गोदी लिये । लपटै कंठ महा सुख दिये ॥४६८१॥

पाते पोसे हुए सजेत । सब मिलि करै उनीं सों हेत ॥
 सिद्धार्थ मुनि भ्रागम हुआ । राजद्वार प्रवेस जदि हुआ ॥४६८२॥
 सीता द्वारा वेषण करया । नमस्कार करया तिहां खडा ॥
 धरम बुद्धि मुनि बोले बोल । पट बैठा तिहां रत्न अमोल ॥४६८३॥
 लेई अहार उठ्या मुनि ईस । अर्खदान बोले आसीस ॥
 सीता सुं पुछ्या बिरतात । सुण्या भेद कांपे सब बात ॥४६८४॥
 वे दुख सुणि उपजी मन दबा । अरम उपदेस सीता कूं दिया ॥
 दोउ पुत्र भाये तिहु बार । दरसन पाय कियो नमस्कार ॥४६८५॥
 दोउ रूपबंत गुणबंत । सुंदर देह महा बलवंत ॥
 कोमल अरण नख जोति अपार । खंड पयोधर सीलै इकसार ॥४६८६॥
 कटि केहरि हिरदा बिसतार । भुजा अनोपम जोति अपार ॥
 कर कोमल नख असेत । कंठ ग्रीवा बज्र सहेत ॥४६८७॥
 उष्ट कपोली हीरा से दंत । मुंह कवाण दे सोभाबंत ॥
 बदन जोति सोनै सिर केस । स्याम वर्ण सु बिराजै भेस ॥४६८८॥
 महा अटल सुदर्शन भेर । गुणनंभीर सागर कैं फेर ॥
 इनके गुण इनही ते लग्ये । तो मुख गोचर जाहि न गिये ॥४६८९॥
 जई सरस्वती आपण मुख कहै । सीता सुत गुण पार न लहै ॥
 ऐसे बालक देखे उन मुनी । विद्या पढाइ कियो बहु गुणी ॥४६९०॥

अध्ययन

एक बार गुरु देहि बताइ । वे फिरि पढ़ि सुणावै समझाइ ॥
 विद्या पढ़ि पारंगति भए । रवि सा तेज ससी किरणें सम भए ॥४६९१॥
 जिहा लौं थे राजा अरु रक । इनछं सुणि मानै सब संक ॥
 बज्रजघ कुं मिले सब भाइ । करै सेव सब मस्तक नाइ ॥४६९२॥
 जिहा निकलै दोऊ कुमार । देख रूप मोहैं सब नारि ॥
 इनकें चित्त धर्म का ध्यान । पाप न गहै मन अपनै जान ॥४६९३॥
 वेद पुराण सुनइ मन लाइ । मिथ्या मारग चित्त न सुहाइ ॥
 सम्यक दर्शन सम्यक ग्यान । चारित्र्य भेद के करै बखान ॥४६९४॥
 सब परि छांह अरम की करै । राजनीति बिष समझैं खरै ॥
 सत्य विद्या अनुष टंकार । बांछ विद्या सीखे बहु सार ॥४६९५॥
 दोउ वीर सब गुण सयुक्त । महासती सीता के पुत्र ॥
 सोहई मुकट वस्त्र बणें अंब । बहुत कुमर करै सेवा संग ॥४६९६॥

सीता देखि करै मन आराधं । जाणै दोऊ सूरज चंद ॥
 पुण्यवंत ए दोऊ वीर । कंचन वरण सब बणै सरीर ॥४६६७॥
 बज्रजघ मन भया हुआस । मनोबांछित मन पुं'गी प्राप्त ॥
 सब भूपति मे कीरति बढी । दिन दिन कला अति ही बढ़ी ॥४६६८॥
 निरभय राज करै आपणा । पूजा दान मन लाया घरणं ॥
 दया अंग विधि पालै भली । करै राज मन में अति रली ॥४६६९॥

अडिल्ल

पुण्यवंत जित जाइ तिहां रिष ह्वै च'गी
 सुख सपति अधिकार जीत पावै अली ॥
 रहै घरम सु प्रीत कला दिन दिन बधै ।
 लवनाकुस सुपुनीत क्राति पल पल चढै ॥४७००॥
 इति श्री वधपुराणे लवनाकुस उदय भव विधानकं

६३ वां विधानक

चौपई

लवनाकुस भए जोवन भेस । बज्रजघ चितवै नरेस ॥
 लक्ष्मीदेई राणी सुर म्यान । ससी चला पुत्री गुणखान ॥४७०१॥
 कन्या बत्तीस उगू की साथ । लव कू विवाह दई नरनाथ ॥
 रहस रली सूं बीतै ब्योस । कुस कारण विचारै अब होम ॥४७०२॥
 किस राजा पै भेजा दूत । तार्क पुत्री रूप संजूक्त ॥
 माने वचन डील न करई । मेरा कहा वेग सिर ढरई ॥४७०३॥

कुस के लिये पृथ्वीधर के पास दूत भेजना

पृथ्वीवती नगरी का नाम । पृथ्वीधर है जिए ठा राव ॥
 अमृतवती राणी सुन्दरी । कनकमाला बाकै पुत्तरी ॥४७०४॥
 अंसी कन्या किसको बरै । भेजो दूत कारज इह सरै ॥
 पठए दूत प्रथवीधर पास । गए बसीठ कन्या की प्राप्त ॥४७०५॥
 नमस्कार सभा पइठ । निरभै बाक कहै अति दीठ ॥
 बज्रजघ घर भाणज दोइ । रघुवसी जाणै सब कोइ ॥४७०६॥
 लव को पुत्री दई आपणी । बत्तीस अबर राजा की घणी ॥
 कनकमाला तुम कुस कू देइ । मेरा बाकि हिए धरि लेहि ॥४७०७॥
 भूपति सुणि कोपे तिण बार । अरे भूढ कहो बात संभारि ॥
 वन वन फिरती आणी वहन । अबर वा कुं शार्ग के चिह्न ॥४७०८॥

पृथ्वी वर का कुपित होना

उसके जखे भाणुजे किये । जाति कुलीन विचारी हिए ॥
 यूँ ही कन्या दीन्ही ताहि । सैसा मूरख मैं तो नाहि ॥४७०६॥
 तेरा दोस कबहू नही दूत । प्रभू के वाक्य कहै संयुक्त ॥
 वर के जब इतना गुण होइ । तब कन्या पावै वर सोइ ॥४७१०॥
 उत्तम कुल उत्तम ही जात । सीलवंत बन होइ बिर्यात ॥
 रूपवंत अवर बेस परमान । बल जोवन बेस सुभ भान ॥४७११॥
 विद्या गुण लक्षण तिह जात । महामुभट सारं परकाज ॥
 ताकूँ दीजे कन्या सही । कर्मकलकी नै देणी नहीं ॥४७१२॥
 बोलैं दूत राजा सो फेर । रामचंद्र सुत जाण्यो सुमेर ॥
 सीता तएँ गर्भं तै भए । रघुवंसी सम अन्य न बए ॥४७१३॥
 निरभय मन राख्यो आपणो । कन्या दे सुख पावो घरणो ॥
 क्रोधवंत बोलैं भूपती । तो मैं बुधि नही है रती ॥४७१४॥
 राज सभा बोलजे सोच । बिन विवेक तेरा हूँ लोच ॥
 धका दिलाइ दीना है काढि । बंध्या दूत पड़ी थी गाढ ॥४७१५॥
 बखजंघ नै सुणाया भेद । भूपति के मन उपज्या खेद ॥
 मे तो मुखतै बचन निकाल । मान्या नही प्रथवीधर भूपाल ॥४७१६॥
 अन्य वचन सुनाया भेद । होई दोख अपणां लगाउलवेद ॥
 सबके मन भावै सदेह । किर कारण उन करधा न नेह ॥४७१७॥
 लागै खोड सगाई फिरै । अब हूं जाइ समझाउ खिरै ॥
 बखजंघ पृथ्वी ऊपर चढधा । प्रथवीधर राजा सौं मिल्या ॥४७१८॥
 भगनी सुत मेरै इह बली । रामचंद्र की कीरत है भली ॥
 कन्या देहु बिलम्ब मति करो । मेरा बचन सत्य बित मे धरो ॥४७१९॥
 बोलैं प्रथवीधर समझाइ । सीता मे होता गुण राइ ॥
 तो रामचंद्र क्यूँ दई निकाल । तो मे अकल नही भूपाल ॥४७२०॥
 पहलीं भेज्या था तैं दूत । अब तुम ही आए पटुत ॥
 बिन विवेक तू है अमान । अपणो आप घटावै कान ॥४७२१॥

बखजंघ एव पृथ्वीधर में युद्ध

मान संग हुवा बखजंघ । निकत्या कोप यूँ केहरी स्पध ॥
 मूटधा नगर मचाई रोर । देस परगने भारे रोर ॥४७२२॥

विजयारथ था बाणेश्वर । सनमुख भ्रान करी उन मार ॥
 भूभ विजयारथ घरणी पड्या । असा सबद प्रथीधर सुणु लरा ॥४७२३॥
 देस देस के बुलाए मित । सेना जोडो जुध की रीत ॥
 बज्रजघ के पुत्र सुणी । उण भी सेना जोडी घरणी ॥४७२४॥

लवकुश का युद्ध के लिये प्रस्थान

दोन्युं कुमर रहसि मन भया । करै आज साका हम नया ॥
 एते धने काहु कूँ लोग । हम दोनू उस सेना जोग ॥४७२५॥
 सीता कहै तुम हो लघु बंस । रण मे कैसे करो प्रवेस ॥
 कहै कुँवर हम स्यंध समान । हस्ती भाजै अति बलवान ॥४७२६॥
 ए कीटक कहा सरभर करै । सत्री रण मे ते क्यूँ डरै ॥
 करि सनान पूजे जिनदेव । भोजन भक्ति करी गुरु सेव ॥४७२७॥
 बागा पहिरि बाधे हथियार । पञ्च नाम पढि बारंबार ॥
 रथ परि चढे आप आपणे । आयुध सग लीने तहा धने ॥४७२८॥
 बहुते भग चले सामत । उतर्ते प्रथवीधर बलबंत ॥
 बज्रजघ प्रथईधर लहै । दोउधा बहोत सूरमा पडे ॥४७२९॥
 बज्रजघ दीए हराइ । लवनाकुस तब आए धाइ ॥
 जैसे स्यंध मारग कुं गहै । भाजै पसु सुधि न रहै ॥४७३०॥
 जैसे रुई आक की उडै । प्रथईधर की सेना सुडै ॥
 पग धरणो कूँ रही न ठौर । पडी लोथ भायै रण छोडि ॥४७३१॥
 प्रथईधर का कर्प गात । पोछै दौडे दोनू भ्रात ॥
 तब लवनाकुस बोलै बोल । चेत वचन अब का करै भोल ॥४७३२॥
 हमारा नाम धरै था भंड । अब काई छोडै क्षत्री भुंड ॥
 क्षत्रीकुल हूँ पीठ न देइ । तू कलक अपने सिर लेइ ॥४७३३॥
 सनमुख आई भूभ काइ न करै । गर्व वयण अब का बीसरै ॥
 प्रथिवीधर छोडे हथियार । हाथ जोड ठाढा तिरण बार ॥४७३४॥
 तुम हो रामचद्र के पूत । तुम प्राकर्म कोई न सकै पुहुत ॥
 मो परि क्रिया करो कुमार । तुमसा बली न इण संसार ॥४७३५॥
 दोइ कर बोडि करै वीनती । बज्रजघ मिलिया मूपती ॥
 कनकमाला मदनकुस को दर्ई । मन की खुटक सगली मिट गयी ॥४७३६॥

लवकुश की विजय

बहुत विघन प्रथवी घर भान । देई भेंट राख्या सनमान ॥
 भुगत भोग बीते बहुद्यौस । बिदा भए चाले मन ह्रीस ॥४७३७॥
 एक सहस्र राजा ने साथ । विजय देस सौ भूपति बांघि ॥
 पोदनापुर और बहु नग । राजा अणि मिले तिहां सग ॥४७३८॥
 गिर कैलास उतारी सैन । नदचारजीत भए सुख चैन ।
 महागग सँ उतरे पार । बहुत तनै कीया निरधार ॥४७३९॥
 देश परगना भने बहु गाम । साध्या घणा राजा के नाम ॥
 उहां ते चले देस आपणे । नरपति साथ लिए निज घरणे ॥४७४०॥
 पु डरीकनी रहि कोस सात । सतखणै बँडि सीता मात ॥
 उडी भूल छाये आकास । पूछै सीता सखी जन पास ॥४७४१॥
 वे कहै कोई नरपति भाइ । तातै रज उडै बहु भाइ ॥
 बज्रजंघ ने पहुँची खबर । लवनाकुस मारे अति गबर ॥४७४२॥
 जीत्या देस परगने घरणे । बहुतराय सेना संग बरणे ॥
 सीता सुणी पुत्र की बात । उपज्या सुख घर हरषित गात ॥४७४३॥
 बज्रजंघ आग्या इह दई । हाठ बाजार छावो सब नई ॥
 गनी गली हूवा छिडकाव । कीया महोछव राख्या भाव ॥४७४४॥
 सीता कूँ किया नमस्कार । बज्रजंघ मिलिया तिरा बार ॥
 घरि घरि हुवा अति आनन्द । ए प्रतापी हैं ज्यो सूरज चद ॥४७४५॥
 निरभय करै निकटक राज । भई जीत मनबांछित काज ॥
 बज्रजंघ का प्रगटथा प्रताप । सुख माही भूत्या दुख सताप ॥४७४६॥
 सीता रहैसी पुत्राँ न देखि । मन सतोभ्या लख्यण गुण प्रेषि ॥
 सकल लोक परिजा अति सुखी । तिहपुर कोई है नही दुखी ॥४७४७॥

ब्रूहा

पुष्य बडो तिहु लोक मे, घरम भाव घरि चित्त ॥
 सततै कीरत आगली, घरमै सुख अनंत ॥४७४८॥
 इति श्री पद्यपुराणे लवनाकुस विजयजय विधानकं

६४ वां विधानक

चौपई

राम लखमण चित आणी सिया । मोह उदय वे व्याकुल भया ॥
 कृतांतवक को दे उपदेस । सीता सुख लेहु फिरो तुं प्रदेस ॥४७४९॥

कृतांतवक् ए आशा पाई । सिंहनाद वन हेरघा जाई ॥
पर्वत गुफा जोई सब ठाम । तिहा न कोई मानुष्य नाम ॥४७५०॥

नारद मुनि का आगमन

नारद मुनि आया पुंढरीक । सह जगत मे हैं पूजिनीक ॥
बज्रजंघ लवनाकुस तिहा । नारद मुनि बैठा था जिहां ॥४७५१॥
देखा मुनि उठि ठाढ़ा भए । नमस्कार करि आदर बहू दिये ॥
पट बँठाये नारद मुनि । सीलवन्त नारद अति गुनी ॥४७५२॥
आगम करि कृतारथ किये । कवण कवण तीरथ मे गए ॥
नारद मुनि कही सहु बात । जिह जिह कीनी तीरथ जात ॥४७५३॥
धरम सुणाया पढया श्लोक । वर्ण समझाए तीनों लोक ॥
बाणी सुणि सब करै डडोत । आसीरवाद मुनि कहे बहोद ॥४७५४॥
रामचन्द्र लक्ष्मण सा तेज । सदा बिराजो सुख की सेज ॥
दिन दिन कला तुम्हारी जोर । तो मम बली न दूजा ओर ॥४७५५॥
लवनाकुस बोलीया कुमार । ऐसे है कुण बली अपार ॥
इस बिध हमनै असीस तुम दई । कवण बस उत्पन्न ते भई ॥४७५६॥
बिवरा सुं समझावो मोहि । हम यह वाले पूछू तोहि ॥
नारद कहै सुणउ बिरतात । सुमेर अत पहरूँ किह भाति ॥४७५७॥
रसना सहस्र होइ इकबार । राम लक्ष्मण गुण लहु न पार ॥
जैसे सायर अगम अघाह । बालक कर पसारै बाह ॥४७५८॥
बहु शत्रुद्र सकं की पेर । रामचन्द्र गुण ऐसे फेर ॥
तीन लोक के वह जगदीस । सुर नर सकल नवावै सीस ॥४७५९॥
राम नाम तै तूटै पाप । रोग बिजोग मिटै सताप ॥
इष्वाक वम कुल उत्तम आदि । धरम क्रिया सब ही तै बाधि ॥४७६०॥
दसरथ नृप प्रतापी सरा । च्याग पुत्र गुण लख्यण भरा ॥
रामचन्द्र प्रथम भी और । उनसो सकल बिराजै ठौर ॥४७६१॥
लक्ष्मण से ती है बहु प्रीन । भरथ सन्नुघन हैं महा पुनीत ॥
कंकया कु वर दसरथ दीया । अयोध्या नाथ भरथ कुं कीया ॥४७६२॥
सूरजहास लक्ष्मण तिहा पाइ । सरदूखण सुत मारा तिह ठाय ॥
अन चीते सुं कीनी चोट । सबुक हण्पा विवेकी बोट ॥४७६३॥

रामलखण कूँ दीये बनवास । सीता संग रही रनवास ॥
 दंडक बन में आश्रम लिया । संवक कुंवर तिहां तप किया ॥४७६४॥
 पसचात्ताप करें मन मोह । बिन भवगुण हत्या विवेकी छाह ॥
 बार बार रघुपति पछिताहि । हौणहार मिटे किहु भाइ ॥४७६५॥
 खरदूषण मुणि कीनां जुष । रावण करी हरण की बुष ॥
 सीता कूँ रावण ले जाय । रावण मारि सीता ले भाइ ॥४७६६॥
 अजोष्या आए जीती सब मही । इन समान नरपति को नहीं ॥
 करम सदैव हुवा तिहा घाँण । सीता काडि दई वन जाँण ॥४७६७॥
 मदनाकुस बोले तिह बार । किण भवगुण पर दई निकार ॥
 नारद कहै सीता की कथा । आठ सहस्र में सीता समरथा ॥४७६८॥
 जनक सुता सत सील की खान । सीता सम कोई सती न भाण ॥
 परजा दोष लगाया भाइ । सुणी बात जब रघुपति राइ ॥४७६९॥
 ता कारण बे दीनी काडि । परजा के तिर दोष इह बाडि ॥
 इस पाप तें कहा निसतार । परजा गह्या पाप का भार ॥४७७०॥

दूहा

बिन भवगुण जे दोस दे, तेई मूढ अमान ॥
 अंतकाल दुख भुगत करि, पावैं नरक निदान ॥४७७१॥

चौपई

लवकुश की प्रतिक्रिया

मदनाकुस बोलीया कुमार । राम लख्यमण जे बुध अपार ॥
 उनहूँ करी न न्याव की रीत । तो इह बणाइ है विपरीत ॥४७७२॥
 अपणो घरका करघा न न्याव । उनके घर का है खोटा भाव ॥
 जिनको दई हमको असीस । बिन विवेक तूँ है रिष ईस ॥४७७३॥
 बोल्या नारद सभा मभार । रामचंद्र इह किया विचार ॥
 परजा दोष लगाया घणों । बहुत भांति रघुपति नें सुण्यों ॥४७७४॥

नारद का पुनः आगमन

निश्चै सीता का सत रह्या । लोकां भूठ वचन इह कहा ॥
 जे नही राखुँ लोकाचार । तो अपकीरत होम संसार ॥४७७५॥
 जुग जुग कथा हमारी चलै । मोह कियो कोइ कहैं नहिं अलै ॥
 जे पृथ्वीपति महै कलक । अबर कुमारण कहै निःसंक ॥४७७६॥

एक दिवस है मरण निदान । तार्यै बुधि करीजे जान ॥
 उन सम दूजा नहीं है और । रामचन्द्र लक्ष्मण की ओर ॥४७२७॥
 चक्र सुदर्शन उनूँ के साथ । तीन लोक में इहै नरनाथ ॥
 उहा तै उठि सीता के गेह । नारद मुं नी बिगम्बर वेह ॥४७३८॥
 दरसन देख किमो नमस्कार । सिधार्थ बैठा तिह बार ॥
 पूछी सीता नारद सू बात । किए किए तीरथ कीनी जात ॥४७३९॥
 नारद बोलै तीरथ कथा । तब फिर बोलै सिधारथा ॥
 अरे नारद तुं कहि है मुनी । कलह करम करता फिरै षणि ॥४७४०॥
 आपस में भिडावै जाइ । तो कू बहुत कलह सुहाइ ॥
 नारद कहै हम क्या किया । सहज सुभाव उपद्रव किया ॥४७४१॥
 मो कू दूखण लागै कहा । सीता रोबै नयन जल वुहा ॥
 लवनाकुम सीता पै गये । देख्या रुदन सोच में भए ॥४७४२॥
 माता कहो तुम साबे बयन । कारण कथन भरे तुम नयन ॥
 जो कोई तुमसे बोलै बुरे । ताकु हाथ लगाउ खरे ॥४७४३॥
 जीम निकासु हतो पराण । जे कोई कहै कुवचन आन ॥
 सीता कहै पुत्र तुम सुणो । कत विजोग दुःख उपज्यो घणो ॥४७४४॥
 पूछै कुंवर कहो तुम मात । हमारा कहाँ बसै है तात ॥
 विवरा सकल कहो समझाय । तो हमारा विकलप मिट जाय ॥४७४५॥
 पिछली कथा कही तब सिया । बहोत भाति उडै है हीया ॥
 जंसी कथा नारद पै सुनी । तंसी बात सीता सब भणी ॥४७४६॥

लघुकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान

तबै उठ्या कुंवर रिस लाय । रामचंद्र चित दया न आय ॥
 गर्भवती कू दई निकाल । अब बैर लेहु पिता पै जाइ ॥४७४७॥
 घेर अजोध्या माडू जूष । अब उनकी खोउ सब सुष ॥
 सेन्या जोडि अजोध्या चले । सूर सुभट सग लीने भले ॥४७४८॥
 एक सो स्याठ जोजन का अत । भले भले निकसे सावत ॥
 अयोध्या सीम पहुते आन । लूटे नगर बहुतेरा वान ॥४७४९॥
 डेरा दीया नदी के पार । रघुपति ने पहुचाई सार ॥
 कोई आया बली नरेस । लूटे आस पास के बेस ॥४७५०॥

सबकुस द्वारा मुद्र

जुष निमित्त उत्तरधा है भाइ । दाका दल बल कह्यो न जाइ ॥
 रामचन्द्र ललमण नें सुण्या । मनमें सोच किया अति वर्या ॥४७६१॥
 प्रेसा कुण्ड भूपति बलवंत । जिसका दल कहिए नहि अंत ॥
 वे चढ़ि आए प्रजोप्यापुरी । त्याई उणुं भरण की वडी ॥४७६२॥
 देस देस को लेल पठाइ । भूचर खेचर लिया बुलाइ ॥
 नारद लिया भावमंडल पै गया । सकल भेद व्योरा सूं कहा ॥४७६३॥
 भावमंडल सुंण सीता विजोग । मनमें बहुतें व्याख्या सोय ॥
 लवनाकुस का सुण्या प्राकर्म । बहूता तणों गुमायो बर्ष ॥४७६४॥
 नरपति वर्या उना के संग । प्रजोप्या पति किया मान मंग ॥
 भावमंडल मन हरष अति किया । चढ़ि विमान पुंहुता जिहा सिया ॥४७६५॥

चुंढरीक नगरी मां जाइ । बहूत भाई मिलिया सुख पाइ ॥
 मगली बात कही समझाइ । कछु हर्ष कछु विसमं राइ ॥४७६६॥
 सीता को बैठाइ विमान । मगन मार्गं पहुंचाई भ्रान ॥
 सुर नर देखें कोतिक भाइ । दुहुं ठा सेन्या ठाडी जाइ ॥४७६७॥

ब्रह्मा

राम ललमन सुभट, सज्जन वचवान ॥
 भूचर खेचर प्रथीपति, चढे बजाइ निसान ॥४७६८॥

श्रीपई

विराचित हिरन केस सुगोव । नल नील अतक धुज मीच ॥
 महीपति निकस्या उनुं साव । सिध गरुड बाहुन रघुनाथ ॥४७६९॥
 वज्रजंघ अरु भूपति वरणे । बाने बारी अग्रे वरणे ॥
 पडी मार अरु अरु वान । रथमें गिरे आप अगवान ॥४८००॥
 फिर संभाषि रथ ऊपरि चढे । महा ओषवंत मन बढे ॥
 गोली सर उभों बमहरं बार । दोउंछा सेम्बा होइ संवार ॥४८०१॥
 हाथी घोडे रथ सुखवाल । पडी लोष भूकै भूवाल ॥
 पय चरखे कूं रही न ठौर । ओल्लत सों रथं अरया बहोरि ॥४८०२॥

अडित्स

पडी लोथ पर लोथ गिरध चूट घने ॥
 कापै कातर लोग नाम भुक्त का सुँए ॥
 लडै क्षत्री लोग जाहि कुल लाज है ।
 स्वामी धरम का चित करै वे काज है ॥४८०२॥

चौपई

कही घायल घूमै हैं घणे । कही सुभट भूके है बणे ॥
 घड सिर पडै देह तें छूटि । लुटहा लोग करै हैं लूट ॥४८०४॥
 म्यारहै सहस्र राम के उमराव । लवनांकुस सो धरि भाव ॥
 पवन बेगि मिले हएवत । अवर गए बहुते बलवत ॥४८०५॥

सोऽगठा

देखो कलुका भाव, जीत्या सुं सब ही मिलै ॥
 मित्र बिछड़ा सब जाड, हारि जाणि बिछुडै सबै ॥४८०६॥

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस बुध विधानक

६६ वां विधानक

चौपई

पुष्ट वर्णन

रामचद्र लवनांकुस लडे । मदनांकुस लछमन सु भिडे ॥
 कृतातवक्र लडै बज्रजघ । लाम्या घाव विराधित सग ॥४८०७॥
 तबै रघुपति समुभावै ताहि । क्षत्री रण छोडै किहु नाहि ॥
 मेरे रथ का हुवै सारथी । घावै बेग रचै भारथी ॥४८०८॥
 विराधित रामचद्र रथ बैठि । धाए मारि मारि करि बइठि ॥
 बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । छोडै ज्युं घनहर वरषत ॥४८०९॥
 उततै छोडै गोली बाण । प्रकास चक्र लखमण कर तांण ॥
 उन सर छोड करी तब मार । उडघा फिरै चक्र तिह बार ॥४८१०॥
 चक्र सुदर्शन फेरि संभार । तामैं उठै अगनि की भास ॥
 गडगडाठ दामनी उद्योत । वहाँ दिसा सबकों भय होत ॥४८११॥
 गहे धनुष कुमर निज हाथ । छूटै बाण ज्यो एकै साथ ॥
 चक्र जाइ प्रकमा दई । पुन्यवत को भय नही हुई ॥४८१२॥

फिर आया लछमन कर चक्र । मनमे सोचै लछमन सक्र ॥
 अनंतवीरज स्वामी ने कहा । कोटि सिला उठावै जो इहा ॥४८१३॥
 हूं नारायण त्रिलंबी ईस । मेरी कवण सकै करि रीस ॥
 भूचर वेचर दानव देव । सब मिलि करि हूं मेरी सेव ॥४८१४॥
 उनका वचन न भूठा पडै । चक्रवर्ति कोई अवतरै ॥
 तातै चक्र करै नही पाव । अब हू कहा करुं उपाव ॥४८१५॥

नारद द्वारा लवकुश का रहस्य खोलन

नारद सिधारष दोउ आय । राम लक्ष्मण सु कहै समभाय ॥
 ए दोन्युं सीता का पूत । बलपौरिष दोउ संयुक्त ॥४८१६॥
 जब तुम सीता दई निकाल । बज्रजब आया भूपाल ॥
 घरम बहिन करि बह ले गया । नगरी का लोग हरषित भया ॥४८१७॥
 प्रसुति भई तिहा पुत्र दोइ जण्या । जनम महोछव कीने धया ॥
 लवनाकुस दोनुं बलवत । इन सभ अवर नही सावत ॥४८१८॥
 रामचन्द्र लछमन ने सुणी । अपणी निंदा कीनी धसी ॥
 हमकूं उपजी महा कुबुद्धि । करी न कछु ग्याव की सुधि ॥४८१९॥
 सीता कू सत हुवा सहाइ । वह पाप भया हमकूं आय ॥
 सीता प्रतै निकाला दिया । तो मान भग हमारा भया ॥४८२०॥
 एक दोल चुक्या था नही । दूजा पाप अब हुवा सही ॥
 जे भुक्त थे ऐसे पूत । तो दुख होता हमै बहुत ॥४८२१॥
 ए थे देव कला के सिमु । गोत पावतई हुवा न सुख ॥
 उतरे रथ ते सनमुख चले । दोन्यु पुत्र भाइ कै मिले ॥४८२२॥

सब कुश द्वारा पिता की बचना

लगे चरण रघुपति के पुत्र । कठां विलवन लेय विचित्र ॥
 धन्य दिवस आज की घडी । पिता पुत्र मिल्या हुडी हुंडी ॥४८२३॥
 विमाण चडी सीता इह देखि । मनमे आनन्द भए विसेष ॥
 जाण्यां पुत्र महा सपूत । अपणै मन हरषित बहुत ॥४८२४॥

बूहा

पुत्र प्राकर्म कुं देख करि, सीता विसत हुलास ॥
 पु डरीक फिर कै बई, पुंगी मन की आस ॥४८२५॥

घोषई

सबकुसुमा का, अयोध्या आगमन

बज्रव घ की अस्तुति करै । बाका गुण रत्नूपति विसतरे ॥
 दयावंत धरम का अस । तुमते रहै हमारा बस ॥४८२६॥
 जे तुम आय बन के भाभ । सीता कुं भय व्याप्या नाहि ॥
 सीता की तुम कीनी सेव । उनका सत् रह्या इन भेव ॥४८२७॥
 बड़ठे चढ़ि पुहुपक बिमाण । रामचंद्र लखमण बलवान ॥
 लवनाकुस भागै आरुड । रूपवत लष्यण गुण गूढ ॥४८२८॥
 छाया नगर गली सब भाडि । छिड़क्या नीर गली सब बाडि ॥
 घरि घरि बाबी बंदरवान । घर घर देखण समही नारि ॥४८२९॥
 बाल वृष्य सब आये लोग । देख रूप भूले सब सोग ॥
 कोई नारि सराहै रूप । इन पटतर कोई नाही भूप ॥४८३०॥
 घन्य सीता जाके गर्भ ए भए । दोनू स्वर्ग लोक तै चए ॥
 कोई देख रही मुरझाइ । सिफल भई बहु ताकी काइ ॥४८३१॥
 सिरतै पडै भूमि पर चीर । रही न ऊनू की सुधि सरीर ॥
 छूटी लटि कटि ऊपर बाइ । मानू लगे भूयगम सिराइ ॥४८३२॥
 म्याम केस अति सोभा बणी । खुले हीण दोडी तहा घरणी ॥
 बे अपने मन निरमै जाहि । देखै लोग हसै सब ताहि ॥४८३३॥
 सब के मन कुमरो का ध्यान । भुनि गई सब ही अवमान ॥
 हारह भेल मोती के छडे । तेभी टूटि भौमि परि पडे ॥४८३४॥
 आभरण की सब सुधि बीसरी । व्याकुल भई पुर की अस्तरी ॥
 उनू के मन कुछ आवै नही । सगनी नागि धकित होय गही ॥४८३५॥
 ज्यो पतंग पीपक सूं नेह । देखे लोड होमैं सब देह ॥
 दीपक कै कछु नाही राग । जलै पतंग ता सेती लाग ॥४८३६॥
 रतनदृष्टि अति करै कुमार । आनद भयो सगले संसार ॥
 रहस रली सु दिवस बिहाइ । पूजा करै जिनेस्वर राइ ॥४८३७॥

दूहा

पिता पुत्र सो जब मिले, हुआ अधिक दुल्लास ॥
 जैन भयो सब नगर मे, पूजी मन की आस ॥४८३८॥

इति श्री पद्मपुराणे लवनाकुस अयोध्या आगमन विधानकं

बीच

राज सभा बैठिया नरैस । मंत्री कहै समझ उपदेस ॥
लवनीकुस तो मिल्खा कुमार । सीता नै आखो इंह बार ॥४८३॥

राम का विलस

रामचंद्र चितबै तिए बार । सीता सती गुण लष्यण सार ॥
परिजा यु ही दूषण दिया । ता कारण हम काडी सिया ॥४८४॥
अब जे सीता आणौ फेर । कहै लोग अैसे भी टेर ॥
तो होबै फिर नई उपाधि । कीजे कारण मन बिष साधि ॥४८५॥
जे फेर प्रजा को होबै दुख । कारन कवण हमारा सुख ॥
चंद्रउदर विराधित हनुमान । सुग्रीव नल नील प्रधान ॥४८६॥
रतनजटी आदिक भूपती । तिनू बिचारी उज्ज्वल मती ॥
देम देस कू लेख पठाइ । भूवर पेवर लेहो बुलाइ ॥४८७॥
करौ प्रतिष्ठा श्री जिनदेव । दानमान जिन गुह की सेव ॥
सकल मिष्ट कौ खी जिमणार । सीता भी आणउ तिह बार ॥४८८॥
सब सुं पूछै मत्र विचार । सीता सत प्रगटै ससार ॥
नब सीता कू आणो ग्रेह । सब के मन का मिटै सदेह ॥४८९॥
भेज्या दून सकल ही ठाइ । बीठी देखि चले सब राइ ॥
नरपति तब बहा आए धरणे । सह परिवार मनोहर बणे ॥४९०॥
उतरे निकट अजोध्या आइ । सगली भूमि हुई छिड़काव ॥
सब को भोजन दे रघुपति । कीए समान बहोत तिह मती ॥४९१॥
पंचामृता जीमवै भूप । सोषा तंबोल बहुत अनूप ॥
उत्तम गंगा जी का नीर । प्रासुख संवार कलस भरि नीर ॥४९२॥
कनक कटोरे पिबै नरिद । बैठी सभा तिहूँ पंकति बव ॥
भावमडल विराधित हनुवत । भभीषण सुग्रीव सामत ॥४९३॥

सीता को लेने के लिये भोजना

नल नील चन्द्रउदर राइ । रतनजटी रघुपति राइ ॥
पुहपक विमाण दिया इन संग । अन्य भूप भेज्या बज्जजंघ ॥४९४॥
पुंडरीक में पहुंचे जाइ । सीता कै सब लाये पाइ ॥
ईनानै देख सीता गहमरी । बिद्याधर बहु अस्तुति करी ॥४९५॥
चलो माता तुम हमारे साथ । तुम कारण भेज्या रघुनम्य ॥
सीता कहै परजा ही सुखी । हम कारण मति होवो दुखी ॥४९६॥

उन प्रसाद हम सुख में रहै । उनुके लोग बुरे सब कहै ॥
 तायै रहै हम याही ठाढ़ । सुख सो राज करो रघुराढ़ ॥४८५३॥
 फिर बोले विद्याधर बैन । करै प्रतिष्ठा पूजा जैन ॥
 ता कारण आए सब लोग । चलो बेध श्री जिन जोग ॥४८५४॥

सीता का आगमन

सीता चढ़ी पट्टपक बिमान । आई अजोध्या जब सोप्या भान ॥
 भई रयण तब आश्रम लिया । महेन्द्र वन में वासा किया ॥४८५५॥
 बीती निस रवि कीयो प्रकास । देखी अजोध्या सुख का बास ॥
 सीता संग सहेली षणी । भोला डोली बहु विध वणी ॥४८५६॥
 रथ पालकी अवर चकडोल । गज मययत चले भकभोरि ॥
 बाजे तिहां आनंद निसान । तास सबद सुख उपजत कान ॥४८५७॥
 बभन बहुत बेद धनि करै । भाट बिरद सुंग कैं मन हरै ॥
 सब त्रिय आई दरस निमित्त । भई भीड़ गलिये बहुमत ॥४८५८॥
 नमस्कार करै सब कोइ । जै जै सबद दसो दिस होइ ॥
 सुर नर किनर जय जय करै । पुहण कृष्टि प्रथिवी पर परै ॥४८५९॥
 रतन कृष्टि करै सीता मती । पट्टची तिहा बँडे रघुपती ॥
 सब मिल उठ करी डडोन । लोगा अस्तुति करी बहोत ॥४८६०॥
 रामचंद्र की अकुटी कठोर । स्यंषनाद वन आये छोर ॥
 तिह वन देखि डरै सब कोइ । निमचै मरणा बईठा होइ ॥४८६१॥
 ए तूह वनते जीवत फिरी । ऐसे वन दिख्या नही घरी ॥
 जै मै याही भेजी बुलाइ । याकैं चित्त अमर खन आइ ॥४८६२॥
 उठी दौडि उन ही के संग । परजा में होबैं मान मग ॥
 सीता सो बोलै रामचन्द्र । जे हम करी रावण मो दुद ॥४८६३॥
 तेरे कारण किया सग्राम । रावण ने पट्टचाया जम धाम ॥
 जै मैं जासता ऐसे वात । प्रजा दोष कहै इह भाति ॥४८६४॥
 तो क्यों करता पाप की छाप । इतना दोष लिया मैं आप ॥
 रण में मारे इतने लोग । घर घर व्याप्या सोग बिजोग ॥४८६५॥
 जितनै दोहु घा भुझ्या जीब । ऐसे दोष लीया में जीव ॥
 अँसा दुख सो आणी सिया जाइ । जग में यह चरचा चली इह भाइ ॥४८६६॥

तो हम तोऊं दई बीकाल । मेरे मन उपज्या इह सात ॥
 सीता कहै सुखे गति प्रान । मेरे सदा तुम्हारा ध्यान ॥४८६७॥

तुम हो तीन बड का पती । न्याब तुं कीया एक इक रती ॥
 जई घर का कर सको नहीं न्याब । औरें का करिहो किह भाव ॥४८६८॥

गरभवती काडी बनबास । भारत ध्यान मे जीव का नास ॥
 मरकर भ्रमती नीची गती । तुम को होती पाव की धिति ॥४८६९॥

तीन जीव का होता पुख । तुम को होती नही गति मोक्ष ॥
 बिन विवेक तुम भंसी करी । जीव दया चित्त नहीं बरी ॥४८७०॥

फिर कर बोलीं रघुपति बैन । लेहु दिव्य हम देखें नैन ॥
 जो मे तेरा सांच पती जू । परजा देखै तबि मे नहिं सिजूं ॥४८७१॥

अग्नि परीक्षा

सीता कहै लेहु दिव्य पांच । अब तुम देखो मेरा सांच ॥
 लाऊं हलाहल ताता लोह । तराजू बीच तिष्ठारो मोह ॥४८७२॥

मो मैं सत तो मैं सरभर रहूं । देखो प्रत्यक्ष सील जस लहूं ॥
 रचो चिता दावानन देहु । ता मैं मेरा परचा लेहु ॥४८७३॥

जो मैं सती न व्यापै भाग । जो कछु दोष तो प्राण ही त्याग ॥
 रघुपति कहै चिता हु रचो । जीवत हु पेरें जाएँ सचो ॥४८७४॥

सुगौ लोग कपे बहु भाइ । रामचन्द्र तै कछु न बसाइ ॥
 जं अंगारा तन के छुवई । दार्क तुरंत प्राणनि गवई ॥४८७५॥

महा भयानक ज्वाला बुरी । जिनमां बचो न एको बडी ॥
 अगन माहि भस्म होइ जाइ । भंसी कहि कर सब पछताइ ॥४८७६॥

मिद्वार्थ बोलियो नरिन्द्र । म्हारी बात सुणौ रामचन्द्र ॥
 मैं तप किया वर्ष बहु सहस । पंचमेर तीरथ जिन भंस ॥४८७७॥

अक्रतम बँत्वालथ जिन गेह । करी तपस्या मन बच देह ॥
 जो कछु हुबै सीता मे कर्त्तक । ए सब जाणि निर्मूल निसक ॥४८७८॥

भंसी नारद ने भी कही । रामचन्द्र सब बँठी नहीं ॥
 सीता का सत महा अटल । जैसे है सुमेर अचल ॥४८७९॥

जो सुमेर घसि जाइ पाताल । सीता का सत छोटी चाल ॥
 रमि का तेज भी होई हीन । सीता का सत होई नही खीन ॥४८८०॥

रामचन्द्र ते जाए धोखे । सोदो बन मे तुम होखे होखे ॥
 राम हुकम ले बन मे गए । सोई बरकी मन अचिरज गए ॥४८८१॥
 राजनि हठ को भेटे कोण । बरज सकी को चखसी पौन ॥
 भ्रमनि कुंड की सोई भूमि । सब नगरी मे माफी भूम ॥४८८२॥
 महेन्द्र उदय बन मे मुनि एक । सरव भूषन सुधरम की टेक ॥
 तीन रतन हैं बाकै सत्य । आतमध्यान दया सुचित ॥४८८३॥
 दस लक्ष्मण गुण ताकै सत्य । मात उपवास पारण विरति ॥
 विद्युतवसक व्यतरी भाइ । मुनि कू बुझ दिया बहु भाइ ॥४८८४॥
 इहा श्रेणिक नै प्रकृ किया । किम उपसर्ग जख्यणी नै दिया ॥
 श्री जिनवाणी अग्रम प्रचाह । मिटै सकल हिरदा की दाह ॥४८८५॥
 पूरव दिसा गुज पुर नग्न । सिध वक्रम राजा बल अग्र ॥
 श्री देई अस्तरी सम्यक दृष्ट । धरम करम करि महा अँष्ट ॥४८८६॥
 सरव भूषण तावै उत्पन्न । रूपवन्त सोहै लघ्यन्त ॥
 जीवन समै ते कुमार । आठ सहस्र विवाही उत्तम नारि ॥४८८७॥
 कर्ण मंडला पट की धरणी । रूप लघ्यण गुण लावन्य वरणी ॥
 संगि सहेली बइठी पासि । देख्या चित्र सिराहई तासि ॥४८८८॥
 कर मे पट चित्र का गहै । बारंबार सराहना कहै ।
 हम सिखर का वा लिप्यारूप । सबतै पुरुष है बहु अनूप ॥४८८९॥
 एक सखी ऐसा विध हसी । तेरै मन ए ही जुरत बसी ॥
 हैम सिखर सौ संगम करि जाहि । अँसी सुणि राखी मुसकाइ ॥४८९०॥
 राजा कानि पढी इह बात । कोषवंत हुवा बहु मांत ॥
 लोटी चरचा एक मे करै । पर पुरुष की इच्छा बरै ॥४८९१॥
 विभचारिणी समझी मनमांहि । गह्या सबग सौ मारुं जाहि ॥
 त्रिय परि कहा उठाऊ हाथ । स्वारवा रूपी हैं सब साथ ॥४८९२॥
 भूठे सुख में राख्या जीव । इह कुटुंब सब दुख की सीव ॥
 राजि कुटुंब विभव सब त्याग । सरव भूषण उपज्या वरान ॥४८९३॥
 लौचि केस दिगम्बर भेस । हुवा जती गुरु के उपदेस ॥
 वा इह विध तप आतम जोइ । क्रिया चौरासी इह विम होइ ॥४८९४॥

करि विहार अजोष्या जाइ । करै तबस्वा बन नच काइ ॥
 करस मंडला राखी सुख सइ । रोम पीटै बहुत रिसाइ ॥४८६५॥
 मैं उनकी कलु करी न सोइ । उनीं बिचारी भन मैं सोइ ॥
 अब बै बा परि तजौ परान । भारत रह बरषो उन आनि ॥४८६६॥
 भन पांसी बिन छोडी देह । गई यमिखी बल कै केह ॥
 तब भन मांही अवधि बिचार । सर्व भूषण की मैं भी नारि ॥४८६७॥
 किन अवगुण मुक वृषण ल्याइ । वह तब करै अजोष्या जाइ ॥
 अब मैं उनसीं साधुं शीर । बंधन बेडी बांध्या मुनि बेर ॥४८६८॥

बलिणी द्वारा मुनि घर उपसर्ग

जब मुनि चाल्या लेण भहार । बंधख छूट गए तिए बार ॥
 जखणी कुं तब उपज्या कोष । त्याई भगनि तिहां बणी न सोष ॥४८६९॥
 अंतराइ मुनि फिर करि चल्या । मास उपवासी पारणा टल्या ॥
 बहुरि बढ्या आहार निमित्त । आंधी बली मारये यकित्त ॥४८७०॥
 काटे मारग मांहि बिछाइ । पग धरणें कूं नांही ठाहि ॥
 बाही ठाम थाप्पा मुनि जोग । नगर मांहि तैं आबैं लोग ॥४८७१॥
 अंतरी गई सेठ मंडार । अहेडा दे बंली तिहा डारि ॥
 प्रभात भया तब खोजै सेठ । बंली पड़ी साब पग हेठ ॥४८७२॥
 आए सकल अर्चमैं होइ । भली बात भाखैं नहीं कोइ ॥
 कोई कहे जो होता बोर । तो क्यूं ठाहा रहै इस ठोर ॥४८७३॥
 ध्यानाकुंड लडा मुनिराज । कुतो बांध्यो गलां सुं आप ॥
 भविजन आबैं मुनिबर जात । टालि उपसर्ग पलास्वा बात ॥४८७४॥
 पूजा करी भोजन जिमाइ । वनमे मुनि ने गए पहुंचाय ॥
 अंतरी रतन हार चुराइ । मुनि कै गले गयी पहराय ॥४८७५॥
 राजा सुणी राज की मार । देख्या साध कै गले मभार ॥
 इसकी देखि वह बरचा करै । जती के जेप वह चोर फिर ॥४८७६॥
 आबैं फोटे बे सेठ मंडार । अब इनै हरषा रतन का हार ॥
 तबो मंथी समझावैं नैत । इनतो बरत बरचा है जैन ॥४८७७॥
 जे इच्छा चोरी की बरै । तो क्यूं प्रत्यक्ष राखैं गलै ॥
 समझ बचन अपने घर गए । अंतरी बिहून करै नए नए ॥४८७८॥

करि शृंगार आभूषण भले । हाव भाव मुक्ताहल मलै ॥
 ताल भृदग बजावैं बीण । नयन चपलाई जीते मईन ॥४६०६॥
 गावैं सरस प्राण हर लेइ । आतमध्यान न चित्त डुलेइ ॥
 नाचैं गावैं मधुरी तान । सुनत बचन हर लेई प्रान ॥४६१०॥
 मन बच काया खडा अडोल । व्याप नही हिया मै बोल ॥
 नब बहु जघ्यणी नागी भई । करै आलिनन बहु विष भई ॥४६११॥
 अपणा ध्यान न छोडै जती । विलषी भई यक्षिणी पती ॥
 मुख भयानक रूप विकराल । अपामारग देह की लाल ॥४६१२॥
 केई अजगर केई माँप । लपट दोडि देही सताप ॥
 केई रूप व्याघ्र का करै । गज का रूप महा भय धरै ॥४६१३॥
 निसाँकित किया व्रत दृढ गात । व्यतरी दिया उपसग बहु भाति ॥
 महामुनीस्वर आतम ध्यान । तब ही उपज्या केवल ग्यान ॥४६१४॥
 जे जे सबद दसौं दिस मोर । सुरपति नरपति आए कर जोडि ॥
 छाये रहे विमाण आकास । देख्या इन्द्र अगनि घूम प्रगास ॥४६१५॥
 ताकैं दिग है सीता खडी । अगनि काय निकसैं तिहा बुरी ॥
 ईसान इन्द्र पूछैं विरतात । इह अचिरज देख्या इस भाति ॥४६१६॥
 देखैई कुँड देवता खरे । तिहा कोई धीरज नही धरै ॥
 एह याकी दिग ठाडी कौन । भाखो बात तो मुख मौन ॥४६१७॥
 सौधर्म इन्द्र कहै समझाइ । इह सीता पटराणी रघुराइ ॥
 सत की महिमा सुरपति करै । बाहि विपत्ति भैसी विष परै ॥४६१८॥
 इह सीता सतवंती खरी । असुभ करम तै विपत इहै पडी ॥
 इसके भाव तारण केवली । पूछैं जाइ समझ विष भली ॥४६१९॥

ब्रह्मा

सुर नर लग सब आइया, अगनि कुँड जिह गान ॥
 देखि ताहि मोचत सगै, मुनि कौं पूछैं गान ॥४६२०॥

इति श्री यशपुराणे सर्वभूषण केवस उत्पन्न विधानकं

खोपई

राम द्वारा परीक्षा का करना

रामचन्द्र नै देखी चिता । सीता जलै तो लागै हत्या ॥
 पंखी आदि तिहां सूख्म जीव । भया घुम पाप की नीब ॥४६२१॥
 खोटी बात मुख तें मैं कही । घैसी कदे हुई थी नहीं ॥
 कठिन पड़जमै बाधी आज । जे परमेसुर राखै लाज ॥४६२२॥
 दोड़ बेर यह बिछड़ी सिया । बहुरि भिन्नाप विधाता किया ॥
 अब यह जलै चिता मे जाइ । फेरि लहं सीता किह भाइ ॥४६२३॥
 पहिलै पड़ूं चिता मे घाप । मोपै मर्या न जाय बिनाप ॥
 उबाला कठिन जोजन कै फेर । सीता लड़ी ज्यो परबत मेर ॥४६२४॥
 पचनाम हिरदै संभाल । जिन बीगों सुमरे तिहकाल ॥
 सब भूषण को करी नमस्कार । मन बच काय मन रहै हमार ॥४६२५॥

अग्नि परीक्षा में सकलता

अग्नि माँझ तै जो ऊवरूँ । भूँठ कहै तो त्रिणा परि जलूँ ॥
 पचनाम पडि चिता मे पडी । सीतल भई अग्नि तिह बडी ॥४६२६॥
 उमडधा जल धरती पै फिरै । बहै लोग धीरज नहीं धरै ॥
 विद्याधर गमया आकाश । चहुवां लोग बहै बहु त्रास ॥४६२७॥
 सीता का गुण सुमरै लोग । हम सीता कुं किया बियोग ॥
 झूठे वचन लगाया दोष । कैसे हम पावौ सतोष ॥४६२८॥
 सीता सुमरण चित्त में ध्यान । उबरै सकल सीता कै ध्यान ॥
 निघटधा नीर भया सुख बैन । कहै सकल अस्तुति के बैन ॥४६२९॥
 जिहा थी आग निकुंड की ठौर । बण्णा सरोबर बैठक और ॥
 फूले कमल मंवर गुंजाहि । भले विरख तिहां सीतल छांह ॥४६३०॥
 कचन पाल सरोबर बणी । हंस चकोर तिहा सारस घणी ॥
 जलधर जीव पंखी हैं तिहां । रतन स्थंभासन सीता जिहा ॥४६३१॥
 जै जै-सबद देबता करै । पुहपवृष्टि बहुत हीं पडै ॥
 लबनांकुस सरबर मे बंसे । मन आनंद दोनूँ हंसै ॥४६३२॥
 नया अनम माता का भया । जल के बीच गए जिहा सिया ॥
 नमस्कार करि लागे पाय । सीता भेदी हिए लगाय ॥४६३३॥

सीता कौं जल तैं बाहिर आन । दई बिठाइ स्ववासन वान ॥
 सत की कांति छवि सोभा बणी । कनक सल्लक धरनि मे बसी ॥४६३४॥
 सब ही का संसय मिट गया । जै जै सबद सब ही ने किया ॥
 रामचन्द्र बहु अस्तुति करै । धन्य सीता असा सत बरै ॥४६३५॥
 तेरी सार न जाणी मूढ़ । तुमको देस दिया अग्रूढ़ ॥
 तुमारे गुण की लही न सार । तुमनै बरि तैं दई निकार ॥४६३६॥
 असुभ करम जब उदै हुआ । सुख मे दुःख इक आप्या सिया ॥
 अब अपना मन राखो ठौर । तुमने दुःख न होइ बहोरि ॥४६३७॥
 आठ सहस्र मे सीता बडी । तुमारे सत की कीरत बडी ॥
 सब मिल सेव तुमारी करै । चालो ग्रह मन ससा टरै ॥४६३८॥
 मेर सुदरसन तीरथ जात । बिजयारध पर्वत बहुत भात ॥
 गिरि सम्भेद कपिलापुरी । च पापुर बाणारस नगरी ॥४६३९॥
 जिन जिन बन विपत्ति मे फिरे । अब वे सुख मे देखुं खरे ॥
 लका देखो अबर सब द्वीप । बसे नगर जे समुद्र समीप ॥४६४०॥
 हमने दुःख तुमको बहु दिया । बिमा करो हम पर तुम सिया ॥
 राज भोग भुगतो सब मुख । अब सब टल्या तुमारा दुःख ॥४६४१॥

सीता का उत्तर

सीता कहै धिग यह संसार । धिग जागीं त्रिया अवतार ॥
 राज सुख धिग अर्थ भटार । करू तपस्या ज्यूं पाऊं पार ॥४६४२॥
 त्रिया जनम फेर नहीं होइ । करू ध्यान आतमा सुख होइ ॥
 लोच कैसे बसतर दीना डारि । प्रथीमती भारजका लार ॥४६४३॥
 सकलभूषण का दरसन पाइ । करै तपस्या मन बच काइ ॥
 रामचन्द्र ने लाइ पछाड़ । भई मूर्छा बणी भई संभार ॥४६४४॥
 धीरध वेद जतन बहु करै । सीतली बीजणां ऊपर फिरै ॥
 बाबन जवन सु छाटै काइ । बडी बेर मे चेत्था राइ ॥४६४५॥
 हाइ हाइ रोवै रघुराइ । गए सकल भूषण की ठाइ ॥
 वैई प्रदण्यणा करि नमोस्तु । धर्म बृध्य कही मुनि अस्तु ॥४६४६॥
 ज्यों सुदरसन मेरु के पास । जबु वृक्ष सोहै प्रति उचास ॥
 तैसे रामचन्द्र तिहा बणो । गारह मभा लोग तिहा बणो ॥४६४७॥

ललमण सत्रुघ्न बैठा तिहा । ललबांकुस मदनांकुस जिहा ॥
 अग्रम निबान जोरै हाथ । प्रकासो धर्म श्री मुनिनाथ ॥४६४८॥
 सप्त तत्त्व के सूक्ष्म भेद । सब संसय का होबै छेद ॥
 सत्पुरुष कवन सुगौ मन त्वाड । ते निबै पंचम बसि जाय ॥४६४९॥

संश्रुता

मुनिवर ग्यान अनन्त, दरसन ग्यान चारित्र सो ॥
 कहत न घाबै अन्त, वांणी भेद समझावणी ॥४६५०॥
 सायर अग्रम अथाह, ताहि कवण बिच निर सकै ॥
 जू अजुलि भरि बाह, ताही किम सरभर करै ॥४६५१॥

चौपद

दरसन ग्यान चारित्र सजुक्त । प्रथम बात कहणे की सक्ति ॥
 श्रुतम्यानी कहै वेद विचार । ते कहा जाणी कहै निरधार ॥४६५२॥
 मे मति थोडा करु बखान । अणुमात्र मैं भ्रातुं ग्यान ॥
 जीव तत्त्व सब सौंज अनूप । एक सिध एक ससारी रूप ॥४६५३॥
 अजर अमर सिद्धालै सिध । भ्रमै जीव ससारी त्रिविध ॥
 स्वरग मध्य पातालै बास । चहुंगति भ्रम्या न पुंजी पास ॥४६५४॥
 श्रेय काल भावु तप होइ । समकित सो दिठ राखै कोइ ॥
 संगति साध लहै तब ग्यान । ते जीव पाबै निरबान ॥४६५५॥
 करै धरम पाबै गति देव । मध्यलोक मानुष्य सुख एव ॥
 तिरजंघ जोनि मे दुख घरा मूल । पापै लहै नरक अमूल ॥४६५६॥

नरको के दुख वर्णन

सप्त बिसन का सेवण हार । सात नरक दुःख सहै अपार ॥
 रत्न शर्करा बालुक पंक अरु धूम । तम महातम ए सागौं भूमि ॥४६५७॥
 हुंडक देह काया बहु बडी । जूख पिपास सीत उसम बडी ॥
 मुक्त का छिद्र हैं मुई समान । दुख का संत न जानुं सयान ॥४६५८॥
 ज्वारी फोर का काटै हाथ । परदारा लाठी कुवली साथ ॥
 सुरा पान कुं तातो राख । घाघेटक का काटै घाग ॥४६५९॥
 बैतरणी ठाता है तिहा । बासै पकड़ै उनु नै जिहा ॥
 मंस अहारी मुख ताता प्यंघ । खेदन-खेदन कीजिए कांछो खड ॥४६६०॥

केई ऊपर भारा धरै । चीरै देह टूक दोड़ करै ॥
 बहुरि दुबै देह की देह । मारै मुदगर कीजे खेह ॥४६६१॥
 पारा जिम समटै खंड फेरै । पाप्या नै राखई बेर ॥
 जिहि जीव का खाया मास । तिए कारण बे पावै नास ॥४६६२॥
 निस भोजन अणगालो नीर । उहा न जाएँ कंसी पीर ॥
 मिथ्याती कुं भैसी गती । जिनवाणी कुं न धारै चिती ॥४६६३॥
 देवसास्त्र गुरु निसचै नही । ताहि नरक गति आवै सही ॥
 जे दुख मै बरगो समझाइ । ताका पार न पाया जाइ ॥४६६४॥

बूहा

उपसम वेदक खाइका, समकित विष है तीन ॥
 जे मनमे निसचै धरै, ते जाणौ परबीन ॥४६६५॥

चोपई

जाकै है समकित दिड चित्त । ते गति खोटी भ्रम न नित ॥
 लहै मुक्ति समकित परसाव । समकित बिना करणी सब बाद ॥४६६६॥
 अडज पोतज गर्भ उतपत्ति । स्वेतज सनमूर्खन उपजत्ति ॥
 पृदगल लानु ए विष धीर । अहारक तेजस कारमन सरीर ॥४६६७॥
 संख्यात परदेसी अवर असख्यात । अनत प्रदेसी जीव की जाति ॥
 अष्ट अंग ग्यान का भेद । पच खरे तीन खोटे रेद ॥४६६८॥
 मनिश्रुत अवधि मनपरजय भली । पचम ग्यान कह्यो केबली ॥
 चक्षु अचक्षु अवधि ७ ग्यान । दगसन मन परजय केवल प्रमान ॥४६६९॥
 कुमति कुश्रुति खोटी अवधी । करै दुर आतमा कुं सोधि ॥
 मध्यलोक मे अडाई द्वीप । अवर समुद्रह इहै समीप ॥४६७०॥

द्वीप समुद्र वर्णन

जबुद्वीप जोजन इक लाख । लवण उदधि चउर्धा पाख ॥
 जिह मे बडा सुदर्शन मेर । घट् कुलाचल बिग बहु फेर ॥४६७१॥
 हिमवन महा हिमवन नील । विजयारथ परबत असभूल अमील ॥
 सीता नदी सीतोदा और । चउदह नदी निकसी गिरि फोड ॥४६७२॥
 क्षेत्र भरत अरावत होइ । इस बिष क्षेत्र दसों दिस सोइ ॥
 घटै बडै तिहां व्याप काल । एक सौ साठ क्षेत्र सुबिसाल ॥४६७३॥

सदा सासता हैं वह बेज । दीप भलाई माँहि समेत ॥
 घातकी पुष्करार्थ दुमकां जाँह । मानुषोन्न लनि पुण्य प्रमान ॥४६७४॥
 तामें व्यंतर किन्नर बसै । किपुण्य महामण्डबंद दिसेँ ॥
 यक्ष राक्षस भूत पिचास । जोति पटल जोतीस्वर साँच ॥४६७५॥
 नवग्रह नक्षत्र सताबीस । सोलह स्वर्ग सागर बाईस ॥
 सौधमें ईसान सानकुमार । महिद्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सार ॥४६७६॥
 लांतब कापिष्ट मुक्त महाशुक्त । सतार सहस्रार सह सुक्त ॥
 धानत प्रानत धारन भण्युत । सोलह स्वर्ग कह गये भगवंत ॥४६७७॥
 ताके ऊपर नब नबोत्तरे । उस परि पाषि भणुत्तरे ॥
 विजय विजयंती जयत । अपराजित सरबारथ सिद्धि निबसंत ॥४६७८॥
 मुगति क्षेत्र है ताके भंत । तिण ठा पतुका सिद्ध भसंत ॥
 रामचन्द्र कीया परसन्न । मुगति भेद समझावो भिन्न ॥४६७९॥
 मिटै संदेह संसय को पीर । अजर अमर नहीं व्यापै ईर ॥
 दरसन ग्यान का नाही बोट । सदा सरबदा नहि है विछोब ॥४६८०॥
 सखारी कुं कदे न सुख । सुख भुजुन तै सुख अनै दुःख ॥
 मुभ संजोग तै सुख का मूल । माया मोह मे रहिया भूल ॥४६८१॥
 भया विछोह सब सुख बिसरधा । योग योग धारत मे भरधा ॥
 ए सुख जाणो दुःख समान । मोक्ष सुख का मत न धान ॥४६८२॥

सुख की तरतमता

सबतै सुखी जानी प्रथीपति । उनतै मुखिया है चक्रवति ॥
 किन्नर देव है इनतै सुखी । जोतगी के सुख बहुतै बकी ॥४६८३॥
 इन्द्र धरणेन्द्र सब ही तै बाधि । सरबारथसिद्ध सुख भगाध ॥
 सबतै बडा मोक्ष का सुख । तिहां न व्यापै कबही दुःख ॥४६८४॥
 तै सुख किस पै बरणो जाहि । असी बसतु मही पर नाहि ॥
 रामचन्द्र कीया नमस्कार । मोक्ष पंथ किम उतरे पार ॥४६८५॥
 सरबभूषण बोल्या केवली । जिन धरम वाली सबतै भली ॥

सर्व बर्लन

सप्त तत्त्व षट द्रव्य बलांत । नो पदार्थ नै बरसन ग्यान ॥४६८६॥
 पञ्चकाय लेख्या हैं षष्ट । द्वादश अनुप्रेष्या जू अष्ट ॥
 दयाधरम दस बिच स्थी करै । सोलह कारण का व्रत धरे ॥४६८७॥

सम्यक्त सु वाली चारित्र । ते मुनि कहिए सदा पवित्र ॥
 जोतै जोति मिलै जब छाई । तब वह जग निरंजन राई ॥४६८८॥
 सम्यक बिना करै इह तपै । ग्यान कहै कै सुमरै वह जपै ॥
 मिथ्या सौ लपार्वे बे बित्त । उनको होवै नरक की धित्त ॥४६८९॥
 प्रातम ग्यान दीपक की जोड़ । पावै मुगति सिख सब होइ ॥
 करम सकल हो जावै दूरि । रहै ग्यान नित प्रति भरि पूरि ॥४६९०॥

ब्रह्म

जे जीव दृढ समकित धरै, मिथ्या भरम निवार ॥
 निसचै पावै परमपद, मुगति सुख अपार ॥४६९१॥

चोषई

जीव तत्त्व संसारी दोड । भव्य अभव्य उभय विष होइ ॥
 अभव्य तपस्या करै अनेक । काया कष्ट बिना विवेक ॥४६९२॥
 जे पावै नवग्रीवक ध्यान । बहुरि भ्रमै भवसायर ध्यान ॥
 मुक्ति न जाय पावई निमोद । अभव्य न सीरै पचरहै अमोद ॥४६९३॥
 भव्य जीव समकित दिढ धरै । ले चारित्र भवसायर तिरै ॥
 लहै मुक तिहां सुख निधान । दरसन तहां अनंत बल जान ॥४६९४॥
 पुदगल है बीजा तत्त्व । कामन मध्य होइ सब धित्त ॥
 दया भाव पूजा संजुत । मानव बैह बिना न होइ मुक्ति ॥४६९५॥
 प्राश्रव होइ करम इह भाति । ज्यों सरवर में नीर बहात ॥
 बाधे पाल बधे तिहां नीर । बरसै धनहर गहर गभीर ॥४६९६॥
 सवर पचम तत्त्व का भेद । पालई फोडि करैइ जब छेद ॥
 वधता नीर सकल वह जाइ । जो कछु पहिलै रहै ता ठांइ ॥४६९७॥
 निर्जरा तत्त्व शष्ठमा जान । सुकै नीर जब भान तपै ध्यान ॥
 भ्रमै करम निर्जरा होइ । मोख तत्त्व सातवां सोइ ॥४६९८॥
 रामचन्द्र सुणि बोलै वैन । सबतै उत्तम समझो जैन ॥
 सकल बात को मिठयो संदेह । भूँठी मया जाखी एह ॥४६९९॥
 जीव का सगा न संगी कोइ । धर्म सहाई जीव की होइ ॥
 राज विमूति तजौ सब नारि । मोया लखमन मोह अपार ॥४७००॥

जिसकी मर्या न छूट बड़ी । कैसे दिख्य पाली सरी ॥
 सकल भूषण मोरीं सुविचार । तुम हो मुक्तिप्राप्ति अवतार ॥५००१॥
 कोई दिन तुम मुगतो राव । पाछे करो आवम काज ॥
 उपजे केवल पावे मुक्ति । सुर नर सकल करैने भगति ॥५००२॥
 इतनी सबक निसर्ब भई । सेवा रामचंद्र मन दई ॥
 सब काहु जाय्या जगदीस । सुर नर सकल करैने भगति ॥५००३॥

अद्विल्ल

श्री रामचंद्र सु नि घरम महिमां करी
 जैन घरम सु चित रहै पल पल बड़ी ॥
 करई सेव सब लोग श्री रघुनाथ की
 साथै तप वन माहि सुता जनक राय की ॥५००४॥

इति श्री वचनपुराणे सीता दिव्या राम वरम अवध विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

विभीषण द्वारा प्रथम

अभीषण बोले दोई कर जोड़ि । कहो घरम ब्राणी जब होड़ि ॥
 मेरे मनका मिटै सबेह । राम लक्ष्मण कू बणा सनेह ॥५००५॥
 किण कारण पावा बनवास । दडक बनमे रहै निरास ॥
 रावण पाई विद्या बनी । बार वेद भ्यानी भर कुंती ॥५००६॥
 विद्याधर सेवै सब भाइ । तीन लड के रावण राइ ॥
 जा सनमुख जीत्या नहीं कोइ । चद्र भादि मान भग होइ ॥५००७॥
 जानवत जाखै राजनीत । परनारी परि डोल्या चित्त ॥
 सीता कौ हरि सका गया । ताबै बहुत उपद्रव भवा ॥५००८॥
 लक्ष्मण कै करि रावण कुआ । पहिना बंध बांध्य नवा ॥
 सीता पतिव्रता असतरी । इह कौ सदा विपति मै परी ॥५००९॥
 किहू कारण बरबा करी लोग । राजि भोग मे भए विजोग ॥
 इनके अब भाखो समयभाइ । मेरे मनका संसय जाइ ॥५०१०॥

सर्वभूषण द्वारा विस्तृत वर्णन

सर्वभूषण बोले भगवान । बारह सभा सुलीं दे कान ॥
 जंबूद्वीप यह क्षेत्रवि भरत । दक्षिण कीड नगरी सज्जित ॥५०११॥

मेंरदत्त सेठ बसै तस मधि सुनवा असतरी महा सुबुधि ॥
ताकै बरभ भए हो पूत । रूप लख्यए सोभा बहुत ॥५०१२॥

प्रथम धनदत्त बूजा बसुदत्त । जगबल एक प्रोहित सोहत ॥
सागरदत्त बणिक तिहां बसै । कनकप्रभा कामिनी संग रसै ॥५०१३॥

गुणवती ताकै पुत्तरी । रूपवत सावण्य गुणभरी ॥
जोवनवती गुणवती भई । पिता जाइ धनदत्त नै दई ॥५०१४॥

तिलक करि श्रीफल दे गोद । दोउछां भयो हरल प्रमोद ॥
श्रीकांत नाम बणिक तिहां बसै । जाकै बीनार बारह कोडि लसै ॥५०१५॥

उनकै मन तब बैठी बुरी । धनदत्त सु सगाई क्युं करी ॥
मैसी नारि सोमै मो गेह । माता सुणि पुत्र को नेह ॥५०१६॥

धीरज मो समझावै बात । चिंता सो बहु हुबं दुखी गात ॥
अब मै जाइ करि करूं उपाव । राखि पुत्र अणणा मन ठाव ॥५०१७॥

माता बचन सुणि छोडघा सोच । सागरदत्त बरि धाय पहुत ॥
कनकप्रभा मुं जाइ करि मिली । मनकी बात प्रगासी भली ॥५०१८॥

कहा नयदत्त कहा धनदत्त । वाका घर आया तुम चित्त ॥
कन्या दीज्ये इसा नै जाइ । मेरै नखमी की अधिकाइ ॥५०१९॥

द्वादस कोडि बीनार घर माहि । मेरी सरभर कोई नाहि ॥
फेर सगाई अपनी लेह । मेरा पुत्र नै कन्या देह ॥५०२०॥

रतनप्रभा सुणि मन ललचाइ । कहूं कंत नै और ही दिडाइ ॥
श्रीकांत है महा बलवंत । रूप लख्यए महा सोभावंत ॥५०२१॥

सब तै सुखी लक्ष्मी का धणी । बाहि देहु कन्या आपणी ॥
धनदत्त सेती लेहु छुडाइ । बोली असे घरली इह भाइ ॥५०२२॥

बसुदत्त सुणि कोप्या बहु भात । क्रोध चढै मसलै दोह हाथ ॥
श्रीकांत सोटी बुधि लाग । चाहै धनदत्त की भाग ॥५०२३॥

जगबल सेती मता बिचार । गह्वा खड्य छिज्या तिहु बार ॥
अरघ समभ अंधियारी रयन । बसुदत्त बल्वा कपि रातै नैन ॥५०२४॥

नील वरण के बसतर सांझि । जतन किया बैरी कै काज ॥
श्रीकांत की पहुण्या पील । सोवत लह्या बगीचें ठौरि ॥५०२५॥

बसुदत्त नै तब सोच्या ग्यान । अणचित्वा का हनुं परान ॥
श्रीकांति सौ जणाई सार । तो मै बल अधिक तो संभार ॥५०२६॥

मो सुं तूँ करि बुध अपार । श्री कति कर गही तरवार ॥
 दोनुं मुझ्या एकण ठाव । अए मृम बध्याचल भाव ॥५०२७॥
 मागरदत्त सुंणि इह बात । रत्नप्रभा समझाई इह भांत ॥
 इह कन्या धनदत्त कूँ दई । तेहै उपाधि उठाई नई ॥५०२८॥
 ता कारण तें इतनी करी । बाके प्राण गए इह घरी ॥
 धनदत्त कौ दे कन्या विवाह । कीए मगलाचार उछाह ॥५०२९॥
 लिख्या लगन साधो सुभ घडी । विवाहि दई गुस्तावंती तिह घडी ॥
 बीता दिन बहूतै इह भेस । चरचा करै लोग इह देस ॥५०३०॥
 इनका विवाह अभाग्या भया । वसुदत्त जीव एण कारण गया ॥
 अमी चरचा सुणी धनदत्त । वंराग भाव घरघो उन चित्त ॥५०३१॥
 धिग विवाह धिग यह असतरी । ता कारण विपत्ति मोहि घडी ॥
 तज्या देस बन मारग गछो । बन मे रहै का या दुख सत्तो ॥५०३२॥
 गुलावंती छोडी घर माझ । कत बिना कुरै दिन साझ ॥
 मिथ्या धरम निसचै मन धरै । जैन धरम की निदा करै ॥५०३३॥
 मरि करि भ्रमै मृगनी जाइ । बिद्याचल मे पाई ठाइ ॥
 जिहा थे मृग दोन्युं इस मेर । हिरनी देख लई घना बेर ॥५०३४॥
 दूजा मृम दउठघा पाळै ताहि । दोनूँ मरि करि हुवा बाराहि ॥
 उहा तें मरि हाथी दोई भए । नैसे साठ की पीचीता भए ॥५०३५॥
 बहुर सीमाल भ्रमै जौन । बेर बच लाय्या इह जौन ॥
 वह धनदत्त फिरै बन बीच । बिना नीर तीरषा भए बीच ॥५०३६॥
 भई रयण तिहा देख्या साध । बहै मौन जिन धरम धाराध ॥
 उनके कर्मठल परिदिष्ट करी । जल पीवण की इच्छा की घरी ॥५०३७॥
 मुनिवर अवधि बिचारै ग्यान । इह है भवि जीव इस ग्यान ॥
 या कौ सीजे दया सबोध । पुरण भाव पुजै इह ओध ॥५०३८॥
 मौन छोडि बोलै तब जती । निस ओवन तें खोटी गती ॥
 जल पीवत होवई पाप । बहुत गति में सहे संताप ॥५०३९॥
 अरण्य हाथ हथ जलनं देह । तेरा मन इच्छाँ तो लेह ॥
 धनदत्त के मन निसचै भई । अनपाणी निस घालखी लई ॥५०४०॥
 देहि छांडि सौधर्म बिमोह । महा रिषकंत सब में प्रवांन ॥
 मुगति भाव श्रेष्ठपूर लखइ । छैर सेठ बापी सरवर ॥५०४१॥

धारणी नाम भी पटवारी । सीलवत सोभासु वारी ॥
 पदमपुत्र जसकै गरभ भया । देव जीव सुल दाई भया ॥५०४२॥
 निसतर छाया घरमेष्ट । श्री दत्ताराखी सम्भवदृष्टि ॥
 प्रजा सुखी दुखी कोई नाहि । सघन नेह तिहा नीतल छाह ॥५०४३॥
 पदमरुचि हुवा असवार । वृषभ देख्या वनमे तिह बार ॥
 अत बांडवै भी पठया बिललाइ । बाहि देखि उपजी दया भाइ ॥५०४४॥
 उत्तर भूमि बाकै ढिग गया । पाच नाम श्रवण मे दिया ॥
 श्रीदत्ता गर्भ उपज्यो सो भाइ । वृषभध्वज पुत्र कंचन सम काइ ॥५०४५॥
 जनम समे दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ॥
 दिन दिन कुमर वर्ष मुख माहि । सात बरस का हुवा नरनाह ॥५०४६॥
 जिह बन मे भुवा था बहैल । बा वन निकस्या करण सहल ॥
 देखि भूमि भव सुमरण लई । उतरा तिहा पिछली मुख थई ॥५०४७॥
 हु था वृषभ मरघा था परघा । पचनाम किरा ही कछा खरा ॥
 वहै प्रसाद राजा मुत भया । भव सुमरण चित मे भया ॥५०४८॥
 जेहुं मरता यू ही परा । अंसा जनम कहा तं घरघा ॥
 अब जे उमकू देखू आजि । देहि सकल बाहि कू राज ॥५०४९॥
 राज कु वर इहै आसा दई । जीत्यालय नीव दिवाबो सही ॥
 कोस एकलो देहुग करघा । तिहा चितराम बहुत विघ घरघा ॥५०५०॥
 भाति भाति के चित्र मवारि । वेद पुराण लिखाए तिह बार ॥
 जिन चौईसौं बिब कराइ । वृषभ की सूरत पीलि लिलवाइ ॥५०५१॥
 तिहा रखवाले राखे घरों । दुष्ट मिथ्यादृष्टि कूं हरों ॥
 पदमरुचि सेठ आया देहुरे । सहस्रकूट ध्वजा फर हरे ॥५०५२॥
 देखी पीलि वृषभ का रूप । पिछली सूरत सभालि स्वरूप ॥
 ध्यान लगाइ रह्या तिहा सेठ । किकर गया राजा कै दिठ ॥५०५३॥
 कही बात व्योरा सु जाइ । आया कु वर जिण मदिर ठाह ॥
 पदमरुचि देख्या राखकुमार । रहे थकित होइ इतनी बार ॥५०५४॥
 तब पूछै वृषभध्वज राइ । तू कहा देख रह्या रिक्काइ ॥
 कहै सेठ पिछला बिरतात । सुनकरि आनधा बहु भाति ॥५०५५॥
 धन्य पदम रुचि तेरी बुद्धि । तारी पाई मैं वह रिद्धि ॥
 हुम प्रसाद मैं यह गति लही । जो मन इच्छै सो बों सही ॥५०५६॥

निसचक्षा नैं दिप्सा लई । राजविभूति वृषभध्वज नैं दई ॥
 वृषभध्वज पदम रुचि । भुगतैं राज कर मन सुचि ॥५०१७॥

पहली करी धरम की साइ । सुख भुगतैं सब मन भाइ ॥
 वृषभध्वज राज करचा बहु वर्ष । समाधिमरणा कीयों बहु हर्ष ॥५०१८॥

ईमान स्वर्ग परि हुवा देव । भुगतैं सुख किनर करैं सेव ॥
 पदमरुचि धरम के ध्यान । ईसान स्वर्ग में पाया विमान ॥५०१९॥

विजयाग्रह पच्छिम विदेह । नशान्न नगरी उत्तम गेह ॥
 नदीस्वर तिहा भूपती । कमलप्रभा राणी सुभ मती ॥५०२०॥

पदमरुचि जीव गरम श्वतरथा । नयनानंद नाम तिहां धरपा ॥
 नदीस्वर पति संवस भार । नयनानंद नैं राज दिवा तिह बार ॥५०२१॥

बहुत दिवस उन कियो राज । तप करि प्राप संभारपा काज ॥
 महेंद्र स्वर्ग पाया सुख ठाम । उहा तैं चया लेमाकर गाम ॥५०२२॥

मेरु सुंदरमन विमल बाहन घूप । पदमावनी राणी सस्वरूप ॥
 श्रीचन्द्र जनमिया कुमार । पिता नैं सौप्या सब ससार ॥५०२३॥

विमलबाहन लिया समय योग । श्रोत्र द तिहा भोगवैं भोग ॥
 ममाधिशुपति मुनि धामम भया । ताकैं ससि सिष्य तप कियो ॥५०२४॥

वनमें करै तपस्या धरणी । इनकी सूरत नगर में सुखी ॥
 चले लोग बहु मुनि की जात । बाजंतर बाजैं बहु भाति ॥५०२५॥

राजा जब बाजंतर सुण्या । मनमें सोच किया तब चला ॥
 नहीं कोई तीरथ नहीं कोइ परब । तिहा चली परजा यह सरब ॥५०२६॥

किंकिर भाइ जगाई सार । मुनिवर प्राए वन है मभार ॥
 दरसन कौ परजा इह चली । भूपति सुणि उपजी मन रली ॥५०२७॥

मुनि के पास जाना

उतरि स्थंघासण करी डंडोत । नरपति चल्या तब लोग बहोत ॥
 दरसन पाइ परदसना दई । नमस्कार करि पूजा अई ॥५०२८॥

पूछैं धरम जोडि दोड हाथ । वांछी कहौ श्री मुनिनाथ ॥
 मुनि समाधि कहै बलात । च्चार बेद के उत्तम ग्यान ॥५०२९॥

प्रथमानुजोग प्रथमही जान । करणानजोग दूसरा वलाण ॥
 चरणानजोग द्रव्यानजोग । इनकैं भेद सुणैं सब लोग ॥५०३०॥

नव विष है इशां का भेद । अक्षेपनी प्रक्षिप्तपनी गुंन भेद ॥
 निक्षेपनी निक्षेप का संवेदनी । संसाधिवैद निरवेदनी ॥५०७१॥
 पुंन भोगबै राग कारनी । जती सरावग विष सब भली ॥
 राजा सुणत भयो वैराग । राज विभूत कुटब सब त्याग ॥५०७२॥
 घुरतकात पुत्र को राज । आप किया दिगंबर साज ॥
 समाधिगुप्त मुनिवर ढिग जाई । विज्ञा लइ मन बच काइ ॥५०७३॥

तपस्वी जीवन

दवा भाव आतम सु चित्त । सूक्ष्म बादर तस आवर भित ॥
 सब जीव जाणैं आप समान । क्रोध लोभ तजि माया मान ॥५०७४॥
 मास उपवास पारणा एक । कबही च्यार मास की टेक ॥
 दान दत्ता मूल न लेइ । उदइ बिहार इह विष सो करेइ ॥५०७५॥
 कायोत्सर्ग पदमासन जोष । पूजा करैं मकल तिहा लोग ॥
 रहै मौनि निसवामर तिहा । धरम हेत कबही कछु कहा ॥५०७६॥
 मुनि वाणी जीव का आधार । भव्य सुणैं ते उतरै पार ॥
 मिथ्यादृष्टी कं हिये न माच । सेवै विषइद्री सब पांच ॥५०७७॥
 सकल विषय छड़ी मुनिराज । संसारी सुख मन न सुहात ॥
 आप तिरैं त्यारैं बहु जीव । भ्रंसा माधु धरम की नौब ॥५०७८॥
 सहस्र अठारहै अंग समेत । मील व्रत पालैं करि हेत ॥
 विश्व समान परिग्रह है नहीं । दमौ दिमा अबर है सही ॥५०७९॥
 सुमति पांच अरु तीन गुपति सही । बारह व्रत विष सुं पालै वही ॥
 महै परीसा बीस अनै दोइ । बारह अभ्यतर तप जोइ ॥५०८०॥
 चउरासी किरिया कौ करै । अठाईस मूल गुन धरै ॥
 समकित सो निश्चै है । चित्त अनुप्रेक्षा सु विचारै नित ॥५०८१॥
 सीयालै सरवर की पाल । पढै सोत तिहा महा विकराल ॥
 ऊनालै परवत पर जोग । छोडे सकल जाति का भोग ॥५०८२॥
 बरखा काल वृष्य तल खरे । तिहा तैं च्यार मास नही टरै ॥
 मछर डास अति उलै बयाल । निरभय निश्चित मन की बाल ॥५०८३॥
 देही छोडि ब्रह्म सु विमान । भया इन्द्र महा बलवान ॥
 दस सागर की पूरण आय । ते सुख किस पै बरण्या जाई ॥५०८४॥
 मृनाल कुंड नगर का नांव । विजयसेन राजा तिह ठाव ॥
 रतनचूला तार्कै असतरी । बखकुमार जनम्या सुभ घडी ॥५०८५॥

हेमवती परनाई नारि । स्वयम्भ पुत्र जनमीया कुमार ॥
 श्रीभर्त्स पुरोहित दयावंत । स्वस्तमती सत्री महागुनवंत ॥५०८६॥

भृगुनी जीव भ्रमी बहु जौनि । भई हृषनी गंगातट गौन ॥
 कहेम भाहि हृषनी थकी । उहा तौ बाहर निकल नहीं सकी ॥५०८७॥

व्याकुल भई भरणा के भाव । तरगवेग विद्यावर नाम ॥
 आकासगामनी गया था जात । याहि देखि कह्यो भई गात ॥५०८८॥

उतरि भूमि पडै नवकार । सरणां तए व्यापार परकार ॥
 ह नी मरि प्रोहित कै प्रेह । पुत्री भई सकोमल देह ॥५०८९॥

हुई वृध भई सभाल । मुनीस्वर देखि हसो वह बाल ॥
 पिता कहे उसने समझाइ । ए मुनीस्वर ममता नही काए ॥५०९०॥

उनकूं हम्या होय बहु पाप । अब भव सहै दुःख सताप ॥
 श्रीमी सुणी पिता की बात । मनमे ग्यान घरघा बहु जात ॥५०९१॥

सुण्या धरम जिन मारग गह्या । दिढ सेती समकित बहु लह्या ॥
 कन्या भई विवाहन जोग । रच्यो स्वयवर आए लोग ॥५०९२॥

स्वयंभु कुंवर इह इछा घरै । जे कन्या मुझ कौं ही बरै ॥
 प्रोहित कहै कन्या जाकु देव । सम्यक्त करै जियोस्वर सेव ॥५०९३॥

सभ कुंवर मिख्याती घणा । प्रोहित सोचै चित्त आपणा ॥
 इह राजा मै सरणै बसू । जे इह कन्या भवरै देखू ॥५०९४॥

या सेती मुझ बाधै बरै । अब छिन याहि करूँ कछु फेरै ॥
 मडप दूरि करघा तिह बार । सब कुंवर मन बैर अपार ॥५०९५॥

इक दिन मारघा प्रोहित श्रीमूत । छोडे प्राण सम्यक्त संजुत ॥
 बह्योत्तर पाइया विमाण । उह सम सुखी न दूजा जान ॥५०९६॥

वेदावती प्रोहित की सुता । व्यापी ताहि काम की लता ॥
 वेदावती करै तब सोच । संभकुमार सौ वांछै रुचि ॥५०९७॥

सुपनां मे भृगतै वह भोग । जागी तबै उसे व्याप्या सोय ॥
 धिग धिग ए पाँच इन्द्री के सुख । क्यण भ्यंतर फिर होवै दुःख ॥५०९८॥

मो कुं तो उपजी पी कुबुधि । विषया मिलाय डगाया चित्त ॥
 अपणां मन बहुत ही भिष्ट । बरो ध्यान जिन समकित दिष्ट ॥५०९९॥

धारजका हरिकांता के पास । दिक्ष्या लई भुगति की आस ॥
 करै तपस्या वन में जाइ । मास उपवास पारणा कुं आइ ॥५१००॥
 तपकरि वेह जोजरी करी । समाधि मरण कीया तिह घडी ॥
 पट्टची ब्रह्मोत्तर कै थान । देवगना भई सुजान ॥५१०१॥
 संभु कु वर सुण करै विजोग । बेगवती का व्याप्या सोग ॥
 अत समझ करि सोच्या न्यान । दिध्या लई जती ढिग आन ॥५१०२॥
 स्वयंजं को कीया सरब का राव । प्रभासकुंद भया तिहा नाउ ॥
 प्रभासकुंद को दीया राज । पिता किया दिगबर साज ॥५१०३॥
 प्रभासकुंद राज । अति बली । प्रजा सुखी मानै सब रली ॥
 एक दिन बिचित्र सेन भुनि पास । सुणियो घरम कुगति को नाम ॥५१०४॥
 जोडया राज भोग ससार । दिक्षा लई समय का भार ॥
 तेरह बिघ सौ चारित्र घरघा । छठे मास पारणा करघा ॥५१०५॥
 इह बिघ सौ करै तपस्या आप । जनम जनम का टूटै पाप ॥
 राग दोष तजि आत्मध्यान । ग्रीष्म रति परवत पर आन ॥५१०६॥
 सिला हैह ऊपर तपै सूर । चार मास तपै इह बिघ पूर ॥
 बरखा काल रख तल जाड । तीन काल तप सौ मन ल्वाइ ॥५१०७॥
 माछर चूँट देही दहै । बेलि लपट देही से रहै ॥
 सीयाल हेमाचल ठौर । गगातट सीत को जोर ॥५१०८॥
 बहुत वरख ऐसा तप किया । कनक प्रभा खेचर आढया ॥
 समेद मिलर जावै था जान । ताहि देख चित्या इह भांत ॥५१०९॥
 धन्य इन्है खेचर गमन आयास । जो मन चलै ता पुरै आस ॥
 जहा मन करै तिहा इह जाड । धन्य है विद्याधर एह राइ ॥५११०॥
 मेरे तप का एह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोड ॥
 तीन खड का पाऊ राज । विद्या फेरै करी मन काज ॥५१११॥
 देही छोडि शांति कुमार । रतनश्रवा घर नियो अवतार ॥
 केकसी गरम दसानन भया । पाछै रावण नाम इह थया ॥५११२॥
 घनदत्त जीव भयो रामचन्द्र । वसुदत्त लछमन बली अनंद ॥
 वृषभध्वज भया सूग्रीव । जगवली ते अभीषण जीव ॥५११३॥

विभीषण का पुनः प्रव्रत करना

मुगवान भामंडल देह । मुनवती भई जनक के गेह ॥५११४॥
 मभीषण बोलै दूँ कर जोडि । बालि तणा भव भणौ बहोडि ॥५११५॥
 किम रावण सो थयो विरुद्ध । करी तपस्या उन विन ही जुष ॥
 क्यूँ रावण उठाया कैलास । तिण ठा भया मान का नास ॥५११६॥
 उनका भव व्यवरा सुँ कहौ । इह मो मन का संसय दहौ ॥
 विदारण बन मे एकेक मृग । इह माहि मदा उपसर्ग ॥५११७॥
 सामायिक करै था एक मुंती । उन मृगनै घरम निसचै मुनी ॥
 देही तजि अँरावत क्षेत्र । बृहत् राजा सिव ती मोहन ॥५११८॥
 मेघदत्त है मृग का जीव । भया पुत्र घरम की नीव ॥
 विरष होय करि भया सचेत । जिनवाणी सूँ स्याया हेत ॥५११९॥
 अणुव्रत पालै वे घर माहि । रागद्वेष मनमे कछु नाहि ॥
 समाधिमरण सो छोडी देह । ईसान स्वर्ग देव कै गेह ॥५१२०॥
 पुरव विदेह विजयवती देम । कोकिला नयर कात सीम नरेम ॥
 रतनाखी रागी गरभ आई । ईसान स्वर्ग से चये तिह ठाइ ॥५१२१॥
 सुप्रभ नामक भया कुमार । रूप लक्षण सुख महा अपार ॥
 जीवनवत भए जु कुमार । पिता ने राज दयो तिह बार ॥५१२२॥
 आप तात दिया लई जाइ । करै राज ते सुप्रभ राइ ॥
 एक दिवस मुनि पार्न गया । सुण्या धरम सयम व्रत लिया ॥५१२३॥
 नेरह विध पालै चाग्रि । रागदोष जीते दोइ सत्र ॥
 बाईस पगीया महे बहु बरस । आतमध्यान धरचा बहु रहस ॥५१२४॥
 तप करि गया सग्वारथसिद्ध । तिहा ग्यान की पूरी रिष ॥
 चरचा माहि तिहा बीतै धडी । सकल ग्यान रिष पूरण जुरी ॥५१२५॥
 उहा तै चया कियद सै गेह । बालि पुत्र कचन सम देह ॥
 तिसकै सदा निरजन ग्यान । चित माहै कछु न भावै भान ॥५१२६॥
 राजन सो तब हुबा वाद । दया निमित्त छोडे विष बाद ॥
 गिरि कैलास कियो तप जाइ । रावण तिण घाणक सूँ आई ॥५१२७॥
 यस्या विमाण क्रोध के भाइ । कैलास परबत लिया उठाइ ॥
 मुनिवर समझ्या ग्यान सी देखि । दयाभाव अंतरगति पेखि ॥५१२८॥

बहुत साध गिर ऊपर रहे । इह पापी सगला नै दहें ॥
 चैत्यालय ते श्री जिनदेव । उनकी दया बिचारै भेब ॥५१२६॥
 पदम अंगुष्ठ सेती गिरदाब । धरधो मेर पाताली जावि ॥
 दशानन चिधारधो तिहां । सकल साध सौं रुदन करै जिहां ॥५१३०॥
 मुनिवर कै मन आई दया । पषा उठाइ ऊचा कर लिया ॥
 रावण मान भंग तब भया । नमस्कार बालि कुं किया ॥५१३१॥
 मन बंराग भया तिह बार । उभा छोडघा सब परिवार ॥
 तब धरणेन्द्र बिचारै ग्यान । यह प्रतिनारायण उपज्या ध्यान ॥५१३२॥
 इनका है असा नियोग । भुगतीं तीन खड का भोग ॥
 जे इह दिख्या ले धरि ध्यान । त्रैसठ सिलाका होबै दान ॥५१३३॥
 धरणेन्द्र तब समोघ्या ताहि । सक्ती बाण दे दीया ताहि ॥
 ताहि समोधि दीया सक्ती । फेर सभाल्या भुगत्या जुक्ती ॥५१३४॥
 तीन बंड जीत्या सब देस । लका राज करै सुप्रसेस ॥
 करम डवै ते भूमिगोचरी । उनै आई लंका स्थिति करी ॥५१३५॥
 मारघा रावन लीया बैर । जीत्या तीन बंड सब बैर ॥
 सतपुर नगर पुनरबसु राइ । भूमिगोचरी बली अधिकाइ ॥५१३६॥
 चक्रवर्ति की सुता विवाही । विद्याधर ले भाज्या ताही ॥
 उन नारी तप बहु दिन किया । क्षातपुर पति पुनर्वासु की त्रिया ॥५१३७॥
 पुनर्वसु कुं भये बहु सोग । राज जोड करि लोया जोग ॥
 करी तपस्या आतम ध्यान । अंत समय बाध्या निदान ॥५१३८॥
 मैं बलहीन तो त्रिया ले गया । वा कारण बहुतें दुख भया ॥
 मेरे तप का इह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ॥५१३९॥
 पुनर्वसु का जीव लक्ष्मण हुआ । या के करसैं रावण मुचा ॥
 बेगवती मुनि निदा करी । झूठा वचन कहा तिन घडीं ॥५१४०॥
 मुनि नै कही सील भंग किया । मिथ्याती यूं मनमे बारिया ॥
 उदय भया वह करम अपूठ । समकित ये माना सब झूठ ॥५१४१॥
 बेगवती असी अग्रयान । मुनि को दोल लगाया जान ॥
 पाछैं समझि बिचरी चित्त । पसचाताप करै नह नित्त ॥५१४२॥

मैं बयूं मुनि नैं लगाया दोष । कुमति भ्यांन का हुवा पोष ॥
 अब इह पाप टरै किह भति । मैं यूं ही बूख दिया मुनि नाथ ॥५१४३॥
 रिष निदा है सब तैं बुरी । पाप पोट अपणैं सिर बरी ॥
 कठिन करम मैं किया अबाइ । औसा दोष मिटै किह भाइ ॥५१४४॥
 समझि जैन की दिव्या लई । तप करि फिर उत्तम गति भई ॥
 पूरब करम उदय भया भाइ । पाया कष्ट असुख के भाइ ॥५१४५॥
 सीता सती दिव राख्या सत । फिर पाबौगी पचम गति ॥५१४६॥

कवित्त

पर निदा नहीं करै साथ जस ही कुं जाण ही ॥
 मिथ्या वचन नहीं जुगै, ताहि उत्तम जन मानही ॥५१४७॥
 सील समय दिवहु धरै, दया करै मन ल्याइ ॥
 परकारज परमारधी, मोक्ष पथ सो लहाइ ॥५१४८॥

इति श्री पद्यपुराणे सरदार रामचंद्र पुरब भव वरजानं विधानकं

१०० वां विधानक

अडित्त

सकल सभा मुनि पास भवांतर सब सुने ।
 जनम जनम के भेद, सकल मूषण भने ॥
 वैराग्य भाव भया लोग, नाम किहां लौ गिनई ।
 रवि का होत उद्योत, अंधकारै हनै ॥५१४९॥
 तिमिर जु गया सब भाजि, किरण रवि की जगी ।
 घर बाहर उद्योत, अंधकार कहीं है नहीं ॥
 तम जु गया सब भाजि, किरण रिब सी जगी ।
 घर बाहर उद्योत, सब सोमण लगी ॥५१५०॥
 जे दिष्टात प्रवीण तिनइ जाणै भली ।
 परिहाजे जे अघासुति हीण उनौ कै चित मिली ॥५१५१॥

कृतांत वक्र भवांतर बूझि । व्योरा सुणि अंतरगति सूझि ॥
 मन विराग धरा बहु भाति । रामचंद्र सों जोड़े हाथ ॥५१५२॥
 जीव भ्रम्या बहुगति मे भावि । समकित बिना जनम सब बाद ॥
 भ्रमत भ्रमत नहीं पायी अंत । अब हुं थक्या सकती नहीं हुंत ॥५१५३॥

धरम वृक्ष की पाई छाह । तिह ठा बैठि मिटाऊ दाह ॥
 दिव्या लेहू रिषी के पास । गुरु सगति पूजै मन भास ॥५१५४॥
 रामचंद्र बोले समझाइ । तू सुखिया कोमल है काड ॥
 सेज पटतर फूला भरी । भूमि पांव कबहु नहीं घरी ॥५१५५॥
 पचामृत लेता हो अहार । इस गोरस बहु सौज सबार ॥
 पल पल होई तुम्हारी सार । कैसे लेहू सजम भार ॥५१५६॥
 जैन धरम की क्रिया कठिन । कैसे पलै तुमारा जतन ॥
 भूमि मोवणा निरस अहार । बाईस परीसह दु ख अपार ॥५१५७॥
 घरि घरि भोजन लेहु उड्ड । राव रक कबहु भेद न मड ॥
 हम भी दिखा ले है जाइ । हमारे सग होज्यौ गिखराइ ॥५१५८॥
 कृतातवक बोले भूपती । एही वार मे होउ जती ॥
 फिर बोले आपण रघुनाथ । एक जाबौ तब हमारे साथ ॥५१५९॥
 गृहे देवगति किसही सुरग । सभाल कीजिये मितर वरग ॥
 जं मै माया माहि मुलाव । तुम सबोध ज्यौ मित्र सुभाव ॥५१६०॥
 तब दिखा ले मै भी तिरु । बहुरि न भवसागर मै पडू ॥
 कृतातवक की आग्या दई । सब ममता मन तो मिट गई ॥५१६१॥

ब्रूह

कृतात वक्र तब सोरसोग, वतक मुक्किम निक्कत ॥
 बहुतो न दिव्या घरी, ग्यान बंत बिघ्यात ॥५१६२॥

चोपई

सीता के सगी आरजिका घनी, अधिक प्रताप विराजै बणी ॥
 सत अनै दत्त दिपै सब देह । रामचंद्र मन उपजा नेह ॥५१६३॥
 रहे ध्यान घरि करै विचार । मो सग डोली सब ससार ॥
 लोका कारण मै दई निकार । तिह तौ हुवा दु ख अपार ॥५१६४॥
 अति कोमल सीता की देह । वनमे जोग लिया सजि गेह ॥
 वै अई उत्तम सिज्या छोडि । पाट पटंबर सिज्या सोडि ॥५१६५॥
 पान फूल कोमल आहार । सखी सहेली करती सार ॥
 राग रंग पल्लवज वीन । कथा कहानी कहै प्रवीण ॥५१६६॥

पूर्व कथा

तब सजवती थी सीता तहा । तब आईसा बन मे तप गह्या ॥
 बन मे सिंह गरजना करै । हसती चिंघाडै सब ही डरै ॥५१६७॥

सरस निरस मास कै पाख । पर घर भोजन मुखतै नही भाख ॥
 वे दुख कैसे सीता सहै । बेर बेर रघुपति हम कहै ॥५१६८॥

सरप सियाल भयानक घणै । अंसे सबद जब सीता सुणै ॥
 कैसे जीवंगी उस टीर । चउदहै घाट परीसह सहै ओर ॥५१६९॥

मसार स्वरूप का किया विचार । रामचन्द्र समझे तिह बार ॥
 धन्य सीता अंसा तप घरघा । नमस्कार दरसन को करघा ॥५१७०॥

लखमण किया चरण को आई । सीता गुण बरणबै सुभाई ॥
 धन्य सीता राख्या दिह सत्त । अपवाद आया लोकाँ कै चित्त ॥५१७१॥

जे जब लेता दिख्या जाई । रहता संवेह हर कै मन राई ॥
 अग्नि कुंडरौ जलहर भया । सब के मन का संसय गया ॥५१७२॥

दोनु कुल की राखी लाज । आप किया आतम का काज ॥
 पूरब भव पूज्या जिन देव । तो निसचै कीनी जिन सेव ॥५१७३॥

एक भवतर पाछै मोक्ष । बहुरि लगैगा देवता सुख ॥
 लवनाकुम करै नमस्कार । दई प्रकमा बारबार ॥५१७४॥

भूपति सकल करै डडोत । असतुति बोलै लोग बहुत ॥
 सब ही फेर नगर को चले । हय गय रथ पायक बहु मिले ॥५१७५॥

नर नारी देखै बहु भाइ । बहुत सखी अंसे समुभाइ ॥
 अंसी विभव सीता गई छोडि । सहै परीसह बन की वोडि ॥५१७६॥

जैन धरम का दुरधर जोग । स्वरग लोक सम छाडे भोग ॥
 कोई कहै धन्य रामचन्द्र । परजा कारण सहा सब बुद ॥५१७७॥

मोह सजि सीता दई काढि । विछोहा तन सहा है वाढि ॥
 कोई कहै सीता करी बुरी । पुत्र जगती ममता नै करी ॥५१७८॥

मन मे घरघा न उनका मोह । पल मे सब ही का किया निछोह ॥
 ए बालक उअजे उस कुख । खीर पिलाई पुत्र नै पोखि ॥५१७९॥

ते माया दई सबै विसारि । बैठी बन में तिहां उजाडि ॥
 कोई कहै इह ली सनमध । घर परियण सब जाण्यां धंध ॥५१८०॥

तारौ धरि दिक्षा का भेष । बारहै बिष तप करै असेष ॥
 भव जल तिर तैं जाई मोक्ष । जनम जरा के टूटै दोल ॥५१८१॥
 रामचन्द्र मन्दिर मां गए । राजसभा मे बैठत आए ॥
 राणी सब अंतहपुर भाइ । पूजा दान करै बहु भाइ ॥५१८२॥

सोरठा

ल्याए आतम ध्यान, मोह माया सब परिहरी ॥
 सीता सत प्रबान, सुरनर सब महिमा करी ॥५१८३॥
 इति श्री पद्मपुराणे सीता प्रबुद्धा विधानकं

१०१ वां विधानक

चौपई

सीता की पूर्व कथा

श्रेणिक नृप कर जोडे हाथ । फेर धरम सुणावो नाथ ॥
 लवनांकुस गरभ स्थिति करी । ते मुझ सकल सुणावो चरी ॥५१८४॥
 स्यधनाद बन भय की ठोर । तिहा सीता कु भाए छोड़ि ॥
 महा विलाप सीता नै किया । कवण करम ते ए दुख भया ॥५१८५॥
 सिद्धारथतै बहूत हित हुवा । कै पहिला कै मनबन्ध नवा ॥
 सिद्धारथ बहु विद्या पढाई । ते सब कहिए ससंय जाई ॥५१८६॥
 श्री जिन की बानी तब हुई । भव आताप सगली बुझ गई ॥
 गौतम स्वामी निरणय भरी । सभा मध्य श्रेणिक भी सुणी ॥५१८७॥
 जंबुद्वीप मे क्षेत्र विदेह । क्रिकदा नगर बसै बहु गेह ॥
 रतिबरधन राजा सुपुनीत । सुदरसना राणि सुपुनीत ॥५१८८॥
 वार्कं गरभ पुत्र दोई भए । प्रीतकर हीतकर सुख किए ॥
 दिन दिन बढै सयाने होई । कुल मडण बालक ए होई ॥५१८९॥
 सरव गुपति राजा मतरौ । राज विमूति तिहां प्रति जुडी ॥
 बीजावल प्रधान की तिरी । उसकै मन उपजी मति बुरी ॥५१९०॥
 रतिबरधन सूं संगम करौ । अग्रणीं जनम तब जाणउं खरौ ॥
 राजा वन क्रीडा कौ चला । सरव गुपति मंदिर हितां चला ॥५१९१॥
 ता मंदिर तलै बैठा भाइ । बीजावली उभकी करोखै जाइ ॥
 दोन्हू की हुई दिष्टि च्यार । मुख सो बोली पाप ब्योहार ॥५१९२॥

सीता की पूर्व कथा

राजा सुनि समझावें बहिन । परजा कुं देखुं भरि नैन ॥
 जैसे पिता देखें पुत्तरी । भ्रंसी दिष्ट राख जे खरी ॥५१६३॥
 जे राजा हूँ करे अघरम । कुल कलंक लगावें बहु जनम ॥
 तुम्हारा सेवक की नारि । मुख सो कहिए बात संभारि ॥५१६४॥
 बीजावली मनमे पिछताड । मै कोई बचन कहा इहं भाइ ॥
 मान भग हुआ इह चढी । अण्णें मन बहु चिंता करी ॥५१६५॥
 सरबगुपति अण्णें घरि जाई । त्रिया बचन बोखें समझाई ॥
 मै ने आज सुणी हैं इक बात । तेरा काम भ्रस्ट होया परभात ॥५१६६॥
 राजा तो परि कोप्या घरा । भ्रंसा दुख तोकु भाइकें बघ्या ॥
 सुणि प्रधान अति करं विलाप । मन मे चिंता अति ही व्याप ॥५१६७॥
 राजमंदिर मे देहु आगि । बहुधा जलै न छुटै भागि ॥
 रयण समै वे कीनां दहन । राजा जाग्या देखी अगनि ॥५१६८॥
 निकस्या भूप सुरग दुवार । दोनू लीना संग कुमार ॥
 मुदरसना राणी अगनि मे जली । भाजण को नही रही गली ॥५१६९॥
 रतनवरधन कासी मै गया । सरबगुपति राजा तिहां भया ॥
 कासिप राय कासी का धनी । बल पोरिष ग्यानी गुन गनी ॥५२००॥
 सरबगुपति नै भेजा दूत । मेरी आगन्या मानि बहुत ॥
 इतनी सुणि तब कोप्या राब । रतनवरधन उन मारघा ठाव ॥५२०१॥
 जो सेवक ठाकुर को हणै । एह अनीत कहो कैसे बनै ॥
 अब जू इन्है लगाऊ हाथ । फेर न बिगारै काहु साथ ॥५२०२॥
 कहा बराक सरबगुपति । जिह की आगन्या आरणा नित्ति ॥
 जीवत पकडी हणुं पराण । सका दिवाया दूत है जाण ॥५२०३॥
 दूत गया सरबगुपती पास । कासी बचन कहै सब भास ॥
 भ्रंसी सुणि सेन्या कू जोडि । कासी राय पै कीनी दोडि ॥५२०४॥
 धेरघा नगरी नीसान बजाय । सुणें सबद तिहा कासिप राइ ॥
 उन भी सेना लई हकार । सूर सुभट जाए तिह बार ॥५२०५॥
 दहबरधन रतनवरधन को देखि । कासिपराय कहा परेलि ॥
 सुणि राजा मन भयो आनन्द । देख्या प्रत्यक्ष चरणन कुं बंदि ॥५२०६॥

पूर्व कथा

अस्तुति करि सेवा बहु भांति । भयो जैन नगरी भा साति ॥
 सब सुण्या रतनबरधन बली । भिजे सकल पुजी मन रली ॥५२०७॥
 सरवगुपति बाध्या तिह घरी । आया राम किंदा पुरी ॥
 पट बैठाइ रहे सब लोग । सुलसौ रहइ भूल्या सब लोग ॥५२०८॥
 राजा करुणा चित्त बिचार । सरवगुपति छोड्या तिह बार ॥
 सेवा सौ तब कीया दूरि । पापी पाप कमाया भर पुरि ॥५२०९॥
 भविदत्त मुनि दरसन पाई । सुण्या घरम रति बरधन राई ॥
 प्रीतकर हितंकर कौ दीया राज । आप लिया दिगबर साज ॥५२१०॥
 सरवगुपति भी दिसा लई । बीजाबली मुई राज्यसी भई ॥
 मनमे कुबुधि विचारी नई । बैर भाव उपजावै सही ॥५२११॥
 राय कीया मेरा मान भग । सरवगुपति तप करै वा सय ॥
 दोनु मुनि पर किया विरोध । आधी मेह दुख का मोघ ॥५२१२॥
 बहु उपसर्ग दोन्यु मुनि सहा । केवलग्यान वा समै लहा ॥
 गए मुक्ति जै जै ध्वनि हुई । पंचमगति पाई मुनि हुई ॥५२१३॥
 सुदरसनां जल मुंइ तिह बार । पुत्र मोह की करी सभार ॥
 वे दोन्यु मेरे गरभ भए । दुह विरमा ले बिछुड कयो गए ॥५२१४॥
 एक बेर मिलज्यो फिर ध्यान । भूत समय राख्या इह ध्यान ॥
 प्रीतकर हेमंकर भूप । विमल मुनीस्वर देख स्वस्व ॥५२१५॥
 नमस्कार करि पूछ्या चरम । दोन्यु भए जती कै करम ॥
 करै तपस्या बारह विष । चारित्र साबै तेरह मन सुष ॥५२१६॥
 बीस दोइ परीसा सहै । नवप्रीवेक पाई उनि जहै ॥
 कासिप देस वामदेव नरेस । गुणा अस्तरी धरम कै भेस ॥५२१७॥
 वसुदेव वासव पुत्र दोइ भए । जोषन समय विवाह करि दए ॥
 वसुदेव कै विस्वा असतरी । वासिट कै प्रीयानणा गुण भरी ॥५२१८॥
 श्रीदत्त मुनी कू दिया अहार । पाया भोग भूमि अबतार ॥
 तीन पत्य की भुगती आव । इसान स्वर्ग परि पाया ठाव ॥५२१९॥
 उहा तै चए रतन बरधन के ग्रेह प्रीतंकर हितंकर एह ॥
 वे पट्ट्या नवग्रंथक विमान । उहा तै क्या सीता गरभ आय ॥५२२०॥

पूरव भव छोडी थी भाई । वाती दुल पाया नरम भाई ॥
 मात बिछोहा तो इहां गया । वह वैष भंक इहां ऊ गया ॥५२२१॥
 सुदमना जीव भ्रमी बहुगति । सदा वरम ध्यान सुं हिति ॥
 तपकरि अस्त्री लिंग कीमा भंग । करि करणी सुगुरु गुरु संग ॥५२२२॥
 उसका जीव सिधारय भया । वह सनबंध इन सूं यया ॥
 ए ही करम का सरबंध । नितर्य सेव देव जिनय ॥५२२३॥

सौरठा

भव भव किया कु पुन्य, समकित सो मन दिठ रह्या ॥
 सबनाकुस बलवन्त, रघुबंसी जग मे तिलक ॥५२२४॥

इति श्री पद्यपुराणे सबनाकुस पूरवभव विधानकं

१०२ वां विधानक

चौपई

सकल भूषण कीरत सब देस । सुरनर पूजा करै नरेस ॥
 बहुजन भए जती के भाव । जपै चरण जिए जी का नाव ॥५२२५॥
 किराही सरावक का जत लिया । सरव जीवां की पालै दया ॥
 पूजा दान करै सब कोइ । बरि बरि कथा सीता की होई ॥५२२६॥
 धनि सीता अइसा तप करै । मोह माया सब सुख परिहरै ॥
 आठ दिवस कबही इक मास । राग दोष का कीया नास ॥५२२७॥
 ऊच नीच लखै नही मेह । सरस निरस भोजन कूं सेह ॥
 लोही मांस गया सब सूख । क्रोध लोभ साधी तिस भूख ॥५२२८॥
 तप की जोति दिपै सब गात । जैसे ससि पूनम की काति ॥
 जरजरा भई मुरझाई बदन । जैसे काष्ट फुतली के तन ॥५२२९॥
 बासठ बरस तपस्या करी । तैंतीस दिन तपस्या मे टरी ॥
 छोडि काय लह्या अच्युत विमान । अया प्रति इंद्र लह्या सुख पान ॥५२३०॥

बीस दोइ सागर की ठांव । तप करि पाई एती भाव ॥
 राम कथा सब पूरण भई । श्रीजिन कथा कहै इहां नई ॥५२३१॥
 स्वयं सोलह प्रद्युम्न भर सँभु । कृष्ण मेह उपज्या कुल धंभ ॥
 बाईस सागर चउसठ सहस्र । उपजे मुमति आब हरिबंस ॥५२३२॥

धेरिणक पूछै हँ कर जोडि । जिनवांणी का नांही बोड ॥
 जितने भेद सुणै धरि कान । तिरपत न हुबे सुणै पुराण ॥५२३३॥
 एक एक तैं बाणी सरस । जँ सुणिए बहुतेरा बरस ॥
 तउव न जावै जीव भ्रमाइ । प्रद्युम्न सबु के कहै परजाइ ॥५२३४॥

प्रद्युम्न सबकुमार के पूर्व भव

सालिग्राम नित्योदय राइ । सोमदेव बांभण तिहु ठाइ ॥
 भगनिला कै भए दोइ पुत्र । भगनिभूत दूजा बायभूत ॥५२३५॥
 विद्या पडि भए परवीन । इन अग्रे पंडित सब हीन ॥
 बेद पुराण कहै मुख पाठ । राखै धणी गर्भ की गाठ ॥५२३६॥
 इन समान न पंडित और । सैंसा देस देस मे सौर ॥
 नदिबरधन मुनिवर महा मुंनी । वाकै सग शिष्य बहु सुनी ॥५२३७॥
 वन मे जोग लिया उन आय । आयम सुण्या नित्योदय राइ ॥
 उतर स्यधासन वाही दिसा । करि डडोत मनमा बहु हंसा ॥५२३८॥
 सकल लोग सगति बहु चल्या । बाजतर जिहा बाजै भला ॥
 भई भीड वे द्विज के बाल । इनके मन संसय का साल ॥५२३९॥
 नांही पर्व नांही त्यौहार । इतना कहां जाहि इकधार ॥
 सुणी बात बण आये जती । दरसण कूँ चाल्या भूपती ॥५२४०॥
 सकल लोग जावै वा निमित्त । जोग ध्यान तिहां महा महंत ॥
 इतनी सुणि वे उठे रिसाइ । वे क्या हैं हम सू अधिकाइ ॥५२४१॥
 हम सूँ कवण है पूजनीक । मूरख चलै हैं गडरिया लीक ॥
 भब हम करि हैं उनि सो वाद । जे हम से जीतैं वे बाद ॥५२४२॥
 तो हम जाणैं उनका म्यान । नातर ए सब लोग अग्यान ॥
 दोनू विप्र गए बम माहि । व्यानारूढ दिखे तिरण ठाहि ॥५२४३॥
 संब्रकुमार मुनीस्वर एक । जिसके हीए जिनेस्वर टेक ॥
 मुनि की ढिग दोउ विप्र जाइ । कहि कहा ते भाए इस ठाँइ ॥५२४४॥
 बोलै जती सहज के भाइ । आय पहुंचे याही ठाइ ॥
 पूछै मुनी तुम कहां ते आए । आगम कहो सकल समझाइ ॥५२४५॥
 दोन्युं हसे विप्र के पुत्र । भई भई बुधि महा बिचित्र ॥
 देखि प्रत्यक्ष होइ अग्यान । सालिग्राम हमारा यान ॥५२४६॥

मुनिवर बोले अपने गति कहो । कबल परजाइ तैं इह गति लहो ॥
 ऐसी सुणि भए चिक होइ । गति अगति की जाणौ नहीं कोइ ॥५२४७॥
 वेद पुराण मे की होइ बात । कहैं सकल बांको बिरतात ॥
 हमको अवधिम्यान एह नाहि । गति अगति समझावै ताहि ॥५२४८॥
 मुनिवर बोले मोपै तुम सुणौ । तुमके भव सब ही मे भणौ ॥
 मगध बैस सालग्राम समीप । भरत क्षेत्र तिहा जवूहीप ॥५२४९॥
 कर्म करि हैं बाह्य करि सांन । जो तिण गया धरती बन धान ॥
 घडी च्यार सेती घर आइ । भोजन किया दिवस मे जाइ ॥५२५०॥
 तिहा धनरह बरखा धनघोर । सात दिना बन माडथा जोर ॥
 भूखे सियाल थे तिहा दोइ । सात दिवस भूखे बुली होइ ॥५२५१॥
 व्रत चांम की भीजी तिहा । भखी भृंगाल मरण ते लहा ॥
 उठी सूल दोन्युं मर गये । सोमदेव के सुत दोउ भए ॥५२५२॥
 उन किसान तिहा सुध लहो । देख व्रत मन विस्मय भई ॥
 देखे मुए दोई सियाल । लिये उठाइ उचेडी खाल ॥५२५३॥
 बहि द्विज सुवा पाइ कै काल । पिता पुत्र के उपज्या बाल ॥
 अष्ट वर्ष का हुवा पुत्र । देखो खाल स्याल संजुक्त ॥५२५४॥
 भव सुमरणा विप्र कुं भई । मेरी प्रसूति पुत्र घर भई ॥
 कैसे कहू पुत्र कूं तात । बहु सो किह बिध कहिए मात ॥५२५५॥
 ऐसी समझि रह्या दोउ भूक । भुख तैं वचन न बोले चूक ॥
 अगनिभूत वायुभूत दोऊ बीर । गये तुरन्त सरकैं तीर ॥५२५६॥
 देखी खाल टकी तिह ठाव । समझि साब हीए घर भाव ॥
 गू गे से सब कही मन की बात । मिटै भेद सब ही इह भात ॥५२५७॥
 उठि प्रमुखि साध पै गया । नमस्कार करि ठाठा भया ॥
 मुनिवर सकल कही समझाय । अपने मन मे मति पिछताइ ॥५२५८॥
 प्रादि अनादि बिहु गति बीच । कबहीं उत्तम कबही नीच ॥
 नटबा भेष धरधा बहु जोन । लख चौरासी मे कीया गौन ॥५२५९॥
 पिता होइ पुत्र का पुत्र । माता होइ धरणी सजुक्त ॥
 नारी तैं जवनी उतवस । कब ही होई भाई बहन ॥५२६०॥

कबही भरि भरु कब ही बित्र । कबही माता होइ कालित्र ॥
 कबही राजा कबही रंक । कबही ठाकुर सेव निसंक ॥५२६१॥
 कबही धारै देव स्वरूप । कबही बुलिया महा कुरूप ॥
 कबही कामदेव उल्लिहार । कबही कुण्टी रोग अषार ॥५२६२॥
 जंसे फिरै रहठ की घड़ी । कबही रीती कबही भरी ॥
 भैसी सुणि सब ससय गया । अष्टांग नमस्कार तव किया ॥५२६३॥
 प्रभुजी मोकूँ दिध्या देहु । बांह पकडि हूँ व्रत ग्रह लेहु ॥
 मुनिवर कहै फेरि घरि जाड । आगन्या माँगि कुटंब पै आइ ॥५२६४॥
 तब दिध्या देनी तुम्हे सही । बिन आगन्या तपस्या नही कही ॥
 प्रभुजी आए आपनै गेह । सकल सभा का मिटथा सदेह ॥५२६५॥
 केई समझि बरै चारित्र । किनही लीया आवक व्रत ॥
 जिहा तिहा कथा डहै चलै । दोग्युँ बिप्र मनमे जलै ॥५२६६॥
 स्याल जोनि तैं वे विप्र भए । अकाम निर्जरा पडित थए ॥
 इतनी जात कहा है बेब । जाणै नही घरम का भेव ॥५२६७॥
 ब्राह्मण देव कहा और स्वरूप । अगनि देव कहे नर भूप ॥
 कैसे भए देव एह जीव । करै कर्म पाप की नीब ॥५२६८॥
 ब्रह्म सो परमात्म चिह्न । सबम क्रिया की बिध किह्न ॥
 ए पापी होमै अगिणत जोब । करै वृत्त पाप की नीब ॥५२६९॥
 कद मूल फल लेह अहार । पुंन्य पाप कौ नही विचार ॥
 निस भोजन अण छाण्यो नीर । दया भेद जाणै नही पीर ॥५२७०॥
 सपं देव कैसे करि होइ । जिसके डस्या न जीवै कोइ ॥
 अगनि दया करै नही काई । जो कछु पडै भस्म होइ जाई ॥५२७१॥
 मूरख पुरुष नै देवता कहै । ग्यान भाव का भेद न लहै ॥
 विप्र वही जो पालै दया । धन्य साध जो इह विष तप किया ॥५२७२॥
 पूरब भव की जाणै बात । उनतै अवर न उत्तिम जात ॥
 राजा रंक सकल ही लोग । असतुति करै जे साथै जोग ॥५२७३॥
 विप्र के मन भया विरोध । निस आए घरि बित्त विरोध ॥
 काढि खड्ग दोनू इक बार । बहुरि करै घरम बिचार ॥५२७४॥

प्रह्मन् एवं संबन्धुमार के पूर्व भव

विप्र संन्यासी तपेसुरी । अतीत अनागत लघु अस्तरी ॥
 इनके मारघा उपजे पाव । अब भव सहे दुःख संताप ॥५२७५॥
 जइ तेरा मनमें है बैर । पहिले तु हमकुं मारि करि डेर ॥
 दऊ न डरै न मारे जाहि । दोनुं तानइ खड्ग सब बाहि ॥५२७६॥
 बांध्या यक्ष दोनुं बाका हाथ । उभा द्विज बैठ भुनिनाथ ॥
 प्रभात सबे जाये सब सेठ । लघु वृद्ध ब दन्त चान्स्या वेठ ॥५२७७॥
 नमस्कार करि पूरा करी । वा मुनि पै सब ही की विष्ट पखी ॥
 अगनभूत वायुभूत विप्र । हाथ जोडि कर नायेस पुत्र ॥५२७८॥
 ऊंचे कर दोन्युं का बंध । उभा हम दोन्यु द्विज अंध ॥
 सती जती बैठ सुप्रबोल । गहि मोन बोले नहि बोल ॥५२७९॥
 जे भावै ते मारी देह । रे पापी कीन्ही कहा एह ॥
 मुनिवर बैठे वन मे भ्रानि । इनके चित्त निरजन ध्यान ॥५२८०॥
 किसही सु नहि करते नोख । सब ही नै दई मारग मोष्य ॥
 मुनिवर कूं तुम दीना दुख । तैसा अब देखत परतध्य ॥५२८१॥
 बहुत लजाए बांभख दौड़ । भिग भिग कहै जगत सब कोइ ॥
 सोमदेव अगनला माई । मुनिवर कं बे लाग्या पाई ॥५२८२॥
 स्वामि नमु हूं दोउ कर जोडि । हमनें बिलखीं छी इनहुं छोडि ॥
 पुत्र भीख दीजे करि भया । तुम प्रभु पालो हो अति दया ॥५२८३॥
 मुनि बोले दंपति सो बात । हमारे नहीं कोष की जात ॥
 बिनती करे जध्य सों घरणी । अतिरिगति जध्य झैसी सुणी ॥५२८४॥
 कहै जध्य ए पापी दुष्ट । इना दीया है साधनइ दुःख ॥
 जैसा सुं बोले तैसा सुख । जैसा बावै तैसा लुरा ॥५२८५॥
 ज्यो दरपण मा देखै कोइ । जैसा चितै तैसा होइ ॥
 जे मुख को टेढ़ा करि बेलै । तैसा ही तामै दरसन लेलै ॥५२८६॥
 जे देखई सुधा करि बदन । तैसा तामे है दरसन ॥
 ए है पापी महा अग्यान । इनै न छोडूं अपने जान ॥५२८७॥
 मुनिवर बात जध्य सू कहैं । सुष्यम बादर कससा चित यहैं ॥
 ए दोन्युं पंचेन्द्रिय जीव । छोडो वेनि इनकी ग्रीव ॥५२८८॥
 जीव दया कारण अत करै । हिंसा तै निस बासर डरै ॥
 वनमें रहैं परीसह सहे । ते कसैं जीवा नै दहैं ॥५२८९॥

अतिरिक्त छोड़ो तुम यक्ष । इन दोन्युं सो न करो कुक्ष ॥
 विप्र छोड़ि दिया तिण बार । उनों विप्र कुं कराया नमस्कार ॥५३६०॥
 तब अणुव्रत विप्र कू दिया । जैनधर्म निसचै सूं किया ॥
 घरम पुराण कहै मन त्याइ । सौटी क्रिया विप्र दई बिहाइ ॥५२६१॥
 जीव दया के पालै भेद । असुख करम का कीया छेद ॥
 सोमदेव अगनिला व्रत गह्या । उनपै व्रत न जाबै सहा ॥५२६२॥
 मरि करि भ्रम्या बहुत ससार । दोन्यु विप्र स्वरग तिह बार ॥
 मुगति आव अजोध्यापुरी । सुभदर दत्त राजा रिध जुग्री ॥५२६३॥
 धारणी राणी कै गरभ आइ । पूरणप्रभ मानभद्र जाइ ॥
 पाई वृद्ध सयाणै भए । राजा कै इहै उपजी हिए ॥५२६४॥
 उन दोन्यु की दीयो राज । आपण किया घरम का काज ॥
 बहुत दिना मुगते सब देस । मुनिवर बल किया प्रवेस ॥५२६५॥
 मुनि नरेन्द्र दरसन कु चले । चिडाल पास कुकरी गले ॥
 उनको देख अपना नेह । भेटया चाहै उनसो देह ॥५२६६॥
 मन मे सोच करै बहु भाइ । चलै पूछिये मुनिवर जाइ ॥
 गये साध पै करि डडोत । राजा पूछी बात बहुत ॥५२६७॥
 स्वामी एक अचभा सुणी । इनहै देखि मोह ऊपन्यो वणुं ॥
 कवणएकवण हम जात । ए प्रतप्य चिडालहै पांति ॥५२६८॥
 जिह के छिया लीजिए सुचि । तामु होय मिलण की रुचि ॥
 बोले ईह सोमदेव विप्र । अगनिलाए ए मुनी अगिप्र ॥५२६९॥
 पूरव भव का माता पिता । ता कारण मोह की लता ॥
 एक मास रही है आव । चडाल कूकरी मंन्यास तिह आव ॥५३००॥
 काल पाइ नदीसुर द्वीप । दोन्या भए देव सु समीप ॥
 दोई भूपति नई घरमणा । जैन घरम बिघ पालै घणा ॥५३०१॥
 देही छोड़ि सौधरम विमारा । तिहा तै चए अयोध्या आन ॥
 हैमनाभ राजा कई नेह । अमरावती राणी रूप की देह ॥५३०२॥
 ताकै जा अति प्रतापी भए । हैमप्रभ संयम व्रत लिए ॥
 राजभार मघु कीट नै दिया । आप गुरु द्विग सयम लिया ॥५३०३॥

राजा मधु अति प्रतापी भए । नाम सुंशुत अरि उठि गए ॥
 सब नृपति मानैं तिहूँ आण । ए भुविपरि रविचंद्र समाण ॥५३०४॥
 राजा भीम न मानैं संक । जसकै मढ़ अति विकट विहंक ॥
 तिहूँ कारख राजा मधु चला । बीरसेन मारन में मित्या ॥५३०५॥
 निशोष नगर में करि सनमान । बहुत बेठ भागै बरी मान ॥
 चन्द्राभा बीरसेन की अस्तरी । रूपवंत लावण्य गुण अरी ॥५३०६॥
 उभकी आइ अरोखैं द्वारि । भाई देखी बीर बंधारि ॥
 राजा मया मूछावंत । जाणौं भए प्राण का अंत ॥५३०७॥
 जेस्यो राजा करं विचार । फिरतां भाई करं उपचार ॥
 भीम राजा से मांडपा खेत । बांध्या तुरंत जुष के हेत ॥५३०८॥
 प्राया तुरंत अजोघ्या देस । चंद्राभा मन खुटक नरेस ॥
 देस देस को लेख पठाइ । सब कुटब तब नृपति बुलाव ॥५३०९॥
 आए सकल देस के भूप । जीमया दीया महा अनूप ॥
 काहूँ कुं अस्व रथ दिया सिरपाव । किहु कू गज परगने गांव ॥५३१०॥
 सबको दिया जिस्या परवान । सो कुटुंब का राख्या मान ॥
 बीरसेन सो असी कही । तुम भी जावो अपनी मही ॥५३११॥
 कछु आभरण सबरंगा अभी । बिदा करस्या चंद्राभा तभी ॥
 बीरसेन नें किया पयान । मधु राजा चन्द्राभा मान ॥५३१२॥
 अंतहपुर पटराणी यापि । राजा मनमे विचारया पाप ॥
 भोग भुगति सौं बीतै काल । राजा तबी घरम की लाज ॥५३१३॥
 जे रसवाला चन्द्रा पास । ते सब जाजे होइ निरास ॥
 बीरसेन कूं इह सुघ भई । चन्द्राभा छीन उनु नैं लई ॥५३१४॥
 बीरसेन बहुत बिललाइ । बलवत्त सो कछु न बसाइ ॥
 इह प्रयवीपति जाकैं हैं देस । इह अभीन इह बडा नरेस ॥५३१५॥
 छाडी राज फिरै विकराल । व्याप्या हीए नारी का साल ॥
 वनमे फिरै अधिक बिललाइ । वाकैं चित्त कबहु न बसाइ ॥५३१६॥
 करैं पुकार गिर गिर फिरैं भूमि । ऐसी अहा मचावैं भूमि ॥
 चन्द्राभा ऊंचा सूं देखि । कंत फिरैं इहै असे भेष ॥५३१७॥
 बेर बेर राखी पिछताइ । माहुरें दुःख फिरैं इन भांड ॥
 राज भिष्ट हो डोलै मही । इसकै कोई सहाई नहीं ॥५३१८॥

मो कारख धंखी मति फिरै । पिछतावै राखी हिए भरै ॥
अमत फिरै कारज सरै नाहि । अंकिन प्रिय बिष्ट बरषा काहि

॥५३१६॥

नमस्कार करि पूछै धरम । सुखे भेद आवै चिन नरम ॥
दिध्या लई संन्यासी पास । पंचाग्नि सावै बनवास ॥५३२०॥
देही छांदि लही बलि देव । इह राखा सुल विलसै एव ॥
भरोखै बंठा राजा जाइ । कोटवाल भया तिह ठाह ॥५३२१॥
एक मरह पकरषा परनारि । हाथ बाध धाव्या तिह बार ॥
राजा सुखी किया इह न्याय । इह को हणौ चोर कीं ठाव ॥५३२२॥
फिर भंसा न करै कोई काम । खोवै धरम लजावै गांव ॥
तवै राणी चंद्रामा कछा । राजा जी तुम भेद न लछा ॥५३२३॥

इनुं कहा अबै बिगार । जिनौ को मारि करो हो छार ॥
इनको बहुत दीजिये दाम । निरभै करो ध्युं मनमान ॥५३२४॥
इनौ की पूजा करणां न्याइ । कहा चूक भई इनतैं राय ॥
राजा कहै सुख राणी बात । तेरी मति भिष्ट भई इह भाति ॥५३२५॥
अन्याई की तू पूजा कहै । दान दिलावै भेद न सहै ॥
अन्यायी है यह महा पापिष्ट । इनको दीजे महान कष्ट ॥५३२६॥

जिसना हुबै पुन्य विसतार । भूलि न करै कोई बिगार ॥
चन्द्रामा समझावै बैन । अपना वचन परिषो करि नैन ॥५३२७॥
कहां तैं मो करि भानी व्याह । मुझ बिन व्याकुल है मेरो नाह ॥
जो राजा खोटा हुबै आप । तिसकी प्रजा करै अति पाप ॥५३२८॥

जिया वचन सुनि भई संभालि । सत्य वचन समझे भूपाल ॥
हाइ हाइ कर मोहै आप । मैने कियो प्रबी को पाप ॥५३२९॥

मो सरिखा करम ए करै । पृथिवी परि को अपजस धरै ॥
उज्जल कुल लागो कालौस । अब हूं धोऊं कइसी रोस ॥५३३०॥

मो कूं भई पाप की बुधि । भूली राजनीति की सुधि ॥
कठिन पाप कैसे होवै दूरि । ताहि न होवै ऊषध सूस ॥५३३१॥

मन वैराग धरघो अति सोच । राज भोग सो छोडी रांघि ॥
सहस्र अब नन उत्तम मही । सिद्ध पदम मुनि आए सही ॥५३३२॥

राजा शुनि मुनिवर ढिङ्ग गया । नमस्कार करै ठाढ़ा भया ॥
 करै झीनती मस्तक नाथ । पथ करम में किया अघाह ॥५३३३॥
 कंठे छरै पाप का दोष । गुरु संगति से लहिन मोष्य ॥
 मुनिवर कहैं ग्यान बहु भाइ । राजा भेद सुगो मन लाइ ॥५३३४॥
 कुलवर्धन कूँ राजा किया । धोप बाइ संयम व्रत लिखा ॥
 कीटन नै भी दीक्षा धरी । करै तपस्या दोउ मिल सरी ॥५३३५॥
 सूरज तपै परबत की सिला । काया तपै पसीना बस्या ॥
 बहै पाप देह तै छुड़ । ग्यानामृत की पीवै चूँटि ॥५३३६॥
 वर्षा में तरु तमि खरै । मूसलघार मेहु की पई ॥
 माछर डांस तनमें लगै । बयाल बाइ बाइ कै लगै ॥५३३७॥
 सीयाल सारबर की पाल । पई तुसार बलै बहु ध्यार ॥
 पटरित माहि पगीस्या सहै । बाईस विष कही है त्युँ तन दहै ॥५३३८॥
 भेसा तप करि करी है देह । अच्युत स्वयं इन्द्र पद एह ॥
 इनकी प्रति इन्द्र सीता जीव । तहकाल बिर सुल कीं नीव ॥५३३९॥
 मधुकीटभ अच्युत विमान । तिहां तें जाए द्वाराभती धान ॥
 दोऊ भए कृष्ण बरि आय । रूपवत बल सोमै काप ॥५३४०॥
 मधु का जीव भया पहूँ मन । रुकमण नै नमं पाईज उन ॥
 कीटभ हुमा संबु कुमार । जाबबती छर लिया अघतार ॥५३४१॥

रूहा

कथा कही परदुमन की, धी जिनवर समझाइ ॥
 श्री गौतम विधि सो भरी, सुषी बु ओशिक राइ ॥५३४२॥

जो सुख हैं एह पुराण, ते निसचै समकित गहैं ॥
 पावै अमर किमाण, दया भंग मनमां रहै ॥५३४३॥

इति श्री वधपुराणे मधु कीटक भव विद्यालकं

१०३ वर्ष विद्यालकं

औषधी

कांचनपुर तिहां कांचन रथ । सुरेन्द्र इन्द्र शून करि समरस्थ ॥
 दोइ कन्यां ताकै घर सुता । रूप सप्यण गुँस करि सोभिता ॥५३४४॥

स्वयंवर रज्या बुलाये राह । देस प्रदेश बसीठ पठाइ ॥
 नृपति भाये कांचन पुरी । सहू भूपति की सीमा चुरी ॥५३४५॥
 रथ परि बैठी दोन्युं पुत्तरी । जगतिपति कंचुकी मति खरी ॥
 सबइन का नाम कंचुकी कहै । कन्या हष्ट न कोई लहै ॥५३४६॥
 विद्याधर देखिया नरेस । भूमिगोचरिया दिस कियो प्रवेस ॥
 राजा सकल अर्चना करै । अब इस कन्या किस कुं बरै ॥५३४७॥
 कन्या कै विनां हि भावै कोइ । मान मंग सब भूपति होइ ॥
 लवनांकुस देखिया कुमार । फूलमाल गल डारे हार ॥५३४८॥
 जे जे कार करै सहू लोग । लखमण कै सुत मान्या लोग ॥
 आठ पुत्र त्रिण सै पचास । भए कोप मन बरै उदास ॥५३४९॥
 लवनांकुस हम तै क्या भले । घाली माल इनां कै गले ॥
 हम माँहेंगे इनसे राखि । भूपति सब मिस करै विभाइ ॥५३५०॥
 इनके हीए आठ यह पडी । कैसे छूटै इह यस चडी ॥
 आठ भूप की कन्या आठ । वे माला ले वइठी वे गाँठ ॥५३५१॥
 आठुं कै गले घाली माल । इनके मनतैं मिटै न साल ॥
 मंदाग्रनि लवन नै व्याहि । ससांकचका मदनांकुस नाहि ॥५३५२॥
 आठ व्याह आठुं कुं भए । अधिक सुख उपज्या उन हीए ॥
 लवनांकुस को आठों देखि । बहुरि मनमां करैं परेखि ॥५३५३॥
 हम तो है नारायण पुत्र । तीन पंड मां रह्यो न सत्रु ॥
 रावण मारधा हमारे पिता । जीत्या सकल देस पुर जिता ॥५३५४॥
 तीन सैं अठावन हम बीर । महाबली धर सांहस धीर ॥
 जो कछु है सो हमारा बल । हम समान किसका है बल ॥५३५५॥
 मान मंग हमारा किया । उनै व्याह लवनांकुस लिया ॥
 जे ए हमसैं माँहैं युष । मार गुमावां इनकी सुष ॥५३५६॥
 रूपमती सुत कहैं विचार । तुमारी हांसी हुवैं संसार ॥
 तुम तीनसैं अठावन बीर । ए कन्या बी बी सरीर ॥५३५७॥
 कैसे होता तुम सो काज । कैसी रहै तुमां कुल लाज ॥
 राम लखमण है बहु प्रीत । दुख सुख सुगतैं एकै रीत ॥५३५८॥

जैसे तुम तैसे वे भ्रात । छंदो क्रोध करो मन सांत ॥
 सुख संसार सदा नहीं चिर । सागर बंध रहै नहीं चिर ॥५३५६॥
 एकए दिवस होई विरहास । ता वै करो मुक्ति की आस ॥
 मुक्ति बंध सुख सदा अवल । श्री जिनकाखी रहै अटल ॥५३६०॥
 समकित सौ निभचै तप करो । बेग आई धरम पद चरो ॥
 बहुत भात समझायो ग्यान । सबको भयो धरम सौ ग्यान ॥५३६१॥
 लखमण की धाम्या कुं भए । हाथ जोड़ि थाड़े दोउ भए ॥
 भादि अनादि भ्रम्युं सहुं तित । समकित बिना न पाई गति ॥५३६२॥
 भ्रम्यौ लख चौरासी जौनि । बिहुंगति माही कीनुं गौन ॥
 रोग सोग भारत मां फिरधा । श्री जिन वाक्य न चित मां धरधा
 ॥५३६३॥

धब दिव्या ले सावै जोग । जनम जरा का भेटै रोग ॥
 लखमण बोलै सुण हो कुमार । जैन धरम खांडे की बार ॥५३६४॥
 तुम बालक भरि जोवन बंस । कैसे सचै जती का भंस ॥
 मुगत्या नहीं सुख संसार । नऊल तुम व्याही है नारि ॥५३६५॥
 उनहि छोड़ि जई दिव्या लेहु । उनके सूल तुम कहा करेहु ॥
 जई तुम उनका गहो सताप । तो तुमको होबई बहु पाप ॥५३६६॥
 इह है भोग मुगत की बेर । चउर्ये धाम्यम संयम फेर ॥
 ए सुख छांडि लीजिए न जोग । जोवन समय भोगवो भोग ॥५३६७॥
 अणुवत सरावग का लेहु । पूजा दान सुपात्रां बेहु ॥
 व्याकृ विष के दीजे दान । बंयावरत सब का सनमान ॥५३६८॥
 बोलै कुमार सुणुं तुम तात । भ्रमे लख चउरासी जात ॥
 संयम बिभव बहुत परवार । भव भव बीभ लहे नहि पार ॥५३६९॥
 जम की पासि पडै जब हंस । होइ सहाई धरम का भंस ॥
 स्वारथ रूपी सब संसार । पुद्गल भादि न कोई छार ॥५३७०॥
 पुन्य पापनै एकै कर जान । इनतै फिर मुगती इह भान ॥
 तप करि कै पावै निरबान । भ्रम नहीं अबसागर भान ॥५३७१॥
 महाबल मुनिवर डिग जाइ । दिव्या लही मन बच काइ ॥
 आत्ममग्यान लगाया जोग । छोड़ दिये संसारी भोग ॥५३७२॥

ब्रह्मा

धरघो ध्यान चिद्रूप सो, दया भाव करि चित्त ॥

लक्ष्मण के सुत अतिबनी, कियो धरम सु हित ॥५३७३॥

इति श्री वन्द्यपुराणे लक्ष्मणस्य वृद्ध निष्कमण विद्यानकं

१०४ वां विद्यानक

शीर्ष

भावमडल नै चेत्या धरम । सकल जनम बाधिया कुकर्म ॥

जब रावण सु कियो संप्राम । बहुत लोग मारे तिह ठाम ॥५३७४॥

अवर देस कूँ बाधे बर्यो । दुरजन दुष्ट बहुत ही हर्यो ॥

पांचु इन्द्री मुख कियो अयाह । मानुष जनम दियो यू ही गमाह ॥५३७५॥

आतम काज समार न सबया । मोह कष माया बस धन्या ॥

अब जे छोडुँ राज बिभूत । हय गय बाह्यण बिभव संयुक्त ॥५३७६॥

ए नारी किन्नर उणिसार । कीमल अँग कमल सुकुमार ॥

सदा सुख सो बीतै बढी । मो बिन छह रित जाई बुरी ॥५३७७॥

बारह मास किम सह सताप । मुझ बिन मरै करै बिललाप ॥

इना की कल्पना लागै माहि । किस विष इनसूँ कळूँ बिछोह ॥५३७८॥

कोई कोई भूपति बलवान । मानै नहीं हमारी आन ॥

साधूँ सबकूँ संसा करि दूर । तबै दिक्षा लेहुँ भर पूर ॥५३७९॥

असी विष मन सौबै धनी । इह जागै इक कारण वण्णा ॥

सोवै था सत लगै आवास । बिजली पढी प्राण का नास ॥५३८०॥

मन मा चितवै या कछु और । अण चित्या हुवा इण ठौर ॥

जिण नहीं डील धरम की करी । तिसका मन की पुंजी रली ॥५३८१॥

धरम करण कौ करै विचार । सोचि सोचि जे राखै टारि ॥

जनम अकारण यूँही खोइ । अवसर चूकै कबहुँ न ह्योइ ॥५३८२॥

धरम काज कीजिए तुरत । पार्व सुख अरु मोष्य सहत ॥

सोच करंत जे व्यापै काल । फेर पडै माया के जाल ॥५३८३॥

चित्त चेतन सो त्यागै प्रीत । धन्य धन्य पुष्य अटीत ॥

आप तिरै अवरां नै तयार । फेर न बहुरि भरमै संसार ॥५३८४॥

ब्रूहा

धरम बिलंब न कीजिए, करिये पहुंच समान ॥

मन बांछित सुख भोगवै, बहुरि लहे निरवान ॥५३८५॥

इति श्री वचनपुराणे भाषमंडल परलोक वसन विधानकं

१०५ वां विधानकं

चौपई

हनुमान की तपस्या वर्णन

ललमण सम अन्य न कोई भूप । बल पौरुख ग्रह महा स्वरूप ॥

रामचन्द्र सेती अति प्रीत । जाणै सकल धरम की रीत ॥५३८६॥

उनलै भुगतै सुख घणै । सीतल मनोहर जल सु वणै ॥

ऊचा भंदिर अति उत्तम । महा सुगंध फूल सुरग ॥५३८७॥

भरना तै तिहा निकल नीर । उछलै बल सुख हुवै सरीर ॥

गोभर ढांडी छाई छान । ई माफिक सुख भुगतै हनुमान ॥५३८८॥

बहुरि विचार करै मनमाहि । यह ससार भरघो बुल मांहि ॥

पुत्र कनिष्ठ सब लिये बुलाई । उनसों बात कही समझाइ ॥५३८९॥

इह संसार बिजली उद्योत । फिर छिन मे अंशिमारा होत ॥

हम तुमसों ईहा लग थी प्रीत । अब हम जाइ हो इहां अनीत ॥५३९०॥

इनका चित्त निहचल बंध । रोवै परिजन लोग कुटंब ॥

बडि सुखपाल चैति बन गए । राजा प्रजा परियण संग गए ॥५३९१॥

सेना सकल भई उठि सग । बाजा बाजै ताल मृदंग ॥

धरम रतन भुनिबर पै जाइ । नमस्कार करि बोलै राइ ॥५३९२॥

स्वामी भोक्तुं दिव्या देहु । बाहु पकडि अपनी संग लेहु ॥

बिद्युतगति सुत नै दे राज । सीपी सब परिणण की लाज ॥५३९३॥

मुकट उतारि सबै शृंगार । बसतरि फाडि दिए तिहु जानि ॥

लोचे केस दिगंबर रूप । सात सै पंचास अबर संनि भूप ॥५३९४॥

करै तपस्या मन वच काइ । यातनध्यान करै मन साइ ॥

तेरहु बिच सौ चारिन धरधा । बारहु जल हावत तप करधा ॥५३९५॥

समकित अष्ट अंग संबुक्त । अष्ट अंग धरि ग्यान बहुल ॥

अनप्रेष्या का प्रेष्यन करै । ग्यान लक्षण करयै ते धरै ॥५३९६॥

दस लक्षण गुंण चक्र संभार । सब भावध तिहा दिए कारि ॥
 अष्ट करम से मांई सुख । सहै परीसा बाईस सुख ॥५३६७॥

छठे महीने लेई आहार । मन बच काई दृढ अपार ॥
 आतम विदार्नद सों ध्यान । केवल ध्यान लहै हनुमान ॥५३६८॥

करि बिहार फिरे बहु देस । भव्य जीव कूँ दे उपदेस ॥
 श्रीमती लक्ष्मी अरु अणी । बंधमती आरजिका सु अणी ॥५३६९॥

दिष्या देहु हम कूँ आजि । हम भी करै आतमा काज ॥
 सब ही मिले समय व्रत लिया । निश्चल ध्यान निरंजन किया ॥५४००॥

देही तै ममता राखी नही । जिनके चित्त समकित है सही ॥
 हनोमान प्रतिबोधे धरो । अष्ट करम अरि सब हरो ॥५४०१॥

हनुमान पचम गति लही । जोति मा जोति समाही सही ॥
 मुक्ति वध सुख उत्तम धान । दरसन बल वीरव बहु ध्यान ॥५४०२॥

कूहा

कथा सुनै हनुमान की, करै दया सुं आन ॥
 देबलोक सुख भुगांत करि, पावै ते निरवाण ॥५४०३॥

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान निर्वाण विधानकं

१०६ वां विधानक

बाँपई

रामचंद्र जब अंतो सुणी । हनुमान छोडी सब दूनी ॥
 भया मुनी दिगंबर भेस । करै प्रति काया कलेस ॥५४०४॥

अबर चेती कुबरा की बात । रघुवर सोचै इह विरताज ॥
 रे रे आई मूरख छोडै राज । काया कष्ट सहै जिन काज ॥५४०५॥

देषत असुन करम का भाव । राज छोडि भिक्षा सँ भाव ॥
 ए सुख छाडि परीसा सहै । असे बहुरि कहाँ सुख लहै ॥५४०६॥

मूरख संघण करि करि मरै । पूरव पापन के कहाँ टरै ॥
 निदा करी इणुं की अणी । इन्द्रलोक मे अरुणा इह अणी ॥५४०७॥

सौधर्म इन्द्र की सभा तिहां जुडी । सकल विभूत तिहां सोमै खरी ॥
 पुराण कहै इन्द्र जिहां सौधर्म । सिद्धांत बाणी समझावै धर्म ॥५४०८॥

सप्त सत्व षट् द्रव्य बलान । नव पदारथ कहैं सुर स्थान ॥
 सुराँ देव सब अस्तुति करै । प्रभु ए भेद कब कबख बै पड़े ॥५४०६॥
 मनुष्य बिना न तपस्या होइ । देव धरम करि सकैं न कोइ ॥
 पूजा देव करण समरथ । जैन धरम बिन सब अकथ ॥५४१०॥
 अरिहृत देव सम अन्य न देव । और धरम जनम का भेव ॥
 मिथ्याती सास्त्र जे कहै । उसके वचन न चित्त मे गहै ॥५४११॥
 वकता सरोता नरकैं जाइ । तिहाँ को नाहि दया सुं भाव ॥
 श्री जिनवाणी जीवन मूल । समकित कौ छोडो जिन मूल ॥५४१२॥
 देव एक बुलाइ सभाइ । मध्यलोक मे जनमैं जाइ ॥
 तिहां माया मे होइ अचेत । कैसे पलैं धरम सो हेत ॥५४१३॥
 राम लखमण ब्रह्मलोक ते चए । ते माया मे भयमत्त भए ॥
 रामचन्द्र लखमण सो प्रीत । पल नही विछोडैं प्रीती रीत ॥५४१४॥
 मोह के वसि दोनूँ हैं घले । एक ब अष्ट करम कु हनै ॥
 प्रीति न छोडै किस ही भांति । मूँ ही उनकी भाव विहात ॥५४१५॥

बूहा

भोग भुगत मानै रली, दियो धरम बिसराइ ॥
 दया विहूँणा मानबी, किन न पावैं भव पार ॥५४१६॥

इति श्री पद्मपुराणे संकर सुर संकर कथा विधानकं

१०७ वां विधानक

चौपई

रतन जूल अर तमजूल । दोनूँ देव अस्याव का मूल ॥
 एता कह्या उता का मोह । पल नहीं होवैं उनका विछोह ॥५४१७॥
 इन्द्र बात नै आणी हिये । दोन्यूँ चाहैं परचा लिये ॥
 मध्य लोक आया दोउ देव । कहैं इक देखैं इनका भेव ॥५४१८॥
 रामचन्द्र कै मन्दिर गए । जुबल देवता परपंच किये ॥
 मायामई एक परपंच रब्बा । मंदिर में रुदन मचाया सत्ता ॥५४१९॥
 राम राम करि रोवैं नारि । पीटै सिर मां बारं छारि ॥
 पोलिये रुदन सुण्यां तिहुं बार । दोहथा आया लखमण द्वार ॥५४२०॥

मंत्री भ्रागं पीटै सीस । रामचन्द्र मुवा जगदीस ॥
 मंत्री नै खाई पछाड । रोवै पीटै सब ससार ॥५४२१॥
 लखमण भ्रागं पटकी पाग । रामचंद्र सुणी बेही त्याग ॥
 सुण लखमण का फाटा हीया । हाइ हाइ करिने मृतक भया ॥५४२२॥
 राम बिना मैं कैसे जीउं । हा हा करि प्राण दे देहु ॥
 घाइ करि उठ्या देखूं हूं राम । पड्या मूरछा हुई तिह ठाम ॥५४२३॥
 मंत्री रोवै डोलई वाव । गए परान जीव का न नाव ॥
 सत्रहसै सहस्र रोवै अस्तरी । हाइ हाइ करि घरणी पडी ॥५४२४॥
 कोई पकडि उठावै बाह । कोई इक सबद सुणावो माह ॥
 कोई लपट दई कठ लगाइ । कोई करै बीजणा बाइ ॥५४२५॥
 कोई पग हलावै झाइ । कोई देखै मुल की रताइ ॥
 मृतक देखि सकल बिललाइ । तब वे दोई देव बिलपाइ ॥५४२६॥
 हम उपाया नउतन पाप । ए ता जीव करै बिललाप ॥
 नारायण की हत्या लई । हम एह उपाधि इनको मुई ॥५४२७॥
 हासी करता हुवा नास । लखमण नै उपजी प्रति त्रास ॥
 हम सै हुई महा कुबुधि । इतना किया भ्राणि विरुध ॥५४२८॥
 भ्रंसा पाप टरै गा किसै । दोन्यां देवा कै दुष मन बसै ॥
 इन्द्र वचन उन किया प्रतीत । पाप पोड निज सिर घरीत ॥५४२९॥
 रामचन्द्र सुणी इह बात । लखमण मुवा तुमारा भ्रात ॥
 हाइ हाइ रुदन करै ओराम । राणी रुदन करै ले नाम ॥५४३०॥
 मंदिर मे पडी देखी लोथ । बासो लपटे बोधा बोध ॥
 पग देखै अर सीले हाथ । ग्रीव न टिकै डरै तिहा माथ ॥५४३१॥
 पगडी पटकी बस्तर फाडि । भ्राता भ्राता करै पुकार ॥
 मोह उदय तें हुवा अन्ध । बोलो वेग ज्यो जीउ मैं बंध ॥५४३२॥
 खाइ पछाडि भेलै सिर धूल । रुदन सू पीटै सुध सब भूल ॥
 बडी बेर चित पाया ग्यान । हम मोह माया मे डुक्या जान ॥५४३४॥
 मोह माहि भ्रमे चिहु गति । करै तपस्या पावै स्थिति ॥
 रामचंद्र पै आग्या मागि । महेन्द्र वन के मारण लागि ॥५४३५॥
 अमृतस्वर मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि लागे पाइ ॥
 स्वामी हम परि क्रिपा करो । भव सागर से हम है ले तिरो ॥५४३६॥

दिप्या ले बैठे गुरु पासि । पूर्वे तिहां मनोरथ आसि ॥
 रामचंद्र ये बड़ा श्रेष्ठ । सीता भामंडल कुमर अष्ट ॥५४३७॥
 हनुमान लखमण भव मुषे । बिछड़े सकल भचंमै भए ॥
 वह विभूति इन्द्र मम भई । एक दिवस मे सब धरि गई ॥५४३८॥
 इह संसार जु रंग पतंग । सब र गिये महा सुरंग ॥
 उत्तरतां बार न लागै ताहि । तब इसका कहा पतिमाय ॥५४३९॥
 तासूं बहुत लगानै रुचि । भूलि गई भगली सब सुचि ॥५४४०॥

बूढ़ा

राज किया तिहु वड का, मुगल्या सुख अपार ॥
 पुम्य विभव सब खिरगई, जात न लागी बार ॥५४४१॥

इति श्री पद्यपुराणे लवनांकुस बीक्षा विधानक

१०८ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का बिलाप

रामचंद्र देखै निरताड । पीत बरण देखै सब काइ ॥
 किह कारण कृता इह भ्रात । मुख सो कबहु न बोलै बात ॥५४४२॥
 अन्य दिवस मोहि आवत देखि । आदर करता पटाभिषेक ॥
 मेरे साथ बहुत दुख सहे । दडक बन मांही जब हम रहे ॥५४४३॥
 रावण मारे मेरे काज । रघुबंसी की राखी लाज ॥
 तुम बिना बंसे जीउं आप । कैसे इह मेटो सताप ॥५४४४॥
 सुकोमल देह टटोलै राम । सीता मोह व्याप्पा इस ठाम ॥
 बचन न बोलै होइ रह्या भूक । मोसो कहा भई अब चूक ॥५४४५॥
 उठि लखमण तु लेह संभालि । लवनांकुस बन गये कुमार ॥
 दिक्षा कारण बन मे गये । फेरो उनकूं जती न भए ॥५४४६॥
 जब वह जाय कर लेसी जोग । तब हुबैगा मन कूं सोग ॥
 वे बालक बहु कोमल अंग । कैसे पालै दिप्या गुरु संग ॥५४४७॥
 उनां की वय है भोग बिलास । रहई उनों बन मांही आवास ॥
 अब तुम उठ करि त्यागी फेरि । रामचंद्र बोले बहु बेरि ॥५४४८॥
 उठिगया हंस वह मृतक पडे । राम बिबेकी माह मा नडे ॥
 मुवा मानुष कैसे बोलै बोल । माया के बसि हुवा भोल ॥५४४९॥

मई रयण सिज्या बिछवाइ । लखमण कूँ तब लिया उठाइ ॥
 सिज्या परि पोढाए जाय । सोबै अपने कंठ लगाय ॥५४५०॥
 काहूँ कूँ निकट न भाव न देहि । बहुतेँ राम करै सनेह ॥
 इह सेज्या न्यारी है ठौर । तिहा आई सकै नहीं धौर ॥५४५१॥
 मो से कहो मनका सब भेद । तो होबै ससय का छेद ॥
 ऐसी बिधि बीती सर्वरी । भया प्रभात पाखिली छरी ॥५४५२॥
 पाच नाम कहि उठो सवारि । भूपति सहे तुम्हारे द्वार ॥
 पहराए सब वस्त्र सभारि । राजा सकल करै नमस्कार ॥५४५३॥
 तेरे ऊपर जाँउ उठो वीर । तुम बिन जलै है मेरा सरीर ॥
 रामचन्द्र सोचै बहु भाँत । पीतबरण दीसै किरात ॥५४५४॥
 उठै मोह बहुत बिललाइ । पहिले मैं मरता तजि काइ ॥
 तेरा दुख हूँ कैसे सहूँ । बिना लखमण कहो कैसे रहूँ ॥५४५५॥

बूहा

बाल सघाती चीछड़े, उठै अगन की भाल ॥

मोह माया के उदय तै, मिटै नहीं जग जाल ॥५४५६॥

इति श्री पद्मपुराणे लखमण कृत रामचंद्र विलाप बिधानकं

१०६ वाँ बिधानक

चोपई

बिद्याधर लखमण मरत सुणी । सब ही नै तब मुँडी घुणी ॥
 हा हा कार हुवै सब ठौर । देस देस मे माची रोड ॥५४५७॥
 भभीषण आदि सकल नरेस । सुधीव ससाक बतक दुष के भेस ॥
 जिह लग छे बिद्याधर भूप । अजोष्या गए रुदन के रूप ॥५४५८॥
 रामचंद्र कूँ करै नमस्कार । रोवै पीटै खाइ पछाड ॥
 पगडी पटक फाडै बीर । सबके हिए लखमण की पीर ॥५४५९॥
 रामचन्द्र रोवै करै पुकार । रोवै पीटै खाइ पछाड ॥
 उठो बीर इनसूँ तुम बोल । मन की घुड़ी बेग तुम खोल ॥५४६०॥
 जै मुझ्ठै कुछ हुआ विगाड । छिमा करो तुम धब की बार ॥
 तब राजा समझावै धने । एता मोह कीए नहीं बने ॥५४६१॥
 जीव जाइ पावै गति और । तुम क्या करो रोग सौ सोर ॥
 रुदन किये लखमण जो फिरै । सब मिल यतन बहु बिध करै ॥५४६२॥

दहन किया तुम करो याहि । इहे न जीवै किस ही उपाम ॥
 घौसी सुणि कोप्यो रघुईस । अब ही काटूं सब के सीस ॥५४६३॥
 मौसौ लखमण जुहैं कूठ । याहि मुंवा कहैं बोलैं भूठ ॥
 भभीषण बोलैं समझाइ । ए मूरिष कहा जानै राइ ॥५४६४॥
 लखमण पड्या मूरछावंत । तासों कहैं प्राण भए प्रंत ॥
 याकुं घोषधि करि हूं मली । ऐसी सुण मन चिता दली ॥५४६५॥
 घटे विरोध भया सत भाव । भभीषण बोलैं तब राव ॥
 बाहू गति में एह सुभाव । काल न छोडैं किस ही ठाव ॥५४६६॥
 तीर्थंकर धनै चक्रवर्त्ति । नारायण प्रतिनारायण सति ॥
 बलभद्र धनई कामदेव । रुद्र काल बसि हुवई एव ॥५४६७॥
 सायर बंध सुरों की धाव । व्याप्य काल न छोडैं ठाव ॥
 मनुष्य पसू नरक गति दर्ल । काल चक्र सब ही पै चलै ॥५४६८॥
 काहू की न दया चित भाइ । बालक वृद्ध तरुण को खाइ ॥
 सोवत रोवत जागत खात । गावत नाचत चित से कात ॥५४६९॥
 जल परवत गुफा मुंए रहै । इन्द्रह की सरणामति गहै ॥
 तोड न छोडैं काल घटल । सकल खडा देखै तिहा बल ॥५४७०॥
 मात पिता सज्जन नैं कुटुंब । कोई न सकै काल को थंभ ॥
 पुरुष थे सा कठै गए । समय पाइ काल बस गए ॥५४७१॥
 इहै कछु नई आई है नाहि । कीजे एती मोह की दाह ॥
 मोह करम बैरी बलवान । अन्य साध जिन जीत्या जान ॥५४७२॥
 भरमै जीव मोह के काज । कबही रंक कबही होवै राज ॥
 बिन समकित जो कुगति ही घणी । आदि अनादि जाइ न भणी ॥५४७३॥
 कवण कवण गति का परिवार । छोडे बहुत न पाया पार ॥
 ज्यों बुदबुद जल उपजे धमै । घैसे सब जीव गति अमै ॥५४७४॥
 जब लग हंस तब लग प्रीत । जीव बिना पुद्गल भय भीत ॥
 वासुं कहा कीजिए नेह । कीजिए सदा सरन सुं गेह ॥५४७५॥
 घरम जीव का करै आचार । मोष नगर पहुँचावन हार ॥
 लखमण काया कीजिये दहन । या का सकल मृतक है चिह्न ॥५४७६॥
 इतनी सुण्या फिर कोप्या राम । बैरी मित्र न होइ निदान ॥
 भाई का अब साधु बैर । रांखण का बदला लहै फेर ॥५४७७॥

जीवै लखमण मेरा आत । इसका कहै जलाबो गात ॥
 दुरजन बचन क्यु मानुं आज । माहि नही काहु सूं काल ॥५४७८॥
 अब बोलै तुम छोडो क्रोध । तुमारा देखिया मै समोष ॥
 लखमण कूं तुम मृतक कहो । मोह राम रमन कछु लहो ॥५४७९॥

बूहा

जाणि बूझि सुध वीसरी, मोह करम कै भाव ॥
 मुंवा कूं जीवत कहै, लिया फिरै इस ठाव ॥५४८०॥
 इति श्री पद्मपुराणे भभीयण संसार परिष्या विधानकं

११० वां विधानक

चौपई

राम का तीव्र मोह

सुग्रीव आइ करी वीनती । मृतक देह मे जीव न रत्ती ॥
 माया मे ज्यु रहे भुलाइ । बहो ज्यु चिता सवारै जाइ ॥५४८१॥
 दहन क्रिया लखमण की करो । राज विभूत फिर सभरो ॥
 औसा सुणि कोप्या रामचद्र । दहन करो तुमागे कुट्ट ब ॥५४८२॥
 मेरा भाई रुसि कै रह्या । तासु मुवा सब मिल कै कहुया ॥
 लखमण उठो सुणुं दे कान । कैसा बोल बोलै अम्यान ॥५४८३॥
 चलो कही रहिए वनमाहि । हममो तब कोई कहै कछु नाहि ॥
 खोटा बचन कहै सब लोग । मन कु कछु उपजावै विजोग ॥५४८४॥
 बाधि पोट काधा परि डारि । मारग गहियो तहा उजाडि ॥
 मनमे किया अति उपाव । सनान करो तुम लखमण राव ॥५४८५॥

बूहा

चउका ऊपरि बैठाण करि, किया उबटणा गात ॥
 सनान कराया मृतंक कु, रघुपति अपनै हाथ ॥५४८६॥

चौपई

वस्त्र पहराए उज्जल वरण । अवर भले साजे आभरण ॥
 पचासूत सै थाल भराइ । विनय करि बोलै रघुराइ ॥५४८७॥
 करै ग्राम लखमण मुख देइ । वह सुतक कैसे करि लेह ॥
 मुख परिषाले विनवै घणा । लखमण मानौ मेरा भणा ॥५४८८॥

तुम बिन अन पांणी नही खावजे । मेरा बचन किम नहीं मानजे ॥
 भले भले गंधर्व बुलावजे । ताल मृदंग बासरी बजावजे ॥५४८६॥
 सब मिल गावै एक ही वार । जे लखमण सुनै संभार ॥
 गावै गुणी जन बाजै जंत्र । कंस बोलै मृतक तंत्र ॥५४८७॥
 बहुरि लिवा कांधा परि आप । षष्ट मास अति सहै संताप ॥
 पेचर भूचर बोलै बिहु पाम । राम न छोडै लखमण आस ॥५४८८॥
 खरदूषण का सबकुमार । च्यार रतन सुत बनी अपार ॥
 बज्रमाली राध्यस वस । लखमण का जान्या उड गई हंस ॥५४८९॥
 रामचंद्र कुं व्याकुल सुन्यां । इनुं सब खड्गदूषण हथ्या ॥
 काढि दिये ये भलका आइ । विराधित नै पहुचाए जाइ ॥५४९०॥
 रावण सा इनु मारघा बली । सबकी मानै मरदन गली ॥
 आया अबै हमारा दाव । अजोघ्या जाइ विठावै नाव ॥५४९१॥
 च्यार रतन और माली बज्र । सेन्या ले सब धाए सस्त्र ॥
 घेरी अजोघ्या मारुं बजाइ । चेत्या सुभट संभाल्या राइ ॥५४९२॥

अजोघ्या पर आक्रमण

रामचंद्र सो जणाई सार । दुरजन चढि आये तुम द्वार ॥
 तुम पट बँठो हम करि है जुध । रामचंद्र कुं आई सुध ॥५४९३॥
 कषा भोली लखमण कुं लीए । जुध उपाव बहु बिध किये ॥
 बजावतं गह्वा टकार । हल और सस्त्र लीये सभार ॥५४९४॥
 दोउ धा माडघा सुभटा घेत । भुक्तै स्वामि घरम के हेत ॥
 दाएण जुध दोउधा हुवा । पीछै पाव धरै नहीं कुवा ॥५४९५॥
 जटा पखी स्वर्ग विमान । उन मन मांहि विचारघा ज्ञान ॥
 मेरा प्रभु राम लखमण । उनु की आय बनी है कठिन ॥५४९६॥
 अब इस बिरिया करुं सहाय । कृतांतवक्त्र जीव तिहु ठाइ ॥
 जटा देव सो पूछी बात । अब तुम मध्य लोक कूं जात ॥५४९७॥

देव रूप जटायु द्वारा सहायता

जटा देव पिछली कही कथा । दोनूँ अबधि बिचारी जथा ॥
 रामप्रसाद भुगत्यां बहु सुख । व्याप्या अंत मोह का दुख ॥५४९८॥
 जाइ संबोधे इतनी बार । दोन्युं देव आए रणह मभार ॥
 जटा देव सेन्यां मे दोडि । दुरजन के दल मांची रोर ॥५४९९॥

जिहां तिहां परवत दिखलाइ । भाज न पावै सबै डराइ ॥
 पाथर पडै जिम बरसै मेह । सुघ न रही दुष्टां की देह ॥५५०३॥
 निकसरण कूँ पावै नहीं गली । महा संकट सेन्यां तिह मिली ॥
 भ्रंसा दल कही देख्या नाहि । रामचन्द्र गति का नहीं पाह ॥५५०४॥
 हमारी महा हीन है बुधि । रामचंद्र सौं माडघा जुघ ॥
 भभीषण मनै करै था हमै । बिन घाम्या भभी मानै रमै ॥५५०५॥
 ए ईश्वर इनकी बडी कला । हमारा इनसौं कबहु न जला ॥
 भ्रब जे निकसरण पावै भ्राब । दिव्या ले सावै घरम का काज ॥५५०६॥
 जटा देव दया मन भ्राब । घरम द्वार देखै छडै राइ ॥
 चार रत्न बज्रमाली नरेस । दोन्युं भए दिगम्बर भेस ॥५५०७॥
 रतनवेग मुनिवर पै जाइ । दिक्षा लई करि मन बच काइ ॥
 सहै परीस्या बीस भर दोइ । महा मुनीस्वर जिह विष होइ ॥५५०८॥
 जटा देव साध्यां कु देखि । नमस्कार उन किया परेय ॥
 घन्य जती जे साधैं जोग । तजै सकल माया का भोग ॥५५०९॥

कृतांतवक द्वारा राम को समझाने के लिये माया रचना

कृतांत सुर भ्रन्य जटा देव । इनुं रच्या माया का भेव ॥
 मारग माहि कछु सूकी डाल । क्यारी रची अति ही सुबिसाल ॥५५१०॥
 कुवा उलीचै सीजै नीर । बाडि बनावै बाकै तीर ॥
 रखवाली करै बहु भांति । बरजै सब कूँ भीतर जात ॥५५११॥
 रामचंद्र देख्या यह सूल । रे मूरख तुम काहे भूल ॥
 सूकी लकडी किम ह्वै षडी । ते एती क्यु करी जषडी ॥५५१२॥
 बिन कारज एता दुख सहै । सूकी डाल ए फल कहा गहै ॥
 तबै माली नै उत्तर दिया । तुम का मृतक काँधे लिया ॥५५१३॥
 इह जीवै तो इह उपजै सही । सूकी डाल ए भो फल गही ॥
 इतनी सुण कोप्या रामचन्द्र । वन मे भी हम कूँ दुख दुंद ॥५५१४॥
 ता कारण बसती कुं त्याग । इहा भी हमकू कुबचन लाग ॥
 कहा मारुं माली सिर चोट । भ्रंसा बचन कछा इन छोट ॥५५१५॥
 मेरा वीर रुठ कं रह्या । मृतक कहै इन भेद न लह्या ॥
 हो लखमण सुणौं इह बात । माली बचन कहै इह भांति ॥५५१६॥
 उठो बेगि लगाऊ हाथ । श्रीसी कहै न काहु साथ ॥
 तउ मै क्यारी सब डाहि । भ्रमे चल्हा रघुपति राइ ॥५५१७॥

अन्य जू देख्या तेली एक । बीलें रेत न करै धिवेक ॥
 गम पूछे तेली सून भेद । काहै करै रेती सुं वेद ॥५५१८॥

रेत माँझ तेल कयूं लहे । आप पथी र बैलकू दहे ॥
 बोला तेली सुणुं तुम राम । जे जीवै यह मृतक हस ठाम ॥५५१९॥

रेत माँझ भी निकसै तेल । मृतक जीवै तो सही ए पेल ॥
 असी सुरि बोले रघुनाथ । ई गंवार तेली तु कुजानि ५५२०॥

रुडे कू कहै तू है मुवां । अपने जीव का डर नहि हुवा ॥
 कहुँ माकू तेली पर पड्य । कही लूँ तोडि किया उपमरग ॥५५२१॥

अपे देख्या कोतक अवर । मटकी नीर बिलौवै निह डोर ॥
 गुवान थीं बोले रघुनाथ । जल मे माखग निकमै किह माथ ॥५५२२॥

कहै अहीन मृतक जे जीयई मुवा । तो जल मोहि घडि सनहुवै ॥
 कहै किमाण जे जीवै मुवा । तो इह कमल हुवै नवा ॥५५२३॥

कोषवत तब होइ कै चल्या । जटा देव कोतिक किया भल ॥
 मृतक एक लीया धरि कध । रुदन करै मोह मे अंध ॥५५२४॥

रामचन्द्र नै दिख्या ताहि । समझावै वाकू नरनाह ॥
 एतो मोह करै किम भूड । मुवा न जीवै महा अगूड ॥५५२५॥

जे लखमण भी पावै प्राण । उह फिर जीवै तेरा जान ॥
 जे राजा जीवावै मुवा । तो ए भी जीव पावैगा नवा ॥५५२६॥

छह महिने वाकू गए बीत । ज्यो लखमण ह्यो या की रीत ॥

राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना

असी सुरा जेत्या रामचन्द्र । तोड्या तुरत मोह का फद ॥५५२७॥

ज्यो असोग वृझ कूँ पाय । जोग बिजोग सकल बह जाइ ॥
 त्रिषा सै व्याप्या पीवै नीर । मिटे सकल त्रिषा की पीर ॥५५२८॥

जैसे श्री जिनयाणी सुरे । भव्य जीव पावै सुख घरों ॥
 ज्यो वटोही को बन माहि । सीतल पावै वृझ की छाँह ॥५५२९॥

जैसे तपसी पागै मोध्य । जनम जरा के दूटै दोष ॥
 मोह दग्ध सबही बुझ गई । उपज्या ग्यान चेतना भई ॥५५३०॥

बिहुँ भ्रमावै जीव बहु जौन । धिरन रह्या किया तिह गौन ॥
 मात पिता सुजन परिवार । कीया भव में मोह अपार ॥५५३१॥

कोई नहीं जीव का सगा । सुभ अरु असुभ कर्म संग लम्बा ॥
 सुभ साता तैं पावै सुख । असुख उदय तैं पावै दुख ॥५५३२॥
 मुवा न जीवै किस ही भाति । मैं क्यूं दुख किया दिन रात ॥
 विकल्प चुक्या भया संतोष । ग्यान लहर सूं काया पोष ॥५५३३॥
 तिहा देव करी वादली । पवन सुवास बली तिहा भली ॥
 नानी बूद मेह की चुगै । देवागना चरणन कूं नवै ॥५५३४॥
 गावै गीत सुहावना बोल । ताल मृदग बजानै डोल ॥
 रामचंद्र गुण गावै आन । महा सुकठ सुहावना तान ॥५५३५॥
 दोनू सुर तिहा अस्तुति करै । तब रघुनाथ पूछै उन खरै ॥
 तुम हो कवण कहौ साची बात । रूप अरुप बिराजै काति ॥५५३६॥
 कहै देव हम तुम्हारे भगत । जटा पखी मैं पाई सुर गति ॥
 जब रावण नै सीता हरी । तब मे अपणी बल बहू करी ॥५५३७॥
 उन मुन नै डारियां रोड । तुम ही सुनाए पवनाम बहोडि ॥
 तुम प्रसाद मैं हुवा देव । सुख मे कबहुं जाण्यां भेव ॥५५३८॥
 सीता की सुख बीसर गया । तुम कारिज मै कवहु न किया ॥
 तुम व्याकुल लखमाण कै काज । तब मुझ आसण काप्यो आज ॥५५३९॥
 इह कृतातक का जीव । सकल भूषण पै सुनी धरम की नींव ॥
 तुम वचन कीया था एह । जे तुम लहो देव की देह ॥५५४०॥
 हम माया मे रहै भुलाइ । वा समे हमे समोधिपो बाइ ॥
 जटा देव जब तुम पै चल्या । तब हम सौ मारग मे मिल्या ॥५५४१॥
 हम भी सुणि आये तुम पास । अब तुम करो भुगति की आस ॥
 विद्याधर अनै भूमिगोचरी । सगली सभा राम डिय जुडी ॥५५४२॥
 सत्रुघन सुं बोलै राम । मध्य लांग की भुगतो ठाम ॥
 राज बिभूति दई सब तोहि । उत्तम विमा कीजिए मोहि ॥५५४३॥
 सत्रुघन विनवै तिए बार । तुम प्रसाद भुगत्या ससार ॥
 राज भोग मैं किया अथाह । तुम कौ छोडि कहा हम जाय ॥५५४४॥
 हम धी करै तपस्या संग । राज भोग जिन रंग पतंग ॥
 तप करि सार्व आतम ग्यान । बहुरि न भ्रमै अवसाधर आन ॥५५४५॥
 राम सत्रुघन चिता इह घरी । सकल सभा मिल अस्तुति करी ॥
 धन्य राम त्रिभुवन पति राइ । धरम ध्यान यूं मन विड ल्याई ॥५५४६॥

सोरठा

भन मे घरइ बेराग, राज रिष सब परिहरी ॥
 दया भाव सू राग, धर्म प्रीत राखो खरी ॥५४४७॥
 इति श्री पद्यपुराणे लक्ष्मण संस्कार मित्र देव आगमन विधानकं

१११ श्री विद्यानक

ओपई

सन्नुधन के सांभलि बंन । रामचन्द्र सुख हुवा बंन ॥
 धन्य सन्नुधन तेगी बुधि । समकित सुं तै राखी सुधि ॥५५४८॥
 अनंग लवन लवन का पूत । दीधी सगली राज बिभूति ॥
 पट बिठाड करि ढाले कलस । अनंग लवन सबही मे सरस ॥५५४९॥
 परजा की रक्षा बहु करै । दया दान चित बहु विष धरै ॥
 दुरजन दुष्ट सब छिप गये । मित्रा के सुख उपज्यो हिये ॥५५५०॥
 भरथ बक्र ने छुट्या राज । घँसा रामचन्द्र ने किए काज ॥
 समूषण भभीषण का पूत । दीयो लंका राज बिभूत ॥५५५१॥
 राजनीति सब जाणै भली । प्रजा सुखी मन मानै रली ॥
 मदगम सुत अगद का बली । सुग्रीव राज सोंप्या विष भली ॥५५५२॥
 बेईराम भाव तब भयो नरेस । चाहै भया दिगंबर भेस ॥
 भरहुदास सेठ पै गए । सेठ महोत्सव बहू विष किए ॥५५५३॥
 पूछै सेठ मे रावजी बात । गरु बतावो उत्तम जात ॥
 सेठ कहै सुधत हैं मुनी । चारण रिष ताहि ऊपनी ॥५५५४॥
 मुनिसुधत स्वामी का बंस । महामुनी धरम का अंस ॥
 श्रीसी सुणि मुनिवर पै चले । अष्ट द्रव्य जे उत्तम भले ॥५५५५॥
 पूजा कारण चले मूपाल । सेनां सकल चली तिहु काल ॥
 वन पै मुनी का दरसन पाइ । उत्तरै भूमि सरब ही राइ ॥५५५६॥
 करि डडोट चरण कू नए । देइ परिक्रमा ठाठे भए ॥
 अस्तुति करि बोलियो नरेन्द्र । ठाठे भए साध को हृन्द ॥५५५७॥
 स्वामी हम कूं देहु चारित्र । जीतैं सोहु कर्म के सत्र ॥
 राजा सहस सोसह संग और । सत्ताईस सहस त्रिष संग और ॥५५५८॥

राम द्वारा मुनी दीक्षा होना

मुनिवर का पाया उपदेस । रघुपति अए विगंबर भेस ॥
 राज दोष तजि साबै जोग । छाडे सकल जाति का भोग ॥५५५६॥
 श्रीमती पास अजिका भई । बाईस बिष सौं परिस्या सही ॥
 अघधिग्यान रघुपति को भया । धर्म उपदेस घणा नै दिया ॥५५६०॥
 सो बग्या लागि रहे कुमार । तीन सै बरस पिता की लार ॥
 चारि सहस्र वरष भुवि साध । ग्यारह सहस्र पाच सो अठसठि बाधि
 ॥५५६१॥

इतना राज करधा मन ल्याड । पचीस वरष मे केवल उषाड ॥
 एक सहस्र नै बाग्ह वरष । करी तपस्या मन मे हरष ॥५५६२॥
 खोटा खरा समझि तन भेद । मिथ्यातम का किया बिछेद ॥
 धरमरीत गमभावे ग्यान । मिथ्या मानै जे अग्यान ॥५५६३॥
 जैन धरम की निता करै । ते मिथ्याती नरका पडै ॥
 बहु तूनै समकित पद गह्या । प्राणी का ससा नही रह्या ॥५५६४॥

सोरठा

सख आउयो सत्रहै हजार, अनै पाच वरष ॥
 रामचन्द्र जगदीश, प्रतिबोधे भविजन घरौ ॥
 धरधा ध्यान उह ईस, ते महिमा कहा लग गिरौ ॥५५६५॥

इति श्री पद्मपुराणे श्रीराम निःकमण विधानकं

११२ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

आतम ध्यान करै रामचन्द्र । वाणी सु सुत होई आनंद ॥
 इनके गुण अति अगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ॥५५६६॥
 रसना कोटिक करै बखान । उनके गुण का अंत न आन ॥
 इन्द्र धरणेन्द्र जे अस्तुति करै । ते नही बोज अंत निलरै ॥५५६७॥
 छठै महिने निमित्त आहार । नदसतल नगरी के मभार ॥
 रिब की जोतिन का परताप । महा मुनीस्वर सोमै प्राप ॥५५६८॥
 ईश्वर्य समिति सौ गजगति चाल । मालीं मेर सुदरसन हाल ॥
 सोमै कचन वरण सरीर । उमडे लोग भई अति भीर ॥५५६९॥

देलै रूप सराहै मुनी । इनकी महिमा जाह न मिनी ॥
 कै सुरपति कै कोई देव । ग्यानवन्त ते समकै जीव ॥५५७०॥
 श्री रामचन्द्र आए मुनिराइ । ग्रहार निमित्त पहुँचे इस ठाँइ ॥
 घर घर द्वारा पेघण होइ । क्षेत्र सुख करै सब कोइ ॥५५७१॥
 उत्तम वस्तु र सोखै सुख । सब कै दान देण की बुध ॥
 सब ही वंछै अँसा भाष । धन्य वहै जीमै जिहू ठाम ॥५५७२॥
 नग्री मे हुवा बहु सोर । छूटा हाथी बचन तोड़ि ॥
 दाहे फोड़े हाट पट्टण ठाँइ । चोडा छूटा तोड़ि हिराहिराइ ॥५५७३॥
 कोलाहल सुणि प्रतिनदी भूप । निकस भरोसा देखै भूप ॥
 मुनि कौ देखि कहै दण भाइ । भेज्या किकर लेहु बुलाय ॥५५७४॥
 दोरा घणा आए मुनि पास । नमस्कार करि विनती भास ॥
 दोइ कर जोड़ि बीनबै खरे । हम पर प्रभुजी क्रिया जो करै ॥५५७५॥
 हमारा राजा पासि तुम चलो । भोजन लेहु घरम मे मिलो ॥
 उना नै जाण्या मुनी का भेद । अंतराय भया मुनी कु खेद ॥५५७६॥
 फिर आया वन मे धारणा जोग । पसचाताप करै सब लोग ॥
 अब कै बे मुनि आवै फेरि । विष सौ भोजन खा इह बेर ॥५५७७॥

मुनि कू भई अंतराइ, भूपति विधि समकै नही ॥
 फिर आए वन ठाँइ, लिव ल्याए चिद्रूप सौं ॥५५७८॥

इति श्री पद्मपुराणे गोपुरसौं श्लोभ विधानकं

११३ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्वा

षष्ठमाम अर गहो सन्यास । एक वरष पीछै ए भास ॥
 जे वन मे पाऊं आहार । भोजन कूँ इच्छो तिहू बार ॥५५७९॥
 नगर माहि नै कबहु जाहि । अँसा मन राख्या उछाह ॥
 प्रतिनंद राई प्रभावती अस्तरी । उनुं सोच अँसी विष करी ॥५५८०॥
 जवउ दह आवै इहा मुनी । दान देय करि सेवा घनी ॥
 नदन बहुरि सरोवर वन भाँक । दपति गए क्रीडा कुं साँक ॥५५८१॥

करी रसोई उत्तम भली । बहु पकवान सौंज बहु मिली ॥
 महासुगंध मनोहर बने । हरिष हरिष बडे कीए बने ॥५५८२॥
 पटरस व्यंजन प्रासुक नीर । भात दाल और उजली खीर ॥
 रामचन्द्र उठिया मुनीन्द्र । राजा राणी भयो आनद ॥५५८३॥
 विधि सौं द्वारा पेयण किया । चरण छोइ गघोदक लिया ॥
 वैयात्रस्त सौं दीया दान । मुखसौं बोल्या सुभ भगवान ॥५५८४॥
 भई दुहुभी किनर गीत । रतनदृष्टि पुहुपन की रीत ॥
 जै जै कार देवता करै । धन्य धन्य वचन मुख ही धरै ॥५५८५॥
 वनमे फिर कर लाग्या ध्यान । राजा कै चित समकित आन ॥
 बहुता नै समकित व्रत लिवा । सब ही कं मन आई दया ॥५५८६॥
 दान सुपात्रह ढीजे सही । अरचा चरचा पूज करेइ ॥
 बहुतो नै छडपा मिथ्यात । मुनिसुव्रत सेवै दिन रात ॥५५८७॥
 रामचन्द्र दै धरम उपदेस । मानै राव रक उपदेस ॥
 अमृत वचन प्राण आधार । उतरै भवसागर तै पार ॥५५८८॥

मुनिवर ग्यान गंभीर, कहै धरम समझाइ करि ॥
 पार्वै है पर पीर, रामचन्द्र मुनिवर बली ॥५५८९॥

चौपई

नासा दृष्टि आतम ध्यान । बारह तप द्वादस व्रत जानि ॥
 तेरह विष सौ चारित्र धरा । समकित सौ दिख राखै खरा ॥५५९०॥
 सच महावत पाच सुमति । मन बच काया तीनु गुपति ॥
 मका रहित रह्या वन माझ । करै सामायिक बामर साझि ॥५५९१॥
 चउदह आठ परीसा सहै । राग द्वेष सु परहा रहै ॥
 ध्यार कषाई करी सब दूर । शोध मान माया कूँ खूर ॥५५९२॥
 अठाईस मूल गुण पाल । तोडघा मोह करम का जाल ॥
 पंचइन्द्री की रोकी चाल । छाडि दिया माया जजाल ॥५५९३॥
 आरत रुद्र दुई ध्यान है बुरे । ते प्रभु नै सब परिहरे ॥
 धरम सुकल सो त्याया चित्त । सुकल ध्यान की जाणी धित्त ॥५५९४॥

घट सेस्या का करपा बिचार । कृष्ण नील कापोरै टारि ॥
पल पल महाग्यान चित चढ़पा । मुकुल ध्यान बहु विष चित पढ़पा
॥५५६५॥

छह रुति सहै परीसा बरणी । वरम सुणार्व संबोधि पुणी ॥
करि बिहार फिरे बहु देस । बहुतां नै दियो वरम उपदेस ॥५५६६॥

भूबर खेबर दानव देव । निस दिन करै राम की सेव ॥
कोटिसिला पहुँचे रामचन्द्र । नमस्कार करि ताकूँ बधि ॥५५६७॥

सिख सुमरण करि बैठे तिहां । वरम ध्यान आतम गुण लिहां ॥
क्षिपक अंश आतमगुण लहान । घैसी बिधि सौ ल्याया ध्यान ॥५५६८॥

स्वयंप्रभू अव्युत बिमान । उनै अवधि धरि समझ्या ग्यान ॥
पूरब भव का किया बिचार । मैं थी सीता स्त्री अवतार ॥५५६९॥

रामचन्द्र लखमण दोउ बीर । नारायण बलभद्र सरीर ॥

सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन

मैं पटराणी राम भरतार । बुल सुल देख्या लारौ लार ॥५६००॥

लखमण मुवा अघोगति गया । रामचन्द्र व्याकुल अतिभया ॥
समझि जैन की दिध्या लई । राज बिभूति सब तै तजि बई ॥५६०१॥

द्वादस गुणस्थान करी स्थिति । अब हुलास उसका चित्त ॥
ए बे भाई दोन्पूँ बली । रामचन्द्र बांशी स्थिति भली ॥५६०२॥

इहु ले मोष्य बहु भुगतै नरम । उहां भोगमैं महा उपसरग ॥
इननै जान्यां ससार स्वरूप । दिक्षा बरी दिगवर रूप ॥५६०३॥

जई तै पटालुं कलूँ बसत । भुगताउं संसारी बसत ॥
नंदीस्वर की कराउं जात । लखमण नै काबू किहु भात ॥५६०४॥

अंसी समझि उतरपा सीतेन्द्र । कोटिसिला जठे रामचन्द्र ॥
बहुत देव आए ता संग । बरलै अति ही फूल सुरग ॥५६०५॥

मदा पवन पटल जल बणाई । भ्रमकै मेहु दगध कूँ हणोई ॥
छह रितु के फूले फूल । सीतल छाह सुख का मूल ॥५६०६॥

पछी सगला करै किलोल । सबद सुहावन मधुरे बोल ॥
मोरइ भाव कोइस बुनि करै । सुवा पवै जिनबाणी खरै ॥५६०७॥

सुर सीतां का रूप बणाइ । हंस गमन सोभा बहु पाइ ॥
रामचंद्र के उनमुख आइ । कहैक बोलो रघुपति राइ ॥५६०८॥

तुम कुं सब वन दूबत फिरी । अब हम भई महा सुख थकी ॥
 मैं दरसन धब तुम्हारा सहा । चरण छिड़ि अब जाऊँ किहा ॥५६०६॥
 मैं मान्या नही तुम्हारा वचन । करी तपस्या वन मैं कठिन ॥
 मो परि प्रभू होइ क्षिपावन्त । अजोघ्या चलि सुख करो अनत ॥५६१०॥
 तुम्हारी आग्या राखु सौम । छडो तप भुगतो सुख ईस ॥
 करो राज भोग समाग । तपके किए देह सब धार ॥५६११॥
 छीजै काया बटे स्वरूप । हम सीता नारी अन्य नै स्वरूप ॥
 चालो गेह भोग सब साज । काया सै कष्ट सहो बेकाज ॥५६१२॥
 मैं वन मे साधै थी तप । श्री जिन ध्यान करै थी जप ॥
 विद्याधर की कन्या भाइ । मोसू कही बात समझाइ ॥५६१३॥
 जीवनवत वयूँ दीक्षा नेट । पच इन्द्री नै क्यूँ दुख देइ ॥
 आनम कष्ट किया बहु दोष । जीवन बैस कीजिए पोष ॥५६१४॥
 बृद्ध अवस्था कीजिए जोग । अब घर चालि कीजिए मोग ॥
 तू फिर आबै राम के पाम । हम हैं कन्या इह मन आस ॥५६१५॥
 तुम पटराणी हम सेवा करै । रामचन्द्र सो सब सुख भरी ॥
 वे भी तुम पै आबै अस्तरी । तब साची जाणु ये खरी ॥५६१६॥
 देवायना एक महस । बालक बैस रूप की हस ॥
 मोलह सब कीए शृ गार । आभरण सब सोभै इकमार ॥५६१७॥
 रूपाभराट उतरी अपछरा । मबद मुहाबन रस मु भरघा ॥
 कोकिल कठ बहै मुख दीन । रूपबन्त अति दीर्घ नैन ॥५६१८॥
 बहुराग छतीग रागनी । मोलह कला संपूरन वनी ॥
 तान मृदग बजावै त्रीन । करै नृत्य बोलै आधीन ॥५६१९॥
 राजभोग तजि बंठे आन । ए सुख छिड़ि कहा होइ अग्यान ॥
 चलो प्रभू हमारे गग । सुख भुगतो दुख का करो अत ॥५६२०॥
 इन्द्री मोस्या होइ है पाप । ए सुख छीड़ि सहो सताप ॥
 इह है भोग भुगत की बैस । मानूँ तुम हमारा उपदेस ॥५६२१॥
 बहुरै भाव दिखारै खरी । नाचै सरस महा गुण भरी ॥
 बाह सठावै जभाई लेह । पग अ गुष्ठ भूमि परि देह ॥५६२२॥
 उछल घडी गहै द्रुम डोर । तोडै फूल सोभै रग सार ॥
 सिर तै बस्त्र धरित परि पडै । गाबै नाचै भय नही धरै ॥५६२३॥

भीठा वचन ठडोलु हाम । उनकू नहीं संसारी आस ॥
 सुकुल ध्यान सू त्याया चित्त । अनुप्रेष्या कू' परखै नित्त ॥५६२४॥
 म्याठ तीन तोडी परकित्त । ज्यार करम सू छुट्या हित्त ॥
 महा मुदि पिछली निस गही । दोड बडी तँ अथिकी नही ॥५६२५॥
 केवलम्यान लबधि तिहू बार । दसो दिसा भयो जय जय कार ॥
 निरमल दोसै दस हुं दिसा । दरसन किया मिटै है ससा ॥५६२६॥
 इन्द्र आसण कंप्या तिहू बडी । अवधि बिचार बनती करी ॥
 उतरी हेठे डडवत किया । घनदत्त कुमार कू' आग्या दिया ॥५६२७॥
 कचन मडी रची तिहू ठौर । जै जै कार करी सुर और ५६२८॥

ब्रूहा

इन्द्र घरणेन्द्र किअर महित किया महोत्सव आड ॥
 अष्ट द्रव्य सू पूज करि, बारह सभा रचाड ॥५६२९॥
 व्यंतर देव सेवा करइ नरपति खगपति और ।
 वारी सुणि सब सुख लहै, पाप बध का छोर ॥५६३०॥

चौपड़

सीत इन्द्र अवर सब देव । बिनवै सकल दीनता भेव ॥
 हमनै मटा उपाया पाप । तूमकू' छल बल दए मंताप ॥५६३१॥
 तुमारा चित्त मुदर्शन मेर । अंसा कवण मकै तिहू फेर ॥
 हम परि क्षमा करहु जगदीस । बारबार नवावै मीम ॥५६३२॥
 केवल वाणी अगम अथाह । उपजै पुग्नि मिटै सब दाह ॥
 मनकू संसय होवै दूर । प्राणी का है जीवन सूर ॥५६३३॥
 रिब कँ उदै तिमिर मिट जाड । वारी सुणत मिथ्यात पलाड ॥
 उपजी बुध घरम कँ सुनै । निहचै अष्ट करम कू' हनै ॥५६३४॥

केवल वचन अपार, वाली सुनि निहचै बरै ॥
 सुल भुगत संसार, बहुरि जाइ मुक्त बरै ॥५६३५॥

इति श्री पद्यपुराणे पद्मस्य केवलज्ञान प्राप्ति विधानकं

११४ वां विधानक

चौपई

सीतेन्द्र लखमण चित आन । वह राखै था मेरा मान ॥
 सेव हमारी कीनी घरी । उसकी महिमा जाइ न गिरी ॥५६३६॥
 नरक बालुका भूमि तीसरी । ताकी गति अंसी स्थिति पड़ी ॥
 अब मैं वाकूँ काढूँ जाइ । असे देव विचारूँ भाइ ॥५६३७॥
 मानुषोत्र पर्वत कै निकट । तिहा बहुते मारग निकट ॥
 घस्या देव बालुका ठाव । राघ्य सरूप है सबुक नाम ॥५६३८॥
 लखमण कू देवै बहु त्रास । मारै मुदगर बाण का नास ॥
 फिर कर बिपर होइ इह देह । पल पल मारि करै इह खेद ॥५६३९॥
 पारा झूँ बिखरै फिर जुडै । माग मार सबद बहु करै ॥
 जे जुके थे राबण संग । आरत रुद्र मे तज्या था अग ॥५६४०॥
 ते भी सकल भया इक ठौर । भुगतै दुख करै अति घोर ॥
 छेदन भेदन मुदगर मार । सहै बेदना अगम अपार ॥५६४१॥
 भोजन रयण मास जो खाई । मद मधु सुरापान ज्युं अचाह ॥
 उबर नै कठु बर भलै । ताता घड लोह दे फकै ॥५६४२॥
 होट चीर ठोसै है प्यड । ऊपर तँ ठोकै है डड ॥
 तातो राग डालै सुख माहि । सुरा पान का ए फल आहि ॥५६४३॥
 करै आखेट हनै बहु जीव । सुला रोप्य दुख की नीव ॥
 छेदन भेदन बारंबार । ज्वारी चोर का काटै हाथ ॥५६४४॥
 परनारि बेस्या सुं रत । लोह फूतली कीजे जफत ॥
 जोर भिडावे देही जुडै । सात बिसन का ए दुख भरै ॥५६४५॥
 बैतरणी मैं दीजे डारि । मच्छ कछ लें काया फाडि ॥
 कोई रूप सिंघ कोई स्नान । भलै वेह दुख पावै प्रान ॥५६४६॥
 जिमका था तिसको कुछ वरै । देह परीस्या उनकूँ धरै ॥
 सीतेन्द्र लखमण कुं जानि । सबुक ने समझाया म्यान ॥५६४७॥
 आरत रुद्र सेती इह गति । अजहु भूड न चेत्यो चित्त ॥
 देख नारकी भय चिक करेइ । इहतो देव काति बहु लहेइ ॥५६४८॥
 सुरनै देख ह्वै गण सात । पुछै संबुक देव कु बात ॥
 अवर छोडि आए तिहा घरी । राखी देव सरण आपणी ॥५६४९॥

पूर्व कथा

सीतेन्द्र बोले समझाई । हू सीता हू लखमण राई ॥
 रामचंद्र की थी पटघण्टी । दंडक वन की प्रापति बनी ॥५६५०॥
 तिहां तप सार्ध सबुक कुमार । लखमण ने मारिया अचुकार ॥
 भया जुष खड्गदूषण साथ । मोहि हरी लंका के नाथ ॥५६५१॥
 रामचंद्र लखमण सुघपाई । संग्राम किया रावण सुं भाई ॥
 रावण मारधा मोहि आणी जीत । उदय भई करम की रीत ॥५६५२॥
 घरत मोहि दई निकास । भय दिव्य दीया जीवन की आस ॥
 तप करि अच्युत स्वर्ग विमान । जैन धरम की मानी आनि ॥५६५३॥
 जैन बिना नही लहिऐ मुक्ति । लखमण भया मोह की शक्ति ॥
 कारण पाइ तिहा थी मरधा । छह मासा लग राम लिये फिरा ॥५६५४॥
 कृतांतवक्र अनै सुर जटा । उनही सबोघ्या मोह तब घटा ॥

बालुका पृथ्वी में रावण, लखमण एवं संजुकुमार की दशा

रामचंद्र नै दिध्या लई । केवल लबधि खान की भई ॥५६५५॥
 श्रीसी सुगत अवभा भया । दया भाव कै मन भया ॥
 रावण लखमण संजुकुमार । तीनुं बालुका भूम मभार ॥५६५६॥
 इनसुं देव कहैं समझाह । तुम दुख दूर करो ले जाइ ॥
 लखमण कूं जब लिया उठाइ । देखी बिखर गई तिह ठाह ॥५६५७॥
 बहू बिष जतन किया तिह ठाई । पावै नही उनु का जीव उपाई ॥
 ज्यो दरपण मे भाई देखि । हाथ न आवै किस ही भेष ॥५६५८॥
 श्रीसी भाति नारकी देह । दीसै प्रतिच्छ ऊपजै सनेह ॥
 हाथ लगाया बिखरी पडै । नरक माहि परस्पर भिडै ॥५६५९॥
 बेर बेर दुख पावै घणौ । रावण लखमण इह बिष भणौ ॥
 हम तो बाध्या करम अथाह । भुगत्या बिन न छूटा जाई ॥५६६०॥
 अब कै करम भुगत्या ही बरौ । श्रीसी तुम पासै हम सुगौ ॥
 बहुरिन आवै श्रीसी गति । इहा सुंणी कब लहैं भुगति ॥५६६१॥
 देव कहै समकित मन धरो । भुगति करम एक भव ते करउ ॥
 तप करि पटुंघोये निरवाण । बहुरि न भ्रमै चतुरगति आन ॥५६६२॥
 समकित बिन बीस्यो बहूकाल । कबहु न चूका माया जाल ॥
 बिन निससै डोल्या बहु जौनि । क्यारुं गति में कीयो गौन ॥५६६३॥

रोग सोग बहु पीडा सही । जैन धर्म सौ प्रीत न गही ॥
 जे बहु करै दान तप जाप । समकित बिना न टूटै पाप ॥५६६४॥
 अब राखो निमचल दिह चित्त । केवल बाणी मानौं नित्त ॥
 असी सुरिण वे अस्तुति करी । धन्य सीतेन्द्र दया चित घरी ॥५६६५॥
 हम तो समोष्या दया निमित्त । निसचल रख्या इक समकित्त ॥
 बैठि विमाण चल्या आकास । अभ्युत स्वर्ग जिहां था बास ॥५६६६॥
 नरक देखि मया भयभीत । हीयो घदकै कांपै चित्त ॥
 असे दुल मुगते कई बार । हीठल जीव न पायो पार ॥५६६७॥

राम केवली राम के पास आगमन

श्री रामचन्द्र कूँ केवलजान । चले अमर सुरिण धरम बखान ॥
 तारन तरन श्री रामचन्द्र । दरसन देखत होइ आनन्द ॥५६६८॥
 सीतेन्द्र के सग सुग घने । किनर गधर्व बहुतै बने ॥
 कसाल ताल बाजै बासुरी । बीण मृदग की सोभा खरी ॥५६६९॥
 करै नृत्य गावै बहु गीत । रामचन्द्र गुण सुमरण चित ॥
 आये देव महोच्छा कारण । समोसरण देख्या दुख हरण ॥५६७०॥

ममवसरण

बारह सभा बैठी तिहु ठीर । निरमल दीमैं च्यारूँ ओर ॥
 बन की सोभा अति रमणीक । फूले फलै दे दीसैं नीक ॥५६७१॥
 जाणो भूमि रत्न मणि खरी । असी जुगति देवता करी ॥
 देई प्रकमा सिष्टाचार । अस्तुति पढै वे बारबार ॥५६७२॥
 तुम सम राम अबर नहीं बली । मोह करम की प्रगति दली ॥
 ग्यान खडग सो करम बस किये । उत्तम ध्यान विचारया हिये ॥५६७३॥
 परिसह पवन तै पाप उडाइ । असे तप साध्या मुनिराइ ॥
 सुकल ध्यान सो केवल पाइ । भव जल पडे लगे ढिग आइ ॥५६७४॥
 जो तुम पाया मार्ग मोष्य । हमपै मनि अपराँ छो सोष्य ॥
 हमारी थी तुम परि बहु मया । पहुँचाओ मुक्ति करो अब दया ॥५६७५॥
 रामचन्द्र इमि वाणी कहै । जिनवाणी जे मन बच गहै ॥
 तब कोई पावै सरग मुक्ति । तेरह बिध सों भरै चारित्र ॥५६७६॥
 जब लग क्रोध रु माया मान । लोभ काम तै भ्रमै अग्यान ॥
 पाथर को हीया तल राखि । जलपै निरछा चाहै धरि काषि ॥५६७७॥

ऐसी हैं ये च्यार कषाय । ज्यों पाषाण सों तिरचो न जाइ ॥
 पाथर सग तिरभा है कोइ । तारण समकित रघ ना होइ ॥५६७८॥
 तजि कषाय तिर संसार । छोडि देई सिर तै सब भार ॥५६७९॥
 लखण गुण के मारग जोइ । राग दोष छोडै ए सोइ ॥
 पच महाव्रत समिति पाच । मन वच काया निसचै सांच ॥५६८०॥
 छह रुति सहै परीसहा अंग । समकित नै दिठ राखै सग ॥
 सम्यक दरसन ग्यान चरित्र । इह विष होवै जीव पवित्र ॥५६८१॥

प्रश्न करना

भव जल पडै जाइ सिव मध्य । जोति ही जोति मिलिया विध्य ॥
 सीता इन्द्र किया परसन्न । इह सदेह है मेरे मन्न ॥५६८२॥
 राजा दसरथ जनक नै कनक । अपराजिता केकसी प्रभा बनक ॥
 लवनाकुस का सबै वृतात । इनकी गति भई किरा भाति ॥५६८३॥
 भावमंडल कैसी गति लही । इह चिंता मेरे चित रही ॥

राम की चारणी

श्री रामचंद्र की चारणी हुई । भव्य जीव सुरंग सब कोई ॥५६८४॥
 राजा दसरथ आणत विमारा । जनक कनक भी बाही ठारा ॥
 अपराजिता केकनी कैकइया । सुप्रभास वै देवगति पया ॥५६८५॥
 व्हा तै अपराणी आर्शल पुर । एका भव मुक्ति मै जुरि ॥
 भावमंडल तरणी सुंण कथा । भोग भूमि तरां नै दीपता ॥५६८६॥
 भोग भूमि का भोगतै सुख । जनक ए करती नही दुख ॥
 सीतेन्द्र पूछै वे कर जोडि । भावमंडल की कहो बहोडि ॥५६८७॥
 कुर भोग भूमि कवण पुन्य नही । उनै तपस्या कीनी नही ॥
 रामचन्द्र बोलै भगवान । भावमंडल का कहै बखान ॥५६८८॥
 नगर अजोधा सेठ कु भपति । मकरी त्रिया सेती बहु हित ॥
 काम वजाँक दोन्यु पुत्र । ज्युं शक्ति की अति क्रान्ति ॥५६८९॥
 भोग भुगति दिन बीता घरों । भया वैराग कु भपति मरों ॥
 अमृतसोग मुनिवर डिय आइ । दिक्षा लई मन वच करि काइ ॥५६९०॥
 मकरी सुन कै तब वैराग । इन भी सकल परिग्रह त्याग ॥
 अग्र्य ब्रह्म पुत्रा नै दिया । इन भी जाइ जैन व्रत लिया ॥५६९१॥
 असोग निलक वन मै घरि जोग । छोडि दिया संसारी भोग ॥
 वे दोनूँ जे सेठ के पूत । सुख मै ये लखमी संजुक्त ॥५६९२॥

एक दिन मात पिता चित आन । दोनुं गए तिहीं उद्यान ॥
 अमृतसोच मुनि कौ देख । नमस्कार करि पूछै भेष ॥५६६३॥
 हमारे मात पिता कित ठाव । कहौ प्रभू तिह है हम जाव ॥
 मुनिवर नै वे दिये बताइ । ये भी अए दिगम्बर राइ ॥५६६४॥
 करै तपस्या आतम ध्यान । गुरु आउषो पूरी जान ॥
 नवग्रीव पाइया विमान । सिखउ किया ता मकर का ध्यान ॥५६६५॥
 पचास जोजन रेत की मही । तिहा मनुष काई दीसै नही ॥
 पडे धूप भरती बहु तपै । रुख नही तिहा छाया छिपै ॥५६६६॥
 भ्रंसे मारग निकटे साध । देव्या वृक्ष घेर सु बांध ॥
 वाकी छाया बडठे जाइ । भावमंडल बहा निकस्या आइ ॥५६६७॥
 देख जती तिहा थकया विमाण । उतरि भूमि पग लाग्या आन ॥
 मुनिवर कूँ दीया आहार । मारग सगला भला सवार ॥५६६८॥
 बडयाव्रत किया बहु भीति । मुनिवर गये जिनेस्वर जात ॥
 भावमंडल अंतहपुर जाइ । मान भालिनी गुणहराइ ॥५६६९॥
 सोबै धे सप्त खणै ग्रेह । दामनी घात सो छोडी देह ॥
 दपति जीव दख्यनी ओड । भोग भूमि की पाई ठोड ॥५७००॥
 तीन पत्न्य की आव प्रमाण । तीन के साका कीया जाण ॥
 आवला सम तै लेइ अहार । बहुर सुरगगति लेइ अवतार ॥५७०१॥
 उहा तै आए फेरि तप करै । तब दोनूँ सिव मग पग धरै ॥
 सुपात्र दान फल हुवा सहाइ । ताते दान देहु मन न्याड ॥५७०२॥
 लवनाकुस पंचम गति लहै । प्राणी का संसा नही रहै ॥
 भीता देव पूछै कर जोडि । राखण लक्ष्मण की कहो बहोडि ॥५७०३॥
 किस विध इनका कारज सरै । बे कद भव सागर तै तिरै ॥
 रामचन्द्र कहै केवल बचन । बालुका भूमि राखण लक्ष्मण ॥५७०४॥
 सागर सात भुगतैगे राज । उहाँ तै निकसि पुरव क्षेत्र की ठाव ॥
 हरिक्षेत्र विजयावती नगर । सुनदा सेठ घरम का अग्र ॥५७०५॥
 रोहिणी नाम माह की अस्तगी । सील संयम सो सोनी खरी ॥
 दोनूँ उसकै ले अवतार । अरहदास तसु प्रथम कुमार ॥५७०६॥

रिषभवास हुआ हुआ पुत्र । दोनुं गुण लम्पण संजुक्त ॥
 अणुवत पाले बे दिन रात । सीलवत सोभा की कान्ति ॥५७०७॥
 सुख सेती तिहा भाव विहाइ । सुर सौधरम अमर की काय ॥
 सागर एक आयु बल पूर । या ही देस चबै दोऊ सूर ॥५७०८॥
 कुमार कीरति तिहा भूपती । लषमी राणी के गरभ पिति ॥
 जयकीरति जय प्रभु औ होइ । रूप कान्ति करि सोमै दोइ ॥५७०९॥
 अणुवत करि धरम मो ध्यान । ह्वा तै पावै लांतव सुर बांन ॥
 स्वर्ग लोक के मुगतै भोग । भूलि गये पिछला सब सोय ॥५७१०॥
 सीतेन्द्र अज्ञोष्या मे चबै । चक्रवर्त्त छह बंड भोगवै ॥
 दोनुं देवपुत्र हुए भाइ । इन्द्ररथ अ भोदरथ राइ ॥५७११॥
 सर्वरतन रथ दिष्या लेइ । राज भार पुत्र को देई ॥
 तपकरि पावै विजयवत वास । इन्द्र अ भोद दिक्षा गुरु पास ॥५७१२॥
 सोलह कारण का व्रत पाल । विजय अत पहुंचै तिह बार ॥
 उहा तै जय रावण को जीव । ह्वै अहंन भरत जवूद्वीप ॥५७१३॥
 सरबरतन गणधर होइ । धरम उपदेस सुगै सब कोइ ॥
 जाइ मुकति तिहा सुख अनत । फिर पूछै सीतेन्द्र महत ॥५७१४॥

लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा

कहां उपजै लक्ष्मण महान । पुष्कराब्द द्वीप चमै आन ॥
 सद भूपति पुत्र नगर कै ग्रह । दोई पदइ याइ धरि देह ॥५७१५॥
 चक्रवर्त्ति हुगै अरिहत । पावै भव सागर का अंत ॥
 सात वरष बीतै जब जाइ । हम भी लहै मुगति पद ठाइ ॥५७१६॥
 सीतेन्द्र कीया नमसकार । गये फेर सुर अपने द्वार ॥
 ह्वाते फिर आये सब देव । कुरु भोग भूमि का देख्या भेव ॥५७१७॥
 भामडल ते बह सुर मिल्या । पिछला सनबंघ सुणा या भला ॥
 देव गया फिर अपने धान । रामचन्द्र सिद्धर कै ध्यान ॥५७१८॥
 पचीस बरस लौ सुमरे सिध । पहुंचै प्रभु मुगति की रिध ॥
 चतुरनिकाय आये सब देव । जय जय सबद दुहुभी भेव ॥५७१९॥
 पुष्प वृष्टि भई तिहा घणी । निर्वाण कल्याणक सोभा बणी ॥
 अष्टद्रव्य सूं पूजा करी । पडे मंत्र जिनवाणी खरी ॥५७२०॥

सोतोदेन्द्र सुमरै घरि चित्त । गुणावाद सो ल्याये हित ॥
पूजा करि पहुँचे सुर लोक । अस्तुति भई तीनों लोक ॥५७२१॥

पद्मपुराण के स्वाध्याय का महात्म्य

राम व द गुण समुद्र गभीर । सुमरण किया मिटे सब पीर ॥
अनुमात्रक किया ब्रह्मान । रामचन्द्र का पदमपुराण ॥५७२२॥
जे कोई सुगुं उठि परभात । सुखसेती बीतै दिन रात ॥
पत्री होई सुगुं बलवान । जिहा तिहा कहिये जयवान ॥५७२३॥
दुरजन दुष्ट लगै सब पाइ । कोई न सनमुख जीतै आइ ॥
सब परि उसकी होवै जीत । जागै सकल जुध की रात ॥५७२४॥

जे कोई सुगुं धर्म के काज । पावै तीन लोक का रात्र ॥
धर्म ध्यान सु पाप न रहै । केवल ग्यान जीव वह लहै ॥५७२५॥

धर्म प्रकाम जिहा जाइ निरवारण । भ्रमै नही भवसागर आन ॥
दुखी दलित्री नर जे सुगुं । बढै लखि सुख पावै घरण ॥५७२६॥

नारि बिहुषा जे नर होइ । मन बाछित फल पावै सोइ ॥
पुत्र हेत जौ सुगुं पुराण । सुख सम्पति पावै असमान ॥५७२७॥

प्रथवी परि प्रगटै जम घरण । रोग कलेस जाट सब हण्य ॥
कर्म उदै ते व्यापै दुख । राम सुमरि पावै सब सुख ॥५७२८॥

जे पापी सुगि निंदा करै । ते जीव धोर नरक मे पडै ॥
मिथ्याती प्रनीत नै चित्त । मग्घा नही धर्म मु हित ॥५७२९॥

जे समकितौ सुगुं पुराण । पावै गति देव निरवारण ॥
अंगिक नृप साभनि टह भेद । सब मसय का हवा खेद ॥५७३०॥

सकल सभा मन भयो मतोष । बहुत प्राणी या पाई मोष्य ॥
श्री जिनवाणी का ताही अत । वचन एक भेद बहु मत ॥५७३१॥

गीतम स्वामी कह्यो अरधाई । अमृत वानी सबै सुहाइ ॥
सरव भूत सुगि हिये विचार । अबधि म्यानी समझे निरधार ॥५७३२॥

जगसेन सूति केवली । मुख पाठ उन भाखी भली ॥
क्रिंतासेन ने निष्या डह ग्रथ । कोडि सिलोक सपूरण अर्थ ॥५७३३॥

अवराने पुराण लिख पढै । जिसके सुगुं धर्म हित बढै ॥
उनका मिष्य सबदन मुनि भया । इन्द्रसेन मुनि ने पट दिया ॥५७३४॥

अरहसेन भये सु मुनिद । लदमनसेन ज्यो प्रथिवी चद ॥
जिन जोइयां श्लोक सहस्र ज्यो स्पाठ । बरष्यो बहु तिहां पूजा पाठ
॥५७३५॥

रवि वेणाचार्य द्वारा पद्यपुराण की रचना

रविषेन किया अठारह सहस्र । सुगै भव्य जीव सौ बाबै बस ॥
होई पुन्य उत्तम गति लहै । भव भव दुस दासिद्र न रहै ॥५७३६॥

अथवा लहै अमर पद थान । कारण पाइ लहै निरवाण ॥
मिथ्याती जे धरम का दुष्ट । उनकुं सदा रहै बहु कष्ट ॥५७३७॥

जिनवाणी तैं भाजै दूरि । तिए नैं होवैं दुस्र भर पूरि ॥
दालिद्र सदा न छोडै मग्य । इष्ट वियोग अनिष्टै अग्य ॥५७३८॥

मन की इच्छा कदे न होइ । आदर भाव करै नही कोइ ॥
तिसकुं कोई न महिमा होइ । जिहा तिहा महिमा जलभा लेइ ॥५७३९॥

कलह करम सों बीतैं घडी । छोटी बुधि नही बीसरी ॥
रात दिवस मे भारत ध्यान । पावैं अंत नरक गति थान ॥५७४०॥

भव्य जीव सुराँ घरि रुचि । सदा हुवैं उत्तम गति सुचि ॥
मीलवत पालैं बहु भाइ । काटि करम ऊंची गति जाइ ॥५७४१॥

अंसी जारिण चलै मग सुधि । धरम होइ बाबै अति बुधि ॥
कुमति कलेस सकल मिट जाइ । राम नाम तसु होइ सहाइ ॥५७४२॥

सहस्र एक अरु दोईसैं बरस । छह महोने बीते कछु सरस ॥
महावीर निरवाण कल्याण । इह अंतर है रच्यो पुराण ॥५७४३॥

रविषेण नाम मुनिवर निरग्रन्थ । पदमपुराण रच्यो सुभ ग्रन्थ ॥
तिसके सुप्या होइ बहु रिष । कारण पाइ पद पावैं सिद्ध ॥५७४४॥

चनै देस नाम जो लेइ । ताको मनव'छित फल देइ ॥
जैसे रवि का होइ प्रकास । होवैं अंधकार का नास ॥५७४५॥

पद्यपुराण पढ़ने की महिमा

अंसा है यह पदम अरिज । मिथ्या मोह मिटै सब तज ॥
पढैं पढावैं कहैं बधान । पावैं स्वर्गाँ देव विमान ॥५७४६॥

समकित सेती पदे भर सुणी । निबुद्धे भ्रष्ट करमे कुं हुरी ॥
केवलग्यान होइ उत्पत्ति । पावे निश्चय पंचम गति ॥१७४७॥

जिस समे वर्णन होइ पुराण । सुखे बिलास और सैदी केल्याणी ॥
मनबांछित फल पावे धरौ । ते प्राणी सब निसचै सुख ॥१७४८॥

वृहत्

पदमपुंराण कुं जे पढै, बांच सुणौं औरें ।
तिहूँ लोक का सुख लहै, पाधे निरमय ठौर ॥१७४९॥

१११ वीं विधानके

चौपई

काष्ठा संघ पट्टावली

काष्ठा संघी माधुर गच्छ । पढुकर गण मे निरमल पछ ॥
महा निरग्रय आचारज लोह । छाड्या सकल जाति का मोह ॥१७५०॥

तेरह विप्र चारित्र का धरणी । काम क्रोध नही भाया धरणी ॥
महा तपस्वी आतम ध्यान । दयावत बह निरमल ग्यान ॥१७५१॥

जिहा है उत्तम क्षिमा भादि । छोडै पांच दुन्दी का स्वाद ॥
रूप निरजन त्याया चित्त । अठारिस मूल गुण नित ॥१७५२॥

चौरसी क्रिया सज्जुक्ति । जे क्षाडक समकित सौ रति ॥
कहै ग्यान के सूक्ष्म भेद । बाणी सुणत मिथ्यात का लैद ॥१७५३॥

अग्रोहे निकट प्रभु ठाडै जोग । करै ब दना सब ही लोग ॥
अग्रवाल श्रावके प्रतिबोध । त्रेपन क्रिया बताई सोध ॥१७५४॥

पंच अणुव्रत सिख्या ज्यारि । गुणव्रत तीन कहे उर धरि ॥
बारह व्रत बारह तप कहे । भवि जीव सुणि चित मे गहे ॥१७५५॥

मिथ्या धर्म कियो तिरा हैरि । जैन धर्म प्रकैसेया पुंरि ॥
विष सौ दान देइ सब कोई । सासत्र भेद सु रि समकित होइ ॥१७५६॥

दस लाघ्यणी बताया धरम । तीन रत्न का जग्या धरम ॥
व्रत विधान समझाई गीत । पूजा रचना करै सुचित ॥१७५७॥

श्री जिन के कीए देहरे । चउबीस विव रचना सुं खरे ॥
चउविष दीन के वित्त सैमाने । चउबीसों अरुणधरि प्रमाने ॥५७५८॥

जीव दया पाले बहुभाति । भोजन नीर विवरजित राति ॥
दीपन गयाने जायें सब हिए । जसुं सबीस ध्यान कवि ॥५७५९॥

दिल्ली मंडल का मुनिराय । जिसके पट्ट भया बहु ठाढ़ ॥
धरम उपदेस धर्या कुं भया । पूजा प्रतिष्ठा जामें नया ॥५७६०॥

पंडित पटवारी मुनि भए । ग्यानवत करुणा उर धए ॥
मलयकोत्ति मुनिवर गुणवत । तिनकें हिए ध्यान भगवत ॥५७६१॥

गुणकीर्त्ति धर गुणभद्रसेन । गुंणाबाद प्रकासैं जैन ॥
भान कीरति महिमां भति बली । विद्यावत तपस्वी मुनि ॥५७६२॥

कु वरसेन भट्टारक जती । क्रिया श्रेष्ठ है उज्जल मती ॥
उनकें षट सुभचन सुसेन । धरमबलान सुणावै बनि ॥५७६३॥

मूल संघ भट्टारक प्रशस्ति

श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ । रतनकीरत मुनि धरम का पछ ॥
तारण तरण ग्यान गंभीर । जाणै सहु प्राणी की पीर ॥५७६४॥

तप सयम तै प्रातमध्यान । धरम जिनेस्वर कहैं बखान ॥
छूटै मिथ्या उपजै ग्यान । जे निसर्च धरि मनमे भान ॥५७६५॥

गुरु के वचन सुणि निसर्च धरे । ते जीव भवसागर तिरै ॥
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या संसार । पहुँचे स्वर्गलोक तिहु बार ॥५७६६॥

उनकें पट्ट रामचन्द्र मुनी । आचारिज पंडित बहु गुनी ॥
कहैं ग्यान के सूक्ष्म भंग । ई बुद्धि उनके प्रसंग ॥५७६७॥

महा मुनीस्वर उत्तम बुधि । कहैं धरम जिन बाणी सुधि ॥
जिसकें हिए होइ समकित । सरधा करै धरम मे नित ॥५७६८॥

श्री रामचन्द्र का सुरेणें पुराण । सुख सपति पावै कल्याण ॥
धरम दया पालै मन साइ । ते जीव मोक्ष पुरी मां जाइ ॥५७६९॥

ब्रूहा

पद्म पुराण पूरन भया, रिविषेना की बुधि ॥

जे निहसर्च धरिर्क सुखी, पावै समकित सुधि ॥५७७०॥

इति श्री पद्मपुराणे सभाषद्र कृत सपूरनम् ॥ संवत् १८ से ५६ व्यापार द्वि
१४ वार सोमवासरे लिखितं पंडित मोतीराम सिखायतं साह जी गंगाराम जी की बहू
जाति दोराया भाडलगढ का उत्तराय घठाई का व्रत मे पंडित मोतीरामेन वीये ।
प्रंथ सख्या हजार ११ रुपया ७ दीया निब्रराना का । शुभ भक्तु

नामानुक्रमिका

(पद्यपुराण में प्रमुख महापुरुषों के नाम पचासों बार आये हैं—जिनमें राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, रावण, विभीषण, मन्दोदरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इसलिए ऐसे नामों के यहाँ पूरे पृष्ठ प्रकित नहीं किये हैं) ।

अग्निकेतु २४६, २५२

अग्रवाल ४६०

अक्षयराय २५२

अजोध्या १८, २७, १०५

अग्निवेग १२६

अग्रोहा ४६०

अजितनाथ १, ४१, ४६ २५६

अजोध्या १०६, १७७, १८०, २०३,

२१६, २२०, २२५, २४०,

२६६, २६६, ३५८, ३६०,

३६२, ४८७ ।

अढाई द्वीप १५

अतिनगर ३७६

अतिवीर्य १३१, १३२, १३५, १३७,

२३४, २३८, २३६ ।

अतिगति १००

अतिमयूष ४५

अतिवीरज २४६, २५२, २५३

अतिन्द्र राजा ५४

अनन्तरथ १७६

अनुराधा ६४

अनंगसेना ३१५

अजनी १३८, १३६, १४०, १४२,

१४४

अनन्तनाथ १, ४६

अनरथ २४६

अनोकसा २०८

अंगद १००, २६५, २६६ ३२७

अजना १४५, १४६, १४६, १५८,

१५६, १६०

अंजन नगर २७२

अपराजिता १, १७६, १८४

अभयमाला ३६

अधक कुमार ६२, ६३, ६५

अवराज ७६

अभिचन्द १६

अभिनन्दन १, ४६, १०५
 अमरप्रभ ५८, ५९
 अमर राक्षस ५१, ५२, ५३
 अमितगति १५१
 अमीचन्द २९६
 अमृतवती ४१२
 अबप्रभा १७६
 अर ४३
 अरजयपुर १२६
 अरहनाथ १
 अरिदमन १३८
 अरनमदेस १५१
 अमर मजसेन ४६
 अस्त्रनवेग ५२, ६२, ६४, ६५
 अहिलादपुर २७३

आदित्यपुर ६३, ६४, १३८, १५७

अमैमाल ३६
 अमरवती २८२
 अमरसागर १३८
 अमितमती १७६
 अमृतप्रभा १७६
 अमृत स्वरित २४४
 अक्षरपुर ३४४
 अरजन ३६५
 अरहदास ४१, ४२
 अरहसेन ४८६
 अरिदम ३४४
 अलका ७६
 असफद २६७
 अश्व अश्व ३८
 अश्वरज ६६, ६९, ९०, ९२
 अक्षररज
 आदितजस ३३

आ, इ, उ

आदिनाथ १, १०६, १७०, १६८, २५६
 आदिपुराण ११४
 आश्रमती ४५
 इतरकरण २३०
 इन्द्रकपुर २१२
 इन्द्रजीत १२, ८१, १२४, १२५, १३८,
 १६२, २६६ आदि
 इन्द्रमति ५८
 इन्द्रविद ५८
 उत्तपलमति ४०
 उदयाचल राजा ५२
 उदितमुदित २४५, २४६
 उद्योतपुर ७०

आदिनाथ मन्दिर २६१
 आनदमाला १२६, १३०
 आशीसता ५७
 इन्द्रप्रभु ७२, ७३, ९१, १२३, १२४,
 १२६, १३१
 इन्द्रकुमार ६८, ६९
 इन्द्रसेन ४८८
 इन्द्रमनु ५८
 इन्द्ररेखा ३८
 उजीणी नगर/उजेणी २२०, २२१, ३५४
 उदयपुर ८७, ८८
 उदित ५२
 उदपाद १३८

क, ख, ग

कनकजटी २६४
 कनकमाला ४१२
 कनकप्रभा ११५, ४३६
 कंकणपुर ३७६
 कपिकेतु ५६
 कमलप्रभा ४३६
 कपिलानगर ८५, १८५, ३७३,
 ३६७
 काबनपुर ७०
 काण्ठासध ४६०
 कीर्तिधर १७३, १७६, ३४४
 किषपुर ५६, ६५, ६२
 किषलपुर १००, २६५, २८७, २६४,
 ३७६
 कुडलपुर ५, ६
 कुंषनाथ १, ४६
 कुम्भकरण १२, १४, ७२, ८१, ८२,
 ६३, १२४, १३५, १३७,
 १६८, १८०, ३०१ आदि
 कुसामर नगर १६८
 कुश ४१०
 केतुमती १४८ १५१, १५७, १५८
 कैर्ह १७६, २०१, २१४, २१५, २२०
 आदि
 कोसावी १६४, २२८, २६४
 कौसलनगर १७६
 कृष्णनारायण ४७
 खरदूषण ६, १०१, २५६, २६०
 २६३, ३०१
 गगनचन्द ६५

कनकपुर ६६, १३८
 कनकावली ६६, ७०
 कनकोदरी १५१, १५२, १५३
 कंचनगढ ४४
 कपिल बिभ्र २३०
 कमलोत्सवा २४७
 कल्याणमाला २२७, ३६५
 करणकु बपुर ६५
 कासी देश ६१
 कीर्तवती १७१
 कीर्तिववल ५३, ५५, ५६, ५७
 किर्किणपुर ५७, ६१, ६३, ६६, ६७,
 ७६, ६३
 कुबडपुर २२८
 कुंडलमडल १८, २०८
 कुंदनपुर २२२
 कु भपुर ८१
 कुसमावती ३५
 कुरुजामल देस २३
 कु वरसेन ४६१
 कुसुमपुर २७५
 केतुमुख २००
 कंलास ७७, ६६, ६८
 कंक्सी ७१, ७२, ७४, ७६
 कोकसी ७१
 कृतातवक ४०१
 कृतांतसेन ४८८
 खेमकर २४
 खेमाजलपुर २४०
 गद्यबंसेन २८३

गंधारी नगरी २१२
गुणभद्रसेन ४६१
गुणसेन १३०, १३१
गुणसागर १७२

गुणकीर्ति ४६१
गुणवती ५८
गौतम स्वामी १०, १३८, १६४, ३६३

च, छ, ज

चक्रपाल ४०
चलमान १५
चन्द्रगति १६५, १६७, १६८
चन्द्रनखा ७२, ७८, ६३, २५८, २५९,
२६७, ३५०

चन्द्रमती ६८
चन्द्रान १६
चपलवेण १६६
चित्रा ११७
चित्रागद १००
चूडामणी १७१
जगसेन ४८८
जमना २२२
जबूद्वीप ३, १४, ७५, १६४
जयसिंह ६४
जरासिंह ४७
जसाखी १६
जसोषर ४३
जाङ्गनब २७४, ३०३
जितसत्रु ३८
जैचन्द्रा ८७
जोषपुर २७३

चलभान १५
चंदरभान १५
चन्द्रदधि ६४
चन्द्रप्रति ३१६
चन्द्रप्रभु १, ४६
चन्द्ररेखा २८२
चन्द्राननी ४३
चम्पापुर १६७, २००, २६६, ३६५
चित्ररथ २४६
चित्रोत्सवा १८, १८६
चेलणा ४
जनक राजा १७०, १८०, १८६, १६०,
१६२,, २०१, २०७
जयकीर्ति ४३
जयसेन ४७
जया ४३
जसोमती १६६
जसोभद्र २१२
जितपदमा २४१, ३६५
जीतघर ४७
जैमित्र ३०३
जोषपुरि ५५

त, थ, द, ध, न

तडतकेस ६१
तमचूल ४६५

तडितमाला ८१
तारा राणी २५६

तिलकराड १७६
 त्रिकुट राजा ५८
 त्रिगुप्ति २५२
 त्रिविष्ट ४७
 धुलभद्र ४६
 दंडकराजा २५१
 दंतीपुर १४१, १५७
 दसनगर २७३
 दशरथ १७६, १८७, १८१, १८२,
 १६०, १६१, १६२ आदि

दक्षपुत्र १६६
 दुरबुद्धि ३७
 देवराक्षस ५३
 दैत्यराय ४३
 दैतनाथ ७७
 द्विडरथ ३०३
 धनवाहन १५१
 धरणीधर ३८
 धर्मनाथ १, ४६
 धारण २१२
 धूमकेतु ३५
 धौतपुर ८१, १००
 मधुष १७७
 नंद १६
 नंदनगर २३४
 नंदीस्वर ४३६
 नमि १, १२, ४६
 नमिनाथ
 नल ३०३
 नागकुमार ४६
 नागदत्त २४८

तिलकेसर ४०
 त्रिकुटाचल ४४, ६२, २५८, २८६
 त्रिदसेज ३८
 त्रिसला ५, ८
 दडकवन ३५६, २५४
 दतपुर गाम ५०
 दमंत्रवती २७२
 दशागपुर २२३, ३५४
 दशानन ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ८०,
 ८३, ६० आदि

दिल्ली ४६१
 दुरमुल २००
 देश भूषण २४३, २४६, ३६६
 कुल भूषण
 द्विविष्ट ४७
 धनदत्त ८४, २७२, ४३६, ४४२
 धरणी २७२
 धरणेन्द्र २२, ६८
 धातकी द्वीप ११७
 धारणी २१२, ४६८
 धूमसेन १८७
 नम्रप्रभा २७०
 नदमित्र ४७
 नंदघोष २१२
 नदवरधन २१२
 नदीनाक ५३
 नमिबिनमि ३४, २५६
 नरसेर ७०
 नलनील ४६, ६२, ६४, ६५, १८०, ३०३
 नलकूबड ११६, १२०, १२२
 नाभस तिलक ६३

नाभिराय १६, २०, ११४
 निरघात राजा ६७, ७८
 निर्वाणघोष १७२
 नेत्रतसकर २२६
 नेमिदत्त ३३, ३६, ३७, ३८

नारद १०६, १०७, ११०, ११२, ११३,
 १८०, १६४, ३५८
 नीलंजना २१
 नेमनाथ १, ४६

प, ब, भ, म

पद्मनाभ ३८, १८५
 पद्म ४७
 पद्मपुत्र ४३८
 पद्मनी नगर २४४
 पद्मावती ८०, ३६५
 परिच्छित्त ५७
 परजत १०८, १०९, ११०
 पाताल लका ६४
 पञ्चमेरू १५
 पुंडरीक ४२, ४७, ४०४
 पुरीन्द्र १७१
 पुष्कलावती देश ४२
 पुष्पवती २०८
 पुष्प नगर ७८
 पौदनपुर २१, २७, ३८, ५२, १८७,
 ३५६
 पृथ्वीदेवी २२७
 पृथ्वीवती ४१२
 प्रतिष्ठ १५
 प्रद्युम्न ४५
 प्रसन्नचंद
 प्रहसित १५७, १५८
 प्रसन्नकीर्ति २८१
 प्रतिवती ६६

पद्मप्रभु १, ४६
 पद्मपुराण ४८६, ४९०, ४९२
 पद्मोत्तर ५४, ५२
 पद्माक नगर ४२
 पथाणी ६६
 परषित १०७
 पवनजय १३६, १४१, १४२, १४३,
 १४४, १४५ आदि
 पार्श्वनाथ १, ४६
 पुष्पदन्त १, ४६
 पूर्व विदेह ३५८
 पुष्कर गण ४६०
 पुहपोत्तर ५४, ५५
 पूरणधन ४४, ४१, ४०
 पौमादेवी १३८
 पृथ्वीतिलक ३६५
 पृथ्वीधर २३२, २३५, २४०, ४१२
 प्रतिचन्द्र ६२
 प्रतिसूरज १५८, १५९ १६०
 प्रभामुल २००
 प्रह्लाद राय १३८, १३९, १४१, १४३,
 १५०, १५७, १५८, १५९
 प्रसन्नसेनजित १६
 प्रीतिकर राजा ६६

प्रीतंकर देस ६६
 बाजकठ ५७
 वसन्तमाला १४५, १४७, १४८, १५०,
 १५३, १५५, १५६, १७५
 ब्रह्मदत्त ३६, ४७
 बालखिल्य २२७, २२८
 बाहुबल २१, ४५
 ब्राह्मी १४
 भद्रदत्त १५७
 भगमाला २८२
 भरत १६, २१, २२, २६ से २८, ३१,
 ४५, १८५ आदि
 भरत क्षेत्र १५८
 भानकीरति ४६१
 भानुकुमार ६३
 भीम ३३, ४७, ४६, ५०
 भीमपुर ७८
 भीममती १७६
 भोज २००
 भगदत्त २६६
 भववा ४७
 भतिसागर २६८
 भद्रमाला ८१
 भधुराम ३८०
 मनोलता ३७०
 मनोदया १७१, १७२
 मंगल ३६५
 मन्दोदरी ७७, ७६, ८१, ६३, ६४,
 १०५, २६७, २८६, २८६,
 ३२२ आदि
 म्लेच्छ खड १६२

प्रीतिवर्धन मुनि २२१
 बंधुमती ८७
 वसंततिलका १४०
 वसंतलपुर २४२
 ब्रह्मवान ५७
 बालि ६३
 बाहुबलि २०, २२, २७, २८, २९, ३०,
 ३४, ४६, २५६
 भद्रसाल बन ५७
 भसीधरा ७२, ६३, १२२, १२३, १३७,
 १८० आदि
 भरतखड ३, १६४
 भागीरथ ४६, ५०
 भानराजस ५२, ५३
 भामडल १६५, १६६, २०६, २०७,
 २७८, २६४
 भीमप्रभ ५३
 भोगवती ६६
 भोमरदेस ४३
 भगध ३
 मतिवर्धन २४४
 मधुरा ११५, ३७६, ३८४
 मधुपुरी ११७
 मधुव ११६
 मनोरमा ३६१, ३६३, ३६५
 मंगला ४०
 मंगलावती १७६
 माधुरगच्छ ४६०
 मरुत ११०, ११५
 मल्लिनाथ १, ४६
 महाबोध ४३

मरुदेव १६
 मलयकीर्ति ४६१
 महादेव २६६
 महावीर ४८६
 महेन्द्रपुर १४७, १४८, २८७, २६२
 मातुङ्ग ४३
 मानवोत्तर ५०
 मालव २२०, २२१
 मालिवान ६६, ७०, ७१, ६२
 मारीच २६६, ३०२
 मिरगावती ५७
 मुनिचन्द्र १२८
 मूलसध ४६१
 मेकलानदी २२७
 मेघनाद ८१, १२४, १३८, १६२,
 २६५, ३०१
 मेघरथपुर ७०
 मेरमेघ ६६
 मोहनमती १८
 मृगांकपुर १५६
 मृगरुदमन ६६

मरुदेवी १६, १७, १६
 महषमती १०१, १७६
 महाराक्षस ४५, ५०, ५२
 महेन्द्र ३३, १३८, १३९, १४१
 महेन्द्रसेन १५०, १४८, २६२, २८१
 माघवी ५८, ११६
 माडलगढ़ ४६२
 माल्यवान १२४
 माली ६६, ६८, ७०
 मिथिलापुर १६३, १६४, १६६
 मुखधी ३६५
 मुनिसुव्रत १, ४६, १५४, १६६, १८०,
 २२१, २२२
 मेघगिरि ७६
 मेघपुरी ५४, ६३
 मेघवाहन ४१, ४२, ४४, ४५, ४८
 मेरदत्तसेठ ४३६
 प० मोतीराम ४५२
 मृनालकुण्ड ४४०
 मृगावती १६६

य, र, ल, व

यज्ञदत्त २७२
 रतनकीरत ४६१
 रतनचूला ४४०
 रतनमाला ६२, ३६५
 रतनवीर्य ३४
 रतनश्रवा ७१, ७४, ७८, ६३
 रतनपुर ५४, ३४१
 रतनमाली ३४, २१२

रघुनाथ २६४
 रतनचूल राजा १५४, ४६५
 रतनजटी २६४, २६६, २७३, २८८
 रतनदीप १४३, १६१
 रतनसन्ध्यापुर ४३
 रतनावली १८८
 रतनरथ २४६
 रतिप्रभा ३६५

रथनूपुर २२, ६७, ६६, ६१, १२२,
१२६, १३१, १८१, २०६,
२०८, २०८, ३७६

राजगृही ३

रामचन्द्र २, १२, ४७, १६१, १८५,
१६२, १६३, १६४,
१६८ आदि

रामावली ६३

राजसपुर २७३

रुपवती ३६५

रिषभदेव ३०, २२, ४५, ४६

छमीवती ३४४

लक्ष्मीमती १५२, १५३

लका ४४, ६५, ७७, ११५ आदि

लव ४१०

लोकपाल ७०

लोभदत्त १३३, १३४, १३५

वज्रकिरण २२१, २२२, २२४, ३५४

वज्रजघ ३४, ४०४, ४०५, ४०७

वज्रधर ४१

वज्रभान ३४

वज्रलोचन २१२

वज्रसिल ६३

वज्रामृत ३४

वभीषण १४, ७६, ७१, ६१

वद्धमान १, ४६

वसुदत्त ४३६, ४४२

वासुपूज्य १, ४६, ५४

वसुभूत २४४

वसीट १४३

रविमन्त्र ५८

(प्राचार्य) रविवेण ३, ४८६, ४६२

राजगिर ११०, १११, ११५

राजलक्ष्मी २७२

रामचन्द्र मुनि ४६१

रावण १२, १४, २७, ७२, ७६,

६८, ६६ १००,

१०२ आदि

रुद्रभूत २८८

रिषभ कुमार १६४

रेवानदी २५४

लक्ष्मण १२ ४७, १८५, १६३ २०१,

२०६, २१७, आदि

लक्ष्मनसेन ४८६

लकासुन्दरी २६२, २८४

लवणोदधि १४

लोकसुन्दरी २०१, २०२

लोहाचार्य ४६०

वज्रकुमार ४४०

वज्रदरज ६३

वज्रबाहु ३४, १७१

वज्रमुख २८४

वज्रसालगढ १२२, १२३

वज्रहंस ६३

वनमाला ११८, १६४, १६५, १६७, २३२

२३१, ३६५

वरुण ७०, १४३, १६३

वसंतमाला १५६

वसुदेव ४६

वसुधा २१२

वसु राजा १०६, १०६

वसतिरि २५०

वमम्पल २४६
 वासकेत १७०
 विजयसिध ६२, ६३, ६४
 विजया ३६
 विजयाद्व १४, २२, ४५, ५३, ५४, ६२
 ६८, ७०, ७५, ८५, ८३, १२२, ११८,
 १३६, १५१ १६६, १६०
 विटसुग्रीव २७१, २८२
 विद्युत्तगति ४६३
 विद्युत्तप्रभा २८२
 विद्युत्तबाह ६५
 विधरभदेस ६७
 विनमि २२
 विपुलाचल ६
 विमल १५
 विमलनाथ ४६, १५६, ३७३, ३६५,
 विमलाराणी २४६
 विसल्या ३१४, ४१६, ३२०, ३६५
 वीर ६, ८
 वेगवती ६३, ८७, ४४४
 वेलधर ३१४
 व्योमराजा ६६
 वैश्वन ८३, ८४
 ब्रह्मन्वि ११०, १११
 बृहत्केत २०६

वाणारसी ३७२, ३६७
 विचित्रमाला १७६
 विजयसेन १७२, ४४०
 विजयराज ४६, ३६४
 विजयसागर ४०
 विदग्ध देस २०८
 विद्युत्तहृद ३४, ३८
 विद्युत्तता २१२
 विद्युत्तवेग ५६, ६०
 विनयदत्त २७५
 विप्राराणी ८५
 विभ्रमधर १७६
 विमलावति १७०
 विमलबाहन ४३६
 विराधित १४, २६३, २६४, २७०
 विस्वानल ४७
 वीरकसेठ १६४, १६६
 वेदावती ४४१
 विसपुर १३८
 व्योमविद ७१
 वैश्ववा ७२
 वृषभध्वज ४३८, ४४२
 वृषभसेन २५

स ष श ह

मगर ४०, ४२, ४५, ४६, ५०
 सन्धन १८५
 सदनगर ४१
 सबदनमुनि ४८८

सत्यघोष ३५, ३६, ३७
 सनमित १५
 सनतकुमार ४६, ४७
 सभाचन्द ३, ४६२

समाधिगुप्ति ४३६
 सम्पूर्णकीर्ति ३१५
 समेदगिरि सम्मेद शिखर ५०, ८६,
 २४५, ३६७, ४०२
 सभूषण ४७५
 सरस्वती ८१
 सर्वभूषणमुनि ४२८
 सहदेव्या १७३
 सहस्रवीर्य ३१४
 सहस्रकिरण १०५
 सहस्रगामि १०२
 स्वयंभव ४७
 स्वस्तिमती १०६
 सागरधोष २४६
 सागरपुरी २७३
 रातिनाथ ३५२
 साधुदत्त २४६
 साहसगति १००
 सिद्धारथ ५, ६
 सिंहध्वज ८५
 सीतलनाथ १, ४६, १६७
 सीमकर १५
 सोमधर १५
 सुकच्छ १५१
 सुकीर्ति ३६५
 सुकेत २५२
 सुब्रसदत्त ६१
 सुदरसना १६०
 सुन्दरमन १७१

समेदलराइ ३१४
 सभवनार्थ १, ४६
 सबूक १४, २५६
 सखावली ६०
 सर्वभूतिमुनि २०५, २११
 ससाक नगर ४५
 सहस्रभूष ४
 सहस्रार ६५, ६६, १२६
 सहस्रनयन ४१, ४२, ४०
 स्वयप्रभनगर ८१
 स्वयभूरमण १४
 सकग्राम ६५
 सागरदत्त ४३६
 सातवाहन १०३
 सावत्यी ६६
 सिधसेन १७७, १७८, १७९
 सिंहजटी ३०६
 सिंहोदर २२१, २२२, २२३, २२४
 २२५, ३५४
 सीता १४, १६१, १६४, १६५,
 २०२, २०६ धादि
 सुकेस ६१, ५५, ६६
 सुपीव ६२, ६३, ६४, ६६,
 १००, २६५, २६६
 धादि
 सुदर्शनमेख १५, ४६, ४७, ३६१
 सुनवा १६
 सुन्दरी २०

मुपास १

मुप्रभा ४५, ५३, १८५, ३१४

मुप्रभाराणी २०३, २०४

मुभौमचक्री ४७

मुमतिनाथ १, ४६

मुमतारानी १३८

मुमालिवाल ६८

मुमिथ १६८

मुमेरपुर २७३

सुरगतिपुर ६२

सुरदत्तपुर ७७

सुरेन्द्र १७२

सुलोचन ४०

सूरप्रभ २४६

सोमप्रभ ३४, २५२

सोमशर्मा ३५

सोभावती ५८

स्योदास १७७, १७९

शातिनाथ ४६, ३२७

श्रवन मुनि ६५

श्रीकठ ५४, ५५, ५६, ५७

श्रीकात ४३६

श्रीचन्द्रा ५९

श्रीदेवी ६६

श्रीधरी २२२

श्रीपुर २७७, २८१

श्रीभूत २७७, ४४१

श्रीमाली १२३, १२४

श्रीवच्छराजा ४६

श्रियान्स २३

षडदूसन १४

मुप्रतिष्ठ १०६

मुप्रभराय २४६

मुमचन्द ४६१

मुमंगला ६३

मुमति १६५

मुमाली ६६, ६८, ६९, ७०, ७९, ८१,

८४ ६२

मुमिना १८४

सूरज ६९, ८७, ८८, ३९९

सूरजरज ६६, ७६, ९०, ९२, १६९

सुराष्ट्र ४०८

सुरेन्द्रपुर ३५१

सुलोचना नग्न २४०

सूरज कमला ६६

सोमिला २५२

सोदामनि १३८

सोभापुर ३५७

शत्रुघ्न २१९, २८०, २३४

शातिनाथ मन्दिर ३३३

मुनि श्रुतसागर ५०, ५१

श्रीकाता १०६

श्रीकेस ३९५

श्रीदामा ३९५

श्रीधर ४६, ५३, ३९५

श्रीप्रभा ५२, ५९, ७०, १०५,

९५, ९४, २४६

श्रीमाला ६२, ६४, ६५, ६६

श्रियान्स ४६, ५९

श्रेणिक ४, ५, १२, १३, १४,

५४, ६२, १३७, १६४,

२५६, ३६३

धेमंकर १५

हथनापुर २३, १७१

हरदष ३४४

हरियाल १००

हरिपुर १६६, २७३

हरिवेण ४७, ८८, ८९

हस्त ग्रहस्त २६६, ३०२ २९६

हंसद्वीप २९९

हुतासन १००

हेमचूल १७९

हेमप्रभ १८२

हेमाचल १००, ११५

क्षीरकदम १२६

धेमंघर १५

हनुमान १४, ४६, १३७, १५६.

१५१, १६१, १६७ आदि

हरिमन ३९१

हरिवाहन ११६, ११७, २००

हरिवेण अक्रवर्ती ८५

हस्तिनागपुर ३७०

हितवत महाजन ५२

हिरणनाभि १३८

हेमपुर नगर ६६

हेमावती ७७

हृदयवेगा १३८

क्षेमकरण २४३

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	विशेष
७७	—	षष्ठ संधि	विधानक समाप्ति पर जोड़े
१००	नवम विधानक	अष्टम विधानक	
१०६	दसम ,,	नवम ,,	
११३	नारन पर उपवर्ग	नारद पर उपसर्ग	
१२६	१३ वा विधानक	११ वा विधानक	
१३१	१४ वा ,,	१२ वा ,,	
१३७	१५ वा ,,	१३ वा ,,	
१४६	१६ वा ,,	१४ वा ,,	
१५६	१७ वा ,,	१५ वा ,,	
१६१	१८ वा ,,	१६ वा ,,	
१६४	१९ वा ,,	१७ वा ,,	
१७४	२० वा ,,	१८ वा ,,	
१८०	२१ वा ,,	१९ वा ,,	
१८१	२२ वा ,	२० वा ,,	
१८४	२३ वा ,,	२१ वा ,,	
२६६	सुप्रीव ,,	सुप्रीव ,,	
२३१	२६२४	३६२४	
३५१	दलन	मिलन	
४००	कनध	कथन	

लेखक एवं सम्पादक का परिचय

- नाम— कस्तूरचन्द कासलीवाल
जन्म स्थान— सैथल—सहसील दोसा, जिला जयपुर (राजस्थान)
जन्म तिथि— ८ अगस्त १९२०, भाद्रपद संवत् १९७७.
पिता— श्री गौदीलाल जी । माता— श्रीमती गेखाबाई
भाई— श्री चिरंजीलाल जी (ज्येष्ठ भ्राता) वैद्य प्रमोदयाल जी भिषगाचार्य
(कनिष्ठ भ्राता) । बहिन— श्रीमती गुलाब देवी
पत्नी— श्रीमती तारा देवी
पुत्र— निर्मल कुमार, नरेन्द्र कुमार
पुत्रिया— निर्मला, शाशिकला एवं सरोज
योग्य पौत्री— अविनाश, आलोक एवं अमृता
शिक्षा— एम. ए. (वर्ष १९४६ आगरा विश्वविद्यालय) शास्त्री (जयपुर)
पी-एच. डी. (राज विश्वविद्यालय—सन् १९६१)
विषय—Jain Grantha Bhandars in Rajasthan
प्रमुख गुरु— प. चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ
व्यवसाय— केन्द्रीय सेवा (सन् १९४६ से १९७८ तक)
साहित्यिक सेवा—सन् १९४७ से अद्यावधि
लेखन एवं सम्पादन—

- I १-५ राजस्थान के जैन शास्त्र ग्रंथों की ग्रंथ सूची (पांच भागों में)
(६) प्रशस्ति संग्रह, (७) प्रद्युम्न चरित, (८) जिणदत्त चरित, (९) हिन्दी पद संग्रह, (१०) राजस्थान के जैन सन्त-व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (११) महाकवि दौलतराम कासलीवाल-व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१२) चम्पा शतक, (१३) शाकम्भरी प्रदेश के विकास में जैनो का योगदान, (१४) Jain Grantha Bhandars in Rajasthan, (१५) बीर शासन के प्रभावक आचार्य, (१६) महाकवि ब्रह्म रायमल—व्यक्तित्व एवं कृतित्व, (१७) कविवर वृक्षराज एवं उनके समकालीन कवि, (१८) भट्टारक रत्नकीर्ति एवं कुमुदचन्द्र, (१९) आचार्य सोमकीर्ति एवं ब्रह्म यशोधर, (२०) बुलाखीचन्द्र, बुलाकीदास एवं हेमराज, (२१) बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि, (२२) मुलतान जैन समाज-इतिहास के आलोक में, (२३) मुनि सभाचन्द्र एवं उनका पद्मपुराण, ३० से भी अधिक ग्रन्थ ।

- II. दश से अधिक अभिनन्दन ग्रन्थ, स्मृति ग्रन्थ एवं स्मारिकाओं के सम्पादक के प्रमुख रूप में सहयोग,
- III. नाटक-परिचय, सङ्गीत, नयी शिक्षा, तपस्विनी, घर की लाज, घरम करम आदि, सभी मंचित ।
- IV. २०० से भी अधिक लेख—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में—Illustrated Weekly, कादम्बिनी, सप्तसिन्धु, परिषद् पत्रिका, सम्मेलन पत्रिका, राजस्थान पत्रिका, राष्ट्रदूत, नवभारत टाइम्स, बीरवाणी, सम्मतिवाणी, तीर्थंकर आदि ।
- V. सम्पादक—बीरवाणी (पाक्षिक) जयपुर,
- VI सस्थापक—श्री महावीर ग्रन्थ प्रकाशनी, महिला जाग्रति संघ,
- VII. अध्यक्ष—राज. जैन साहित्य परिषद्, ज्ञान विद्यालय,
- VIII. सम्मानित बीर निर्वाण भारती मेरठ, प्र. विश्व जैन मिशन अलीगज, महिला जाग्रति संघ जयपुर, भ. महावीर २५०० वा परिनिर्वाण समिति, दि. जैन समाज निर्वाह आदि ।
- IX. सक्रिय सदस्य—प्र. भा. दि. जैन विद्वत् परिषद्, शास्त्री परिषद्, प्र भा. दि. जैन परिषद्, दि. जैन महासमिति, दि. जैन महासभा आदि, संयुक्त मंत्री दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर,
- X सन् १९६१ से लेकर सन् ८४ तक घारा, गयाजी, वाराणसी, नागपुर, अहमदाबाद, सागर, इन्दौर, उज्जैन, देहली, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, पाली, व्यावर, कोल्हापुर, यादवपुर, कसकसा, जबलपुर, कोटा, अजमेर, बम्बई, सोलापुर, आदि नगरों में आयोजित ७० से भी अधिक सेमिनारों एवं संगोष्ठियों में निबन्ध वाचन
- XI. साहित्यिक खोज शोध के अन्तर्गत अब तक सैकड़ों कृतियों एवं उनके कवियों की प्रथम बार खोज,
- XII. १५ से भी अधिक बार प्रकाशवाणी जयपुर एवं देहली द्वारा दर्शन, साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति पर वार्ताओं का प्रसारण
- XIII. वर्तमान गतिविधि—जैन साहित्य की खोज एवं शोध, समाज सेवा, शोधार्थियों को मार्ग निर्देशन आदि ।

पता .—867, अमृत कलश, बरकत नगर, किसान मार्ग, टोक फाटक, जयपुर-15

